पवित्र
कुरआन
हिंदी भाषा

AL BIRR
Socio-Religious Trust
Striving to Save Mankind from Hellfire

तर्जुमा

अहसनु-ल-कलाम

ऊर्दु तर्जुमा
हाफ़िज़ मुहम्मद सलाहुद्दीन यूसुफ़ हा.
मौलाना मुहम्मद अब्दुल ज़ब्बार सलफी हा.
(दारूस्सलाम रिसर्च सेन्टर)

हिन्दी तर्जुमाः
शैख मुहम्मद रईस कुरैशी

अल-बिर्र फाउन्डेशन
मुम्बई

© सर्वाधिकर मुर्तजीम

नोटः- मैंने किसी भी इदारे को अपने तर्जुमे के हक़ बेचे नहीं जिसको भी दिया है अल्लाह की रजा के लिए बगैर किसी उजरत के दिया है इसलिए कोई भी इदारा इसको अपने हक़ में महफ़ूज़ न करे।

किताब : **अहसनुल कलाम**

ऊर्दु तर्जुमा : **हाफ़िफ़ज़ सलाहुद्दीन यूसुफ़ हा.**

: **मुहम्मद अब्दुल ज़ब्बार सलफी हा.**

हिन्दी तर्जुमा : **शैख मुहम्मद रईस कुरैशी**

प्रकाशक :**अल-बिर्र फाउन्डेशन, मुम्बई**

पेज़ : 672

इशाअत अव्वल : **दिसम्बर 2015**

अल-बिर्र फाउन्डेशन

मुम्बई

Ph: +91 93

अल्लाह तआला का फरमान है

रमज़ान
का महीना वह जिसमें
कुरआन नाज़िल किया गया
जो इन्सानों के लिए हिदायत
है और उसमें हिदायत वाज़ेह
और हक़ को बातिल से
जुदा करने वाली
दलीलें है।
(बकरा 2/185)

अल्लाह तआला का फरमान है

॥

बिलाशुब्ह
हमने तुम्हारी
तरफ एक किताब
नाज़िल (अवतरित) की है,
उसमें तुम्हारा ही ज़िक्र (वर्णन)
है, क्या फ़िर तुम नहीं समझते?
(अम्बिया 21/10)

अल्लाह तआला का फरमान है

और यक़ीनन
हमने
कुरआन को
नसीहत (उपदेश)
के लिए आसान किया
फ़िर क्या कोई नसीहत
पकड़ने वाला है?
(कमर 54/40)

अर्ज़े नाशिर

सारी तअरीफे (पशंसाएं) उस अल्लाह के लिए हैं जो पूरी कायनात का पालनहार है और करोड़ों दरूद व सलाम नाज़िल (अवतरित) हों हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर, उनके घराने के सदस्यों पर, उनके तमाम सहाबियों पर और क़यामत तक आने वाले उनके तमाम उम्मतियों (अनुयायियों) पर।

हम बाजार से कोई भी सामान जब लेते है तो उसके साथ एक मार्गदर्शिका (गाईड) आती है, जिसमें उस सामान के इस्तेमाल करने का तरीक़ा (विधि) लिखा होता है। क्या कोई भी अक्लमंद व्यक्ति यह सोच सकता है कि जिस मालिक ने उसे जीवन दिया है लेकिन जीवन गुजारने का तरीका नहीं बतलाया है? यक़ीनन बताया है। वह तरीका कुरआन करीम है।

कुरआन करीम ही दुनिया की अकेली महफ़ूज़ (सुरक्षित) इलहामी (अवतरित) किताब है जो क़यामत तक इन्सानों की हिदायत और रहनुमाई (मार्ग दर्शन) का बेहतरीन ज़रिया हैं। इसी पर अमल पैरा हो कर दुनिया में सरबुलन्दी और आखिरत में निजात (मोक्ष) का हुसूल मुम्किन है। लिहाजा ज़रूरत इस बात की है कि उसके माअनी (अर्थ) व मतालिब (साराशं) को समझा जायें, इसके दर्स और तदरीस का ऐहतमाम किया जाये, इसको सिखने सिखाने के मराकिज़ क़ायम किये जाये।

कुरआन फहमी के लिए के लिए तर्जुमा-ए-कुरआन बुनियाद की हैसियत रखता है यही वज़ह है कि तकरीबन हर जमाने में औलमाऐ किराम ने इसकी तरफ भर पूर तवज्ज़ों दी। इसी का नतीजा है कि आज दुनिया में कमो बेश 105 ज़बानों में कुरआन करीम के मुकम्मिल तर्जुमें साये हो चुके है। जिनमें से एक अहम (महत्वपूर्ण) ज़बान हिन्दी भी है।

हम आपकी सेवा में हिन्दी ज़बान में कुरआन का तर्जुमा (अनुवाद) पेश (प्रस्तुत) करते हुए अल्लाह तआला का शुक्र करते है कि उसने हम जैसे अदना बन्दे से अपने दीन का काम लिया। हिन्दी तर्जुमा पेश करने की हमारी बहुत दिनों से ख्वाहिश थी, बहुत तलाश के बाद नज़र अहसानुल कलाम ऊर्दू पर जा कर जमी उसको बगौर पढ़ा तो महसूस हुआ कि आज की नस्ल के लिए यह एक बेहतर तर्जुमा है जिसे हिन्दी जबान में पेश करना चाहिए। यह तर्जुमा ऊर्दू में हाफिज़ सलाहउद्दीन युसूफ हफ़िज़ाहुल्लाह और मुहम्मद

अब्दुल ज़ब्बार सलफी हफ़िज़ाहुल्लाह ने किया इसका हिन्दी में अनुवाद शैख मुहम्मद रईस कुरैशी हफ़िज़ाहुल्लाह उज्जैन ने किया है, मैं अल्लाह तआला से इन तीनों हज़रात के लिए दुआ करता हूँ कि अल्लाह इन तीनों हज़रात को दुनिया व आखिरत में कामयाब बनाए। आमीन। साथ शैख मुहम्मद रईस कुरैशी हफ़िज़ाहुल्लाह का शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होंने इस तर्जुमे को "अल बिर्र फाउन्डेशन" से शाया करने की इजाज़त दी। इस तर्जुमें में कोशिश की गई है कि आम हिन्दी का इस्तेमाल किया जाए न तो खालिस हिन्दी का न ही खालिस ऊर्दू का।

जिन साथियों ने इस तर्जुमा शाया करवाने मदद की है अल्लाह तआला उन सभी को दुनिया व अखिरत में कामयाबी अता फरमाए। आमीन।

अब जबकि यह तर्जुमा (अनुवाद) आपके हाथों में है, आपसे दिली गुज़ारिश (सादर अनुरोध) है कि इसे खुद (स्वयं) पढ़ें, अपने दोस्तों, साथियों और रिश्तेदारों का पढ़ने के लिए दें और इसमें मौजूद (समाहित) बातों को अपने जीवन पर लागू करें ताकि हमारी और आपकी आख़िरत तथा दुनिया, दोनों सुधरें और दोनों जहानों में हमें कामयाबी मिले।

आखिर में आपसे गुजारि   श है कि हमें अपने नेक मश्विरो से अवश्य नवाज़ें ताकि इसे दूसरे एडिशन में और ज़्यादा फायदे मन्द बनाया जा सके, इसके लिए हम अल्लाह तआला से आपके लिए दुआ करेगें कि अल्लाह तआला आपकी नेक कोशिशों को कबूल फरमाए। आमीन

वस्सलाम

अल बिर्र फाउन्डेशन

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन

तमाम तअरीफ अल्लाह रहमान, रहीम के लिए है जो तमाम आलम का रब है जिसने पूरे आलम को बेऐब पैदा किया जो इज्ज़त देने वाला, रोज़ी देने वाला, हर तरह की बीमारी से शिफा देने वाला, इन्सानों की अबदी कामयाबी के लिए किताबों को नाज़िल करने वाला, उस पर अमली नमूने के लिए रसूलों का मबऊस करने वाला, इन्सान की हर ज़रूरत को पूरा करने वाला, जिन्दगी और मौत का मालिक है, जिसकी तअरीफ का हम हक़ अदा नहीं कर सकते हैं। उसकी तअरीफ के लिए तमाम समन्दरों का पानी स्याही बन जाए और सारे पेड़ कलम बन जाए तो भी नहीं हो सकती है। हम अपनी वुसअत (ताक़त) भर जो कि उसने हमे अता की उससे उसकी जितनी तअरीफ कर सकते है जो हम करने की कोशिश करते है। अल्लाह तआला क़बूल फरमाए आमीन। बेशुमार दरूद व सलाम हो रहमतुललिल आलम, साकी ए कौसर, शाफिए महशर, मक़ामे महमूद के तन्हा वारिस आखरी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर, हम आप पर दरूद व सलाम भेजने का हक़ अदा नहीं कर सकते मगर बस उतना ही जितना अल्लाह तआला ने हमें वुसअत अता फरमाई है। रहमत, सलामती व मग्फिरत हो आपकी आल व सहाबा जो नबियों और रसूलों के बाद दुनिया के तमाम इन्सानों से अफज़ल और आला है पर जिन्होंने हर वक़्त हर पल आपके दीन को फेलाने में हर तरह से मदद की। आमीन या रब्बलआलमीन।

आपके हाथों में अहसनुल कलाम का यह तीसरा एडिशन इसके पहले पहला एडिशन अक्टूबर 2014 ई. को मन्जरे आम पर आया था। अल्लाह रब्बुलइज्जत के करम व अहसान से वह चन्द महीनों में हाथों हाथ चला गया। इसके बाद इसका दूसरा एडिशन जरवरी 2015 में आया। इस पर अल्लाह तआला की जितनी भी तअरीफ और शुक्र किया जाए कम है, इसलिए मैंने तीसरे एडिशन में अपनी बात उन्वान न रखते हुए ''अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन'' उन्वान लिखा है।

इस एडिशन में कुछ फेर बदल किया गया है पहले एडिशन में ''मज़ामिन की फेहरिस्त'' तर्जुमा कुरआन के आखिर में दी

गई थी, इस एडिशन में पहले दी गई है, क्योंकि जब तर्जुमा कारईने किराम के हाथों पहुँचा तो कई कारईने किराम ने मश्वरा दिया कि फेहरिस्त को आगे किया जाए ताकि उससे फायदा उठाने में आसानी हो, यह बात मुफिद थी इसलिए इस पर अमल किया गया। अल्लाह तआला मश्वरा देने वालों को दुनिया व आखिरत में कामयाबी अता फरमाए। आमीन।

फेहरिस्त को भी पहले से ज्यादा आसान बनाने की कोशिश की गई है।

उस एडिशन में कुछ प्रुफरिडिंग की गलती रह गई थी जिसकी तरफ कुछ भाईयों ने रहनुमाई की उसकी इस एडिशन में इस्लाह की गई है। अल्लाह तआला उन सभी भाईयों को दुनिया व आखिरत में कामयाबी अता फरमाए। आमीन।

मैं अल बिर्र फाउन्डेशन मेनेजमेन्ट के लिए भी दुआ करता हुँ कि उन्होंने इसको बहुत ही उम्दा अदाँज़ में शाया किया।

अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह तआला इस तर्जुमा कुरआन को अपनी रज़ा के लिए क़ुबूल फरमाए। मुझे मेरे अहलो अयाल और दोस्त व अहबाब व जिन लोगों ने इसको शाया करने में किसी भी तरह की मदद की उनको और पढ़ने वालों को दुनिया आखिरत में कामयाबी अता फरमाए। और उनके लिए सदक़ा-ए-आखिरत बनाए आमीन।

आखिर में कारईने किराम से गुजारिश है कि इन्सानी कमजोरियों के सबब अगर इस एडिशन में कोई कमी या गलती नज़र आए तो इत्तिला करे इन्शाअल्लाह अगले एडिशन में इस्लाह की जाऐगी और आप भी अल्लाह तआला के यहाँ अज्र पाऐं। आमीन

आपकी दुआओं का मुहताज़ जन्नत में मुलाक़ात का तलबगार
शैख मुहम्मद रईस कुरैशी
मर्कज दअवतुल हक़
मस्जिद दारूस्सलाम,
गांधी नगर, उज्जैन (म.प्र) 456001
mqraisqureshi@gmail.com
17 - 11 - 2015

ज़रूरी बात

तमाम तअरीफ अल्लाह रहमान, रहीम के लिए है जो तमाम आलम का रब है जिसने पूरे आलम को बेऐब पैदा किया जो इज्ज़त देने वाला, रोज़ी देने वाला, इन्सान की हर ज़रूरत को पूरा करने वाला, जिन्दगी और मौत का मालिक है, जिसकी तअरीफ का हम हक़ अदा नहीं कर सकते हैं। उसकी तअरीफ के लिए तमाम समन्दरों का पानी स्याही बन जाए और सारे पेड़ कलम बन जाए तो भी नहीं हो सकती है। हम अपनी वुसअत (ताक़त) भर उसकी तअरीफ कर सकते है जो हम करने की कोशिश करते है। अल्लाह तआला क़बूल फरमाए आमीन। बेशुमार दरूद व सलाम हो रहमते आलम, साकी ए कौसर, शाफिए महशर, मक़ामे महमूद के तन्हा वारिस आखरी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हम आप पर दरूद व सलाम भेजने का हक़ अदा नहीं कर सकते मगर बस उतना ही जितना अल्लाह तआला ने हमें वुसअत अता फरमाई है। रहमत, सलामती व मग्फिरत हो आपकी आल व साथियों पर जिन्होंने हर वक़्त हर पल आपके दीन को फेलाने में हर तरह से मदद की और कर रहे हैं। आमीन या रब्बलआलमीन।

कुरआन मजीद दुनिया की अकेली किताब है कि जो जब से नाज़िल हुई उस वक्त से लेकर आज तक अपनी अस्ल हालत में मौजूद है। इसके मुकाबले दुनिया की कोई किताब महफूज़ नहीं सब में रद्दो बदल हो चुका है। यही वजह है कि आज तक कोई आदमी इसमें कोई कमी बेशी नहीं निकाल पाया और न ही निकाल पाऐगा। इन्शाअल्लाह।

अल्लाह तआला का फरमान है ''हमने कुरआन को समझने के लिए आसान कर कर दिया है, तो कोई है जो इससे नसीहत हासिल करे।'' (क़मर 17)

इसी बात के पेशे नज़र अव्वल दौर से ही कुरआन मजीद के माअनी व मतालिब को बयान करने उसको सीखने व सिखाने उसके समझने व समझाने की कोशिश की जाती रही है। हमारे इल्म के मुताबिक़ सबसे पहला जुज़वी तर्जुमा सलमान फारसी रज़ि. ने सूरह फातिहा के फारसी तर्जुमे से किया और फिर हर दौर में कुरआन मजीद के तर्जुमें होते चले गए। शुरूआत में इस्लामी इल्म व तालीम की जबान अरबी रही तो लोग कसरत

से अरबी ज़बान के ज़रिये ही कुरआन मजीद को समझते रहे। कुरआन मजीद की इब्तिदाई तफसिरें अरबी ज़बान में ही मिलती है। इल्मी कमज़ोरी और दअवती ज़रूरतों के पैशे नज़र दूसरी ज़बानों में कुरआन मज़ीद के तर्जुमों व तफ्सीरों का दौर चल निकला। यूं आज दुनिया की कम बेश 105 ज़बान में कुरआन मजीद के मुकम्मिल तर्जुमें मौजूद है। इसी तरह कई दूसरी ज़बानों में कुरआन के हिस्सों के तर्जुमें किए गए है। कुरआन मजीद के इन तर्जुमों व तफ्सीर की एक अलग तारीख है जिसे कई किताबों की सूरत में मुरत्तिब किया गया है।

हिन्दी ज़बान में भी कई तर्जुमें मौजूद है फिर हमें हिन्दी में तर्जुमा में पैश करने की ज़रूरत क्यों पेश आई? इसकी कई वजह है जिसमें चन्द एक यह बयान की जाती है।

1) हर दीनदार मुसलमान यह चाहता है कि वह अल्लाह के दीन की खिदमत करें और अल्लाह को राज़ी करे। इसी जज्बे के तहत हमने यह तर्जुमा पैश किया।

2) अहले हदीस आलीम हिन्दूस्तान के आजादी के सिपाही आज़ाद हिन्दुस्तान के पहले वज़ीरे तालीम (शिक्षा मन्त्री) मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने तर्जुमानुल कुरआन के पहले एडिशन के मुक़दमे में आज से 83 साल पहले (1 अगस्त 1931) लिखा था ''कुरआन के ऐसे एडिशन मुरत्तब किए जाएं जो हवाला जात (रिफ्रेंस) के साथ हो, या मसलन कुरआन के अल्फाज़ व अस्मा और मतालिब व आयात के इन्डेक्स (फेहरिस्त) मुरत्तब किए जाऐ जो हर पहलु से जामे और मुकम्मिल हो।.......... बाइबिल का एक मामूली सा छपा हुआ नुस्खा भी जो खुसूसियत रखता है हम इस वक़्त कुरआन के बेहतर से बेहतर एडिशन में उनका एहतमाम न कर सके। हमारे नज़दीक कुरआन की बड़ी से बड़ी खिदमत यह है कि इसकी जिल्द को सुनहरी छाप दी जाए या उसकी सुतरों (लाइनों) पर हिनाई रंग लेप दिया जाए।'' (तर्जुमानुल कुरआन जि. 1 स. 12, 13)

आज 83 साल बाद भी यह कमी महसूस की जा रही है, कुछ लोगों ने यह कोशिश की है लेकिन ऐसी नहीं जो कि इस कमी को पूरी कर सके।

3) कुरआन मजीद के कुछ साईज मुन्तखब है उन्हीं साईज में कुरआन मजीद को छापा जाता है।

जबकि आज मुसलमान हर फिल्ड में अमल पेरा है उसकी जरूरत अलग अलग है। अब अगर वह चाहे कि सफर के बीच वक्त निकाल कर या अपने आफिस में काम के बीच वक्त निकाल कर कुरआन पढ़े तो कुरआन उसकी जरूरत के साईज में मौजूद

नहीं हिन्दी तर्जुमें के साथ। जबकि बाईबिल हर साईज में मौजूद है।

इसके लिए कुरआन को टाईप करना ज़रूरी था कि जिस साईज में जरूरत हो उस साईज में कुरआन को सेट किया जा सके और अल्लाह का हर बन्दा कुरआन से फायदा उठा सके। इन्शा अल्लाह इस तर्जुमें को हर साईज में पेश किया जाऐगा ताकि आप अपनी सहुलियत के हिसाब से अपने पास हर वक्त रख सके खुद भी फायदा उठाऐ और पुरी इन्सानियत तक अल्लाह के पैगाम को पहुंचाए।

4) जो हिन्दी तर्जुमे मौजूद है उनमें इतनी खालीस (शुद्ध) हिन्दी ज़बान है कि आम मुसलमान समझ ही नहीं पाता कि कुरआन क्या चाहता है।

और भी कई वजह हैं। सबको बयान करने का यहां मौक़ा नहीं हैं।

इन कमी को दूर करने के लिए हम तर्जुमा पैश कर रहे है। इसी बीच कुछ लोगों ने यह भी मश्वरा दिया कि मौजूदा हिन्दी कुरआन में से किसी कुरआन को लेकर उस पर काम किया जाए। मश्वरा अच्छा था लेकिन उसमें एक मुश्किल यह थी उनके हुकूक़ महफूज़ थे कहीं मुर्तजीम के पास कहीं प्रकाशक के पास। उनकी इजाज़त हासिल करना आसान काम नहीं है एक दो ने छापने की इजाज़त दे रखी है लेकिन उनके तर्जुमे में औलमा हक़ को कुछ नुक्स नज़र आया। इसलिए इस मश्वरे को भी छोड़ना पड़ा। फिर अधिकतर कुरआन के ऊर्दू तर्जुमे पूराने उसलूब (तरीके) में है उनको ही हिन्दी किया गया। जबकि आज ज़बान में कई क़िस्म के बदलाव आ गए है। इसलिए ज़रूरत थी मौजूदा दौर की ज़बान के हिसाब का तर्जुमा पेश किया जाए। जो आसान भी हो और आम फहम भी हो। अल्लाह तआला के करम व एहसान से यह सब खुबियां मुफस्सिरे कुरआन हाफिज़ सलाहुद्दीन यूसुफ हाफिजुल्लाह और मौलाना मुहम्मद अब्दुल ज़ब्बार सलफी हा. के तर्जुमें में मौजूद हैं, वह तर्जुमा 2007 में शाया हुआ था। फिलहाल सबसे लेटेस्ट तर्जुमा है जो कि दारू-स-सलाम रियाद ने तैयार करवाया है। उसी को ऊर्दू से हिन्दी किया गया है।

इस हिन्दी तर्जुमें के साथ हम दो फेहरिस्त लगा रहें है, जिससे कुरआन मजीद को समझने में आसानी होगी साथ ही दवअत व तब्लीग का अमल करने वालों के लिए भी आसानी होगी पहली फेहरिस्त है ''फेहरिस्त मज़ामिन आयतें कुरआने मजीद'' जिसमें आयत के मज़मून की तरफ इशारा किया गया है। दूसरी फेहरिस्त है ''फेहरिस्त मज़ामिन अल्फाज़े कुरआन'' जिसमें आप

किसी भी लफ्ज मसलन ''निकाह'' ''आसमान'' या ''आग'' को देखना चाहते है तो उस लफ्ज को इस फेहरिस्त में देखें वहाँ पर शूरह नं. व आयत नं. दिया गया है जिससे आप आसानी इस कुरआन में या इसके अलावा किसी भी कुरआन में उस लफ्ज को देख सकते हैं कि कुरआन में वह कहाँ कहाँ हैं। इन् शाअल्लाह इस तर्जुमे को अरबी मतन के साथ भी पेश किया जाऐगा जिसमे कुछ और फेहरिस्त जोड़ी जाऐगी मसलन अहकामे कुरआन की आयतों की फेहरिस्त, इस्लाम की दअवत देने में काम आने वाली आयतों की फेहरिस्त, जादू और जिन्न के इलाज की आयतों की फेहरिस्त आदि रहेगी।

दो साल से ज़्यादा की मेहनत के बाद तेयार होने वाले इस तर्जुमें व फेहरिस्त को पेश करते हुए अल्लाह तआला का दिल की अथाह गहराईयों से शुक्रगुज़ार हूं कि जिसने यह तोफिक़ बख़्शी वरना मैंने ज़िन्दगी के किसी हिस्से में यह तसव्वुर नहीं किया था कि अल्लाह रब्बुलइज्ज़त मुझ कम इल्म, कमअमल से यह अज़ीम खिदमत अंजाम लेंगे। इस पर मैं अल्लाह तआला का जितना शुक्र अदा करूं कम है। सब तअरीफों और ख़ूबियों के लायक़ सिर्फ अल्लाह तआला है।

यह अल्फाज़ लिखते हुए मेरा दिल उन सबके लिए दुआओं से लबरेज़ है जिन्होंने इस काम में किसी भी तरह की मेरी मदद की। सबसे पहले में अपने वाल्दैन के लिए दुआ करता हूं कि उनकी ताकत भर मेहनत और दुआ का नतीजा है कि आज में यह दीनी खिदमत अंजाम दे रहा हूं अल्लाह तआला उनकी क़ब्र को नूर से भरे उनको जन्नतुल फिरदोस में मक़ाम अता फरमाऐ। अपने प्यारे बेटों फुरकान कुरैशी, सेफुल्लाह कुरैशी, प्यारी बेटी और अहलिया के लिए दुआ करता हूं कि उन्होंने मेरी मसरूफियत का ख्याल रखा और हर वक्त मेरा साथ दिया।

मैं मोहसिन भाई मेमन और शहाबुद्दीन फारूक़ी सा. के लिए दुआ करता हूं जिन्होंने कुरआन मजीद की प्रूफ रिडिगं बहुत ही मेहनत और दिल जमई से की। मैं आसिफ भाई के लिए दुआ करता हूं जिन्होंने इस तर्जुमें और फेहरिस्त के लिए मुफीद मशवरे दिए। मैं इक़बाल भाई अन्सारी के लिए दुआ करता हूँ जिन्होंने मेरी ज़रूरत के कुरआनी तर्जुमे और किताबे मुझ तक पहुँचाई।

अल्लाह तआला हम सबको दुनिया व आखिरत में कामयाब बनाए। इस काम को सबके लिए ज़ख़ीरा ए आखिरत बनाए और हमारे नेक अमल को कबूल करे और बुराईयों

से हमें दूर रखे।

इस तर्जुमें व फेहरिस्त में जो भी खूबी है वह सब अल्लाह रब्बुल इज्ज़त का खास अहसान व करम है, और जो नुक्स व कमी है वह मेरी कमजोरी व ग़लती है, इसके लिए मैं अल्लाह तआला से माफी मांगता हूं। आप सब से और खास कर के औलमा हज़रात से गुज़ारिश करता हूं कि कोई कमी व गलती है तो वह मुझे इत्तिला करे ताकि इन्शा अल्लाह अगले एडिशन में उसे दूर किया जाए और आप भी अल्लाह तआला के यह अज्र पाए।

आखिर में आप सभी से इल्तिज़ा है की कुरआन कि तिलावत व तर्जुमा पढ़ने के बाद मुझे और उन सभी को अपनी दुआ में याद रखे जिन्होंने इस कुरआन को शाया करने और करवाने में किसी भी तरह की मदद की है।

अल्लाह तआला हम सब को कुरआन पढ़ने वाला उस पर अमल करने वाला उसकी तालिमात को फेलाने वाला बनाए। आमीन या रब्बलआलमीन।

आपकी दुआओं का मुहताज़
शैख मुहम्मद रईस कुरैशी
मर्कज दअवतुल हक़
मस्जिद दारूस्सलाम,
गांधी नगर, उज्जैन (म.प्र) 456001
mqraisqureshi@gmail.com
25 - 08 - 2012

सूरतों की फेहरिस्त

सू-न.	सूरह नाम	सफ़ा
1.	सूरह फातिहा	23
2.	सूरह बक़रा	23
3.	सूरह आलेइमरान	60
4.	सूरह निसा	81
5.	सूरह मायदा	99
6.	सूरह अनआम	103
7.	सूरह आराफ	139
8.	सूरह अनफाल	161
9.	सूरह तौबा	169
10.	सूरह यूनुस	184
11.	सूरह हूद	195
12.	सूरह यूसुफ	207
13.	सूरह रअद	217
14.	सूरह इब्राहीम	222
15.	सूरह हिज्र	227
16.	सूरह नहल	232
17.	सूरह बनीइस्राईल	244
18.	सूरह कहफ	253
19.	सूरह मरयम	263
20.	सूरह ताहा	269
21.	सूरह अम्बिया	278
22.	सूरह हज्ज	286
23.	सूरह मुमिनून	294
24.	सूरह नूर	301
25.	सूरह फुरक़ान	309
26.	सूरह शोअरा	315
27.	सूरह नमल	325

28.	सूरह क़सस	333
29.	सूरह अनकबूत	342
30.	सूरह रूम	348
31.	सूरह लुक्मान	353
32.	सूरह सज्दा	357
33.	सूरह अहज़ाब	359
34.	सूरह सबा	367
35.	सूरह फातिर	373
36.	सूरह यासिन	378
37.	सूरह साफ्फात	383
38.	सूरह साद	391
39.	सूरह जुमर	396
40.	सूरह मोमिन	403
41.	हा मीम सज्दा	411
42.	सूरह शूरा	416
43.	सूरह जुखरूफ	422
44.	सूरह दुखान	427
45.	सूरह जासिया	430
46.	सूरह अहक़ाफ	433
47.	सूरह मुहम्मद	437
48.	सूरह फतह	441
49.	सूरह हुजरात	445
50.	सूरह काफ	447
51.	सूरह ज़ारियात	450
52.	सूरह तूर	453
53.	सूरह नज़्म	455
54.	सूरह क़मर	458
55.	सूरह रहमान	461
56.	सूरह वाक़िया	464
57.	सूरह हदीद	468

58.	सूरह मुजादला	471
59.	सूरह हश्र	474
60.	सूरह मुम्तहिना	477
61.	सूरह सफ्फ	479
62.	सूरह जुमा	481
63.	सूरह मुनाफिकून	482
64.	सूरह तगाबुन	483
65.	सूरह तलाक़	485
66.	सूरह तहरीम	486
67.	सूरह मुल्क	488
68.	सूरह क़लम	490
69.	सूरह हाक़्क़ा	493
70.	सूरह मआरिज	495
71.	सूरह नूह	497
72.	सूरह जिन्न	498
73.	सूरह मुजम्मिल	500
74.	सूरह मुदस्सिर	502
75.	सूरह क़ियामा	504
76.	सूरह दहर	505
77.	सूरह मुर्रसलात	507
78.	सूरह नबा	509
79.	सूरह नाज़िआत	510
80.	सूरह अबस	512
81.	सूरह तकवीर	514
82.	सूरह इन्फितार	515
83.	सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन	515
84.	सूरह इन्शिक़ाक़	517
85.	सूरह बुरूज	518
86.	सूरह तारिक़	519
87.	सूरह आला	520

88.	सूरह गाशिया	520
89.	सूरह फजर	521
90.	सूरह बलद	523
91.	सूरह शम्स	523
92.	सूरह लैल	524
93.	सूरह जुहा	525
94.	सूरह अलमनशरह	525
95.	सूरह तीन	526
96.	सूरह अलक़	526
97.	सूरह क़द्र	527
98.	सूरह बय्यिना	527
99.	सूरह ज़िलज़ाल	528
100.	सूरह आदियात	528
101.	सूरह क़ारिआ	529
102.	सूरह तकासुर	529
103.	सूरह अस्र	530
104.	सूरह हुमज़ा	530
105.	सूरह फील	530
106.	सूरह कुरैश	531
107.	सूरह माऊन	531
108.	सूरह कौसर	531
109.	सूरह काफिरून	532
110.	सूरह नस्र	532
111.	सूरह लहब	532
112.	सूरह इख्लास	533
113.	सूरह फलक़	533
114.	सूरह नास	533
	फेहरिस्त मज़ामीन आयतें कुरआने मजीद	535
	फेहरिस्त मज़ामीन अल्फाज़े कुरआन	613

निजात (मोक्ष) पाने का आसान
और सीधा रास्ता

कुरआन

सूरह फ़ातिहा-1

(यह सूरत मक्की है इसमें 7 आयतें और 1 रूकू हैं)

(1) अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(2) तमाम तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है।

(3) निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(4) बदले के दिन का मालिक है।

(5) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं।

(6) दिखा हमें सीधा रास्ता।

(7) उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनआम किया, उनका नहीं जिन पर ग़ज़ब किया गया और न गुमराहों का।

सूरह बकरा -2

(यह मदनी सूरत है इसमें 286 आयतें और 40 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलीफ लाम मीम ।

(2) यह किताब जिसमें कोई शक नहीं, हिदायत (मार्ग-दर्शन) है परहेज़गारों के लिये।

(3) जो ग़ैब पर ईमान लाते और नमाज़ क़ायम करते हैं और हमने उनको जो कुछ दिया है उसमें वह इन्फाक़ (खर्च) करते हैं।

(4) और वह लोग जो इस पर ईमान लाते हैं जो आपकी तरफ नाज़िल किया गया और जो आपसे पहले नाज़िल किया गया और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।

(5) यह लोग हिदायत पर हैं अपने रब की तरफ से और यही फलाह पाने वाले हैं।

(6) बेशक वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया, आप उन्हें डरायें या न डरायें उनके लिए बराबर है, वह ईमान नहीं लाएँगे।

(7) अल्लाह ने उनके दिलों और उनके कानों पर मोहर लगा दी है, और उनकी आँखों पर परदा है और उनके लिए बड़ा अज़ाब है।

(8) और कुछ लोग वह हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर

ईमान लाएँ, हालांकि वह मोमिन नहीं हैं।

(9) वह अल्लाह को और उन लोगों को ध ाोखा देते हैं जो ईमान लाए मगर वह अपने आपके सिवा किसी को धोखा नहीं देते और वह समझ नहीं रखते।

(10) उनके दिलों में (निफाक़ की) बीमारी है, पस अल्लाह ने उनकी बीमारी बढ़ा दी और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है इस बिना पर कि वह झूठ बोलते थे।

(11) और जब उनसे कहा जाता है कि ज़मीन में फसाद न करो तो वह कहते हैं कि हम तो सिर्फ इस्लाह (सुधार) करने वाले हैं।

(12) सुन लो! बेशक वही फसाद करने वाले हैं लेकिन समझ नहीं रखते।

(13) और जब उनसे कहा जाता है कि ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं तो वह कहते हैंः क्या हम ईमान लाए जैसे बेवक़ूफ ईमान लाए हैं? बेशक वही बेवक़ूफ हैं लेकिन वह नहीं जानते।

(14) और जब वह उनसे मिलते है जो ईमान लाए तो कहते हैंः हम ईमान ले आए और जब वह अपने शैतानों के पास तन्हा होते हैं तो कहते हैंः यक़ीनन हम तुम्हारे साथ हैं, उन लोगों से तो हम सिर्फ मज़ाक़ करते हैं।

(15) अल्लाह उनसे मज़ाक़ करता है और उन्हें उनकी सरकशी में ढील देता है, वह (उसमें) भटकते फिरते हैं।

(16) यह वह लोग हैं जिन्होंने गुमराही खरीद ली हिदायत के बदले, तो उनकी तिजारत ने उन्हें कोई नफा न दिया और वह हिदायत याफ्ता न हुए।

(17) उनकी मिसाल उस शख़्स की सी है जिसने आग जलाई, फ़िर जब आग ने उसके इर्द गिर्द को रोशन कर दिया तो अल्लाह उनकी रोशनी ले गया और उन्हें अंधेरों में छोड़ दिया, पस वह देख नहीं पाते।

(18) (वह) बहरे, गूंगे और अंधे हैं, अब वह नहीं लौटेंगे।

(19) या (उनकी मिसाल) ज़ोरदार बारिश की सी है जो आसमान से (आती) है, उसमें अंधेरे, गरज और बिजली होती है, वह बिजली के कड़के सुन कर मौत के डर से अपनी उँगलियां अपने कानों में ठूस लेते हैं, और अल्लाह काफिरों को घेरने वाला है।

(20) क़रीब है कि बिजली उचक ले जाए उनकी आँखें। जब बिजली उन पर चमकती है तो वह उस (की रोशनी) में चलने लगते हैं और जब उन पर अंधेरा होता है तो ठहर जाते हैं, और अगर अल्लाह चाहे तो उनके कान और उनकी आंखें छीन ले, यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(21) ऐ लोगों! तुम अपने रब की इबादत

करो जिसने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को भी जो तुम से पहले थे ताकि तुम परेहज़गार बन जाओ।

(22) वह (रब) जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछोना बनाया और आसमान को छत (बनाया) और उसने आसमान से पानी नाज़िल किया, फ़िर उसके ज़रिये से (कई क़िस्म के) फलों से तुम्हारे लिए रिज़्क़ निकाला। अब तुम अल्लाह के साथ शरीक न ठहराओ, इस हाल में कि तुम जानते हो।

(23) और अगर तुम इस (कुरआन) के बारे में शक में हो जो हमने अपने बन्दे पर नाज़िल किया तो तुम इस जैसी एक सूरत ले आओ और अल्लाह के सिवा अपने मददगारो को भी बुला लो अगर तुम सच्चे हो।

(24) पस अगर तुम (यह काम) न कर सको और तुम कर भी नहीं सकोगे, तो उस आग से बचो जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं और (वह) काफिरों के लिए तैयार की गई है।

(25) और उन लोगों को खुशखबरी दे दीजिए जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किये, यक़ीनन उनके लिए बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। जब भी उन्हें उसमें से कोई फल खाने को दिया जाएगा तो वह कहेंगे कि यह तो वही है जो हमें इससे पहले दिया गया था और उनको उससे मिलता जुलता (फल भी) दिया जाएगा, और उनके लिए वहाँ पाकिज़ा बीवियां होंगी और वह उन बागों में हमेशा रहेंगे।

(26) यक़ीनन अल्लाह इस बात से नहीं शर्माता कि वह कोई मिसाल बयान करे मच्छर की हो या उससे भी बढ़ कर (हक़ीर या अज़ीम) हो। फ़िर जो लोग ईमान लाए वह तो जानते हैं कि बेशक यह उनके रब की तरफ से हक़ है लेकिन जिन लोगों ने कुफ्र किया वह कहते हैं कि ऐसी मिसालें पेश करने से अल्लाह की मुराद क्या है? अल्लाह इससे बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है और वह उनसे नाफरमानों के सिवा किसी को गुमराह नहीं करता।

(27) जो लोग अल्लाह का अहद (प्रतिज्ञा को) पक्का कर लेने के बाद उसे तोड़ते हैं और जिन (रिश्तों) को अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है उन्हें काटते हैं और ज़मीन में फसाद करते हैं, वही लोग नुक्सान उठाने वाले हैं।

(28) तुम अल्लाह के साथ कैसे कुफ्र करते हो? हालांकि तुम मुरदे थे फ़िर उसने तुम्हें ज़िन्दा किया फ़िर तुम्हें मौत देगा फ़िर वही तुम्हें ज़िन्दा करेगा फ़िर उसकी तरफ तुम लौटए जाओगे।

(29) वही है (अल्लाह) जिसने तुम्हारे लिए

पैदा किया सबका सब जो कुछ ज़मीन में है फ़िर आसमान की तरफ रूख किया, फ़िर ठीक करके सात आसमान बना दिए, और वह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

(30) और (याद करो) जब आपके रब ने फरिश्तों से कहाः बेशक मैं ज़मीन में एक खलीफा बनाने वाला हूँ। उन्होंने कहाः क्या तू ज़मीन में उसको बनाएगा जो उसमें फसाद करेगा और खून बहाएगा? और हम तेरी तारीफ के साथ तस्बीह करते हैं और तेरी पाकीज़गी बयान करते हैं। अल्लाह ने कहाः बेशक में वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

(31) और उसने आदम को सब के सब नाम सिखा दिए फ़िर उन्हें फरिश्तों के सामने पेश किया और कहाः अगर तुम सच्चे हो तो मुझे उन चीज़ों के नाम बताओ।

(32) उन्होंने कहाः तू पाक है, हमें इल्म नहीं सिवाए उसके जो तूने हमें सिखा दिया, बेशक तू ही खूब जानने वाला, बड़ा हिकमत वाला है।

(33) अल्लाह ने कहाः ऐ आदम! तू उन्हें उन चीज़ों के नाम बता दे, तो जब उसने उन्हें उन चीज़ों के नाम बता दिए तो अल्लाह ने कहाः क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि बेशक मैं आसमानों और ज़मीन के ग़ैब (तमाम छुपी चीज़ें) जानता हूँ और वह भी जानता हूँ जो तुम ज़ाहिर (व्यक्त) करते हो और जो छुपाते हो।

(34) और जब हमने फरिश्तों से कहाः तुम आदम को सज्दा करो, तो सिवाए इब्लीस के सबने सज्दा किया, उसने इन्कार किया और घमंड किया और वह काफिरों में से हो गया।

(35) और हमने कहाः ऐ आदम! तू और तेरी बीवी जन्नत में रहो इसमें से सैर हो कर खाओ जहाँ से चाहो, (लेकिन) उस दरख़्त (पेड़) के क़रीब मत जाना वरना तुम दोनों ज़ालिमों में से हो जाओगे।

(36) फ़िर शैतान ने उनको उससे फुसला दिया और उन्हें उससे निकलवा दिया जिसमें वह थे और हमने कहाः यहाँ से उतरो, तुममें से कुछ लोग कुछ के दुश्मन हैं और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठिकाना है और तुम्हें एक (खास) वक़्त तक उससे फायदा उठाना है।

(37) फ़िर आदम ने अपने रब से चंद कलमे सीख लिए तो (अल्लाह ने मेहरबानी करते हुए) उसकी तौबा क़बूल कर ली, बेशक वही बहुत तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(38) हमने कहाः तुम सब यहाँ से उतरो, फ़िर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से कोई हिदायत आए तो जिसने मेरी हिदायत की पैरवी की तो उन पर कोई ख़ौफ होगा न वह ग़मग़ीन होंगे।

(39) और जिन लोगों ने कुफ्र किया और

हमारी आयतों को झुठलाया वही दोज़ख वाले हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(40) ऐ बनी इस्राईल! तुम मेरी वह नेअमत (उपकार) याद करो जो मैंने तुम पर इनाम की और तुम मेरा अहद (वादा) पूरा करो, मैं तुम्हारे अहद पूरा करूंगा और मुझ ही से डरो।

(41) और इस (किताब) पर ईमान लाओ जो मैंने नाज़िल की जबकि वह उस किताब की तस्दीक़ करने वाली है जो तुम्हारे पास है और तुम उसका सबसे पहले इन्कार करने वाले न बनो और तुम मेरी आयतों को थोड़ी क़ीमत में न बेचो, और मुझ ही से डरो।

(42) और हक़ को बातिल के साथ खलत मलत (गड्-मड्) न करो और हक़ को मत छुपाओ हालांकि तुम जानते हो।

(43) और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और रूकू करने वालो के साथ रूकू करो।

(44) क्या तुम लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने आपको भूल जाते हो, हालांकि तुम किताब पढ़ते हो फ़िर क्या तुम अक़्ल नहीं रखते?

(45) और तुम सब्र और नमाज़ के ज़रिये से अल्लाह की मदद तलब करो और बेशक यह बहुत भारी है मगर अल्लाह से डरने वालों पर (भारी नहीं)।

(46) जो लोग इस बात का यक़ीन रखते हैं वह अपने रब से ज़रूर मिलने वाले हैं और यह कि बेशक वह उसी की तरफ लौटने वाले हैं।

(47) ऐ बनी इस्राईल! तुम मेरी वह नेअमत याद करो जो मैंने तुम पर इनाम की और बेशक मैंने तुम्हें फज़ीलत दी थी जहाँनो पर।

(48) और उस दिन से डरो जब कोई जान किसी जान को कुछ फायदा नहीं देगी और न उससे कोई सिफारिश क़बूल की जाएगी और न उससे कोई एवज़ (बदला) लिया जाएगा और न उनकी मदद की जायेगी।

(49) और (याद करो) जब हमने तुम्हें आले फ़िरऔन से निजात दी वह तुम्हें सख्त अज़ाब देते थे, तुम्हारे बेटों को ज़िब्ह करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा छोड़ देते थे, और उसमें तुम्हारे रब की तरफ से बहुत बड़ी आज़माईश थी।

(50) और जब हमने तुम्हारे लिए समन्दर को फाड़ दिया, फ़िर हमने तुम्हें निजात दी और हम ने आले फ़िरऔन को डुबो दिया जबकि तुम देख रहे थे।

(51) और जब हमने मूसा से वादा किया चालीस रातों का, फ़िर मूसा के (तूर पहाड़ पर) जाने के बाद तुमने बछड़े को मअ़बूद (पूज्य) बना लिया और तुम ज़ालिम थे।

(52) फ़िर उसके बाद हमने तुम्हें माफ कर दिया ताकि तुम शुक्र करो।

(53) और जब हमने मूसा को किताब और फ़ुरक़ान (हक़ व बातिल के दरम्यान फ़र्क़ करने वाली) दी ताकि तुम हिदायत पाओ।

(54) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहाः ऐ मेरी क़ौम! बेशक तुमने अपने आप पर ज़ुल्म किया है बछड़े को (मअ़बूद) बना कर, लिहाज़ा अब तुम अपने पैदा करने वाले के हुज़ूर तौबा करो और तुम अपने आपको क़त्ल करो, यह तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक बहुत बेहतर है। फ़िर अल्लाह ने तुम्हारी तौबा क़बूल की, बेशक वही बहुत तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(55) और जब तुमने कहाः ऐ मूसा! हम हरगिज़ तुझ पर ईमान नहीं लाएँगे यहाँ तक कि हम अल्लाह को सामने न देख लें तो तुम्हें बिजली ने पकड़ लिया और तुम देख रहे थे।

(56) फ़िर हमने तुम्हें ज़िन्दा किया तुम्हारी मौत के बाद ताकि तुम शुक्र करो।

(57) और हमने तुम पर साया किया बादलों का और (खाने के लिए) तुम पर मन्न व सलवा उतारा (और कहा कि) उन पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हमने तुम्हें अता कीं और उन्होंने हम पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपने आप पर ही ज़ुल्म करते थे।

(58) और जब हमने कहाः तुम उस बस्ती में दाख़िल हो जाओ और उसमें जहाँ से तुम चाहो जी भर कर खाओ और तुम दरवाज़े में सज्दा करते हुए दाख़िल होना और कहनाः ऐ अल्लाह! हमें बख़्श दे, तो हम तुम्हारी ख़ताएँ (गलतियाँ) माफ कर देंगे और अनक़रीब (जल्द ही) हम एहसान करने वालों को ज़्यादा देंगे।

(59) तो जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, उन्होंने बात बदल दी, सिवाए उसके जो उनसे कही गई थी, फ़िर हमने उन ज़ालिम लोगों पर आसमान से अज़ाब नाज़िल किया, इस वजह से कि वह नाफरमानी करते थे।

(60) और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा तो हमने कहाः अपनी लाठी पत्थर पर मार, फिर उस (पत्थर) से बह निकले बारह चश्मे, हर क़बीले ने अपना अपना घाट पहचान लिया। (हमने कहाः) खाओ और पीओ अल्लाह के रिज़्क़ से और तुम ज़मीन में फसाद करते हुए न फिरो।

(61) और जब तुमने कहाः ऐ मूसा! हम एक ही खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकते, लिहाज़ा हमारे लिए अपने रब से दुआ मांग कि वह हमारे लिए वह चीज़ें निकाल दे जो ज़मीन उगाती है, (यानी) उसकी तरकारी

(साग), ककड़ी, गेहूँ, मसूर और प्याज़। मूसा ने कहाः क्या तुम कमतर चीज़ लेना चाहते हो बदले उस चीज़ के जो बेहतर है? उतरो किसी शहर में, तो बेशक वहाँ तुम्हारे लिए वही कुछ है जिसका तुमने सवाल किया, और उन पर ज़िल्लत और मोहताजी मुसल्लत कर दी गई और वह अल्लाह के ग़ज़ब के साथ लौटे। यह इसलिए हुआ कि बेशक वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और क़त्ल करते थे नबियों को नहक़ यह इस सबब से कि उन्होंने नाफरमानी की और वह हद से बढ़ जाने वाले थे।

(62) बेशक जो लोग ईमान लाए, और जो यहूदी, ईसाई और साबी (बेदीन) हुए, उनमें से जो भी अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया और नेक अमल किये तो उनका अज्र (बदला) उनके रब के पास है, न तो उन्हें कोई ख़ौफ होगा और न वह ग़मग़ीन होंगे।

(63) और जब हमने तुमसे पुख़्ता वादा लिया और तुम पर तूर पहाड़ को बुलंद किया (और कहाः) हमने तुम्हें जो दिया है उसे मजबूती से पकड़ लो, और जो कुछ इस (किताब) में है उसे याद रखो ताकि तुम परेहजगार बन जाओ।

(64) फ़िर उसके बाद तुम फ़िर गए, तो अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत न होती तो तुम ज़रूर नुक्सान पाने वालों में से हो जाते।

(65) और यक़ीनन तुम्हें उन लोगों का इल्म है जिन्होंने तुममें से हफ्ते (के दिन) में ज़्यादती की तो हमने उनसे कहाः तुम ज़लील बन्दर बन जाओ।

(66) फ़िर हमने उस (वाक़िये) को उनके लिए इबरत बन दिया जो उस ज़माने में थे और जो उसके बाद आने वाले थे और परेहज़गार लोगों के लिए (उसे) नसीहत (बना दिया)।

(67) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहाः बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़िब्ह करो, उन्होंने कहाः क्या तू हमसे मज़ाक़ करता है? मूसा ने कहाः मैं इससे अल्लाह की पनाह मांगता हूँ कि मैं जाहिलों में से हो जाऊं।

(68) उन्होंने कहाः तू हमारे लिए अपने रब से दुआ कर कि वह हमारे लिए बयान करे कि वह (गाय) कैसी हो? मूसा ने कहाः बेशक अल्लाह कहता है कि वह गाय बूढ़ी हो न बच्चा, उनके दरम्यान उम्र की हो, तो तुम करो जो तुम्हें हुक्म दिया जाता है।

(69) उन्होंने कहाः तू हमारे लिए अपने रब से दुआ कर कि वह हमारे लिए बयान करे उसका रंग कैसा हो? मूसा ने कहाः अल्लाह फरमाता है बेशक वह (गाय) सुनहरे रंग की

हो, उसका रंग खूब गहरा हो, देखने वालों को खुश कर दे।

(70) उन्होंने कहाः हमारे लिए अपने रब से दुआ कर वह हमारे लिए (खोल कर) बयान करे कि वह गाय किस क़िस्म की हो? बेशक इस तरह की बहुत सी गायें है पता नहीं चलता, और यक़ीनन अगर अल्लाह ने चाहा तो हम ज़रूर राह पा लेंगे।

(71) मूसा ने कहाः बेशक अल्लाह फरमाता है कि वह गाय मेहनत करने वाली न हो कि ज़मीन में हल चलाती हो और न खेती को पानी देती हो, बेऐब हो, उसमें कोई दाग़ धब्बा न हो, उन्होंने कहाः अब तू हक़ लाया है फ़िर उन्होंने उसे ज़िब्ह किया और लगते नहीं थे कि वह यह काम करेंगे।

(72) और जब तुमने एक शख्स को क़त्ल कर दिया था, फ़िर तुमने उसके बारे में झगड़ा किया और अल्लाह उसे ज़ाहिर करने वाला था जिसे तुम छुपाते थे।

(73) हमने कहाः तुम इस (गाय के गोश्त) का एक टुकड़ा इस मुरदे को मारो, अल्लाह इसी तरह मुर्दो को ज़िन्दा करेगा और वह तुम्हें दिखाता है अपनी (कुदरत की) निशानियां ताकि तुम समझो।

(74) फ़िर उसके बाद तुम्हारे दिल सख्त हो गए, जैसाकि वह पत्थर हैं या उनसे भी ज़्यादा सख्त, और बेशक कुछ पत्थर वह हैं कि उनसे नहरें फूटती हैं, और बेशक उनमें से कुछ वह हैं कि फट पड़ते हैं फ़िर उनसे पानी निकलता है, और बेशक उनमें से कुछ वह हैं कि अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं और अल्लाह उससे ग़ाफिल (बेख़बर) नहीं जो तुम अमल करते हो।

(75) (मुसलमानों!) क्या फ़िर तुम उम्मीद रखते हो कि वह तुम्हारी खातिर ईमान ले आएँगे, हालांकि उनमें से एक फरीक़ (गिरोह) ऐसा है कि वह अल्लाह का कलाम सुनते हैं फ़िर वह उसे समझ लेने के बाद उसमें तहरीफ (हेर फैर) कर देते हैं हालांकि वह जानते हैं।

(76) और जब वह उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान लाए तो कहते हैंः हम भी ईमान लाए हैं, और जब वह एक दूसरे के साथ तन्हा होते हैं तो (आपस में) कहते हैंः क्या तुम मुसलमानों को वह बातें बतलाते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली हैं ताकि वह तुम्हारे रब के यहाँ तुम्हारे खिलाफ उन बातों को बतौर हुज्जत (सबूत) पेश करें? क्या तुम अक़्ल नहीं रखते?

(77) क्या वह नहीं जानते कि बेशक अल्लाह (सब कुछ) जानता है जो वह छुपाते और जो ज़ाहिर करते हैं?

(78) और उनमें से कुछ अनपढ़ हैं, वह किताब को नहीं जानते सिवाए झूठी आरजूओं के और बस वह सिर्फ गुमान करते हैं।

(79) फिर उन लोगों के लिए हलाकत है जो अपने हाथों से किताब लिखते हैं, फ़िर कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ से है ताकि उसके बदले में थोड़ी सी क़ीमत ले लें, उनके हाथों ने जो लिखा उसकी वजह से उनके लिए हलाकत (बरबादी) है, और जो वह कमाते हैं उसकी वजह से उनके लिए हलाकत (बरबादी) है।

(80) और उन्होंने कहाः आग हमें गिनती के चंद दिनों के सिवा हरगिज़ नहीं छुएगी। कह दीजिएः क्या तुमने अल्लाह से कोई अहद लिया है? फ़िर तो अल्लाह अपने अहद के खिलाफ हरगिज़ नहीं करेगा। क्या तुम वह बात कहते हो अल्लाह के बारे में जो तुम नहीं जानते?

(81) क्यों नहीं! जिसने कोई बुराई कमाई और उसे उसकी बुराई ने घेर लिया, तो वही लोग दोज़खी हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(82) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये, वही जन्नती हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(83) और जब हमने बनी इस्राईल से पक्का वादा लिया कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करना और वाल्दैन (माँ-बाप), रिश्तेदारों, यतीमों और मिस्कीनों से नेक सुलूक करना और तुम लोगों से अच्छी बातें कहना और नमाज़ क़ायम करना ज़कात देना, फ़िर तुम इस (वादे) से फ़िर गए मगर तुममें से थोड़े (इसके पाबंद रहे) और तुम फ़िर जाने वाले ही हो।

(84) और जब हमने तुमसे पक्का वादा लिया कि तुम आपस में एक दूसरे का खून न बहओगे और न निकालोगे अपने लोगों को अपने वतन से फ़िर तुमने इक़रार किया और तुम (इस बात के) गवाह हो।

(85) फ़िर तुम ही वह लोग हो कि अपनों को क़त्ल करते हो और अपनों में से एक फरीक़ (गिरोह) को उनके घरों से निकाल देते हो, तुम उनके खिलाफ गुनाह और ज़्यादती के साथ दूसरों की मदद करते हो और अगर वह तुम्हारे पास क़ैदी हो कर आएं तो तुम उन्हें फिदया (जुर्माना) दे कर छुड़ाते हो, हालांकि तुम पर उनका निकाल देना ही हराम कर दिया गया था, क्या तुम किताब के एक हिस्से पर ईमान लाते हो और दूसरे हिस्से का इन्कार करते हो? फ़िर तुममें से जो शख़्स यह काम करेगा उसकी सज़ा इसके सिवा कोई नहीं कि रूस्वाई हो दुनियावी ज़िन्दगी में और क़यामत के दिन वह सख़्त तरीन अज़ाब की तरफ ध केले जाएँगे और तुम जो अमल करते हो अल्लाह उससे ग़ाफिल नहीं है।

(86) यह वह लोग हैं जिन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत के बदले खरीद लिया है, लिहाज़ा न तो उनसे अज़ाब हल्के होंगे न

उनकी मदद ही की जाएगी।

(87) और बेशक हमने मूसा को किताब दी और उसके बाद उसके पीछे पे दर पे रसूल भेजे और हमने ईसा इब्ने मरयम को खुली निशानियां दी और उसे रूहुलक़ुद्दुस (जिब्रील) के साथ मदद दी, क्या फ़िर जब कभी तुम्हारे पास कोई रसूल वह चीज़ लाया जिसे तुम्हारे नफ़्स न चाहते थे, तो तुमने घमंड किया, फ़िर तुमने एक फरीक़ को झुठलाया और दूसरे फरीक़ (गिरोह) को तुम क़त्ल कर देते रहे।

(88) और उन्होंने कहाः हमारे दिल ग़िलाफों (परदों) में हैं (नहीं) बल्कि उनके कुफ्र की वजह से अल्लाह ने उन पर लअनत की है, लिहाज़ा कम लोग ही ईमान लाते हैं।

(89) और जब उनके पास अल्लाह की तरफ से वह किताब आ गई जो उस (किताब) की तस्दीक़ करती है जो उनके पास है, और इससे पहले वह उन लोगों के खिलाफ फतह मांगते थे जिन्होंने कुफ्र किया, फ़िर जब उनके पास वह (हक़) आ गया जिसे उन्होंने पहचान लिया तो उन्होंने उसका इन्कार कर दिया, लिहाज़ा काफिरों पर अल्लाह की लअनत है।

(90) वह चीज़ बहुत बुरी है जिसके बदले उन्होंने अपने नफ़्स (प्राण) बेच दिए, यह कि वह उस चीज़ का इन्कार करते हैं जो अल्लाह ने नाज़िल की, सिर्फ उस हसद की बिना पर कि अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे अपना फज़्ल (कृपा) नाज़िल करे, पस वह ग़ज़ब (प्रकोप) दर ग़ज़ब के साथ लौटे और काफिरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है।

(91) और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह की उतारी हुई (किताब) पर ईमान लाओ तो कहते हैं कि हम उस पर ईमान लाते हैं जो हम पर नाज़िल की गई है, और जो उसके अलावा है उसका इन्कार करते हैं, हालांकि वह (कुरआन) हक़ है उस (किताब) की तस्दीक़ करता है जो उनके पास है, कह दीजिएः फ़िर इससे पहले तुम अल्लाह के नबियों को क्यों क़त्ल करते रहे अगर तुम मोमिन थे?

(92) और बेशक मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियां ले कर आए, फ़िर उसके बाद तुमने बछड़े को पूजना शुरू कर दिया और तुम ही ज़ालिम।

(93) और (याद करो) जब हमने तुमसे पक्का वादा लिया और हमने तुम पर तूर पहाड़ को बुलंद किया (और कहाः) हमने तुम को जो दिया है उसे सख्ती के साथ पकड़ो और सुनो! उन्होंने कहाः हमने सुना और हम ने नाफरमानी की, और उनके कुफ्र की वजह से उनके दिलों में बछड़े की मुहब्बत पिला (डाल) दी गई, कह दीजिएः अगर तुम

मोमिन हो तो वह काम बुरा है जिसे करने का तुम्हारा ईमान तुम्हें हुक्म देता है।

(94) कह दीजिए अगर अल्लाह के यहाँ आख़िरत का घर, खास तुम्हारे ही लिए है औरों को छोड़ कर तो तुम मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो।

(95) और वह अपने उन गुनाहों की वजह से, जो अपने हाथों कमा कर आगे भेज चुके हैं, उस (मौत) की कभी तमन्ना नहीं करेंगे, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानने वाला है।

(96) और यक़ीनन आप उन (यहूदियों) को सब लोगों से बढ़ कर जिन्दगी के हरीस (लालची) पायेंगे और उन लोगों से भी ज़्यादा जिन्होंने शिर्क किया, उनमें से हर एक चाहता है काश! उसे एक हज़ार साल की उम्र मिल जाए, हालांकि इस कदर उम्र का मिलना भी उसे अज़ाब से बचाने वाला नहीं और जो अमल वह करते हैं अल्लाह उसे खूब देखने वाला है।

(97) (ऐ नबी!) कह दीजिएः जो कोई जिब्रील का दुश्मन है, तो उसीने इस कुरआन को अल्लाह के हुक्म से आपके दिल पर नाज़िल किया है, यह उस (किताब) की तस्दीक़ करता है जो इससे पहले नाज़िल हुई और मोमिनों के लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) और बशारत (खुशखबरी) है।

(98) जो कोई अल्लाह का, उसके फरिश्तों का, उसके रसूलों का और जिब्रील और मिकाईल का दुश्मन है तो बेशक अल्लाह भी काफिरों का दुश्मन है।

(99) और यक़ीनन हमने नाज़िल कीं आपकी तरफ वाज़ेह आयतें और नाफरमानों के सिवा कोई उनका इन्कार नहीं करता।

(100) क्या (ऐसा नहीं होता रहा कि) जब भी उन्होंने कोई अहद किया तो उनमें से एक गिरोह ने उसे फैंक दिया बल्कि उनमें से अक्सर ईमान नहीं लाते।

(101) और जब भी अल्लाह की तरफ से उनके पास कोई रसूल आया जो उनके पास मौजूद किताब की तस्दीक़ करता था, तो जिन लोगों को किताब दी गई थी उनमें से एक गिरोह ने अल्लाह की किताब को पीठ पीछे फैंक दिया जैसे वह जानते ही नहीं।

(102) और उन्होंने उसकी पैरवी की जिसे शैतान, सुलेमान की बादशाहत में पढ़ते थे, और सुलेमान ने कुफ्र नहीं किया था बल्कि शैतानों ने कुफ्र किया था, वह लोगों को जादू सिखाते थे और उन्होंने उसकी पैरवी की जो बाबिल में हारूत और मारूत दो फरिश्तों पर नाज़िल किया गया था, वह दोनों फरिश्ते जादू सिखाने से पहले कह देते थे कि हम तो सिर्फ आज़माईश हैं, लिहाज़ा तू कुफ्र न कर, फिर भी लोग उन दोनों से

वह जादू सीखते जिसके ज़रिये से वह मर्द और उसकी बीवी के दरम्यान जुदाई डालते, और वह उस जादू से अल्लाह के हुक्म के सिवा किसी को नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते थे। और लोग उनसे वह इल्म सीखते जो उन्हें नुक़्सान पहुंचाता था, उनको नफा नहीं देता था, हालांकि वह यक़ीनन जानते थे कि जिसने उस (जादू) को खरीदा, आख़िरत में उसके लिए कोई हिस्सा नहीं, और अलबत्ता वह बहुत बुरी चीज़ थी जिसके बदले में उन्होंने अपनी जानें बेच डालीं, काश! वह जानते होते।

(103) और अगर वह ईमान लाते और तक़्वा (परेहजगारी) इख़्तियार करते तो बेशक अल्लाह के यहाँ से बहुत अच्छा सवाब (बदला) मिलता, काश! वह जानते होते।

(104) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम (नबी से यह) न कहो ''राइना'' बल्कि कहो ''उनज़ुरना'' और तुम ग़ौर से सुनो और काफिरों के लिए बहुत दर्दनाक अज़ाब है।

(105) अहले किताब में से जिन लोगों ने कुफ्र किया वह नहीं चाहते और न मुश्रिकीन ही चाहते हैं कि तुम पर तुम्हारे रब की तरफ से कोई भलाई नाज़िल की जाए और अल्लाह उसके लिए रहमत खास करता है जिसे चाहता है और अल्लाह फज़्ले अज़ीम का मालिक है।

(106) जो आयत हम मंसूख करते हैं या उसे भुलवा देते हैं तो उससे बेहतर या उसकी जैसी ही ले आते हैं। क्या आप नहीं जानते कि बेशक अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है?

(107) क्या आप नहीं जानते कि बेशक अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाही, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई हिमायती है और न कोई मददगार?

(108) (ऐ मुसलमानों!) क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने रसूल से सवाल करो जैसे इससे पहले मूसा से सवाल किये गए थे? और जिसने ईमान के बदले कुफ्र इख़्तियार किया तो बेशक वह सीधी राह से भटक गया।

(109) अहले किताब में से बहुत से यह चाहते हैं काश कि वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें फ़ेर कर काफिर बना दें, अपने दिलों में हसद करते हुए, इसके बाद कि उनके सामने हक़ वाज़ेह हो चुका, पस माफ करो और जाने दो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म ले आए, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(110) और तुम नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो, और तुम अपने लिए जो भी भलाई आगे भेजोगे, उसे अल्लाह के यहाँ

पाओगे, बेशक तुम जो अमल करते हो अल्लाह उसे खूब देखने वाला है।

(111) और उन्होंने कहाः जन्नत में सिर्फ वही जाएगा जो यहूदी या नसरानी होगा। यह उनकी (बातिल) आरजूएं हैं, कह दीजिएः लाओ तुम अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो।

(112) क्यों नहीं, बल्कि जिसने अपना चेहरा अल्लाह के लिए झुका दिया, इस हाल में कि वह नेकी करने वाला है, तो उसके लिए उसका अज्र उसके रब के पास है और उन्हें कोई ख़ौफ नहीं होगा और न वह ग़मग़ीन होंगे।

(113) और यहूदियों ने कहाः ईसाई किसी चीज़ पर नहीं और ईसाईयों ने कहाः यहूदी किसी चीज़ पर नहीं, हालांकि वह दोनों किताब पढ़ते हैं। इसी तरह जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्होंने भी उनकी बात से मिलती जुलती बात कही, फ़िर क़यामत के दिन अल्लाह उनके दरम्यान उस चीज़ का फैसला फरमाएगा जिसमें वह इख्तिलाफ करते थे।

(114) और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन हो सकता है जिसने लोगों को इस बात से रोका कि अल्लाह की मस्जिदों में अल्लाह का नाम ज़िक्र किया जाए और उन्हें उजाड़ने की कोशिश की? उन (रोकने वालों) के लायक़ तो यह था कि उनमें डरते हुए दाख़िल हों। उनके लिए दुनिया में रूस्वाई है और आख़िरत में बहुत बड़ा अज़ाब है।

(115) और पूरब व पश्चिम अल्लाह ही के लिए हैं, लिहाज़ा तुम जिस तरफ भी मुहँ करोगे वहीं हैं अल्लाह का चेहरा, बेशक अल्लाह वुसअत वाला, खूब जानने वाला है।

(116) और उन्होंने कहाः अल्लाह ने औलाद बना ली है। अल्लाह उससे पाक है, बल्कि उसी के लिए है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब उसी के फ़रमाबरदार हैं।

(117) आसमानों और ज़मीन को बिला नमूना उसीने बनाया है, और जब वह किसी काम का फैसला करता है तो उसके बारे में यही कहता है कि ''हो जा'' तो वह हो जाता है।

(118) और उन लोगों ने कहा जो इल्म नहीं रखतेः अल्लाह हमसे बात क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यो नहीं आती? इसी तरह, उनके बात से मिलती जुलती बात, उन लोगों ने भी कही थी जो उनसे पहले थे, उनके दिल एक जैसे हो गए, बेशक हमने यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां बयान कर दी हैं।

(119) बेशक हमने आपको हक़ के साथ खुशखबरी देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है और दोज़खियों के बारे में आपसे

सवाल नहीं होगा।

(120) और यहूदी और ईसाई आपसे हरगिज़ राज़ी न होंगे यहाँ तक कि आप उनके मज़हब की पैरवी करें। कह दीजिएः बेशक अल्लाह की हिदायत ही हक़ीक़ी हिदायत (मार्ग-दर्शन) है और आपके पास जो इल्म आ गया उसके बाद अगर आपने उनकी ख्वाहिशात की पैरवी की तो आपको अल्लाह (की पकड़) से बचाने वाला न कोई हिमायती होगा और न कोई मददगार।

(121) जिन लोगों को हमने किताब दी वह इसकी तिलावत करते हैं जिस तरह उसकी तिलावत का हक़ है, वही लोग इस पर ईमान लाते हैं और जो कोई इसका इन्कार करता है तो वही हैं नुक़्सान पाने वाले।

(122) ऐ बनी इस्राईल! तुम मेरी उस नेअमत को याद करो जो मैंने तुम पर ईनाम की और बेशक मैंने तुम्हें सारे जहानों पर फज़ीलत दी थी।

(123) और उस दिन से डरो जब कोई शख़्स किसी शख़्स के कुछ भी काम नही आएगा और न उससे कोई बदला क़बूल किया जाएगा और न उसे कोई सिफारिश नफा देगी और न उनकी मदद ही की जायेगी।

(124) और जब इब्राहीम को उसके रब ने चंद कलमात के साथ आज़माया तो उसने उन्हें पूरा कर दिया। अल्लाह ने कहाः बेशक मैं तुझे सब लोगों के लिए इमाम बनाने वाला हूँ। (इब्राहीम ने) कहाः और मेरी औलाद में से भी, अल्लाह ने कहा मेरा अहद (वादा) ज़लिमों को नहीं पहुंचेगा।

(125) और जब हमने बैतुल्लाह को लोगों के लिए बार बार लौट कर आने की और अमन की जगह बनाया और (हुक्म दिया कि) तुम मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ की जगह बनाओ, और हमने हुक्म दिया इब्राहीम और इस्माईल को कि तुम दोनों मेरा घर पाक करो तवाफ करने वालों, एतिकाफ करने वालों और रूकू व सुजूद करने वालों के लिये।

(126) और जब इब्राहीम ने कहाः ऐ मेरे रब! इस (जगह) को अमन वाला शहर बना और इसके बाशिंदो में से जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए, उन्हें फलों से रिज़्क़ दे। अल्लाह ने कहाः और जिसने कुफ्र किया, तो मैं उसे थोड़ा सा फायदा दूँगा फिर मैं उसे आग के अज़ाब की तरफ मजबूर कर दूँगा और वह लौटने की बुरी जगह है।

(127) और (याद करो) जब इब्राहीम और इस्माईल बैतुल्लाह की बुनियादें ऊँची कर रहे थे (और दुआ कर रहे थेः) ऐ हमारे रब! तू हमसे (यह नेकी) क़बूल कर ले, बेशक तू ही खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(128) ऐ हमारे रब! और हम दोनों को अपना फ़रमाबरदार बना और हमारी औलाद

में से एक जमाअत को भी अपना फ़रमाबरदार (बना) और हमें हमारी इबादत के तरीक़े सिखा और हमारी तौबा क़बूल फरमा, बेशक तू ही बहुत तौबा क़बूल करने वाला, बड़ा रहम करने वाला है।

(129) ऐ हमारे रब! और उन लोगों के लिए उन्हीं में से एक रसूल भेज, वह उनके सामने तेरी आयतें तिलावत करे, और उन्हें किताब और हिकमत की तअलीम दे, और उन्हें पाक करे, बेशक तू ही ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(130) और कौन मुहँ फेर सकता है इब्राहीम के मज़हब से सिवाए उसके जिसने अपने आप को बेवकूफ बना लिया और बेशक हमने इब्राहीम को दुनिया में चुन लिया और यक़ीनन वह आख़िरत में ज़रूर नेकोकारों में से होगा।

(131) और जब इब्राहीम से उसके रब ने कहाः फ़रमाबरदार हो जा! तो उसने कहाः मैं रब्बुलआलमीन का फ़रमाबरदार हो गया।

(132) इब्राहीम ने अपने बेटों को इसी (कलमऐ हक़) की वसियत की और याकूब ने भी कि ऐ मेरे बेटों! बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए यह दीन चुन लिया है, पस तुम्हें हरगिज़ मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुसलमान हो।

(133) क्या जब याकूब की मौत आई उस वक्त तुम मौजूद थे? जब उसने अपने बेटों से कहाः मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे? उन्होंने कहाः हम तेरे मअ़बूद और तेरे बाप दादा इब्राहीम, इस्माईल और इस्हाक़ के मअ़बूद की इबादत करेंगे जो एक मअ़बूद है और हम उसी के फ़रमाबरदार हैं।

(134) यह एक जमाअत थी जो गुज़र गई। उसीके लिए है जो उसने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुमने कमाया, और उनके आमालों की बाबत तुम से सवाल नहीं किया जाएगा।

(135) और उन्होंने कहाः तुम यहूदी या ईसाई हो जाओ तो हिदायत (मार्ग-दर्शन) पा जाओगे। कहः दीजिए (नहीं) बल्कि हम तो मिल्लते इब्राहीम की पैरवी करते हैं जो हक़ का परस्तार था और वह मुश्रिकों में से नहीं था।

(136) तुम कहोः हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस पर भी जो हमारी तरफ नाज़िल किया गया और जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब और उनकी औलाद की तरफ नाज़िल किया गया, और जो मूसा और ईसा को दिया गया और जो नबियों को उनके रब की तरफ से दिया गया, हम उनमें से किसी एक के दरम्यान तफरीक़ (फर्क) नहीं करते और हम उसीके फ़रमाबरदार हैं।

(137) फ़िर अगर वह (अहले किताब)

उस चीज़ पर ईमान ले आएं जिस पर तुम ईमान लाए तो बेशक वह हिदायत पा जाएँगे और अगर वह मुहँ मोड़े तो फ़िर वही हैं मुखालिफत में, सो उनके मुक़ाबले में तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वही खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(138) अल्लाह का रंग इख्तियार करो! और रंग के लिहाज़ से अल्लाह से ज़्यादा अच्छा कौन है? और हम उसी की इबादत करते हैं।

(139) कह दीजिएः क्या तुम हमसे अल्लाह की बाबत झगड़ते हो? हालांकि वह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी रब है और हमारे लिए हमारे अमल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल और हम खालिस उसीके लिए अमल करने वाले हैं।

(140) क्या तुम कहते हो कि बेशक इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याकूब और (उनकी) औलाद यहूदी या ईसाई थे? कह दीजिएः क्या तुम ज़्यादा जानने वाले हो या अल्लाह? और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन है जिसने वह गवाही छुपाई जो अल्लाह की तरफ से उसके पास है? और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं जो तुम अमल करते हो।

(141) यह एक जमाअत थी जो गुज़र गई, उसीके लिए है जो उसने कमाया और तुम्हारे लिए है जो तुमने कमाया, और तुमसे उनके बारे में सवाल नहीं किया जाएगा जो वह अमल करते थे।

(142) जल्द ही बेवक़ूफ लोग (यह) कहेंगे कि उन (मुसलमानों) को उनके क़िब्ले से किस चीज़ ने फ़ेर दिया जिस पर यह थे? कह दीजिएः मश्रिक (पूरब) और मग्रिब (पश्चिम) अल्लाह ही के लिए हैं, वह जिसे चाहता है सीधी राह की तरफ हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है।

(143) और (जैसे तुम्हें हिदायत दी) उसी तरह हमने तुम्हें अफ़ज़ल (उत्तम) उम्मत (समुदाय) बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह हो और रसूल तुम पर गवाह हों। और (ऐ नबी!) जिस क़िब्ले (बैतुल मक़दिस) पर आप पहले थे, उसे तो हमने सिर्फ यह जानने के लिए मुक़र्रर किया था कि कौन रसूल की पैरवी (अनुसरण) करता है और कौन अपनी ऐड़ियों के बल फ़िर जाता है और बेशक यह (क़िब्ले की तब्दीली) बहुत भारी है (काफिरों पर) मगर उन लोगों पर (नहीं) जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान बरबाद कर दे। बेशक अल्लाह लोगों पर बहुत नरमी करने वाला, बड़ा रहम करने वाला है।

(144) हम आपके चेहरे का बार बार आसमान की तरफ उठना देख रहे हैं, तो हम

ज़रूर आपको उस क़िब्ले की तरफ फे़र देंगे जिसे आप पसंद करते हैं फ़िर आप अपना मुहँ मस्जिदे हराम की तरफ फे़र लें, और जहाँ कहीं भी तुम हो अपना मुहँ उसकी तरफ फे़र लो और बेशक वह लोग जिन्हें किताब दी गई वह ज़रूर जानते हैं कि बेशक यह उनके रब की तरफ से हक़ है और अल्लाह उससे ग़ाफिल नहीं जो वह अमल करते हैं।

(145) और (ऐ नबी!) अगर आप उन लोगों के पास हर क़िस्म की निशानी ले आएं जिन्हें किताब दी गई, तो भी वह आपके क़िब्ले की पैरवी (अनुसरण) नहीं करेंगे और न आप उनके क़िब्ले की पैरवी करने वाले हैं, और उन में से कोई गिरोह दूसरे गिरोह के क़िब्ले की पैरवी करने वाला नहीं, और अगर आपने उनकी ख्वाहिशात की पैरवी की, इस इल्म के बाद जो आपके पास आ चुका है तो यक़ीनन उस वक़्त आप ज़ालिमों में से हो जाएँगे।

(146) जिन लोगों को हमने किताब दी वह इस (रसूल) को ऐसे पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं और बेशक उनमें से एक गिरोह ज़रूर हक़ को छुपाता है, हालांकि वह जानते हैं।

(147) यह हक़ है तुम्हारे रब की तरफ से लिहाज़ा (उसके बारे में) तुम हरगिज़ शक में न पड़ना।

(148) और हर एक के लिए एक सिम्त (दिशा) है जिसकी तरफ वह मुहँ करता है, लिहाज़ा तुम नेकियों में एक दूसरे से आगे बढ़ो, तुम जहाँ कहीं भी होगे, अल्लाह तुम सबको ले आएगा बेशक अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(149) और (ऐ नबी!) आप जहाँ से भी निकलें, अपना मुहँ मस्जिदे हराम की जानिब फे़र लें और बेशक वह आपके रब की तरफ से हक़ है और अल्लाह उससे ग़ाफिल नहीं जो तुम अमल करते हो।

(150) और आप जहाँ से भी निकलें, अपना मुहँ मस्जिदे हराम की जानिब कर लें और (ऐ मुसलमानों!) तुम जहाँ कहीं भी हो, अपने मुहँ उसी की जानिब कर लो ताकि तुम्हारे खिलाफ लोगों के लिए कोई हुज्जत न रहे, हाँ उनमें से जिन्होंने ज़ुल्म किया (वह बातें करते रहेंगे) पस तुम उनसे मत डरो सिर्फ मुझ से डरो ताकि मैं तुम पर अपनी नेअमत पूरी करूं और ताकि तुम हिदायत (मार्ग-दर्शन) पाओ।

(151) जैसे हमने तुम्हारे लिए तुम्ही में से एक रसूल भेजा, वह तुम पर हमारी आयतें तिलावत करता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें किताब और हिकमत की तअलीम देता है और तुम्हें वह सिखाता है जो तुम

नहीं जानते थे।

(152) चुनांचे तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूंगा और तुम मेरा शुक्र करो और मेरी नाशुक्री न करो।

(153) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो ! तुम सब्र और नमाज़ के साथ मदद मांगो। बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

(154) और जो अल्लाह की राह में क़त्ल कर दिए जाए, उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वह ज़िन्दा हैं लेकिन तुम समझ नहीं रखते।

(155) और हम तुम्हें किसी क़दर ख़ौफ (डर) और भूख से और मालों, जानों और फलों में कमी करके ज़रूर आज़माएँगे और सब्र करने वालों को खुशखबरी दे दीजिए।

(156) वह लोग कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो वह कहते हैं: बेशक हम अल्लाह ही के लिए हैं और बेशक हम उसकी तरफ लौटने वाले हैं।

(157) यही लोग हैं जिनके लिए उनके रब की तरफ से बख्शिश और रहमत है और यही हिदायत याफ्ता हैं।

(158) बेशक सफा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं, पस जो शख्स बैतुल्लाह का हज या उमरा करे तो उस पर कोई गुनाह नहीं कि वह उन दोंनो का तवाफ करे, और जो शख्स खुशी से कोई नेकी करे तो बेशक अल्लाह क़द्र करने वाला, खूब जानने वाला है।

(159) बेशक जो लोग हमारे नाज़िल करदा खुली दलीलों और हिदायत की बातों को छुपाते हैं इसके बाद कि हमने लोगों के लिए उनको किताब में खोल कर बयान कर दिया है, वही लोग हैं जिन पर अल्लाह लअनत करता है और सब लअतन करने वाले लअनत करते हैं।

(160) मगर वह लोग जिन्होंने तौबा की और अपनी इस्लाह (सुधार) कर ली और (हक़ को) खोल कर बयान किया तो वही लोग हैं जिनकी मैं तौबा क़बूल करता हूँ और मैं बहुत ज़्यादा तौबा क़बूल करने वाला, बहुत रहम करने वाला हूँ।

(161) बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया और इस हाल में मर गए कि वह काफिर ही थे तो वही लोग हैं जिन पर अल्लाह की, फरिश्तों की और सब लोगों की लअनत है।

(162) वह इस (लअनत) में हमेशा रहेंगे, न तो उनसे अज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत ही दी जायेगी।

(163) और तुम्हारा मअ़बूद (पूज्य) एक ही है, उस के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह निहायत मेहरबान, रहम करने वाला है।

(164) बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाईश में और रात और दिन के बदल बदल कर आने जाने में और उन कश्तियों में

जो समंदर में उन चीज़ों को लिए चलती हैं जो लोगों को नफा देती हैं और अल्लाह के नाज़िल करदा आसमानी पानी में कि फ़िर उसके ज़रिये से ज़मीन को, जो मुर्दा हो चुकी थी, ज़िन्दा किया और उन हर क़िस्म के जानवरों में जो उसने ज़मीन में फैलाये हैं और हवाओं के (दिशा) बदलने में और उन बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दरम्यान पाबंद कर दिए गए हैं, अक़्लमंदों के लिए निशानियां हैं।

(165) और कुछ लोग वह हैं जो अल्लाह के सिवा, दूसरों को शरीक ठहराते हैं, वह उनसे यूं मुहब्बत करते हैं जैसे अल्लाह से मुहब्बत (करनी चाहिए) और ईमान वाले अल्लाह की मुहब्बत में ज़्यादा सख्त हैं, और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया अगर वह (उस वक़्त को दुनिया ही में) देख लें जब वह अज़ाब देखेंगे (तो जान लें कि) बेशक सारी कुव्वत अल्लाह ही के लिए है और यह कि बेशक अल्लाह शदीद अज़ाब वाला है।

(166) जब वह लोग जिनकी पैरवी (अनुसरण) की गई थी, उन लोगों से बेज़ार (विरक्त) हो जाएँगे जिन्होनें पैरवी की और वह अज़ाब देखेंगे और उनके तमाम ताल्लुक़ात कट जाएँगे।

(167) और जिन लोगों ने पैरवी की थी, वह कहेंगेः काश कि हमारे लिए एक बार (दुनिया में) वापसी हो तो हम भी उन लोगों से उसी तरह बेज़ार (विरक्त) हो जाएं जिस तरह वह हमसे बेज़ार हो गए हैं। अल्लाह उनके आमाल को नाकाम ख्वाहिश बना कर उनके सामने उसी तरह दिखाएगा और वह आग के अज़ाब से निकलने वाले नहीं होंगे।

(168) ऐ लोगों! तुम उन चीज़ों में से खाओं जो ज़मीन में हलाल और पाकीज़ा हैं और मत पैरवी करो शैतान के क़दमों की, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

(169) बस वह तुम्हें सिर्फ बुराई और बेहयाई का हुक्म देता है और यह कि तुम अल्लाह के बारे में वह बातें कहो जो तुम नहीं जानते।

(170) और जब उनसे कहा जाता है कि तुम इस (कुरआन) की पैरवी (अनुसरण) करो जो अल्लाह ने नाज़िल किया है, तो कहते हैंः (नहीं) बल्कि हम तो उसी चीज़ की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया। क्या (वह पैरवी करेंगे) अगरचे उनके बाप दादा कुछ न समझते हों और न उन्होंने राहे हिदायत ही पाई हो।

(171) और जिन लोगों ने कुफ्र किया, उनकी मिसाल उस शख्स की सी है जो उस (जानवर) को पुकारता है जो पुकारने और चिल्लाने के सिवा कुछ नहीं सुनता। वह बहरे, गूंगे और अन्धे हैं, इसलिए वह अक़्ल

नहीं रखते।

(172) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! तुम उन पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हमने तुम्हें रिज़्क़ के तौर पर दी हैं और अल्लाह का शुक्र करो अगर तुम उसी की इबादत करते हों।

(173) अल्लाह ने तुम पर सिर्फ मुर्दार, खून, खिंजीर (सुअर) का गोश्त और वह चीज़ हराम की है जिस पर अल्लाह के सिवा किसी का नाम पुकारा जाए, फ़िर जो शख़्स मजबूर हो जाए जबकि वह सरकशी करने वाला और हद से गुज़रने वाला न हो तो उस पर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।

(174) बेशक जो लोग अल्लाह की नाज़िल (अवतरित) की गई किताब में से कुछ (बातें) छुपाते हैं और उसके बदले थोड़ा सा मोल लेते है, वह अपने पेटों में आग के सिवा कुछ नहीं भरते और क़यामत के दिन अल्लाह उनसे कलाम नहीं करेगा और न उन्हें पाक ही करेगा और उनके लिए बहुत दर्दनाक अज़ाब है।

(175) वही लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही और बख़्शिश के बदले अज़ाब खरीदा, चुनांचे वह आग पर किस क़दर सब्र करने वाले हैं!

(176) यह इसलिए कि बेशक अल्लाह ने हक़ के साथ किताब नाज़िल फरमाई और बेशक जिन लोगों ने किताब में इख़्तिलाफ किया, वह मुखालिफत में बहुत दूर तक चले गए हैं।

(177) नेकी यह नहीं कि तुम अपना मुहँ पूरब और पश्चिम की तरफ फ़ेर लो बल्कि नेकी तो उस शख़्स की है जो अल्लाह पर, आख़िरत के दिन पर, फरिश्तों पर, (आसमानी) किताबों पर और नबियों पर ईमान लायें और माल से मुहब्बत के बावजूद उसे रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों (ग़रीबों), मुसाफिरों, सवाल करने वालों और गर्दनें छुड़ाने के लिए खर्च करे, और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात दे और (नेकी उनकी भी है जो) जब अहद (वादा) कर लें तो अपना अहद पूरा करें और तंगदस्ती और तकलीफ में लड़ाई के वक़्त सब्र करें, वही लोग सच्चे और वही परेहज़गार हैं।

(178) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! क़त्ल हो जाने वालो (के मामले) में तुम्हारे लिए बराबर का बदला लेना फर्ज़ कर दिया गया है। आज़ाद, आज़ाद के बदले, गुलाम, गुलाम के बदले और औरत, औरत के बदले, फ़िर जिस (क़ातिल) को उसका भाई (मक़्तूल का वली) कुछ (क़िसास) माफ कर दे तो मारूफ तरीक़े से इत्तेबा (दियत का मुतालबा) हो और अच्छे तरीक़े से (दियत की) अदायगी

हो। यह तुम्हारे रब की तरफ से तख़फ़ीफ़ (छूट) और रहमत है, फ़िर इसके बाद जिस शख्स ने ज़्यादती की, उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(179) और ऐ अक़्ल वालों! तुम्हारे लिए बराबर का बदला लेने ही में ज़िन्दगी है ताकि तुम (क़त्ल व ग़ारत से) बचो।

(180) तुम पर फर्ज़ कर दिया गया है कि जब तुम में से किसी की मौत आने लगे, अगर वह माल छोड़े जा रहा हो तो माँ-बाप और रिश्तेदारों के लिए मारूफ (अच्छे) तरीक़े से वसियत करे, यह परेहजगारों पर ज़रूरी है।

(181) फ़िर जो शख्स उस (वसियत) को सुन लेने के बाद बदल दे तो उसका गुनाह उन्हीं लोगों पर होगा जो उसे बदलेंगे, बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(182) फ़िर अगर किसी को वसियत करने वाले की तरफ से हक़ को दबाने या किसी गुनाह का डर हो और वह उनमें सुलाह करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं, बेशक अल्लाह बहुत बख्शने वाला, बड़ा रहम करने वाला है।

(183) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम पर रोज़ा रखना उसी तरह फर्ज़ किया गया है जिस तरह उन लोगों पर फर्ज़ किया गया था जो तुम से पहले थे ताकि तुम मुत्तक़ी (अल्लाह से डरने वाले) बन जाओ।

(184) (रोज़े) गिनती के चंद दिन हैं फ़िर तुम में से कोई बीमार हो या सफर पर हो तो दूसरे दिनों से गिनती पूरी कर ले और जो लोग रोज़े रखने की ताक़त रखते हों (फ़िर न रखें) तो उसका फिदया (जुर्मना) एक मिस्कीन को खाना खिलाना है फ़िर अगर कोई अपनी खुशी से (ज़्यादा) नेकी करे तो यह उसके लिए बेहतर है और तुम्हारा रोज़ा रखना तुम्हारे लिए कहीं बेहतर है अगर तुम इल्म रखते हो।

(185) रमज़ान का महीना वह जिसमें कुरआन नाज़िल किया गया जो इन्सानों के लिए हिदायत है और उसमें हिदायत वाज़ेह और हक़ को बातिल से जुदा करने वाली दलीलें है, फ़िर तुम में से जो शख्स इस महीने को पाए तो उसे चाहिए। कि उसके रोज़े रखे और जो शख्स बीमार हो या सफर पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी करे। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और वह तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहता और ताकि तुम गिनती पूरी करो और उस पर अल्लाह की बड़ाई बयान करो कि उसने तुम्हे हिदायत दी और ताकि तुम शुक्र करो।

(186) और (ऐ नबी!) जब मेरे बन्दे आपसे मेरे बारे में सवाल करें तो बेशक मैं क़रीब हूँ,

मैं दुआ करने वाले की दुआ क़बूल करता हूँ, जब भी वह मुझसे से दुआ करे, इसलिए चाहिए। कि वह भी मेरे हुक्मों को मानें और मुझ पर ईमान लाएँ ताकि वह हिदायत पायें।

(187) तुम्हारें लिए रोज़े की रात को औरतों के साथ सोहबत करना हलाल कर दिया गया है, वह तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास हो। अल्लाह ने जान लिया कि बेशक तुम अपने आपसे ख्यानत करते थे, चुनांचे उसने तुम पर मेहरबानी फरमाई और तुम्हें माफ कर दिया, इस लिए अब तुम उनसे हमबिस्तरी कर सकते हो और अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो लिख रखा है वह तलाश करो, और खाओ और पीओ यहाँ तक कि तुम्हारे लिए सुबह की सफेद धारी काली धारी से वाज़ेह (रोशन) हो जाए, फ़िर तुम रोज़े को रात तक पूरा करो और जब तुम मस्जिदों में एतकाफ बैठो तो अपनी औरतों से हमबिस्तरी न करो, यह अल्लाह की हदें हैं, लिहाज़ा तुम उनके क़रीब मत जाओ, अल्लाह लोगों के लिए अपनी आयतें इसी तरह बयान फरमाता है ताकि वह मुत्तक़ी बनें।

(188) और तुम अपने माल आपस में नाजाईज़ तरीक़े से न खाओ और उन्हें हाकिमों के पास न ले जाओ ताकि तुम लोगों के मालों में से कुछ माल गुनाह के साथ खाओ, हालांकि तुम जानते हो।

(189) (ऐ नबी!) आपसे चांद के (घटने बढ़ने के) बारे में सवाल करते हैं। कह दीजिए वह लोगों के लिए और हज के लिए वक़्त बताने वाला हैं और नेकी यह नहीं कि तुम अपने घरों में उनके पिछवाड़ों की तरफ से आओ बल्कि नेकी यह है कि आदमी परहेज़गारी इख़्तियार करे, और तुम अपने घरों में उनके दरवाज़ों से आओ, और तुम अल्लाह से डरो ताकि तुम फलाह (सफलता) पाओ।

(190) और तुम अल्लाह की राह में उन लोगों से लड़ो (जिहाद करो) जो तुमसे लड़ते हैं और तुम ज़्यादती न करो, बेशक अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसंद नहीं करता।

(191) और तुम उन्हें जहाँ भी पाओ, उनको क़त्ल कर दो और तुम उन्हें निकाल दो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला और फित्ना क़त्ल से ज़्यादा सख़्त (गुनाह) है और तुम उनसे मस्जिदे हराम के पास न लड़ो यहाँ तक कि वह उसमें तुमसे लड़ें, फ़िर अगर वह तुमसे लड़ें तो तुम उन्हें क़त्ल करो, (ऐसे) काफिरों की यही सज़ा है।

(192) फ़िर अगर वह रूक जाए तो बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बहुत रहम करने वाला है।

(193) और उनसे जंग करो यहाँ तक कि

फित्ना बाक़ी न रहे और दीन सिर्फ अल्लाह के लिए हो जाए फ़िर अगर वह रूक जाए तो ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती जाईज़ नहीं।

(194) (तुम पर) माहे हराम (की पाबंदी उनकी तरफ से) माहे हराम (की पाबंदी) के बदले में है और हुरमतें बदले की चीज़ें हैं, पस जो कोई तुम पर ज़्यादती करे तो तुम उसके बराबर उस पर ज़्यादती करो जो ज़्यादती उसने तुम पर की, और अल्लाह से डरो और जान लो कि बेशक अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।

(195) और तुम अल्लाह की राह में खर्च करो और अपने हाथ हलाकत (के काम) में न डालो और तुम नेकी करो, यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है।

(196) और तुम हज और उमरा अल्लाह के लिए पूरा करो। फ़िर अगर तुम्हें (रास्ते में) रोक दिया जाए तो कुरबानी के लिए जो मेयस्सर हो (वह कुरबानी कर दो) और अपने सर न मुढंवाओ यहाँ तक कि कुरबानी अपने हलाल होने की जगह पहुँच जाए। फ़िर अगर कोई शख्स बीमार हो या उसके सर में कोई तकलीफ हो (और वह सर मुडंवा ले) तो फिदये (जुर्माने) में रोज़े रखे या सदक़ा दे या कुरबानी करे, फ़िर जब तुम्हें अमन मिल जाए (और तुम हज से पहले मक्का पहुँच जाओ) तो तुममें से जिसने हज (के एहराम) तक उमरा का फायदा उठाया वह (एहराम खोल कर) जो मेयस्सर हो कुरबानी करे, फ़िर जो शख्स (कुरबानी) न पाए तो वह तीन दिन रोज़े हज के दिनों में रखे और सात उस वक़्त जब तुम घर लौट आओ, यह पूरे दस (रोज़े) हैं। यह हुक्म उस शख्स के लिए है जिसके घर वाले मस्जिदे हराम के पास न रहते हों और तुम अल्लाह से डरो और जान लो बेशक अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है।

(197) हज के महीने मालूम व मुक़र्रर हैं, चुनांचे जिस शख्स ने उन (महीनों) में हज को लाज़िम कर लिया तो हज के दिनों में वह जिन्सी (मियां बीवी के जिस्मानी ताल्लुक़ात की) बातें न करे, अल्लाह की नाफरमानी न करे और किसी से झगड़ा न करे और जो नेक काम तुम करते हो अल्लाह उसे जानता है और (हज के लिए) ज़ादे राह (सफर में ज़रूरत की चीज़ें) ले लो, बेशक बेहतरीन ज़ादे राह तक़्वा है और ऐ अक़्लमंदों! तुम मुझ से डरो।

(198) तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम (हज के दौरान) अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो फ़िर जब तुम अरफात से लौटो तो मशअरे हराम (मुज़्दलिफ़ा) के पास अल्लाह को याद करो और तुम उसे उस तरह याद करो जिस तरह उसने तुम्हे हिदायत

(मार्ग-दर्शन) दी और यक़ीनन उससे पहले तुम गुमराहों में से थे।

(199) फ़िर जहाँ से सब लोग लौटें वहाँ से तुम भी लौटो और अल्लाह से बख़्शिश मांगो, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बहुत रहम करने वाला है।

(200) फ़िर जब तुम अपने हज के अरकान पूरे कर चुको तो अल्लाह को उस तरह याद करो जिस तरह तुम अपने बाप दादा को याद किया करते थे बल्कि उससे भी बढ़ कर (अल्लाह को याद करो) चुनांचे कुछ लोग वह हैं जो कहते हैंः ऐ हमारे रब! हमें दुनिया ही में (सब कुछ) दे दे, ऐसे शख़्स के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं।

(201) और उनमें से कुछ वह हैं जो कहते हैंः ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

(202) उन्ही लोगों के लिए उनकी कमाई का हिस्सा है और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

(203) और गिनती के चंद दिनों में तुम अल्लाह को याद करो फ़िर जिसने दो दिनों (मिना से मक्का की तरफ वापसी) में जल्दी की तो उस पर कोई गुनाह नहीं और जिसने (एक दिन की) ताखीर (देरी) की तो उस पर भी कोई गुनाह नहीं (बशर्ते) वह तक़्वा इख़्तियार करे और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि बेशक तुम्हें उसी के हुज़ूर इकट्ठा किया जायेगा।

(204) और (ऐ नबी!) लोगों में कोई तो ऐसा है कि आपको उसकी बात दुनिया की ज़िदंगी में बहुत भली लगती है और जो कुछ उसके दिल में है उस पर वह अल्लाह को गवाह ठहराता है हालांकि वह सख़्त झगड़ालू है।

(205) और जब वह पलटता है तो कोशिश करता है कि ज़मीन में फसाद फैलाऐ, खेती और नस्ल को तबाह करे और अल्लाह फसाद को पसंद नहीं करता।

(206) और जब उससे कहा जाता हैः तू अल्लाह से डर तो उसका ग़ुरूर उसे गुनाह पर उभारता है, चुनांचे ऐसे शख़्स के लिए जहन्नम काफी है और यक़ीनन वह बुरा ठिकाना है।

(207) और लोगों में से कोई ऐसा भी जो अल्लाह की रज़ामंदी हासिल करने के लिए अपने आपको (उसके हाथ) बेच डालता है और अल्लाह अपने बंदों पर बहुत शफीक़ (मेहरबान) है।

(208) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ और तुम शैतान के क़दमों की पैरवी मत करो, बेशक शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है।

(209) फ़िर अगर तुम्हारे पास वाज़ेह दलाईल आ जाने के बाद तुम फ़िसल जाओ तो जान लो कि बेशक अल्लाह ग़ालिब है, खूब हिकमत वाला।

(210) क्या अब वह इस इन्तिज़ार में हैं कि अल्लाह बादलों के साये में उनके सामने चला आए और फरिश्ते भी और (उनके) मामले का फैसला ही कर डाला जाए? आख़िर सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ लौटाए जाते हैं।

(211) पूछिये बनी इस्राईल से! हमने उन्हें कितनी वाज़ेह (साफ खुली) निशानियां दीं और जो कोई अल्लाह की नेअमत पा लेने के बाद उसे बदल देता है तो बेशक अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है।

(212) जिन लोगों ने कुफ्र किया, उनके लिए दुनिया की ज़िदंगी लुभावनी है और वह उन लोगों से मज़ाक़ करते हैं जो ईमान लाए हैं और जो लोग मुत्तक़ी (परेहजगार) हैं वह क़यामत के दिन उनसे बुलंद मर्तबे होंगे और अल्लाह जिसे चाहता है बग़ेर हिसाब के रिज़्क़ देता है।

(213) लोग (पहले) एक ही उम्मत (समुदाय) थे (फ़िर उनमें इख्तिलाफ पैदा हो गए) तो अल्लाह ने नबी भेजे, खुशखबरी देने वाले और डराने वाले और उनके साथ उसने बरहक़ किताब नाज़िल की ताकि वह लोगों के दरम्यान उन बातों का फैसला करे जिनमें उन्होंने इख्तिलाफ (विभेद) किया और उसमें इख्तिलाफ उन्हीं लोगों ने आपस की ज़िद से किया जिन्हें किताब दी गई थी हालांकि उनके पास वाज़ेह दलील आ गई थी, फ़िर जो ईमान ले आए उन्हें अल्लाह ने अपने हुक्म से उस हक़ का रास्ता दिखा दिया जिसमें लोगों ने इख्तिलाफ किया था और अल्लाह जिसे चाहता है, सीधा रास्ता दिखा देता है।

(214) क्या तुम्हारा ख्याल है कि तुम यूंही जन्नत में दाख़िल हो जाओगे हालांकि अभी तक तुम्हें उन लोगों की तरह (मुश्किलें) पेश नहीं आई जो तुमसे पहले गुज़रे? उनको सख्ती और तकलीफ पहुँची और वह हिला डाले गए यहाँ तक कि रसूल और वह लोग जो उन पर ईमान लाए थे, कहने लगेः अल्लाह की मदद कब आयेगी? सुन लो! बेशक अल्लाह की मदद क़रीब है।

(215) (ऐ नबी!) लोग आपसे सवाल करते हैं कि वह क्या खर्च करें? कह दीजिएः तुम अपने माल में से जो भी खर्च करो तो अपने वाल्दैन (माँ-बाप), रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों (ग़रीबों) और मुसाफिरों के लिए (खर्च करो) और तुम जो भलाई भी करोगे, बेशक अल्लाह उसे खूब जानने वाला है।

(216) तुम पर जिहाद फर्ज़ कर दिया गया

है और वह तुम्हारे लिए नागवार (नापसंद) है और मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो और यह भी मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को पसंद करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

(217) (ऐ नबी!) लोग आपसे हुरमत वाले महीनें के बारे में पूछते हैं कि उसमें लड़ाई कैसी है? कह दीजिए: उसमें लड़ाई करना बहुत बड़ा (गुनाह) है और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकना और अल्लाह के साथ कुफ्र करना और मस्जिदे हराम से (रोकना) और हरम के रहने वालों को वहाँ से निकालना अल्लाह के नज़दीक उससे भी बड़ा (गुनाह) है और फित्ना फैलाना क़त्ल से कहीं बड़ा गुनाह है। और वह (काफिर) तो हमेशा तुमसे लड़ते रहेंगे यहाँ तक कि अगर उनका बस चले तो वह तुम्हें तुम्हारे दीन से फ़ेर दें और तुममें से जो शख्स अपने दीन से फ़िर जाए फिर वह हालते कुफ्र ही पर मर जाए तो उन्हीं लोगों के आमाल दुनिया और आख़िरत (दोनों) में बरबाद हो गए और वह लोग दोज़खी हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(218) बेशक जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया, वही लोग अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बहुत रहम करने वाला है।

(219) (ऐ नबी!) लोग आपसे शराब और जुऐ के बारे में सवाल करते हैं? कह दीजिए: उन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए (कुछ) फायदा भी है और उन दोनों का गुनाह उनके फायदे से बहुत बड़ा है और वह आपसे पूछते हैं: क्या खर्च करें? कह दीजिए: जो ज़रूरत से ज़ाईद (अधिक) हो, अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम इसी तरह बयान करता है ताकि तुम ग़ौरो फ़िक्र (सोच विचार) करो।

(220) दुनिया और आख़िरत की बाबत, और लोग आप से यतीमों की बाबत पूछते हैं, कह दीजिए: उनकी इस्लाह करना उनके लिए बहुत बेहतर है और अगर तुम अपना और उनका खर्च और रहन सहन इकट्ठा रखो तो वह तुम्हारे भाई ही हैं और अल्लाह जानता है कि फसाद (बिगाड़) करने वाला कौन है और इस्लाह (सुधार) करने वाला कौन, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें तकलीफ में डाल देता, बेशक अल्लाह ग़ालिब है, खूब हिकमत वाला।

(221) और तुम मुश्रिक औरतों से निकाह न करो यहाँ तक कि वह ईमान ले आएं, अलबत्ता एक ईमान वाली लौंडी मुश्रिक औरत से बेहतर है अगरचे वह तुम्हें भली ही लगे और तुम (मुसलमान औरतों को) मुश्रिक

मर्दों के निकाह में न दो यहाँ तक कि वह ईमान ले आएं, अलबत्ता मोमिन ग़ुलाम मुश्रिक से बेहतर है अगरचे वह तुम्हें भला ही लगे। यह (मुश्रिक तो) दोज़ख की तरफ बुलाते हैं और अल्लाह अपने हुक्म से तुम्हें जन्नत और बख्शिश की तरफ बुलाता है और वह लोगों के लिए अपनी आयतें बयान करता है ताकि वह नसीहत (उपदेश) हासिल करें।

(222) और (ऐ नबी!) लोग आपसे हैज़ के बारे में सवाल करते हैं। कह दीजिएः वह तो गंदगी है। तुम हैज़ (की हालत) में औरतों से अलग रहो और उनसे हमबिस्तरी न करो यहाँ तक कि वह पाक हो जाएं, फ़िर जब वह पाक हो जाएं तो उनके पास जाओ जहाँ से अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है, बेशक अल्लाह तौबा करने वालों को पसंद करता है।

(223) तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं, पस तुम जिस तरह चाहो अपनी खेती में आओ और तुम अपनी ज़ात के लिए (नेक अमल) आगे भेजो और अल्लाह से डरो और जान लो कि बेशक (एक दिन) तुम्हें उससे मिलना है और मोमिनों को खुशखबरी सुना दीजिये।

(224) और तुम अल्लाह का नाम अपनी क़समों के लिए इस्तेमाल न करो, यह कि तुम नेकी (नहीं) करोगे और तक़्वा (परेहजगारी नहीं) अपनाओंगे और लोगों के दरम्यान सुलह (नहीं) कराओगे और अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(225) अल्लाह तुम्हारी बेकार क़समों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा लेकिन वह उन क़समों पर तुम्हें ज़रूर पकड़ेगा जिनका तुम्हारे दिलों ने इरादा किया, और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत हौसले वाला है।

(226) जो लोग अपनी औरतों के पास न जाने की क़सम खा लेते हैं उन्हें चाहिए। कि चार माह इन्तिज़ार करें, फ़िर अगर वह रूजू कर लें तो बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बड़ा रहम वाला है।

(227) और अगर उन्होंने तलाक़ ही की ठान ली हो तो बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(228) और तलाक़शुदा औरतें तीन हैज़ तक अपने आपको इन्तिज़ार में रखें और उनके लिए जाईज़ नहीं कि अल्लाह ने उनके पेट में जो कुछ पैदा किया है उसे छुपायें, अगर वह अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखती हैं (तो ऐसा हरगिज़ न करें) और उनके खाविंद (पति) अगर इस्लाह का इरादा रखते हों तो वह ज़्यादा हक़दार हैं कि उन्हें उस (मुद्दत) में लौटा लें, और दस्तूर के मुताबिक़ औरतों के लिए मर्दों पर वैसे ही हुक़ूक़ (अधिकार) हैं जैसे मर्दों के लिए औरतों

पर हैं और मर्दों के लिए उन पर एक फ़ज़ीलत है और अल्लाह ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(229) तलाक़ (रजी) दो मर्तबा है, फ़िर या तो (औरत को) दस्तूर के मुताबिक़ रोक लिया जाए या भलाई के साथ छोड़ दिया जाए और तुम्हारे लिए यह जाईज़ नहीं कि तुम उन्हें जो दे चुके हो, उसमें से कुछ वापस लो, मगर यह कि दोनों को डर हो कि वह अल्लाह की हदें (मर्यादाओं) क़ायम न रख सकेंगे। पस अगर तुम्हें डर हो कि वह दोनों अल्लाह की हदें (सीमाए) क़ायम न रख सकेंगे तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं कि औरत फिदये (जुर्माने) में वह माल दे (कर ख़ुला हासिल कर ले) यह अल्लाह की हदें (सीमाए) हैं, सो तुम उनसे आगे न बढ़ो, और जो लोग अल्लाह की हदों को पार करते हैं, वही ज़ालिम हैं।

(230) फ़िर अगर वह (खाविन्द) उसे (तीसरी) तलाक़ दे तो उसके बाद वह (औरत) उसके लिए हलाल नहीं यहाँ तक कि वह उसके अलावा किसी और खाविन्द से निकाह करे, फ़िर अगर वह भी उसे तलाक़ दे दे तो उन दोनों (साबिक़ा मियां बीवी) पर कोई गुनाह नहीं कि आपस में रूजू कर लें अगर वह दोनों ख्याल करें कि अल्लाह की हदें क़ायम रख सकेंगे, और यह अल्लाह की हदें हैं, वह उन्हें उन लोगों के लिए बयान करता है जो इल्म रखते हैं।

(231) और जब तुम औरतों को (पहली या दूसरी) तलाक़ दो फ़िर उनकी इद्दत पूरी होने को हो तो उन्हें दस्तूर (नियम) के मुताबिक़ रोक लो या उन्हें दस्तूर के मुताबिक़ छोड़ दो और उन्हें सताने के लिए न रोको ताकि तुम ज़्यादती करो और जो कोई ऐसा करेगा वह यक़ीनन अपने आप ही पर जुल्म करेगा और तुम अल्लाह की आयतों को हंसी मज़ाक़ न बनाओ, और अल्लाह की तरफ से तुम पर जो इनआम हो उसे याद करो और उस किताब और हिकमत को भी याद करो जो उसने तुम पर नाज़िल की, वह तुम्हें उसकी नसीहत (उपदेश) करता है और तुम अल्लाह से डरो और जान लो कि बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

(232) और जब तुम औरतों को तलाक़ दो फिर वह अपनी इद्दत को पहुँच जाएं तो तुम उन्हें इस बात से मत रोको कि वह अपने (पहले) खाविन्द (पति) से निकाह करे जबकि वह दस्तूर के मुताबिक़ आपस में राज़ी हों। यह उस शख़्स को नसीहत की जाती जो तुमसे पहले अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है। तुम्हारे लिए बहुत सुलझा हुआ और ज्यादा पाकिज़ा तरीक़ा यही है और अल्लाह जानता है और तुम

नहीं जानते।

(233) और माँऐं अपनी औलाद को पूरे दो साल दूध पिलायें, (यह हुक्म) उस शख़्स के लिए है जो दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे (उस सूरत में) बाप के ज़िम्मे है कि उन (की माओं) को दस्तूर (नियम) के मुताबिक़ खाना और कपड़ा दे, किसी जान पर उसकी गुन्जाईश से बढ़ कर बोझ न डाला जाए, न माँ को उसके बच्चे की वजह से तकलीफ दी जाए और न बाप को उसके बच्चे की वजह से (तंग किया जाए) और (अगर बाप मर जाए तो) उसके वारिसों का यही ज़िम्मा है, फ़िर अगर दोनों (माँ बाप) की आपस की रज़ामन्दी और मश्वरे से दूध छुड़ाने का इरादा करें तो उन दोनों पर कुछ गुनाह नहीं, और अगर तुम इरादा करो कि अपनी औलाद को किसी और औरत से दूध पिलवाओ तो तुम पर कोई गुनाह नहीं जबकि तुम उसे मुआवज़े की अदायगी कर दो जो तुमने दस्तूर के मुताबिक़ देना तय किया हो, और अल्लाह से डरो और जान लो कि बेशक अल्लाह तुम्हारे हर अमल पर कड़ी निगाह रखता है जो तुम करते हो।

(234) और तुममें से जो लोग वफात पा जाएं और पीछे बीवियां छोड़ जाएं तो वह चार माह दस दिन अपने आप को इन्तिज़ार में रखें, फ़िर जब उनकी इद्दत पूरी हो जाए तो तुम पर कोई गुनाह नहीं, वह अपनी ज़ात के मामले में दस्तूर के मुताबिक़ जो चाहें करें (उन्हें इख़्तियार है) और अल्लाह तुम्हारे हर अमल से खूब खबरदार है जो तुम करते हो।

(235) और इस बात में तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम औरतों की इद्दत के दौरान उन्हें इशारे किनाये में निकाह का पैग़ाम दो या तुम अपना इरादा अपने दिलों में छुपाये रखो। अल्लाह जानता है कि बेशक तुम उन औरतों का ज़िक्र ज़रूर करोगे लेकिन उनसे निकाह का खुफिया वादा न करो मगर यही कि दस्तूर के मुताबिक़ बात कहो, और अक़्द निकाह का पुख़्ता इरादा मत करो यहाँ तक इद्दत पूरी हो जाए, और जान लो! बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, पस तुम उससे डरो और जान लो कि बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत बुर्दबार है।

(236) तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम औरतों को तलाक़ दे दो जबकि तुमने उन्हें हाथ न लगाया हो और न उनके लिए कुछ मेहर मुक़र्रर किया हो और उन्हें कुछ माल मताअ दे दो, वुसअत (मालो दोलत) वाले आदमी पर उसकी हैसियत के मुताबिक़ है और तंगदस्त पर उसकी हैसियत के मुताबिक़, मअरूफ (अच्छे) तरीक़े से, (यह) नेकी करने वालों पर लाज़िम (ज़रूरी) है।

(237) और अगर तुम उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो जबकि तुम उनके लिए मेहर मुक़र्रर कर चुके हो तो उस (मेहर) का निस्फ (आधा) अदा करना होगा जो तुमने मुक़र्रर किया हो। हाँ! वह औरतें चाहें तो (मेहर) माफ कर सकती हैं या वह शख़्स माफ कर सकता है जिसके हाथ में अक़्द निकाह है और तुम माफ कर दो तो यह तक़्वा के ज़्यादा क़रीब है और तुम आपस में भलाई और एहसान का बरताव करना मत भूलो, बेशक अल्लाह तुम्हारे हर अमल पर निगाह रखता है जो तुम करते हो।

(238) और तुम सब नमाज़ों और खास तौर पर दरम्यान वाली नमाज़ की हिफाज़त करो अल्लाह के सामने आजज़ी (विनती) करने वाले बन कर खड़े हो।

(239) फ़िर अगर तुम ख़ौफ की हालत में हो तो पैदल या सवार ही (नमाज़ पढ़ लो), फ़िर जब तुम अमन में हो जाओ तो अल्लाह को याद करो जिस तरह उसने तुम्हें वह सिखाया जो तुम नहीं जानते थे।

(240) और तुम में से जो लोग वफात पा जाएं और बीवियां छोड़ जाएं, उन पर अपनी बीवियों के हक़ में वसियत करना (लाज़िम) है कि उन्हें खर्च दिया जाए और उनको एक साल तक घर से न निकाला जाए, फ़िर अगर वह खुद चली जाएं तो तुम पर उस बारे में कोई गुनाह नहीं जो वह दस्तूर के मुताबिक़ अपनी ज़ात के मामले में करें और अल्लाह ग़ालिब है, खूब हिकमत वाला।

(241) और जिन औरतों को तलाक़ दी गई हो उन्हें भी दस्तूर (नियम) के मुताबिक़ कुछ दे दिला कर रूखसत किया जाए, (यह) मुत्तक़ी (परेहज़गार) लोगों पर लाज़िम (ज़रूरी) है।

(242) अल्लाह इसी तरह तुम्हारे लिए अपनी आयतें बयान फरमाता है ताकि तुम समझो।

(243) (ऐ नबी!) क्या आपने लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से मौत के डर से निकले और वह कई हज़ार थे? पस अल्लाह ने उनसे कहाः तुम मर जाओ! फ़िर उसने उनको ज़िन्दा कर दिया, बेशक अल्लाह लोगों पर फज़ल करने वाला है लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।

(244) और तुम अल्लाह की राह में लड़ो और जान लो कि बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला, जानने वाला है।

(245) कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़े हस्ना (अच्छा उधार) दे? फ़िर अल्लाह वह माल उसके लिए कई गुना बढ़ा दे और अल्लाह ही तंगी करता और फ़राखी (ज्यादती) करता है और तुम उसकी तरफ लौटाए जाओगे।

(246) (ऐ नबी!) क्या आपने मूसा के

बाद बनी इस्राईल की एक जमाअत नहीं देखी? जब उन्होंने अपने नबी से कहाः आप हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दें ताकि हम अल्लाह की राह में लड़े। उसने कहाः मुम्किन है कि अगर तुम पर जिहाद फर्ज़ कर दिया गया तो तुम जिहाद न करो, उन्होंने कहाः आखिर हमें क्या हुआ है कि हम अल्लाह की राह में न लड़ें जबकि हमें अपने घरों और अपने बेटों से निकाल दिया गया है? फ़िर जब उन पर लड़ना फर्ज़ कर दिया गया तो उनमें से थोड़े से लोगो के सिवाए सब फ़िर गए और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है।

(247) और उनके नबी ने उनसे कहाः बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को बादशाह मुक़र्रर किया है। उन्होंने कहाः हम पर उसकी बादशाही कैसे हो सकती है जबकि हम बादशाही के उससे ज़्यादा हक़दार हैं? और उसे माल की वुसअत (ज्यादती) नहीं मिली। उस (नबी) ने कहाः बेशक अल्लाह ने उसे तुम पर चुन लिया है, और उसे इल्म और जिस्म (दोनों) में ज़्यादा कुशादगी दी है, और अल्लाह जिसे चाहता है अपना मुल्क अता करता है और अल्लाह बड़ा वुसअत वाला, खूब जानने वाला है।

(248) और उनके नबी ने उनसे कहाः बेशक उसकी बादशाही की निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक़ आएगा जिसमें तुम्हारे रब की तरफ से तस्कीन (शांति) और वह बक़िया चीज़ें होंगी जिन्हें आले मूसा और आले हारून छोड़ गए थे, उसे फरिश्ते उठा कर लायेंगे। बेशक उसमें तुम्हारे लिए एक अज़ीम निशानी है अगर तुम मोमिन हो।

(249) फ़िर जब तालूत फौजें ले कर निकला तो उसने कहाः बेशक अल्लाह तुम्हें एक नहर के ज़रिये से आज़माता है, पस जिस ने उससे (सेर हो कर) पानी पिया, तो वह मुझसे नहीं और जिसने उसका पानी न चखा, तो यक़ीनन वह मेरा है, हाँ ! कोई अपने हाथ से एक आधा चुल्लू भर ले (तो हर्ज नहीं) फ़िर उनमें से थोड़े लोगों के सिवा सब ने उस (नहर) का पानी पी लिया, फ़िर जब तालूत ने वह नहर पार कर ली और उन लोगों ने (भी) जो उसके साथ ईमान लाए थे, तो उन्होंने (आपस में) कहाः आज हममें जालूत और उसकी फौजों के खिलाफ लड़ने की ताक़त नहीं। वह लोग जो इस बात का यक़ीन रखते थे कि बेशक वह अल्लाह से मिलने वाले हैं, उन्होंने कहाः कई बार छोटी सी जमाअत अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअत पर ग़ालिब आई है और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

(250) और जब वह जालूत और उसकी

फौजों के मुक़ाबले पर निकले तो उन्होंने कहा ऐ हमारे रब! हम पर सब्र डाल दे और हमारे क़दम जमाये रख और इस काफिर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फरमा।

(251) पस मोमिनों ने अल्लाह के हुक्म से काफिरों को शिकस्त दी और दाऊद ने जालूत को क़त्ल किया और अल्लाह ने दाऊद को बादशाही और हिकमत अता की और जो चाहा उसे सिखाया और अगर अल्लाह इसांनों के एक (गिरोह) को दूसरे (गिरोह) के ज़रिये से हटाता न रहता तो यक़ीनन सारी ज़मीन का निज़ाम (व्यवस्था) बिगड़ जाता, लेकिन अल्लाह दुनिया वालों पर बड़ा फज़्ल करने वाला है।

(252) यह अल्लाह की आयतें हैं, हम हक़ के साथ आप पर उनकी तिलावत करते हैं और बेशक आप रसूलों में से हैं।

(253) यह सब रसूल हैं, हमने उनमें से कुछ को कुछ पर फज़ीलत (श्रेष्ठता) दी, उनमें से कुछ ऐसे हैं जिनसे अल्लाह ने बात की और उनमें से कुछ के दर्जे बुलंद किये और हम ने ईसा इब्ने मरयम को वाज़ेह निशानियां अता कीं और रूहुलक़ुद्दुस (जिब्रील) के साथ उसकी मदद की और अगर अल्लाह चाहता तो उन (रसूलों) के बाद आने वाले लोग आपस में न लड़ते जबकि उनके पास वाज़ेह निशानियां आ चुकी थी लेकिन उन्होंने (आपस में) इख़्तिलाफ (मतभेद) किया, इसलिए उनमें से कुछ वह हैं जो ईमान लाए और कुछ वह हैं जिन्होंने कुफ्र किया और अगर अल्लाह चाहता तो वह आपस में न लड़ते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है करता है।

(254) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! हमने तुम्हें जो कुछ दिया उसमें से खर्च करो, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न खरीद फरोख़्त होगी और न कोई दोस्ती या सिफारिश ही काम आयेगी और कुफ्र करने वाले ही ज़ालिम हैं।

(255) वह अल्लाह है, उसके सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, ज़िन्दा है, सबको संभाले हुए है, उसे ऊंघ आती है न नींद, जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है। कौन हे जो उसके सामने उसकी इजाज़त के बग़ेर सिफारिश कर सके? वह जानता है जो कुछ लोगों के सामने है और जो कुछ उनके पीछे है और वह उसके इल्म में से किसी चीज़ को अपने अहाते (घेरे) में नहीं ला सकते, सिवाए उस बात के जो वह चाहे, उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को घेर रखा है, और उसे उन दोनों की हिफाज़त थकाती नहीं और वह बुलंदतर, निहायत अज़मत वाला है।

(256) दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं,

हिदायत (मार्ग-दर्शन), गुमराही से वाज़ेह हो चुकी है, फ़िर जो शख़्स तागूत का इन्कार करे और अल्लाह पर ईमान ले आए, तो यक़ीनन उसने एक मज़बूत कड़ा थाम लिया जो टूटने वाला नहीं और अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(257) अल्लाह, उन लोगों का दोस्त है जो ईमान लाए, वह उनको अन्धेरों से निकाल के रोशनी की तरफ लाता है और वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया उनके दोस्त तागूत हैं, वह उन्हें रोशनी से निकाल कर अन्धेरों की तरफ ले जाते हैं, वही लोग दोज़ख़ी हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(258) क्या अपने उस शख़्स को नहीं देखा जिसने इब्राहीम से उसके रब के बारे में इसलिए झगड़ा किया कि अल्लाह ने उसे बादशाही दे रखी थी? जब इब्राहीम ने कहाः मेरा रब वह है जो ज़िन्दा करता है और मारता है। उस (नमरूद) ने कहाः मैं भी ज़िदां करता हूँ और मारता हूँ। इब्राहीम ने कहाः बेशक अल्लाह तो सूरज को पूरब से निकालता है तू ज़रा उसे पश्चिम से निकाल कर दिखा। इस पर वह हक्का-बक्का रह गया जिसने कुफ़्र किया था और अल्लाह उन लोगों को हिदायत नहीं देता जो ज़ालिम हैं।

(259) या उसी तरह उस शख़्स को (नहीं देखा) जो एक बस्ती से गुज़रा और वह अपनी छतों पर गिरी पड़ी थी? उसने कहाः अल्लाह इस बस्ती को कैसे ज़िन्दा करेगा उसकी मौत के बाद? तो अल्लाह ने उसे एक सौ साल के लिए मौत दे दी, फ़िर उसे ज़िन्दा किया। अल्लाह ने पूछाः तू कितनी देर (यहाँ) रहा है? उसने कहाः एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा। अल्लाह ने फरमायाः (नहीं!) बल्कि तू (मौत की हालत में) सौ साल रहा, तू अपने खाने और पीने (के सामान) की तरफ देख वह बिल्कुल सड़ी-गली नहीं, और देख अपने गधे (के डाचें) को, और (यह इसलिए हुआ कि) हम तुझे लोगो के लिए एक निशानी बनाना चाहते हैं और तू (गधे की) हड्डियों को देख कि हम कैसे उन्हें उभार कर जोड़ते, फ़िर उन पर गोश्त चढ़ाते हैं। फ़िर जब उसके सामने (यह सब) वाज़ेह हो गया तो उसने कहाः मैं जानता हूँ कि बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

(260) और जब इब्राहीम ने कहाः ऐ मेरे रब! मुझ दिखा तू मुर्दों को कैसे ज़िन्दा करेगा? अल्लाह ने कहाः क्या तू (इस पर) ईमान नहीं लाया? इब्राहीम ने कहाः क्यों नहीं! लेकिन मैं तो दिली इत्मिनान चाहता हूँ। अल्लाह ने फरमायाः फ़िर तू चार परिंदें (पक्षी) ले कर उन्हें अपने साथ हिला (मिला) ले, फ़िर (उन्हें ज़िब्ह करके) उनका एक एक एक

टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे, फ़िर उनको बुला, वह तेरे पास दोड़े चले आयेंगे और जान ले कि बेशक अल्लाह ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(261) उन लोगों की मिसाल जो अल्लाह की राह में अपने माल खर्च करते हैं, उस दाने की सी है जिसमें से सात बालियां निकलें और हर बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिसके लिए चाहे (अज्र) बढ़ा देता है और अल्लाह वुसअत वाला, खूब जानने वाला है।

(262) जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं फ़िर खर्च करने के बाद एहसान नहीं जताते और न दुख देते हैं, उनके लिए उनके रब के पास अज्र है, न उन पर कोई ख़ौफ होगा और न वह ग़मग़ीन होंगे।

(263) अच्छी बात कहना और माफ करना उस सदक़े से बेहतर है जिसके बाद दुख दिया जाए और अल्लाह बेपरवाह निहायत बुर्दबार है।

(264) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! अपने सदक़ात को एहसान जता कर और दुख दे कर उस शख़्स की तरह बर्बाद न करो जो अपना माल लोगों को दिखाने के लिए खर्च करता है और वह अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता, तो उसकी मिसाल चिकने पत्थर की सी है जिस पर मिट्टी पड़ी हो, फ़िर उस पर ज़ोर की बारिश हो तो (सारी मिट्टी बह जाए और) साफ चट्टान रह जाए। वह (रियाकार) जो नेकी करते हैं, उससे कुछ भी उनके हाथ नहीं आता और अल्लाह काफिरों को हिदायत नहीं देता।

(265) और उन लोगों की मिसाल जो अल्लाह की रज़ा चाहते हुए और अपने दिलों को साबित रखते हुए अपने माल खर्च करते हैं, उस बाग़ की सी है जो किसी ऊँची सतह पर हो, उस पर ज़ोर की बारिश हो तो वह दोगुना फल लाए, फ़िर अगर उस पर ज़ोर की बारिश न भी हो तो फुहार ही (काफी है) और तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उसे खूब देखने वाला है।

(266) क्या तुममें से कोई यह पसंद करता है कि उसके लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, उसके नीचे नहरें बहती हों, उस बाग़ में उसके लिए हर क़िस्म के फल हों और उसे बुढ़ापा आ जाए जबकि उसकी औलाद कमज़ोर हो, फ़िर (अचानक) उस बाग़ पर ऐसा बगूला आ पड़े जिसमें आग हो और वह उसे जला कर रख दे? इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें खोल कर बयान करता है ताकि तुम ग़ौर व फ़िक्र करो।

(267) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! तुम उन पाकीज़ा चीज़ों में से खर्च करो जो तुम कमाते हो और उनमें से भी जो हमने तुम्हारे

लिए ज़मीन में से निकाली हैं और मत इरादा करो (अल्लाह की राह में) रद्दी और खराब चीज़ खर्च करने का, जबकि तुम (खुद) तो वह (चीज़) लेना भी पसंद नहीं करते, मगर यह कि उसकी बाबत तुम आँखें बन्द कर जाओ और जान लो कि बेशक अल्लाह तआला बेपरवाह है, क़ाबिले तअरीफ है।

(268) शैतान तुम्हें तंगदस्ती से डराता है और बेहयाई का हुक्म देता है और अल्लाह तुमसे अपनी बख़्शिश और फ़ज़्ल का वादा करता है और अल्लाह वुसअत वाला, खूब जानने वाला है।

(269) अल्लाह जिसे चाहता है हिकमत देता है और जिस शख़्स को हिकमत दी गई, तो उसे बहुत भलाई अता की गई और (इन बातों से) अक़्लमन्द ही नसीहत (उपदेश) हासिल करते हैं।

(270) और तुम किसी क़िस्म का खर्च करो या कोई भी नज़्र मानो तो बेशक अल्लाह उसे जानता है, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

(271) अगर तुम ज़ाहिर करके सदक़ात दो तो यह अच्छी बात है और अगर तुम उसे छुपा कर फक़ीरों को दो तो वह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, वह (अल्लाह) तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर देगा और तुम जो भी अमल करते हो अल्लाह उसकी खूब खबर रखता है।

(272) (ऐ नबी!) लोगों को हिदायत देना आपकी ज़िम्मेदारी नहीं, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है और तुम अपने माल में से जो खर्च करो, वह तुम्हारे अपने फायदे के लिए है और तुम जो कुछ खर्च करते हो वह अल्लाह की रज़ा हासिल करने ही के लिए करते हो और तुम अपने माल में से जो खर्च करोगे उसका तुम्हें पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और तुम पर जुल्म नहीं किया जायेगा।

(273) (सदक़ात तो) उन ज़रूरतमन्दो के लिए हैं जो अल्लाह के कामों में ऐसे मशग़ूल हों कि (अपने रोज़गार के लिए) ज़मीन में दौड़ धूप न कर सकते हों, नावाक़िफ शख़्स उनके सवाल न करने की वजह से उन्हें मालदार ख्याल करे, तुम उन्हें उनके चेहरों से पहचान लोगे, वह लोगों से चिमट कर सवाल नहीं करते, और तुम अपने माल में से जो कुछ खर्च करते हो, बेशक अल्लाह उसे खूब जानने वाला है।

(274) जो लोग अपने माल खर्च करते हैं रात और दिन में, छुपा कर और ज़ाहिर, उनके रब के यहाँ उनके लिए अज्र (बदला) है, न उन्हें कोई ख़ौफ होगा न वह ग़मगीन होंगे।

(275) जो लोग सूद (ब्याज) खाते हैं, वह (क़यामत के दिन) उस शख़्स की तरह खड़े होंगे

जिसे शैतान ने छू कर बदहवास कर दिया हो। यह (सज़ा) इसलिए (मिलेगी) कि वह कहते थेः तिजारत (व्यपार) भी सूद ही की तरह है, हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया है और सूद को हराम। फ़िर जिस शख़्स के पास उसके रब की तरफ से नसीहत (उपदेश) आ जाए और वह (सूद खाने से) रूका रहे तो जो कुछ वह पहले खा चुका, सो खा चुका, उसका मामला अल्लाह के हवाले है, और जो शख़्स दोबारा (सूदी मामला) करे तो ऐसे लोग दोज़ख़ी हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(276) अल्लाह सूद को मिटाता है और सदक़ात को बढ़ाता है, और अल्लाह किसी नाशुक्रे गुनाहगार को पसंद नहीं करता।

(277) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये और नमाज़ क़ायम की और ज़कात अदा करते रहे, उनके लिए उनके रब के पास अज्र है, न उन पर कोई ख़ौफ होगा और न वह ग़मगीन होंगे।

(278) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह से डरो! और जो सूद बाक़ी है वह छोड़ दो अगर तुम मोमिन हो।

(279) फ़िर अगर तुमने यह न किया तो अल्लाह और उसके रसूल से जंग के लिए तैयार हो जाओ, और अगर तुम तौबा कर लो तो तुम्हारे लिए तुम्हारे अस्ल माल ही हैं, न तुम किसी पर जुल्म करो और न तुम पर जुल्म किया जाए।

(280) और अगर (तुम्हारा क़र्ज़दार) तंगदस्त हो तो आसानी तक उसे मुहलत दो और तुम्हारा सदक़ा करना (क़र्ज़ माफ कर देना) तो तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है, अगर तुम इल्म रखते हो।

(281) और उस दिन से डरो जब तुम अल्लाह की तरफ लौटाये जाओगे, फ़िर हर शख़्स ने जो कुछ किया होगा उसे उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और किसी पर जुल्म न होगा।

(282) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम आपस में एक मुक़र्रर मुद्दत के लिए उधार का लेन देन करो तो उसे लिख लो, और लिखने वाले को चाहिए। कि तुम्हारे दरम्यान इंसाफ के साथ तहरीर कर दे, और लिखने वाला लिखने से इन्कार न करे जैसा अल्लाह ने उसे सिखाया है, उसे लिखना चाहिए। और वह शख़्स लिखवाये जिसके ज़िम्मे क़र्ज़ हो और उसे अपने रब, अल्लाह से डरना चाहिए। और (लिखवाते वक़्त) वह (क़र्ज़दार) उसमें कोई चीज़ कम न करे, लेकिन अगर वह जिसके ज़िम्मे क़र्ज़ है नादान या कमज़ोर हो, या लिखवा न सकता हो तो उसका मुख़्तार इंसाफ के साथ लिखवाए, और तुम अपने मुसलमान मर्दो में से दो गवाह बना लो, फ़िर अगर दो मर्द न (मिले) तो एक

मर्द और दो औरतें (गवाही दें) जिन्हें तुम गवाहों के तौर पर पसंद करो (यह इसलिए) कि एक औरत अगर भूल जाए तो उनमें से दूसरी उसे याद दिला दे, और गवाह जब बुलाये जाएं तो वह इन्कार न करें और मामला छोटा हो या बड़ा उसे मुक़र्रर मुद्दत के साथ लिखवाने में सुस्ती न करो। यह अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इंसाफ की बात है और गवाही के लिए ज़्यादा दुरूस्त तरीक़ा है और (इस तरह) तुम्हारे शक में पड़ने का इम्कान भी कम रह जाता है। हाँ तुम आपस में नगद जो तिजारती लेन देन करो, उसे न लिखा जाए तो तुम पर कोई हर्ज नहीं और जब तुम आपस में सौदा करो तो गवाह बना लिया करो और कातिब और गवाह को सताया न जाए और अगर तुम (ऐसा) करो तो यक़ीनन यह तुम्हारी तरफ से नाफरमानी होगी और अल्लाह से डरते रहो और अल्लाह तुम्हें (यह एहकाम) सिखाता है और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

(283) और अगर तुम सफर में हो और तुम्हें कोई लिखने वाला न मिले तो कोई चीज़ गिरवी (रहन के तौर पर) क़ब्ज़े में दे दी जाए, और अगर तुम में से कोई दूसरे पर एतबार करे तो जिस शख़्स पर एतबार किया गया हो उसे चाहिए कि दूसरे की अमानत वापस अदा कर दे और अपने रब, अल्लाह से डरे और तुम गवाही न छुपाओ और जो शख़्स गवाही छुपाएगा तो बेशक उसका दिल गुनाहगार है और जो अमल तुम करते हो अल्लाह उसे खूब जानता है।

(284) आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है (सब) अल्लाह ही का है और तुम्हारे दिलों में जो कुछ है ख्वाह उसे ज़ाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा, फ़िर जिसे वह चाहेगा बख्श (क्षमा कर) देगा और जिसे चाहेगा अज़ाब देगा और अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(285) रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उस (हिदायत) पर ईमान लाए हैं जो उनके रब की तरफ से उन पर नाज़िल की गई है और सारे मोमिन भी, सब अल्लाह पर और उसके फरिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए हैं। (वह कहते हैं) हम उसके रसूलों में से किसी एक में भी फ़र्क़ नहीं करते, और वह कहते हैं: हमने (हुक्म) सुना और इताअत की, ऐ हमारे रब! हम तेरी बख्शिश चाहते हैं और हमें तेरी ही तरफ लौट कर आना है।

(286) अल्लाह किसी को उसकी बरदाश्त से बढ़ कर तकलीफ नहीं देता, किसी शख्स ने जो नेकी कमाई उसका फल उसी के लिए है और जो उसने बुराई की उसका वबाल भी उसी पर है। ऐ हमारे रब! अगर हमसे भूल चूक हो जाए तो हमारी गिरफ्त न कर।

ऐ हमारे रब! हम पर ऐसा बोझ न डाल जो तूने हमसे पहले लोगों पर डाला था। ऐ हमारे रब! जिस बोझ को उठाने की हममें ताक़त नहीं वह हमसे न उठवा, और हमसे दरगुज़र फरमा, और हमें बख़्श दे, और हम पर रहम फरमा, तू ही हमारा कारसाज़ है, पस तू काफिरों के मुक़ाबले में हमारी मदद फरमा।

सूरह आले इमरान-3

(यह मदनी सूरत है इसमें 200 आयतें और 20 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलीफ लाम मीम।

(2) वह अल्लाह है, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह ज़िन्दा है, सबको संभालने वाला है।

(3) उसी ने आप पर हक़ के साथ किताब नाज़िल की है, जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करने वाली है और उसी ने तौरात और इंजील को नाज़िल किया।

(4) इससे पहले, लोगों की हिदायत (मार्ग-दर्शन) के लिए और उसी ने फुरक़ान (कुरआन) नाज़िल किया। बेशक वह लोग जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया उनके लिए बहुत सख्त अज़ाब है और अल्लाह ग़ालिब है, बदला लेना वाला।

(5) बेशक अल्लाह से ज़मीन और आसमान में कोई चीज़ छुपी हुई नहीं।

(6) वही है जो तुम्हारी माओं के पेट में तुम्हारी सूरतें जैसी चाहता है बनाता है। उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं वह ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(7) वही है जिसने आप पर किताब नाज़िल की जिसमें कुछ आयतें मुहकम (वाज़ेह) हैं जो इस किताब की अस्ल बुनियाद हैं और कुछ दूसरी मुतशाबहात (गैर वाज़ेह) हैं, फ़िर जिन लोगों के दिल में टेड़ है वह उनमें से उन्हीं आयतों के पीछे पड़े रहते हैं जो मुतशाबह (गैरवाज़ेह) हैं, उनका मक़सद महज़ फित्ने और तावील की तलाश होता है, हालांकि अल्लाह के सिवा कोई भी उनकी तावील नहीं जानता, और जो लोग इल्म में पुख़्ता हैं वह कहते हैंः हमारा उन (मुतशाबहात) पर ईमान है, यह सब हमारे रब ही की तरफ से हैं और नसीहत (उपदेश) तो अक़्लमन्द ही हासिल करते हैं।

(8) (वह दुआ करते हैंः) ऐ हमारे रब! हमें हिदायत देने के बाद हमारे दिलों को टेढ़ा न कर और अता कर हमें अपने पास से रहमत, बेशक तू ही बड़ा अता करने वाला है।

(9) ऐ हमारे रब! यक़ीनन तू लोगों को एक दिन जमा करने वाला है जिसमें कोई शक नहीं, बेशक अल्लाह अपने वादे की

खिलाफ वरज़ी नहीं करता।

(10) बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया, उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह (के अज़ाब) से (बचाने में) उनके कुछ भी काम नहीं आयेगी और वही लोग आग का ईंधन हैं।

(11) (उनका अंजाम) आले फ़िरऔन और उन लोगों का सा होगा जो उनसे पहले थे, उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, तो अल्लाह ने उनके लिए गुनाहों की वजह से उन्हें पकड़ लिया और अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।

(12) (ऐ नबी!) जिन लोगों ने कुफ्र किया, उनसे कह दीजिए अनक़रीब तुम मग़लूब हो जाओगे और तुम जहन्नुम की तरफ इकट्ठे किये (हाकें) जाओगे और वह बुरा ठिकाना है।

(13) बेशक तुम्हारे लिए उन दो गिरोहों में एक बड़ी निशानी है जो (बद्र में) आपस में टकराये। एक गिरोह अल्लाह की राह में लड़ रहा था और दूसरा गिरोह काफिर था। मुसलमान ज़ाहिरी आँखों से उनको दोगुना देख रहे थे और अल्लाह अपनी मदद से जिसको चाहता है कुव्वत देता है, बेशक इसमें देखने वा लों के लिए इबरत है।

(14) लोगों के लिए ख़्वाहिशते नफ्स की मुहब्बत मुज़य्यन (पुरकशिश) कर दी गई है (यानी) औरतों से, बेटों से, सोने और चाँदी के जमा किये हुए ढेरों से, निशान लगे (उम्दा) घोड़ों से, मवेशियों से और खेती से, यह सब दुनियवी ज़िन्दगी का सामान है और अच्छा ठिकाना अल्लाह ही के पास है।

(15) (ऐ नबी!) कह दीजिएः क्या मैं तुम्हें उनसे बेहतर चीज़ बताऊं? परहेज़गारों के लिए उनके रब के पास बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वह उनमें हमेशा रहेंगे और वहाँ उनके लिए पाकीज़ा बीवियां होंगी और उन्हें अल्लाह की रज़ा हासिल होगी और अल्लाह अपने बन्दों पर खूब नज़र रखने वाला है।

(16) जो लोग कहते हैंः ऐ हमारे रब! बेशक हम ईमान लाए, पस तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

(17) (यह लोग) सब्र करने वाले, सच बोलने वाले, हुक्म बजा लाने वाले, खर्च करने वाले और सहरी के वक़्तों में बख़्शिश तलब करने वाले हैं।

(18) अल्लाह ने गवाही दी है कि उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं फरिश्तों और अहले इल्म ने भी (गवाही दी है) और वह इंसाफ के साथ क़ायम है, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह ग़ालिब है, खूब हिकमत वाला।

(19) बेशक अल्लाह के नज़दीक दीन सिर्फ इस्लाम है और अहले किताब ने (सहीह)

इल्म आ जाने के बाद सिर्फ इसलिए इख़्तिलाफ किया कि वह आपस में ज़िद और हसद रखते थे और जो कोई अल्लाह की आयतों का इन्कार करता है तो बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

(20) (ऐ नबी!) फ़िर अगर वह आप से झगड़ा करें तो कह दीजिए! मैंने अपना सर अल्लाह के आगे झुका दिया है और मेरी इत्तेबा करने वालों ने भी, और उन अहले किताब और अनपढ़ लोगों से पूछेंः क्या तुम इस्लाम लाते हो? फ़िर अगर वह इस्लाम क़बूल कर लें तो वह हिदायत पा गए और अगर मुँह मोड़ें तो आपके ज़िम्मे सिर्फ पैग़ाम पहुँचाना है, अल्लाह अपने बन्दों को खूब देख रहा है।

(21) बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं, नबियों को नाहक़ क़त्ल करते हैं और उन लोगों को भी क़त्ल करते हैं जो इंसाफ का हुक्म देते हैं, तो आप उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खूशबखरी सुना दीजिए!

(22) यही लोग हैं जिनके आमाल दुनिया और आख़िरत में बरबाद हो गए और उनका कोई मददगार नहीं।

(23) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब के इल्म में से कुछ हिस्सा मिला, उन्हें अल्लाह की किताब की तरफ बुलाया जाता है ताकि वह उनके दरम्यान फैसला करे। तब उनमें से एक गिरोह मुहँ मोड़ लेता है और वह हक़ से फिरने वाले हैं।

(24) यह इस वजह से है कि उन्होंने कहाः हमें आग चंद दिनों के सिवा हरगिज़ नहीं छुयेगी। और उनको उनके दीन की बाबत उन बातों ने धोखे में डाल रखा है जो वह खुद गढ़ते हैं।

(25) फ़िर क्या हाल होगा जब हम उन्हें उस दिन जमा करेंगे जिसमें कोई शक नहीं? और (उस रोज़) हर शख़्स को उसकी कमाई का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर जुल्म नहीं किया जायेगा।

(26) आप कह दीजिएः ऐ अल्लाह! ऐ बादशाही के मालिक! तू जिसे चाहे बादशाही देता और जिससे चाहे बादशाही छीन लेता है और तू ही जिसे चाहे इज्ज़त देता है और जिसे चाहे ज़िल्लत देता है। सब भलाई तेरे ही हाथ में है, बेशक तू हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(27) तू रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है और तू मुर्दा से ज़िन्दा को और ज़िन्दा से मुर्दा को निकालता है और जिसे तू चाहे बेहिसाब रिज़्क़ देता है।

(28) अहले ईमान, मोमिनों को छोड़ कर काफिरों को हरगिज़ दोस्त न बनाओ और जो कोई ऐसा करेगा तो उसका अल्लाह से कोई तअल्लुक़ नहीं मगर यह कि तुम उन

(काफ़िरों के शर) से बचना चाहो और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराता है और तुम्हें अल्लाह ही की तरफ लौट कर जाना है।

(29) आप कह दीजिएः अगर तुम वह बात छुपाओ जो तुम्हारे सीनों में है या उसे ज़ाहिर करो, अल्लाह उसे जानता है और वह उसे भी जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

(30) जिस दिन हर शख़्स अपने किये हुए अच्छे अमल को और अपने किये हुए बुरे अमल को अपने सामने पायेगा, वह ख़्वाहिश करेगा काश! उसके और उसकी बुराई के दरम्यान दूर का फासला होता और अल्लाह तुम्हें अपनी ज़ात से डराता है और अल्लाह अपने बन्दों से बड़ी शफ़क्क़त करता है।

(31) आप कह दीजिएः अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(32) आप कह दीजिएः तुम अल्लाह की और उसके रसूल की इताअत करो, फ़िर अगर वह मुहँ मोड़े तो बेशक अल्लाह काफिरों को पसंद नहीं करता।

(33) बेशक अल्लाह ने आदम को, नूह को, आले इब्राहीम और आले इमरान को तमाम जहाँनों में से (नबूवत के लिए) चुन लिया है।

(34) यह एक दूसरे की औलाद थे और अल्लाह खूब सुनने वाला, जानने वाला है।

(35) जब इमरान की बीवी ने कहाः ऐ मेरे रब! बेशक मैने मन्नत मानी है कि जो (बच्चा) मेरे पेट में है, वह तेरे ही लिए वक़्फ है, चुनांचे तू (उसे) मुझसे क़बूल फरमा, बेशक तू ही है खूब सुनने वाला, जानने वाला।

(36) फ़िर जब उसने बच्ची को जन्म दिया तो कहने लगीः ऐ रब! बेशक मैंने तो लड़की को जनम दिया है, और अल्लाह खूब जानता था जो उसने जना था और लड़का (उस) लड़की के मिस्ल नहीं और बेशक मैंने उसका नाम मरयम रखा है, और बेशक मैं उसे और उसकी औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देती हूँ।

(37) चुनांचे उसके रब ने उस (लड़की) को अच्छे तरीक़े से क़बूल कर लिया और उसकी बहुत अच्छी परवरिश की और ज़करिया को उसका सरपरस्त बना दिया। ज़करिया जब भी मेहराब में दाख़िल होते तो उसके पास कुछ खाने पीने की चीज़ें पाते, वह कहतेः ऐ मरयम! तेरे पास यह कहाँ से आई? वह कहतीः यह अल्लाह की तरफ से (आई) हैं, बेशक अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता

है।

(38) वहाँ ज़करिया ने अपने रब से दुआ की, कहाः मेरे रब! अपने पास से पाकीज़ा औलाद अता कर, बेशक तू ही दुआ सुनने वाला है।

(39) फ़िर जब वह हुजरे में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था तो फरिश्तों ने उसे आवाज़ दीः बेशक अल्लाह तुझे याह्या की खुशखबरी देता है, वह अल्लाह के एक कलमे (ईसा) की तस्दीक़ करेगा, और सरदार, नफ्स पर ज़ब्त रखने वाला और नबी होगा नेकूकार।

(40) ज़करिया ने कहाः ऐ मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का क्यों कर होगा, जबकि मैं खुद बूढ़ा हो चुका और मेरी बीवी बांझ है? फरिश्ते ने कहाः अल्लाह इसी तरह जो चाहे करता है।

(41) ज़करिया ने कहाः मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर फरमा। अल्लाह ने कहाः तेरी निशानी यह है कि तू तीन दिन तक लोगों से इशारे के सिवा बातचीत न कर सकेगा और अपने रब को कसरत से याद कर और सुबह व शाम उसकी तस्बीह कर।

(42) और (याद करो) जब फरिश्तों ने कहा ऐ मरयम! बेशक अल्लाह ने तुझे चुन लिया है और तुझे पाकीज़गी अता की है और दुनिया भर की औरतों में से तुझे मुन्तखब किया है।

(43) ऐ मरयम! अपने रब की फरमाबरदारी कर, सज्दा कर और रूकू करने वालों के साथ रूकू कर।

(44) (ऐ नबी!) यह ग़ैब की खबरें हैं जो हम आपकी तरफ वह्यी करते हैं और आप उस वक़्त उनके पास मौजूद न थे जब वह अपने क़लम डाल रहे थे कि उनमें से कौन मरयम का सरपरस्त हो और न आप उस वक़्त उनके पास थे जब वह आपस में झगड़ रहे थे।

(45) जब फरिश्तों ने कहाः ऐ मरयम! बेशक अल्लाह तुझे अपनी तरफ से एक कलमे की खुशखबरी देता है, उसका नाम मसीह ईसा इब्ने मरयम होगा, वह दुनिया और आख़िरत में बड़े मर्तबे वाला और अल्लाह के क़रीबी बन्दों में से होगा।

(46) और वह लोगों से कलाम करेगा माँ की गोद में और बड़ी उम्र में भी और नेकूकरों में से होगा।

(47) मरयम ने कहाः ऐ रब! मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा हालांकि मुझे किसी शख्स ने नहीं छुआ? फरिश्ते ने कहाः उसी तरह अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है, जब वह किसी काम का फैसला कर लेता है तो उसे सिर्फ यह कहता है कि हो जा, तो वह हो जाता है।

(48) और अल्लाह उसे किताब व हिकमत

और तौरात व इंजील की तालीम देगा।

(49) और उसे बनी इस्राईल की तरफ अपना रसूल मुक़र्रर करेगा (वह कहेगाः) बेशक मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानियां ले कर आया हूँ, बेशक मैं तुम्हारे लिए गारे (मिट्टी) से परिंदे की शक्ल बनाता हूँ, फ़िर उसमें फूंक मारता हूँ तो अल्लाह के हुक्म से वह वाक़ई परिंदा बन जाता है और मैं अल्लाह के हुक्म से पैदाईशी अंधे और बर्स (कोढ़) वाले को अच्छा करता हूँ और मुर्दो को ज़िन्दा करता हूँ और मैं तुम्हें बताता हूँ जो कुछ तुम खाते हो और जो अपने घरों में ज़खीरा करते हो, बेशक उसमें तुम्हारे लिए बहुत बड़ी निशानी है अगर तुम मोमिन हो।

(50) और मैं उसकी तस्दीक़ करता हूँ जो तौरात मुझसे पहले (नाज़िल की गई) है और ताकि मैं तुम्हारे लिए बअज़ वह चीज़ें हलाल कर दूं जो तुम पर हराम कर दी गई थी और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी ले कर आया हूँ, चुनांचे तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

(51) बेशक अल्लाह मेरा और तुम्हारा रब है, चुनांचे उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है।

(52) फ़िर जब ईसा ने उनमें कुफ़्र महसूस किया तो उनसे कहाः अल्लाह की राह में कौन मेरा मददगार बनेगा? हवारियों ने कहाः हम अल्लाह के अन्सार हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए हैं और तू गवाह रह कि हम फ़रमाबरदार हैं।

(53) ऐ हमारे रब! हम उस पर ईमान लाए है जो तूने नाज़िल किया और हमने रसूल की पैरवी की है, चुनांचे हमें गवाही देने वालों में लिख ले।

(54) और उन्होंने तदबीर की और अल्लाह ने भी तदबीर की और अल्लाह सबसे बेहतर तदबीर करने वाला है।

(55) जब अल्लाह ने कहाः ऐ ईसा! बेशक मैं तुझे पूरा ले लूंगा और अपनी तरफ उठा लूंगा और उन काफिरों से तुझे पाक कर दूंगा, और जिन लोगों ने तेरी पैरवी की, उन्हें काफिरों पर क़यामत तक ग़ालिब रखूंगा, फ़िर तुम्हें मेरी तरफ लौट कर आना है और मैं तुम्हारे दरम्यान उन बातों का फैसला कर दूंगा जिनमें तुम इख़्तिलाफ करते थे।

(56) फ़िर जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन्हें मैं दुनिया और आख़िरत में सख्त अज़ाब दूंगा और उनके लिए कोई मददगार न होगा।

(57) लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये तो अल्लाह उन्हें उनका पूर पूरा अज्र देगा और अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।

(58) (ऐ नबी!) यह जो हम आपको पढ़ कर सुनाते हैं, आयतें हैं और हिकमत वाली

नसीहत है।

(59) बेशक अल्लाह के नज़दीक ईसा की मिसाल आदम की सी है, अल्लाह ने उसे मिट्टी से पैदा किया, फ़िर उससे कहा कि हो जा, तो वह हो गया।

(60) (यह) आपके रब की तरफ से हक़ है, लिहाज़ा आप शक करने वालों में से न हों।

(61) फ़िर इल्म आ जाने के बाद जो कोई ईसा के बारे में आपसे झगड़ा करे तो आप कह दें: आओ हम और तुम अपने अपने बेटों को और अपनी अपनी औरतों को बुला लें और खुद भी (हाज़िर हों) फ़िर गिड़गिड़ा कर अल्लाह से दुआ करें कि झूठों पर अल्लाह की लअनत हो।

(62) बेशक यही बयान सच्चा है और अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और बेशक अल्लाह ही ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(63) फ़िर अगर वह मुँह मोड़े तो बेशक अल्लाह फसाद करने वालों को खूब जानता है।

(64) आप कह दीजिए: ऐ अहले किताब! ऐसी बात की तरफ आओ जो हमारे और तुम्हारे दरम्यान यक्साँ है, यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और उसके साथ किसी को शरीक न ठहरायें और हममें से कोई अल्लाह के सिवा किसी को रब न बनायें, फ़िर अगर वह मुँह मोड़े तो तुम कह दो: इस बात के गवाह रहो कि बेशक हम अल्लाह के फ़रमाबरदार हैं।

(65) ऐ! अहले किताब! तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो? हांलाकि तौरात और इन्जील तो उसके बाद ही नाज़िल की गई है, क्या तुम अक़्ल नहीं रखते?

(66) आगाह रहो! तुम वह लोग हो कि तुमने इस बात में झगड़ा किया जिसका तुम्हें कुछ इल्म था तो अब तुम उस चीज़ की बाबत क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं? अल्लाह ही जानता है, तुम नहीं जानते।

(67) इब्राहीम न तो यहूदी थे और न नसरानी, बल्कि वह सिर्फ हक़ परस्त, फरमा बरदार थे और वह मुश्रिक नहीं थे।

(68) बेशक इब्राहीम से क़रीब तर वही लोग हैं जिन्होंने उनकी पैरवी की, फ़िर यह नबी और मोमिन लोग। और अल्लाह मोमिनों का दोस्त है।

(69) अहले किताब में से एक गिरोह तुम्हें गुमराह करना चाहता है, जबकि वह अपने आप ही को गुमराह कर रहे हैं और वह समझ नहीं रखते।

(70) ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार क्यों करते हो? हालांकि तुम खुद (उनकी सच्चाई के) गवाह हो।

(71) ऐ अहले किताब! तुम हक़ को बातिल के साथ क्यों खलत मलत करते हो? और तुम जानते बूझते हक़ को छुपाते हो।

(72) और अहले किताब में से एक गिरोह ने (अपने लोगों से) कहाः मुसलमानों पर जो चीज़ नाज़िल की गई है उस पर तुम सुबह ईमान लाओ और शाम को उसका इन्कार कर दो ताकि वह भी (ईमान से) फ़िर जाऐं।

(73) और तुम उसका यक़ीन करो जो तुम्हारे दीन का पैरोकार है, आप कह दीजिएः हक़ीक़ी हिदायत (मार्ग-दर्शन) तो अल्लाह ही की हिदायत है। (और कहते हैंः मत मानो) कि किसी को वैसी चीज़ मिल सकती है जो तुम्हें मिली है या (जिससे) वह तुम्हारे रब के यहाँ तुम पर हुज्जत क़ायम कर सकें। कह दीजिएः बेशक फज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वह जिसको चाहता है अता करता है और अल्लाह वुसअत वाला, खूब जानने वाला है।

(74) वह खास करता है अपनी रहमत से जिसे चाहे और अल्लाह बड़ा फज़्ल वाला है।

(75) और अहले किताब में से कुछ वह हैं कि अगर आप उनके पास खज़ाने का ढेर अमानत रखें तो वह भी आपको अदा कर देंगे और उनमें से कुछ वह हैं कि अगर आप उनके पास एक दीनार अमानत रखें तो वह आपको अदा नहीं करेंगे मगर यह कि आप हमेशा उनके सर पर खड़े रहें। यह इसलिए कि वह कहते हैंः हम पर उम्मियों (अरबों) की बाबत कोई गुनाह नहीं और वह जानते बुझते अल्लाह पर झूठ बांधते हैं।

(76) हाँ (पकड़ होगी) अलबत्ता जो शख़्स अपना अहद पूरा करे और अल्लाह से डरे तो बेशक अल्लाह मुत्तक़ियों को पसंद करता है।

(77) बेशक जो लोग अल्लाह का अहद और अपनी क़स्में थोड़ी क़ीमत के बदले बेच डालते हैं, उन लोगों का आख़िरत में कोई हिस्सा न होगा और क़यामत के रोज़ अल्लाह उनसे कलाम नहीं करेगा और न उनकी तरफ देखेगा और न उन्हें पाक करेगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(78) और बेशक उनमें से एक गिरोह किताब पढ़ते हुए ज़बान को मोड़ता है ताकि तुम उसको किताब का हिस्सा समझो, हालांकि वह किताब में से नहीं है और कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है, हालांकि वह अल्लाह की जानिब से नहीं और वह जानबूझ कर अल्लाह पर झूठ बांधते हैं।

(79) किसी शख़्स को लायक़ नहीं कि अल्लाह उसे किताब व हिकमत और नबूव्वत अता करे, फ़िर वह लोगों से कहे कि तुम अल्लाह को छोड़ कर मेरे बंदे बन जाओ बल्कि

(वह कहेगा) तुम रब वाले बन जाओ, क्योंकि तुम इस किताब की तालीम देते हो और खुद भी उसे पढ़ते हो।

(80) और वह तुम्हें यह हुक्म नहीं देगा कि तुम फरिश्तों और नबियों को रब बना लो, क्या वह तुम्हे कुफ्र का हुक्म देगा? जबकि तुम मुसलमान हो चुके।

(81) और (याद करो) जब अल्लाह ने तमाम नबियों से अहद लिया था कि जब मैं तुम्हें किताब और हिकमत अता करूं, फ़िर तुम्हारे पास कोई रसूल आए जो उस (किताब) की तस्दीक़ करता हो जो तुम्हारे पास है तो तुम्हें उस पर ईमान लाना होगा और उसकी मदद करनी होगी। अल्लाह ने फरमायाः क्या तुम इक़रार करते हो और मेरा अहद क़बूल करते हो? उन्होंने कहाः हमने इक़रार किया। अल्लाह ने फरमायाः तुम गवाह रहना और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ।

(82) फ़िर उसके बाद जो भी मुँह मोड़ेगा तो ऐसे लोग ही नाफरमान हैं।

(83) क्या वह लोग अल्लाह के दीन के सिवा कोई और दीन चाहते हैं? हालांकि आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है वह चाहते और न चाहते हुए भी अल्लाह का फरमा बरदार है और उसकी तरफ सब को लौट कर जाना है।

(84) आप कह दीजिएः हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस पर भी जो कुछ हम पर नाज़िल किया गया, और जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब और उनकी औलाद पर (नाज़िल किया गया) और उन (किताबों) पर भी जो मूसा, ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की तरफ से दी गईं, हम उनमें से किसी एक के दरम्यान फर्क़ नहीं करते और हम उसी (अल्लाह) के फ़रमाबरदार हैं।

(85) और जो इस्लाम के सिवा कोई और दीन तलाश करेगा तो वह उससे हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में नुक्सान पाने वालों में से होगा।

(86) अल्लाह उन लोगों को कैसे हिदायत (मार्ग-दर्शन) देगा जो ईमान लाने के बाद काफिर हो गए, जबकि वह गवाही दे चुके कि बेशक रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बरहक़ हैं और उनके पास वाज़ेह निशानियां आ चुकी और अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं देता।

(87) उन लोगों की सज़ा यही है कि उन पर अल्लाह की, फरिश्तों की और सब लोगों की लअनत है।

(88) वह इस (लअनत) में हमेशा रहेंगे, उनसे अज़ाब न तो हल्का किया जाएगा और न उनको मुहलत ही दी जायेगी।

(89) मगर जिन लोगों ने उसके बाद तौबा

करके अपनी इस्लाह कर ली, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(90) बेशक जिन लोगों ने ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया, फ़िर वह कुफ़्र में बढ़ते गए। उनकी तौबा हरगिज़ क़बूल नहीं की जायेगी और वही लोग गुमराह हैं।

(91) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया और हालते कुफ़्र में मरे उनमें से किसी से ज़मीन भर सोना भी क़बूल न किया जाएगा, अगरचे वह फिदये में देना चाहे। उन्ही लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है और उनका कोई मददगार न होगा।

(92) तुम हरगिज़ भलाई न पा सकोगे जब तक उन चीज़ों में से अल्लाह की राह में खर्च न करो जिन्हें तुम पसंद करते हो, और तुम जो भी चीज़ खर्च करोगे तो बेशक अल्लाह उसे खूब जानने वाला है।

(93) बनी इस्राईल के लिए तमाम खाने हलाल थे सिवाए उन चीज़ों के जिन्हें तौरात नाज़िल होने से पहले याकूब ने अपने ऊपर हराम कर लिया था। (ऐ नबी!) आप कह दीजिए कि तुम तौरात ले आओ और उसे पढ़ो अगर तुम सच्चे हो।

(94) इसके बाद जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा, वही लोग ज़ालिम हैं।

(95) कह दीजिएः अल्लाह ने सच कहा, पस तुम मिल्लते इब्राहीम की पैरवी करो, जो हक़ परस्त था और मुश्रिकीन में से न था।

(96) बेशक (अल्लाह का) पहला घर जो लोगों के लिए मुक़र्रर किया गया वही है जो बक्का (मक्का) में है। वह तमाम दुनिया के लिए बड़ी बरकत और हिदायत (मार्ग-दर्शन) वाला है।

(97) उसमें वाज़ेह निशानियां हैं (और) मक़ामे इब्राहीम है, और जो उसमें दाख़िल हो जाए, वह अमन वाला हो जाता है, अल्लाह ने उन लोगों पर बैतुल्लाह का हज फ़र्ज़ किया है जो उसकी तरफ सफर करने की ताक़त रखते हों और जिसने कुफ़्र किया तो बेशक अल्लाह सारी दुनिया से बेपरवाह है।

(98) (ऐ नबी!) कह दीजिएः ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार क्यों करते हो? अल्लाह उस पर गवाह है जो कुछ तुम करते हो।

(99) कह दीजिएः ऐ अहले किताब! तुम उस शख़्स को अल्लाह के रास्ते से क्यों रोकते हो जो ईमान ले आया, तुम चाहते हो कि वह टेढ़े रास्ते पर चले, हालांकि तुम खुद उस (के सीधी राह पर होने) के गवाह हो, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ग़ाफिल नहीं है।

(100) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अगर तुम अहले किताब के एक फरीक़ की बात

मानोंगे तो वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें काफिर बना कर छोड़ेंगे।

(101) और तुम कैसे कुफ़्र कर सकते हो जबकि तुम्हें अल्लाह की आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं और तुम्हारे अन्दर उसका रसूल (मौजूद) है? और जो शख़्स अल्लाह के दीन को मज़बूती से पकड़ ले तो उसे सीधे रास्ते की तरफ हिदायत मिल जाती है।

(102) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह से इस तरह डरो जिस तरह उससे डरने का हक़ है और तुम्हें मौत न आए, मगर इस हालत में कि तुम मुसलमान हो।

(103) और सब मिल कर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और जुदा जुदा न हो, और तुम खुद अल्लाह की नेअमत को याद करो जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे, फ़िर उसने तुम्हारे दिलों में उल्फत डाल दी और तुम उसके एहसान से भाई (भाई) बन गए। और तुम आग के गढ़े के किनारे पर थे फ़िर उसने तुम्हें उसमें गिरने से बचा लिया, अल्लाह तआला इसी तरह तुम्हारे लिए अपनी आयतें बयान करता है, शायद की तुम हिदायत पाओ।

(104) और तुम में से एक जमाअत ऐसी होनी चाहिए। जो ख़ैर की तरफ बुलाऐ और नेक कामों का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके। और वही लोग फलाह पाने वाले हैं।

(105) और तुम उन लोगों की तरह न हो जाओ जो फ़िरक़ों में बट गए और उनके पास वाज़ेह निशानियां आ जाने के बाद उन्होंने एक दूसरे से इख़्तिलाफ किया और उन लोगों के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।

(106) जिस दिन कई चेहरे सफेद होंगे और कई चेहरे काले होंगे, फ़िर जिन लोगों के चेहरे काले होंगे (उनसे कहा जाएगा) क्या तुमने ईमान लाने के बाद कुफ़्र किया ? पस अब अज़ाब चखो उस कुफ़्र के बदले जो तुम करते रहे हो।

(107) और जिन लोगों के चेहरे सफेद होंगे, वह अल्लाह की रहमत में होंगे, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(108) (ऐ नबी!) यह अल्लाह की आयतें हैं जो हम आपको हक़ के साथ सुनाते हैं और अल्लाह जहान वालों पर जुल्म करने को कोई इरादा नहीं रखता।

(109) और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, और सब मुआमले अल्लाह ही की तरफ लौटाए जाते है।

(110) तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों (की इस्लाह) के लिए पैदा की गई है, तुम नेक कामों का हुक्म देते हो और बुरे कामों से रोकते हो, और तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, और

अगर अहले किताब ईमान ले आते तो उनके हक़ में बहुत बेहतर होता। उनमें कुछ ईमान वाले भी मगर उनके अक्सर नाफ़रमान हैं।

(111) वह तुम्हें थोड़ी सी ईज़ा (तकलीफ) के सिवा हरगिज़ नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेंगे, और अगर तुमसे लड़ें तो पीठ फ़ेर कर भाग जाएँगे, फ़िर उनकी मदद नहीं की जायेगी।

(112) वह जहाँ कहीं भी पाए गए उन पर ज़िल्लत की मार पड़ी, मगर यह कि वह अल्लाह की या लोगों की पनाह में थे, वह अल्लाह की तरफ से ग़ज़ब के हक़दार ठहरे और उन पर मुहताजी मुसल्लत कर दी गई, यह इस वजह से हुआ कि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते थे, और इस वजह से भी कि वह नाफरमानी करते और हद से बढ़ जाते थे।

(113) वह सब बराबर नहीं हैं, अहले किताब में से एक गिरोह हक़ पर क़ायम है, वह रात की घड़ियों में अल्लाह की आयतें तिलावत करते हैं, और सज्दे करते हैं।

(114) वह अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और वह नेकी का हुक्म देते और बुराई से रोकते हैं और जल्दी करते हैं भलाई के कामों में और वही नेकूकारों (उत्तमकारों) में से हैं।

(115) वह जो भी भलाई करेंगे उसकी नाक़द्री नहीं की जायेगी, और अल्लाह परहेज़गारों को खूब जानता है।

(116) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन्हें उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह (के अज़ाब) से ज़रा भी न छुड़ा सकेंगी, और वही दोज़ख वाले हैं। वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(117) (काफिर) इस दुनिया में जो कुछ खर्च करते हैं, उसकी मिसाल ऐसी आँधी की सी है जिसमें सख्त पाला हो, वह उन लोगों की खेती पर चले, जिन्होंने अपनी जानो पर ज़ुल्म किया, तो वह उसे तबाह कर डालें। और अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।

(118) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! तुम अपने लोगों के सिवा किसी को दिली दोस्त न बनाओ, दूसरे लोग तुम्हें बरबाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ते, वह चाहते हैं कि तुम मुसीबत में पड़ो, उनके दिलों की दुश्मनी उनके मुहँ से ज़ाहिर हो चुकी है और वह अपने सीनों में जो (बुग्ज़ व इनाद) छुपाते हैं वह कहीं ज़्यादा है। हमने तुम्हारे लिए आयतें खोल कर बयान की हैं अगर तुम अक़्ल रखते हो।

(119) खबरदार! तुम लोग उनसे मुहब्बत रखते हो, जबकि वह तुमसे मुहब्बत नहीं रखते। तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो

(जबकि वह ऐसा नहीं करते) वह तुम्हारे सामने तो अपने ईमान का इक़रार करते है, मगर जब तन्हा होते हैं तो तुम पर अपनी उगँलियां चबाते हैं गुस्से के मारे। उनसे (कहें) तुम अपने गुस्से ही में मर जाओ, बेशक अल्लाह दिलों के राज़ खूब जानता है।

(120) अगर तुम्हें कोई भलाई पहुँचे तो वह उन्हें बुरी लगती है और अगर तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह उस पर खुश होते है। अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी इख्तियार करो तो उनका फरेब तुम्हें कोई नुक्सान नहीं पहुँचायेगा। बेशक अल्लाह ने उनके आमाल को घेर रखा है।

(121) और (ऐ नबी! याद करें) जब आप सुबह सवेरे अपने घर वालों से रवाना हुए और मोमिनों को जंग (उहद) के लिए मोरचों पर बिठा रहे थे और अल्लाह खूब सुनने वाला जानने वाला है।

(122) जब तुम्हारे दो गिरोहों ने कम हिम्मती दिखाने का इरादा किया और अल्लाह उनका दोस्त था, और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

(123) और अल्लाह ने बद्र में ऐन उस वक्त तुम्हारी मदद की जब तुम कमज़ोर थे पस तुम अल्लाह से डरो ताकि तुम्हें शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ हो।

(124) (ऐ नबी!) जब आप मोमिनों से कह रहे थेः क्या तुम्हारे लिए काफी न होगा कि अल्लाह आसमान से तीन हज़ार फरिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे?

(125) क्यों नहीं ! अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरते रहो और दुश्मन तुम पर फौरन चढ़ आए तो उसी लम्हे तुम्हारा रब पाँच हज़ार फरिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा जिनके खास निशान लगे होंगे।

(126) और अल्लाह ने उसे तुम्हारे लिए खुशखबरी बना दिया ताकि उससे तुम्हारे दिलों को तसल्ली हो। और मदद तो अल्लाह ही की तरफ से होती है जो बहुत ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है।

(127) अल्लाह का मक़सद यह था कि वह काफिरों के एक गिरोह को हलाक कर दे, या उन्हें ज़लील कर दे, फ़िर वह नामुराद हो कर लौट जाएं।

(128) (ऐ नबी!) आपका इस मामले में कुछ इख्तियार नहीं, अल्लाह चाहे तो उनकी तौबा कबूल करे, चाहे तो उन्हें अज़ाब दे, क्योंकि वह (लोग) ज़ालिम हैं।

(129) और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है, अल्लाह ही का है, वह जिसे चाहता हे बख्श देता है और जिसे चाहता है अज़ाब देता है, और अल्लाह बहुत बख्शने वाला, बड़ा मेहरबान है।

(130) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! बढ़ चढ़ कर सूद न खाओ, और अल्लाह से डरो ताकि तुम्हें निजात मिल सके।

(131) और उस आग से डरो जो काफिरों के लिए तय्यार की गई है।

(132) और अल्लाह और उसके रसूल की फरमाबरदारी करो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

(133) और अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की तरफ दौड़ो जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है, जो परहेज़गारों के लिए तय्यार की गई है।

(134) वह लोग जो खुशी और सख़्ती के मौक़े पर (अल्लाह की राह में) खर्च करते हैं, और गुस्सा पी जाने वाले और लोगों को मुआफ कर देने वाले हैं। और अल्लाह नेकूकारों (उत्तमकारों) को पसंद करता है।

(135) और वह लोग जब कोई बुरा काम कर बैठते है या अपने आप पर जुल्म कर गुज़रते हैं तो अल्लाह को याद करते और अपने गुनाहों की बख़्शिश मांगते है, और अल्लाह के सिवा कौन गुनाहों को बख़्शता है? और वह अपने किये पर जान बूझ कर इसरार नहीं करते।

(136) वही लोग हैं जिनका बदला उनके रब की तरफ से बख़्शिश और जन्नत के बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती है, वह उन (बाग़ों) में हमेशा रहेंगे, और अमल करने वालों के लिए (अल्लाह के यहाँ) अच्छा अज्र है।

(137) तुमसे पहले भी ऐसे वाक़्यात गुज़र चुके हैं, इसलिए तुम ज़मीन में चल फ़िर कर देख लो कि (नबियों को) झुठलाने वालों का अन्जाम क्या हुआ।

(138) यह (कुरआन) लोगों के लिए वज़ाहत और परहेज़गारों के लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) और नसीहत (उपदेश) है।

(139) और तुम सुस्ती न करो, और न ग़म खाओ, तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम मोमिन हो।

(140) अगर तुम्हे (उहद में) ज़ख़्म लगे हैं तो ऐसे ही ज़ख़्म (बद्र में) काफिरों को भी लग चुके हैं। हम इन दिनों को लोगों के दरम्यान अदल बदल करते रहते हैं। और (तुम्हें यह ज़ख़्म इसलिए लगे कि) अल्लाह जानना चाहता था कि कौन ईमान वाले हैं? और वह तुम में से कुछ को शहादत का मर्तबा देना चाहता था और अल्लाह ज़लिमों को पसंद नहीं करता।

(141) और (एक वजह यह थी कि) अल्लाह ईमान वालों को पाक साफ कर देना और काफिरों को मिटा देना चाहता था।

(142) क्या तुम यह समझ बैठे हो कि तुम (सीधे) जन्नत में दाख़िल हो जाओगे,

हालांकि अभी अल्लाह ने यह तो देखा ही नहीं कि तुममें से कौन लोग उसकी राह में जानें लड़ाने वाले और सब्र करने वाले हैं?

(143) बेशक तुम जंग से पहले ही (शहादत की) मौत की ख़्वाहिश करते थे, इसलिए अब तुमने उसे अपनी आँखों से अपने सामने देख लिया है।

(144) और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक रसूल ही तो हैं। उनसे पहले बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं। अगर उनका इन्तिक़ाल हो जाए या शहीद हो जाएं तो क्या तुम इस्लाम से अपनी ऐड़ियों के बल फ़िर जाओगे? और जो कोई अपनी ऐड़ियों के बल फ़िर जाए तो वह अल्लाह का कुछ भी बिगाड़ न सकेगा। और अल्लाह शुक्र अदा करने वालों को अच्छी जज़ा (बदला) देगा।

(145) और कोई जानदार अल्लाह के हुक्म के बग़ेर मर नहीं सकता, उसने मौत का वक्त लिखा हुआ है और जो कोई दुनिया का बदला चाहता हो, तो हम उसे दुनिया ही में कुछ दे देते हैं और जो कोई आख़िरत का बदला चाहता हो, तो हम उसे आख़िरत में कुछ दे देते हैं और हम शुक्र अदा करने वालों को अच्छा बदला देंगे।

(146) और कितने ही नबी गुज़रे जिन के साथ मिल कर बहुत से अल्लाह वालों ने जिहाद किया, उन्हें अल्लाह की राह में जो तकलीफें पहुँची उन्होंने हिम्मत न हारी, और न कमज़ोरी दिखाई और न वह (काफिरों से) दबे, और अल्लाह सब्र करने वालों को पसंद करता है।

(147) और उनका कहना यही था कि ऐ हमारे रब! हमारे गुनाह बख़्श (क्षमा कर) दे और हमारे कामों में हमसे जो ज़्यादतियां हुई वह माफ कर दे और हमें साबित क़दम रख और काफिर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फरमा।

(148) इसलिए अल्लाह ने उन्हें दुनिया में सवाब दिया और आख़िरत में बहुत अच्छा सवाब दिया और अल्लाह नेकूकारों (उत्तमकारों) को पसंद करता है।

(149) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! अगर तुम काफिरों की बातें मानोंगे तो वह तुम्हें पलटा कर मुरतद बना (एड़ी के बल पलटा) देंगे, फ़िर तुम नुक्सान पाने वालों में होगे।

(150) बल्कि अल्लाह तुम्हारा मौला है और वह बेहतरीन मदद करने वाला है।

(151) जिन लोगों ने कुफ़्र किया, हम उनके दिलों में रौब डाल देंगे, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह के साथ ऐसी चीज़ों को शरीक ठहराया है जिनकी अल्लाह ने कोई दलील नाज़िल नहीं की, और उनका ठिकाना दोज़ख है, और ज़ालिमों का बहुत बुरा ठिकाना

है।

(152) यक़ीनन अल्लाह ने तुमसे अपना वादा सच कर दिखाया जब तुम (उहद में) उसके हुक्म से कफिरों को क़त्ल कर रहे थे, यहाँ तक कि जब तुमने कम हिम्मती इख़्तियार की और अपनी ज़िम्मेदारी के बारे में झगड़ने लगे और ज्यों ही अल्लाह ने तुम्हें वह चीज़ (यानी माले ग़नीमत की झलक) दिखाई जिससे तुम मुहब्बत करते थे तो तुमने नाफरमानी की (इसलिए कि) तुममें से कुछ लोग दुनिया को चाहते थे और कुछ आख़िरत की ख़्वाहिश रखते थे, फ़िर अल्लाह ने तुम्हें काफिरों के मुक़ाबले से फेर दिया ताकि तुम्हारी आज़माईश करे, बिलाशुब्ह (फ़िर भी) उसने तुम्हें माफ कर दिया, और अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़ल करने वाला है।

(153) जब तुम भागे चले जा रहे थे और किसी की तरफ पलट कर न देखते थे, और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारी पिछली सफ में खड़े तुम्हें पुकार रहे थे, फ़िर अल्लाह ने तुम्हें ग़म पर ग़म दिए, ताकि तुम्हें यह सबक़ मिले कि जो कुछ तुम्हारे हाथ से जाए या जो मुसीबत तुम पर नाज़िल हो उस पर तुम्हें ग़मगीन नहीं होना चाहिए। और तुम जो अमल करते हो अल्लाह उसकी खबर रखता है।

(154) फ़िर उसने ग़म के बाद तुम पर सुकून नाज़िल किया जिससे तुम्हारे एक गिरोह पर ऊँघ तारी हो गई और दूसरा गिरोह जिसके नज़दीक सारी एहमियत अपनी ज़ात (जीवन) ही की थी, वह अल्लाह के बारे में नाहक़ जाहिलाना तौर पर गुमान करने लगा। वह कहते थेः क्या इस मामले में हमारा भी कोई इख़्तियार (अधिकार) है? कह दीजिएः सब इख़्तियार अल्लाह ही का है। वह अपने दिलों में वह बात छुपाते हैं जो आपके सामने ज़ाहिर नहीं कर सकते। वह कहते है कि अगर इस मामले में हमारा भी कुछ इख़्तियार होता तो हम यहाँ न मारे जाते। कह दीजिएः अगर तुम अपने घरों में होते तो भी जिनकी क़िस्मत में क़त्ल होना लिखा था वह अपनी क़त्ल गाहों की तरफ ज़रूर निकल आते, और ये इसलिए हुआ कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है अल्लाह उसे आज़माए, और ताकि तुम्हारे दिलों में से वस्वसे साफ कर दे, और अल्लाह सीनों के भेद खूब जानता है।

(155) बेशक जब दो लश्कर (उहद में) आपस में टकराये थे तो तुममें से जिन लोगों ने पीठ दिखाई यक़ीनन वह अपनी कुछ कोताहियों के सबब शैतान के बहकावे में आ गए थे, बिलाशुब्ह अल्लाह ने उन्हें माफ कर दिया, बेशक अल्लाह बहुत माफ करने वाला, बहुत हौसले वाला है।

(156) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! तुम

उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने कुफ्र किया, और अपने भाई बन्दों के बारे में कहने लगे जब वह सफर के लिए या जिहाद के लिए निकले कि अगर वह हमारे पास रहते तो न मरते और न क़त्ल किया जाते, यह इसलिए कि अल्लाह उनकी ऐसी बातों को उनके दिलों का पछतावा बना दे, और अल्लाह ही ज़िन्दा करता है और मारता है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे देख रहा है।

(157) और अगर तुम अल्लाह की राह में क़त्ल हो जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की बख्शिश और रहमत उन चीज़ों से कहीं बेहतर है जो वह जमा करते है।

(158) और अगर तुम मर जाओ या क़त्ल कर दिए जाओ तो यक़ीनन तुम अल्लाह ही की तरफ इकट्ठे किये जाओगे।

(159) पस (ऐ नबी!) आप अल्लाह की रहमत की वजह से उनके लिए नर्म हो गए। अगर आप बदज़ुबान और सख्त दिल होते तो वह सब आपके पास से छट जाते। इसलिए आप उनसे दरगुज़र करें और उनके लिए बख्शिश मांगें और उनसे (अहम) मुआमलात में मशवरा करें, फ़िर जब आप पुख्ता इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें, बेशक अल्लाह भरोसा करने वालों को पंसद करता है।

(160) अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता, और अगर वह तुम्हें बे यारो मददगार छोड़ दे तो फ़िर कौन है जो उसके बाद तुम्हारी मदद कर सके? और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

(161) यह नामुम्किन है कि कोई नबी ख्यानत करे, और जो कोई ख्यानत करेगा तो जो उसने ख्यानत की होगी उसके साथ क़यामत के दिन हाज़िर होगा। फ़िर हर शख्स को उसके आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा।

(162) भला जो शख्स अल्लाह की रज़ा के पीछे चल रहा हो, उस शख्स जैसा हो सकता है जो अल्लाह की नाराज़ी ले कर लौटे और जिसका ठिकाना जहन्नम है? और वह बदतरीन लौटने की जगह है।

(163) उनके लिए अल्लाह के पास दर्जे हैं और वह जो कुछ करते हैं अल्लाह उसे देख रहा है।

(164) बेशक अल्लाह ने मोमिनों पर एहसान किया, जब उनमें उन्हीं में से एक रसूल भेजा, वह उन्हें उसकी आयतें पढ़ कर सुनाता है और उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब और हिकमत सिखाता है, और बेशक वह इससे पहले खुली गुमराही में थे।

(165) भला तुम्हारा क्या हाल है जब

(उहद में) तुम पर मुसीबत आ पड़ी तो तुम कहने लगे कि यह कहाँ से आई है? हालांकि (बद्र में) तुमने इससे दो गुनी मुसीबत काफिरों को पहुँचाई थी। कह दीजिए कि यह मुसीबत तुम्हारी अपनी लाई हुई है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(166) और उहद के दिन जब दोनों लश्कर आपस में टकराये तो तुम्हें जो (नुक़्सान) पहुँचा वह अल्लाह के हुक्म से था, और इसलिए था कि अल्लाह जान ले कि मोमिन कौन हैं।

(167) और यह भी जान लें कि मुनाफिक़ कौन हैं और उन मुनाफिक़ों से कहा गया थाः आओ! अल्लाह के रास्ते में लड़ो या (शहर का) दिफा करो। उन्होंने कहाः अगर हमें जंग होने का यक़ीनी इल्म होता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ चलते। वह उस रोज़ ईमान की निस्बत कुफ्र के ज़्यादा क़रीब थे। वह अपने मुँह से वह बात कह रहे थे जो उनके दिलों में नहीं थी, और अल्लाह वह बात खूब जानता है जिसे वह छुपाते हैं।

(168) यह वही लोग हैं जो खुद तो पीछे बैठे रहे और अपने भाईयों से (जो लड़ाई में मारे गए) कहने लगेः अगर वह हमारी बात मानते तो क़त्ल न होते। उनसे कह दीजिएः अगर तुम इस बात में सच्चे हो तो अपनी मौत आने पर उसे टाल कर दिखाना।

(169) उन लोगों को मुर्दा ख्याल न करो जो अल्लाह के रास्ते में मारे गए है बल्कि वह ज़िन्दा हैं। उन्हें उनके रब के यहाँ रिज़्क़ दिया जाता है।

(170) जो कुछ अल्लाह ने अपने फज़्ल से उन्हें दिया उस पर वह खुश हैं और उन (मोमिनों) के बारे में भी खुशी महसूस करते हैं जो अभी तक उनसे नहीं मिले और उनके पीछे (दुनिया में) रह गए हैं कि उन्हें न कोई ख़ौफ होगा और न वह ग़मगीन होंगे।

(171) वह अल्लाह की नेअमत और उसका फज़्ल अता होने पर खुशी महसूस करते हैं, और बेशक अल्लाह मोमिनों का अज्र बरबाद नहीं करता।

(172) यही लोग हैं जिन्होंने जंग में ज़ख्म लगने के बाद अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माना, उनमें से जो लोग नेकूकार और परेहज़गार हैं, उनके लिए बहुत बड़ा अज्र है।

(173) उन्ही से लोगों ने कहा था कि तुम्हारे खिलाफ एक बड़ी फौज जमा हुई है, पस तुम उनसे डरो, तब इस बात ने उनके ईमान में इज़ाफा कर दिया और उन्होंने कहाः हमें अल्लाह काफी है और वह बहुत अच्छा कारसाज़ है।

(174) फ़िर वह अल्लाह की नेअमत और फज़्ल के साथ लौटे, उन्हें कोई नुक्सान न पहुँचा, और उन्होंने पैरवी की अल्लाह की रज़ा की, और

अल्लाह बहुत बड़े फज़्ल वाला है।

(175) यह तो शैतान ही है जो अपने दोस्तों से डराता है, पस तुम उनसे न डरो और सिर्फ मुझसे डरो अगर तुम मोमिन हो।

(176) और (ऐ नबी!) जो लोग कुफ्र में तेज़ी दिखाते हैं उनकी सरगरमियां आपको ग़मनाक न करें। बेशक वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। अल्लाह चाहता है कि उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा न रखे, और उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।

(177) बेशक जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ्र खरीद लिया, वह अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगें, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(178) और जिन लोगों ने कुफ्र किया, वह हरगिज़ यह ख्याल न करें कि हम उन्हें जो ढील देते हैं, वह उनके लिए बेहतर है। हम तो उन्हें सिर्फ इसलिए ढील देते है कि वह गुनाह में पड़ जाएं, और उनके लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब है।

(179) अल्लाह मोमिनों को इस हालत में हरगिज़ न रहने देगा जिसमें तुम इस वक़्त हो, यहाँ तक कि वह पाक को नापाक से अलग कर दे और अल्लाह का यह तरीक़ा नहीं कि वह तुम पर ग़ैब ज़ाहिर करे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिसे चाहता है (ग़ैब की बातें बताने के लिए) चुन लेता है, पस तुम ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूलों पर, और अगर तुम ईमान लाओ और तक़्वा इख़्तियार करो तो तुम्हारे लिए अज्रे अज़ीम है।

(180) और जिन लोगों को अल्लाह ने अपने फज़्ल से बहुत कुछ दिया है और वह इसमें कंजूसी करते हैं तो वह इस (कंजूसी) को अपने लिए हरगिज़ बेहतर न समझें, बल्कि वह उनके लिए बहुत बुरा है। जिस माल में उन्होंने कंजूसी की, क़यामत के दिन उसीके उन्हें तौक़ (हार) पहनाए जाएँगे और आसमानों और ज़मीन की मिल्कियत अल्लाह ही की है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उससे खूब बाखबर है।

(181) अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन ली जिन्होंने कहा कि अल्लाह फक़ीर है और हम मालदार हैं। यक़ीनन उनकी बात हम लिख लेंगे और जो वह नबियों को नाहक़ क़त्ल करते रहे (वह भी उनके आमाल नामे में दर्ज है) और (क़यामत के दिन) हम उनसे कहेंगेः अब जलाने वाले अज़ाब का मज़ा चखो।

(182) यह तुम्हारे हाथों की कमाई का बदला है और बेशक अल्लाह अपने बन्दों पर हरगिज़ ज़ुल्म करने वाला नहीं।

(183) यह वह लोग हैं जिन्होंने कहाः

बेशक अल्लाह ने हम से अहद लिया है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएँ यहाँ तक कि वह हमारे पास ऐसी कुरबानी लाए जिसे आग खा जाए। कह दीजिए कि मुझसे पहले तुम्हारे पास कई रसूल खुली निशानियां और वह (मोजिजा) भी ले कर आए जिसका तुम कह रहे हो, फ़िर तुमने उन्हें क़त्ल क्यों कर डाला अगर तुम सच्चे हो?

(184) (ऐ नबी!) फ़िर अगर वह आपको झुठलाते हैं तो आपसे पहले कई रसूल झुठलाए गए थे जो खुली निशानियां, सहीफे और रोशन किताब ले कर आए थे।

(185) हर कोई मौत का ज़ायक़ा (स्वाद) चखने वाला है, बेशक क़यामत के दिन तुम्हें पूरे पूरे अज्र दिए जाएँगे फ़िर जिसे आग से दूर रखा गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया तो वह यक़ीनन कामयाब हो गया, और दुनिया की ज़िन्दगी धोखे ही का सामान तो है।

(186) अलबत्ता तुम्हें तुम्हारे मालों और तुम्हारी जानों के बारे में ज़रूर आज़माया जाएगा, और तुम उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और उन लोगों से जिन्होंने शिर्क किया, ज़रूर तकलीफ देने वाली बातें सुनोगे और तुम सब्र करो और परेज़गारी इख़्तियार करो तो बेशक यह बड़ी हिम्मत का काम है।

(187) और जब अल्लाह ने उन लोगों से अहद लिया जिन्हें किताब दी गई थी कि तुम उसे लोगो के सामने ज़रूर बयान करोगे और उसे हरगिज़ नहीं छुपाओगे, फ़िर उन्होंने इस अहद को पीठ पीछे डाल दिया और उसे थोड़ी क़ीमत पर बेच डाला, फ़िर किस क़दर बुरी है वह क़ीमत जो वह वसूल कर रहे हैं।

(188) यह लोग जो अपने करतूत पर खुश हैं और चाहते हैं कि जो उन्होंने नहीं किया उस पर भी उनकी तअरीफ की जाए, आप यह न समझें कि वह अज़ाब से छूट जाएँगे, उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(189) और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की हुकूमत, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

(190) बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाईश, और रात और दिन के इख़्तिलाफ में अक़्लमन्दों के लिए निशानियां हैं।

(191) जो लोग खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और ज़मीन की पैदाईश में सोच विचार करते हैं। (वह कहते हैं:) ऐ हमारे रब! तूने यह सब कुछ बे फायदा पैदा नहीं किया, तू पाक है, पस तू हमें आग के अज़ाब से बचा।

(192) ऐ हमारे रब! बेशक जिसे तू आग में दाख़िल करे यक़ीनन उसे तूने रूस्वा

(अपमानित) कर दिया, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

(193) ऐ हमारे रब! बेशक हमने एक पुकारने वाले को सुना, वह ईमान की तरफ बुलाता है, यह कि अपने रब पर ईमान लाओ, फ़िर हम ईमान ले आये। ऐ हमारे रब! फ़िर हमारे गुनाह बख़्श दे, और हम से हमारी बुराईयां दूर कर दे, और हमें नेक लोगों के साथ मौत दे।

(194) ऐ हमारे रब! और हमें वह चीज़ दे जिसका तूने अपने रसूलों के ज़रिये हमसे वादा किया था, और हमें क़यामत के दिन रूस्वा न करना। बेशक तू वादे के खिलाफ (विरूद्ध) नहीं करता।

(195) फ़िर उनके रब ने उनकी दुआ क़बूल की कि तुममें से किसी अमल करने वाले का अमल ज़ाया नहीं करूंगा, ख्वाह कोई मर्द हो या औरत, तुम आपस में एक दूसरे के हमजिन्स हो, फ़िर जिन लोगों ने हिजरत की और उन्हें उनके घरों से निकाल दिया गया, और उन्हें मेरी राह में तकलीफें दी गईं और उन्होंने जिहाद किया और वह क़त्ल हुए तो मैं ज़रूर उनकी बुराइयां उनसे दूर करूंगा और यक़ीनन उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं। यह अल्लाह की तरफ से सवाब होगा। और अल्लाह ही के पास बेहतरीन सवाब (बदला) है।

(196) जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उनका शहरों में चलना फिरना आपको धोखे में न डाल दे।

(197) यह थोड़ा सा फायदा फ़िर उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बुरा ठिकाना है।

(198) लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे, उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं, वह उनमें हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह की तरफ से मेहमानी है, और जो अल्लाह के पास है वह नेक लोगों के लिए बेहतर है।

(199) और बेशक अहले किताब में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर और जो कुछ तुम्हारी तरफ नाज़िल किया गया और जो कुछ उनकी तरफ नाज़िल किया गया, उस पर ईमान लाते हैं, वह अल्लाह के सामने झुकने वाले हैं, वह अल्लाह की आयतें थोड़ी क़ीमत के बदले नहीं बेचते, वही हैं जिनका अज्र उनके रब के पास है, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

(200) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! सब्र से काम लो, साबित क़दम रहो और हक़ की खिदमत में सरगर्म रहो, और अल्लाह से डरो ताकि तुम फलाह पाओ।

सूरा निसा-4

(यह सूरत मदनी है इसमें 176 आयतें और 24 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ऐ लोगों! अपने रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा पैदा कर के उन दोनों से मर्द और औरतें कसरत से फैला दिए। और अल्लाह से डरो जिसके वास्ते से तुम आपस में सवाल करते हो, और रिश्ते तोड़ने से डरो, बेशक अल्लाह तुम पर निगहबान है।

(2) और यतीमों को उनके माल दे दो, और अच्छे माल को बुरे माल से न बदलो। और तुम उनके माल अपने माल के साथ मिला कर न खा जाओ, बेशक यह बहुत बड़ा गुनाह है।

(3) और अगर तुम्हें डर हो कि तुम यतीम लड़कियों के बारे में इंसाफ न कर सकोगे तो उनकी बजाए उन औरतों में से जो तुम्हें अच्छी लगें, दो दो, तीन तीन, और चार चार से निकाह कर लो, फ़िर अगर तुम्हें डर हो कि तुम इंसाफ न कर सकोगे तो एक ही से (निकाह करो) या अपनी मिल्कियत की लौंडियों से (अज़दवाजी तअल्लुक़ रखो) यह ज़्यादा बेहतर है कि इस तरह तुम नाइंसाफी करने से बचे रहोगे।

(4) और औरतों को उनके मेहर ख़ुशी से दे दो, फ़िर अगर वह अपनी मर्ज़ी से तुम्हें कुछ मेहर छोड़ दें तो तुम उसे शौक़ से खा सकते हो।

(5) और तुम अपने वह माल नादान लोगों के सुपर्द न करो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए गुज़र बसर का ज़रिया बनाये हैं, अलबत्ता उनमें से उन्हें खाने और पहनने के लिए दो। और उनसे अच्छी बात कहो।

(6) और यतीमों की जांच परख करो यहाँ तक कि वह निकाह (की उमर) को पहुँच जाएं, फ़िर अगर तुम उन्हें समझदार पाओ तो उनके माल उनके सुपुर्द कर दो, और तुम उनके माल हद से बढ़ कर जल्दी करते हुए इस ख्याल से न खा जाओ कि वह बड़े हो कर अपना हक़ मांगेंगे। और जो (सरपरस्त) मालदार हो वह (यतीम का माल खाने से) बचे, और जो ग़रीब हो वह जाईज़ तरीक़े से (उसका माल) खा सकता है। फ़िर जब तुम उनके माल उनके सुपुर्द करो तो उन पर किसी को गवाह ठहरा लो, और अल्लाह हिसाब लेने वाला काफी है।

(7) मर्दों के लिए उस माल में हिस्सा है जो माँ बाप और रिश्तेदार छोड़ जाएं, और औरतों के लिए भी हिस्सा है उस माल में जो माँ बाप और रिश्तेदार छोड़ जाएं, (यह

छोड़ा हुआ माल) थोड़ा हो या ज़्यादा, इसमें हर एक का मुक़र्रर किया हुआ हिस्सा है।

(8) और जब बँटवारे के वक्त हाज़िर हों (दूर के) रिश्तेदार, यतीम और मिस्कीन (गरीब) तो उन्हें भी उसमें से कुछ दे दो, और उनसे अच्छी बात कहो।

(9) और लोगों को इस बात से डरना चाहिए। कि अगर वह मरते वक़्त अपने पीछे बेबस औलाद छोड़ जाएं तो उन्हें उनके बारे में कितनी फ़िक्र होगी, इसलिए उन्हें अल्लाह से डरना चाहिए। और सीधी बात कहनी चाहिए।

(10) बेशक जो लोग यतीमों का माल जुल्म के साथ खाते हैं वह अपने पेट में आग भरते हैं, और वह जल्द दहकती आग में दाख़िल होंगे।

(11) अल्लाह तुम्हारी औलाद के बारे में तुम्हें वसियत करता है, मर्द का हिस्सा दो औरतों के हिस्से के बराबर है, फ़िर अगर (दो या) दो से ज़्यादा औरतें ही हों तो उनके लिए तरके (छोड़े हुए माल) में से दो तिहाई हिस्सा है, और अगर एक ही (लड़की) हो तो उसके लिए आधा हिस्सा है, और उस (मरने वाले) के माँ बाप में से हर एक के लिए तरके में छटा हिस्सा है, अगर उसकी औलाद हो। फ़िर अगर उसकी औलाद न हो और उसके माँ बाप ही उसके वारिस हों तो उसकी माँ के लिए तीसरा हिस्सा है। फ़िर अगर उस (मरने वाले) के (एक से ज़्यादा) भाई बहन हों तो उसकी माँ के लिए छटा हिस्सा है। (यह बँटवारा) उसकी वसियत पर अमल या क़र्ज़ अदा करने के बाद होगा। तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे, तुम नहीं जानते कि उन में से कौन नफ़े (लाभ) के लिहाज़ से तुमसे ज़्यादा क़रीब है। (यह तक़्सीम) अल्लाह की तरफ से मुक़र्रर है, बेशक अल्लाह तआला खूब जानने वाला, बड़ी हिकमत वाला है।

(12) और तुम्हारी बीवियों के तरके में तुम्हारा आधा हिस्सा है, अगर उनकी औलाद न हो, फ़िर अगर उनकी औलाद हो तो उनके तरके में तुम्हारा चौथा हिस्सा। (यह तक़्सीम) उनकी वसियत पर अमल या क़र्ज़ अदा करने के बाद होगी और अगर तुम्हारी औलाद न हो तो तुम्हारे तरके में तुम्हारी बीवियों का चौथा हिस्सा है, फ़िर अगर तुम्हारी औलाद हो तो तुम्हारे तरके में उनका आठवां हिस्सा है। (यह तक़्सीम) तुम्हारी वसियत पर अमल या क़र्ज़ अदा करने के बाद होगी, और अगर वह आदमी जिसकी जायजाद बाँटी जा रही हो, उसका बेटा हो न बाप, या ऐसी ही औरत हो, और उसका एक भाई या

एक बहन तो उन दोनों में से हर एक के लिए छटा हिस्सा है। फ़िर अगर उनकी तादाद उससे ज़्यादा हो तो वह सब एक तिहाई हिस्से में शरीक होंगे। (यह बँटवारा) उसकी वसियत पर अमल या क़र्ज़ अदा करने के बाद होगी जबकि वह किसी को नुक्सान पहुँचाने वाला न हो। यह अल्लाह की तरफ से ताकीद है, और अल्लाह खूब जानने वाला, बड़े होसले वाला है।

(13) यह अल्लाह की हदें हैं और जो अल्लाह और उसके रसूल की फरमाबरदारी करेगा, उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वह उनमें हमेशा रहेंगे। और यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

(14) और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा और उसकी हदो से आगे निकलेगा तो अल्लाह उसे आग में दाख़िल करेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा और उसके लिए रूस्वा (अपमानित) करने वाला अज़ाब है।

(15) और तुम्हारी औरतों में से जो बेहयाई (व्यभिचार) का काम करें तो तुम उन पर अपने में से चार मर्द गवाह ठहरा लो, फ़िर अगर वह गवाही दें तो उन औरतों को घरों में बंद रखो, यहाँ तक उन्हें मौत आ जाए या अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकाल दे।

(16) और तुममे से जो दो मर्द बेहयायी का काम करें तो, उनको इज़ा (तक़लीफ) दो, फ़िर अगर वह तौबा कर के अपनी इस्लाह कर लें तो उनसे दरगुज़र करो। बेशक अल्लाह बहुत तौबा क़बूल करने वाला, बड़ा मेहरबान है।

(17) अल्लाह तो सिर्फ उन लोगों की तौबा क़बूल करता है जो नादानी से बुरा काम करते हैं, फ़िर जल्दी ही तौबा कर लेंते हैं, चुनांचे अल्लाह उनकी तौबा क़बूल कर लेता है, अल्लाह बहुत जानने वाला, बड़ी हिकमत वाला है।

(18) और उन लोगों की तौबा क़बूल नहीं होती जो बुरे काम करते रहते हैं, यहाँ तक कि जब उनमें से किसी को मौत आ जाए, तो वह कहता हैः बेशक अब मैंने तौबा की, और न उन लोगों की तौबा क़बूल होती जो इस हाल में मरते हैं कि वह काफिर ही होते हैं, उन लोगों के लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

(19) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम्हारे लिए हलाल नहीं कि तुम औरतों के ज़बरदस्ती वारिस बन जाओ, और तुम उन्हें (इस मक़सद से) न रोक रखो कि तुमने उन्हें जो मेहर दिया हो, उसका कुछ हिस्सा वापस ले लो मगर इस सूरत में

उन्हें रोकना जाईज़ है अगर वह खुली बेहयाई (अश्लीलता) का काम करें। और तुम उनके साथ अच्छे तरीक़े से गुज़र बसर करो। फ़िर अगर तुम उनको नापसंद करो तो हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और अल्लाह उसमें बहुत भलाई डाल दे।

(20) और अगर तुम एक बीवी की जगह दूसरी बीवी करना चाहो और तुमने उनमें से किसी को बहुत सा माल दिया हो तो उसमें से कुछ भी वापस न लो, क्या तुम उसे बोहतान लगा कर और खुला गुनाह करते हुए वापस लोगे?

(21) और तुम मेहर में से कैसे वापस लोगे, हालांकि तुम एक दूसरे से मिलाप कर चुके हो और उन औरतों ने तुमसे पुख़्ता अहद लिया है।

(22) और जिन औरतों से तुम्हारे बापों ने निकाह किया हो उनसे तुम निकाह न करो मगर जो पहले गुज़र गया सो गुज़र गया, बेशक यह बेहयाई (अश्लीलता) का काम, नाराज़ी (घृणा) की बात और बुरा तरीक़ा है।

(23) तुम पर हराम की गई हैं तुम्हारी माँऐं और तुम्हारी बेटियां और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी फुफियां और तुम्हारी खालाऐं और तुम्हारी भतीजियां और तुम्हारी भांजियां और तुम्हारी वह माँऐं जिन्होंने तुम्हें दुध पिलाया हो और तुम्हारी दूध शरीक बहनें और तुम्हारी बीवियों की माँऐं और तुम्हारी सौतेली बेटियां जो तुम्हारे यहाँ परवरिश पाएं और उन औरतों के पेट से हों जिनसे तुमने सोहबत (संभोग) की हो, फ़िर अगर तुमने उनसे सोहबत न की हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं, और तुम्हारे सुलबी बेटों की बीवियां, और तुम्हारा दो बहनों को जमा करना भी हराम है, मगर जो पहले गुज़र गया सो गुज़र गया। बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बड़ा मेहरबान है।

(24) और तुम्हारे लिए शादीशुदा औरतें भी हराम हैं सिवाए उन लोंडियों के जिन के तुम मालिक हो। (यह) अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है और उनके अलावा जो औरतें हैं, वह तुम्हारे लिए हलाल कर दी गई हैं, (शर्त यह है) कि तुम अपने माल (मेहर) के बदले उन्हें हासिल कर के उनसे निकाह करो और तुम्हारी नियत बदकारी की न हो फ़िर जिनसे मेहर के एवज़ तुम फायदा उठाओ उन्हें उनके मुक़र्रर किये हुए मेहर दे दो। अगर तुम मेहर मुक़र्रर कर लेने के बाद उस (में कमी बेशी) पर राज़ी हो जाओ तो तुम पर कोई गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह खूब जानने

वाला, बड़ी हिकमत वाला है।

(25) और तुममें से जो शख़्स आज़ाद मोमिन औरतों से निकाह करने की ताक़त न रखता हो, वह तुम्हारी मिल्कियत मोमिन लोंडियों में से किसी लोंडी से निकाह कर ले और अल्लाह तुम्हारे ईमानों का हाल खूब जानता है, तुम सब एक ही गिरोह के लोग हो (तुममें बरतरी का मेयार सिर्फ ईमान है) पस तुम उनके मालिकों की इजाज़त से उनसे निकाह कर लो और उन्हें दस्तूर के मुताबिक़ उनके मेहर दो, जबकि वह निकाह में लाई गई हों, बदकारी (व्यभिचार) करने वाली न हों और न चोरी छुपे प्रेमी बनाने वाली हों, फ़िर जब वह निकाह में आ जाए और उसके बाद वह बदकारी करें तो उनकी सज़ा आज़ाद औरतों की सज़ा का निस्फ (आधी) है। यह (इजाज़त) तुममें से उसके लिए है जिसे गुनाह की राह पर चलने का अन्देशा हो, और अगर तुम सब्र करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, बड़ा रहम करने वाला है।

(26) अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिए (यह मामलात) खोल कर बयान करे और तुम्हें तुम से पहले के नेक लोगों की राह चलाए और तुम पर तव्वजो दे, और अल्लाह खूब जानने वाला, हिकमत वाला है।

(27) और अल्लाह तुम पर तव्वजो देना चाहता है, और वह लोग जो अपनी ख्वाहिशात की पैरवी करते हैं वह चाहते हैं कि तुम (हक़ से) बहुत दूर हो जाओ।

(28) अल्लाह चाहता है कि तुम्हारा बोझ हल्का कर दे, और इन्सान बहुत कमज़ोर पैदा किया गया है।

(29) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! आपस में एक दूसरे के माल नाहक़ न खाओ, मगर यह कि आपस की रज़ामन्दी से तिजारत हो, और तुम अपने आपको क़त्ल न करो, बेशक अल्लाह तुम पर बहुत रहम करने वाला है।

(30) और जो शख़्स सरकशी और ज़ुल्म से ऐसे (नाफरमानी के) काम करेगा, तो उसे हम जल्द आग में डालेंगे और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है।

(31) अगर तुम बड़े गुनाहों से बचोगे, जिन से तुम्हें रोका जाता है, तो हम तुम्हारी छोटी छोटी बुराईयां तुमसे दूर करेंगे और तुम्हें इज्ज़त की जगह में दाख़िल करेंगे।

(32) और तुम उस मुक़ाम व मर्तबे की ख्वाहिश न करो जिसके वजह से अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है। मर्दों ने जो कमाया उसमें उनका हिस्सा है, और औरतों ने जो कमाया, उसमें उनका हिस्सा है, और तुम अल्लाह से उसका फ़ज़्ल मांगते रहो, बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

(33) माँ बाप और क़रीबी रिश्तेदार जो माल छोड़ जाए उसमें हमने हर एक के लिए वारिस बनाये हैं और जिनसे तुमने खुद अहद बान्धा हो उन्हे उनका हिस्सा दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।

(34) मर्द औरतों पर इस वजह से हाकिम हैं कि अल्लाह ने उनमें से एक को दूसरे पर फज़ीलत दी है, और इस वजह से भी कि वह अपने मालों में से खर्च करते हैं। इसलिए नेक औरतें फ़रमाबरदार और खाविन्द (पति) की ग़ैर मौजूदगी में अल्लाह की हिफाज़त से (माल व आबरू की) निगहबानी करती हैं और तुम्हें जिन औरतों की सरकशी का ख़ौफ हो उन्हें तुम नसीहत (उपदेश) करो और उनको ख्वाबगाहों (बेडरूम) में अलग करो, और उन्हें हल्की सज़ा दो, फ़िर अगर वह तुम्हारी फरमाबदारी करें तो उन्हें सताने की राह न ढूँढो । बेशक अल्लाह बहुत बुलंद, निहायत बड़ा है।

(35) और अगर तुम्हें दोनों मियां बीवी में झगड़े का डर हो तो एक शख़्स मर्द के कुनबे से और एक औरत के कुनबे से मुन्सिफ (पंच) मुक़र्रर करो, अगर वह दोनों सुलह करना चाहेंगे तो अल्लाह उन दोनों (मियां बीवी) में मवाफिक़त (मेलजोल) पैदा कर देगा, बेशक अल्लाह बहुत इल्म वाला, खूब खबरदार है।

(36) और तुम अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ, और माँ बाप के साथ नेकी करो और रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों, रिश्तेदार पड़ोसियों, अजनबी पड़ोसियों, साथ रहने वाले और मुसाफिर के साथ और अपनी मिल्कियत कनीज़ों और गुलामों से भी नेकी करो। बेशक अल्लाह हर इतराने वाले, फख्र करने वाले को पसंद नहीं करता।

(37) ऐसे लोग (भी अल्लाह को पसंद नहीं) जो कजूंसी करते हैं और लोगों को भी कजूंसी करने का हुक्म देते हैं और अल्लाह ने अपने फज़ल से जो कुछ उन्हें दिया है उसे छुपाते हैं, और हमने काफिरों के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।

(38) और ऐसे लोग (भी अल्लाह को पसंद नहीं) जो लोगों के दिखावे के लिए अपने माल खर्च करते हैं। और वह अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते। और जिस शख़्स का साथी शैतान हो तो वह बहुत बुरा साथी है।

(39) और उन लोगों का क्या जाता अगर वह अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान ले आते और अल्लाह ने उन्हें जो माल दिया है उसमें से खर्च करते? और अल्लाह उन्हें खूब जानने वाला है।

(40) बेशक अल्लाह ज़र्रा बराबर भी जुल्म

नहीं करता और अगर (किसी की) कोई नेकी हो तो वह उसे दुगनी कर देता है और अपनी तरफ से बहुत बड़ा अज्र देता है।

(41) फ़िर उनका क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत से एक गवाह लाएंगे और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को इस उम्मत पर गवाह बनायेंगे।

(42) उस दिन वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया और रसूल की नाफरमानी की, ख़्वाहिश करेंगे कि काश! उन्हें ज़मीन के साथ बराबर कर दिया जाता, और वह अल्लाह से कोई बात छुपा न सकेंगे।

(43) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम उस वक़्त नमाज़ के क़रीब न जाओ जब तुम नशे में हो, यहाँ तक कि तुम समझने लगो जो कुछ तुम कहते हो, और न नापाकी की हालत में (नमाज़ के क़रीब जाओ) यहाँ तक कि तुम गुस्ल कर लो, हाँ अगर राह चलते गुज़रो तो और बात है। और अगर तुम बीमार हो या सफर में हो या तुममें से कोई रफअ हाजत (शौच) से (फारिग हो कर) आया हो या तुमने औरतों से मुबाशरत (रतिक्रिया) की हो, फ़िर तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो और उसे अपने मुहँ और हाथ पर मल लो बेशक अल्लाह बहुत माफ करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला है।

(44) (ऐ नबी!) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का कुछ हिस्सा दिया गया? वह गुमराही खरीदते हैं और यह चाहते हैं कि तुम भी गुमराह हो जाओ।

(45) और अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है और अल्लाह दोस्त और मददगार के तौर पर काफी है।

(46) यहूदियों में से कुछ लोग अल्फ़ाज को उनके मौक़े महल से फ़ेर देते हैं और फ़िर अपनी ज़बानों को तोड़ मोड़ कर सच्चे दीन के खिलाफ तअना ज़नी करते हुए (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से) कहते हैं: ''हमने सुना और हमने नाफरमानी की'' और कहते हैं: सुनो! अगरचे तुम इस क़ाबिल नहीं हो कि तुम्हें कुछ सुनाया जाए, और आपसे मुखातिब हो कर कहते हैं {राईना} यानी ''ऐ हमारे चारवाहे'' और बेशक अगर वह कहते: ''हमने सुना और हमने इताअत की, और हमारी बात सुनिये और हमारी तरफ नज़र कीजिए'' तो उन के लिए बेहतर और निहायत मुनासिब (अच्छा) होता, लेकिन अल्लाह ने उनके कुफ़्र की वजह से उन पर लअनत की, इसलिए सिवाए चन्द लोगों के वह ईमान नहीं लाते।

(47) ऐ लोगो जिन्हें किताब दी गई! इस (क़ुरआन) पर ईमान लाओ जो हमने नाज़िल किया, वह उसकी तस्दीक़ करने वाला है जो

तुम्हारे पास है, (तुम ईमान लाओ) इससे पहले कि हम चेहरे बिगाड़ दें और उन्हें पीछे की तरफ फ़ेर दें या उन पर उसी तरह लअनत भेजें जिस तरह हमने सब्त (शनिचर) वालों पर लअनत भेजी थी, और (याद रखो!) अल्लाह का हुक्म अटल है।

(48) बेशक अल्लाह (यह गुनाह) नहीं बख्शता कि उसके साथ शिर्क किया जाए और वह उसके अलावा जिसे चाहे बख्श देता है और जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया, उसने झूठ गढ़ा और बड़े गुनाह का काम किया।

(49) (ऐ नबी!) क्या आपने उन्हें नहीं देखा जो अपनी पाकीज़गी (पवित्रता) खुद बयान करते हैं बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है पाक (पवित्र) करता है और लोगों पर ज़र्रा बराबर भी जुल्म (अन्याय) नहीं किया जायेगा।

(50) देखें! वह किस तरह अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं और उनके गुनाहगार (पापी) होने के लिए यही खुला गुनाह काफी है।

(51) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब का कुछ हिस्सा दिया गया (उनका हाल यह है कि) वह बुतों और शैतान पर ईमान रखते हैं और काफिरों के बारे में कहते है कि यह लोग ईमान लाने वालों से ज़्यादा हिदायत (मार्ग-दर्शन) वाले हैं।

(52) वही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लअनत की और जिस पर अल्लाह लअनत करे, उसके लिए आप हरगिज़ कोई मददगार नहीं पाएँगे।

(53) क्या (वह समझते हैं कि) उन्हें बादशाही का कुछ हिस्सा मिला है, फ़िर तो वह उसमें से लोगों को तिल बराबर भी नहीं देंगे।

(54) क्या वह उस पर लोगों से हसद करते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया है, इसलिए हमने आले इब्राहीम को किताब और हिकमत दी और बहुत बड़ी बादशाही दी।

(55) तो उनमें से कुछ वह हैं जो उस पर ईमान लाएँ और कुछ वह हैं जो उस पर ईमान लाने से रूके रहे, और उनके लिए दहकती जहन्नम ही काफी है।

(56) बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों का इन्कार किया, हम जल्द उन्हें आग में डालेंगे। जब उनकी खालें जल जाएंगी तो हम उनकी जगह दूसरी खालें चढ़ा देंगे ताकि वह अज़ाब चखें, बिलाशुब्ह अल्लाह बहुत ज़बरदस्त, बड़ी हिकमत वाला है।

(57) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, उन्हें हम जल्द बागों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती हैं और वह उनमें हमेशा रहेंगे, वहाँ उनके लिए

पाकीज़ा बीवियां होंगी, और हम उन्हें घनी छाँव में दाख़िल करेंगे।

(58) बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम अमानतें (धरोहर) उनके हक़दारों को वापस कर दो, और जब तुम लोगों के दरम्यान फैसला करो तो इन्साफ के साथ फैसला करो, बेशक अल्लाह तुम्हें बहुत अच्छी बात की नसीहत (उपदेश) करता है, बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब देखने वाला है।

(59) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! तुम इताअत करो अल्लाह की, और इताअत करो रसूल की और उन लोगों की जो तुममें से साहबे अम्र (अधिकारी) हों। फ़िर अगर तुम आपस में किसी चीज़ में इख़्तिलाफ करो तो उसे अल्लाह और उसके रसूल की तरफ लौटा दो, अगर तुम वाक़ई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हों। यह बेहतर है और अन्जाम के लिहाज़ से बहुत अच्छा है।

(60) (ऐ नबी!) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि बेशक वह उस पर ईमान लाए हैं जो आपकी, तरफ नाज़िल किया गया है और उस पर भी जो आपसे पहले नाज़िल किया गया। वह चाहते हैं कि अपने मुआमलात का फैसला शैतानी चेलों से कराएं, हालांकि उन्हें हुक्म दिया गया है कि ऐसे शैतानों का इन्कार करें, और शैतान चाहता है कि उन्हें गुमराह कर के दूर फेंक दे।

(61) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ उसकी तरफ जो अल्लाह ने नाज़िल किया और आओ रसूल की तरफ, तो आप मुनाफिक़ों को देखते हैं कि वह आपकी तरफ आने से कतराते हैं।

(62) फ़िर उनका क्या हाल होता है, जब उनके हाथों की लाई हुई मुसीबत उन पर आ पड़ती है, फ़िर वह क़समें खाते हुए आपके पास आ कर कहते हैंः अल्लाह की क़सम! हमने भलाई और सुलह सफाई का इरादा किया था।

(63) यह वह लोग हैं कि अल्लाह जानता है उनके दिलों में क्या है, लिहाज़ा (ऐ नबी!) आप उनकी बातों पर ध्यान न दें और उन्हें नसीहत करते रहें और उनसे दिलों पर असर करने वाली बात कहें।

(64) और हमने कोई रसूल नहीं भेजा मगर इसलिए कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअत की जाए और अगर बेशक वह लोग जब उन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया था, आपके पास आते, फ़िर वह अल्लाह से बख़्शिश मांगते और रसूल भी उनके लिए बख़्शिश तलब करता तो वह यक़ीनन अल्लाह को बहुत तौबा क़बूल करने वाला, निहायत

रहम करने वाला पाते।

(65) इसलिए (ऐ नबी!) आपके रब की क़सम! वह मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपसी इख़्तिलाफात में आपको फैसला करने वाला न मान लें, फ़िर आपके किये हुए फैसले पर उनके दिलों में कोई तंगी न आने पाए और वह उसे दिल व जान से मान लें।

(66) और अगर बेशक हम उन पर फर्ज़ कर देते कि तुम अपने आपको क़त्ल करो या तुम अपने घरों से निकलो तो उनमें से चन्द एक के सिवा कोई भी यह काम न करता और अगर बेशक वह मान लेतें जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो यह उनके लिए बेहतर और (दीन में) ज़्यादा साबित क़दमी की वजह होती।

(67) और तब हम ज़रूर उन्हें अपनी तरफ से बहुत बड़ा अज्र देते।

(68) और हम ज़रूर उन्हें सीधे रास्ते पर चलाते।

(69) और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करे, तो वह ऐसे लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इनआम किया, (यानी) अम्बिया, सिद्दीकीन, शहीदों और नेक लोगों के साथ, और यह लोग अच्छे रफीक़ होंगे।

(70) यह अल्लाह की तरफ से फज़ल है, और अल्लाह काफी है जानने वाला।

(71) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! तुम अपने बचाओ का सामान ले लो, फ़िर तुम अलग अलग दस्तों की शक्ल में या इकठ्टे हो कर निकलों।

(72) और बेशक तुममें से कोई ऐसा भी है जो निकलने में ज़रूर देर करता है, फ़िर अगर तुम पर कोई मुसीबत आए तो वह कहता हैः अल्लाह ने मुझ पर बड़ी मेहरबानी की कि मैं उनके साथ मौजूद नहीं था।

(73) और अगर तुम्हें अल्लाह का फज़्ल मिले तो वह, जैसे तुम्हारे और उसके दरम्यान कोई दोस्ती न हो, ज़रूर कहेगाः काश मैं उन के साथ होता, फ़िर मैं बड़ी कामयाबी हासिल करता।

(74) फ़िर जो लोग आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी बेच चुके हैं, उन्हें चाहिए कि वह अल्लाह के रास्ते में लड़ें, और जो शख्स अल्लाह के रास्ते में लड़े, फ़िर वह क़त्ल कर दिया जाए या ग़ालिब आ जाए तो हम जल्द उसे बहुत बड़ा अज्र देंगे।

(75) और (ऐ मुसलमानों!) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में कमज़ोर मर्दों, औरतों और बच्चों की खातिर नहीं लड़ते जो कहते हैंः ऐ हमारे रब! हमें ऐसी बस्ती से निकाल कि इसके बाशिन्दे (रहवासी) ज़ालिम (अत्याचारी) हैं, और हमारे लिए

अपनी तरफ से कोई हिमायती (संरक्षक) भेज, और हमारे लिए अपनी तरफ से कोई मददगार भेज।

(76) जो लोग ईमान लाए वह अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जिन लोगों ने कुफ्र किया वह तागूत (शैतान) की राह में लड़ते हैं। इसलिए तुम शैतान के साथियों से लड़ो, बेशक शैतान की चाल बड़ी कमज़ोर है।

(77) (ऐ नबी!) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था कि तुम (लड़ाई से) अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो, फ़िर जब उन पर जंग फर्ज़ की गई तो उनमें से एक गिरोह काफिर लोगों से इस तरह डरने लगा जिस तरह अल्लाह से डरना चाहिए या वह उससे भी बढ़ कर ख़ौफज़दा था। और कहने लगेः ऐ हमारे रब! तूने हम पर जंग फर्ज़ क्यों की? तूने हमें कुछ मुद्दत तक मुहलत क्यों न दी? कह दीजिएः दुनिया का फायदा थोड़ा है और आख़िरत बेहतर है उस शख़्स के लिए जिसने परहेज़गारी (पवित्रता) इख़्तियार की और तुम पर धागे बराबर भी जुल्म नहीं किया जाएगा।

(78) तुम जहाँ कहीं भी होगे, मौत तुम्हें पा लेगी, ख़्वाह तुम मज़बूत क़िलों में हो, और अगर उन्हें कोई भलाई मिले तो कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ से है और अगर उन्हें कोई तकलीफ पहुँचे तो कहते हैं कि यह आप की तरफ से है। कह दीजिएः यह सब कुछ अल्लाह की तरफ से है, इसलिए क्या हाल है उन लोगों का जो बात समझने के क़रीब नहीं फटकते।

(79) (ऐ इन्सान!) तुझे जो भी भलाई मिले, वह अल्लाह की तरफ से है, और तुझे जो भी तकलीफ पहुँचे वह तेरी अपनी तरफ से है और (ऐ नबी!) हमने आपको लोगों के लिए रसूल बना कर भेजा है और अल्लाह बतौर गवाह काफी है।

(80) जिसने रसूल की इताअत की, उसने अल्लाह की इताअत की और जिसने मुँह मौड़ा तो हमने आपको उन पर निगहबान बना कर नहीं भेजा।

(81) और मुनाफिक़ कहते हैं कि (हमारा काम तो) फरमाबरदारी है फ़िर जब वह आपके पास से उठ कर जाते हैं तो रात को उनका एक गिरोह इस बात के खिलाफ जोड़ तोड़ करता है जो आप कहते हैं और अल्लाह लिख लेता है जो वह रात की साज़िश करते हैं, इसलिए आप उन्हें जाने दें और अल्लाह पर भरोसा करें और अल्लाह कारसाज़ के तौर पर काफी है।

(82) क्या फ़िर वह कुरआन में गौरो फ़िक्र नहीं करते? और अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ से होता तो वह यक़ीनन उसमें बहुत कुछ इख़्तिलाफ पाते।

(83) और जब उनके पास कोई अमन या ख़ौफ की खबर आती है तो उसे मशहूर कर देते है हालांकि अगर वह उसे रसूल और अपने में से किसी ज़िम्मेदार हाकिम के हवाले कर देते, तो ऐसी बातों की तह तक पहुँचने वाले उसको बेशक जान लेते और अगर तुम पर अल्लाह का फज़्ल और उसकी रहमत न होती तो चंद एक के सिवा ज़रूर शैतान के पीछे लग जाते।

(84) इसलिए (ऐ नबी!) आप अल्लाह की राह में लड़े, आपको अपनी ज़ात के सिवा किसी का ज़िम्मेदार नहीं बनाया गया और आप मोमिनों को लड़ई पर आमादा करें। उम्मीद है कि अल्लाह उन लोगों को लड़ाई से रोक दे जिन्होंने कुफ्र किया और अल्लाह लड़ाई में बहुत सख्त है और सज़ा देने में बहुत सख्त है।

(85) जो कोई अच्छी सिफारिश करेगा, उसे भी उसका कुछ हिस्सा मिलेगा और जो कोई बुरी सिफारिश करेगा, उसे भी उसका कुछ हिस्सा मिलेगा और अल्लाह हर चीज़ पर निगहबान है।

(86) और जब तुम्हें सलाम किया जाए तो तुम उससे अच्छा जवाब दो या वही अल्फाज़ (शब्द) लौटा दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ का खूब हिसाब लेने वाला है।

(87) अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद बरहक़ नहीं, वह ज़रूर तुम्हें क़यामत के दिन इकट्ठा करेगा, जिसके आने में कोई शक नहीं और बात कहने में अल्लाह से ज़्यादा कौन सच्चा है।

(88) फ़िर तुम्हें क्या हुआ है कि मुनाफिक़ों के बारे में दो गिरोहों में बट गए हो? हालांकि अल्लाह ने उनके आमाल की वजह से उन्हें उलटा कर दिया है। क्या तुम चाहते हो कि उन लोगों को हिदायत दो जिन्हें अल्लाह ने गुमराह किया हो? और जिसे अल्लाह गुमराह करे, फ़िर उसके लिए आप हरगिज़ कोई रास्ता नहीं पाएँगे।

(89) वह चाहते हैं कि तुम भी कुफ्र करो जिस तरह उन्होंने कुफ्र किया, फ़िर तुम उनके बराबर हो जाओ, इसलिए तुम उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ यहाँ तक कि वह अल्लाह की राह में हिजरत करें, फ़िर अगर वह (दीन से) मुहँ मोड़ें तो उन्हें जहाँ पाओ क़त्ल कर दो। और उनमें से किसी को अपना दोस्त और मददगार न बनाओ।

(90) मगर वह लोग (इस हुक्म से अलग हैं) जो तुम्हारे पास इस हालत में आए कि वह लड़ाई से बेज़ार हों न तुम से लड़ना चाहते हों और न अपनी क़ौम से और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर मुसल्लत कर देता फ़िर वह तुम से यक़ीनन लड़ते, लिहाज़ा अगर वह तुमसे किनारा कशी

इख़्तियार कर लें और तुम्हारे साथ लड़ने से रूके रहें, और तुम्हारी तरफ सुलह और अमन का हाथ बढ़ाए तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए कोई गुन्जाईश नहीं रखी कि तुम उनसे लड़ाई करो।

(91) तुम्हें एक और क़िस्म के मुनाफिक़ मिलेंगे जो चाहते हैं कि तुम से भी अमन रहें और अपनी क़ौम से भी, मगर जब कभी वह फित्ने का मौक़ा पाते हैं तो उसमें कूद पढ़ते हैं, इसलिए ऐसे लोग अगर तुमसे मुक़ाबला करने से बाज़ न आएं और तुम्हें सुलह और अमन की पैशकश न करें और लड़ाई से अपने हाथ न रोक लें तो तुम उन्हें जहाँ कहीं पाओ, पकड़ कर क़त्ल कर दो। यही वह लोग हैं जिन पर (हाथ उठाने के लिए) हमने तुम्हें खुली इजाज़त दी है।

(92) और किसी मोमिन के लिए जाईज़ नहीं कि वह दूसरे मोमिन को क़त्ल करे, मगर गलती से (हो जाए तो और बात है) और जो शख़्स किसी मोमिन को गलती से क़त्ल कर दे, उस पर एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना और मक़्तूल (जिसका क़त्ल हुआ हो) के रिश्ते दारों को खून बहा अदा करना लाज़िम है, हाँ अगर वह लोग माफ कर दें (तो और बात है) फ़िर अगर वह मक़्तूल ऐसी क़ौम में से हो जो तुम्हारी दुश्मन हो जबकि वह खुद मोमिन हो तो एक मुसलमान गुलाम आज़ाद करना लाज़िम है और अगर वह ऐसी क़ौम में से हो कि तुम्हारे और उनके दरम्यान मुआहिदा हो चुका हो तो उसके वारिस को खून बहा दिया जाएगा और एक मुसलमान गुलाम आज़ाद करना होगा, फ़िर जो शख़्स गुलाम आज़ाद करने की ताक़त न रखता हो वह दो माह लगातार रोज़े रखे, यह (कफ्फारा) अल्लाह की तरफ से तौबा (क़बूल करने का ज़रिया) है और अल्लाह खूब जानने वाला, बहुत हिकमत वाला है।

(93) और जो शख़्स किसी मोमिन को जान बूझ कर क़त्ल करे, उसकी सज़ा जहन्नम है, वह उसमें हमेशा रहेगा, और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब और उसकी लअनत होगी, और अल्लाह ने उसके लिए बहुत बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है।

(94) ऐ लोगो जो ईमान लाए! जब तुम अल्लाह के रास्ते में निकलो तो तहकीक कर लिया करो, और जो शख़्स तुम्हें सलाम करे तो उसके बारे में यह न कहो कि तू तो मोमिन नहीं, तुम दुनियावी ज़िन्दगी का सामान चाहते हो, तो अल्लाह के पास (तुम्हारे लिए) बहुत से माल ग़नीमत हैं। तुम इससे पहले खुद भी ऐसे ही थे, फ़िर अल्लाह ने तुम पर एहसान किया, लिहाज़ा मामले की तहक़ीक़ (छानबीन) कर लिया करो। बेशक

तुम जो अमल करते हो अल्लाह उससे खूब बाखबर है।

(95) किसी उज़्र (वजह) के बग़ैर पीछे बेठे रहने वाले मोमिन और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करने वाले बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करने वालों को पीछे बेठे रहने वालों पर मर्तबे में फज़ीलत दी है। और अल्लाह ने सब से भलाई का वादा किया है, और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को पीछे बेठे रहने वालों के मुक़ाबले में बहुत बड़ा अज्र दिया है।

(96) उनके लिए अल्लाह की तरफ से दर्जे हैं और बख़्शिश और रहमत है और अल्लाह तआला बहुत बख़्शिश वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(97) जिन लोगों की इस हालत में फरिश्ते जान क़ब्ज़ करते हैं कि वह (जान बूझ कर काफिरों में रह कर) अपनी जानों पर ज़ुल्म करते रहे हों, तो फरिश्तें पूछते हैं कि तुम किस हाल में थे? वह कहते हैंः हम ज़मीन में कमज़ोर थे। तब फरिश्ते कहते हैंः क्या अल्लाह की ज़मीन वसी (विशाल) न थी कि तुम उसमें हिजरत कर जाते? इसलिए यही लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है।

(98) मगर वह मर्द, औरतें और बच्चे जो वाक़ई बेबस हों और वह उस जगह से निकलने का कोई वसीला (उपाय) और कोई रास्ता नहीं पाते।

(99) उन लोगों के बारे में उम्मीद है कि अल्लाह उन्हें माफ कर देगा और अल्लाह बहुत माफ करने वाला, निहायत बख़्शने वाला है।

(100) और जो शख़्स अल्लाह की राह में हिजरत करे वह ज़मीन में पनाह लेने के लिए बहुत जगह और गुन्जाईश पायेगा और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की तरफ हिजरत करने की खातिर अपने घर से निकले, फ़िर उसे रास्ते में मौत आ जाए तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे वाजिब हो गया और अल्लाह निहायत बख़्शने वाला, बहुत रहम करने वाला है।

(101) और जब तुम ज़मीन में सफर कर रहे हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि अगर तुम्हें डर हो कि काफिर हमला करके तुम्हें फित्ने में डाल देंगे, तो तुम नमाज़ क़स्र अदा करो, बेशक काफिर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।

(102) और (ऐ नबी!) जब आप मोमिनों के दरम्यान हों, फ़िर उन्हें नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हों तो उनमें से एक गिरोह अपने हथियार लगाए हुए आपके साथ जमाअत में खड़ा हो, फ़िर जब वह सज्दा कर ले तो

पीछे चला जाए और दूसरा गिरोह जिसने अभी नमाज़ नही पढ़ी वह आपके साथ नमाज़ अदा करे और वह भी चौकन्ना रहे और अपने हथियार लगाए रखे। काफिर चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और अपने सामान की तरफ से ज़रा ग़ाफिल हो जाओ तो वह तुम पर अचानक धावा बोल दें। और अगर तुम्हें बारिश से तकलीफ हो या तुम बीमार हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि अपने हथियार एक तरफ रख दो, और इस हालत में भी चौकन्ने रहो। बेशक अल्लाह ने काफिरों के लिए रूस्वा (अपमानित) कर देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।

(103) फ़िर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो खड़े हुए, बैठे हुए और लेटे हुए (हर हाल में) अल्लाह को याद करते रहो, फ़िर जब तुम्हें इत्मिनान हो जाए तो (पूरी) नमाज़ पढ़ो, बेशक मोमिनों पर तय शुदा वक़्तों में नमाज़ फर्ज़ है।

(104) और तुम दुश्मन क़ौम का पीछा करने में कमज़ोरी न दिखाओ। अगर तुम तकलीफ उठाते हो तो बेशक वह भी तकलीफ उठाते हैं जैसे तुम तकलीफ उठाते हो और तुम अल्लाह से जिस चीज़ की उम्मीद रखते हो वह उसकी उम्मीद नहीं रखते, और अल्लाह खूब जानने वाला, बहुत हिकमत वाला है।

(105) (ऐ नबी!) बेशक हमने आपकी तरफ यह किताब हक़ के साथ नाज़िल की है ताकि आपको अल्लाह ने जो सीधी राह दिखाई है उसके मुताबिक़ लोगों के दरम्यान फैसला करें, और आप ख्यानत करने वालों के हिमायती न बनें।

(106) और अल्लाह से बख्शिश मांगे, बेशक अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(107) और आप उन लोगों की तरफ से झगड़ा न करें जो अपने आपसे ख्यानत करते हैं, बेशक अल्लाह उस शख्स को पसंद नहीं करता जो ख्यानत करने वाला गुनाहगार हो।

(108) वह लोगों से (तो अपनी हरकतें) छुपा सकते हैं मगर अल्लाह से नहीं छुपा सकते और वह उस वक़्त भी उनके साथ होता है जब वह रात को छुप कर ऐसा मश्वरा करते हैं जो अल्लाह को पसंद नहीं और वह जो भी अमल करते हैं अल्लाह उसे घेरे हुए है।

(109) हाँ! तुम लोगों ने यहाँ दुनिया की ज़िन्दगी में तो उन (मुजरिमों) की तरफ से झगड़ा कर लिया, फ़िर क़यामत के दिन अल्लाह के यहाँ उनकी तरफ से कौन झगड़ा करेगा? या वहाँ कौन उनका वकील होगा?

(110) और जो शख्स बुरा अमल या अपनी जान पर जुल्म करे, फ़िर वह अल्लाह

से बख़्शिश मांगे तो वह अल्लाह को बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला पायेगा।

(111) और जो शख़्स कोई गुनाह करता है तो बेशक उसकी यह कमाई उसी के लिए वबाल होगी, और अल्लाह खूब जानने वाला, बहुत हिकमत वाला है।

(112) और जो शख़्स कोई ख़ता या गुनाह करता है, फ़िर किसी बेगुनाह पर उसका इल्ज़ाम लगा देता है तो (ऐसा करके) वह एक बड़े बोहतान और खुले गुनाह का बोझ उठाता है।

(113) और अगर आप पर अल्लाह का फज़ल और उसकी रहमत न होती तो लोगों के एक गिरोह ने यक़ीनन इरादा कर लिया था कि वह आपको बहका दे, और अपने आपके सिवा किसी को नहीं बहकाते, और वह आपको ज़रा भी नुक्सान नहीं पहुँचा सकते, और अल्लाह ने आप पर यह किताब और हिकमत नाज़िल की है और आपको वह कुछ सिखाया है जो आप नहीं जानते थे और आप पर अल्लाह का फज़ल बहुत ज़्यादा है।

(114) उनकी अक्सर कानाफूसियों में कोई भलाई नहीं होती मगर जो शख़्स सदक़े या नेकी या लोगों के दरम्यान सुलह का हुक्म दे (तो यह अच्छी बात है) और जो कोई अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए ऐसा करे, तो हम उसे जल्द बहुत बड़ा अज्र अता करेंगे।

(115) और जिस शख़्स के सामने वाज़ेह शक्ल में हिदायत (मार्ग-दर्शन) आ जाए और उसके बाद वह रसूल की मुखालफत करे, और मुसलमानों का रास्ता छोड़ कर दूसरे रास्ते की पैरवी करे, तो हम उसे उसी तरफ फ़ेर देंगे जिस तरफ वह जाना चाहे और हम उसे जहन्नम में डालेंगे, और वह बहुत बुरा ठिकाना है।

(116) बेशक अल्लाह यह गुनाह हरगिज़ नहीं बख़्शता कि उसके साथ शिर्क किया जाए और वह उसके सिवा जिसे चाहे माफ कर देता है और जो शख़्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है, तो वह यक़ीनन बहुत दूर की गुमराही में जा पड़ा है।

(117) वह लोग अल्लाह को छोड़ कर देवियों को पुकारते हैं और दरअस्ल वह सरकश शैतान ही को पुकारते हैं।

(118) अल्लाह ने उस पर लअनत की है, और उसने कहा कि मैं तेरे बन्दों में से एक मुक़र्रर (निश्चित) हिस्सा ज़रूर ले कर रहूँगा।

(119) और मैं उन्हें गुमराह करूगां और उन्हें उम्मीदें दिलाऊंगा, और मैं उन्हें हुक्म दूंगा तो वह जानवरों के कान चीरेंगे और मैं उन्हें हुक्म दूंगा तो वह अल्लाह की बनावट में रद्दो बदल करेंगे। और जो शख़्स अल्लाह

को छोड़ कर शैतान को अपना दोस्त बना ले तो वह यक़ीनन खुले नुक्सान में जा पड़ा।

(120) शैतान लोगों से वादे करता है और उन्हें उम्मीदें दिलाता है, मगर शैतान के सारे वादे फरेब के सिवा कुछ नहीं।

(121) उन लोगों का ठिकाना जहन्नम है, और वह उससे छुटकारे की कोई सूरत न पाएँगे।

(122) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, हम जल्द उन्हें ऐसे बागों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें जारी हैं, वह उनमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह का वादा सच्चा है, और अल्लाह से बड़ कर कौन अपनी बात में सच्चा है?

(123) अन्जाम का दारोमदार न तुम्हारी ख्वाहिशात पर है न अहले किताब की ख्वाहिशात पर, बल्कि जो कोई बुरा अमल करेगा, उसका उसे बदला दिया जाएगा और वह अल्लाह के सिवा कोई दोस्त और मददगार न पायेगा।

(124) और जो कोई नेक काम करेगा ख्वाह वह मर्द हो या औरत, जबकि वह मोमिन हो तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उन पर ज़रा भी जुल्म नहीं किया जायेगा।

(125) और दीन में उस शख़्स से ज़्यादा अच्छा कौन है जिसने अपना चेहरा अल्लाह के सामने झुका दिया? और वह नेकी करने वाला भी हो, और मिल्लते इब्राहीम की पैरवी करे, जो सिर्फ हक़ परस्त थे। और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना ख़ास दोस्त बनाया था।

(126) और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह ही का है और अल्लाह हर चीज़ को घेरे हुए है।

(127) और (ऐ नबी!) लोग आपसे औरतों के बारे में दरयाफ्त करते हैं, कह दीजिए! अल्लाह खुद उनके बारे में हुक्म दे रहा है और किताब की वह आयतें भी, जो यतीम औरतों के बारे में तुम्हें पढ़ कर सुनाई जाती हैं जिन्हें उनका मुक़र्रर हक़ नहीं देते और तुम चाहते हो कि उनसे निकाह कर लो, और (वह) कमज़ोर बच्चों के बारे में (तुम्हें हुक्म दे रहा है) और यह कि तुम यतीमों से इन्साफ करो और तुम जो भी नेकी करो, तो बेशक अल्लाह उसका खूब इल्म रखता है।

(128) और अगर किसी औरत को अपने शौहर की तरफ से जुल्म व ज़्यादती या नज़र अन्दाज़ किये जाने का अन्देशा हो तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं कि वह आपस में किसी तरह सुलह कर लें और सुलह ही अच्छी है, और इन्सानी नफ्स (मन) में बखीली (कंजूसी) रखी गई है और अगर तुम एहसान करो और परेहज़गार बनो तो बेशक तुम जो भी अमल

करते हो, अल्लाह उसकी खूब ख़बर रखता है।

(129) और तुमसे यह कभी न हो सकेगा कि तुम अपनी बीवियों में हर तरह से अदल (न्याय) करो, ख्वाह तुम उसकी कितनी ही ख्वाहिश (इच्छा) रखो, लिहाज़ा तुम किसी एक ही तरफ पूरी तरह माईल (मोहित) न हो जाओ कि दूसरी को बीच में लटकती छोड़ दो, और अगर तुम इस्लाह (सुधार) का रवैया इख्तियार करो और परेहज़गार बनो तो अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(130) और अगर वह दोनों (मियां बीवी) एक दूसरे से अलग हो जायें तो अल्लाह अपने फज़्ल से हर एक को (दूसरे से) बेनियाज़ (बे-परवाह) कर देगा और अल्लाह बड़ी वुसअत (समाई) वाला, खूब हिकमत वाला है।

(131) और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह ही का है और हमने तुमसे पहले जिन लोगों को किताब दी, उनको और तुम्हें भी यही हुक्म दिया कि अल्लाह से डरते रहो, फ़िर अगर तुम कुफ्र करोगे तो बेशक आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह ही का है, और अल्लाह बहुत बेपरवाह, क़ाबिले तअरीफ है।

(132) और आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह ही का है और अल्लाह बतौर कारसाज़ काफी है।

(133) ऐ लोगों! अगर अल्लाह चाहे तो तुम्हें हटा कर तुम्हारी जगर दूसरों को ले आए, और अल्लाह इस बात की पूरी कुदरत रखता है।

(134) जो शख्स दुनिया का सवाब (प्रतिफल) चाहता हो तो अल्लाह के पास तो दुनिया और आख़िरत दोनों का सवाब मौजूद है, और अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब देखने वाला है।

(135) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो तुम इन्साफ के लिए डट जाने वाले और अल्लाह के लिए सच्ची गवाही देने वाले बन जाओ, ख्वाह वह तुम्हारे अपने खिलाफ या तुम्हारे वाल्दैन और रिश्तेदारों के खिलाफ हो मामले का फरीक़ अमीर हो या गरीब, दोनों सूरतों में तुम्हारी निस्बत अल्लाह ज़्यादा उनका खैरख्वाह है। पस तुम नफ्सानी ख्वाहिश के पीछे पड़ कर इन्साफ का दामन हाथ से न छोड़ दो। और अगर तुमने तोड़ मरोड़ कर बात की या (गवाही देने से) मुंह मोड़ा तो बेशक तुम जो भी अमल करते हो अल्लाह उससे खूब बाखबर है।

(136) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! अल्लाह, उसके रसूल और उस किताब पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल (अवतरित) की और उस किताब

पर भी जो उसने पहले नाज़िल की और जो शख़्स अल्लाह, उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और आख़िरत के दिन का इन्कार करे तो वह यक़ीनन बहुत दूर की गुमराही में जा पड़ा।

(137) बेशक जो लोग ईमान लाए, फ़िर उन्होंने कुफ़्र किया, फ़िर ईमान ले आए, फ़िर कुफ़्र किया फ़िर कुफ़्र में कहीं बढ़ गए, अल्लाह उन्हें हरगिज़ नहीं बख़्शेगा और न उन्हें हिदायत (मार्ग-दर्शन) का रास्ता दिखायेगा।

(138) (ऐ नबी!) मुनाफिक़ों को खबरदार कर दीजिए कि उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(139) जो मोमिनों को छोड़ कर काफिरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वह उन काफिरों के यहाँ इज़्जत तलाश करते हैं? फ़िर बेशक इज़्जत तो सारी अल्लाह के लिए है।

(140) और उसने इस किताब में तुम्हारे लिए नाज़िल किया है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों का इन्कार किया जा रहा हो या ईमान का मज़ाक उड़ाया जा रहा हो तो तुम उनकी मज्लिस में न बैठो, यहाँ तक कि वह उसके अलावा किसी और बात में मशगूल हो जाएं, वरना तुम भी उस वक़्त यक़ीनन उन्हीं जैसे होगे, बेशक अल्लाह मुनाफिक़ों और काफिरों सबको जहन्नम में जमा करने वाला है।

(141) वह लोग तुम्हारे अन्जाम का इन्तिज़ार करते रहते हैं, फ़िर अगर तुम्हें अल्लाह की तरफ से फतह हासिल हो तो वह कहते हैंः क्या हम तुम्हारे साथ न थे? और अगर काफिरों को कुछ ग़लबा मिले तो उनसे कहते हैंः क्या हम तुम पर ग़ालिब न आने लगे थे और (क्या) हमने तुम्हें मोमिनों से नहीं बचाया? फ़िर क़यामत के दिन अल्लाह उनके दरम्यान फैसला कर देगा और अल्लाह काफिरों को मोमिनों के खिलाफ हरगिज़ कोई रास्ता नहीं देगा।

(142) बेशक मुनाफिक़ीन अल्लाह को ध ाोखा देते हैं मगर हक़ीकत यह है कि अल्लाह ने उन्हें धोखे में डाल रखा है और जब वह नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो दिल से न चाहते हुए, लोगों को दिखाने के लिए खड़े होते हैं, और वह अल्लाह को बस थोड़ा ही याद करते हैं।

(143) वह कुफ़्र और ईमान के दरम्यान डांवा डोल हैं, न पूरे उस तरफ न पूरे इस तरफ, और (ऐ नबी!) जिसे अल्लाह गुमराह करे, आप उसके लिए हरगिज़ कोई राह नहीं पाएँगे।

(144) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! मोमिनों को छोड़ कर काफिरों को दोस्त न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह को अपने खिलाफ (कारवाई के लिए) खुली हुज्जत दे

दो?

(145) बेशक मुनाफ़िक़ीन दोज़ख के सबसे निचले तबक़े में जाएँगे, और वहाँ आप उनके लिए हरगिज़ कोई मददगार नहीं पाएँगे।

(146) सिवाए उन लोगों के जिन्होंने तौबा की और अपनी इस्लाह कर ली, और अल्लाह मोमिनों को जल्द बहुत बड़ा अज्र अता करेगा।

(147) अगर तुम शुक्र करो और ईमान ले आओ तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब दे कर क्या करेगा? और अल्लाह बड़ा क़द्रदाँ, खूब जानने वाला है।

(148) अल्लाह ऊँची आवाज़ में बुराई की बात को पसंद नहीं करता, मगर जिस पर जुल्म किया गया हो (उसे इजाज़त है) और अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(149) अगर तुम खुले तौर पर कोई नेकी करो या छुपा कर करो, या बुराई को माफ कर दो, तो अल्लाह बहुत माफ करने वाला, बड़ी कुदरत वाला है।

(150) बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इन्कार करते हैं और चाहते हैं कि वह अल्लाह और उसके रसूलों के बीच अलगाव करें और वह कहतें हैंः हम कुछ पर ईमान लाते हैं और कुछ का इन्कार करते हैं। और वह चाहते हैं कि इसके दरम्यान कोई राह इख्तियार करें।

(151) वही लोग हक़ीक़ी काफिर हैं और हमने काफिरों के लिए रूस्वा (अपमानित) करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।

(152) और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाएँ, और उन्होंने उनमें से किसी एक के दरम्यान भी तफरीक़ (भेदभाव) नहीं की, वही लोग हैं जिन्हें अल्लाह जल्द उनका अज्र देगा। और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, बहुत रहम करने वाला है।

(153) (ऐ नबी!) अहले किताब आपसे माँग करते हैं कि आप उन पर आसमान से एक किताब उतार लायें। उन लोगों ने मूसा से इससे भी बड़ी माँग की थी, उन्होंने कहा थाः (ऐ मूसा!) हमें अल्लाह बिल्कुल आँखों के सामने दिखा, फ़िर उनके जुल्म की वजह से कड़ाके की बिजली उन पर आ पड़ी, फ़िर उनके पास खुली निशानियां आ जाने के बाद उन्होंने बछड़े को मअ़बूद बना लिया, फ़िर इस पर भी हमने उन्हें माफ कर दिया और हमने मूसा को खुला ग़लबा अता किया।

(154) और हमने उनसे इक़रार लेने के लिए उन पर तूर पहाड़ बुलंद किया और हमने उनसे कहाः (शहर के) दरवाज़े में सज्दा करते हुए दाख़िल हो जाओ और हमने उनसे कहा : हफ्ते (शनीवार) के दिन में ज़्यादती न करो, हमने उनसे पुख़्ता (मजबूत) अहद (वादा)

लिया।

(155) फ़िर (हमने उन पर लअनत की) इसलिए कि उन्होंने अपना अहद तोड़ा, अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, नबियों को नाहक़ क़त्ल करते रहे और उन्होंने यह कहा कि हमारे दिल पर्दों में हैं बल्कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र की वजह से उनके दिलों पर मुहर लगा दी, इसलिए वह ईमान नहीं लाते मगर थोड़े ही।

(156) और (हमने उन पर लअनत की) उनके कुफ़्र की वजह से और मरयम पर बहुत बड़ा बोहतान लगाने की वजह से।

(157) और उनके यह कहने की वजह से कि हमने मसीह ईसा इब्ने मरयम अल्लाह के रसूल का क़त्ल किया, हालांकि उन्होंने न उन्हें क़त्ल किया और न उन्हें सूली पर चढ़ाया बल्कि उन्हें शुब्हे में डाल दिया गया और बेशक जिन्होंने ईसा के बारे में इख़्तिलाफ किया वह ज़रूर उनके बारे में शक़ में हैं। उन लोगों के पास उनके बारे में कोई इल्म नहीं, सिवाए गुमान की पैरवी के, और उन्होंने यक़ीनन उन्हें क़त्ल नहीं किया।

(158) बल्कि अल्लाह ने उन्हें अपनी तरफ उठा लिया, और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त, बहुत हिकमत वाला है।

(159) और अहले किताब में से कोई भी ऐसा न बचेगा जो ईसा पर उनकी मौत से पहले ईमान न ले आए और क़यामत के दिन वह उन सब पर गवाह होंगे।

(160) फ़िर जो लोग यहूदी हुए, उनके जुल्म की वजह से और उनके अक्सर लोगों को अल्लाह की राह से रोकने की वजह से, हमने उन पर कुछ पाक (पवित्र) चीज़ें हराम (अवैध) कर दीं जो पहले उनके लिए हलाल (वैध) थी।

(161) और इस वजह से भी कि वह सूद लेते थे हालांकि उन्हें इससे मना किया गया था और इस वजह से भी कि वह लोगों का माल नाहक़ खाते थे और हमने उनमें से काफिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

(162) लेकिन उनमें से जो इल्म में पुख़्ता और मोमिन हैं वह ईमान लाते हैं उस पर जो आप पर नाज़िल किया गया और जो आपसे पहले नाज़िल किया गया, और वह नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, वही लोग हैं जिन्हें हम जल्द बहुत बड़ा अज्र देंगे।

(163) (ऐ नबी!) बेशक हमने आपकी तरफ वह्यी की जैसे हमने नूह और उनके बाद दूसरे नबियों की तरफ वह्यी की, और हमने इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याक़ूब और उनकी औलाद और ईसा, अय्यूब,

यूनुस, हारून और सुलेमान की तरफ वह्यी की और हमने दाऊद को ज़बूर अता की।

(164) और हमने कई रसूल भेजे, इससे पहले हम उनका हाल आपके सामने बयान कर चुके हैं। और कई रसूल ऐसे हैं कि उनका हाल हमने आपके सामने बयान नहीं किया। और अल्लाह ने मूसा से (खास तौर पर) कलाम किया।

(165) और खुशखबरी देने वाले और डराने वाले रसूल भेजे ताकि रसूलों के बाद लोगों के लिए अल्लाह को इल्ज़ाम देने की कोई गुन्जाईश न रहे। और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त, बड़ी हिकमत वाला है।

(166) लेकिन अल्लाह ने आप पर जो नाज़िल किया है, वह उसकी बाबत गवाही देता है कि उसने अपने इल्म के साथ नाज़िल किया है और फरिश्ते भी गवाही देते हैं, और अल्लाह बतौर गवाही काफी है।

(167) बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया और लोगों को अल्लाह की राह से रोका, यक़ीनन वह दूर की गुमराही में जा पड़े हैं।

(168) बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया और जुल्म किया, अल्लाह उन्हें माफ नही करेगा न उन्हें सीधा रास्ता दिखाएगा।

(169) मगर वह उन्हें जहन्नम का रास्ता दिखाएगा जिसमें वह हमेशा रहेंगे, और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है।

(170) ऐ लोगो! यक़ीनन यह रसूल तुम्हारे रब की तरफ से हक़ ले कर तुम्हारे पास आया है, लिहाज़ा तुम ईमान लाओ, यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर होगा, और अगर तुम कुफ्र करोगे तो आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है, अल्लाह ही के लिए है, और अल्लाह खूब जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(171) ऐ अहले किताब ! अपने दीन के बारे में हद से न गुज़र जाओ और अल्लाह के बारे में हक़ बात के सिवा कुछ न कहो। बेशक मसीह ईसा इब्ने मरयम तो अल्लाह का रसूल और उसका कलमा ही है जिसे उसने मरयम की तरफ डाला, और वह उसकी तरफ एक रूह है इसलिए तुम अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि मअ़बूद तीन हैं। इससे बा़ज आ जाओ यह तुम्हारे लिए बेहतर है, बेशक अल्लाह ही अकेला मअ़बूद है, वह इस से पाक है कि उसकी कोई औलाद हो, आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है उस ही का है, और अल्लाह बतौर कारसाज़ काफी है।

(172) मसीह (ईसा इब्ने मरयम) को अल्लाह का बन्दा होने में कोई आर (शर्मिंदगी) नहीं और न मुक़र्रब फरिश्तों को शर्म है, और जो कोई अल्लाह की इबादत को आर (शर्मिंदगी) ख्याल करे और घमंड करे, तो

अल्लाह जल्द उन सबको अपनी तरफ जमा करेगा।

(173) फ़िर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये तो अल्लाह उन्हें उनके पूरे अज्र देगा और उन्हें अपने फ़ज़ल से ज़्यादा अता करेगा, और जिन लोगों ने अल्लाह की इबादत को आर ख्याल किया और घमंड किया तो वह उन्हें बहुत दर्दनाक अज़ाब अता करेगा और वह अल्लाह के सिवा अपने लिए कोई हिमायती और कोई मददगार नहीं पाएँगे।

(174) ऐ लोगो! तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे पास एक दलील आ गई है, और हमने तुम्हारी तरफ एक वाज़ेह नूर नाज़िल किया है।

(175) फ़िर जो लोग अल्लाह पर ईमान ले आए और उसके दीन को मज़बूती से पकड़ लिया तो वह ज़रूर उन्हें अपनी रहमत और फ़ज़ल में दाख़िल करेगा और उन्हें अपनी तरफ (पहुँचने के लिए) सीधा रास्ता दिखायेगा।

(176) (ऐ नबी!) लोग आपसे फतवा पूछते हैं, कह दीजिएः अल्लाह ''कलाला'' के बारे में हुक्म देता है, अगर कोई शख़्स मर जाए जिसकी औलाद न हो और उसकी एक बहन हो तो उसके लिए भाई के छोड़े हुए माल का आधा हिस्सा है और अगर बहन की औलाद न हो, तो उसका भाई उसका वारिस होगा, फ़िर अगर बहन दो (या दो से ज़्यादा) हो तो उनके लिए भाई के छोड़े हुए माल का दो तिहाई है और अगर कई भाई बहन, मर्द और औरतें (वारिस) हों तो मर्द का हिस्सा दो औरतों के हिस्से के बराबर होगा, अल्लाह तुम्हारे लिए वज़ाहत से बयान करता है ताकि तुम गुमराह न हो जाओ, और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

सूरह मायदा-5

(यह मदनी सूरत है इसमें 120 आयतें और 16 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! वादों को पूरे किया करो, तुम्हारे लिए चौपाए मवेशी हलाल किये गए हैं, सिवाए उनके जिनके नाम तुम्हें पढ़ कर सुना दिए जाएँगे, जब तुम एहराम की हालत में हो तो शिकार को हलाल न जानो, बेशक अल्लाह जो चाहता है, फैसला करता है।

(2) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह की निशानियों (प्रतीकों) की बेहुरमती (अनादर) न करो, और न अदब वाले महीनों की, न हरम में कुरबान होने वाले और न

पट्टे पहनाए जानवरों की और न बैतुलहराम को जाने वालों की, वह अपने रब का फ़ज़्ल और उसकी रज़ा तलाश करते हैं और जब तुम एहराम खोल दो तो शिकार कर सकते हो, और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें सिर्फ इसलिए उनसे ज़्यादती करने पर अमादा न करे कि उन्होंने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोक दिया था, और तुम नेकी और परहेज़गारी के कामों में एक दूसरे की मदद करो, और गुनाह और ज़्यादती के कामों में आपस में मदद न करो, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सख्त अज़ाब वाला है।

(3) तुम्हारे लिए हराम किये गए हैं मुर्दा जानवर, खून, सूअर का गोश्त और जिसको अल्लाह के सिवा किसी और के लिए नामजद कर दिया गया हो, और गला घोट कर मरने वाला, चोट से मरने वाला, ऊपर से गिर कर मरने वाला, सींग लग कर मरने वाला और वह जानवर भी जिसे दरिन्दे खा जाएं, सिवाए उसके जिसे तुम ज़िब्ह कर लो, और जो आस्तानों पर ज़िब्ह किया जाए और यह कि तुम फाल के तीरों से किस्मत मालूम करो, यह सब गुनाह (के काम) हैं। आज वह लोग नाउम्मीद हो गए जिन्होंने तुम्हारे दीन का इन्कार किया, लिहाज़ा तुम उनसे न डरो, और मुझसे डरो, आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दी, और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन के तौर पर पंसद किया, फ़िर जो शख़्स भूख से बेबस हो जाए जबकि वह गुनाह पर माईल होने वाला न हो, तो यक़ीनन अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(4) (ऐ नबी!) लोग आप से पूछते हैं कि उनके लिए क्या चीज़ें हलाल की गई हैं? कह दीजिएः तुम्हारे लिए तमाम पाकीज़ा चीज़ें हलाल की गई हैं और उन शिकारी जानवरों का किया हुआ शिकार, जिन्हें तुम सधा लेते हो, अल्लाह ने तुम्हें जो सिखाया है उसके मुताबिक़ तुम उन्हें सिखाते हो, तो वह जिस शिकार को तुम्हारे लिए पकड़ रखें, उस पर अल्लाह का नाम पढ़ो और उसमें से खाओ, और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वालो है।

(5) आज तुम्हारे लिए पाकीज़ा चीज़ें हलाल की गई हैं और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है, और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है, और तुम्हारे लिए पाक दामन मुसलमान औरतें, और उन लोगों की पाक दामन औरतें हलाल हैं जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई जबकि तुम उन्हें उनके मेहर दे दो, नीज़ उन्हें निकाह की क़ैद में लाने वाले बनो न की बदकारी (व्यभिचार) करने वाले और न चोरी छुपे मोहब्बत करने

वाले, और जो ईमान से इन्कार करेगा तो उसका अमल यक़ीनन बरबाद हो गया और वह आख़िरत में नुक्सान उठाने वालों में से होगा।

(6) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चेहरे और कोहनियों तक अपने हाथ धो लो और अपने सरो का मसह कर लो और अपने पावं टखनों तक (धो लो) और अगर तुम नापाकी की हालत में हो तो गुस्ल कर लो, और अगर तुम बीमार हो या सफर की हालत में हो या तुम में से कोई ज़रूरी हाजत से (फ़ारिग हो कर) आया हो या तुमने औरतों से हमबिस्तरी की हो, फ़िर तुम पानी न पाओ तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो, फ़िर उसे अपने चेहरे और हाथों पर मल लो, अल्लाह नहीं चाहता कि तुम्हें तंगी में डाले बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें पाक कर दे, और तुम पर अपनी नेअमत पूरी करे ताकि तुम शुक्र करो।

(7) और तुम पर अल्लाह की जो नेअमत हुई उसे याद रखो, और वह अहद (वादा) भी याद रखो जो तुमने उसके साथ बान्धा, जब तुमने कहा कि हमने सुना और इताअत की और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सीनों के राज़ खूब जानता है।

(8) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! तुम अल्लाह के लिए (हक़ पर) क़ायम रहने वाले और इन्साफ की गवाही देने वाले बनो, और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इस बात पर आमादा न करे कि तुम अद्ल (इंसाफ) न करो, अद्ल करो, यही बात तक़्वा (धर्म परयणता) के ज़्यादा क़रीब है, और अल्लाह से डरो, बेशक तुम जो अमल करते हो अल्लाह उससे खूब आगाह है।

(9) अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, उनके लिए बख़्शिश और बहुत बड़ा अज्र है।

(10) और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही लोग दोज़ख़ी हैं।

(11) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह ने तुम पर जो नेअमत (इनाम) नाज़िल की वह याद करो, जब एक क़ौम ने इरादा किया था कि तुम्हारी तरफ अपने हाथ बढ़ायें तो अल्लाह ने उन्हें तुम पर हाथ डालने से रोक दिया और अल्लाह से डरो और ईमान वालों को चाहिए। की अल्लाह ही पर भरोसा करें।

(12) और बेशक अल्लाह ने बनी इस्राईल से अहद (वादा) लिया था और हमने उनमें से बारह सरदार मुक़र्रर किये थे, और अल्लाह ने कहाः बेशक मैं तुम्हारे साथ हूँ, अगर तुम नमाज़ क़ायम करोगे और ज़कात अदा करोगे और मेरे रसूलों पर ईमान लाओगे और उनकी

मदद करते रहोगे और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे तो मैं ज़रूर तुमसे तुम्हारी बुराईयां दूर कर दूंगा और ज़रूर तुम्हें ऐसे बागों में दाख़िल करूगां जिनके नीचे नहरें बहती हैं फ़िर उसके बाद जिसने कुफ्र किया तो यक़ीनन वह सीधी राह (सुगम मार्ग) से भटक गया।

(13) इसलिए उनके वादा तोड़ने की वजह से हमने उन पर लअनत की और हमने उनके दिलों को सख़्त कर दिया। वह कलमात (शब्द) को उनके मौक़े से बदल डालते हैं, और जिस चीज़ की उन्हें ताकीद की गई थी उसका एक हिस्सा उन्होंने भुला दिया और आपको उनमें से चन्द लोगों के सिवा दूसरों की ख्यानत की अक्सर इत्तला (खबर) मिलती रहती है, इसलिए आप उन्हें माफ कर दें और उनसे दरगुज़र करें, बेशक अल्लाह अहसान करने वालों को पंसद करता है।

(14) और जिन लोगों ने कहाः बेशक हम नसारा हैं, उनसे हमने वादा लिया था फ़िर जिस चीज़ की उन्हें ताकीद की गई थी, उसका एक हिस्सा उन्होंने भुला दिया, इसलिए हमने रोज़े क़यामत उनके दरम्यान दुश्मनी और बुग्ज़ (द्वेष) डाल दिया और वह जो कुछ करते रहते हैं अल्लाह जल्द उन्हें उससे आगाह करेगा।

(15) ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारा रसूल आ गया है, वह तुम्हारे लिए अल्लाह की किताब की बहुत सी ऐसी बातें ज़ाहिर करता है जिन्हें तुम छुपाते थे, और बहुत सी बातों से दरगुज़र करता है। यक़ीनन तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ से रोशनी और वाज़ेह (स्पष्ट) करने वाली किताब आ गई है।

(16) जिसके ज़रिये से अल्लाह उस शख़्स को सलामती की राह दिखाता है जो अल्लाह की रज़ा की पैरवी करना चाहता है और उन्हें अपने हुक्म से अन्धेरों से रोशनी की तरफ निकाल लाता है और उनकी सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई करता है।

(17) यक़ीनन उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने यह कहा कि बेशक अल्लाह तो वही मसीह इब्ने मरयम है (ऐ नबी!) कह दीजिएः पस कौन है जो अल्लाह के आगे कुछ इख्तियार रखता हो अगर अल्लाह मसीह इब्ने मरयम को और उनकी माँ और तमाम ज़मीन वालों को हलाक करने का इरादा कर ले? और अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है और जो कुछ उन दोनों के दरम्यान है, वह जो चाहे पैदा करता है, और अल्लाह हर चीज़ पर खूब कुदरत रखता है।

(18) और यहूदियों और ईसाइयों ने कहाः हम अल्लाह के बेटे और उसके प्यारे हैं (ऐ नबी!) कह दीजिएः फ़िर वह तुम्हें तुम्हारे गुनाहों की सज़ा क्यों देता है? (नहीं) बल्कि

तुम भी उसकी मख़्लूक़ (सृष्टी) में से इंसान हो, वह जिसे चाहे बख़्श (क्षमा कर) देता है और जिसे चाहे अज़ाब देता है और अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है और जो कुछ इन दोंनो के दरम्यान है, और उसकी तरफ लौट कर जाना है।

(19) ऐ अहले किताब! तुम्हारे पास हमारा रसूल ऐसे वक़्त दीन की वज़ाहत करने आया हैं जब रसूलों का आना रूका हुआ था, ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास तो कोई खुशखबरी देने वाला और कोई डराने वाला नहीं आया। यक़ीनन तुम्हारे पास खुशखबरी देने वाला और डराने वाला आ गया है और अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(20) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहाः ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की वह नेअमत याद करो जो उसने तुम पर की, जब उसने तुममें से नबी बनाए और तुम्हें बादशाह बनाया, और तुम्हें वह कुछ दिया जो सारी दुनिया में किसी को नहीं दिया गया।

(21) ऐ मेरी क़ौम! पाक ज़मीन में दाख़िल हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे नाम लिख दी है और पीछे न हटो, वरना तुम नुक्सान उठाने वाले हो जाओगे।

(22) उन्होंने जवाब दियाः ऐ मूसा! बेशक उस ज़मीन में एक बड़ी ताक़तवर क़ौम है। और हम हरगिज़ उसमें दाख़िल नहीं होंगे यहाँ तक कि वह लोग उसमें से निकल जाऐं, फ़िर अगर वह उसमें से निकल गए तो बेशक हम दाख़िल हो जाएंगे।

(23) जो लोग अल्लाह से डरते थे, उनमें से दो आदमी जिन पर अल्लाह का फ़ज़्ल था, वह बोलेः तुम उनके मुक़ाबले के लिए दरवाज़े में दाख़िल हो जाओ, फ़िर जब तुम दरवाज़े में दाख़िल हो गए तो बेशक तुम ग़ालिब आ जाओगे और अगर तुम मोमिन हो तो तुम्हें अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

(24) वह कहने लगेः ऐ मूसा! हम हरगिज़ उस ज़मीन में दाख़िल नहीं होंगे जब तक वह लोग वहाँ मौजूद हैं, इसलिए तू और तेरा रब जाए, फ़िर तुम दोनों उनसे लड़ो हम तो यहीं बैठे हैं।

(25) मूसा ने कहाः ऐ मेरे रब! बेशक मुझे अपने आप और अपने भाई के सिवा किसी का इख्तियार (अधिकार) नहीं, इसलिए तू हमें इस नाफरमान क़ौम से अलग कर दे।

(26) अल्लाह ने फरमायाः बेशक वह (मुक़द्दस ज़मीन) इन लोगों पर चालीस बरस तक हराम कर दी गई है, वह ज़मीन में चालीस बरस तक इधर उधर भटकते फिरेंगे, इसलिए आप इस नाफरमान क़ौम का ग़म न खायें।

(27) और (ऐ नबी!) आप उन्हें आदम के दो बेटों का क़िस्सा ठीक ठीक सुनाऐ, जब उन दोनों ने कुरबानी की थी, फ़िर उनमें से एक की कुरबानी तो क़बूल कर ली गई और दूसरे की क़बूल न की गई। दूसरा बोलाः मैं तुझे क़त्ल कर दूँगा। पहले ने जवाब दियाः अल्लाह सिर्फ परहेज़गारों से (कुरबानी) क़बूल करता है।

(28) अगर तूने अपना हाथ मेरी तरफ (इसे इरादे से) बढ़ाया कि मुझे क़त्ल कर दे तो भी मैं अपना हाथ तेरी तरफ नहीं बढ़ाऊंगा कि तुझे क़त्ल कर दूँ। बेशक मैं अल्लाह से डरता हूँ जो सब जहानों का रब है।

(29) मैं तो चाहता हूँ कि तू मेरा और अपना गुनाह अपने सर ले ले और दोज़खियों में शामिल हो जाए। और ज़ालिमों का यही बदला है।

(30) फ़िर उसके नफ्स (मन) ने उसे अपने भाई को क़त्ल करने पर उकसाया, इसलिए उसने उसे क़त्ल कर दिया और वह नुक्सान पाने वालों में से हो गया।

(31) फ़िर अल्लाह ने (वहाँ) एक कव्वे को भेजा, वह (अपने पंजों से) ज़मीन कुरेदने लगा ताकि उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश कैसे दफ्न करे, वह कहने लगाः अफसोस! मैं इस कव्वे जैसा होने से भी आजिज़ रहा कि अपने भाई की लाश दफ्न देता, इसलिए वह पछताने वालों में से हो गया।

(32) इस वजह से हमने बनी इस्राईल के लिए ये लिख दिया कि जो शख़्स किसी को क़त्ल (हत्या) कर दे, सिवाए उसके कि वह किसी का क़ातिल (हत्यारा) हो या ज़मीन में फसाद करने वाला हो, तो जैसेकि उसने तमाम लोगों का क़त्ल कर दिया और जो शख़्स किसी एक जान को (नाहक़ क़त्ल होने से) बचाए, तो जैसेकि उसने तमाम लोगों की जान बचाई। और हमारे रसूल वाज़ेह निशानियां ले कर उनके पास आए, फ़िर बेशक उसके बाद उनमें से बहुत से लोग ज़मीन में हद से निकल जाने वाले हैं।

(33) जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से जंग करते हैं और ज़मीन में फसाद के लिए भाग दौड़ करते हैं, उनकी सज़ा तो सिर्फ यह है कि उन्हें क़त्ल किया जाए या सूली दी जाए या उनके हाथ और पांव मुखालिफ जानिब से काट दिए जाएं या उन्हें जिला वतन कर दिया जाए। यह दुनिया में उनके लिए ज़िल्लत है और आख़िरत में उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।

(34) सिवाए उन लोगों के जो इससे पहले कि तुम उन पर क़ाबू पाओ, तौबा कर लें, पस तुम जान लो कि बेशक अल्लाह बहुत बख्शने वाला, बड़ा रहम करने वाला

है।

(35) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह से डरो, और उसकी नज़दीकी तलाश करो, और उसके रास्ते में जिहाद करो ताकि तुम फलाह पाओ।

(36) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो सारी ज़मीन में है और उसके बराबर और भी हो ताकि वह क़यामत के दिन अज़ाब से बचने के लिए जुर्माना में दे दें तो भी वह उनसे क़बूल नहीं किया जाएगा और उनके लिए बहुत दर्दनाक अज़ाब है।

(37) वह आग से निकलना चाहेंगे मगर वह उसमें से नहीं निकल सकेंगे, और उनके लिए हमेशा रहने वाला अज़ाब है।

(38) और तुम चोरी करने वाले मर्द और चोरी करने वाली औरत के हाथ काट दिया करो, यह अल्लाह की तरफ से उस गुनाह की इबरतनाक सज़ा है जो उन्होंने किया, और अल्लाह ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(39) फ़िर जो शख़्स अपने गुनाह के बाद तौबा कर ले और अपनी इस्लाह कर ले तो बेशक अल्लाह उसकी तौबा क़बूल कर लेता है, बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, बहुत रहम करने वाला है।

(40) क्या तुम्हें इल्म नहीं कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है, वह जिसे चाहता है अज़ाब देता है और जिसे चाहे बख़्श देता है। और अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ुदरत रखने वाला है।

(41) ऐ रसूल! आप उन लोगों का ग़म न खायें जो कुफ़्र में जल्दी करते हैं, उन लोगों में से कुछ तो वह हैं जो अपने मुँह से कहते हैं कि हम ईमान लाए, हालांकि उनके दिल ईमान नहीं लाते, और कुछ उन लोगों में से जो यहूदी हुए, वह झूठी बातें सुनने के आदी हैं और दूसरी क़ौम की जासूसी करने वाले हैं जो (अभी इताअत के लिए) आपके पास नहीं आई। वह कलिमात को उसकी अस्ल जगह से बेजगह कर देते हैं। वह कहते हैं अगर तुम्हें यह हुक्म दिया जाए तो क़बूल कर लो और अगर यह हुक्म न दिया जाए तो उनसे अलग थलग रहो। और जिसे अल्लाह फ़ित्ने में डालना चाहे तो आप अल्लाह की तरफ से उसकी बाबत यक़ीनन कुछ इख़्तियार नहीं रखते। वही लोग हैं जिनके बारे में अल्लाह ने नहीं चाहा कि उनके दिलों को पाक करे, उनके लिए दुनिया में रूस्वाई है, और आख़िरत में उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।

(42) वह झूठी बातें सुनने के आदी हैं और जी भर कर हराम खाने वाले हैं। फ़िर अगर वह आपके पास आएं तो आप (को इख़्तियार है कि) उनके दरम्यान फैसला कर

दें या उनसे इन्कार करें और अगर आप उनसे मुँह मोड़ लेंगे तो भी वह आपको यक़ीनन कोई नुक्सान नहीं पहुँचा सकेंगे। और अगर आप उनके दरम्यान कोई फैसला करें तो इंसाफ के साथ करें। बेशक अल्लाह इंसाफ करने वालों को पंसद करता है।

(43) और वह कैसे आपसे फैसले करवाते हैं जबकि उनके पास तौरात (मौजूद) जिसमें अल्लाह का हुक्म है, फ़िर वह इस (हुक्म) से मुँह मोड़ते हैं, और वह ईमान लाने वाले नहीं।

(44) बेशक हमने तौरात नाज़िल की, उसमें हिदायत (मार्ग-दर्शन) और रोशनी है, अम्बिया जो अल्लाह की इताअत करने वाले थे, उसके मुताबिक़ यहूदियों के फैसले करते थे और अल्लाह वाले और औलमा फैसले करते थे, इसलिए कि वह अल्लाह की किताब के निगराँ बनाए गए थे, और वह इस पर गवाह थे, इसलिए तुम लोगों से न डरो, मुझसे डरो, मेरी आयतें थोड़ी क़ीमत पर न बेचो और जो लोग अल्लाह की नाज़िल किये हुए के मुताबिक़ फैसले न करें वही काफिर हैं।

(45) और हमने तौरात में उनके लिए लिख दिया था कि बेशक जान के बदले जान है और आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत, और तमाम ज़ख़्मों का बदला है, फ़िर जो शख़्स उसे माफ कर दे तो वह उसके लिए कफ्फारा है। और जो लोग अल्लाह के नाज़िल किये हुए के मुताबिक़ फैसला न करें वही ज़ालिम हैं।

(46) और हमने उन (रसूलों) के बाद ईसा इब्ने मरयम को भेजा जो अपने से पहले नाज़िल शुदा किताब तौरात की तस्दीक़ करने वाले थे। और हमने उन्हें इन्जील दी जिसमें हिदायत और रोशनी थी, और वह अपने से पहले की किताब तौरात की तस्दीक़ करने वाली थी और परहेज़गारों के लिए सरासर हिदायत और नसीहत (उपदेश) थी।

(47) और अहले इन्जील को चाहिए कि अल्लाह ने उसमें जो कुछ नाज़िल किया उसके मुताबिक़ फैसले करें, और जो लोग अल्लाह के नाज़िल किये हुए के मुताबिक फैसले न करें वही नाफरमान हैं।

(48) और (ऐ नबी!) हमने आप पर यह किताब हक़ के साथ नाज़िल की, यह तस्दीक़ करने वाली है उस किताब की जो इससे पहले थी और उस पर निगेहबान है, इसलिए आप उनके दरम्यान अल्लाह की नाज़िल की हुई हिदायत (मार्ग-दर्शन) के मुताबिक़ फैसले करें, और आपके पास जो हक़ आया है उसे नज़र अन्दाज़ कर के उनकी इच्छाओं की पैरवी न करें। हमने तुममें से हर एक के लिए

एक दस्तूर (क़ानून) और तरीक़ा बनाया, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हे ज़रूर एक उम्मत बना देता, लेकिन वह चाहता है कि तुम्हें इस (किताब) के बारे में आज़माए जो उसने तुम्हें दी है, इसलिए तुम नेकियों में एक दूसरे से आगे बढ़ो, तुम सबको अल्लाह ही की तरफ लौट कर जाना है, फ़िर वह तुम्हें असल हक़ीक़त बता देगा जिसमें तुम इख़्तिलाफ करते रहते थे।

(49) और (ऐ नबी!) आप उन लोगों के दरम्यान उसके मुताबिक़ फैसला करें जो अल्लाह ने (आप पर) नाज़िल किया है और उनकी इच्छाओं की पैरवी न करें, और उनसे होशियार रहें कहीं वह आपको किसी ऐसे हुक्म से इधर उधर न कर दें जो अल्लाह ने आप पर उतारा है, फ़िर अगर वह उससे मुँह मोड़ें तो जान लें कि अल्लाह का सिर्फ यही इरादा है कि उनके कुछ गुनाहों की वजह से उन्हे सज़ा दे, और बेशक उन लोगों में से अक्सर नाफरमान हैं।

(50) क्या फ़िर वह जाहलियत का फैसला चाहते हैं? और जो क़ौम अल्लाह पर यक़ीन रखती है, उसके नज़दीक अल्लाह से बेहतर फैसला करने वाला कौन है?

(51) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! यहूदियों और ईसाइयों को दोस्त न बनाओ, वह आपस में दोस्त हैं, और तुममें से जो कोई उन से दोस्ती रखेगा तो बेशक वह उन्हीं में से होगा, बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।

(52) फ़िर आप उन लोगों को देखते हैं जिनके दिलों में (मुनाफक़त का) रोग है कि वह दौड़ कर यहूदियों में जाते हैं और उनसे कहते हैंः हमें डर है कहीं हम किसी मुसीबत में न फंस जाएं, फ़िर क़रीब है कि अल्लाह (तुम्हें) फतह अता करे या अपनी तरफ से कोई और बात ज़ाहिर करे, तो यह लोग (मुनाफक़त पर) पछताएँगे जिसे वह अपने दिलों में छुपाए हुए हैं।

(53) और (उस वक़्त) वह लोग जो ईमान लाए हैं, कहेंगेः क्या यही वह लोग हैं जिन्होंने बड़े ज़ोर से अल्लाह की क़समें खाई थी कि बेशक वह तुम्हारे साथ हैं। उनके अमल बरबाद हो गए और वह नुक्सान उठाने वालों में हो गए।

(54) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुममें से जो कोई अपने दीन से फ़िर जाए तो अल्लाह जल्द ऐसे लोग लायेगा कि वह उनसे मुहब्बत करता होगा, और वह उससे मुहब्बत करते होंगे, वह मोमिनों पर नर्मी करने वाले होंगे और काफिरो पर सख़्ती करने वाले, वह अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे, यह अल्लाह का फज़ल है, वह जिसे चाहता

है अता करता है और अल्लाह वुसअत वाला, खूब जानने वाला है।

(55) तुम्हारे दोस्त तो सिर्फ अल्लाह और उसके रसूल और वह लोग हैं जो ईमान लाए, जो नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और वह रूकू करने वाले हैं।

(56) और जो कोई अल्लाह से और उसके रसूल से दोस्ती रखता है और उन लोगों से दोस्ती रखता है जो ईमान लाए हैं, तो (वह अल्लाह का गिरोह है और) यक़ीनन अल्लाह का गिरोह ही ग़ालिब आने वाला है।

(57) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम उन लोगों को अपना दोस्त न बनाओ जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी और खेल बना लिया है, उन लोगों में से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई थी और जो काफिर हैं, और अल्लाह से डरते रहो अगर तुम मोमिन हो।

(58) और जब तुम उन्हें नमाज़ की तरफ बुलाते हो तो वह उसे हंसी और खेल बना लेते हैं। इसकी वजह यह है कि लोग अक़्ल नहीं रखते।

(59) (ऐ नबी!) कह दीजिएः ऐ अहले किताबः क्या तुम हमसे सिर्फ इस वजह से ज़िद रखते हो कि हम अल्लाह पर और अपनी तरफ नाज़िल की गई किताब पर और (अपने से) पहले नाज़िल की गई किताबों पर ईमान रखते हैं। और बेशक तुममें से अक्सर नाफरमान हैं।

(60) (ऐ नबी!) कह दीजिएः क्या मैं तुम्हें (उस शख़्स के बारे में) न बता दूँ जो जज़ा (बदला) के एतबार से, अल्लाह के नज़दीक उससे भी बदतर है? यह वह शख़्स है कि अल्लाह ने उस पर लअनत की और उस पर अपना ग़ज़ब नाज़िल किया, और उनमें से कुछ को बन्दर और सूअर बना दिया, और उस शख़्स ने शैतान की बन्दगी की, वही लोग बदतर दर्जे में हैं और सीधी राह से वह सबसे ज़्यादा गुमराह हैं।

(61) और जब वह तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए और उनका हाल यह है कि वह कुफ्र के साथ ही दाख़िल हुए थे और उसी के साथ निकल गए और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानता है जिसे वह छुपाते हैं।

(62) और आप उनमें से बहुतों को देखते हैं कि वह गुनाह, ज़्यादती और हराम खाने में जल्दी करते हैं, बहुत बुरा है जो कुछ वह करते हैं।

(63) रब वाले और उनके औलमा उन्हें गुनाह की बात कहने और हराम खाने से क्यों नहीं रोकते? बहुत बुरा है जो कुछ वह (अपने लिए) तैयार कर रहे हैं।

(64) और यहूदियों ने कहाः ''अल्लाह का हाथ बन्धा हुआ है।'' बन्ध गए उन्हीं

के हाथ, और लअनत पड़ी उन पर उनकी उस बात (बकवास) की वजह से, बल्कि अल्लाह के तो दोनों हाथ खुले हुए हैं, वह जैसे चाहे खर्च करता है, हक़ीक़त यह है कि यह (कुरआन) जो आप के रब की तरफ से नाज़िल हुआ है, उनमें से अक्सर लोगों की सरकशी और कुफ्र में इज़ाफे की वजह बना है। और हमने क़यामत के दिन तक उनके दरम्यान दुश्मनी और नफरत डाल दी है। जब कभी वह लड़ाई की आग भड़काते हैं तो अल्लाह उसे बुझा देता है और वह ज़मीन में फसाद करने को दौड़ते हैं और अल्लाह फसाद करने वालों को पंसद नहीं करता।

(65) और अहले किताब ईमान ले आए और परहेज़गारी इख़्तियार कर लें तो यक़ीनन हम उनसे उनकी बुराईयां दूर कर देंगे और उन्हें नेअमत वाले बागों में ज़रूर दाख़िल करेंगे।

(66) और अगर वह तौरात और इन्जील और अपने रब की तरफ से नाज़िल की गई (दूसरी) किताबों के अहकाम पर ठीक ठीक अमल करते तो उन्हें अपने ऊपर और नीचे से (कसरत से रिज़्क) खाने को मिलता। उनमें से एक गिरोह दरम्यानी राह चलने वाला है, और उनमें से ज़्यादातर लोग जो कुछ कर रहे हैं वह बहुत बुरा है।

(67) ऐ रसूल! आप के रब की तरफ से आप पर जो नाज़िल किया गया है वह लोगों तक पहुँचा दीजिए। और अगर आपने ऐसा न किया तो आपने पैग़म्बरी का हक़ अदा न किया, और अल्लाह आपको लोगों (कि बुराई) से बचाऐगा, और बिला शुब्ह अल्लाह काफिरों की क़ौम को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता।

(68) (ऐ नबी!) कह दीजिए: ऐ अहले किताब! तुम हरगिज़ असल दीन पर कारबन्द नहीं हो सकते यहाँ तक कि तुम तौरात व इन्जील और अपने रब की तरफ से नाज़िल की गई (दूसरी) किताबों के एहकाम पर ठीक ठीक अमल करने लगो। हक़ीक़त यह है कि यह (कुरआन) जो आपके रब की तरफ से नाज़िल हुआ है, उनमें से अक्सर लोगों की सरकशी और कुफ्र में इज़ाफे की वजह बनेगा, और आप काफिरों की क़ौम का ग़म न खाऐं।

(69) बेशक जो लोग ईमान लाए और जो लोग यहूदी हुए और साबई (बेदीन) और नसारा, उनमें से जो भी अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और नेक अमल करे तो उन पर कोई ख़ौफ नहीं होगा और न वह ग़मगीन होंगे।

(70) यक़ीनन हमने बनी इस्राईल से पुख़्ता अहद लिया था और हमने उनकी तरफ कई रसूल भेजे। जब उनके पास कोई रसूल ऐसी चीज़ ले कर आया जिसे उनके नफ्स पंसद नहीं करते थे तो कुछ नबियों को उन्होंने

झुठलाया और कुछ को वह क़त्ल कर देते थे।

(71) और उन लोगों का ख़्याल था कि उनकी कोई आज़माईश न होगी, पस वह अन्धे और बहरे हो गए, फ़िर अल्लाह उन पर मेहरबान हुआ, मगर उनमें से ज़्यादा तर लोग फ़िर अन्धे बहरे हो गए, और अल्लाह खूब देखने वाला है जो वह करते हैं।

(72) यक़ीनन कुफ्र किया उन लोगों ने जिन्होंने कहाः बेशक अल्लाह तो वही मसीह इब्ने मरयम है। और मसीह ने कहाः ऐ बनी इस्राईल! तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है, बेशक जो अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो यक़ीनन अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है, और उसका ठिकाना दोज़ख है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

(73) यक़ीनन काफिर हुए वह लोग जिन्होंने कहाः बेशक अल्लाह तीन में से तीसरा है। और कोई मअ़बूद नहीं सिवाए एक मअ़बूद के। और वह जो कुछ कहते हैं अगर उससे बाज़ न आए तो उनमें से जिन लोगों ने कुफ्र किया, उन्हें ज़रूर दर्दनाक अज़ाब मिलेगा।

(74) फ़िर क्या वह अल्लाह के सामने तौबा नहीं करते और उससे बख़्शिश नहीं मांगते? और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(75) मसीह इब्ने मरयम नहीं हैं मगर एक रसूल ही। उनसे पहले बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, और उनकी माँ सिद्दीका (निहायत रास्तबाज़) थी, वह दोनों खाना खाते थे। देखें हम उनके लिए कैसी कैसी निशानियां बयान करते हैं, फ़िर देखे वह किधर उलटे फ़िरे जाते हैं।

(76) (ऐ नबी!) कह दीजिएः क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ की इबादत करते हो जो तुम्हारे लिए नुक्सान और नफा का कोई इख़्तियार नहीं रखती और अल्लाह ही तो खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(77) कह दीजिएः ऐ अहले किताब! तुम अपने दीन में नाहक़ ज़्यादती न करो, और उन लोगों की ख़्वाहिशात की पैरवी न करो जो इससे पहले गुमराह हो चुके हैं, और उन्होंने बहुत सो को गुमराह किया और वह सीधी राह से बहक गए।

(78) बनी इस्राईल में से जो लोग काफिर हुए उन पर दाऊद और ईसा इब्ने मरयम की ज़बान से लअनत की गई, यह इस वजह से हुआ कि उन्होंने नाफरमानी की और वह हद से गुज़र जाते थे।

(79) वह एक दूसरे को बुरे काम से मना नहीं करते थे कि उन्होंने वह खुद किया हुआ

था, बहुत बुरा था जो वह करते थे।

(80) आप उनमें से बहुतों को देखेंगे कि वह उन लोगों से दोस्ती करते हैं जिन्होंने कुफ्र किया। यक़ीनन जो कुछ उन्होंने अपने हक़ में अपने आगे भेज रखा है वह बहुत बुरा है, (यह) कि अल्लाह उनसे नाराज़ हो गया और वह हमेशा अज़ाब में रहने वाले हैं।

(81) और ऐसा होता कि वह अल्लाह पर और उस के नबी पर ईमान ले आते और उस पर ईमान लाते जो उसकी तरफ नाज़िल किया गया, तो उन (काफिरों) को दोस्त न बनाते लेकिन उनमें से ज़्यादा तर लोग नाफरमान हैं।

(82) (ऐ नबी!) यक़ीनन आप लोगों में अहले ईमान से दुश्मनी रखने में सख्ततरीन यहूदियों और मुश्रिकों को पाएंगे, और अहले ईमान से दोस्ती रखने में क़रीब तरीन उन लोगों को पायेंगे जिन्होंने कहा बेशक हम नसारा हैं, इसकी वजह यह है कि बेशक उनमें कुछ पढ़े हुए इबादत करने वाले हैं, कुछ दुनिया से अलग थलग रहने वाले हैं, और यह कि वह ग़रूर नहीं करते।

(83) और जब वह रसूल पर नाज़िल किया गया कलाम सुनते हैं तो आप देखते हैं कि उनकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं, उसकी वजह यह है कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया है। वह कहते हैंः ऐ हमारे रब! हम ईमान ले आए, लिहाज़ा तू हमारे नाम (हक़ की) गवाही देने वालों के साथ लिख ले।

(84) और हमारे पास क्या बहाना है कि हम अल्लाह पर और जो हक़ हम तक पहुँचा है उस पर ईमान न लायें, और हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमें नेक लोगों के गिरोह में दाख़िल करेगा।

(85) इसलिए उन्होंने जो कहा उसके बदले अल्लाह उन्हें ऐसे बाग देगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वह उनमें हमेशा रहेंगे, और यह नेकी करने वालों की जज़ा (बदला) है।

(86) और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही दोज़खी हैं।

(87) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! वह पाकिज़ा चीज़ें हराम मत ठहराओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं और तुम हद से न गुज़रो, बेशक अल्लाह हद से गुज़रने वालों को पंसद नहीं करता।

(88) और अल्लाह ने तुम्हें जो हलाल पाकिज़ा रिज़्क़ दिया है उसमें से खाओ, और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो।

(89) अल्लाह तुम्हारी बेहूदा क़समों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा लेकिन उन क़समों पर ज़रूर

पकड़ेगा जो तुमने मज़बूत बान्ध लीं, इसलिए उसका कफ्फारा दस मिस्कीनों को औसत दर्जे का खाना खिलाना है जो तुम अपने अहल व अयाल को खिलाते हो, या उन्हें कपड़े पहनाना है, या एक गर्दन आज़ाद कराना है, फ़िर जो इसकी ताक़त न रखता हो तो वह तीन दिन के रोज़े रखे। यह तुम्हारी क़समों का कफ्फारा है जब तुम क़सम खा (कर तोड़) बैठो। और तुम अपनी क़समों की हिफाज़त करो, अल्लाह इसी तरह तुम्हारे लिए अपनी आयतें बयान करता है ताकि तुम शुक्र करो।

(90) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! बेशक शराब और जूआ, आस्ताने और फाल निकालने के तीर, सब गन्दे काम हैं और शैतान के अमल से हैं, लिहाज़ा तुम उनसे बचो, ताकि तुम फलाह (कामयाबी) पाओ।

(91) बेशक शैतान चाहता है कि तुम्हारे दरम्यान शराब और जूए के ज़रिये से दुश्मनी और नफरत डाल दे, और तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ से रोके, फ़िर क्या तुम इन (शैतानी कामों) से रूकते हो?

(92) और तुम अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो, और एहतियात करो, पस अगर तुम हक़ से फ़िर जाओ तो जान लो कि हमारे रसूल पर तो सिर्फ खोल कर पहुँचा देना लाज़िम है।

(93) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करने लगे, उन्होंने जो कुछ पहले खाया पिया हो, उस पर उन्हें कोई गुनाह नहीं जबकि वह आईन्दा परहेज़गारी इख्तियार करें और ईमान पर क़ायम रहें और नेक अमल करें, फ़िर वह परहेज़गार ही रहें और ईमान पर जमे रहें, फ़िर वह परहेज़गारी ही अपनाऐं और नेकी करें, और अल्लाह नेकी करने वालों को पंसद करता है।

(94) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह ज़रूर तुम्हें उस चीज़ के शिकार के ज़रिये से आज़माएगा जिस तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुँच सकते हों ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उससे बिन देखे डरता है, फ़िर उसके बाद जो हद से गुज़र गया, उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(95) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम एहराम की हालत में हो तो शिकार न मारो, और तुममें से जो कोई जान बूझ कर शिकार मारे तो जो जानवर उसने मारा हो उसे उसके बराबर एक जानवर मवेशियों में से जुर्माना देना होगा जिसका फैसला तुममें से दो इंसाफ वाले करेंगे, यह (जुर्माना) बतौर कुरबानी काबा पहुँचाया जाएगा या उसका कफ्फारा चन्द मिस्कीनों को खाना खिलाना है या उसके बराबर रोज़े रखना है ताकि वह अपने किये का मज़ा चखे जो कुछ इससे पहले हो चुका वह अल्लाह ने माफ किया

और जो कोई दोबारा वही हरकत करे तो अल्लाह उससे बदला लेगा, और अल्लाह ग़ालिब है, बदला लेने वाला है।

(96) तुम्हारे लिए समंदर का शिकार उसका खाना हलाल किया गया है, यह तुम्हारे और मुसाफिरों के फायदे के लिए है। और जब तक तुम एहराम की हालत में हो, तुम्हरे लिए खुश्की का शिकार हराम किया गया। और तुम अल्लाह से डरते रहो जिसकी तरफ तुम इकट्ठा किये जाओगे।

(97) काबा जो हुरमत वाला घर है, अल्लाह ने उसे लोगों के क़याम का ज़रिया बनाया है, और हुरमत वाले महीनें और हरम वाली कुरबानी और पट्टे वाले जानवरों को भी हुरमत दी है, यह इसलिए कि तुम जान लो कि बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

(98) जान लो! बेशक अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है, और बेशक अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(99) रसूल के ज़िम्मे अल्लाह का पैगाम पहुँचा देने के सिवा कुछ नहीं और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते और जो तुम छुपाते हो।

(100) (ऐ नबी!) कह दीजिएः पाक और नापाक बराबर नहीं हो सकते अगरचे नापाक की कसरत आपको हैरानी में डाल दे, लिहाज़ा ऐ अक़्ल वालो! तुम अल्लाह से डरो ताकि फलाह पाओ।

(101) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! ऐसी बातों के बारे में सवाल न करो कि अगर वह तुम पर ज़ाहिर कर दी जाऐं तो तुम्हें बुरी लगें, और अगर तुम उनके बारे में सवाल करोगे जब कि कुरआन नाज़िल किया जा रहा हो तो वह तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएँगी, अल्लाह ने तुम्हारी इस हरकत को माफ कर दिया है, और अल्लाह बहुत बख्शने वाला, बहुत होसले वाला है।

(102) उनके बारे में तुमसे पहले भी एक क़ौम ने सवाल किया था, फ़िर उन (बातों) की वजह से वह काफिर हो गए।

(103) अल्लाह ने नहीं बनाया किसी (जानवर) को बहीरा और न साइबा और न वसीलः और न हाम, मगर यह काफिर अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाते हैं, और उनमें से अक्सर अक़्ल नहीं रखते।

(104) और जब उनसे कहा जाता है कि तुम आओ उस चीज़ की तरफ जो अल्लाह ने नाज़िल की है और आओ रसूल की तरफ, तो वह कहते हैंः हमें वह काफी है जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया, क्या अगरचे उनके बाप दादा कुछ न जानते हों और न

वह हिदायत याफ्ता ही हों (तो भी वह उन्हीं की पैरवी करेंगे?)।

(105) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम पर अपनी जानों की फ़िक्र लाज़िम है, जो शख़्स गुमराह हुआ, वह तुम्हें नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता जबकि तुम खुद हिदायत पर हो। तुम सबको अल्लाह की तरफ लौट कर जाना है, फ़िर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे हो।

(106) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुममें से किसी को मौत आने लगे तो तुम्हारे दरम्यान गवाही होनी चाहिए, और वसियत के वक़्त अपने (मुसलमानों) में से दो इंसाफ वाले गवाह बना लो या अगर तुम ज़मीन में सफर पर निकले हो और (रास्ते में) मौत की मुसीबते पेश आ जाए तो गैर क़ौम के दो गवाह भी काफी होंगे, फ़िर अगर तुम्हें कोई शक हो तो उन दोनों गवाहों को नमाज़ के बाद (मस्जिद में) रोक लो, तो वह अल्लाह की क़सम खा कर कहें कि हम इस गवाही के बदले कोई क़ीमत नहीं ले रहे और कोई हमारा रिश्तेदार भी हो (तो हम उसकी रिआयत करने वाले नहीं) और हम अल्लाह की गवाही नहीं छुपाते, अगर हम ऐसा करें तो हम गुनाहगारों में शुमार होंगे।

(107) फ़िर अगर पता चल जाए कि बेशक उन दोनों ने (हक़ मारने का) गुनाह किया है तो उन दोनों की जगह दो और गवाह उन लोगों में से खड़े हों जिनका हक़ मारा गया हो और जो मरने वाले के ज़्यादा क़रीबी हों, फ़िर वह दोनों अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही उन (पहले) दोनों की गवाही से ज़्यादा सच्ची है, और हमने कोई ज़्यादती नहीं की, अगर ऐसा करें तो ज़ालिमों में शुमार होंगे।

(108) इस तरह ज़्यादा उम्मीद की जा सकती है कि वह ठीक ठीक गवाही देंगे या कम अज़ कम इस बात ही का ख़ौफ करेंगे कि कहीं उन (वुरसा) की क़समों के बाद उनकी क़समें रद्द न कर दी जाएं और तुम अल्लाह से डरो और सुनो, और अल्लाह नाफरमानी करने वालों को हिदायत नहीं देता।

(109) उस दिन का ख्याल करो जब अल्लाह रसूलों को जमा करेगा, फ़िर उनसे कहेगा कि तुम्हे क्या जवाब दिया गया था? तो वह कहेंगेः हमें कोई इल्म नहीं, बेशक तू ही ग़ैब की बातों को जानने वाला है।

(110) जब अल्लाह कहेगाः ऐ ईसा इब्ने मरयम! तू खुद पर और अपनी माँ पर मेरे इनाम याद कर, जब मैंने तेरी रूहुलक़ुद्दुस (जिब्रील) के ज़रिये मदद की, तू (माँ की) गौद में और बड़ी उमर में लोगों से बात करता था और जब मैंने तुझे किताब व हिकमत और तौरात और इन्जील की तालीम

दी और जब तू मेरे हुक्म से मिट्टी से परिन्दे की सी मूरत बनाता था, फ़िर उसमें फूंक मारता था तो वह मेरे हुक्म से परिन्दा बन जाता था और तू पैदाईशी अन्धे को और कोढ़ी को मेरे हुक्म से तंदरूस्त करता था और जब तू मुर्दों को मेरे हुक्म से (ज़िन्दा) निकालता था और जब मैंने तुझे बनी इस्राईल से बचाया जब तू उनके पास वाज़ेह निशानियों के साथ आया था। तब उन लोगों में से जिन्होंने कुफ्र किया, उन्होंने कहा थाः यह तो खुले जादू के सिवा कुछ नहीं।

(111) और जब मैंने हवारियों के दिल में यह बात डाली कि तुम मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ, तब उन्होंने कहाः हम ईमान लाए हैं, और तू गवाह रह कि बेशक हम फ़रमाबरदार हैं।

(112) (और) जब हवारियों ने कहाः ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या तेरा रब यह ताक़त रखता है कि हम पर आसमान से एक दस्तरख्वान नाज़िल करे? उन्होंने जवाब दियाः तुम अल्लाह से डरो अगर तुम मोमिन हो।

(113) वह बोलेः हम यह चाहते हैं कि हम उसमें से खायें और हमारे दिलों को तसल्ली हो जाए, और हम यह जान लें कि तूने हमसे सच कहा है और हम इस पर गवाही देने वालों में से हो जाएं।

(114) ईसा इब्ने मरयम ने कहाः ऐ अल्लाह! हमारे रब! हम पर आसमान से दस्तरख्वान नाज़िल फरमा कि वह हमारे अव्वल और हमारे बाद वालों के लिए ईद (यानी खुशी का मौक़ा) बन जाए, और वह तेरी तरफ से खास निशानी हो, और तू हमें रिज़्क़ दे, और तू बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है।

(115) अल्लाह ने फरमायाः बेशक मैं वह दस्तरख्वान तुम पर नाज़िल करूंगा फ़िर उसके बाद तुम में से जो शख़्स कुफ्र करेगा तो मैं ज़रूर उसे ऐसा अज़ाब दूंगा कि वैसा अज़ाब दुनिया में किसी और को नहीं दूंगा।

(116) और जब अल्लाह कहेगाः ऐ ईसा इब्ने मरयम! क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा दो मअ्बूद बना लो? तो वह कहेंगेः तू पाक है, मेरे लिए जाईज़ नहीं कि मैं वह बात कहूं जिसका मुझे हक़ नहीं, अगर मैंने यह बात कही हो तो यक़ीनन तू उसे जानता है, तू उसे भी जानता है जो मेरे दिल में है और मैं उसे नहीं जानता जो कुछ तेरे नफ्स में है। बेशक तू ही सबसे बढ़ कर ग़ैब जानने वाला है।

(117) मैंने उनसे कुछ नहीं कहा था सिवाए इसके जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था, यह कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा

और तुम्हारा रब है, और मैं उन पर निगराँ था जब तक मैं उनमें रहा, फ़िर जब तूने मझे उठा लिया, तो तू ही उन पर निगराँ था, और तू हर चीज़ पर निगराँ है।

(118) अगर तू उन्हें अज़ाब दे तो बेशक वह तेरे बन्दे हैं, और अगर तू उन्हें बख्श क्षमा कर) दे तो बेशक तू ही ग़ालिब है, बड़ी हिकमत वाला है।

(119) अल्लाह फरमाएगाः यह ऐसा दिन है कि सच्चों को उनका सच नफा देगा, उनके लिए ऐसे बाग हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। वह उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वह उससे राज़ी हुए, यही बहुत बड़ी कामयाबी है।

(120) आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके दरम्यान है, उसकी बादशाही अल्लाह ही के लिए है, और वह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

सूरह अनआम-6

(यह मक्की सूरत है इसमें 165 आयतें और 20 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) तमाम तअरीफ अल्लाह ही के लिए है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और अन्धेरों और रोशनी को बनाया फ़िर जिन लोगों ने कुफ़्र किया, वह अपने रब के साथ (औरों को) बराबर ठहराते हैं।

(2) वही अल्लाह है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फ़िर उसने (तुम्हारे लिए) एक वक़्त मुक़र्रर किया, और उसके यहाँ (क़यामत का) एक मुक़र्रर वक़्त भी है, फ़िर भी तुम शक करते हो।

(3) और वही अल्लाह है आसमानों और ज़मीन में वह तुम्हारी छुपी और ज़ाहिरी (सब) बातें जानता है, और वह जानता है जो कुछ तुम कमाते (या करते) हो।

(4) और उन (लोगों) के पास उनके रब की निशानियों में से कोई निशानी भी ऐसी नहीं आई जिससे उन्होंने मुहँ न मोड़ लिया हो।

(5) उनके पास जब हक़ आ गया तो उसे भी उन्होंने झुठला दिया, इसलिए जल्द ही उन्हें उस चीज़ का पता चल जाएगा जिसका वह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

(6) क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले हम ने कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं जिन्हें हमने ज़मीन में ऐसी ताक़त दी थी जो तुम्हें नहीं दी और हमने उन पर मूसलाधार बारिश नाज़िल की और नहरें बनाई जो उनके नीचे बहती थी, फ़िर हमने उनके गुनाह की वजह से उन्हें हलाक कर दिया और उनके बाद दूसरी क़ौमें पैदा कीं।

(7) और (ऐ नबी!) अगर हम कागज़ पर लिखी हुई कोई किताब आप पर नाज़िल करते, फ़िर वह अपने हाथों से उसे छू कर देखते तो जिन लोगों ने कुफ्र किया वह ज़रूर कहते कि यह तो खुला जादू है।

(8) और उन (काफिर) लोगों ने कहा कि इस नबी पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतारा गया? और अगर हम कोई फरिश्ता उतारते तो सारा मामला ही खत्म हो जाता, फ़िर उनको ज़रा मुहलत न दी जाती।

(9) और अगर हम इस (नबी) को फरिश्ता बना कर भेजते तो भी हम उसे इंसान ही की शक्ल में भेजते और (तब भी) हम उन्हें उसी शुब्हे में डालते जिसमें वह अब पड़े हुए हैं।

(10) और (ऐ नबी!) यक़ीनन आपसे पहले रसूलों से भी मज़ाक़ किया गया था, फ़िर उनमें से जिन लोगों ने मज़ाक़ किया था, उन्हें उस अज़ाब ने आ घेरा जिसका मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

(11) (ऐ नबी!) कह दीजिएः तुम ज़मीन में घूमो फिरो, फ़िर देखो झुठलाने वालों का अन्जाम क्या हुआ?

(12) उनसे पूछेः जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है वह किस के लिए है? कह दीजिए अल्लाह ही के लिए है, उसने (मख्लूक़ पर) मेहरबानी करना अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है, वह क़यामत के दिन तुम्हें ज़रूर जमा करेगा जिसमें कोई शक नहीं, जिन लोगों ने अपने आपको नुक्सान में डाला है, तो वह ईमान नहीं लाते।

(13) रात (के अन्धेरे) और दिन (के उजाले) में जो कुछ ठहरा हुआ है, वह अल्लाह ही का है और वह सब कुछ सुनता और खूब जानता है।

(14) (ऐ नबी!) कह दीजिएः क्या मैं उस अल्लाह के सिवा मअ्बूद बना लू जो आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है? और वह (सबको) खिलाता है और उसे नहीं खिलाया जाता, कह दीजिएः बेशक मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं वह पहला शख्स हो जाऊँ जो इस्लाम लाया, और आप मुश्रिकों में शामिल न हो जाएं।

(15) कह दीजिएः बेशक अगर मैंने अपने रब की नाफरमानी की तो में एक बहुत बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ।

(16) उस दिन जिस शख्स से अज़ाब हटा लिया गया तो यक़ीनन उस पर अल्लाह ने रहम कर दिया, और यही है वाज़ेह कामयाबी।

(17) और अगर अल्लाह आपको कोई तकलीफ पहुँचाए, तो वह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(18) और वह अपने बन्दों पर पूरा

इख़्तियार रखता है और वह खूब हिकमत वाला, निहायत बाखबर है।

(19) (ऐ नबी! उनसे) कहेः गवाही के तौर पर कौनसी चीज़ सबसे बढ़ कर है? कह दीजिएः अल्लाह मेरे और तुम्हारे दरम्यान गवाह है, और मेरी तरफ यह कुरआन वह्यी किया गया है ताकि उसके ज़रिये से मैं तुम्हें और जिस जिस को यह पहुँचे सबको डराऊं (खबरदार कर दूँ) क्या तुम इसकी गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे मअ़बूद भी हैं? कह दीजिएः मैं यह गवाही नहीं देता। (और यह भी) कह दीजिए कि सिर्फ वही एक मअ़बूद है और बेशक मैं उससे बरी हूँ जो तुम शरीक ठहराते हो।

(20) जिन लोगों को हमने किताब दी वह उसे इस तरह पहचानते जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने अपने आपको खसारे में डाला, तो वह ईमान नहीं लाते।

(21) और उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ बान्धे या उसकी आयतें को झुठलाए? बेशक ज़ालिम फलाह नहीं पाएँगे।

(22) और जिस दिन हम सबको इकट्ठा करेंगे, फ़िर जो लोग (अल्लाह के साथ) शरीक ठहराते थे, उनसे हम कहेंगेः तुम्हारे वह शरीक कहाँ हैं जिन्हें तुम (अल्लाह के साथ शरीक) ख्याल करते थे?

(23) फ़िर उस (जवाब तलबी) पर उनका बहाना यही होगा कि वह कहेंगेः अल्लाह हमारे रब की क़सम! हम मुश्रिक नहीं थे।

(24) देखें वह अपने आप पर कैसा झूठ गढ़ेंगे और जिन्हें वह झूठे मअ़बूद बना लेते थे, सब (वहाँ) गुम हो जाएँगे

(25) और उनमें से कुछ लोग वह हैं जो कान लगा कर आपकी बात सुनते हैं, जबकि हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं कि वह उसको समझ ही न सकें और उनके कानों में रूकावट डाल दी, अगर वह सारी निशानियां देख लें तो भी उन पर ईमान नहीं लाएँगे, यहाँ तक कि जब वह आपके पास आते हैं और आपसे झगड़ते हैं तो उनमें से जिन लोगों ने कुफ्र किया वह कहते हैं कि यह तो पहले लोगों की कहानियाँ हैं।

(26) और वह दूसरों को इस (हिदायत) से रोकते हैं और खुद भी उससे दूर रहते हैं और वह अपने आप ही को हलाक कर रहे हैं, और वह समझ नहीं रखते।

(27) और अगर आप उन्हें उस वक़्त देखें जब वह आग में खड़े किये जाएँगे तो वह कहेंगेः काश! एक बार हमें दुनिया में वापस भेज दिया जाए तो हम अपने रब की निशानियों को हरगिज़ न झुठलाऐंगे और हम मोमिनों में से होंगे।

(28) नहीं, बल्कि उनके वह करतूत ज़ाहिर हो चुके होंगे जिन्हें वह पहले छुपाते थे। और अगर उन्हें वापस (दुनिया में) भेज दिया जाए तो भी वही काम करेंगे जिनसे उन्हें रोका गया था, और बेशक वह झूठे हैं।

(29) और वह कहते हैं कि ज़िन्दगी तो बस हमारी दुनिया ही की ज़िन्दगी है, और हमें दोबारा नहीं उठाया जायेगा।

(30) और अगर आप उन्हे उस वक़्त देखें जब वह अपने रब के सामने खड़े किये जाएँगे तो वह फरमाएगाः क्या यह हक़ नहीं है? तो वह कहेंगेः क्यों नहीं! (यह हक़ है) हमारे रब की क़सम! तो अल्लाह फरमाएगाः फ़िर तुम अज़ाब का मज़ा चखो इस वजह से कि तुम कुफ़्र करते थे।

(31) बेशक वह लोग नुक्सान में रहे जिन्होनें अल्लाह से मुलाक़ात को झुठलाया यहाँ तक कि जब उनके पास क़यामत अचानक आ जाएगी तो वह कहेंगेः अफसोस! हमसे इस मामले में कैसी कोताही हुई, और वह अपने बोझ अपनी पीठ पर उठाए हुए होंगे। खबरदार! बहुत बुरा है वह बोझा जो वह उठाएंगे।

(32) और दुनिया की ज़िन्दगी बस खेल तमाशे के सिवा कुछ नहीं, और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए यक़ीनन बेहतर है जो परहेज़गारी इख़्तियार करते हैं, क्या फ़िर तुम अक़्ल नहीं रखते?

(33) (ऐ नबी!) हम जानते हैं कि बेशक आपको वह बात ग़मगीन करती है जो वह कहते हैं, पस बेशक वह आपको नहीं झुठलाते बल्कि दरअस्ल यह ज़ालिम तो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं।

(34) (ऐ नबी!) बेशक आपसे पहले बहुत से रसूल झुठलाये गए, तो उन्होंने झुठालाऐ जाने और तकलीफ दिए जाने पर सब्र किया यहाँ तक कि उनके पास हमारी मदद आ पहुँची और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं और यक़ीनन आपके पास रसूलों की कुछ खबरें आ चुकी हैं।

(35) और अगर उन (काफिरों) लोगों का हक़ से मुहँ मोड़ना आपको नागवार है तो अगर आपमें यह ताक़त है कि आप ज़मीन में कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी ढूंढ लें, फ़िर आप उनके पास कोई निशानी ले आएं (तो ऐसा कर गुज़रें) और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत (मार्ग-दर्शन) पर जमा कर देता, इसलिए आप नादानों में से न हो जाएं।

(36) हक़ को क़बूल तो सिर्फ वह करते हैं जो सुनते हैं और जहाँ तक मुर्दो का तअल्लुक़ है, अल्लाह उन्हें उठायेगा, फ़िर वह उसकी तरफ लौटाए जाएँगे

(37) और उन्होंने कहाः इस (नबी) पर

उसके रब की तरफ से कोई (बड़ी) निशानी क्यों नहीं नाज़िल की गई? कह दीजिएः बेशक अल्लाह इस पर कुदरत रखता है कि कोई (बड़ी) निशानी नाज़िल फरमाऐ लेकिन लोगों में से अक्सर इल्म नहीं रखते।

(38) और ज़मीन पर चलने वाला कोई जानवर और अपने दोनों परो से उड़ने वाला कोई परिन्दा ऐसा नहीं जो तुम्हारी तरह अलग उम्मत न हो, हमने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी (जिसका ज़िक्र न किया हो) फ़िर वह सब अपने रब की तरफ इकट्ठा किये जाएँगे।

(39) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया वह अन्धेरों में बहरे और गूंगे हैं, अल्लाह जिसे चाहे गुमराह कर देता है और जिसे चाहे सीधी राह पर ले आता है।

(40) (ऐ नबी!) कह दीजिएः अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब आ जाए या तुम पर क़यामत आ जाए तो बताओ क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे अगर तुम सच्चे हो?

(41) बल्कि तुम सिर्फ उसीको पुकारोगे, फ़िर अगर वह चाहेगा तो वह तकलीफ दूर कर देगा जिसके लिए तुम उसे पुकारोगे, और तुम उन्हें भूल जाओगे जिन्हें तुम शरीक ठहराते थे।

(42) और हमने आपसे पहले उम्मतों की तरफ रसूल भेजे, फ़िर हमने उन (उम्मतों) को सख्ती और तकलीफ के साथ पकड़ा ताकि वह आजिज़ी इख्तियार करें।

(43) फ़िर जब उन पर हमारा अज़ाब आया तो उन्होंने आजिज़ी क्यों न इख्तियार की? लेकिन उनके दिल सख्त हो गए और जो अमल वह करते थे उसमें शैतान ने उनके लिए कशिश पैदा कर दी थी।

(44) फ़िर जब उन्होंने वह नसीहत भुला दी जो उन्हें की गई थी तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए यहाँ तक कि जब वह उन चीज़ों पर इतराने लगे जो उन्हें दी गई थी तो हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया फ़िर वह नाउम्मीद हो कर रह गए।

(45) फ़िर उस क़ौम की जड़ काट डाली गई जिन्होंने ज़ुल्म किया था, और तमाम तअरीफें अल्लाह ही के लिए है जो तमाम जहाँनो का रब है।

(46) (ऐ नबी! उनसे) कह दीजिएः अगर अल्लाह तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे, तो बताओ अल्लाह के सिवा कौन मअ़बूद है जो तुम्हें यह (चीज़ें) ला दे? देखें किस तरह हम आयतें फ़ेर फ़ेर कर बयान करते हैं, फ़िर भी वह मुहँ मोड़ते हैं।

(47) कहेंगेः अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब अचानक या खुल्लम खुल्ला आ जाए,

तो बताओ क्या ज़ालिमों के सिवा कोई और लोग भी हलाक किये जाएँगे?

(48) और हमने कोई रसूल ऐसा नहीं भेजा जिसे खुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला न बनाया हो, फ़िर जो शख़्स ईमान ले आए और अपनी इस्लाह कर ले, तो उन पर न कोई ख़ौफ होगा न वह ग़मग़ीन होंगे।

(49) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें इस (नाफरमानी की) वजह से अज़ाब पहुँचेगा जो नाफरमानी वह करते थे।

(50) (ऐ नबी!) कह दीजिएः मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न मैं ग़ैब जानता हूँ, और न मैं तुमसे कहता हूँ, मैं तो उस चीज़ की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ वह्यी की जाती है। कह दीजिएः क्या अंधा और आँख वाला बराबर हो सकते हैं? फ़िर क्या तुम ग़ौर नहीं करते?

(51) और (ऐ नबी!) आप इस (कुरआन) के ज़रिये से उन लोगों को डरायें जिन्हें डर रहता है कि वह अपने रब के पास इकट्ठा किये जाएँगे, वहाँ उसके सिवा उनका कोई दोस्त और सिफारशी न होगा शायद कि वह परहेज़गारी इख़्तियार करें।

(52) और उन लोगों को अपने से मत दूर करें जो अपने रब को सुबह और शाम पुकारते हैं, वह अपने रब का चेहरा (रज़ामन्दी) चाहते हैं, उनके हिसाब में से किसी चीज़ का बोझ आप पर नहीं और आपके हिसाब में से किसी चीज़ का बोझ उन पर नहीं, फ़िर (अगर) आप उनको अपने से दूर करेंगे तो आप ज़ालिमों में से हो जाएँगे

(53) और हमने इसी तरह लोगों में से कुछ को कुछ के ज़रिये से आज़माईश में डाला है ताकि वह उन्हें देख कर कहें: "क्या हममें से यह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने एहसान किया है? (हाँ) क्या अल्लाह अपने शुक्रगुज़ार बन्दों को (उनसे) ज़्यादा नहीं जानता?

(54) और जब वह लोग आपके पास आएं जो हमारी आयतों पर ईमान रखतें हैं तो कह दीजिएः तुम पर सलाम हो, तुम्हारे रब ने मेहरबानी को अपने ऊपर लाजिम कर लिया है। बेशक तुममें से जो शख़्स जहालत से बुरा अमल करे, फ़िर उस के बाद तौबा करे और इस्लाह कर ले तो यक़ीनन वह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(55) और हम इसी तरह आयतों को तफसील से बयान करते है ताकि मुजरिमों का रास्ता बिल्कुल वाजेह हो जाए।

(56) (ऐ नबी!) कह दीजिएः बेशक मुझे मना किया गया है कि मैं उनकी इबादत

करूँ जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो, कह दीजिएः मैं तुम्हारी ख्वाहिशात के पीछे नही चलता, उस सूरत में मैं गुमराह हो जाऊँगा, और मैं हिदायत पाने वालों में से न होऊगाँ।

(57) कह दीजिएः बेशक मैं अपने रब की तरफ से वाजेह दलील पर हूँ, और तुमने उस दलील को झुठलाया है, मेरे पास वह चीज़ नही है जिसे तुम जल्दी तलब कर रहे हो, फैसले का सारा इख्तियार अल्लाह ही को है, वही हक़ बात बयान करता है, और वह बेहतरीन फैसला करने वाला है।

(58) कह दीजिएः बेशक अगर मेरे पास वह चीज़ होती जिसे तुम जल्दी तलब कर रहे हो, तो मेरे और तुम्हारें दरम्यान मामला कभी का चुका दिया गया होता और अल्लाह जालिमों को खूब जानता है।

(59) और उसी के पास ग़ैब की कुंजियाँ हैं, उन्हें उसके सिवा कोई नहीं जानता, और वह जानता है जो कुछ ज़मीन और समुद्र में है, और कोई पत्ता ऐसा नही गिरता जिसे वह जानता न हो, और जमीन के अंधेरों में कोई दाना ऐसा नही जिसे वह जानता न हो, और कोई गीली चीज़ और कोई सूखी चीज़ ऐसी नही जो वाजेह किताब में लिखी हुई न हो।

(60) और वही है (अल्लाह) जो रात को तुम्हें मौत देता है, और वह जानता है जो कुछ तुम दिन में करते हो, फ़िर दूसरे दिन तुम्हें उठाता है ताकि जिन्दगी की मुकर्रर मुद्दत पुरी हो, फ़िर उसकी तरफ तुम्हारी वापसी है, फ़िर वह तुम्हें बता देगा के तुम क्या करते रहे हो।

(61) और वही अपने बन्दों पर ग़ालिब है, और तुम पर मुहाफिज (फरिश्ते) भेजता है, यहाँ तक कि जब तुममें से किसी एक की मौत का वक्त आता है तो हमारे फरिश्ते उसकी रूह क़ब्ज कर लेते है, और वह उसमें कोताही नहीं करते।

(62) फ़िर वह अल्लाह की तरफ लौटाए जाते हैं जो उनका सच्चा मालिक है। खबरदार! फैसले का सारा इख्तियार उसी को हासिल है, और वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।

(63) (ऐ नबी!) कह दीजिएः तुम्हें खुश्की और तरी के अन्धेरों से कौन निजात देता है? तुम उससे आह व ज़ारी करते हुए और चुपके चुपके पुकारते हो (और कहते हो) कि अगर वह हमें इस (मुसीबत) से निजात दे दे तो हम ज़रूर शुक्र करने वालों में से हो जाएँगे

(64) कह दीजिएः अल्लाह ही तुम्हें इस (मुसीबत) से और हर ग़म से निजात देता है, फ़िर भी तुम उसके साथ शिर्क करते हो?

(65) कह दीजिएः वही इस पर कुदरत रखता है कि तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पाँव के नीचे से तुम पर अज़ाब भेजे, या तुम्हें गिरोह में तक़्सीम कर के एक (गिरोह) को दूसरे की ताक़त का मज़ा चखाए। देखे, हम किस तरह आयतों को फ़ेर फ़ेर कर बयान करते हैं ताकि वह समझे।

(66) और इस (कुरआन) को आपकी क़ौम ने झुठलाया, हालांकि वह हक़ है, कह दीजिएः मैं तुम पर निगराँ नहीं हूँ।

(67) हर एक खबर का वक़्त मुक़र्रर है, जल्द ही तुम जान लोगे।

(68) और जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों पर नुक्ताचीनी कर रहे होते हैं, तो आप उनके पास से हट जाएं यहाँ तक कि वह उसके अलावा किसी और बात में मशगूल हो जाएं, और अगर शैतान आपको यह बात भुला दे तो याद आने पर उन ज़ालिम लोगों के पास मत बैठें।

(69) उनके हिसाब में से किसी चीज़ की ज़िम्मेदारी उन लोगों पर नहीं जो परहेज़गारी इख़्तियार करते हैं लेकिन नसीहत (उपदेश) करना (उनका फ़र्ज़) है ताकि वह भी परहेज़गारी इख़्तियार करें।

(70) और (ऐ नबी!) उन लोगों को छोड़ दीजिए जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया है, और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोखे में डाल रखा है, और आप इस (कुरआन) के ज़रिये से नसीहत (उपदेश) करते रहे ताकि कोई शख़्स अपने करतूतों के वबाल से हलाक न हो जाए। अल्लाह के सिवा कोई उसका दोस्त और सिफ़ारशी न होगा। और अगर वह बदले में हर तरह का फिदया दें तो वह भी उससे नहीं लिया जाएगा, यही वह लोग हैं जो कुछ उन्होनें कमाया उसकी वजह से उन्हें हलाक कर दिया गया। और जो वह कुफ्र करते रहे हैं उसकी वजह से उन्हें दोज़ख़ में तेज़ गर्म पानी पीने को मिलेगा और दर्दनाक अज़ाब होगा।

(71) (ऐ नबी!) कह दीजिएः क्या हम अल्लाह के सिवा उनको पुकारें जो हमें न नफ़ा दे सकते और न नुक़्सान पहुँचा सकते हैं? और जब अल्लाह हमें सीधा रास्ता दिखा चुका है तो क्या उसके बाद हम उलटे पाँव फ़िर जाएं? उस शख़्स की तरह जिसे शैतान ने ज़मीन में बहका दिया हो, वह ज़मीन में हैरान फिरता हो, उसके कुछ साथी हों जो उसे सीधी राह की तरफ बुलाते हों कि हमारे पास आ जा। कह दीजिएः बेशक हिदायत तो अल्लाह ही की हिदायत है, और हमें हुक्म दिया गया है कि हम सब जहाँनों के रब के फ़रमाबरदार हो जाएं।

(72) और यह कि नमाज़ क़ायम करो, और उस (अल्लाह) से डरो, और वही है

जिसकी तरफ तुम इकट्ठा किये जाओगे।

(73) और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया। और जिस दिन वह कहेगाः "हो जा" तो (हश्र बरपा) हो जाएगा, बात उसकी हक़ है, और जिस दिन सूर फूंका जाएगा उस दिन उसकी हुकूमत होगी, वह छुपी और ज़ाहिर (सब) बातों को जानने वाला है और वही हिकमत वाला, खबर रखने वाला है।

(74) और जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहाः क्या तुम बुतों को मअ़बूद ठहराते हो? बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पड़े देखता हूँ।

(75) और इसी तरह हम इब्राहीम को आसमानों और जमीन में बादशाही दिखाते थे ताकि वह यकीन करने वालों में से हो जाए।

(76) इसलिए जब उस पर रात छा गई तो उसने एक सितारा देखा। इब्राहीम ने कहाः यह मेरा रब है, फ़िर जब वह ग़ुरूब हो गया तो कहाः मैं ग़ुरूब होने वालों से मुहब्बत नहीं करता।

(77) फ़िर जब उसने चाँद चमकता हुआ देखा तो कहाः यह मेरा रब है। फ़िर जब वह ग़ुरूब हो गया तो उसने कहाः अगर मेरे रब ने मुझे हिदायत (मार्ग-दर्शन) न दी तो यक़ीनन मैं गुमराह कौम में से हो जाऊँगा।

(78) फ़िर जब उसने सूरज को जगमगाता हुआ देखा तो कहाः यह मेरा रब है, यह सबसे बड़ा है, फ़िर जब वह भी ग़ुरूब हो गया तो उसने कहाः ऐ मेरी कौम! बैशक जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो, मैं उनसे बेज़ार हूँ।

(79) बेशक मैंने अपना चेहरा उस ज़ात की तरफ कर लिया है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया, मैं उसी (अल्लाह) का परस्तार हूँ और मुश्रिकों में से नहीं हूँ।

(80) और उसकी क़ौम ने उससे झगड़ा किया तो उस (इब्राहीम) ने कहाः क्या तुम मुझसे अल्लाह के बारे में झगड़ा करते हो, हालांकि उसी ने मुझे हिदायत दी है, और मैं उनसे नहीं डरता जिन्हें तुम उसका शरीक ठहराते हो। हाँ, अगर मेरा रब कुछ चाहें (तो वह जरूर हो सकता है), मेरे रब का इल्म हर चीज़ पर छाया हुआ है, क्या फ़िर तुम नसीहत (उपदेश) हासिल नहीं करते?

(81) और मैं उनसे क्यों डरूँ जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो, जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुम उनको अल्लाह के शरीक ठहराते हो जिनकी उसने तुम पर कोई दलील नाजिल की? पस दोनों फिरकों में से कौन अमन का ज्यादा हकदार है? (बताए) अगर तुम जानते हो?

(82) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने

अपने ईमान को ज़ुल्म (शिर्क) के साथ खलत मलत नहीं किया, वही लोग हैं जिनके लिए अमन है, और वही हैं जो सही रास्ते पर पहुँच चुके हैं।

(83) और यह है हमारी दलील जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में दी थी। हम जिसे चाहें उसके दर्जे बुलंद करते हैं। बेशक आपका रब बहुत हिकमत वाला, खूब जानने वाला है।

(84) और हमने उस (इब्राहीम) को इस्हाक़ और याक़ूब अता किये, हमने सबको हिदायत (मार्ग-दर्शन) दी, और उससे पहले हमने नूह को हिदायत दी थी, और उसकी औलाद में से दाऊद, सुलेमान, अय्यूब, यूसुफ, मूसा और हारून को (भी हिदायत दी) और इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला देते हैं।

(85) और (हमने) ज़करिया, यह्या, ईसा और इल्यास को (भी हिदायत दी), वह सब नेक लोगों में से थे।

(86) और (हमने) इस्माईल, यसअ, यूनुस और लूत को (भी हिदायत दी), और उन सबको हमने जहाँनों पर फज़ीलत दी।

(87) और कुछ को उनके बाप दादा, उनकी औलाद और उनके भाइयों में से और हमने उन्हें चुन लिया और सीधी राह की तरफ हिदायत दी।

(88) यह अल्लाह की हिदायत है, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसकी तरफ रहनुमाई करता है। और अगर वह लोग शिर्क करते तो जो वह अमल करते थे बरबाद हो जाते।

(89) यह वह लोग हैं जिन्हें हमने किताब, हिकमत और नबुव्वत दी थी। अब अगर यह लोग इस (हिदायत को मानने) से इन्कार करते हैं तो बेशक हमने उसके लिए ऐसी क़ौम तैयार की है कि वह उनका इन्कार करने वाली नहीं।

(90) यह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, लिहाज़ा (ऐ नबी!) आप भी उनके तरीक़े की पैरवी करें। कह दीजिएः मैं इस पर तुमसे कोई उज्र नहीं मांगता, यह तो तमाम दुनिया वालों के लिए नसीहत (उपदेश) है।

(91) और उन्होंने अल्लाह की क़दर नहीं की जिस तरह उसकी क़दर करने का हक़ है, जिस वक़्त उन्होंने कहाः अल्लाह ने किसी बशर पर कोई चीज़ नाज़िल नहीं की, कह दीजिएः फ़िर वह किताब किसने नाज़िल की थी जिसे मूसा लाए थे? जो तमाम इंसानों के लिए रोशनी और हिदायत थी, जिसे तुम अलग अलग क़ागज़ों में नक़्ल करते हो। उसमें से कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और बहुत कुछ छुपा लेते हो। और (इस किताब के ज़रिये से) तुम्हें वह इल्म दिया गया था जो न तुम्हें हासिल था और न तुम्हारे बाप दादा

को। कह दीजिएः वह अल्लाह ने (नाज़िल की थी), फ़िर उन्हें (उनके हाल पर) छोड़ दीजिएः वह अपनी बेकार बहसों में खेलते रहें।

(92) और यह किताब (कुरआन मजीद) हमने नाज़िल किया है, यह बरकत वाली, तस्दीक़ करने वाली है उस किताब की जो इससे पहले आई थी ताकि आप उम्मुल कुरआ (मक्का) और उसके आस पास वालों को डरायें। और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं वह इस (कुरआन) पर भी ईमान रखते हैं, और वह अपनी नमाज़ की हिफाज़त करते हैं।

(93) और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या कहे कि मुझ पर वह्यी नाज़िल की गई है, हालांकि उस पर कोई वह्यी नाज़िल नहीं की गई, और जिसने कहा कि मैं भी ऐसी चीज़ नाज़िल कर सकता हूँ जैसी अल्लाह ने नाज़िल की है। काश! आप ज़ालिमों को देखें जब वह मौत की सख़्तियों में गिरफ्तार होते हैं, और फरिश्ते (यह कहते हुए) अपने हाथ फैलाए हुए होते हैं कि निकालो अपनी जानें! आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब दिया जाएगा क्योंकि तुम अल्लाह पर नाहक़ बातें गढ़ते और उसकी आयतों का इन्कार करते थे।

(94) और यक़ीनन तुम हमारे पास अकेले आए हो जिस तरह कि हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया और हमने तुम्हें जो कुछ अता किया था वह तुम अपने पीछे छोड़ आए हो, और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे वह सिफारशी नहीं देख रहे है जिनकी बाबत तुम्हारा दावा था कि बेशक वह तुम्हारी बन्दगी में अल्लाह के शरीक हैं, उनसे तुम्हारा तअल्लुक़ यक़ीनन टूट गया है और वह तुमसे खो गए हैं जिन्हें तुम अपने मअ़बूद समझते थे।

(95) बेशक अल्लाह ही दाने और गुठली को फाड़ने वाला हैं, वह ज़िन्दा को मुर्दा से और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है। यह है अल्लाह, इसलिए तुम कहाँ बहकाऐ जाते हो!

(96) वह सुबह की सफेदी निकालता है, और उसने रात को सुकून की वजह बनाया, और सूरज और चाँद को वक़्त के हिसाब का ज़रिया (बनाया), ये सब बहुत ज़बरदस्त, खूब इल्म वाले का अन्दाजा है।

(97) और वही है जिसने तुम्हारे लिए सितारे बनाऐ ताकि तुम इनके ज़रिये से खुश्की और तरी के अन्धेरों में राह पाओ, बेशक हमने अपनी आयतें अहले इल्म के लिए खोलकर बयान कर दी है।

(98) और वही है जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया, इसलिए हर एक के लिए एक ठहरने की जगह है और एक सुपुर्द किये जाने

की, हमने अपनी आयतें उन लोगों के लिए खोलकर बयान कर दी हैं जो समझ रखते है।

(99) और वही है जिसने आसमानों से पानी नाज़िल किया, फ़िर हमने उसके ज़रिये से हर किस्म के पेड़ पोधे पैदा किये, फ़िर हमने हरी भरी खेंतियाँ उगाईं जिससे हम एक दूसरे से जुड़े हुए दाने निकालते है और खजूर के शगुफ़े से फल के गुच्छे पैदा किये जो बोझ से झुके जाते है और अंगूर, जैतून और अनार के बाग लगाए जिनके फल एक दूसरे से मिलते जुलते है मगर हर एक की खुसूसियात जुदा जुदा है। ये दरख्त जब फल देने लगते है तो उनके फल देने और उनके पकने की हालत को देखकर ग़ौर करो, बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ है जो ईमान लाते हैं।

(100) और (इस पर भी) लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का शरीक ठहरा दिया, हालांकि उसी ने तो उन्हें पैदा किया है और उन्होंने बग़ेर किसी इल्म के अल्लाह के बेटे और बेटियाँ गढ़ लिए, वह पाक है और इन बातों से बुलन्द है जो वह बयान करते है।

(101) वही आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, उसकी औलाद कैसे हो सकती है जबकि उसकी कोई बीवी नहीं? और उसी ने हर चीज़ को पैदा किया और वही हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

(102) यह है अल्लाह, तुम्हारा रब, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वही हर चीज़ को पैदा करने वाला है, लिहाजा तुम उसी की इबादत करों, और वह हर चीज़ पर निगराँ है।

(103) उस (की हक़ीक़त) को निगाहें नहीं पा सकतीं, और वह निगाहों को पा लेता है, और वह निहायत बारीकबीन, बहुत बाख़बर है।

(104) तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से वाज़ेह दलीले आ चुकीं है, इसलिए जिसने सूझ बूझ से काम लिया तो उसके अपने फायदे के लिए है और जो अन्धा बना रहा उसका वबाल उसी पर है। और (कह दीजिए) में तुम पर मुहाफिज नहीं हुआ।

(105) और हम आयतों को इसी तरह फ़ेर फ़ेर कर बयान करते है ताकि काफिर यह कहें कि तूने (किसी से) पढ़ लिया है और जो लोग इल्म रखते हैं, उन पर हम इस (हक़ीक़त) को वाज़ेह कर दें।

(106) (ऐ नबी!) आप उस वह्यी की पैरवी करें जो आप पर आपके रब की तरफ से (नाज़िल) की जाती हैं। उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुश्रिकीन की तरफ ध्यान न दें।

(107) और अगर अल्लाह चाहता तो वह

शिर्क न करते और हमने न आपको उनकी हिफाज़त पर मुक़र्रर किया है, और आप उनके ज़िम्मेदार नहीं।

(108) और मुश्रिकीन अल्लाह को छोड़कर जिन्हें पुकारते हैं, तुम उन्हें गाली मत दो फ़िर वह भी जहालत में हद से गुज़रते हुए अल्लाह को गाली देंगे। इसी तरह हमने हर उम्मत के लिए उनके अमल को सुहावना बना दिया है, फ़िर उन्हें अपने रब की तरफ लौट कर जाना है, फ़िर वह उन्हें बताएगा कि वह क्या कुछ करते रहते थें।

(109) और उन्होंने अल्लाह के नाम की पुख़्ता कसमें खाईं कि अगर उनके पास (मख़्सूस) निशानी आ जाए तो वह इस पर ज़रूर ईमान ले आयेंगे, (ऐ नबी!) कह दीजिएः निशानियाँ तो सिर्फ अल्लाह के पास है, और तुम्हें यह बात कौन समझाऐ कि बेशक जब निशानी आ जायेगी तो भी वह ईमान नहीं लायेंगे।

(110) और हम (इसी तरह) उनके दिलों और निगाहों को फ़ेर देते है जिस तरह यह पहली बार इस (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाए थे और हम उन्हें उनकी सरकशी में भटकने के लिए छोड़ देंगे।

(111) और अगर बेशक हम उनकी तरफ फरिश्ते नाज़िल करते और उनसे मुरदे कलाम करते और हम (उनकी मांगी हुई) हर चीज़ इनके सामने पेश कर देते तो भी वह ईमान न लाते। हाँ अगर अल्लाह ऐसा चाहता तो और बात थीं लेकिन उनमें से अक्सर जहालत की बातें करते हैं।

(112) और इसी तरह हमने इंसानों और जिन्नों में से शयात़ीन हर नबी के दुश्मन बनाए, उनमें से हर एक दूसरे के कान में चिकनी चुपड़ी बातें डालता रहता है ताकि उसे धोखे में रखे, और (ऐ नबी!) अगर आपका रब चाहता तो वह यह काम न करते, इसलिए आप उन लोगों का और जो कुछ यह झूठ गढ़ रहे हैं, इसको रहने दीजिए।

(113) और ताकि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते उनके दिल इस झूठ की तरफ माईल (प्रभावित) हो जाएं और वह उस (झूठ) को पंसद करते रहें और वह जो (बुरे काम) कर रहे हैं वह करते रहें।

(114) (कह दीजिएः) क्या फ़िर मैं अल्लाह के सिवा कोई और हाकिम तलाश करूं? हालांकि वही है जिसने तुम्हारी तरफ यह किताब तफ्सील से नाज़िल की और जिन लोगों को हमने किताब दी वह जानते हैं कि बेशक वह आपके रब की तरफ से हक़ के साथ नाज़िल की गई है, लिहाज़ा आप हरगिज़ शक करने वालों में (शामिल) न हों।

(115) और आपके रब की बात सच्चाई और इंसाफ में मुकम्मिल है, उसकी बातों का

तब्दील करने वाला कोई नहीं और वह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(116) और अगर आप अहले ज़मीन की अक्सीरियत की इताअत करें तो वह आपको अल्लाह की राह से बहका देंगे, वह अपने गुमान के सिवा किसी बात की पैरवी नहीं करते, और वह अटकल पच्चू बातें ही करते हैं।

(117) बेशक आपका रब उस शख़्स को खूब जानता है जो उसकी राह से बहकता है और वह हिदायत याफ़्ता लोगों को भी खूब जानता है।

(118) इसलिए तुम उस (जानवर) का गोश्त खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान लाने वाले हो।

(119) और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उस (हलाल जानवर) का गोश्त न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो? हालांकि अल्लाह ने उन (सब जानवरों) के बारे में तफ़्सील से बता दिया है जो उसने तुम पर हराम किये हैं मगर जिसे तुम खाने पर मजबूर हो जाओ (तो वह भी हलाल हैं) और बेशक अक्सर लोग अपनी ख़्वाहिशात से बग़ैर इल्म के दूसरों को बहकाते हैं। बेशक आपका रब हद से गुज़रने वालों को खूब जानता है।

(120) और तुम खुले और छुपे गुनाह छोड़ दो, बेशक जो लोग गुनाह करते हैं उनको उन (आमालों) की जल्दी सज़ा मिलेगी जो वह करते रहे हैं।

(121) और तुम उस (जानवर) का गोश्त मत खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो क्योंकि यह (खाना) यक़ीनन नाफरमानी है और बेशक शैतान अपने दोस्तों के दिलों में शुब्हे डालते हैं ताकि वह तुमसे झगड़ा करें और अगर तुमने उनकी इताअत की तो बिलाशुब्ह तुम भी ज़रूर मुश्रिक हो गए।

(122) क्या ऐसा शख़्स जो मुर्दा था फ़िर हमने उसे ज़िन्दा किया और हमने उसके लिए नूर बना दिया, वह उसकी रोशनी में लोगों में चलता है, (क्या) वह उस शख़्स जैसा (हो सकता) है जिसका हाल यह है कि वह अन्धेरों में पड़ा है, उनसे निकलने वाला नहीं? इसी तरह काफिरों के लिए उन कामों को सुहावना बना दिया है जो वह करते हैं।

(123) और इसी तरह हमने हर बस्ती में उसके बड़े बड़े मुजरिमों को लगा दिया कि वह उस (बस्ती) में अपनी साज़िशों का जाल फेलाऐं और वह अपने आप ही से साज़िश करते हैं, और वह समझ नहीं रखते।

(124) और जब उनके पास निशानी आती है तो वह कहते हैं: हम हरगिज़ ईमान नहीं

लाएंगे यहाँ तक कि ऐसी ही चीज़ खुद हमें दी जाए जैसी रसूलों को दी गई। अल्लाह ज़्यादा बेहतर जानता है कि अपनी रिसालत का काम किसको सोपें। जिन लोगों ने जुर्म किये उन्हें जल्द ही अल्लाह के यहाँ ज़िल्लत मिलेगी और उस साज़िश की वजह से शदीद अज़ाब होगा जो वह करते रहे।

(125) इसलिए अल्लाह जिसे हिदायत (मार्ग-दर्शन) देना चाहता है तो उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है और जिसे गुमराह करना चाहता है तो उसका सीना बहुत तंग कर देता है जैसे वह आसमान में चढ़ रहा हो, इसी तरह अल्लाह उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है जो ईमान नहीं लाते।

(126) और यह आपके रब का सीधा रास्ता है, हमने उन लोगों के लिए आयतें खोल कर बयान कर दी हैं जो नसीहत (उपदेश) हासिल करते हैं।

(127) उन्ही के लिए उनके रब के यहाँ सलामती का घर है, और वह उन कामों की वजह से उनका दोस्त है जो वह करते रहे।

(128) और जिस दिन वह उन सबको इकट्ठा करेगा (तो फरमाएगाः) ऐ जिन्नों के गिरोह! तुमने इंसानों में से बहुत ज़्यादा गुमराह किये थे, और इंसानों में से उनके दोस्त कहेंगेः ऐ हमारे रब! हमने एक दूसरे से फायदा उठाया, और हम उस मियाद को पहुँचे जो तूने हमारे लिए मुक़र्रर फरमाई थी, अल्लाह फरमाएगाः आग ही तुम्हारा ठिकाना है, तुम उसमें हमेशा रहोगे, हाँ अगर अल्लाह चाहे (तो दूसरी बात है,) बेशक आपका रब बड़ा हिकमत वाला, खूब जानने वाला है।

(129) और इसी तरह हम बअज़ ज़ालिमों को बअज़ पर उन कामों की वजह से मुसल्लत कर देते हैं जो वह करते रहे।

(130) ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे? वह तुमसे मेरी आयतें बयान करते थे और तुम्हें तुम्हारी इस आज के दिन की मुलाक़ात से डराते थे। (तब) वह कहेंगेः हम अपने आप पर गवाही देते हैं और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा और वह अपने आप पर गवाही देंगे कि बेशक वह कुफ़्र करने वाले थे।

(131) यह (रसूल) इसलिए (भेज गए) कि आपका रब बस्तियों को उनके ज़ुल्म की वजह से हलाक करने वाला नहीं जबकि उनके बाशिन्दे ग़ाफिल हों।

(132) और हर एक के लिए उनके आमाल की वजह से दर्जे हैं जो उन्होंने किये और आपका रब इससे ग़ाफिल नहीं जो वह करते हैं।

(133) और आपका रब बेनियाज है रहमत वाला, अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और

तुम्हारे बाद जिन्हें चाहे जाँनशीन बना दे जैसे उसने तुम्हें दूसरी क़ौम की नस्ल से पैदा किया।

(134) बेशक जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है, वह ज़रूर आने वाली है और तुम आजिज़ करने वाले नहीं।

(135) (ऐ नबी!) कह दीजिएः ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह अमल करो, बेशक मैं भी (अपनी जगह) अमल करने वाला हूँ, इसलिए जल्दी ही तुम जान लोगे कि किस शख़्स के लिए आख़िरत का (अच्छा) अन्जाम है और बेशक ज़ालिम फलाह नहीं पाएँगे।

(136) और उन्होंने उसमें से अल्लाह के लिए एक हिस्सा ठहराया जो उसने खेती और चौपायों की शक्ल में पैदा किया, फ़िर अपने ख्याल के मुताबिक़ कहने लगेः यह (हिस्सा) अल्लाह के लिए है और यह हमारे देवताओं के लिए है, इसलिए उनके देवताओं का जो हिस्सा है वह तो अल्लाह के पास नहीं पहुँचता और जो अल्लाह का हिस्सा है वह उनके देवताओं को पास पहुँच जाता है, किस क़दर बुरा है जो वह फैसला करते हैं।

(137) और इसी तरह बहुत से मुश्रिकों के लिए उनके देवताओं ने उनकी औलाद का क़त्ल पसंदिदा बना रखा है ताकि वह उन्हें हलाक कर दें और उनके लिए उनका दीन मश्कूक (संदिग्ध) बना दें और अगर अल्लाह चाहता तो वह यह काम न करते, इसलिए उन्हें और उनके झूठ को (उनके हाल पर) छोड़ दीजिए जो वह गढ़ते हैं।

(138) और अपने (झूठे) ख्याल के मुताबिक़ उन्होंने कहाः यह चौपाए और खेती मना हैं, उन्हें बस वही खा सकता है जिसे हम चाहें और कुछ चौपाए हैं जिनकी पुश्त (पर सवारी) हराम कर दी गई और बअज़ चौपाए हैं जिन पर वह अल्लाह का नाम नहीं पढ़ते, यह सब वह अल्लाह पर झूठ गढ़ते हुए करते हैं, वह जल्द ही उन्हें उस झूठ की सज़ा देगा जो वह गढ़ते रहे हैं।

(139) और उन्होंने कहाः उन (हराम किये हुए) चौपायों के पेट में जो बच्चा हो वह खालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों पर हराम है और अगर वह मुर्दा हो तो मर्द और औरतें सब उसमें शरीक हैं। जल्दी ही अल्लाह उन्हें इस तरह (खुद ही हलाल और हराम) तै करने की सज़ा देगा, बेशक वह बड़ा हिकमत वाला, खूब जानने वाला है।

(140) बेशक वह लोग ख़सारे में रहे जिन्होनें अपनी औलाद को इल्म के बग़ैर बेवकूफी से क़त्ल किया और अल्लाह ने उन्हें जो रिज़्क़ दिया अल्लाह पर झूठ बान्ध कर हराम ठहरा लिया, बेशक वह गुमराह हो गए और वह हिदायत याफ्ता न हुए।

(141) और वही है जिसने बाग़ात पैदा किये छतरियों पर चढ़ाये हुए और बग़ेर चढ़ाये हुए और खजूर और फसलें (पैदा कीं) उनके फल (मज़े में) मुख़्तलिफ हैं और ज़ैतून और अनार (पैदा किये), मिलते जुलते भी और न मिलते जुलते भी, उनका फल खाओ जब वह फल लाएँ और उनकी कटाई चुनाई के दिन उस (अल्लाह) का हक़ दे दिया करो और फुज़ूल खर्ची न करो बेशक अल्लाह फुज़ूल खर्ची करने वालों को पंसद नहीं करता।

(142) और (पैदा किये) उसने चौपायों में से बोझ उठाने वाले और ज़मीन से लगे (पस्त क़द), अल्लाह ने तुम्हें जो रिज़्क़ दिया है उसमें से खाओ और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो। बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

(143) यह आठ क़िस्में (पैदा की) हैं वह भेड़ में से दो और दो बकरी में से, (ऐ नबी!) कह दीजिए: क्या उस (अल्लाह) ने दोनों के नर हराम किये हैं या दोनों की मादाऐं या वह बच्चे जो दोनों माओं के पेट में हों? (ठीक ठीक) इल्म के साथ मुझे बताओ अगर तुम सच्चे हो।

(144) और दो ऊँट में और दो गाय में से। कह दीजिएः क्या अल्लाह ने दोनों के नर हराम किये हैं या दोनों की मादाऐं या वह बच्चे जो दोनों माओं के पेट में हों? क्या तुम उस वक़्त हाज़िर थे जब अल्लाह ने तुम्हें यह ताकिदी हुक्म दिया था? फ़िर उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जिसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा ताकि वह बग़ेर इल्म के लोगों को गुमराह करे? बेशक अल्लाह (ऐसे) ज़ालिम लोगों को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता।

(145) (ऐ नबी!) कह दीजिए: मेरी तरफ वह्यी की गई है मैं उसमें कोई चीज़ ऐसी नहीं पाता जो किसी खाने वाले पर, जो उसे खाये, हराम हो मगर यह कि वह मुर्दार हो या बहाया हुआ खून हो या सूअर का गौश्त क्योंकि वह नापाक है, या वह फिस्क़ हो कि (ज़िब्ह करते वक़्त) उस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो, फ़िर जो शख़्स मजबूर हो जाए, (बशर्ते कि) वह सरकशी करने वाला और हद से गुज़रने वाला न हो, तो बेशक आपका रब बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(146) और जो लोग यहूदी हुए उन पर हमने हर नाखून वाला (जानवर) हराम किया था और गाय और बकरी में से उन पर उनकी चर्बी हराम की थी, सिवाए उस चर्बी के जो उनकी पीठों या आँतों के साथ लगी हो या हड्डी के साथ मिली हुई हो, यह सज़ा हमने उन्हें उनकी सरकशी के वजह से दी थी और बेशक हम सच्चे हैं।

(147) फ़िर अगर वह आपको झुठलायें तो कह दीजिएः तुम्हारा रब वसीअ (विशाल) रहमत वाला है, और उसका अज़ाब मुजरिम क़ौम से टाला नहीं जाता।

(148) जिन लोगों ने शिर्क किया वह जल्द ही कहेंगेः अगर अल्लाह चाहता तो हम और हमारे बाप दादा शिर्क न करते और न हम कोई चीज़ हराम करते। इसी तरह उन लोगों ने (हक़ को) झुठलाया था जो उनसे पहले थे यहाँ तक कि उन्होंने हमारा अज़ाब चख लिया। कह दीजिएः क्या तुम्हारे पास कुछ इल्म है, तो उसे हमारे सामने पेश करो? तुम तो गुमान ही की पैरवी करते हो और तुम अटकल पच्चू ही से काम लेते हो।

(149) कह दीजिएः फ़िर मज़बूत दलील तो अल्लाह ही की है, लिहाज़ा अगर वह चाहता तो तुम सबको हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता।

(150) कह दीजिएः तुम अपना गवाह ले आओ जो इस बात की गवाही दें कि बेशक अल्लाह ने उन (चीज़ों) को हराम किया है, फ़िर अगर वह गवाही दें तो भी आप उनके साथ गवाही न दें और आप उन लोगों की ख़्वाहिशात के पीछे न चलें जिन्होंने हमारी आयतें झुठलाईं और (न) उन लोगों की (पैरवी करें) जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और वह दूसरों को अपने रब के बराबर ठहराते हैं।

(151) कह दीजिएः आओ मैं पढ़ कर सुनाता हूँ जो कुछ तुम्हारे रब ने तुम पर हराम किया है यह कि तुम उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराओ और माँ बाप के साथ नेकी करो और अपनी औलाद को तंगदस्ती के डर से क़त्ल न करो, हम तुम्हें भी और उन्हें भी रिज़्क़ देते हैं और बेहयाई के कामों के क़रीब न जाओ ख़्वाह वह ज़ाहिर हों या छुपे हुए हों और किसी ऐसी जान को क़त्ल मत करो जिसे अल्लाह ने हराम किया हो सिवाए उसके जिसका क़त्ल बरहक़ हो, इन सारी बातों की अल्लाह ने तुम्हें ताकीद की है ताकि तुम अक़्ल से काम लो।

(152) और तुम यतीम के माल के क़रीब न जाओ मगर उस तरीक़े से जो सबसे अच्छा हो यहाँ तक कि वह पुख़्तगी की उम्र को पहुँच जाए और तुम नाप तौल को इंसाफ के साथ पूरा दो, हम किसी जान को उसकी ताक़त से बड़ कर तकलीफ नहीं देते और जब तुम कोई बात कहो तो इंसाफ से काम लो अगरचे (मामला तुम्हारे) क़रीबी रिश्तेदार (का) हो और तुम अल्लाह का अहद पूरा करो, इन सारी बातों की अल्लाह ने तुम्हें ताकीद की है ताकि तुम नसीहत (उपदेश) हासिल करो।

(153) और यक़ीनन यह मेरा रास्ता सीध

ा है लिहाज़ा तुम उसकी पैरवी करो और तुम दूसरे रास्तों की पैरवी मत करो, वह तुम्हें अल्लाह के रास्ते से अलग कर देंगे। अल्लाह ने तुम्हें उसकी ताकीद की है ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो।

(154) फ़िर हमने मूसा को इसलिए किताब दी कि जो शख़्स अच्छे काम करे उस पर हमारी नेअमतें पूरी हों और हर चीज़ की तफ़्सील बयान करने के लिए और यह हिदायत (मार्ग-दर्शन) और रहमत का ज़रिया है ताकि वह अपने रब से मुलाक़ात पर ईमान ले आयें।

(155) और यह (कुरआन) एक अज़ीम किताब है, हमने उसे नाज़िल किया है, (यह) बरकत वाली है, पस तुम उसकी पैरवी करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

(156) ताकि तुम (यह न) कहो कि सिर्फ हमसे पहले दो गिरोहों (यहूद व नसारा) पर किताब नाज़िल की गई थी और बेशक हम तो उनके पढ़ने पढ़ाने से बेखबर थे।

(157) या तुम (यह न) कहो कि अगर बेशक हम पर किताब नाजिल की जाती तो हम जरूर उनसे ज्यादा हिदायत हासिल करते, इसलिए तुम्हारें पास रब की तरफ से एक वाजेह किताब और हिदायत और रहमत आ गई है, फ़िर उस शख़्स से ज्यादा ज़ालिम कौन है जिसने अल्लाह की आयतों को झुठलाया और उनसें मुँह मोड़ा? जो लोग हमारी आयतों से मुँह मोड़ते है उन्हें जल्द हम सख़्त अज़ाब की शक्ल में सज़ा देंगे, इसके लिए कि वह हक से मुँह मोड़ते हैं।

(158) क्या वह सिर्फ इस बात का इन्तिज़ार कर रहे है कि उनके पास फरिश्तें आएं या आपका रब आए या आपके रब की कुछ निशानियाँ आएं? जिस दिन आप के रब की कुछ निशानियाँ आ जाएंगी तो किसी ऐसे शख़्स का ईमान लाना उसे फायदा नहीं देगा जो उससे पहले ईमान नहीं लाया था या उसने अपने ईमान में कोई नेक अमल नही किया था। कह दीजिए: तुम इन्तिज़ार करो, बेशक हम भी इन्तिज़ार करने वाले है।

(159) बेशक जिन लोगों ने अपने दीन में फूट डाली और वह गिरोह में बट गए आपका उनसे कोई तअल्लुक़ नहीं, बेशक उनका मामला अल्लाह के हाथ में है फ़िर वह उन्हें इन कामों से आगाह करेगा जो वह करते रहे थे।

(160) जो शख़्स (वहाँ) एक नेकी लेकर आएगा तो उसके लिए दस गुना (सवाब) होगा और जो शख़्स एक बुराई लेकर आएगा तो उसे बस इसके बराबर ही सज़ा दी जायेगी और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा।

(161) (ऐ नबी!) कह दीजिए: बेशक मुझे

मेरे रब ने सीधे रास्ते की तरफ हिदायत दी है सही मजबूत दीन की, एक रब के परिस्तार इब्राहीम के तरीके़ की और वह मुश्रिकों में से नहीं था।

(162) कह दीजिएः बेशक मेरी नमाज, मेरी कु़रबानी, मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत, (सब कुछ) अल्लाह रब्बुल आलमीन ही के लिए है।

(163) उसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसी (बात यानी तौहीद) का हुक्म दिया गया है और सबसे पहला मुसलमान हुआ।

(164) कह दीजिएः क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब तलाश करूं? जबकि वही हर चीज़ का रब है और कोई शख्स ऐसा (गुनाह) नहीं कमाता जिसका वबाल उसी पर न हो और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा फि़र अपने रब ही की तरफ तुम्हें लौटना है। इसलिए वह तुम्हें उन बातों से आगाह करेगा जिनमें तुम इख्तिलाफ करते रहे थे।

(165) और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में एक दूसरे का जाँनशीन बनाया और तुम में से कुछ को कुछ पर ऊँचे दर्जे अता किये ताकि वह तुम्हें उन नेअमतों में आजमाए जो उसने तुम्हें दीं। बेशक आप का रब जल्द सज़ा देने वाला है और बेशक वह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करते वाला है।

सूरह आराफ़-7

(यह मक्की सूरत है इसमें 206 आयतें और 24 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलीफ लाम मीम स्वाद।

(2) (ऐ नबी!) यह किताब आपकी तरफ नाज़िल की गई है, इससे आपके सीने में किसी कि़स्म की तंगी नहीं होनी चाहिए ताकि आप इसके ज़रिये से (लोगों को) डराऐं और यह मोमिनों के लिए नसीहत (उपदेश) है।

(3) तुम उस (हिदायत) की पैरवी करो जो तुम्हारें रब की तरफ से तुम्हारी तरफ नाज़िल की गई है और तुम उसके अलावा (और) दोस्तों की पैरवी न करों, तुम बहुत ही कम नसीहत हासिल करते हो।

(4) और बहुत सी बस्तियाँ ऐसी है की हमने उन्हें हलाक कर दिया, तो उनके पास हमारा अज़ाब उस वक्त आया जब वह रात को सोऐ हुए थे या वह दोपहर को आराम करे रहे थे।

(5) फि़र जब उनके पास हमारा अज़ाब आ गया तो उनकी पुकार बस यही थी कि वह कह उठतेः बेशक हम ही ज़ालिम थे।

(6) इसलिए हम उन लोगों से ज़रूर सवाल करेंगे जिनकी तरफ रसूल भेजे गए थे और

हम रसूलों से भी ज़रूर सवाल करेंगे।

(7) फ़िर हम (सब कुछ) अपने इल्म से उनके सामने ज़रूर बयान करेंगे और हम (दुनिया में) ग़ायब (गैर हाजिर) तो न थे।

(8) और उस दिन (आमाल का) वज़न किया जाना बरहक़ है, फ़िर जिस शख़्स के (नेक आमाल के) वज़न भारी हो गये तो वही लोग फलाह पाने वाले है।

(9) और जिस शख़्स के (नेक आमाल के) वज़न हलके हो गये तो वही लोग है जिन्होंने अपनी जानों को नुक्सान में डाला, इसलिए कि वह हमारी आयात के साथ बेइन्साफी करते थे।

(10) और बिला शुब्हा हमने तुम्हें ज़मीन में क़ुदरत दी और उसमें तुम्हारे लिए गुजर बसर करने के लिए सामान दिए, तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो।

(11) और बिलाशुब्ह हमने तुम्हें पैदा किया फ़िर तुम्हारी सूरतें बनाईं फ़िर हमने फ़रिश्तों से कहाः तुम आदम को सज्दा करो, इसलिए उन्होंने सज्दा किया सिवाए इब्लीस के, वह सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ।

(12) अल्लाह ने कहाः तुझे किस चीज़ ने रोका कि तूने सज्दा न किया, जबकि मैंने तुझे हुक्म दिया था? वह बोलाः मैं उससे बेहतर हूँ, मुझे तूने आग से पैदा किया और उसे तूने मिट्टी से पैदा किया है।

(13) अल्लाह ने कहाः फ़िर तू इस (आसमान) से उतर जा क्योंकि तेरे लायक़ यह नहीं था कि तू उसमें घमंड करता, लिहाज़ा तू निकल जा! बेशक तू ज़लीलों में से है।

(14) उसने कहाः तू मुझे उस दिन तक मुहलत दे दे, जब लोग क़ब्रों से उठाए जाएँगे।

(15) अल्लाह ने कहाः बेशक तू मुहलत दिए गए लोगों में से है।

(16) वह बोलाः पस इस वजह से कि तूने मुझे गुमराह किया, तो मैं उन (लोगों को गुमराह करने) के लिए तेरे सीधे रास्ते पर ज़रूर बैठूंगा।

(17) फ़िर मैं उनके सामने से और उनके पीछे से उनके पास ज़रूर आऊंगा और उनके दायें से और उनके बायें से भी और तू उनकी अक्सीरियत को शुक्रगुज़ार नहीं पायेगा।

(18) अल्लाह ने फरमायाः निकल जा यहाँ से तू हक़ीर और धुत्कारा हुआ है, फ़िर उनमें से जो तेरी पैरवी करेगा तो मैं जहन्नम को तुम सबसे ज़रूर भर दूंगा।

(19) और ऐ आदम! तू और तेरी बीवी जन्नत में रहो, और तुम दोनों जहाँ से चाहो खाओ, और तुम दोनों उस दरख़्त के क़रीब मत जाना वरना तुम दोनों ज़ालिमों में से हो जाओगे।

(20) फ़िर शैतान ने उन दोनों (को बहकाने) के लिए उनके दिल में वस्वसा

डाला ताकि उनके लिए उनकी शर्मगाहें ज़ाहिर कर दे जो उनसे छुपाई गई थी और शैतान ने कहाः तुम्हारे रब ने तुम्हें सिर्फ इसलिए रोका है कि कहीं तुम दोनों फरिश्ते न बन जाओ या कहीं तुम दोनों हमेशा रहने वालों में न हो जाओ।

(21) और उसने उन दोनों के सामने क़सम खाई कि बेशक मैं तुम दोनों के खैरख्वाहों में से हूँ।

(22) इसलिए शैतान ने उन दोनों को ध ोखा दे कर फुसला दिया, फ़िर जब उन दोनों ने उस दरख्त का फल चखा तो उन दोनों की शर्मगाहें उन पर ज़ाहिर हो गई, और वह दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते चिपकाने लगे (ताकि सतर ढांक सकें) और उनके रब ने उनको आवाज़ दीः क्या मैंने तुम्हें उस दरख्त से रोका नहीं था? और मैंने तुम्हें यह (नहीं) कहा था कि शैतान तुम दोनों का खुला दुश्मन है?

(23) उन्होंने कहाः ऐ हमारे रब! हमने अपने आप पर जुल्म किया और अगर तूने हमें न बख्शा और तूने हम पर रहम न फरमाया तो यक़ीनन हम नुक्सान पाने वालों में से हो जाएँगे

(24) अल्लाह ने कहाः तुम उतर जाओ, तुम एक दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हें ज़मीन में ठहरना और एक (मुक़र्ररा) वक़्त तक फायदा उठाना है।

(25) और फरमायाः तुम उसी (ज़मीन) में ज़िन्दा रहोगे और उसी में तुम मरोगे और (क़यामत के दिन) उसी से तुम निकाले जाओगे।

(26) ऐ बनी आदम! बेशक हमने तुम पर ऐसा लिबास नाज़िल किया जो तुम्हारी शर्मगाहें छुपाता है और ज़ीनत की वजह है और परहेज़गारी का लिबास बहुत बेहतर है। यह अल्लाह की निशानियों में से है ताकि लोग नसीहत (उपदेश) हासिल करें।

(27) ऐ बनी आदम! कहीं शैतान तुम्हें फित्ने में न डाल दे जिस तरह उसने तुम्हारे माँ बाप को जन्नत से निकलवाया था जब उसने उन दोनों का लिबास उतारवाया था ताकि उनको उनकी शर्मगाहें दिखा दे, बेशक वह और उसका क़बीला तुम्हें देखता है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते। बेशक हमने शैतानों को उन लोगों के दोस्त बना दिया जो ईमान नहीं लाते।

(28) और जब वह कोई बेहयाई का काम करते हैं तो कहते हैंः हमने अपने बाप दादा को यही करते पाया और अल्लाह ने हमें इसका हुक्म दिया है। (ऐ नबी!) आप कह दीजिएः अल्लाह कभी बेहयाई का हुक्म नहीं देता, क्या तुम अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बातें लगाते हो जो तुम नहीं जानते?

(29) कह दीजिएः मेरे रब ने इंसाफ करने का हुक्म दिया है, और (यह कि) हर नमाज़ के वक़्त अपने मुहँ सीधे (क़िब्ले रूख) कर लो और खालिस उसकी इताअत करते हुए उसको पुकारो जैसे उसने तुम्हें पहले पैदा किया वैसे ही तुम (उसकी तरफ) लौटोगे।

(30) एक फरीक़ को उसने हिदायत दी और दूसरे फरीक़ पर गुमराही साबित हो गई है, यक़ीनन उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को दोस्त बना लिया है और वह ख्याल करते हैं कि बेशक वह हिदायत याफ्ता हैं।

(31) ऐ बनी आदम! तुम हर नमाज़ के वक़्त अपनी ज़ीनत इख्तियार करो और खाओ पीओ और फिजूल खर्ची न करो, बेशक वह फिजूल खर्ची करने वालों को पंसद नहीं करता।

(32) (ऐ नबी!) कह दीजिएः जो ज़ीनत और खाने पीने की पाकीज़ा चीज़ें अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए पैदा की हैं, वह किसने हराम की हैं? कह दीजिएः यह (पाकीज़ा चीज़ें) दुनिया की ज़िन्दगी में उन लोगों के लिए भी हैं जो ईमान लाए, जबकि क़यामत के दिन यह खालिस मोमिनों ही के लिए होंगी, इसी तरह हम आयतों को उन लोगों के लिए खोल कर बयान करते हैं जो इल्म रखते हैं।

(33) कह दीजिएः बेशक मेरे रब ने बेहयाई की बातों को हराम ठहराया है, चाहे वह ज़ाहिर हों या छुपी हुई और गुनाह को और नाहक़ जुल्म को भी और यह (भी हराम है) कि तुम अल्लाह के साथ उस चीज़ को शरीक ठहराओ जिसकी उसने कोई दलील नहीं उतारी और यह (भी हराम है) कि तुम अल्लाह के बारे में वह बातें कहो जो तुम नहीं जानते।

(34) और हर उम्मत के लिए एक वक्त मुक़र्रर है, तो जब उनका मुक़र्रर वक्त आ जाएगा तो वह (उससे) लम्हा भर पीछे होंगे और न आगे होंगे।

(35) ऐ बनी आदम! अगर तुम्हारे पास तुममें से रसूल आएं जो तुम्हारे सामने मेरी आयतें बयान करें तो जिन्होंने परहेज़गारी इख्तियार की और अपनी इस्लाह कर ली, तो उन पर कोई ख़ौफ न होगा और न वह ग़मग़ीन होंगे।

(36) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे घमंड किया वही लोग दोज़खी हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(37) इसलिए उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन है जिसने अल्लाह के बारे में झूठ गढ़ा या उसकी आयतों को झुठलाया? यही लोग हैं जिन का लिखा हुआ इंसाफ उन्हें मिल जायेगा। यहाँ तक कि उनके पास जब हमारे फरिश्ते

पहुँचेगे, जो उनकी रूहें क़ब्ज़ करेंगे, तो वह उनसे कहेंगेः आज वह कहां हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह जवाब देंगेः वह हमसे खो गए और वह अपने खिलाफ गवाही देंगे कि बेशक वह कुफ़्र करने वाले थे।

(38) अल्लाह फरमायेगाः तुम उन उम्मतों के साथ आग में दाख़िल हो जाओ जो जिन्नों और इंसानों में से तुमसे पहले गुज़र चुकी हैं, जब भी एक उम्मत आग में दाख़िल होगी तो वह अपने जैसी दूसरी उम्मत को लअनत मलामत करेगी यहाँ तक कि जब उसमें वह सब इकट्ठे होंगे तो उनकी दूसरी जमाअत उनकी पहली जमाअत के बारे में कहेगीः ऐ हमारे रब! इन लोगों ने हमें गुमराह किया था, लिहाज़ा तू इन्हें आग का दुगना अज़ाब दे। अल्लाह फरमायेगाः (तुममें से) हर एक के लिए दुगना (अज़ाब) है मगर तुम नहीं जानते।

(39) और उनकी पहली जमाअत उनकी दूसरी जमाअत से कहेगीः तुम्हें हम पर कोई फज़ीलत हासिल नहीं, इसलिए तुम उसके बदले में अज़ाब का मज़ा चखो जो कुछ तुम कमाते रहे थे।

(40) बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे घमंड किया, उनके लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाएँगे और न वह जन्नत में दाख़िल होंगे यहाँ तक कि ऊँट सूई के नाके में घुस जाए और हम मुजरिमों को इसी तरह बदला देते हैं।

(41) उनके लिए जहन्नम ही का बिछोना होगा, और उनके ऊपर उसी का औढ़ना होगा और हम ज़ालिमों को इसी तरह बदला देते हैं।

(42) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये तो हम किसी शख़्स को उसकी हिम्मत से ज़्यादा तकलीफ नहीं देते, वही लोग जन्नत वाले हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(43) और उनके दिलों में जो कीना (कपट) होगा वह हम निकाल फेंकेंगे, उनके नीचे नहरें बहती होंगी, और वह कहेंगेः सब तअरीफें अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें यह सीधी राह दिखाई और अगर यह बात न होती कि अल्लाह ने हमें हिदायत दी तो हम हरगिज़ ऐसे न थे कि हिदायत पाते, बिलाशुब्ह हमारे रब के रसूल हक़ ले कर आए थे और उन्हें आवाज़ दी जायेगी कि यह है वह जन्नत जिसके तुम उन आमाल के बदले वारिस बनाये गए हो जो तुम करते थे।

(44) और जन्नत वाले दोज़ख वालों से पुकार कर कहेंगे कि बेशक हमारे रब ने हम से जो वादा किया था वह हमने सच्चा पाया तो क्या तुमने भी वह वादा सच्चा पाया जो तुम्हारे रब ने तुमसे किया था? वह (दोज़खी)

कहेंगेः हाँ। फ़िर एक ऐलान करने वाला उनमें ऐलान करेगा कि ज़ालिमों पर अल्लाह की लअनत है।

(45) वह लोग जो अल्लाह की राह से रोकते थे और उसमें टेढ़ ढूंढते थे और वह आख़िरत का इन्कार करने वाले थे।

(46) और उन दोनों (गिरोहों) के दरम्यान परदा होगा और ''आराफ'' पर कुछ लोग होंगे जो हर एक (जन्नती व दोज़खी) को उनकी खास अलामतों (निशानियों) से पहचानते होंगे और वह जन्नतियों को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, ''आराफ'' वाले (अभी) जन्नत में दाख़िल न हुए होंगे जबकि वह उसकी उम्मीद रखते होंगे।

(47) और जब उनकी आँखें दोज़खियों की तरफ फेरी जाएंगी तो कहेंगेः ऐ हमारे रब! तू हमें ज़ालिम लोगों के साथ न कर।

(48) और ''आराफ'' वाले कुछ ऐसे लोगों को पुकारेंगे जिन्हें वह उनकी खास अलामतों से पहचानते होंगे वह कहेंगे कि तुम्हें तुम्हारे गिरोह ने कोई फायदा नहीं दिया और न उस घमंड ने (फायदा दिया) जो तुम करते थे।

(49) क्या यही वह लोग हैं जिन के बारे में तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह उन पर रहमत नहीं करेगा (उनसे तो कह दिया गया कि) तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ, तुम पर कोई ख़ौफ नहीं और न तुम ग़मग़ीन होगे।

(50) और दोज़ख वाले जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम कुछ पानी हम पर डाल दो या उस रिज़्क़ में से, जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, कुछ हमें अता कर दो जन्नती कहेंगेः बेशक अल्लाह ने यह दोनों चीज़ें काफिरों पर हराम कर दी हैं।

(51) वह लोग जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा, इसलिए आज हम उन्हें उसी तरह भुला देंगे जिस तरह उन्होंने अपनी इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था और जैसे कि वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे।

(52) और हम उनके पास ऐसी किताब लाए हैं जिसे हमने अपने इल्म से तफ्सील के साथ बयान किया है जबकि वह उन लोगों के लिए हिदायत और रहमत है जो ईमान लाते है।

(53) उन लोगों को और किसी बात का इन्तिज़ार नहीं सिर्फ उसके अन्जाम (कयामत) का इन्तिज़ार है जिस दिन उसका अंजाम सामने आएगा तो वह लोग जो इससे पहले उस दिन को भूलें हुए थे कहेंगे कि वाक़ई हमारे रब के रसूल हक़ लेकर आए थे, तो क्या तुम्हारे लिए कोई सिफारिशी है कि वह

हमारे हक़ में सिफारिश करे? या हमें दुनिया में लौटा दिया जाए तो हम उन आमाल से हटकर अमल करेंगे जो हम (पहले) किया करते थे, बेशक उन्होंने अपने आपको खसारे (नुक्सान) में डाला और वह सारी बातें हवा हो गई जो वह गढ़ते रहते थे।

(54) बेशक तुम्हारा रब वह अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया फ़िर वह अर्श पर मुस्तवी हो गया। वह दिन को रात से इस तरह ढापँता है कि वह (रात) जल्दी से उसे (दिन को) आ लेती है और उसने सूरज, चाँद और तारे इस तरह पैदा किये कि वह सब उस (अल्लाह) के हुक्म के पाबन्द कर दिए गए है। आगाह रहो! पैदा करना और हुक्म सादिर करना उसीके लिए रवा है, अल्लाह रब्बुलआलमीन बहुत बारबकत है।

(55) तुम अपने रब को आह व ज़ारी करते हुए और चुपके चुपके पुकारो, बेशक वह हद से गुज़रने वालों को पंसद नहीं करता।

(56) और ज़मीन की इस्लाह के बाद तुम उसमें फसाद न करो और अल्लाह को ख़ौफ से और उम्मीद करते हुए पुकारो, बेशक अल्लाह की रहमत अहसान करने वालों के क़रीब है।

(57) और वही तो है जो अपनी रहमत (बारिश) से पहले खुशखबरी देने वाली हवाऐं भेजता है यहाँ तक कि जब वह (हवाऐं) भारी बादल को उठाती हैं तो हम उन्हें किसी मुर्दा शहर की तरफ हाँक देते हैं, फ़िर हम उनके ज़रिये से पानी नाज़िल करते हैं, फ़िर हम उसके ज़रिये से ज़मीन से हर तरह के फल निकालते हैं, इसी तरह हम मुर्दों को (क़ब्रों से) निकालेंगे ताकि तुम नसीहत (उपदेश) हासिल करो।

(58) और जो सुथरी ज़मीन होती है उसकी पैदावार अपने रब के हुक्म से (खूब) निकलती है और जो खराब होती है उसकी पैदावार नाक़िस (बेकार) ही निकलती है। इसी तरह हम अपनी आयतों को उन लोगों के लिए फ़ेर फ़ेर कर बयान करते हैं जो शुक्र करते हैं।

(59) हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ भेजा, इसलिए उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारे लिए कोई मअ़बूद नहीं, बेशक मैं तुम पर बहुत बड़े दिन का आज़ाब आने से डरता हूँ।

(60) उसकी कौम में से कुछ सरदारों ने कहाः बेशक हम तो तुझे खुली गुमराही में देखते है।

(61) नूह ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! मैं गुमराह नहीं हूँ बल्कि मैं तो सब जहानों के रब की तरफ से रसूल हूँ।

(62) मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहुँचाता

हूँ और तुम्हारी खैर ख्वाही करता हूँ और मैं अल्लाह की तरफ से वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

(63) क्या तुम इस बात पर तअज्जुब करते हो कि तुम्हारें पास तुम्हारे रब की तरफ से एक ऐसे आदमी के ज़रिये से नसीहत आ गयी जो तुम में से है? ताकि वह तुम्हें डराऐ और ताकि तुम डर जाओ और ताकि तुम पर रहम किया जाए।

(64) फ़िर उन्होंने नूह को झुठलाया तो हमने उसे और उन लोगों को जो उसके साथ (ईमान लाने वाले) थे कश्ती में बचा लिया और हमने उन लोगों को डूबो दिया जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, बेशक वह लोग (दिल के) अन्धें थे।

(65) और हमने क़ौमें आद की तरफ उनके भाई हूद को भेजा, उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारे लिए कोई मअ़बूद नहीं, क्या फ़िर तुम डरते नहीं?

(66) उसकी कौ़म में से काफिर चौधरी कहने लगेः बेशक हम तुझे बेवकूफी में पड़ा देखते है और बेशक हम तुझे झूठों में शुमार करते है।

(67) हूद ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! मैं बेवक़ूफ नहीं हूँ बल्कि मैं तो सब जहानों के रब की तरफ से रसूल हूँ।

(68) मैं अपने रब के पैग़ामात तुम्हें पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा खैरख्वाह और अमीन हूँ।

(69) क्या तुम इस बात पर तअज्जुब करते हो कि तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे पास एक ऐसे आदमी के ज़रिये से नसीहत आई है जो तुम्हीं में से है ताकि वह तुम्हें डराऐ और याद करो! जब उसने क़ौमें नूह के बाद तुम्हें ज़मीन में एक दूसरे का जाँनशीन बनाया और तुम्हें डील-डोल में बढ़ोतरी दी, लिहाज़ा तुम अल्लाह की नेअमतें याद करो ताकि तुम फलाह पाओं।

(70) उन्होंने कहाः क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हम एक अकेले अल्लाह की इबादत करें और उन्हें छोड़ दें जिनकी हमारे बाप इबादत करते थे? इसलिए अगर तू सच्चों में से है तो हम पर वह (अज़ाब) ले आ जिससे तू हमें डराता है।

(71) हूद ने कहाः तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर अज़ाब और गज़ब नाज़िल हुआ ही चाहता है, क्या तुम मुझसे उन नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने रख लिए हैं, अल्लाह ने उनकी कोई दलील नहीं फरमाई? इसलिए तुम इन्तिज़ार करो, बेशक मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ।

(72) फ़िर हमने हूद को और उन लोगों को जो उसके हमराह थे, अपनी रहमत के

साथ निजात दी और हमने उन लोगों की जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयात को झुठलाया और वह ईमान लाने वाले न थे?

(73) और हमने (क़ौमे) समूद की तरफ उनके भाई सालेह को भेजा। सालेह ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारे लिए कोई मअ़बूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से वाज़ेह दलील आ गई है, यह अल्लाह की ऊँटनी है जो तुम्हारे लिए ख़ास निशानी है, इसलिए तुम उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में चरती फिरे और उसे बुराई के साथ हाथ भी न लगाना वरना तुम्हें बहुत दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा।

(74) और याद करो! जब उसने तुम्हें क़ौमे आद के बाद एक दूसरे का जाँनशीन बनाया और तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया, तुम उसकी नर्म मिट्टी से महल बनाते हो और पहाड़ से घर तराशते हो, इसलिए तुम अल्लाह की नेअमतें याद करो और ज़मीन में फसादी बन कर मत फिरो।

(75) उसकी क़ौम के बड़े सरदारों ने तकब्बुर (घमंड) किया, कमज़ोर समझे जाने वाले ईमान वालों से कहने लगेः क्या तुम यह बात जानते हो कि वाक़ई सालेह अपने रब की तरफ से भेजा हुआ है? उन्होंने कहाः (हाँ) बिलाशुब्ह हम उस चीज़ पर ईमान लाने वाले है जिसके साथ उसे भेजा गया है।

(76) उन लोगों ने कहा जिन्होंने घमंड कियाः बेशक हम ख़ैर का इन्कार करने वाले है जिस पर तुम ईमान लाए हो।

(77) इसलिए उन्होंने ऊँटनी की टाँगे काट डाली और उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की और कहाः ऐ सालेह! अगर तू रसूलों में से है तो हम पर वह (अजाब) ले आ जिससे तू हमें डराता रहता है।

(78) फ़िर उन्हें भूकंप ने आ लिया, इसलिए वह अपने घरों में (मुरदे) घुटनों के बल गिर पड़े थे।

(79) तब सालेह ने उनसे मुँह फेरा और कहाः ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैंने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचा दिया था और मैंने तुम्हें नसीहत की थी लेकिन तुम नसीहत करने वालों को पसंद नहीं करते।

(80) और लूत को भेजा जब उसने अपनी क़ौम से कहाः क्या तुम ऐसी बेहयाई करते हो जो तुम से पहले दुनिया वालों में से किसी ने भी नहीं की?

(81) बेशक तुम जिन्सी ख़्वाहिश (काम वासना) पूरी करने के लिए औरतों को छोड़कर मर्दों के पास आते हो, बल्कि तुम लोग हद से बढ़ जाने वाले हो।

(82) और उसकी क़ौम का जवाब बस यही था कि उन्होंने कहाः इन्हें अपनी बस्ती

से निकाल दो, बेशक यह लोग बड़े पाक साफ बनते हैं।

(83) फ़िर हमने उसे और उसके घर वालों को निजात दी सिवाऐ उसकी बीवी के, वह पीछे रहने (हलाक होने) वालों में शामिल हो गई।

(84) और हमने उन पर पत्थरों की बारिश बरसाई, इसलिए देख लीजिए मुजरिमों का अंजाम कैसा हुआ?

(85) और हमने अहले मदयन की तरफ उनके भाई शुऐब को भेजा, उसने कहा! ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारे लिए कोई मअबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से वाज़ेह दलील आ गई है, लिहाज़ा तुम नाप और तौल को पूरा करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम कर के मत दो और तुम ज़मीन की इस्लाह के बाद उसमें फसाद न करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम मोमिन हो।

(86) और तुम हर एक रास्ते पर मत बेठो, तुम उस शख़्स को डराते और अल्लाह के रास्ते से रोकते हो जो उस पर ईमान ले आए और तुम उस राह में टेढ़ तलाश करते हो, और याद करो जब तुम थोड़े थे फ़िर उसने तुम्हें ज़्यादा कर दिया और देखो! फसादियों का अंजाम कैसा हुआ था?

(87) और अगर तुममें से कुछ लोग उस हुक्म पर ईमान ले आए हैं जो मुझे दे कर भेजा गया है और कुछ दूसरे ईमान नहीं लाए हैं तो तुम ज़रा सब्र करो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे दरम्यान फैसला कर दे, और वह सबसे बेहतर फैसला करने वाला है।

(88) उसकी क़ौम में से जो सरदार घमंड करते थे, उन्होंने कहाः ऐ शुऐब! हम तुझे और उन लोगों को जो तेरे साथ ईमान लाए हैं, अपनी बस्ती से ज़रूर निकाल देंगे, या तुम हमारे दीन में लौट आओगे। शुऐब ने कहाः क्या (हम तुम्हारे दीन में आ जाए) अगरचे हम (उससे) नफरत करते हैं।

(89) हमने (जैसे) अल्लाह पर झूठ बाँधा अगर हम तुम्हारे दीन में लौट आए, जबकि अल्लाह हमें उसे निजात दे चुका है और हमारे लायक़ नहीं कि हम उसमें लोट आऐं मगर यह कि अल्लाह हमारा रब चाहे। हमारे रब ने हर चीज को (अपने) इल्म से घेर रखा है, हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। (और हम दुआ करते हैं) ऐ हमारे रब! तू हमारे और हमारी क़ौम के दरम्यान हक़ के साथ फैसला कर, और तू बेहतरीन फैसला करने वाला है।

(90) और उसकी क़ौम में से वह सरदार जिन्होंने कुफ़्र किया था, कहने लगेः अगर तुम ने शुऐब की पैरवी की तो बेशक तुम ज़रूर नुक्सान पाने वाले होगे।

(91) फ़िर उन्हें ज़लज़ले ने आ पकड़ा इसलिए वह अपने घरों में ओन्धे पड़े रह गए।

(92) जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया वह (यूं हो गए) जैसे उन घरों में कभी बसे ही न थे, जिन लोगों ने शुऐब को झुठलाया वही नुक्सान पाने वाले थे।

(93) फ़िर शुऐब ने उनसे मुँह फ़ेर कर कहाः ऐ मेरी क़ौम! यक़ीनन मैंने तो अपने रब के पैग़ामात तुम्हें पहुँचा दिए और तुम्हारी खैरख्वाही की, फ़िर मैं काफिर क़ौम पर ग़म क्यों खाऊं?

(94) और जब भी हमने किसी बस्ती में कोई नबी भेजा तो उस बस्ती वालों को तंगी और सख्ती में मुब्तिला किया ताकि वह आजिज़ी इख्तियार करें।

(95) फ़िर हमने (उनकी) बदहाली को खुशहाली में बदल दिया यहाँ तक कि वह खूब फले फूले और कहने लगेः हमारे बाप दादा को भी सख्ती और राहत पेश आई थी, तब हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया और उन्हें खबर तक न हो सकी।

(96) और अगर उन बस्तियों वाले ईमान ले आते और परहेज़गारी इख्तियार करते तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतों के दरवाज़े खोल देते लेकिन उन्होंने (दीने हक़ को) झुठलाया तो हमने उन्हें (उनके बुरे) आमालों की वजह से पकड़ लिया जो वह करते रहे थे।

(97) क्या फ़िर बस्तियों वाले इस (बात) से बेख़ौफ हो गए हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रात को आ जाए और वह सोये हुए हों?

(98) या बस्तियों वाले इस (बात) से बेखौफ हो गए हैं कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आ जाए और वह खेल तमाशे में मसरूफ हों?

(99) क्या वह अल्लाह की तदबीर से बेख़ौफ हो गए हैं? अल्लाह की तदबीर से बेख़ौफ तो वही लोग होते हैं जो नुक्सान पाने वाले हों।

(100) क्या उन लोगों पर वाज़ेह नहीं हुआ जो ज़मीन में (पहले) बसने वालों (की हलाकत) के बाद उसके वारिस हुए कि अगर हम चाहे तो उनके गुनाहों की वजह से उन्हें मुसीबतों में मुब्तिला कर दें और उनके दिलों पर मुहर लगा दें, फ़िर वह (कुछ) न सुन पाएं।

(101) (ऐ नबी!) यह वह बस्तियां हैं जिनकी कुछ खबर हम आपसे बयान करते हैं और यक़ीनन उनके रसूल उनके पास खुली निशानियां ले कर आए, इसलिए जिस चीज़ को वह पहले झुठला चुके थे, उस पर ईमान लाने को तैयार न हुए। अल्लाह इसी तरह काफिरों के दिलों पर मुहर लगा देता है।

(102) और हमने उनमें से अक्सर में अहद (वादे का पास) नहीं पाया और बिलाशुब्ह हमने उनमें से अक्सर को नाफरमान ही पाया।

(103) फ़िर उन (नबियों) के बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास भेजा तो उन्होंने उन (निशानियों) को न माना, फ़िर देखो फसाद करने वालों का अन्जाम क्या हुआ।

(104) और मूसा ने कहाः ऐ फ़िरऔन! बेशक मैं सब जहानों के रब की तरफ से रसूल हूँ।

(105) मुझ पर वाजिब है कि मैं अल्लाह की तरफ से हक़ के सिवा कुछ न कहूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से वाज़ेह दलील लाया हूँ, लिहाज़ा बनी इस्राईल को मेरे साथ भेज दे।

(106) फ़िरऔन ने कहाः अगर तू कोई निशानी ले कर आया है तो वह पेश कर, अगर तू सच्चो में से है।

(107) तब मूसा ने अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दी तो वह उसी वक़्त अजगर साँप (बन कर) ज़ाहिर हुआ।

(108) और मूसा ने (बगल से) अपना हाथ बाहर निकाला तो वह देखने वालों के लिए चमकता हुआ सफेद था।

(109) फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहाः बेशक यह तो माहिर जादूगर है।

(110) यह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी सरज़मीन से निकाल दे, पस तुम क्या मशवरा देते हो?

(111) उन्होंने कहाः इसे और इसके भाई (हारून) को मुहलत दे और शहरों में इकट्ठा करने वालों को भेज दे।

(112) (ताकि) वह हर माहिर जादूगर को तेरे पास ले आएं।

(113) और वह जादूगर फ़िरऔन के पास आए तो उन्होंने कहाः यक़ीनन हमारे लिए इनआम होगा अगर हम ग़ालिब आ गए?

(114) फ़िरऔन ने कहाः हाँ, और बेशक तुम (मेरे) क़रीबी लोगों में से हो जाओगे।

(115) जादूगरों ने कहाः ऐ मूसा! या तो तू डाल या (पहले) हम ही (अपना जादू) डालें।

(116) मूसा ने कहाः (पहले) तुम डालो। फ़िर जब उन्होंने (अपनी लाठियां और रस्सियां) डालीं तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें (लाठियों और रस्सियों के सांपो से) डराया, और वह बहुत बड़ा जादू लाए थे।

(117) और हमने मूसा की तरफ वह्यी की कि तू (भी) अपनी लाठी डाल। (जब उसने डाली) तो वह देखते ही देखते (अजगर साँप बन कर उन सांपों को) निगलने लगा

जो वह (जादूगर) गढ़ते थे।

(118) बिलआखिर हक़ साबित हो गया और जो कुछ वह लोग कर रहे थे, बातिल ठहरा।

(119) तब वह जादूगर मग़लूब हो गए और ज़लील व ख्वार हो कर पीछे हट आए।

(120) और जादूगर (बेइख्तियार) सज्दे में गिर पड़े।

(121) उन्होंने कहाः हम रब्बुअलमीन पर ईमान ले आए।

(122) मूसा और हारून के रब पर।

(123) फ़िरऔन ने कहाः (क्या) तुम मेरे इजाज़त देने से पहले उस पर ईमान ले आए हो? बेशक यह फरेब है, तुमने इस शहर में (मिल कर) यह फरेब किया है ताकि यहाँ के रहने वालों को इस (शहर) से निकाल दो, फ़िर जल्द ही (उसका नतीजा) तुम जान लोगे।

(124) मैं तुम्हारे एक तरफ का हाथ और दूसरे तरफ की टाँग काटूँगा, फ़िर मैं तुम सब को ज़रूर सूली पर लटकाऊँगा।

(125) उन्होंने कहाः बेशक हम अपने रब ही की तरफ लौटने वाले है।

(126) और (ऐ फ़िरऔन!) तू हमें सिर्फ इस बात की सज़ा दे रहा है कि हम अपने रब की निशानियों पर ईमान ले आए है जब वह हमारे पास आ गई। ऐ हमारे रब! हम पर सब्र डाल दे और हमें इस हाल में मौत दे कि हम मुसलमान हों।

(127) और फ़िरऔन की क़ौम के चौध ारियों ने (उससे) कहाः क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को छोड़ देगा ताकि वह ज़मीन में फसाद करें, और वह (मूसा) तुझे और तेरे मअ़बूद को छोड़ दे? फ़िरऔन ने कहाः हम उनके (नौमौलूद) बेटे क़त्ल कर देगें और उनकी बेटियाँ छोड़ देंगे और बेशक हम उन पर पूरा ग़लबा रखते हैं।

(128) मूसा ने अपनी क़ौम से कहाः तुम अल्लाह से मदद माँगो और सब्र करों, बेशक ज़मीन तो अल्लाह ही की है, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बनाता है, और (अच्छा) अन्जाम तो परहेज़गारों ही के लिए है।

(129) उन्होंने (मूसा से) कहाः हमारे पास तुम्हारे आने से पहले भी हमे तकलीफें दी गई और तुम्हारे आने के बाद भी। मूसा ने कहाः उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर देगा और तुम्हें ज़मीन में जाँनशीन बना देगा, फ़िर देखेगा कि तुम कैसे अमल करते हो।

(130) और बिलाशुब्ह हमने आले फ़िरऔन को अकाल और फलों के नुक्सान में पकड़ा ताकि वह नसीहत (उपदेश) हासिल करें।

(131) फ़िर जब उन पर खुशहाली आती

तो कहतेः यह हमारे ही लिए है, और अगर उन्हें बदहाली आ लेती तो उसे मूसा और उनके साथियों की नहूसत ठहराते। खबरदार! उनकी नहूसत अल्लाह के पास (मुक़र्रर) है लेकिन उनमें अक्सर (लोग) नहीं जानते।

(132) और उन्होंने (मूसा से) कहाः ख्वाह तुम हमारे पास कोई निशानी ले आओ ताकि उसके ज़रिये से हम पर जादू कर दो, तो भी हम तुम पर ईमान नहीं लाएंगे।

(133) फ़िर हमने उन पर तूफ़ान, डिट्डी दल, जूऐं, मेंढकों और खून (का अज़ाब) भेजा (यह) अलग अलग निशानियां थी, फ़िर भी उन्होंने घमंड किया और वह लोग थे ही मुजरिम।

(134) और जब उन पर कोई अज़ाब आता तो कहतेः ऐ मूसा! तू अपने रब से हमारे लिए दुआ कर जैसा कि उसने तुझसे अ़हद कर रखा है। अगर तू हमसे अज़ाब हटा दे तो हम ज़रूर तुझ पर ईमान ले आएंगे और तेरे साथ बनी इस्राईल को ज़रूर भेज देंगे।

(135) फ़िर जब हम उनसे एक मुक़र्रर वक़्त तक अज़ाब हटा लेते जिस तक वह बहरहाल पहुँचने वाले होते, तो यका यक वह अहद तोड़ देते।

(136) फ़िर हमने उनसे इन्तिक़ाम लिया तो उन्हें समन्दर में ग़र्क़ कर दिया क्योंकि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था और वह उनसे बेपरवाह हो गए थे।

(137) और हमने उन लोगों को जो कमज़ोर समझे जाते थे, उस ज़मीन के मश्रिक़ और मग्रिब का वारिस बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी थी। और (ऐ नबी! इस तरह) बनी इस्राईल के हक़ में आपके रब का अच्छा वादा पूरा हुआ, इसलिए कि उन्होंने सब्र किया था। और हमने फ़िरऔन और उसकी क़ौम का वह सब कुछ तबाह कर दिया जो (कारखाने) वह बनाते और जो (महलो की इमारतें) वह उठाते थे।

(138) और (जब) हमने बनी इस्राईल को समन्दर के पार उतार दिया, तो उनका ऐसे लोगों पर गुज़र हुआ जो अपने बुतों की इबादत में लगे हुए थे। उन्होंने कहाः ऐ मूसा! तू हमारे लिए एक मअ़बूद बना दे जिस तरह कि उनके मअ़बूद हैं। मूसा ने कहाः बेशक तुम लोग तो (निरे) जाहिल हो।

(139) यह लोग जिस काम में लगे हैं यक़ीनन वह तबाह होने वाला है और जो कुछ यह कर रहे हैं वह बातिल है।

(140) मूसा ने कहाः क्या मैं तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई (और) मअ़बूद तलाश करूं जबकि उसी ने तुम्हें सब जहानों पर फज़ीलत दी है।

(141) और (ऐ बनी इस्राईल! याद करो)

जब हमने तुम्हें फ़िरऔन की क़ौम से निजात दी, वह तुम्हें बुरा अज़ाब चखाते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल कर देते थे और तुम्हारी औरतों (बेटियों) को ज़िन्दा रहने देते थे, और उसमें तुम्हारे रब की तरफ से बहुत बड़ी आज़माईश थी।

(142) और हमने मूसा से तीस रातों का वादा किया (कि वह इतनी रातें कोहे तूर पर गुज़ारे) और हमने उन्हें (ज़्यादा) दस रातों के साथ पूरा किया, यूं उसके रब की (मुक़र्रर की हुई) चालीस रातों की मुद्दत पूरी हो गई। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहाः तू मेरी क़ौम में मेरे पीछे जाँनशीन बन जा, और (उनकी) इस्लाह करना और फसाद करने वालों के रास्ते की पैरवी न करना।

(143) और जब मूसा हमारी मुक़र्रा मुद्दत के लिए आया और उसके रब ने कलाम किया तो मूसा ने कहाः ऐ मेरे रब! मुझे (अपनी झलक) दिखा कि मैं तुझे देख सकूं। अल्लाह ने फरमायाः तू मुझे हरगिज़ नहीं देख सकेगा लेकिन तू उस पहाड़ की तरफ देख, फ़िर अगर वह अपनी जगह ठहरा रहा, तो तू भी मुझे ज़रूर देख सकेगा। फ़िर जब उसके रब ने पहाड़ पर (अपना) जलवा डाला तो उसे रेज़ा रेज़ा कर दिया, और मूसा बेहौश हो कर गिर पड़ा। फ़िर जब वह होश में आया तो उसने अर्ज़ कीः (ऐ अल्लाह!) तू पाक है, मैं तेरे हुज़ूर तौबा करता हूँ और मैं सब से पहला मोमिन हूँ।

(144) अल्लाह ने फरमायाः ऐ मूसा! बेशक मैंने अपने पैग़ामात पहुँचाने और अपनी हम कलामी के लिए लोगों में से तूझे चुन लिया है, इसलिए तू ले ले जो मैंने तूझे दिया है और शुक्रगुज़ारों में (शामिल) हो जा।

(145) और हमने उस (मूसा) के लिए (तौरात की) तख्तियों में (ज़िन्दगी के) हर मामले के बारे में नसीहत (उपदेश) और हर पहलू के मुतल्लिक तफ्सील लिखकर दे दी है, इसलिए तू उन (हिदायत) को मज़बूती से पकड़ ले और अपनी क़ौम को हुक्म दे कि उनकी अच्छी अच्छी बातों पर अमल करें। जल्द ही मैं तुम्हें नाफरमानों का घर दिखाऊँगा।

(146) और जल्द ही मैं अपनी निशानियों से उन लोगों (की निगाहों) को फ़ेर दूँगा जो ज़मीन में नाहक़ तक़ब्बुर करते हैं, और अगर वह तमाम निशानियाँ देख लें तो भी उन पर ईमान नहीं लाएंगे, और अगर वह हिदायत की राह देख ले तो उसे इख्तियार नहीं करेंगे, और अगर वह गुमराही का रास्ता देख ले तो उसे इख्तियार कर लेंगे, यह इसलिए की उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और वह उन से ग़ाफिल रहे।

(147) और वह लोग जिन्होंने हमारी निशानियों और आखिरत की मुलाक़ात को

झुठलाया, उनके अमल बरबाद हो गए। उन्हें वही बदला दिया जाएगा जो कुछ वह (दुनिया में) करते रहे थें।

(148) और मूसा की क़ौम ने उनके (तूर पर जाने के) बाद अपने ज़ेवरात से एक बछड़ा बना लिया, वह एक जिस्म था जिसकी आवाज़ गाय की थी। क्या उन्होंने नहीं देखा वह उनसे कलाम नहीं करता और न ही उन्हें कोई रास्ता बताता है? (फ़िर भी) उन्होंने उसे (मअ़बूद) बना लिया और वह ज़ालिम थे।

(149) और जब उन्हें शर्मिंदगी हुई और उन्होंने देखा कि वह गुमराह हो गए हैं तो कहने लगेः अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बख़्शा तो हम ज़रूर नुक्सान पाने वालों में (शामिल) हो जाएँगे

(150) और जब मूसा ग़ुस्से और रंज में भरे अपनी क़ौम के पास वापस आए तो (उनसे) कहाः तुमने मेरे बाद मेरी कितनी बुरी नुमाइन्दगी की ! क्या तुमने अपने रब के हुक्म से (मुँह मोड़ने में) जल्दी की? और उन्होंने (तौरात की) तख़्तियाँ ज़मीन पर ड़ाल दी और अपने भाई का सर पकड़ लिया और उसे अपनी तरफ खीचंने लगे। (उस पर) हारून ने कहाः ऐ मेरी माँ के बेटे! बेशक उन लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और वह मुझे क़त्ल करने पर उतर आए थे। इसलिए तू दुश्मनों को मुझ पर हँसने का मौक़ा न दे और मुझे उन लोगों के साथ शामिल न कर जो जालिम हैं।

(151) मूसा ने कहाः ऐ मेरे रब! तू मुझे और मेरे भाई को बख़्श (माफ कर) दे और हमें अपनी रहमत में दाख़िल फरमा, और तू सब मेहरबानों ज़्यादा रहम करने वाला है।

(152) बेशक वह लोग जिन्होंने बछड़े को मअ़बूद बनाया, जल्द ही उनके रब का ग़ज़ब उन पर आन पहुँचेगा और (उन्हें) दुनिया की जिन्दगी में ज़िल्लत नसीब होगी और हम बोहतान बांधने वालों को ऐसी ही सज़ा दिया करते है।

(153) और वह लोग जिन्होंने बुरे अमल किये, फ़िर उनके बाद तौबा की और ईमान ले आए, बेशक आपका रब इसके बाद (ज़रूर उन्हें बख़्श देगा क्योंकि वह) बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(154) और जब मूसा का गुस्सा ठंड़ा हुआ तो उसने (तौरात की) तख़्तियाँ उठा लीं और उनके मज़ामिन (लेखों) में उनके लिए हिदायत और रहमत थी जो अपने रब से ड़रते थे।

(155) और मूसा ने अपनी क़ौम में से सत्तर आदमी हमारे मुक़र्रर वक़्त (पर कोहे तूर पर तौबा व इस्तगफार) के लिए चुने, फ़िर जब उन को जलजले (भूचाल) ने आ

पकड़ा तो मूसा ने कहाः ऐ मेरे रब! अगर तू चाहता तो इससे पहले ही उन्हें और मुझे भी हलाक कर देता, क्या तू उसकी वजह से हमें हलाक करता जो हम में से बेवक़ूफ़ों ने किया? यह तेरी तरफ से आज़माईश के सिवा कुछ नहीं, तो उस (आजमाईश) से जिसे चाहता है गुमराह करता है और जिसे चाहता है हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है, तू ही हमारा कारसाज़ है, लिहाज़ा हमें बख़्श दे और हम पर रहम फरमा और तू ही बेहतरीन बख़्शने वाला है।

(156) और हमारे लिए इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी भलाई लिख दे, बेशक हमने तेरी ही तरफ रूजू किया है। अल्लाह ने कहाः मैं जिसे चाहता हूँ अपना अज़ाब पहुँचाता हूँ और मेरी रहमत ने हर चीज़ को घेर रखा है, इसलिए जल्द ही मैं इस (रहमत) को उन लोगों के लिए लिख दूंगा जो परहेज़गार हैं और ज़कात देते हैं और (उनके लिए भी) जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।

(157) (यानी) वह लोग जो इस रसूले उम्मी नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पैरवी करते हैं जिसका ज़िक्र वह अपने यहाँ तौरात और इन्जील में लिखा पाते हैं वह उन्हें अच्छे कामों का हुक्म देता है और उन्हें बुरे कामों से रोकता है। और वह उनके लिए पाकीज़ा चीज़ें हलाल करता है और और उन पर नापाक चीज़ें हराम ठहराता है, और उन पर से उनके बोझ और तौक़ उतारता है जो उन पर थे, इसलिए जो लोग इस पर ईमान लाए और उन्होंने उसकी तअज़ीम (इत्तेबा) की और उसकी मदद की और उस नूर (हिदायत) की पैरवी की जो उस पर नाज़िल किया गया, वही फलाह पाने वाले हैं।

(158) कह दीजिएः ऐ लोगों! बेशक मैं तुम सबकी तरफ अल्लाह का रसूल हूँ जिसके पास आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, उसके सिवा कोई मअ़बूद (बरहक़) नहीं, वह ज़िन्दा करता और मारता है, लिहाज़ा तुम अल्लाह पर और उसके रसूले उम्मी नबी पर ईमान लाओ जो (खुद भी) अल्लाह और उसके (तमाम) कलमात पर ईमान लाता है, और तुम उसकी पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ।

(159) और मूसा की क़ौम में से एक गिरोह (ऐसा) है जो हक़ के साथ रहनुमाई करते हैं और उसी (हक़) के साथ अद्ल करते हैं।

(160) और हमने उन (बनीइस्राईल) के बारह क़बीलों के लिहाज़ से (बारह) गिरोहों में बांट दिया था। और जब मूसा की क़ौम ने उससे पानी मांगा तो हमने उसकी तरफ वह्यी की कि तू अपनी लाठी (उस) पत्थर

पर मार। (उसने मारा) तो उस (पत्थर) से बारह चश्मे फूट निकले, तब हर क़बीले ने अपना घाट जान लिया, और हमने उन पर बादलों का साया किया, और हमने उन पर मन्न और सलवा नाज़िल किया (और कहाः) जो पाकीज़ा चीज़ें हमने तुम्हें दी हैं, उनमें से खाओ। और (उसके बाद) उन्होंने (जो कुछ किया, तो) हम पर जुल्म नहीं किया बल्कि वह अपने आप ही पर जुल्म करते रहे।

(161) और जब उनसे कहा गयाः तुम इस बस्ती में ठहरो और उसमें जहाँ से जी चाहे खाओ पीओ (रिज़्क़ हासिल करो) और कहो ''हित्ततुन'' (हमें माफ कर दे) और (शहर के) दरवाज़े में सज्दा करते हुए दाख़िल होना, तो हम तुम्हारी खातिर तुम्हारी गलतियाँ माफ कर देंगे। फ़िर हम नेकी करने वालों को और ज़्यादा देंगे।

(162) फ़िर उनमें से जिन लोगों ने जुल्म किया था, उन्होंने इस लफ्ज़ को जिसका उन्हें हुक्म दिया गया था, उसको बदल कर दूसरी बात बना ली, तब हमने आसमान से उन पर अज़ाब भेजा, इसलिए कि वह जुल्म करते थे।

(163) और (ऐ नबी!) उन (यहूदे मदीना) से उस बस्ती (ईला) के बारे में पूछे जो समंदर के साहिल पर वाक़े थी, जब वह लोग शनिवार के बारे में हद से गुज़र जाते थे जबकि उनके शनिवार के दिन को उनकी (शिकार की) मछलियां उनके पास ज़ाहिर (पानी के ऊपर) हो जाती थी, और जिस दिन उनका हफ्ता (शनिवार) न होता वह (उनके पास) नहीं आती थी। इस तरह हम उन्हें आज़माते थे इसलिए कि वह नाफ़रमानी करते थे।

(164) और जब उनमे से एक गिरोह ने (दूसरे से) कहाः तुम ऐसे लोगों को नसीहत क्यों करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या सख्त अज़ाब देने वाला है? उन्होंने जवाब दियाः इसलिए कि (हम) तुम्हारे रब के हुज़ूर उज्र (पेश) कर सकें और शायद कि वह (अल्लाह से) डरें।

(165) फ़िर जब उन्होंने वह बातें भुला दीं जिनकी उन्हें नसीहत (चेतावनी) की गई थी तो हमने उन लोगों को निजात दी जो बुरे काम से रोकते थे, और हमने उन लोगों को बदतरीन अज़ाब के साथ पकड़ लिया जिन्होंने ज़्यादती की थी, इसलिए कि वह नाफरमानी करते थे।

(166) फ़िर जब उन्होंने इस मामले में सरकशी की जिससे उन्हें रोका गया था, तो हमने उनसे कहाः हो जाओ ज़लील बन्दर।

(167) और (ऐ नबी! याद करो) जब आपके रब ने (यहूद को) खबरदार कर दिया था कि वह क़यामत तक उन पर ऐसे शख्स

को ज़रूर मुसल्लत रखेगा जो उन्हें सख्त अज़ाब (का मज़ा) चखाता रहेगा। बेशक आपका रब बहुत जल्द सज़ा देने वाला है और बेशक वह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(168) और हमने उन्हें क़बीलों में बांट कर ज़मीन में फैला दिया। उनमे से कुछ नेक थे और उनमें से कुछ उसके सिवा (बद आमाल) थे। और हमने खुशहाली और बादहाली के साथ आज़माया, शायद की वह (अल्लाह की तरफ) लौट आएं।

(169) फ़िर उनके बाद न अहल उनके जाँनशीन बने, जो किताब (तौरात) के वारिस हुए, वह अदना (दुनिया का) सामान ले लेते हैं और कहते हैं कि जल्द हमें बख़्श दिया जाएगा (मगर उनका हाल यह है) कि अगर उस जैसा घटिया (दुनिया का) सामान (दोबारा) उनके पास आए तो (बग़ेर किसी आर के) ले लें, क्या उनसे किताब (तौरात) में पुख़्ता वादा लिया गया था कि वह अल्लाह के बारे में हक़ के सिवा (कुछ) न कहें? हालांकि उन्होंने पढ़ लिया है जो कुछ उसमें है और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बहुत बेहतर है जो परहेज़गारी इख़्तियार करते हैं। क्या फ़िर तुम समझते नहीं?

(170) और जो लोग किताब को मज़बूती से पकड़ते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं (उन्हें हम अज्र देंगे), बेशक हम नेकूकारों (उत्तमकारों) का अज्र ज़ाया नहीं करते।

(171) और जब हमने उन (के सरों) पर पहाड़ उठा खड़ा किया गया जैसे वह एक सायबान था, और उन्होंने ख्याल किया कि यक़ीनन वह उन पर गिरने वाला है। (हमने कहा:) उस (तौरात) को जो हमने तुम्हें दी, कुव्वत के साथ पकड़ो और जो कुछ उसमें है उसको याद रखो ताकि तुम (बुरे कामों से) बच जाओ।

(172) और (ऐ नबी! याद करो) जब आपके रब ने बनी आदम की पुश्तों से उनकी औलाद को निकाला, और उन्हें उनकी जानों पर गवाह बनाया (और पूछा:) क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? उन्होंने कहा: क्यों नहीं! हम गवाही देते हैं। (अल्लाह ने फरमाया: यह इसलिए) कि तुम क़यामत के दिन यह (न) कहो कि हम तो इस बात से बेखबर थे।

(173) या तुम (यह न) कहो कि बेशक हम से पहले हमारे बाप दादा ने शिर्क किया था और हम उनके बाद (उनकी) औलाद थे, फ़िर क्या तू हमें उस (काम) की वजह से हलाक करता है जो गुमराह लोगों ने किया था?

(174) और इसी तरह हम आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं, शायद कि वह (लोग हमारी तरफ) लौट आएं।

(175) और (ऐ नबी!) उन्हें उस शख़्स की खबर पढ़ कर सुनाऐं जिसे हमने अपनी आयतें दी थी, मगर वह उन (की पाबंदी) से निकल भागा तो उसे शैतान ने पीछे लगा लिया, फ़िर वह गुमराहों में (शामिल) हो गया।

(176) और अगर हम चाहते तो उन (आयतों) के ज़रिये से उसे बुलंद दरजा देते लेकिन वह ज़मीन की तरफ झुक पढ़ा और अपनी ख़्वाहिश के पीछे लग गया, इसलिए उसकी मिसाल कुत्ते की सी है कि अगर तू उस पर हमला करे तो भी हांपता है और अगर तू उसे छोड़ दे तो भी हांपता है। यही मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, इसलिए (ऐ नबी!) आप (यहूद से) यह क़िस्सा बयान कर दें, शायद कि वह गौरो फ़िक्र करें।

(177) उन लोगों की मिसाल बुरी है जिन्होंने हमारी आयतों झुठलाया और वह अपनी जानों पर जुल्म करते थे।

(178) जिसे अल्लाह हिदायत (मार्ग-दर्शन) दे, तो वही हिदायत पाने वाला है और जिसे (अल्लाह) गुमराह कर दे तो यही लोग नुक़्सान पाने वाले हैं।

(179) और हमने बहुत से जिन्न और इंसान दोज़ख के लिए पैदा किये हैं। उनके दिल तो हैं (मगर) वह उनसे (हक़ को) समझते नहीं, और उनकी आँखें तो हैं (मगर) वह उनसे (हक़) को देखते नहीं, और उनके कान तो हैं (मगर) वह उनसे (हक़ को) सुनते नहीं। वह तो चौपायों के तरह हैं बल्कि (उनसे भी) ज़्यादा गुमराह हैं, यही लोग ग़ाफिल हैं।

(180) और अल्लाह ही के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं, लिहाज़ा तुम उसे उन (नामों) से पुकारो, और छोड़ दो उन लोगों को जो उसके नामों में ग़लत रास्ता इख़्तियार करते हैं। वह जो कुछ कर रहे हैं, जल्द उसकी सज़ा पाऐंगे।

(181) और जिन्हें हमने पैदा किया उनमें से एक गिरोह (उन लोगों का) है जो हक़ का रास्ता बताते हैं और उसी के साथ इंसाफ करते हैं।

(182) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, हम ज़रूर उन्हें धीरे धीरे पकड़ेंगे जहाँ से उन्हें इल्म तक न होगा।

(183) और मैं उन्हें मुहलत देता हूँ, बेशक मेरी तदबीर निहायत मज़बूत है।

(184) क्या उन्होंने ग़ौर नहीं किया कि उनके साथी (नबी) को कोई जुनून (लाहक़) नहीं? वह तो साफ साफ (अल्लाह के अज़ाब से) डराने वाले हैं।

(185) क्या उन्होंने आसमानों और ज़मीन की बादशाही में और जो चीज़ें अल्लाह ने पैदा की हैं उन पर नज़र नहीं डाली, और

(उस पर ग़ौर नहीं किया कि) शायद उनकी मौत क़रीब आ गई हो? फ़िर इस (कुरआन) के बाद वह किस बात पर ईमान लाऐंगे?

(186) जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो उसे कोई हिदायत (मार्ग-दर्शन) देने वाला नहीं, और वह उन्हें छोड़ देता है कि वह अपनी सरकशी में भटकते फिरें।

(187) (ऐ नबी!) वह लोग आपसे क़यामत के बारे में सवाल करते हैं कि उसके वाक़े होने का वक़्त कौनसा है? कह दीजिएः उसका इल्म तो मेरे रब ही के पास है। वही उसे उसके वक़्त ही पर ज़ाहिर करेगा। वह आसमानों और ज़मीन में भारी (हादसा) होगी। वह (क़यामत) तुम्हारे पास बस अचानक ही आएगी। वह (लोग) आपसे सवाल करते हैं जैसे आप उस (के वक़्त) से बखूबी वाक़िफ़ हैं। कह दीजिएः उसका इल्म तो सिर्फ अल्लाह के पास है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

(188) कह दीजिएः मैं अपनी जान के लिए नफा और नुक़्सान का इख्तियार नहीं रखता, मगर जो अल्लाह चाहे, और अगर मैं ग़ैब जानता होता तो बहुत सी भलाईयां हासिल कर लेता और मुझे कोई तकलीफ न पहुँचती, मैं तो डराने वाला और खुशखबरी सुनाने वाला हूँ उन लोगों को जो ईमान लाते हैं।

(189) वह (अल्लाह) ही तो हे जिसने तुम्हें एक जान (आदम) से पैदा किया और उससे उसका जोड़ा बनाया ताकि वह उससे सुकून हासिल करे, फ़िर जब उस (किसी मर्द) ने बीवी से सोहबत की तो उसे हल्का से हमल (गर्भ) हो गया, तो वह उसे लिए फिरती रही, फ़िर जब वह बोझल हो गई तो उन दोनों ने अपने रब, अल्लाह से दुआ की कि अगर तूने हमें तन्दरूस्त बच्चा दिया तो हम ज़रूर तेरे शुक्र गुज़ारों में से होंगे।

(190) इसलिए जब अल्लाह ने उन्हे तंदरूस्त बच्चा दिया तो उन्होंने उस (बच्चे) में जो अल्लाह ने उन्हें दिया था, उसके शरीक ठहरा लिए, अल्लाह तो उससे बहुत ऊँचा है जो वह शरीक करते हैं।

(191) क्या वह उनको (अल्लाह के) शरीक ठहराते हैं जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं करते जब कि वह तो खुद पैदा किये जाते हैं।

(192) और वह उन (मुश्रिकीन) की मदद करने की ताक़त नहीं रखते और न ही अपनी मदद कर सकते हैं।

(193) और अगर तुम उन्हें हिदायत (मार्ग-दर्शन) की तरफ बुलाओ तो वह तुम्हारी पैरवी नहीं करेंगे। तुम्हारे लिए बराबर है कि तुम उन्हें (हिदायत) की तरफ बुलाओ या खामोश रहो।

(194) (ऐ मुश्रिको!) बेशक वह लोग जिन्हें

तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वह तुम ही जैसे बन्दे हैं (अच्छा तो) जब तुम उनको पुकारो तो उन्हें तुम्हारी पुकार का जवाब देना चाहिए। अगर तुम सच्चे हो।

(195) (ऐ नबी! मुश्रिकीन से पूछे) क्या उनके (मअबूदों के) ऐसे पावं हैं कि वह उनसे चलते हों? क्या उनके ऐसे हाथ हैं कि वह उनसे पकड़ते हों? क्या उनकी ऐसी आँखें हैं कि वह उनसे देखते हों? क्या उनके ऐसे कान हैं कि वह उनसे सुनते हों? कह दीजिएः तुम अपने शरीकों को बुलाओ, फ़िर तुम मेरे खिलाफ (जो चाहो) तदबीर करो, फ़िर मुझे मुहलत न दो (फ़िर देखों वह मेरा क्या बिगाड़ते हैं)

(196) (कह दीजिएः) बेशक मेरा कारसाज़ तो अल्लाह ही है जिसने यह किताब नाज़िल की, और वही नेक लोगों की कारसाज़ी करता है।

(197) और जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वह तुम्हारी मदद करने की सलाहियत नहीं रखते और न वह अपनी मदद कर सकते हैं।

(198) और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ बुलाओ तो वह सुन न पाएंगे, और (ऐ नबी!) आप उन्हें देखते हैं कि (बज़ाहिर) वह आपकी तरफ देख रहे हैं, हालांकि वह नहीं देखते।

(199) आप (उनसे) दरगुज़र कीजिए, और नेक काम का हुक्म दीजिए और जाहिलों से किनारा कीजिए।

(200) और अगर आपको शैतान का कोई वस्वसा उभारे तो अल्लाह की पनाह मांगे, बेशक वह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(201) बेशक जिन लोगों ने तक़्वा इख़्तियार किया जब उन्हें शैतान की तरफ से कोई वस्वसा आ लेता है तो वह चौंक पड़ते हैं, फ़िर यकायक सूझ बूझ वाले हो जाते हैं।

(202) और उनके भाई (शैतान) उन्हें गुमराही में खींच ले जाते हैं और वह उसमें कोई कमी नहीं करते।

(203) और (ऐ नबी!) जब आप उनके पास कोई निशानी नहीं लाते तो वह कहते हैंः तुम खुद क्यों नहीं बना लाए? कह दीजिएः मैं तो सिर्फ उस चीज़ का इत्तेबा करता हों जो मेरी तरफ मेरे रब की तरफ से वह्यी की जाती है, यह तुम्हारे रब की तरफ से रोशन दलाईल हैं, और हिदायत (मार्ग-दर्शन) और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।

(204) और जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे तव्वजह से (कान लगा कर) सुनो और खामोश रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

(205) और (ऐ नबी!) अपने रब को सुबह और शाम अपने दिल में याद कीजिए आजिज़ी से और डरते हुए, पस्त और हल्की आवाज़ से। और आप गाफिलों में (शामिल) न हों।

(206) बेशक जो (फरिश्ते) आपके रब के पास हैं, वह उसकी इबादत से घमंड नहीं करते, वह उसकी तस्बीह बयान करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं।

सूरह अनफाल-8

(यह मदनी सूरत है इसमें 75 आयतें और 10 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) वह आपसे माले ग़नीमत के बारे में पूछते हैं। कह दीजिए माले ग़नीमत अल्लाह और उसके रसूल के लिए है, लिहाज़ा तुम अल्लाह से डरो, और आपस में इस्लाह कर लो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो अगर तुम मोमिन हो।

(2) (सच्चे) मोमिन तो सिर्फ वह लोग हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उन के दिल कांप उठते हैं, और जब उन पर उसकी आयतों की तिलावत की जाए तो वह उनका ईमान बढ़ा देती हैं, और वह अपने रब ही पर भरोसा करते हैं।

(3) वह लोग नमाज़ क़ायम करते हैं और हमने उन्हें जो रिज़्क़ दिया है उसमें से खर्च करते हैं।

(4) यही लोग सच्चे मोमिन हैं, उनके लिए अपने रब के यहाँ दर्जे हैं और बख्शिश है और बाइज़्ज़त रिज़्क़ हैं।

(5) जैसे (बद्र के मौक़े पर) आपके रब ने आपको आपके घर (मदीना) से हक़ (बहतरीन तदबीर) के साथ निकाला था, और बेशक (उस वक़्त) मोमिनों का एक गिरोह (उस निकलने को) नापसन्द करता था।

(6) वह आपसे हक़ (के मामले) में उसके वाजेह हो जाने के बाद झगड़ते थे, जैसे कि उन्होंने मौत की तरफ हाँके जा रहा था, और वह (इसे) देख रहे थे।

(7) और जब अल्लाह तुमसे दो गिरोहों में से एक का वादा कर रहा था कि यक़ीनन वह तुम्हारे लिए है, और तुम चाहते थे कि बिना हथियारो वाला गिरोह तुम्हारे हाथ लगे, और अल्लाह का इरादा यह था कि वह अपने हुक्म के साथ हक़ को साबित कर दिखाए और काफिरों की जड़ काट दे।

(8) ताकि वह हक़ को हक़ दिखाए और बातिल को बातिल दिखाए, अगरचे मुजरिम लोग (उसे) नापसन्द ही करें।

(9) (याद करो) जब तुम अपने रब से फरियाद कर रहे थे, तो उसने तुम्हारी फरियाद

क़ुबूल कर ली (और कहा) कि बेशक मैं एक दूसरे के पीछे आने वाले एक हज़ार फरिश्तों से तुम्हारी मदद करूँगा।

(10) और उस (मदद) को अल्लाह ने खुशखबरी बना दिया ताकि उससे तुम्हारे दिलों को तसल्ली हो जाए और मदद तो अल्लाह ही के पास से है। बेशक अल्लाह ग़ालिब है, खूब हिकमत वाला।

(11) (याद करो) जब वह (अल्लाह) अपनी तरफ से तुम्हें अमन व सुकून देने के लिए तुम पर ऊँघ तारी कर रहा था, और आसमान से तुम पर बारिश बरसा रहा था ताकि तुम्हें उसके जरिये से पाक कर दे और तुम से शैतानी वस्वसे को दूर कर दे, और ताकि तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दें, और ताकि उसकी वजह से (तुम्हें) साबित कदम रखे।

(12) (ऐ नबी) जब आपका रब फरिश्तों की तरफ वह्यी कर रहा था कि बेशक मैं तुम्हारे साथ हूँ, इसलिए तुम उनको साबित क़दम रखो जो ईमान लाएँ हैं, मैं जल्द ही उन लोगों के दिलों में रौब डाल दूँगा जिन्होंने कुफ़्र किया, इसलिए तुम उनकी गरदनों पर वार करो और उनके हर हर पौर पर चोट लगाओ।

(13) यह इसलिए कि बेशक उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफत की, और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफत करेगा तो यक़ीनन अल्लाह सख्त सजा देने वाला है।

(14) पस तुम यह (सज़ा) चखो और बेशक काफिरों के लिए दोज़ख का अज़ाब (तैयार) है।

(15) ऐ ईमान वालों! जब तुम्हारा उन लोगों के लश्कर से मुकाबला हो जिन्होंने कुफ़्र किया तो तुम उनसे पीठ फेर कर न भागो।

(16) और जो शख़्स उस दिन उनसे पीठ फेर कर भागेगा, सिवाए उस शख़्स के जो लड़ाई के लिए पैंतरा बदलने वाला हो या (अपने) किसी गिरोह की पनाह लेने वाला हो, तो यक़ीनन वह अल्लाह का ग़ज़ब लेकर लौटा, और उसका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत बुरी लौटने की जगह है।

(17) इसलिए तुमने उन्हें क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ही ने उन्हें क़त्ल किया, और (ऐ नबी!) जब आपने (मुट्ठी भर खाक उनकी तरफ) फेंकी तो वह आपने नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी ताकि वह मोमिनों को अपनी तरफ से अच्छे इनाम से नवाज़े, बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(18) यह थी बात (हमारी हिकमत) और बेशक अल्लाह काफिरों की चाल कमज़ोर करने वाला है।

(19) (काफिरों से कह दोः) अगर तुम फैसला मांगते थे तो फैसला तुम्हारे सामने आ गया। अब अगर तुम बाज़ आ जाओ तो वह तुम्हारे हक़ में बेहतर है, और अगर तुम दोबारा (पहले की तरह) करोगे तो हम भी फ़िर उसी तरह करेंगे (तुम्हें सज़ा देंगे) और तुम्हारी जमाअत अगरचे ज़्यादा ही हो वह तुम्हें हरगिज़ फायदा न देगी, और बेशक अल्लाह मोमिनों के साथ है।

(20) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो और उससे मुँह न फेरो जबकि तुम सुन रहे हो।

(21) और तुम उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने कहाः हमने सुन लिया, हालांकि वह सुनते नहीं थे।

(22) बेशक अल्लाह के नज़दीक ज़मीन पर चलने वालों में बदतरीन वह बहरे गूंगे हैं जो अक़्ल नहीं रखते।

(23) और अगर अल्लाह उनमें कोई भलाई पाता तो उन्हें ज़रूर सुनने की तौफीक़ देता, और अगर वह उन्हें सुनने की तौफीक़ दे देता तो भी वह ज़रूर मुँह फेर कर भाग जाते।

(24) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और उसके रसूल का कहना मानों जब वह तुम्हें उस (अम्र) की तरफ बुलाए जो तुम्हें ज़िन्दगी बख्शता है, और तुम जान लो कि यक़ीनन अल्लाह बन्दे और उसके दिल के दरम्यान आड़ बन जाता है और यह भी कि तुम उसके हुज़ूर इकट्ठे किये जाओगे।

(25) और उस फित्ने से डरों जो तुममें से खास तौर पर (सिर्फ) उन लोगों को नहीं घेरेगा जिन्होंने ज़ुल्म किया (बल्कि सब उसकी ज़द में आ साकते हैं) और तुम जान लो कि बेशक अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है।

(26) और याद करो जब तुम बहुत थोड़े थे, ज़मीन में कमज़ोर समझे जाते थे, तुम इस बात से डरते थे कि कहीं लोग तुम्हें उचक (न) ले जाएं, तो अल्लाह ने तुम्हें ठिकाना दिया, और अपनी मदद के साथ तुम्हारी ताईद की, और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया ताकि तुम उसका शुक्र करो।

(27) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और उसके रसूल से ख्यानत न करो, और तुम आपस की अमानतों में ख्यानत न करो, जबकि तुम जानते हो।

(28) और जान लो यक़ीनन तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद फित्ने हैं और (जान लो) बेशक अल्लाह ही के पास अज्रे अज़ीम है।

(29) ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरो तो वह तुम्हारे लिए कसौटी (दलील हक़) बना देगा और तुमसे तुम्हारी बुराईयां

दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा। और अल्लाह बहुत बड़े फज़्ल वाला है।

(30) और (ऐ नबी! याद कीजिए) जब वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया, आपके बारे में तदबीरें कर रहे थे ताकि वह आपको क़ैद कर दें, या आपको क़त्ल कर दें, या आपको (मक्का से) निकाल दें, और वह तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह भी तदबीर कर रहा था, और अल्लाह बेहतरीन तदबीर करने वाला है।

(31) और जब उन पर हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह कहते हैंः यक़ीनन हमने सुन लिया, अगर हम चाहें तो इस तरह (का कलाम) हम भी कह सकते हैं, यह तो अगले लोगों ही की दास्तानें हैं।

(32) और जब उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह! अगर यह (कुरआन) तेरी तरफ से हक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हम पर दर्दनाक अज़ाब ले आ।

(33) और (ऐ नबी!) अल्लाह ऐसा नहीं कि उन्हें अज़ाब दे जबकि आप भी उनके दरम्यान (मौजूद) हों, और अल्लाह उन्हें अज़ाब देने वाला नहीं जबकि वह बख़्शिश मांगते हों।

(34) और (अब) उनके लिए कौन सी वजह है कि अल्लाह उन्हें अज़ाब न दे जबकि वह (लोगों को) मस्जिद हराम से रोकते हैं, हालांकि वह उसके मुतव्वली नहीं, उसके मुतव्वली तो मुत्तक़ी लोग ही हैं लेकिन उनमें से अक्सर (इस हक़ीक़त को) नहीं जानते।

(35) और बैतुल्लाह के पास उन (मुश्रिकीन) की नमाज़ सीटियाँ और तालियां बजाने के सिवा कुछ नहीं थी, इसलिए तुम अज़ाब चखो उस कुफ़्र की वजह से जो तुम करते थे।

(36) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह अपने माल खर्च करते हैं ताकि वह (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोकें, तो वह अभी (और) माल खर्च करेंगे, फ़िर वह उनके लिए हसरत की वजह होगा, फ़िर वह मगलूब हो जाएँगे, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह जहन्नम की तरफ इकट्ठे किये जाएंगे।

(37) ताकि अल्लाह नापाक को पाक से अलग कर दे, और नापाक (लोगों) को (एक दूसरे पर) ऊपर तले रख कर इकट्ठा ढेर लगा दे, फ़िर उसे जहन्नुम में डाल दे, यही लोग नुक्सान पाने वाले हैं।

(38) (ऐ नबी!) जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनसे कह दीजिए कि अगर वह बाज़ आ जाऐं तो जो कुछ पहले हो चुका वह उन्हें माफ कर दिया जाएगा, और अगर वह दोबारा वही करेंगे तो बिलाशुब्ह अगले लोगों का (जो) तरीक़ा गुज़रा है (वही उन अन्जाम होगा)।

(39) और तुम उनसे लड़ो यहाँ तक कि फित्ना (शिर्क) न रहे और (हर कहीं) सारे का सारा दीन अल्लाह ही का हो, फ़िर अगर वह (काफिर) बाज़ आ जाएं तो बेशक अल्लाह उनके कामों को खूब देख रहा है।

(40) और अगर वह मुँह फ़ेर लें तो जान लो कि यक़ीनन अल्लाह ही तुम्हारा कारसाज़ है, वह बेहतरीन कारसाज़ और बेहतरीन मददगार है।

(41) और (ऐ मुसलमानों!) जान लो कि तुम जो कुछ भी माले ग़नीमत हासिल करो, उसमें से पाचवाँ हिस्सा यक़ीनन अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए और (उसके) रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफिरों के लिए है। अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो और उस पर जो हमने अपने बन्दे पर फैसले के दिन उतारा जिस दिन दो फौजों में टकराव हुआ था, और अल्लाह हर चीज़ पर खूब कुदरत रखता है।

(42) जबकि तुम (मैदाने बद्र के) क़रीब वाले किनारे पर थे और वह (काफिर) दूर वाले किनारे पर थे और (क़ुरैश का तिजारती) क़ाफिला तुमसे बहुत नीचे (बहीरा कुल्ज़ुम के साहिल की तरफ) था और अगर तुम (दोनों फरीक़ जंग के लिए) आपस में वादा करते तो मुक़र्ररा वक़्त पर ज़रूर इख़्तिलाफ करते, लेकिन (हुआ यह कि दोनों गिरोह आमने सामने आ गए) ताकि अल्लाह उस काम को पूरा कर दे जो होने वाला था ताकि जो हलाक हो वह हुज्जत (क़ायम होने) से हलाक हो और जो ज़िन्दा रहे वह दलील से (हक़ पहचान कर) ज़िन्दा रहे और बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(43) (ऐ नबी! याद करें) जब अल्लाह ने आपके ख्वाब में आपको उनकी तअदाद कम दिखाई और अगर वह आपको उनकी तअदाद ज़्यादा दिखाता तो तुम ज़रूर हिम्मत हार देते और उस मामले में आपस में इख़्तिलाफ करते लेकिन अल्लाह ने तुम्हें बचा लिया। बेशक वह सीनों के भेद खूब जानता है।

(44) और (ऐ मुसलमानों! याद करो) जब तुम (काफिरों के) आमने सामने हुए तो अल्लाह ने उन्हें तुम्हारी नज़रों में थोड़ा दिखाया और तुम्हें उनकी नज़र में थोड़ा दिखाया ताकि अल्लाह उस काम को पूरा कर दे जो होने वाला था और सब काम अल्लाह ही की तरफ लोटते हैं।

(45) ऐ ईमान वालो! जब किसी गिरोह से तुम्हारा आमना सामना हो तो साबित क़दम रहो और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम फलाह पाओ।

(46) और अल्लाह और उसके रसूल की

इताअत करो और आपस में झगड़ा न करो वरना तुम हिम्मत हार बैठोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सब्र करो, बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

(47) और तुम उन लोगों की तरह न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते हुए और लोगों को (अपनी शान) दिखाते हुए निकले और वह (लोगों को) को अल्लाह की राह से रोकते थे और वह जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसको घेरे हुए है।

(48) और (याद करो) जब शैतान ने उनके आमाल उनके लिए अच्छा करके पेश किये और वह कहने लगाः आज लोगों में से कोई तुम पर ग़ालिब नहीं और बेशक मैं तुम्हारा साथी हूँ, फ़िर जब दोनों फौजों का आमना सामना हुआ तो वह उलटे पावं फ़िर गया और कहना लगाः बेशक मैं तुम से बरी हूँ। बेशक मैं वह (फरिश्ते) देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख रहे, बेशक मैं अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है।

(49) जब मुनाफिक़ और वह लोग जिनके दिलों में रोग था, यह कहते थे कि उन (मुसलमानों) को उनके दीन ने धोखे में डाल दिया है। और जो कोई अल्लाह पर भरोसा करे तो बेशक अल्लाह ज़बरदस्त, खूब हिकमत वाला है।

(50) और काश! आप देखें जबकि फरिश्ते काफिरों की जान क़ब्ज़ करते हैं, वह उनके मुहँ और उनकी पीठ पर मारते हैं और (कहते हैं कि) तुम जला देने वाला अज़ाब चखो।

(51) यह उसका बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और यह (जान लो) कि बेशक अल्लाह अपने बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं।

(52) उनकी आदत आले फ़िरऔन और उन लोगों की आदत जैसी है जो उनसे पहले थे, उन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया तो अल्लाह ने उनके गुनाहों की वजह से उन्हें पकड़ लिया, बेशक अल्लाह बहुत ताक़तवर, सख्त सज़ा देने वाला है।

(53) यह इसलिए कि बेशक अल्लाह कोई नेअमत, जो उसने किसी क़ौम को बख़्शी हो नहीं बदलता यहाँ तक कि वह खुद अपने दिलों की हालत बदल डालें और बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(54) उनकी आदत आले फ़िरऔन और उन लोगों की आदत जैसी है जो उनसे पहले थे, उन्होंने अपने रब की आयतों को झुठलाया तो हमने उन्हें उनके गुनाहों की वजह से हलाक कर दिया और हमने आले फ़िरऔन को डुबो दिया और वह सब जालिम थे।

(55) बेशक ज़मीन पर चलने वालों में से

अल्लाह के नज़दीक बदतरीन वह लोग हैं जिन्होंने कुफ्र किया फ़िर वह ईमान नहीं लाते।

(56) वह जिनसे आपने वादा किया, फ़िर वह हर बार अपना वादा तोड़ डालते हैं और वह (अल्लाह से ज़रा) नहीं डरते।

(57) फ़िर अगर आप उनको लड़ाई में पाऐं तो उनके साथ उन लोगों को भी भगा दें जो उनके पीछे हों, शायद कि वह नसीहत पकड़ें।

(58) और अगर आपको किसी क़ौम की तरफ से ख्यानत (वादा खिलाफी) का ख़ौफ हो तो बराबरी (की सतह) पर उनका वादा उनके मुहँ पर दे मारें। बेशक अल्लाह ख्यानत करने वालों को पसंद नहीं करता।

(59) और जिन लोगों ने कुफ्र किया वह यह ख्याल न करें कि वह बच निकले हैं, बेशक वह (अपनी चालों से अल्लाह को) आजिज़ (मजबूर) नहीं कर सकते।

(60) और उन (काफिरों के मुक़ाबले) के लिए तुम अपनी ताकत भर कुव्वत और जंगी घोड़े तैयार रखो जिनसे तुम अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों को और उनके अलावा दूसरों को डराए रखो जिन्हें तुम नहीं जानते (मगर) अल्लाह उन्हें जानता है और तुम अल्लाह की राह में जो खर्च करोगे तुम्हें (उसका) पूरा पूरा सवाब दिया जाएगा और तुम पर जुल्म नहीं किया जाएगा।

(61) और (ऐ नबी!) अगर वह सुलह की तरफ झुकें तो आप भी उसकी तरफ झुक जाए और अल्लाह पर भरोसा रखें, बेशक वही खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(62) और अगर वह आपको धोखा देने चाहें तो बेशक आपके लिए अल्लाह काफी है, वही तो है जिसने अपनी मदद से और मोमिनों से आपकी ताईद की।

(63) और उसने उन (मोमिनों) के दिलों में उल्फत डाल दी, अगर आप दुनिया भर के सब खज़ाने खर्च कर देते तो भी उनके दिलों में उल्फत पैदा न कर सकते लेकिन अल्लाह ही ने उनमें उल्फत (मुहब्बत) डाली, बेशक वह ज़बरदस्त और खूब हिकमत वाला है।

(64) ऐ नबी! आपके लिए अल्लाह काफी है और उन लोगों के लिए भी जो मोमिनों में से आपकी पैरवी करते हैं।

(65) ऐ नबी! मोमिनों को जिहाद पर उभारें, अगर तुम में बीस सब्र करने वाले हों तो वो दो सौ (काफिरों) पर ग़ालिब आएँगे और अगर तुममें एक सौ (साबिर) हों तो वह हज़ार (काफिर) पर ग़ालिब आएँगे, इसलिए कि वह लोग कुछ भी समझ नहीं रखते।

(66) अब अल्लाह ने तुमसे बोझ हल्का कर दिया और उसने जान लिया कि तुम्हारे

अन्दर कुछ कमज़ोरी है, इसलिए अगर तुममें एक सौ सब्र करने वाले हों तो वह दो सौ (काफिरों) पर ग़ालिब आएँगे और अगर तुममें से एक हज़ार (ऐसे) हों तो वह अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब आएँगे और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

(67) किसी नबी के लायक़ नहीं कि उसके पास क़ैदी हों यहाँ तक कि वह ज़मीन में खूब खूँरेजी करे (उन्हें क़त्ल करे। मुसलमानों!) तुम दुनिया का सामान चाहते हो और अल्लाह (तुम्हारी) आख़िरत चाहता है और अल्लाह ज़बरदस्त, खूब हिकमत वाला है।

(68) अगर अल्लाह की तरफ से पहले ही (एक बात) लिखी हुई न होती तो तुमने (बद्र के क़ैदियों से) जो (फिदया) लिया उसके बदले तुम्हें बड़ा अज़ाब आ पकड़ता।

(69) इसलिए जो हलाल, पाकीज़ा ग़नीमत तुमने हासिल की है उसमें से खाओ और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(70) ऐ नबी! जो क़ैदी तुम्हारे हाथों गिरफ्तार हैं, आप उनसे कह दें: अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में भलाई पाएगा तो तुम्हें इस (फिदये) से कहीं बेहतर अता करेगा जो तुम से लिया गया है और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(71) और (ऐ नबी!) अगर वह आपसे ख्यानत (दगा) करना चाहें तो वह पहले ही अल्लाह से दगा कर चुके हैं, फ़िर उसने उन्हें तुम्हारे क़ब्ज़े में दे दिया और अल्लाह खूब जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(72) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अपने मालों और अपनी जानों के साथ अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन्होंने (मुहाजिरों को अपने यहाँ) जगह दी और (उनकी) मदद की, वह एक दूसरे के हिमायती हैं और जो लोग ईमान तो लाए मगर उन्होंने हिजरत नहीं की, उनकी हिमायत से तुम्हें कोई गर्ज़ नहीं यहाँ तक कि वह हिजरत करें और अगर वह तुमसे दीन (के मामले) में मदद मांगें तो तुम पर मदद लाज़िम है मगर उस क़ौम के खिलाफ नहीं कि जिनके और तुम्हारे दरम्यान कोई मुआहिदा हो और तुम जो काम करते हो अल्लाह देख रहा है।

(73) और जिन लोगों ने कुफ्र किया वह आपस में एक दूसरे के हिमायती हैं। (ऐ मुसलमानों!) अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो ज़मीन में फित्ना और बड़ा फसाद मचेगा।

(74) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन्होंने (मुहाजरीन को) जगह दी और (उनकी) मदद की, वही लोग सच्चे मोमिन

हैं, उनके लिए मग्फ़िरत और बइज्ज़त रोज़ी है।

(75) और जो लोग बाद में ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और तुम्हारे साथ (मिल कर) जिहाद किया, तो वह भी तुम्ही में से हैं और अल्लाह की किताब में (खून के) रिश्तेदार आपस में एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार, बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

सूरह तौबा-9

(यह मदनी सूरत है इसमें 129 आयतें और 16 रूकू हैं)

(1) (ऐ मुसलमानों!) जिन मुश्रिकीन से तुमने अहद कर रखा था, अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से उन्हें साफ जवाब है।

(2) इसलिए (ऐ मुश्रिको!) तुम ज़मीन में चार माह चल फ़िर लो और जान लो कि तुम अल्लाह को मजबूर नहीं करे सकते और यह कि अल्लाह काफिरों को रूस्वा करने वाला है।

(3) और हज-ए-अकबर के दिन अल्लाह और उसके रसूल की जानिब से लोगों के लिए ऐलान है कि अल्लाह और उसका रसूल मुश्रिकों से बैज़ार हैं, लिहाज़ा (ऐ मुश्रिकों!) अगर तुम तौबा कर लो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है और अगर तुमने (हक़ से) मुँह मोड़े रखा तो जान लो कि तुम अल्लाह को मजबूर नहीं कर सकते और (ऐ नबी!) आप उन काफिरों को दर्दनाक अज़ाब की खबर सुना दें।

(4) लेकिन जिन मुश्रिकों से तुमने अहद किया है फ़िर उन्होंने तुम्हारे हक़ में कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबले में किसी की मदद की तो उनसे (मुक़र्ररा) मुद्दत तक उनका अहद पूरा करो। बेशक अल्लाह मुत्तक़ियों को पसंद करता है।

(5) फ़िर जब हुरमत वाले महीनें गुज़र जाऐं तो तुम मुश्रिकीन को जहाँ कहीं पाओ क़त्ल कर दो और उन्हें पकड़ लो और उनको घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठे रहो, फ़िर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो उनकी राह छोड़ दो, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(6) और (ऐ नबी!) अगर मुश्रिकों में से कोई आपसे पनाह मांगे तो उसको पनाह दें यहाँ तक कि वह अल्लाह का कलाम सुन ले, फ़िर उसे उसकी अमन की जगह पहुँचा दें, इसलिए कि बेशक वह ऐसे लोग हैं जो इल्म नहीं रखते।

(7) भला मुश्रिकों के लिए अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक कोई अहद (सन्धि) क्यों कर हो सकता है सिवाए उन लोगों के

जिनसे तुम ने मस्जिदे हराम के क़रीब अहद लिया था, फ़िर जब तक वह तुम्हारे साथ सीधे रहें तुम भी उनके साथ सीधे रहो, बेशक अल्लाह मुत्तक़ियों को पसंद करता है।

(8) किस तरह (मुश्रिकों से अहद रह सकता है?) जबकि उनका यह हाल है कि अगर वह तुम पर गलबा पा लें तो वह तुम्हारे मामले में रिश्तेदारी का लिहाज़ करेंगे न किसी अहद का, वह अपने मुँह (ज़बान) से तुम्हें खुश करते हैं और उनके दिल इन्कार करते हैं और उनमें से अक्सर नाफरमान हैं।

(9) उन्होंने अल्लाह की आयतों को थोड़ी सी क़ीमत पर बेचा फ़िर (लोगों को) उसके रास्ते से रोका, बेशक बुरा है जो वह करते हैं।

(10) वह किसी मोमिन के मामले में रिश्तेदारी का लिहाज़ करते हैं न किसी अहद का, और वही लोग हद से गुज़रने वाले हैं।

(11) फ़िर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो वह दीन में तुम्हारे भाई हैं और हम अपनी निशानियां उन लोगों के लिए तफ्सील से बयान करते हैं जो इल्म रखते हैं।

(12) और अगर वह अपने अहद के बाद अपनी क़समों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में तअन करें तो कुफ़्र के उन सरदारों से जंग करो, बेशक उनकी क़समों का कोई एतबार नहीं, शायद कि वह रूक जाऐं।

(13) क्या तुम उन लोगों से नहीं लड़ोगे जिन्होंने अपनी क़समें तोड़ डालीं और रसूल को (मक्का से) निकालने का इरादा किया और उन्होंने ही पहले पहल तुमसे लड़ाई शुरू की? क्या तुम उनसे डरते हो? हालांकि अल्लाह ही ज़्यादा हक़दार है कि तुम उससे डरो अगर तुम मोमिन हो।

(14) उनसे (खूब) लड़ाई करो, अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों अज़ाब में डालेगा और उन्हें रूस्वा करेगा और तुम्हें उन पर फतह देगा और मोमिनों के सीनों को शिफा (ठंडक) बख्शेगा।

(15) और वह उनके दिलों का गुस्सा दूर करेगा और अल्लाह जिस पर चाहे तवज्जो फरमाता है और अल्लाह खूब जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(16) क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम्हें (यूहीं) छोड़ दिया जाएगा जबकि अभी अल्लाह ने तुममें से उन लोगों को नहीं छांटा जिन्होंने जिहाद किया और अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को दिली दोस्त नहीं बनाया और तुम जो अमल करते हो अल्लाह उनकी खूब खबर रखता है।

(17) मुश्रिकीन इस लायक़ नहीं कि वह

अल्लाह की मस्जिदें आबाद करें जबकि वह अपने आप कुफ्र की गवाही दे रहे हों, उन्हीं लोगों के सब अमाल बरबाद हो गए और वह हमेशा दोज़ख में रहेंगे।

(18) अल्लाह की मस्जिदें तो सिर्फ वह आबाद करता है जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया और उसने नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरा, लिहाज़ा उम्मीद है कि यही लोग हिदायत याफ्ता लोगों में से होंगे।

(19) क्या तुमनें हाजियों को पानी पिलाना और मस्जिदे हराम को आबाद करना उस शख्स के (आमाल के) बराबर क़रार दे रखा है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया और उसने अल्लाह की राह में जिहाद किया, अल्लाह के नज़दीक यह बराबर नहीं हो सकते और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं दिया करता।

(20) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ उनका दरजा बहुत बड़ा है और वही मुराद पाने वाले हैं।

(21) उनका रब उन्हें अपनी तरफ से रहमत और रज़ामन्दी और ऐसे बाग़ों की खुशखबरी सुनाता है जिनमें उनके लिए हमेशा रहने वाली नेअमतें होंगी।

(22) वह उनमें हमेशा रहेंगे, बेशक अल्लाह के यहाँ बहुत बड़ा अज्र है।

(23) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अगर तुम्हारे बाप और भाई ईमान पर कुफ्र को पसंद करें तो तुम (हरगिज़) उन्हें दोस्त न बनाओ और तुममें से जो उनको दोस्त बनाएँगे, तो वही लोग ज़ालिम हैं।

(24) (ऐ नबी!) कह दीजिए अगर तुम्हारे बाप और बेटे और भाई और बीवियां और तुम्हारा कुनबा क़बीला और जो माल तुमने कमाए और वह तिजारत जिसके मन्द पड़ जाने का तुम्हें डर है और मकानात जिन्हें तुम पसंद करते हो, (यह सब) तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद से ज़्यादा पसंद हैं तो इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म भेज दे और अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता।

(25) यक़ीनन अल्लाह ने बहुत से मौक़े पर तुम्हारी मदद की और हुनैन के दिन (भी) जबकि तुम्हारी कसरत ने तुम्हें खुशफहमी में डाल दिया था, तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आई और ज़मीन फराखी के बावजूद तुम पर तंग हो गई फ़िर तुम पीठ फेर कर पलटे।

(26) फ़िर अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनों पर अपनी तस्कीन (शांति)

नाज़िल की और उसने ऐसे लश्कर भेजे जो तुमने नहीं देखे और जिन लोगों ने कुफ्र किया उन्हें अज़ाब दिया और काफिरों की यही सज़ा है।

(27) फ़िर उसके बाद अल्लाह जिस पर चाहेगा तवज्जा फरमाएगा और अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(28) ऐ ईमान वालो! मुश्रिक तो हैं ही पलीद, लिहाज़ा वह इस बरस के बाद मस्जिदे हराम के क़रीब न आने पाऐं और अगर तुम्हें तंगदस्ती का ख़ौफ है, तो अगर अल्लाह चाहेगा तो तुम्हें अपने फज़्ल से ग़नी कर देगा, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(29) उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं लाते और उस चीज़ को हराम नहीं ठहराते जिसे अल्लाह ने और उसके रसूल ने हराम ठहराया है, और दीने हक़ को क़बूल नहीं करते, वह जो अहले किताब में से हैं, (उनसे लड़ो) यहाँ तक कि वह ज़लील हो कर अपने हाथ से जिज़िया दें।

(30) और यहूदियों ने कहाः उज़ैर अल्लाह का बेटा है और ईसाइयों ने कहाः ईसा अल्लाह का बेटा है, यह उनके मुँह की बातें हैं, यह उन काफिरों की बात की बराबरी करते हैं जो उनसे पहले गुज़रे, अल्लाह उन्हें हलाक करे यह कहाँ बहके फिरते हैं।

(31) उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर अपने औलमा और दरवेशों को (अपना) रब बना लिया और मसीह इब्ने मरयम को भी, हालांकि उन्हें यही हुक्म दिया गया था कि वह सिर्फ एक मअ़बूद (अल्लाह) की इबादत करें जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह उस शिर्क से पाक है जो वह करते हैं।

(32) वह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँहों से बुझा दें और अल्लाह अपने नूर को पूरा कर के रहता है, चाहे काफिरों को बुरा ही लगे।

(33) वही (अल्लाह) है जिसने अपने रसूल को हिदायत (मार्ग-दर्शन) और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे, चाहे मुश्रिकीन को बुरा ही लगे।

(34) ऐ ईमान वालों! बेशक अक्सर औलमा और दरवेश लोगों का माल नाहक़ ही खाते हैं और वह (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग सोना और चांदी जमा करते हैं और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते, तो आप उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खबर सुना दें।

(35) जिस दिन वह माल दोज़ख की आग़ में तपाया जाएगा फ़िर उससे उनके माथों, उनके पहलुओं और उनकी पीठों को दाग़ा जाएगा (और कहा जाएगाः) यह वह (माल)

है जो तुमने अपने लिए जमा किया था, लिहाज़ा अब इसका मज़ा चखों जो तुम जमा करते रहे थे।

(36) बेशक अल्लाह के नजदीक महीनों की गिनती बारह महीने ही है अल्लाह की किताब में, जिस दिन उसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया, उनमें से चार महीने हुरमत वाले है, यही सीधा दीन है, इसलिए इन (महीनों) में अपने आप पर ज़ुल्म न करो और तमाम मुश्रीकीन से लड़ों जैसे वह तुम सबसे लड़ते है और जान लो कि बेशक अल्लाह मुत्तकियों के साथ है।

(37) बिलाशुब्ह किसी महीने को आगे पीछे कर देना कुफ्र है, ज़्यादती है उसकी वजह से काफिर गुमराह किये जाते है, वह एक साल इसे हलाल कर लेते है और दूसरे साल उसे हराम (ख्याल करते है) ताकि उन (महीनों) की गिनती पूरी करें जो अल्लाह ने हराम ठहराऐ है, फ़िर वह हलाल ठहरा लें जिसे अल्लाह ने हराम ठहराया। उनके बुरे आमाल उन्हें भले दिखाई देते है और अल्लाह काफिरों को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नही देता।

(38) ऐ ईमान वालों! तुम्हें क्या हो गया है, जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में निकलों तो तुम ज़मीन पर ढेर हो जाते है? क्या तुम आख़िरत को छोड़कर दुनिया की जिन्दगी पर रीझ गए हो? इसलिए कि दुनिया की जिन्दगी का फायदा तो आख़िरत (के मुकाबले) में बहुत हक़ीर है।

(39) अगर तुम नही निकलोगे तो अल्लाह तुम्हें दर्दनाक अजाब देगा और तुम्हारी जगह किसी और क़ौम को ले आएगा और तुम उसका कुछ भी न बिगाड़ सकोगे और अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(40) अगर तुम इस (नबी) की मदद नहीं करोगे तो बेशक अल्लाह ने उसकी (उस वक़्त) मदद की जब काफिरों ने उसको (मक्का से) निकाल दिया था, (वह) दो में दूसरा था, जबकि वह दोनों गार (सोर) में थे, जब वह (नबी) अपने साथी (अबू बकर) से कह रहा थाः ग़म न कर, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है, फ़िर अल्लाह ने उस पर अपनी तरफ से सुकून (शांति) नाजिल किया और ऐसे लश्करों से उसकी मदद की जिन्हें तुमने नहीं देखा और उसने काफिरों की बात को पस्त कर दिया और बात तो अल्लाह ही की बुलन्द है और अल्लाह बहुत जबरदस्त है, खूब हिकमत वाला है।

(41) तुम हलके भी निकलों और बोझल भी और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम इल्म रखते हो।

(42) अगर माले ग़नीमत जल्द हासिल होने वाला और सफर हल्का होता तो वह

(मुनाफिक) आपके साथ ज़रूर चलते लेकिन उन्हें मंजिल दूर नज़र आई और अब वह अल्लाह की कसमें खाएँगे कि अगर हम ताक़त रखते तो तुम्हारे साथ जरूर निकलते। वह खुद को हलाक कर रहे हैं और अल्लाह जानता है कि बेशक वह सरासर झूठे है।

(43) (ऐ नबी!) अल्लाह ने आपको माफ कर दिया, आपने उन (मुनाफिक़ीन) को रूख्सत क्यों दी? (आप रूख्सत न देते) यहाँ तक कि आप पर जाहिर हो जाते सच्चे लोग और आप झूठों को जान लेते।

(44) (ऐ नबी!) जो लोग अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं वह आपसे रूख्सत नहीं मांगते इससे कि वह अपने मालों और जानों के साथ जिहाद करें और अल्लाह परहेज़गारों को खूब जानता है।

(45) आपसे रूख्सत तो सिर्फ वह लोग मांगते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हैं, लिहाज़ा वह अपने शक में पड़े तरदुद कर रहे हैं।

(46) और अगर वह निकलने का इरादा करते तो उसके लिए सामान ज़रूर तैयार करते लेकिन अल्लाह को उनका उठना पसंद न था, इसलिए उसने उन्हें सुस्त कर दिया और (उनसे) कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बेठै रहो।

(47) अगर वह (मुनाफिक) तुम्हारे साथ निकलते भी तो वह तुम्हारे लिए खराबी ही बढ़ाते और तुम्हारे अन्दर फित्ना (खड़ा करने) की ख्वाहिश लिए दोड़े दोड़े फिरते और तुममें कुछ उनके जासूस हैं और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है।

(48) (ऐ नबी!) यक़ीनन उन्होंने इससे पहले भी फित्ना (फैलाना) चाहा था और आपके मआमलात बिगाड़ने की कोशिश की थी यहाँ तक कि हक़ आ गया और अल्लाह का हुक्म ग़ालिब ठहरा जबकि वह नापसंद ही करते रहे।

(49) और उनमे से कोई आपसे कहता है कि मुझे रूख्सत दे दें और फित्ने में न डालें। सुन लो! वह फित्ने में पड़ चुके हैं और बेशक जहन्नम काफिरों को घेरने वाली है।

(50) (ऐ नबी!) अगर आपको कोई भलाई पहुँचती है तो उन्हें बुरी लगती है और अगर आप पर कोई मुसीबत पड़ती है तो वह कहते हैं कि हमने तो अपने मामले में पहले ही एहतियात बरती थी। और वह खुश खुश लौट जाते हैं।

(51) (ऐ नबी!) कह दीजिएः हमें तो सिर्फ वह (मुसीबत) पहुँचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी, वही हमारा कारसाज़ है और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

(52) (ऐ नबी!) कह दीजिएः तुम हमारे हक़ में दो भलाईयों में से बस एक (फतह या शहादत) का इन्तिज़ार करते हो और हम तुम्हारे हक़ में यह इन्तिज़ार करते हैं कि अल्लाह तुम्हें अपने पास से अज़ाब दे या हमारे हाथों (अज़ाब दिलवाए), इसलिए तुम भी इन्तिज़ार करो, बेशक हम भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहे हैं।

(53) (ऐ नबी!) कह दीजिएः तुम खुशी से खर्च करो या न खुशी से तुमसे हरगिज़ क़बूल नहीं किया जाएगा, बेशक तुम नाफरमान लोग हो।

(54) और उनके खर्च किये हुए माल क़बूल किये जाने में सिर्फ यह रूकावट है कि उन्होंने अल्लाह के साथ और उसके रसूल के साथ कुफ्र किया और वह नमाज़ के लिए सुस्त हो कर ही आते हैं और वह नागवारी ही से खर्च करते हैं।

(55) इसलिए उनके माल और उनकी औलाद आपको हैरत में न डालें, यक़ीनन अल्लाह यही चाहता है कि उनकी वजह से उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ही में अज़ाब दे और उनकी जानें हालते कुफ्र ही में निकलें।

(56) और वह अल्लाह की क़समें खाते हैं कि बेशक वह तुममें से हैं हालांकि वह तुममें से नहीं बल्कि वह तो डरपोक लोग हैं।

(57) अगर वह कोई पनाह की जगह या गार (गुफा) या कोई और घुस बैठने की जगह पाऐं तो उसकी तरफ ज़रूर भाग निकलें रस्सियां तुड़ा कर।

(58) और उनमें से कुछ वह हैं कि आप पर सदक़ात (के बंटवारे) में ऐतराज करते है इसलिए अगर उन्हें उसमें से कुछ दे दिया जाए तो राज़ी रहते है और अगर उसमें से न दिया जाए तो वह झट नाराज हो जाते हैं।

(59) और (क्या ही अच्छा होता) अगर वह इस पर राज़ी रहते जो अल्लाह ने और उसके रसूल ने उन्हें दिया और कहते कि अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है, जल्द ही अल्लाह हमें अपने फ़ज़्ल से देगा और उसका रसूल भी, बेशक हम अल्लाह ही की तरफ राग़िब है।

(60) ज़कात तो सिर्फ फक़ीरों और मिस्कीनों और उन अहलकारों के लिए है जो उस (की वसूली) पर मुक़र्रर हैं और उनके लिए जिनकी दिलदारी मक़सूद है और गर्दनें छुड़ाने और क़र्ज़दारों (के क़र्ज़ उतारने) के लिए और अल्लाह की राह में और मुसाफिरों (की मदद) में, (यह) अल्लाह की तरफ से फर्ज़ है और अल्लाह खूब जानने वाला, हिकमत वाला है।

(61) और उन (मुनाफिक़ों) में से कुछ वह है जो नबी को तकलीफ देते हैं और कहते हैं कि वह तो सिर्फ कान है (हर एक की सुन

और मान लेता है) आप कह दीजिएः वह तुम्हारे लिए खैर का कान है, वह अल्लाह पर यक़ीन रखता है और मोमिनों (की बातों) पर यक़ीन रखता है, और तुममें से जो ईमान लाए उनके लिए रहमत है। और जो लोग अल्लाह के रसूल को तकलीफ देते हैं उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(62) (ऐ मुसलमानों!) वह (मुनाफिक़ीन) तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी रखें हालांकि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा हक़दार हैं कि वह उन्हें राज़ी रखें अगर यह लोग मोमिन हैं।

(63) क्या उन्हें मालूम नहीं हुआ कि बेशक जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफत करता है तो उसके लिए जहन्नम की आग है, वह हमेशा उसमें रहेगा, यह बहुत बड़ी रूस्वाई है।

(64) मुनाफिक़ीन इस बात से डरते हैं कि उन (मुसलमानों) पर कोई सूरत नाज़िल कर दी जाए, बेशक अल्लाह वह बातें ज़ाहिर करने वाला है जिससे तुम डरते हो।

(65) और अगर आप उनसे पूछें तो वह ज़रूर कहेंगे कि हम तो सिर्फ हँसी मज़ाक और दिल्लगी करते थे। कह दीजिएः क्या तुम अल्लाह और उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ मज़ाक करते थे?

(66) (अब) बहाने मत बनाओ, यक़ीनन तुमने अपने ईमान के बाद कुफ्र किया है, अगर हम तुममें से एक गिरोह को माफ भी कर दें तो दूसरे गिरोह को इस वजह से अज़ाब देंगे कि वह मुजरिम थे।

(67) मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें सब एक जैसे हैं, वह बुरे काम का हुक्म देते हैं और नेक काम से रोकते हैं और (खर्च करने से) अपने हाथ रोके रखते हैं। उन्होंने अल्लाह को भुला दिया। बेशक मुनाफिक़ीन ही नाफरमान है।

(68) अल्लाह ने मुनाफिक़ मर्दों और मुनाफिक़ औरतों और काफिरों से दोज़ख की आग का वादा कर रखा है, वह उसमें हमेशा रहेंगे, वह (दोज़ख) उन्हें काफी है और अल्लाह ने उन पर लअनत की है और उनके लिए हमेशा का अज़ाब है।

(69) मुनाफिक़ों! तुम उन लोगों की तरह हो जो तुमसे पहले थे, वह कुव्वत में तुमसे कहीं ज़बरदस्त और माल व औलाद में कहीं ज़्यादा थे, इसलिए वह (दुनिया में) अपना हिस्सा बरत चुके, पस तुमने (भी) अपना हिस्सा बरत लिया जिस तरह उन लोगों ने अपना हिस्सा बरत लिया जो तुमसे पहले थे और तुम फिज़ूल बातों में उलझे रहे जिस तरह वह फिज़ूल बातों में उलझे रहे। यही लोग हैं जिन के आमाल दुनिया और आख़िरत में बरबाद हो गए और यही लोग नुक्सान

पाने वाले हैं।

(70) क्या उन तक उन लोगों की खबर नहीं पहुँची जो उनसे पहले थे (यानी) क़ौमे नूह और आद व समूद और क़ौमे इब्राहीम और मदयन वाले और वह बस्तियां जिन्हें उलट दिया गया था। उनके पास उनके रसूल खुली निशानियां ले कर आए, फ़िर अल्लाह ऐसा नहीं कि उन पर ज़ुल्म करता लेकिन वह खुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।

(71) मोमिन मर्द और मोमिन औरतें आपस में एक दूसरे के मददगार हैं। वह नेकी का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करते हैं। यही लोग जिन पर अल्लाह ज़रूर रहम फरमाएगा, बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है खूब हिकमत वाला।

(72) अल्लाह ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से ऐसे बागों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, वह हमेशा उनमे रहेंगे और सदाबहार बागों में पाकीज़ा महलों का (वादा है) और अल्लाह की रज़ामन्दी सबसे बड़ कर (नेअमत) होगी, यही अज़ीम कामयाबी है।

(73) ऐ नबी! काफिरों और मुनाफिक़ों से जिहाद कीजिए और उन पर सख़्ती कीजिए और उनका असल ठिकाना दोज़ख है और वह बदतरीन मुक़ाम है।

(74) वह (मुनाफिक़ीन) अल्लाह की क़समें खाते हैं कि उन्होंने (कोई बात) नहीं कही, हालांकि उन्होंने ज़रूर कलमा-ए-कुफ्र कहा था और वह इस्लाम लाने के बाद काफिर हो गए हैं और उन्होंने वह कुछ करने का इरादा किया जो वह न कर सके और उन्होंने गुस्सा नहीं निकाला मगर इस बात पर कि अल्लाह और उसके रसूल ने अपने फज़्ल से उन्हे ग़नी कर दिया, फ़िर अगर वह तौबा कर लें तो उनके लिए बेहतर होगा और अगर वह मुँह मोड़ लें तो अल्लाह उन्हें दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब देगा और उनका ज़मीन में कोई हिमायती और कोई मददगार न होगा।

(75) और उनमें से कुछ वह हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया था कि अगर अल्लाह ने अपने फज़्ल से हमें अता किया तो हम ज़रूर सदक़ा खैरात करेंगे और हम ज़रूर सालिहीन (नेक लोगों) में से हो जाएंगे।

(76) फ़िर जब अल्लाह ने अपने फज़्ल से उन्हें अता किया तो वह कंजूसी पर उतर आए और उन्होंने (हक़) से मुँह मोड़ लिया और वह (अपने अहद से) फ़िर गए।

(77) फ़िर अल्लाह ने उन्हें उनके दिलों में निफाक़ डाल कर सज़ा दी उस दिन तक लिए जब वह अल्लाह के हुज़ूर में हाजिर होंगे, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से जो वादा

किया था, उसके खिलाफ वरज़ी की और इसलिए कि वह झूठ बोलते थे।

(78) क्या यह लोग नहीं जानते कि बेशक अल्लाह उनके भेदों और उनकी सरगोशियों को जानता है और बेशक अल्लाह ग़ैब की बातों को खूब जानता है।

(79) जो लोग तअन करते हैं खुले दिल से खैरात करने वाले मोमिनों पर, (उनके) सदक़ात की बाबत और उन पर भी जो अपनी (थोड़ी सी) मेहनत मज़दूरी के सिवा कुछ नहीं रखते, तो वह उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं, अल्लाह भी उनका मज़ाक़ उड़ाएगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(80) (ऐ नबी!) आप उनके लिए बख्शिश मांगे या न मांगे (बराबर है।) अगर आप उनके लिए सत्तर बार बख्शिश मांगेंगे तो भी अल्लाह उन्हें नहीं बख्शेगा। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ्र किया और अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता।

(81) जो लोग पीछे छोड़ दिए गए थे वह रसूलुल्लाह के पीछे अपने बैठे रहने पर खुश हुए और उन्हें बुरा लगा कि अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह की राह में जिहाद करें और उन्होंने (औरो से) कहा कि सख्त गर्मी में कूच न करो। (ऐ नबी!) कह दीजिएः जहन्नम की आग (इससे) कहीं ज़्यादा गर्म है, काश! वह यह बात समझते।

(82) इसलिए उन्हें चाहिए। कि वह थोड़ा हंसे और ज़्यादा रोऐं उन आमाल के बदले में जो वह कमाते थे।

(83) (ऐ नबी!) फ़िर अगर अल्लाह आपको वापस ले आए उन (मुनाफ़िक़ीन) के किसी गिरोह की तरफ फ़िर वह आप से (जिहाद पर) निकलने की इजाज़त मांगें तो कह दीजिएः तुम अब मेरे साथ कभी भी (जिहाद पर) नहीं निकालोगे और न कभी मेरे साथ (मिल कर) दुश्मन से लड़ोगे। तुम पहली बार (पीछे) बैठे रहने पर राज़ी हो गए थे तो (अब भी) पीछे रहने वालो के साथ बैठे रहो।

(84) और (ऐ नबी!) उनमें से जो मर जाए आप उसकी नमाज़ (ज़नाजा) हरग़िज़ न पढ़ें और न कभी उसकी क़ब्र पर खड़े हों। बेशक उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ्र किया और वह हालते कुफ्र में मरे।

(85) और (ऐ नबी!) उनके माल और उनकी औलाद आपको हैरत में न डाले। बेशक अल्लाह तो चाहता है कि उनकी वज़ह से उन्हें दुनिया में अज़ाब दे और उनकी जानें हालते कुफ्र में निकले।

(86) और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ (मिल कर) जिहाद करों

तो उनके दौलतमन्द आपसे रूख़्सत मांगने लगते हैं और कहते है कि हमें छोड़ दीजिए कि हम (घरों में) बैठे रहने वालों के साथ रहें।

(87) वह इस बात पर राज़ी हो गए कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रहें और उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई है, लिहाज़ा वह नहीं समझते।

(88) लेकिन रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और जो लोग उसके साथ ईमान लाए, उन्होंने अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद किया, और उन्ही लोगों के लिए भलाईयाँ है और यही लोग फलाह पाने वाले है।

(89) अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बागात तैयार किये है जिनके नीचे नहरें बहती है, वह उनमें हमेशा रहेंगे, यही अज़ीम कामयाबी है।

(90) और देहातियों में से बहानेबाज़ आए कि उन्हें रूख़्सत दी जाए जबकि वह लोग बैठे रहे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोला, उनमें से जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हें जल्द ही दर्दनाक आज़ाब आ पकड़ेगा।

(91) ज़ईफों और बीमारों पर और जो लोग कोई खैर नहीं पाते कि वह खर्च करें, उन पर (पीछे रहने में) कोई गुनाह नहीं जबकि वह अल्लाह और उसके रसूल की खैर ख्वाही करते हैं। नेकी करने वालों पर कोई इल्ज़ाम नहीं आता और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(92) और (ऐ नबी!) न उन लोगों पर (कोई गुनाह है) जो आपके पास आए कि आप उन्हें (सफरे जिहाद के लिए) सवारी दे (और) आपने कहा कि मेरे पास कोई सवारी नहीं तो वह इस हाल में लौट गए कि उनकी आँखें इस ग़म से आँसू बहा रहे थे कि उनके पास कुछ नहीं जिसे वह (अल्लाह की राह में) खर्च करें।

(93) (ऐ नबी!) इल्ज़ाम तो आता ही उन लोगों पर है जो आपसे रूख़्सत मांगते है, हालाँकि वह मालदार है, वह इस बात पर राज़ी हो गए कि पीछे (घरों में) रहने वाली औरतों के साथ रहें और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी, इसलिए वह नहीं जानते।

(94) वह (मुनाफ़िक़) तुम्हारे सामने बहाने पेश करेंगे जब तुम उनकी तरफ लौट कर जाओगे। (ऐ नबी! उनसे) कह दीजिएः तुम बहाने न करो, हम हरगिज़ तुम पर यक़ीन नहीं करेंगे, अल्लाह ने तुम्हारी खबरों से हमें आगाह कर दिया है, और अल्लाह जल्द तुम्हारे अमल देख लेगा और उसका रसूल भी, फ़िर तुम छुपी और खुली बातों को जानने वाले की तरफ लौटाए जाओगे, तो वह तुम्हें बता

देगा जो तुम अमल करते रहे।

(95) अनक़रीब वह तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समे खायेंगे जब तुम उनकी तरफ लौट कर जाओगे ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो, इसलिए तुम उनसे दरगुज़र (ही) करो। बिलाशुब्ह वह नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है, यह सज़ा है उन कामों की जो वह करते रहे थे।

(96) वह तुम्हारे सामने क़समें खाएँगे ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ। फ़िर अगर तुम उनसे राज़ी हो भी जाओ तो अल्लाह उन लोगों से राज़ी नहीं होता जो नाफरमान हों।

(97) देहाती कुफ्ऱ और मुनाफिक़त में ज़्यादा सख्त हैं और इस बात के ज़्यादा लायक़ हैं कि वह उन अहकाम को न जान पाएं जो अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल किये, और अल्लाह खूब जानने वाला, बहुत हिकमत वाला है।

(98) और कुछ देहाती जुर्माना समझते हैं जो वह (अल्लाह की राह में) खर्च करते हैं, और वह तुम्हारे खिलाफ ज़माने की गर्दिशों का इन्तिज़ार करते हैं (मगर) मनहूस गर्दिश उन्हीं के खिलाफ है, और अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(99) और कुछ देहाती वह हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते हैं, और वह जो कुछ खर्च करते हैं, उसे अल्लाह के यहाँ क़ुरबत और रसूल की दुआओं का ज़रिया समझते हैं। आगह रहो! यक़ीनन यह (खर्च करना) उनके लिए क़ुरबत का ज़रिया है, अल्लाह जल्द उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, बेशक अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(100) और (क़बूले इस्लाम में) पहल करने वाले मुहाजिरीन और अन्सार और वह लोग जिन्होंने नेकूकारी के साथ उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वह उससे राज़ी हो गए, और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग तैयार किये हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं, वह उनमें हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

(101) और तुम्हारे आसपास जो देहाती हैं, उनमें कुछ मुनाफिक़ हैं, और कुछ अहले मदीना भी निफाक़ पर अड़े हुए हैं। (ऐ नबी!) आप उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं। हम जल्द उन्हें दोहरी सज़ा देंगे, फ़िर वह बड़े अज़ाब की तरफ लौटाए जाएंगे।

(102) और कुछ दीगर लोग हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का इक़रार किया है। उन्होंने मिला जुला अमल किया, एक अच्छा और दूसरा बुरा, उम्मीद है कि अल्लाह उनकी तौबा क़बूल फरमाएगा, यक़ीनन अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(103) (ऐ नबी!) उनके मालों में से सदक़ा

लीजिए (ताकि) उसके ज़रिये से उन्हें पाक करें और उनका तज़किया करें और उनके लिए दुआ कीजिए, बेशक आपकी दुआ उनके लिए सुकून (की वजह) है, और अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(104) क्या उन्हे मालूम नहीं कि बेशक अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल फरमाता है और वही सदक़ात क़बूल करता है और यह कि बिलाशुब्ह अल्लाह ही बहुत तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला है?

(105) और (ऐ नबी!) कह दीजिएः तुम अमल करो, फ़िर अल्लाह तुम्हारे अमल को देखेगा और उसका रसूल और मोमिन भी और तुम जल्द उसकी तरफ लौटाए जाओगे जो छुपी और खुली बातें जानने वाला है, फ़िर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे।

(106) और कुछ और लोग हैं जिनका मआमला अल्लाह का हुक्म आने तक लेट कर दिया गया है, या तो वह उन्हें सज़ा देगा या उनकी तौबा क़बूल कर लेगा। और अल्लाह खूब जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(107) और (कुछ लोग हैं) जिन्होंने एक मस्जिद बनाई ताकि (मुसलमानों को) नुक्सान पहुँचाऐं और कुफ्र फैलाएं और मोमिनों के दरम्यान फूट डालें और उस शख्स के लिए घात का बन्दोबस्त करें जो इससे पहले अल्लाह और उसके रसूल से लड़ चुका है। और वह ज़रूर क़समें खाऐंगे कि हमारा इरादा तो नेक ही था। और अल्लाह गवाही देता है कि बेशक वह सरासर झूठे हैं।

(108) (ऐ नबी!) आप उस मस्जिद (ज़रार) में कभी भी खड़े न हों, अलबत्ता वह मस्जिद जिसकी बुनियाद अव्वल रोज़ ही से तक़्वा पर रखी गई है इसकी ज़्यादा हक़दार है कि आप उसमें खड़े हों। उसमें ऐसे लोग हैं जो इस बात को पसंद करते हैं कि वह पाक हों और अल्लाह पाक रहने वालों को पसंद करता है।

(109) क्या भला वह शख्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद अल्लाह के तक़्वा और (उसकी) रज़ा पर रखी, (वह) बेहतर है या वह शख्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद (दरिया के) एक खोखले गिरने वाले किनारे पर रखी? फ़िर वह उसे जहन्नम की आग में ले गिरा? और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता।

(110) उन्होंने जो इमारत बनाई थी वह हमेशा उनके दिलों में शक डाले रखेगी मगर यह कि उनके दिल टुकड़े टुकड़े हो जाऐं। और अल्लाह खूब जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(111) बेशक अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जानें और उनके माल जन्नत के बदले खरीद लिए हैं। वह अल्लाह की राह में लड़ते हैं, फ़िर वह क़त्ल करते हैं और क़त्ल किये जाते हैं, यह अल्लाह के ज़िम्मे सच्चा वादा है तौरात और इन्जील और कुरआन में। और अल्लाह से ज़्यादा अपने अहद को पूरा करने वाला कौन है? लिहाज़ा तुम अपने इसे सौदे पर खुश हो जाओ जो तुमने अल्लाह से किया, और यही बहुत बड़ी कामयाबी है।

(112) वह (मोमिन) तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रूकू करने वाले, सज्दा करने वाले, नेकी का हुक्म देने वाले और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की हदों की हिफाजत करने वाले हैं, और (ऐ नबी!) मोमिनों को खुशखबरी सुना दीजिए।

(113) नबी के और ईमान वालों के लायक़ नहीं कि वह मुश्रिकों के लिए बख्शिश की दुआ करें, चाहे वह उनके क़रीबी रिश्तेदार ही हो, उनके बारे में यह वाज़ेह हो जाने के बाद कि वह बिलाशुब्ह दोज़खी है।

(114) और इब्राहिम का अपने बाप के लिए बख्शिश की दुआ करना बस एक वादा की वजह से था जो वादा उन्होंने उससे किया था, फ़िर जब इब्राहिम पर वाजेह हो गया। कि यक़ीनन वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उससे बेज़ार हो गए। बेशक इब्राहिम बड़े नर्म दिल, बहुत सहन करने वाले थे।

(115) और अल्लाह ऐसा नही के किसी क़ौम को हिदायत (मार्ग-दर्शन) देने के बाद गुमराह कर दे, जब तक कि उनके लिए वह चीज़ वाज़ेह न कर दे जिन से वह बचें। बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जानता है।

(116) बेशक आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है, वही जिन्दा करता है और वही मारता है, और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नहीं।

(117) यक़ीनन अल्लाह ने नबी और मुहाजिरीन व अन्सार पर तव्वजह फरमाई वह जिन्होंने तंगी की घड़ी में आपकी पैरवी की, बाद उसके कि उनमें से एक गिरोह के दिल बहक जाने को थे, फ़िर अल्लाह ने उन पर मेहरबानी फरमाई। बेशक वह उन पर बहुत शफक़्क़त करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(118) और उन तीन अफराद पर भी (मेहरबानी फरमाई) जिन्हें (हुक्मे इलाही के इन्तिज़ार में) छोड़ दिया था, यहाँ तक कि जब ज़मीन फराखी के बावजूद उन पर तंग हो गई और उनकी जानें (भी) उन पर तंग हो गई, और उन्होंने समझा कि अल्लाह (के ग़ज़ब) से खुद उसके सिवा उनके लिए कोई जाए

पनाह नहीं, फ़िर अल्लाह ने उन पर तव्वजो की ताकि वह तौबा करें। बेशक अल्लाह बहुत ज्यादा तौबा कुबूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(119) ऐ लोगों! जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरो और सच बोलने वालों के साथ हो जाओ।

(120) अहले मदीना और उनके आस पास रहने वाले देहातियों के लायक नहीं था कि वह (जिहाद में) रसूलुल्लाह से पीछे रह जाए और न यह (जाईज) कि अपनी जान को नबी की जान से ज्यादा अज़ीज़ रखें, यह इसलिए कि यह वह (लोग) हैं कि बेशक इन्हें अल्लाह की राह में जो भी प्यास और थकावट और भूख (की तकलीफ) पहुँचती है, और वह जो भी ऐसी जगह रौंदते है जो काफिरों को सख्त नागवार हो, और वह दुश्मन से जो भी कामयाबी हासिल करते है, उसके बदले उनके लिए नेक अमल लिखा जाता है। बेशक अल्लाह नेको का अज्र बरबाद नहीं करता।

(121) और वह जो भी छोटा और बड़ा खर्च करते है और वह जो भी वादी (मैदान) तय करते है वह (सब) उनके लिए लिखा जाता है ताकि अल्लाह उन्हें उन कामों की बेहतरीन जज़ा (बदला) दे जो वह करते हैं।

(122) और मोमिनों के लिए मुनासिब नहीं कि वह सब ही निकल खड़े हो, फ़िर हर फिरक़े में से एक गिरोह दीन में समझ हासिल करने के लिए क्यों न निकला ताकि वह जब अपने क़बीले में वापस जाए तो उन्हें खबरदार करें ताकि वह (पीछे वाले भी अल्लाह से) डरें।

(123) ऐ लोगों जो ईमान लाए हो! तुम उन काफिरों से लड़ो जो तुम्हारे आस पास में है और चाहिए कि वह तुम्हारे अन्दर सख्ती पाए। और जान लो कि यक़ीनन अल्लाह मुत्तकियों के साथ है।

(124) और जब कोई सूरत नाजिल की जाती है तो उन (मुनाफिक़ीन) में से कुछ ऐसे है जो (तंजन) कहते किः तुम में से किसको इस (सूरत) ने ईमान में ज्यादा किया है? इसलिए जो लोग ईमान लाए है, इस सूरत ने इनको ईमान में ज्यादा किया है और वह खुश होते है।

(125) लेकिन जिन लोगों के दिलों में रोग है तो इस (सूरत) ने उनकी (पहली) गंदगी पर और गंदगी का इज़ाफा कर दिया और वह मरते दम तक काफिर ही रहे।

(126) क्या वह (मोमिन) नहीं देखते कि बेशक वह (मुनाफिक) हर साल एक या दो बार फित्ने में मुब्तिला किये जाते हैं? फ़िर भी वह तौबा नहीं करते और न वह नसीहत (उपदेश) पकड़ते है।

(127) और जब कोई सूरत नाजिल होती है तो वह एक दूसरे की तरफ निगाह उठाते है कि कहीं कोई (मुसलमान) तुम्हें देख तो नही रहा, फ़िर (चुपके से) खिसक जाते है। अल्लाह ने उनके दिलों को फ़ेर दिया है, इसलिए कि बेशक वह लोग समझते नहीं।

(128) (लोगों!) यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्ही में से एक रसूल आ गया है, इस पर तुम्हारा तकलीफ में मुब्तिला होना भारी गुजरता है वह तुम्हारी भलाई का बहुत इच्छुक है, मोमिनों पर निहायत शफ़ीक़, बहुत रहम करने वाला है।

(129) फ़िर भी अगर वह मुँह फ़ेर लें तो कह दीजिएः मुझे अल्लाह काफी है, उसके सिवा कोई माअबूद (बरहक़) नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया है और वह अर्शे अज़ीम का रब है।

सूरह यूनुस -10

(यह मक्की सूरत है इसमें 109 आयतें और 11 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलीफ लाम रा, यह हिकमत वाली किताब की आयतें हैं।

(2) क्या लोगों के लिए यह तअज्जुब (की बात) है कि हमने उनमें से एक आदमी की तरफ वह्यी भेजी कि आप लोगों को डराऐ और उन लोगों को खुशखबरी दें जो ईमान लाए कि बेशक उनके लिए उनके रब के यहाँ सच्चाई का मर्तबा है। काफिरों ने कहाः बेशक यह साफ जादूगर है।

(3) बेशक तुम्हारा रब वह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया, फ़िर वह अर्श पर मुस्तवी हो गया, वही हर काम की तदबीर करता है। कोई सिफारशी नहीं (बन सकता) बग़ेर उसकी इजाज़त के। यही अल्लाह तुम्हरा रब, इसलिए तुम उसकी इबादत करो, फ़िर क्या तुम नसीहत (उपदेश) नहीं पकड़ते?

(4) तुम सबको उसकी तरफ लौट कर जाना है, अल्लाह का वादा सच्चा है, बेशक वही मख़्लूक़ को पहली बार पैदा करता है, फ़िर वही उसे दोबारा ज़िन्दा करेगा ताकि उन लोगों को इंसाफ के साथ बदला दे जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए। और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिए पीने को खोलता हुआ पानी और द र्दनाक अज़ाब होगा, इसलिए कि वह कुफ़्र करते थे।

(5) वही है (अल्लाह) जिसने सूरज को चमक वाला बनाया और चाँद को नूर और उसकी मन्ज़िलें मुक़र्रर कीं ताकि तुम सालों की गिनती और हिसाब मालूम कर सको।

यह (सब कुछ) अल्लाह ने हक़ ही के साथ पैदा किया है। वह अपनी आयतें तफ़्सील से बयान करता है उन लोगों के लिए जो जानते हैं।

(6) बेशक रात और दिन के (अदल बदल कर) आने जाने में और जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है (उसमें भी), अलबत्ता निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो डरते हैं।

(7) बेशक वह लोग जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते, और वह दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी और उसी पर मुतमईन हैं, और वह लोग जो हमारी निशानियों से ग़ाफिल हैं।

(8) वही हैं जिनका ठिकाना दोज़ख है उन अमलों की वजह से जो वह कमाते थे।

(9) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, उनका रब उनके ईमान की वजह से उन्हें (जन्नत के बागों की) राह दिखाएगा, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, नेअमतों वाले बाग़ात में।

(10) उस (जन्नत) में उनकी पुकार होगीः ऐ अल्लाह! तू पाक है। और उसमें उनकी दुआ होगीः सलाम। और उनकी आखरी पुकार यह होगी कि तमाम तअरीफें अल्लाह रब्बुल आलमीन ही के लिए हैं।

(11) और अगर अल्लाह लोगों को बुराई पहुँचाने में जल्दी करता जैसा वह भलाई मांगने में जल्दी करते हैं तो उनकी मियाद पूरी हो चुकी होती, इसलिए हम उन लोगों को जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते, छोड़ देते हैं कि वह अपनी सरकशी में बहकते रहें।

(12) और जब इंसान को तकलीफ पहुँचती है तो वह हमें पुकारता है, अपने पहलू पर (लेटे) या बैठे या खड़े हुए, फ़िर जब हम उसकी तकलीफ दूर कर देते हैं तो वह (यूं) गुज़र जाता है जैसे उसने खुद को तकलीफ पहुँचने पर हमें पुकारा ही न था, इसी तरह हद से बढ़ने वालों के लिए उनके (बुरे) अमल पुरकशिश बना दिए गए।

(13) और अलबत्ता हम उन उम्मतों को हलाक कर चुके हैं जो तुमसे पहले गुज़रीं, जब उन्होंने जुल्म किया, और उनके पास उनके रसूल वाज़ेह (खुली खुली) दलीलों के साथ आए, और वह ऐसे न थे कि ईमान लाते। मुजरिम लोगों को हम इसी तरह सज़ा देते हैं।

(14) फ़िर उनके बाद हमने तुम्हें ज़मीन में जाँनशीन बनाया ताकि हम देखें कि तुम कैसे अमल करते हो।

(15) और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें तिलवात की जाती हैं, तो वह लोग जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते, कहते

हैंः तू इसके अलावा कोई (और) कुरआन ले आ, या उसे (कुछ) बदल दे। कह दीजिएः मुझ इख़्तियार नहीं कि मैं इसे अपनी तरफ से बदल दूं। मैं उसी चीज़ की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ वह्यी की जाती है, बेशक अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करू तो मुझे बड़े (सख़्त) दिन के अज़ाब से डर लगता है।

(16) कह दीजिएः अगर अल्लाह चाहता तो मैं इस (कुरआन) की तुम पर तिलावत न करता और न अल्लाह तुम्हें इसकी खबर देता। फ़िर मैंने (नुबूव्वत से पहले) तुम्हारे अन्दर एक उम्र गुज़ारी है, तो क्या तुम अक़्ल नहीं रखते?

(17) फ़िर उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन है जिसने अल्लाह पर झूठ गढ़ लिया या उसकी आयतों की झुठलाया? बेशक मुजरिम फलाह (कामयाबी) नहीं पाते।

(18) और वह अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नुक़्सान देती हैं और न नफा देती हैं, और वह कहते हैंः यह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारशी हैं। कह दीजिएः क्या तुम अल्लाह को उस चीज़ की खबर देते हो जिसे वह आसमानों में नहीं जानता और न ज़मीन में? वह पाक और बुलंद है उनसे जिनको वह शरीक ठहराते हैं।

(19) और पहले लोग एक ही उम्मत थे, फ़िर उन्होंने (आपस में) इख़्तिलाफ किया, और अगर न होती एक बात जो आपके रब की तरफ से पहले से तय हो चुकी है तो उनमें उस चीज़ के बारे में यक़ीनन फैसला कर दिया जाता जिसमें वह इख़्तिलाफ कर रहे हैं।

(20) और वह कहते हैंः इस पर इसके रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं नाज़िल की गई? तो आप कह दीजिएः यक़ीनन ग़ैब तो अल्लाह ही के लिए है, फ़िर तुम इन्तिज़ार करो बेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ।

(21) और जब हम उन (काफिर) लोगों को तकलीफ पहुँचने के बाद (अपनी) रहमत का मज़ा चखाते है तो वह फौरन ही हमारी आयतों में चालबाज़ियाँ करते है, कह दीजिएः अल्लाह सबसे तेज तर है चाल चलने में। बेशक हमारे फरिश्ते लिखते जाते हैं जो तुम चालबाज़ियाँ करते हो।

(22) वही है (अल्लाह) जो तुम्हें खुश्की (ज़मीन) और तरी (पानी) में चलाता है यहाँ तक कि जब तुम कश्तियों में होते हो और वह उन्हें (सवारों को) मवाफिक़ हवा के साथ लिए चलती है और वह उनसे खुश होते है, तो अचानक उन (कश्तियों) पर तुफानी हवा आ पहुचती हैं और लहरें उन पर हर तरफ से उमड़ आती हैं और वह ख्याल करते

हैं कि बेशक वह (तूफ़ान में) घिर गए हैं तो उस वक़्त खालिस अल्लाह की इबादत करते हुए उसे पुकारते हैं कि अगर तूने हमें इस (तूफ़ान) से निजात दी तो हम ज़रूर शुक्र गुजार हो जाएँगे।

(23) फ़िर जब उस (अल्लाह) ने उन्हें निजात दे दी तो वह फौरन ही ज़मीन में नाहक़ सरकशी करने लगते हैं। ऐ लोगों! तुम्हारी सरकशी (का वबाल) तुम्हारी अपनी ही जानों पर है, तुम दुनिया की जिन्दगी का फायदा (उठा लों), फ़िर तुम्हें हमारी तरफ लौटना है, फ़िर हम तुम्हें बताएंगे जो अमल तुम किया करते थे।

(24) बेशक दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल तो बारिश की सी है जो हमने आसमान से बरसाई, फ़िर उसके साथ ज़मीन की नबातात (वनस्पति) मिलकर निकली जिसमें से इन्सान और चौपाऐ खाते हैं यहाँ तक कि जब ज़मीन ने अपनी रौनक़ पकड़ी और लहलहा उठी और ज़मीन वालों ने समझा कि बेशक वह उस (फसल काटने) पर क़ादिर हैं तो हमारा हुक्म (आज़ाब) रात या दिन को (अचानक) आ गया, इसलिए हमने उसे कटी हुई खेती की तरह कर दिया जैसे कल वह थी ही नहीं, इसी तरह हम अपनी आयतें खोल कर बयान करते है उन लोगों के लिए जो ग़ौर व फ़िक्र करते है।

(25) और अल्लाह सलामती के घर (जन्नत) की तरफ बुलाता है, और वह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत देता है।

(26) जिन लोगों ने नेक काम किये उनके लिए भलाई है और ज़्यादा (दीदारे इलाही) है, और उनके चेहरों को स्याही और ज़िल्लत नहीं ढांपेगी, यही लोग जन्नती हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(27) और जिन लोगों ने बुरे काम किये तो बुराई का बदला उस (बुराई) के बराबर ही है, और उनको ज़िल्लत ढांप लेगी। कोई उन्हें अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने वाला नहीं होगा, यूं लगेगा कि उनके चेहरों पर अन्धेरी रात के टुकड़े उढ़ा दिए गए हैं, वही दोज़ख़ी हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(28) और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे, फ़िर हम उन लोगों से जिन्होंने शिर्क किया, कहेंगेः तुम और तुम्हारे शरीक अपनी अपनी जगह ठहरे रहो, फ़िर हम उनके दरम्यान जुदाई डाल देंगे, और उनके शरीक कहेंगेः तुम हमारी इबादत तो करते ही नहीं थे।

(29) इसलिए हमारे और तुम्हारे दरम्यान अल्लाह काफी गवाह है, बेशक हम तुम्हारी इबादत से बिल्कुल बेखबर थे।

(30) वहाँ हर शख़्स जांच लेगा जो कुछ उसने पहले (दुनिया में) किया था, और वह

अल्लाह की तरफ लौटाए जाएँगे जो उनका हक़ीक़ी मालिक है, और वह सब कुछ उनसे जाता रहेगा, जो वह झूठ गढ़ा करते थे।

(31) (ऐ नबी!) कह दीजिएः तुम्हें आसमान और ज़मीन से कौन रिज़्क़ देता है? या कानों और आँखों का मालिक कौन है? और कौन ज़िन्दा को मुरदे से निकालता है और मुरदे को ज़िन्दा से निकालता है? और कौन (दुनिया के) कामों का इन्तिज़ाम करता है? तो वह (काफिर) ज़रूर कहेंगेः अल्लाह! तो कह दीजिए क्या फ़िर तुम (अल्लाह से) डरते नहीं?

(32) यही तो है अल्लाह, तुम्हारा रब सच्चा, फ़िर हक़ के बाद गुमराही के सिवा क्या है? फ़िर तुम किधर फिरे जाते हो?

(33) इसी तरह आपके रब का कलमा उन लोगों के बारे में साबित हो कर रहा जिन्होंने नाफरमानी की कि बेशक वह ईमान नहीं लाएंगे।

(34) कह दीजिएः क्या तुम्हारे (बनावटी) शरीकों में से कोई है जो पहली बार मख़्लूक़ को पैदा करे, फ़िर उसे दोबारा पैदा कर दे? कह दीजिएः अल्लाह ही पहली बार मख़्लूक़ को पैदा करता है, फ़िर वही दोबारा उसे पैदा करेगा, लिहाज़ा तुम कहाँ बहकाए जाते हो?

(35) कह दीजिएः क्या तुम्हारे शरीकों मेंसे कोई है जो हक़ की तरफ हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता हो, वह इस बात का ज़्यादा हक़ दार है कि उसकी पैरवी की जाए या वह (हक़दार) है जो खुद हिदायत याफ्ता नहीं मगर यह कि उसे (हक़ की) हिदायत दी जाए, इसलिए तुम्हें क्या हुआ है तुम कैसे फैसले करते हो?

(36) और उन (काफिरों) में से अक्सर गुमान ही की पैरवी करते हैं। बेशक गुमान हक़ के मुक़ाबले में कुछ भी फायदा नहीं देता। बेशक अल्लाह खूब जानने वाला है जो कुछ वह कर रहे हैं।

(37) और यह क़ुरआन (ऐसा) नहीं कि गैरूल्लाह की तरफ से गढ़ लिया गया हो बल्कि यह तो उन किताबों की तस्दीक़ करता है जो इससे पहले की हैं और उन तमाम किताबों की तफ्सील (बयान करता) है, उसमें कोई शक नहीं, (यह) रब्बुलआलमीन की तरफ से है।

(38) क्या वह (काफिर) कहते हैं कि इस (रसूल) ने इसे गढ़ लिया है? (ऐ नबी!) कह दीजिएः तो तुम उस जैसी एक ही सूरत ले आओ और (और इसमें मदद के लिए) अल्लाह के सिवा जिन को बुला सकते हो बुला लो, अगर तुम सच्चे हो?

(39) बल्कि उन्होंने ऐसी चीज़ को झुठलाया जिसको अपने इल्म के दायरे में नहीं कर सके और अभी तक उसकी हक़ीक़त भी उन

पर नहीं खुली थी, इसी तरह उन लोगों ने झुठलाया था जो उनसे पहले थे, फ़िर देखिये ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुआ!

(40) और उनमें से कुछ वह हैं जो इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं और उनमें से कुछ वह हैं जो इस पर ईमान नहीं लाते। और आपका रब उन फसाद करने वालों को खूब जानता है।

(41) और अगर वह आपको झुठलाऐं तो कह दीजिए: मेरे लिए मेरा अमल है और तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल। तुम उससे बरी जो मैं अमल करता हूँ और मैं उससे बरी हूँ जो तुम अमल करते हो।

(42) और उनमें से कुछ वह हैं जो आपकी तरफ कान लगाते हैं, फ़िर क्या आप बहरों को सुना सकते हैं अगरचे वह अक़्ल न रखते हों?

(43) और उनमें से कुछ वह हैं जो आपकी तरफ देखते हैं, फ़िर क्या आप अन्धों को राह दिखा सकते हैं अगरचे वह न देखते हों?

(44) बेशक अल्लाह लोगों पर कुछ जुल्म नहीं करता मगर लोग अपने आप पर (खुद ही) जुल्म करते हैं।

(45) और जिस दिन वह उन्हें इकट्ठा करेगा (तो उन्हें यूं लगेगा) जैसे वह (दुनिया में) दिन की एक घड़ी से ज़्यादा न रहे थे। वह आपस में एक दूसरे को पहचान लेंगे। यक़ीनन वह लोग घाटे में रहे जिन्होंने अल्लाह की मुलाक़ात को झुठलाया, और वह हिदायत याफ्ता न थे।

(46) और (ऐ नबी!) अगर हम ऐसा कोई अज़ाब आपको दिखा दें जिसका हम उनसे वादा करते हैं या हम आपको वफात दे दें, तो उन्हें हमारी ही तरफ लौटना है, फ़िर अल्लाह उन कामों पर गवाह है जो वह करते हैं।

(47) और हर उम्मत का एक रसूल है, फ़िर जब उनका रसूल आ गया तो उनमें इंसाफ के साथ फैसला कर दिया गया, और उन पर जुल्म नहीं किया जाता।

(48) और वह (काफिर) कहते हैं यह (अज़ाब का) वादा कब (पूरा) होगा अगर तुम सच्चे हो?

(49) (ऐ नबी!) कह दीजिए: मैं अपनी ज़ात के लिए किसी नुक़्सान का इख़्तियार नहीं रखता और न नफा का मगर जो अल्लाह चाहे, हर उम्मत के लिए एक मुक़र्ररा वक़्त है। जब उनका मुक़र्ररा वक़्त आ जाता है तो वह (उससे) एक घड़ी भी आगे पीछे नहीं हो सकती।

(50) कह दीजिए: भला देखो तो, अगर उसका अज़ाब तुम पर रात को या दिन को आ जाए (तो क्या बचाओ कर लोगे? आखिर) क्या चीज़ है जिसके लिए मुजरिम जल्दी मचा रहे हैं?

(51) क्या फ़िर जब (अज़ाब) आ पड़ेगा (तब) उस पर ईमान लाओगे? (उस वक़्त कहा जाएगाः) क्या अब (ईमान लाते हो?) हालांकि तुम उसे जल्दी मांगते थे।

(52) फ़िर जिन्होंने ज़ुल्म किया उनसे कहा जाएगाः तुम दायमी (हमेशा का) अज़ाब का मज़ा चखो, तुम्हें उन्हीं कामों का बदला दिया जाता है जो तुम (दुनिया में) करते रहे।

(53) और (ऐ नबी!) वह आपसे दरयाफ़्त करते हैं क्या वह (अज़ाब) सचमुच आएगा? आप कह दीजिएः हाँ! मेरे रब की क़सम! वह सचमुच आएगा, और तुम (अल्लाह को) आजिज़ (मजबूर) नहीं कर सकते।

(54) और अगर हर ज़ालिम शख़्स के पास (सारी) ज़मीन का माल हो तो वह उसे (अज़ाब से बचने के लिए) ज़रूर फिदये में दे देगा, और मुजरिम जब अज़ाब देखेगा तो शर्मिन्दगी को छुपाएंगे और उनमें इंसाफ के साथ फैसला किया जाएगा और उन पर (कोई) ज़ुल्म नहीं होगा।

(55) जान लो! बेशक अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, जान लो! बिलाशुब्ह अल्लाह का वादा हक़ है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

(56) वही ज़िन्दा करता और (वही) मारता है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

(57) ऐ लोगो! यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से (क़ुरआन की) नसीहत आ गई है और (यह) शिफा है उन (बीमारियों) के लिए जो सीनों में हैं, और मोमिनों के लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) और रहमत है।

(58) (ऐ नबी!) कह दीजिएः यह अल्लाह के फ़ज़ल और उसकी रहमत से (नाज़िल हुआ) है, लिहाज़ा (लोगों को) चाहिए कि वह खुश हों, यह उन चीज़ों से बेहतर है जो वह जमा करते हैं।

(59) कह दीजिएः भला देखो तो, अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रिज़्क़ नाज़िल किया, फ़िर तुमने उसमें से कुछ हराम और कुछ हलाल ठहरा लिया। कह दीजिएः क्या अल्लाह ने तुम्हें (यह) हुक्म दिया है या तुम अल्लाह पर झूठ बाँधते हो?

(60) और क्या गुमान है उन लोगों का जो अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं रोज़े क़यामत के बारे में? बेशक अल्लाह लोगों पर बड़े फ़ज़ल वाला है लेकिन उनमें से अक्सर शुक्र नहीं करते।

(61) और (ऐ नबी!) आप जिस हाल में भी होते हैं और अल्लाह की तरफ से (नाज़िल शुदा) क़ुरआन में से जो कुछ भी पढ़ते हैं, और तुम लोग जो भी अमल करते हो, उस वक़्त हम तुम्हें देख रहे होते हैं। जब तुम उसमें मसरूफ़ (बिज़ी) होते हो। और आपके रब से ज़र्रा बराबर कोई चीज़ भी छुपी नहीं

होती, ज़मीन में और न आसमान में, और न कोई उससे छोटी (चीज़) और न बड़ी, मगर (वह) वाज़ेह किताब में (दर्ज) है।

(62) जान लो! बेशक औलिया अल्लाह पर कोई ख़ौफ न होगा और न वह ग़मग़ीन होंगे।

(63) (यानी) वह लोग जो ईमान लाए और (अल्लाह से) डरते रहे।

(64) उन के लिए दुनिया की ज़िन्दगी में खुशखबरी है और आख़िरत में (भी), अल्लाह की बातों में तब्दीली नहीं होती, यही बहुत बड़ी कामयाबी है।

(65) और (ऐ नबी!) उनकी बातें आपको ग़मग़ीन न करें, बेशक इज्ज़त तो सारी अल्लाह ही के लिए है, वही खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(66) जान लो! बेशक अल्लाह ही के लिए है आसमानों में जो (मख़्लूक़) है और जो ज़मीन में है। और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं, वह (किसी और चीज़ की) पैरवी नहीं करते मगर सिर्फ गुमान की पैरवी करते हैं, और वह महज़ (सिर्फ) क़यास (अन्दाज़े) के घोड़े दौड़ाते हैं।

(67) वही है (अल्लाह) जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई, ताकि उसमें सुकून (हासिल) करो और दिन को रोशन बनाया। बेशक उसमें बहुत बड़ी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

(68) उन्होंने कहा कि अल्लाह ने बेटा बना लिया है। वह (औलाद से) पाक है, वह बेपरवाह है उसी के लिए है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, तुम्हारे पास इस बात की कोई दलील नहीं। क्या तुम अल्लाह की बाबत वह बात कहते हो जो तुम जानते नहीं?

(69) (ऐ नबी!) कह दीजिएः बिलाशुब्ह जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधते है, वह फलाह (कामयाबी) नहीं पाएँगे।

(70) दुनिया में थोड़ा सा फायदा उठाना है, फ़िर उन्हें हमारी ही तरफ लौटना है, फ़िर उनके कुफ़्र करने की वज़ह से हम उन्हें सख्त अज़ाब का मज़ा चखाएँगें।

(71) और (ऐ नबी!) आप उन्हें नूह का क़िस्सा सुना दीजिएः जब उसने अपनी क़ौम से कहाः ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम्हें मेरा क़याम और अल्लाह की आयतों के साथ नसीहत (उपदेश) करना नागवार है तो मैंने अल्लाह ही पर भरोसा किया है, इसलिए तुम और तुम्हारे शरीक मिलकर (मेरे खिलाफ) फैसला कर लो, फ़िर तुम्हारा फैसला तुम में (किसी से) पौशिदा न रहे, फ़िर मेरे खिलाफ वह कर गुजरो और मुझे मुहलत न दो।

(72) फ़िर अगर तुम (हक़ से) मुँह मोड़ लो, तो मैंने तुमसे किसी अज्र (बदले) का

सवाल नहीं किया, मेरा अज्र तो अल्लाह के पास है, और मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं फरमाबरदारों में से हो जाऊँ।

(73) फ़िर उन्होंने उसे झुठलाया तो हमने उसे और उन लोगों को निजात दी जो उसके साथ कश्ती में (सवार) थे, और हमने उन्हें (उनका) जाँनशीन बना दिया, और हमने उन लोगों को गर्क़ कर दिया जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था, फ़िर (ऐ नबी!) देखे उन लोगों का कैसा अन्जाम हुआ जिन्हें डराया गया था?

(74) फ़िर हमने नूह के बाद कई रसूल उनकी (अपनी अपनी) क़ौम की तरफ भेजे, तो वह उनके पास वाजेह दलीलें लेकर आए, तो (फ़िर भी) न हुए कि वह इस (हिदायत) पर ईमान ले आते जिसे वह पहले झुठला चुके थे। इसी तरह हम हद से गुज़रने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।

(75) फ़िर उसके बाद हमने मूसा और हारून को अपनी आयतों के साथ फ़िरऔन और उस (की क़ौम) के सरदारों की तरफ भेजा, तो उन्होंने घमंड किया और वह लोग मुजरिम थे।

(76) फ़िर जब उनके पास हमारी तरफ से हक़ आ गया, तो उन्होंने कहाः बेशक यह तो खुला जादू है।

(77) मूसा ने कहाः क्या तुम हक़ के बारे में (यह) कहते हो जब वह तुम्हारे पास आ गया? क्या यह जादू है? हालांकि जादूगर तो फलाह (कामयाबी) नहीं पाते।

(78) उन्होंने कहाः क्या तू हमारे पास आया है कि हमें उस (तरीक़े) से हटा दे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया, और तुम दोनों के लिए ज़मीन में इक़्तिदार (हुकूमत) हो? जबकि हम तुम दोनों पर ईमान लाने वाले नहीं।

(79) और फ़िरऔन ने कहाः तुम मेरे पास हर माहिर जादूगरों को ले आओ।

(80) फ़िर जब तमाम जादूगर आ गए तो उनसे मूसा ने कहाः डालो जो कुछ तुम डालने वाले हो।

(81) फ़िर उन्होंने डाला तो मूसा ने कहाः जो कुछ तुम लाए हो (यह) जादू है। बेशक अल्लाह जल्द उसे बातिल कर देगा। बेशक अल्लाह फसाद करने वालों का काम नहीं संवारता।

(82) और अल्लाह हक़ को अपने कलमात से साबित करता है अगरचे मुजरिम लोग नापसंद करें।

(83) इसलिए मूसा पर उसकी क़ौम के चन्द नौजवानों के सिवा कोई भी ईमान न लाया, फ़िरऔन और उसके दरबारियों से डरते हुए कि कहीं वह उन्हें फित्ने में न डाल दे, और बेशक फ़िरऔन सरज़मीन (मिस्र) में

सरकश बना हुआ था, और बेशक वह हद से गुज़रने वालों में से था।

(84) और मूसा ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर भरोसा करो अगर तुम फ़रमाबरदार हो।

(85) इसलिए उन्होंने कहाः हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। ऐ हमारे रब! तू हमें ज़ालिम क़ौम के हाथों आज़माईश में न डाल।

(86) और तू हमें अपनी रहमत के साथ काफिर क़ौम से निजात दे।

(87) और हमने मूसा और उसके भाई की तरफ वह्यी की कि तुम अपनी क़ौम के लिए मिस्र में कुछ घर बनाओ, और तुम अपने घरों को क़िब्ले (मस्जिदें) बनाओ और नमाज़ क़ायम करो, और मोमिनों को खुशबखरी दे दीजिए।

(88) और मूसा ने कहाः ऐ हमारे रब! बेशक तूने फ़िरऔन और उस (की क़ौम) के सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में शानो शौकत और माल व ज़र्र दे रखा है, ऐ हमारे रब! ताकि वह लोगों को तेरी राह से भटका दें। ऐ हमारे रब! उनका माल व ज़र्र ग़ारत कर दे और उनके दिल सख्त कर दे, इसलिए यह ईमान न लाऐं जब तक कि दर्दनाक अज़ाब न देख लें।

(89) अल्लाह ने कहाः यक़ीनन तुम दोनों की दुआ क़बूल कर ली गई है, इसलिए दोनों साबित क़दम रहो और उन लोगों के रास्ते की मत पैरवी करो जो इल्म नहीं रखते।

(90) और हमने बनी इस्राईल को समंदर से पार कर दिया, फ़िर फ़िरऔन और उसकी फौजों ने सरकशी और जुल्म से उनका पीछा किया, यहाँ तक कि जब वह ग़र्क़ होने को पहुँचा तो पुकार उठाः मैं ईमान लाता हूँ कि बेशक उस ज़ात के सिवा कोई मअ़बूद नहीं जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए, और मैं मुसलमानों में से हूँ।

(91) (अल्लाह ने फरमायाः) क्या अब (ईमान लाता है?) जबकि तू पहले नाफरमान था, और तू फसाद करने वालों में से था।

(92) इसलिए आज हम तेरा जिस्म बचा कर (समंदर से) बाहर निकाल फेकेंगे ताकि तू अपने पीछे वालों के लिए निशान (इबरत) हो, और बेशक बहुत से लोग हमारी निशानियों से ग़ाफिल हैं।

(93) और यक़ीनन हमने बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना दिया और हमने उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया, फ़िर उन्होंने (आपस में) इख़्तिलाफ नहीं किया यहाँ तक कि उनके पास इल्म आ गया। (ऐ नबी!) बेशक आपका रब उनके दरम्यान रोज़े क़यामत को उन बातों का फैसला करेगा जिनमें वह इख़्तिलाफ करते थे।

(94) फ़िर अगर आप इस (किताब) के

मुताल्लिक़ शक में हों जो हमने आपकी तरफ नाज़िल की है तो उन लोगों से पूछे जो आपसे पहले किताब पढ़ते हैं, यक़ीनन आपके पास आपके रब की तरफ से हक़ आ गया है, लिहाज़ा आप शक करने वालों में से न हों।

(95) और आप उन लोगों में से न हों जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, वरना आप नुक्सान पाने वालों में से होंगे।

(96) बेशक जिन लोगों के बारे में आपके रब का हुक्म (अज़ाब) साबित हो चुका वह ईमान नहीं लाऐंगे।

(97) ख्वाह उनके पास सारी निशानियां आ जाए यहाँ तक कि वह दर्दनाक अज़ाब देख लें।

(98) फ़िर क्यों न हुई कोई बस्ती ऐसी कि वह (अज़ाब से पहले) ईमान लाई हो, फ़िर उसके ईमान ने उसे नफा दिया हो सिवाए क़ौमे यूनुस के, जब वह ईमान ले आए तो हमने उनसे ज़िल्लत का अज़ाब टाल दिया दुनिया की ज़िन्दगी में, और हमने एक (मुक़र्रर) वक़्त तक उन्हें (उससे) फायदा उठाने दिया।

(99) और अगर आपका रब चाहता तो जो लोग ज़मीन में हैं, सबके सब, सारे ही ईमान ले आते, फ़िर क्या आप लोगों को मजबूर करेंगे यहाँ तक कि वह मोमिन हो जाऐं?

(100) और किसी शख़्स के लिए (मुम्किन) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ईमान लाए, और वह (अल्लाह) उन लोगों पर पलीदी (अज़ाब) डाल देता है जो अक़्ल से काम नहीं लेते।

(101) (ऐ नबी!) कह दीजिएः देखो (और ग़ौर करो) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और निशानियां और डरावे उन लोगों को कोई फायदा नहीं देते जो ईमान नहीं लाते।

(102) तो यह लोग भी उन लोगों के से दिनों का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो उनसे पहले गुज़रे। कह दीजिएः फ़िर तुम इन्तिज़ार करो, बेशक तुम्हारे साथ मैं भी इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ।

(103) फ़िर हम निजात देते हैं अपने रसूलों को और उन लोगों को जो ईमान लाए, इसी तरह हम पर लाज़िम है कि हम मोमिनों को निजात दें।

(104) कह दीजिएः ऐ लोगों! अगर तुम मेरे दीन से (मुताल्लिक़) शक में हो तो मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो लेकिन मैं तो अल्लाह की इबादत करता हूँ वह जो तुम्हें मौत देता है, और मुझे इस बात का हुक्म दिया गया है कि मैं मोमिनों में शामिल रहूं।

(105) और यह कि आप अपना रूख

दीन (इस्लाम) की तरफ सीधा रखें यक्सू हो कर, और मुश्रिकों में से हरगिज़ न हों। (106) और आप अल्लाह के सिवा उनको न पुकारें जो न आपको नफा दे सकते हैं और न आपको नुक़्सान पहुँचा सकते हैं। फ़िर अगर आपने ऐसा किया तो बेशक आप भी उस वक़्त ज़ालिमों में से होंगे।

(107) और अगर अल्लाह आपको कोई तकलीफ पहुँचाए तो उसके सिवा कोई भी उसे दूर करने वाला नहीं, और अगर अल्लाह आपके साथ किसी भलाई का इरादा करे तो कोई भी उसके फ़ज़ल को दूर करने वाला नहीं। वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसे (फ़ज़ल) से नवाज़ता है, और वह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(108) कह दीजिए: ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से हक़ आ गया है, इसलिए जिस (शख़्स) ने हिदायत पाई तो यक़ीनन वह अपने ही लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) पाता है, और जिसने गुमराही इख़्तियार की तो यक़ीनन वह अपने ही लिए गुमराही इख़्तियार करता है। और मैं तुम्हारा वकील नहीं हूँ।

(109) और आप की तरफ जो वह्यी की जाती है आप उसकी इत्तेबा कीजिए और सब्र कीजिए यहाँ तक कि अल्लाह फैसला कर दे, और वह सबसे बेहतर फैसला करने वाला है।

सूरह हूद-11

(यह मदनी सूरत है इसमें 123 आयतें और 10 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलीफ लाम रा (यह) किताब है जिसकी आयतें मज़बूत की गई हैं, फ़िर तफ्सील से बयान की गई हैं, बड़ी हिकमत वाले, बहुत खबर रखने वाले की तरफ से।

(2) यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, बेशक मैं तुम्हारे लिए उसी की तरफ से डराने वाला और खुशखबरी देने वाला हूँ।

(3) और यह कि तुम अपने रब से बख़्शिश मांगो, फ़िर तुम उसकी तरफ तौबा करो, वह तुम्हें बहुत अच्छा फायदा देगा एक मुक़र्रर वक़्त तक, और हर साहबे फ़ज़ल को उसका फ़ज़ल बख़्शेगा। और अगर तुम मुँह मोड़ोगे तो बेशक मैं तुम पर एक बड़े (होलनाक) दिन के अज़ाब से डरता हूँ।

(4) तुम्हें अल्लाह ही की तरफ लौट कर जाना है और वह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(5) जान लो! बेशक वह अपने सीने दोहरे करते हैं ताकि अल्लाह से छुप जाऐं। जान लो! जब वह अपने कपड़े ओढ़ते हैं (तब भी)

अल्लाह जानता है जो वह छुपाते और ज़ाहिर करते हैं, बेशक अल्लाह सीनों के राज़ खूब जानता है।

(6) और ज़मीन पर चलने वाले हर जानदार का रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मे है और वह जानता है उसकी क़रार गाह और उसके दफ्न होने की जगह को। हर चीज़ वाज़ेह किताब में (तहरीर) है।

(7) और वही तो है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया, और उसका अर्श पानी पर था ताकि वह तुम्हें आज़माए कि तुममें से कौन ज़्यादा अच्छे अमल करता है। और (ऐ नबी!) अगर आप कहेंगे कि तुम्हे मौत के बाद ज़िन्दा किया जाएगा तो जिन लोगों ने कुफ्र किया, वह ज़रूर कहेंगे कि यह तो खुला जादू है।

(8) और अगर हम उनसे गिनी चुनी मुद्दत तक अज़ाब टाल दे तो वह (काफिर) ज़रूर कहेंगे कि क्या चीज़ उसे रोके हुए है? खबरदार! जिस दिन वह (अज़ाब) आएगा (फ़िर) उनसे टलेगा नहीं और वह (अज़ाब) उन्हें घेर लेगा जिसका वह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

(9) और अगर हम इन्सान को अपनी रहमत का मज़ा चखाएं, फ़िर वह उससे छीन लें, तो बेशक वह बड़ा नाउम्मीद, बहुत नाशुक्रा हो जाता है।

(10) और अगर हम उसे तकलीफ पहुँचाने के बाद नेअमतों का मज़ा चखाऐं तो वह ज़रूर कहेगाः मुझसे सख्तियां दूर हो गईं, बेशक वह (उस वक़्त) इतरता और घमंड करता है।

(11) मगर जिन लोगों ने सब्र किया और नेक अमल किये, उन्हीं के लिए बख्शिश और बहुत बड़ा अज्र है।

(12) तो (ऐ नबी!) शायद कि आप उस वह्यी से कुछ छोड़ने वाले हों जो आपकी तरफ नाज़िल की जाती है और आपका सीना उससे तंग होने वाला हो कि वह (काफिर) कहेंगे कि उस पर कोई खज़ाना क्यों नहीं उतारा गया या उसके साथ कोई फरिश्ता (क्यों नहीं) आया ? आप तो सिर्फ डराने वाले हैं और अल्लाह हर चीज़ पर निगराँ है।

(13) क्या वह कहते हैं कि इसने यह (कुरआन) खुद गढ़ लिया है? कह दीजिएः फ़िर तुम भी उस जैसी दस सूरतें गढ़ लाओ और अल्लाह के सिवा जिन्हें (मदद के लिए) बुला सकते हो बुला लो, अगर तुम सच्चे हो?

(14) फ़िर अगर वह तुम्हें जवाब न दें तो जान लो कि यक़ीनन यह (कुरआन) अल्लाह के इल्म से उतारा गया है और यह कि उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, फ़िर (ऐ लोगो!) क्या तुम मुसलमान होते हो?

(15) जो शख़्स दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़ीनत चाहता है तो हम उनके आमाल का बदला इसी दुनिया में दे देता हैं और उनकी हक़ तलफी नहीं की जाती।

(16) यही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में आग के सिवा कुछ नहीं और बरबाद हो गया जो कुछ उन्होंने दुनिया में कमाया था और जो अमल वह करते रहे बरबाद हो गए।

(17) क्या भला जो शख़्स अपने रब की तरफ से वाज़ेह दलील पर हो और उसके बाद अल्लाह की तरफ से एक गवाह (कुरआन) भी आ जाए जबकि इससे पहले मूसा की किताब भी रहनुमा और रहमत (रही) हो (वह कुरआन का इन्कार कर सकता है?) ऐसे लोग ही तो इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं। और उन गिरोहों में से जो कोई उसका इन्कार करे तो उसका ठिकाना आग ही है। इसलिए (ऐ नबी!) आप इससे शक में न पड़ें, बेशक यह (कुरआन) आपके रब की तरफ से हक़ है लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

(18) और उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन हो सकता है जिसने अल्लाह पर झूठ बान्धा? यही लोग अपने रब के सामने पेश किये जाएंगे और गवाह (फरिश्ते) कहेंगे कि यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ गढ़ा था, सुन लो! ज़ालिमों पर अल्लाह की लअनत है।

(19) वह जो अल्लाह की राह से रोकते हैं और उसमें गलती ढूढंते हैं और वही आख़िरत का इन्कार करने वाले हैं।

(20) यह लोग ज़मीन में (अल्लाह को) मजबूर करने वाले न थे और उनके लिए अल्लाह के सिवा कोई हिमायती न था। उनके लिए अज़ाब दुगना कर दिया जाएगा। उनमें (हक़) सुनने की ताक़त नहीं थी और न उसे देखने के रवा दार थे।

(21) यही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको नुक्सान में डाला और उनसे गुम हो गया जो वह झूठ बाँधते थे।

(22) बिलाशुब्ह यक़ीनन वही लोग आख़िरत में सब से ज़्यादा नुक्सान पाने वाले हैं।

(23) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये और अपने रब की तरफ झुके, वही जन्नती हैं, वह उसमें हमेशा रहँगे।

(24) दोनों फरीक़ों की मिसाल ऐसे है जैसे अन्धा और बहरा और देखने वाला और सुनने वाला, क्या मसलन दोनों बराबर हो सकते हैं? क्या फ़िर तुम नसीहत हासिल नहीं करते?

(25) और अलबत्ता हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ भेजा (उसने कहा:) बेशक मैं

तुम्हें साफ साफ डराने वाला हूँ।

(26) यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। बेशक मुझे तुम पर दर्दनाक दिन के अज़ाब का ख़ौफ आता है।

(27) फ़िर उसकी काफिर क़ौम के बड़े (मुखिया) बोलेः हम तुझे बस अपने ही जैसा इन्सान देखते हैं और यह भी देखते हैं कि बस उन्हीं लोगों ने बेसोचे समझे तेरी पैरवी की है जो हमारे पस्त (घटिया), सरसरी राय वाले हैं और हम देखते हैं कि तुम्हें हम पर कोई फज़ीलत नहीं बल्कि हम तुम्हें झूठा समझते हैं।

(28) नूह ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! देखो तो, अगर मैं अपने रब की तरफ से वाज़ेह हिदायत (मार्ग-दर्शन) पर हूँ और उसने मुझे अपने पास से रहमत (नबुव्वत) बख्शी हो, फ़िर वह तुम (अन्धों) से छुपा दी गई हो, तो क्या हम तुम्हें उसको मानने पर मजबूर कर सकते हैं जबकि तुम उसे नापसंद करते हो?

(29) और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुमसे इस पर कोई माल नहीं मांगता। मेरा बदला तो अल्लाह के पास है। और मैं उन लोगों को ध ुत्कारने (भगाने) वाला नहीं जो ईमान ले आए, बेशक वह अपने रब से मिलने वाले हैं। लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग नादनी कर रहे हो।

(30) और ऐ मेरी क़ौम! मैं उन्हें धुत्कार (भगा) दूं तो कौन मुझे अल्लाह (के अज़ाब) से बचाएगा? क्या फ़िर तुम नसीहत (उपदेश) हासिल नहीं करते।

(31) और मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं, और न मैं ग़ैब जानता हूँ और न मैं कहता हूँ कि बेशक मैं फरिश्ता हूँ और न मैं उन्हें जिन्हें तुम्हारी आँखें हक़ीर (नीचा) देखती हैं, (यह) कहता हूँ कि अल्लाह उन्हें कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह खूब जानता है जो कुछ उनके दिलों में है। बेशक (अगर मैंने यह बातें कहीं) तब मैं ज़रूर ज़ामिलों में से हो जाऊंगा।

(32) उन्होंने कहाः ऐ नूह! तू हम से झगड़ चुका है और हमारे साथ बहुत ज़्यादा झगड़ा कर चुका है, इसलिए तू हम पर वह (अज़ाब) ले ही आ जिसका हमसे वादा करता है अगर तू सच्चा है।

(33) नूह ने कहाः यक़ीनन अल्लाह ही तुम पर वह (अज़ाब) लाएगा अगर उसने चाहा और तुम (उसे) आजिज़ (मजबूर) करने वाले नहीं।

(34) और तुम्हें मेरी नसीहत (उपदेश) नफा नहीं देगी अगर मैं चाहूँ कि तुम्हें नसीहत करूं जबकि अल्लाह तुम्हें गुमराह करना चाहता हो, वही तुम्हारा रब है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

(35) क्या वह कहते हैं कि उसने उसको

खुद गढ़ लिया है, (ऐ नबी!) कह दीजिएः अगर मैंने उसे खुद गढ़ा है तो मेरा जुर्म मुझ ही पर है और मैं उससे बरी हूँ जो तुम जुर्म करते हो।

(36) और नूह की तरफ वह्यी की गई कि तेरी क़ौम में से कोई हरगिज़ ईमान नहीं लाएगा सिवाए उसके जो (पहले) ईमान ला चुका है इसलिए वह जो कुछ कर रहे हैं तू उस पर ग़म न खा।

(37) और तू हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्यी के मुताबिक़ एक कश्ती बना और मुझसे उन लोगों के मुताल्लिक़ बात मत करना जिन्होंने जुल्म (कुफ्र) किया, बेशक उन्हें डूबो दिया जाएगा।

(38) और नूह कश्ती बनाता था और जब उसकी क़ौम के बड़े (मुखिया) उसके पास से गुज़रते तो वह उससे मज़ाक़ करते, नूह ने कहाः अगर तुम (आज) हमसे मज़ाक करते हो तो बेशक (एक रोज़) हम भी तुमसे मज़ाक करेंगे जैसे तुम मज़ाक करते हो।

(39) फ़िर तुम जल्दी जान लोगे कि किस शख्स पर ऐसा अज़ाब आता है जो उसे (दुनिया में) रूस्वा कर देगा और (आख़िरत में) उस पर हमेशा अज़ाब नाज़िल होगा।

(40) यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ गया और तनूर ने जौश मारा तो हमने (नूह से) कहाः उस (कश्ती) में हर क़िस्म (के जानवरों) का जोड़ा, दो (नर और मादा) सवार कर ले और अपने घर वालों को, सिवाए उस शख्स के जिसकी बाबत पहले हुक्म हो चुका और और उनको भी जो ईमान ला चुके हैं और उस पर थोड़े ही लोग ईमान लाए थे।

(41) और नूह ने कहाः उस (कश्ती) में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से है उसका चलना और ठहरना। बेशक मेरा रब बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(42) और वह (कश्ती) उन्हें पहाड़ जैसी मौजों में लिए जाती थी और नूह ने अपने बेटे को पुकारा, और वह (सबसे) अलग थलग थाः प्यारे बेटे! तू (भी) हमारे साथ सवार हो जा और काफिरों में शामिल न हो।

(43) वह बोलाः मैं अभी किसी पहाड़ की तरफ पनाह (शरण) ले लेता हूँ, वह मुझे पानी से बचा लेगा। नूह ने कहाः आज अल्लाह के हुक्म (अज़ाब) से कोई बचाने वाला नहीं मगर जिस पर अल्लाह रहम फरमाए और उन दोनों के दरम्यान लहर हाईल (आड़) हो गई तो वह ग़र्क़ शुदा लोगों में शामिल हो गया।

(44) और कहा गयाः ऐ ज़मीन! तू अपना पानी निगल ले, और ऐ आसमान! तू (बरसने से) थम जा और पानी खुश्क कर दिया गया और (काफिरों का) काम तमाम कर दिया

गया, और कश्ती जूदी (पहाड़) पर जा ठहरी और कहा गयाः ज़ालिम क़ौम के लिए दूरी (लअनत) है।

(45) और नूह ने अपने रब को पुकारा, इसलिए उसने कहाः ऐ मेरे रब! बेशक मेरा बेटा मेरे अहल में से है और बेशक तेरा वादा सच्चा है और तू सब फैसले करने वालों में से बेहतर फैसला करने वाला है।

(46) अल्लाह ने कहाः ऐ नूह! बेशक वह तेरे अहल में से नहीं, बेशक उसका अमल नेक नहीं, लिहाज़ा तू मुझसे उस चीज़ का सवाल न कर जिस का तुझे कोई इल्म नहीं। बेशक मैं तुझे नसीहत (उपदेश) करता हूँ कि तू जाहिलों में शामिल (न) हो।

(47) नूह ने कहाः ऐ मेरे रब! बेशक मैं तेरी पनाह में आता हूँ इससे कि मैं तुझसे उस चीज़ का सवाल करूं जिसका मुझे कोई इल्म नहीं और अगर तूने मेरी बख़्शिश न की और मुझ पर रहम (न) किया तो मैं नुक्सान पाने वालों में से हो जाऊंगा।

(48) कहा गया! ऐ नूह! उतर तू हमारी तरफ से सलामती और बरकतों के साथ जो तुझ पर और तेरे साथ की जमाअतों पर (नाज़िल की गई) हैं और कुछ जमाअतें होंगी कि हम (दुनिया में) उन्हें फायदा देंगे फ़िर उन्हें हमारी तरफ से दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा।

(49) (ऐ नबी!) यह कुछ ग़ैब की खबरें हैं, हम उन्हें आपकी तरफ वह्यी करते हैं, इससे पहले न आप उन्हें जानते थे और न आपकी क़ौम, इसलिए आप सब्र करें, बेशक (बेहतरीन) अन्जाम मुत्तक़ीन (परेहजगार) ही के लिए है।

(50) और (हमने) आद की तरफ उनके भाई हूद को भेजा, उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारे लिए उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, तुम तो सिर्फ झूठ गढ़ने वाले हो।

(51) ऐ मेरी क़ौम! मैं तुमसे इस (तब्लीग) पर कोई उज्र नहीं मांगता, मेरा उज्र तो उसी ज़ात के ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया, फ़िर क्या तुम अक़्ल नहीं रखते?

(52) और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपने रब से बख़्शिश मांगो, फ़िर उसकी तरफ तौबा करो, वह तुम पर खूब बरसने वाले बादल भेजेगा और तुम्हारी कुव्वत पर कुव्वत बड़ाएगा और तुम मुजरिम बन कर (हक़ से) मुँह न मोड़ो।

(53) उन्होंने कहाः ए हूद! तू हमारे पास कोई वाज़ेह दलील नहीं लाया और हम (सिर्फ) तेरे कहने से अपने मअबूदों को छोड़ने वाले नहीं और हम तुझ पर ईमान लाने वाले (भी) नहीं।

(54) हम तो यही कहते हैं कि हमारे किसी मअ़बूद ने तुझे तकलीफ पहुँचाई है। हूद ने कहाः बेशक मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ

और तुम भी गवाह रहो कि बेशक मैं बरी हूँ उनसे जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो।

(55) सिवाए अल्लाह के, इसलिए तुम सब मिल कर मुझे नुक्सान पहुँचाने की तदबीर कर लो फ़िर तुम मुझे मोहलत न दो।

(56) बेशक मैंने अल्लाह पर भरोसा किया है जो मेरा रब और तुम्हारा रब है, (ज़मीन पर) चलने वाला कोई जानदार ऐसा नहीं जिसे उसने पैशानी से न पकड़ रखा हो, बेशक मेरा रब सिराते मुस्तक़ीम पर है।

(57) फ़िर अगर तुम (हक़ से) मुँह मोड़ोगे तो मैंने वह (पैग़ाम) तुम्हें पहुँचा दिया है जिसके साथ मुझे तुम्हारी तरफ भेजा गया था और मेरा रब एक और क़ौम को (तुम्हारा) जाँनशीन (बदल) बना देगा, और तुम उसे कुछ भी नुक़्सान नहीं पहुँचा सकोगे। बेशक मेरा रब हर चीज़ पर निगेहबान है।

(58) और जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ गया तो हमने हूद और उसके साथ ईमान लाने वालों को, अपनी रहमत से निजात दी और हमने उन्हे शदीद अज़ाब से निजात दी।

(59) और (देखो) यह आ़द थे, उन्होंने अपने रब की आयतों का इन्कार किया था और अल्लाह के रसूलों की नाफरमानी की और हर सरकश और (हक़ से) दुश्मनी रखने वाले का कहा माना।

(60) और इस दुनिया में लअनत उनके पीछे लगी रही और क़यामत के दिन को भी (लगी रहेगी) आगाह रहो! बेशक (क़ौमे) आद ने अपने रब का इन्कार किया। सुन लो! फटकार है हूद की क़ौमे आ़द पर।

(61) और (हमने) समूद की तरफ उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं, उसी ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और उसी ने तुम्हें उसमें आबाद किया, इसलिए तुम उसी से बख़्शिश मांगो फ़िर उसी की तरफ तौबा करो। बेशक मेरा रब बहुत क़रीब है, (दुआऐं) क़बूल करने वाला है।

(62) उन्होंने कहाः ऐ सालेह! बेशक तू इससे पहले हम में उम्मीदों का मर्कज़ था। क्या तू हमें इस बात से रोकता है कि हम उनकी इबादत करें जिन की हमारे बाप दादा इबादत करते थे? और बिलाशुब्ह जिस चीज़ (तौहीद) की तरफ तू हमें बुलाता है हम उसके मुताल्लिक़ ऐसे शक में हैं जो परेशान करने वाला है।

(63) सालेह ने कहा! ऐ मेरी क़ौम! भला बताओ तो, अगर मैं अपने रब की तरफ से वाज़ेह दलील पर हूँ और उसने मुझे अपनी तरफ से रहमत (नबूवत) दी हो, फ़िर अगर मैं उसकी नाफमानी करूं तो अल्लाह (के

अज़ाब) से मेरी मदद कौन करेगा? तुम तो मेरा नुक़्सान ही बढ़ा रहे हो।

(64) और ऐ मेरी क़ौम! यह ऊँटनी तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानी है, लिहाज़ा तुम उसे छोड़ दो कि खाती (चरती) फिरे अल्लाह की ज़मीन में, और तुम उसे बुराई से न छूना वरना तुम्हें जल्द अज़ाब पकड़ लेगा।

(65) फ़िर उन्होंने उसकी टांगें काट डालीं, तो सालेह ने कहाः तुम अपने घरों में तीन दिन का फायदा उठा लो। यह ऐसा वादा है जो झूठा नहीं होगा।

(66) फ़िर जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ गया तो हमने सालेह और उसके साथ ईमान लाने वालों को अपनी रहमत से निजात दी और उस (क़यामत के) दिन की रूस्वाई से भी (निजात दी,) बेशक आपका रब, वही है निहायत तक़ातवर, बहुत ज़बरदस्त।

(67) और जिन लोगों ने जुल्म किया था उन्हें ज़बरदस्त चीख ने आ पकड़ा फ़िर वह अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए।

(68) जैसे कभी उनमें बसे ही न थे। आगाह रहो! बेशक समूद (क़ौम) ने अपने रब का इन्कार किया। सुन लो! फटकार (लअनत) है समूद पर।

(69) और बेशक हमारे क़ासिद (फरिश्ते) इब्राहीम के पास खुशखबरी ले कर आए। उन्होंने कहाः (आप पर) सलाम हो। इब्राहीम ने कहाः (तुम पर भी) सलाम हो। फ़िर देर किये बग़ेर वह एक भुना हुआ बछड़ा ले आया।

(70) फ़िर जब उसने देखा कि उनके हाथ उस (बछड़े) की तरफ नहीं बढ़ते तो उन्हें अजनबी समझा और (दिल में) उनसे ख़ौफ महसूस किया। उन्होंने कहा (हमसे) न डर, बेशक हमें तो क़ौमे लूत की तरफ भेजा गया है।

(71) और इब्राहीम की बीवी (क़रीब) खड़ी थी तो वह हंस पड़ी, फ़िर हमने उसे इस्हाक़ की खुशखबरी दी और इस्हाक़ के बाद याक़ूब (पोते) की।

(72) वह बोलीः हाय हाय! क्या (अब) मैं बच्चा जनूँगी हालांकि मैं बुढ़िया हूँ और मेरा शौहर भी बूढ़ा है? बेशक यह तो बहुत ही अजीब चीज़ है।

(73) उन्होंने कहाः क्या तू अल्लाह के हुक्म पर तअज्जुब करती है, अल्लाह की रहमत और बरकतें हों तुम पर ऐ अहले बैत (घर के लोगो)! बेशक अल्लाह क़ाबिले तारीफ है, बड़ी शान वाला।

(74) फ़िर जब इब्राहीम से ख़ौफ दूर हो गया और उसके पास खुशखबरी आ गई तो वह हमसे क़ौमे लूत की बाबत झगड़ने लगा।

(75) बेशक इब्राहीम बड़ा नर्म मिज़ाज, नर्म दिल और (हमारी तरफ) बहुत रूजू करने

(झुकने) वाला था।

(76) (हमने कहाः) ऐ इब्राहीम! इस बात को जाने दो, बेशक तुम्हारे रब का हुक्म आ पहुँचा है, और बेशक उन लोगों पर अज़ाब आने वाला है जो टलेगा नहीं।

(77) और जब हमारे क़ासिद (फरिश्ते) लूत के पास आए तो वह उनकी वजह से ग़मग़ीन हुआ और उनसे दिल में तंग हुआ और बोलाः यह इन्तिहाई सख़्त दिन है।

(78) और उसकी क़ौम के लोग दौड़ते हुए उसके पास आए जबकि वह पहले ही से बुरे अमल करते थे। उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम! यह मेरी (क़ौम की) बेटियां हैं (उनसे निकाह कर लो), यह तुम्हारे लिए पाक हैं, लिहाज़ा तुम अल्लाह से डरो और मेरे मेहमानों में मुझे रूस्वा न करो। क्या तुममें कोई भी भला आदमी नहीं?

(79) उन्होंने कहाः यक़ीनन तू जानता है कि हमारे लिए तेरी (क़ौम की) बेटियों में कोई हक़ (दिलचस्पी) नहीं और बिलाशुब्ह तू यक़ीनन जानता है जो हम चाहते हैं।

(80) लूत ने कहाः काश! मेरे लिए तुम्हारे मुक़ाबले में कोई कुव्वत होती या मैं किसी मज़बूत सहारे की पनाह लेता।

(81) फरिश्तों ने कहाः ऐ लूत! बेशक हम तेरे रब के भेजे हुए हैं, वह लोग हरगिज़ तुझ पर हाथ नहीं डाल सकेंगे, इसलिए तू अपने घर वालों को रात गए ले चल और तुममें से कोई पीछे मुड़ कर न देखे, सिवाए तेरी बीवी के, बेशक उस पर वही अज़ाब आने वाला है जो उन (लोगों) पर आया चाहता है। बेशक उनके वादे (अज़ाब) का वक़्त सुबह है। क्या सुबह क़रीब नहीं?

(82) फ़िर जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ गया तो हमने उस (बस्ती) को (उलट कर) ऊपर नीचे कर दिया और उन पर कंकड़ के पत्थर तह ब तह बरसाए।

(83) जो तुम्हारे रब के यहाँ से निशान लगे थे। और वह बस्ती उन ज़ालिमों (कुरेशे मक्का) से दूर नहीं।

(84) और (हमने) मदयन (वालों) की तरफ उनके भाई शुऐब को (भेजा), उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं और तुम नाप तौल कम न करो, बेशक मैं तुम्हें खुशहाल देखता हूँ और बेशक मुझे ख़ौफ आता है तुम पर घेरने वाले दिन के अज़ाब से।

(85) और मेरी क़ौम! तुम नाप और तौल इंसाफ से पूरा किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो और तुम ज़मीन में फसादी बन कर न फिरो।

(86) अल्लाह की बचत (जायज़ नफा) तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम मोमिन हो

और मैं तुम पर मुहाफिज़ नहीं हूँ।

(87) उन्होंने कहाः ऐ शुऐब! क्या तेरी नमाज़ तुझे यह हुक्म करती (सिखाती) है कि हम उन (मअबूदों) को छोड़ दें जिनको हमारे बाप दादा पूजते रहे या अपने मालों में वह न करें जो करना चाहें? बिलाशुब्ह तू तो बड़ा नर्म मिज़ाज बड़ा समझदार है।

(88) शुऐब ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! भला बताओ तो, अगर मैं अपने रब की तरफ से वाज़ेह दलील पर हूँ और उसने मुझे अपनी तरफ से अच्छा रिज़्क़ दिया हो (तो कैसे उसकी न फरमानी करूं?) और मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हारी मुखालिफत करूं (इस तरह कि) वह काम करूं जिनसे तुम्हें रोकता हूँ। मैं कुछ नहीं चाहता सिवाए (तुम्हारी) इस्लाह के जहाँ तक मुझसे हो सके। और मुझे (उसकी) तौफीक़ मिलना अल्लाह की मदद के सिवा (मुम्किन) नहीं। मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी की तरफ रूजू करता हूँ।

(89) और ऐ मेरी क़ौम! मेरी मुखालिफत तुम्हें (ऐसे काम पर) न उकसाए कि तुम पर वैसा अज़ाब आए जैसा क़ौमे नूह या क़ौमे हूद या क़ौमे सालेह पर आया था और लूत की क़ौम (का इलाक़ा भी) तुम से कुछ दूर नहीं।

(90) और तुम अपने रब से बख़्शिश मांगों, फ़िर उसकी तरफ तौबा करो, बेशक मेरा रब बड़ा रहम करने वाला, निहायत मुहब्बत करने वाला है।

(91) उन्होंने कहाः ऐ शुऐब! जो तू कहता है हम उसमें से बहुत कुछ नहीं समझते और बेशक हम तुझे अपने दरम्यान कमज़ोर देखते हैं और अगर तेरा क़बीला न होता तो हम यक़ीनन तुझे संगसार कर देते और तू हम पर कोई गलबा नहीं रखता।

(92) शुऐब ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरा क़बीला तुम पर अल्लाह से ज़्यादा दबाव वाला है, और तुमने उस (अल्लाह) को अपनी पीठ पीछे डाल रखा है। बेशक तुम जो अमल करते हो, मेरा रब उनको घेरे हुए है।

(93) और ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह अमल करो, बेशक मैं भी अमल कर रहा हूँ। जल्द तुम जान लोगे कि किस पर रूस्वा कुन अज़ाब आता है और कौन झूठा है? और तुम इन्तिज़ार करो, बेशक मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार कर रहा हूँ।

(94) और जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आया तो हमने निजात दी शुऐब को और उसके साथ ईमान लाने वालों को अपनी रहमत से, और जिन लोगों ने जुल्म किया था उन्हें ज़बरदस्त चीख ने आ पकड़ा तो वह अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए।

(95) जैसे वह उनमें कभी बसे ही न थे।

सुनो! फटकार है (अहले) मदयन पर जैसे समूद पर फटकार पड़ी।

(96) और बेशक हमने मूसा को अपनी आयतें और रोशन दलील के साथ भेजा।

(97) फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ, फ़िर उन्होंने फ़िरऔन के हुक्म का इत्तेबा किया, और फ़िरऔन का हुक्म कोई भलाई वाला नहीं था।

(98) वह क़यामत के दिन अपनी क़ौम के आगे आगे होगा, फ़िर उन्हें आग में जा दाख़िल करेगा, और बुरा है वह घाट जिस पर वह पहुँचाए जाएँगे।

(99) और इस (दुनिया) में भी लअनत उनके पीछे लगा दी गई और आख़िरत में भी और बुरा है वह इनआम जो उन्हें दिया जाएगा।

(100) (ऐ नबी!) यह कुछ खबरें हैं उन (तबाह शुदा) बस्तियों की, जो हम आपको सुनाते हैं। उनमें से कुछ तो क़ायम हैं और कुछ तहस नहस कर दी गईं।

(101) और हमने उन पर जुल्म नहीं किया लेकिन उन्होंने (खुद ही) अपने आप पर जुल्म किया था, तो उनके वह मअ़बूद जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकारते थे, उनके किसी काम न आए, जब आपके रब का हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा बल्कि उन्होंने उनकी तबाही में इज़ाफा ही किया।

(102) और (ऐ नबी!) आपके रब की पकड़ ऐसी ही है जब वह बस्तियों को पकड़ता है जबकि वह ज़ालिम होती हैं। बेशक उसकी पकड़ निहायत दर्दनाक (और) शदीद है।

(103) बेशक उसमें उस शख़्स के लिए यक़ीनन निशान (इबरत) है जो अज़ाबे आख़िरत से डर गया। वह (यौमे आख़िरत) ऐसा दिन है (जब) सब लोग जमा किये जाएँगे, और वह ऐसा दिन है जब (सब) हाज़िर किये जाएँगे।

(104) और हम एक मुक़र्रर वक़्त तक ही उसमें देर कर रहे हैं।

(105) (जब) वह दिन आ जाएगा तो कोई नफ़्स अल्लाह के इज़्न (हुक्म) के बग़ैर कलाम नहीं कर सकेगा, फ़िर उनमें से कोई तो बदनसीब होगा और कोई खुशनसीब।

(106) इसलिए जो लोग बदनसीब होंगे तो (वह) आग में होंगे, उनके लिए उसमें बस चीखना चिल्लाना और दहाड़न होगा।

(107) वह उसमें हमेशा रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन (बाक़ी) रहेंगे मगर यह कि आपका रब (कुछ और) चाहे। बेशक आपका रब जो चाहे उसे कर गुज़रता है।

(108) और लेकिन जो खुशनसीब बनाए गए होंगे तो (वह) जन्नत में होंगे। वह उसमें हमेशा रहेंगे जब तक आसमान और ज़मीन (बाक़ी) रहेंगे मगर यह कि आपका रब (कुछ

और) चाहे, (यह अल्लाह की) अता है जो कभी खत्म न होगी।

(109) इसलिए आप उनके बारे में शक में न पड़ें जिनकी यह लोग इबादत करते हैं, यह लोग तो वैसे ही इबादत करते हैं जैसे इससे पहले उनके बाप दादा इबादत करते थे और बेशक हम उन्हें उनका हिस्सा पूरा देंगे, उसमें से कुछ भी कम न होगा।

(110) और बेशक हमने मूसा को किताब दी तो उसमें इख़्तिलाफ किया गया और अगर न होती एक बात जो आपके रब की तरफ से पहले (तय) हो चुकी है तो उनके दरम्यान ज़रूर फैसला कर दिया जाता और बिलाशुब्ह वह उसके मुताल्लिक़ ज़रूर शक में हैं (जो उनके लिए) परेशान करने वाला है।

(111) और बेशक आपका रब ज़रूर सबको उनको अमाल की पूरी पूरी जज़ा देगा। बेशक जो वह जो अमल करते हैं अल्लाह उनसे खूब बाखबर है।

(112) इसलिए (ऐ नबी!) आप साबित क़दम रहें जिस तरह आपको हुक्म दिया गया है और वह लोग भी जिन्होंने आपके साथ तौबा की (ईमान लाए) और तुम सरकशी न करो, बेशक तुम जो अमल करते हो अल्लाह उन्हें देख रहा है।

(113) और तुम उन लोगों की तरफ न झुको जिन्होंने जुल्म किया वरना तुम्हें आग आन लपेटेगी और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा कोई दोस्त न होगा, फ़िर तुम्हारी मदद न की जाएगी।

(114) और आप नमाज़ क़ायम करें दिन की दोनों तरफों (सुबह व शाम) और रात की कुछ घड़ियों में, बेशक नेकियां बुराइयों को दूर कर देती हैं। यह (अल्लाह का) ज़िक्र करने वालों के लिए नसीहत (उपदेश) है।

(115) और आप सब्र करें, बेशक अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करता।

(116) फ़िर उन उम्मतों में जो तुम से पहले गुज़री, ऐसे अक़्ल व बसीरत वाले क्यों न हुए जो ज़मीन में (लोगों को) फसाद से रोकते, मगर थोड़े ही उनमें से जिन्हें हमने निजात दी और जिन लोगों ने जुल्म किया वह उन चीज़ों के पीछे लगे रहे जिनमें ऐश व आराम था और वह मुजरिम थे।

(117) और आपका रब ऐसा नहीं कि वह बस्तियों को जुल्म के साथ तबाह करे जबकि उनके बाशिन्दे इस्लाह करने वालो हों।

(118) और अगर आपका रब चाहता तो यक़ीनन तमाम लोगों को एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वह हमेशा (आपस में) इख़्तिलाफ करते रहेंगे।

(119) सिवाए उन लोगों के जिन पर आपके रब ने रहम किया और इसलिए उसने उन्हें पैदा किया और आपके रब की बात

पूरी हुई कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इन्सानों सबसे ज़रूर भर दूंगा।

(120) और हम रसूलों की खबरों में से आपको वह (खबर) सुनाते हैं जिससे हम आपका दिल मज़बूत रखते हैं और इस (सूरत) में आपके पास हक़ आ गया और मोमिनों के लिए नसीहत (उपदेश) और याद दिहानी भी।

(121) और आप उन लोगों से कह दीजिए जो ईमान नहीं लातेः तुम अपनी जगह अमल करो, बेशक हम भी अमल कर रहे हैं।

(122) और तुम इन्तिज़ार करो, बेशक हम भी इन्तिज़ार करते हैं।

(123) और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन का ग़ैब और सब काम उसी की तरफ लौटाए जाते हैं, इसलिए आप उसी की इबादत करें और उसी पर भरोसा करें, और आपका रब उससे ग़ाफिल नहीं जो तुम अमल करते हो।

सूरह यूसुफ़-12

(यह मक्की सूरत है इसमें 111 आयतें और 12 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलीफ लाम रा, यह वाज़ेह किताब की आयतें हैं।

(2) बेशक हमने इसे अरबी क़ुरआन नाज़िल किया ताकि तुम समझो।

(3) (ऐ नबी!) आपकी तरफ यह क़ुरआन वह्यी करके हम आपको एक बेहतरीन दास्तान सुनाते हैं जबकि यक़ीनन इससे पहले आप गाफिलों में से थे।

(4) (याद करें) जब यूसुफ ने अपने बाप से कहाः अब्बा जान! बेशक मैंने (ख्वाब में) देखा है कि ग्यारह सितारे, सूरज चाँद मुझे सज्दा कर रहे हैं।

(5) उस (याक़ूब) ने कहाः मेरे प्यारे बेटे! अपना ख्वाब अपने भाईयों को न सुनाना वरना वह तेरे लिए कोई (बुरी) तदबीर (छल) करेंगे, बेशक शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।

(6) और इस तरह तेरा रब तुझे मुम्ताज़ (ऊँचा) मुक़ाम अता करेगा और तुझे बातों की ताविलें (ख्वाबों की ताबीरें) सिखाएगा, और तुझ पर और आले याक़ूब पर अपनी नेअमत पूरी करेगा जिस तरह उसने इससे पहले उसे पूरा किया था तेरे बाप दादा इब्राहीम और इस्हाक़ पर, बेशक तेरा रब खूब जानने वाला, बड़ी हिकमत वाला है।

(7) बेशक यूसुफ और उसके भाइयों (के वाक़िये) में सवाल करने वालों के लिए निशानियां हैं।

(8) जब उन्होंने (आपस में) कहाः यूसुफ और उसका भाई (बिन यामीन) तो हमारे

बाप को हमसे ज़्यादा प्यारे हैं हालांकि हम एक ताक़तवर जमाअत हैं, बेशक हमारा बाप वाज़ेह गलती पर है।

(9) तुम यूसुफ को क़त्ल कर दो या उसे किसी ज़मीन में फैंक दो कि तुम्हारे बाप का चेहरा तुम्हारे लिए खाली (मख़्सूस) हो जाए और उसके बाद तुम नेक लोग बन जाना।

(10) उनमें से एक कहने वाले ने कहाः तुम यूसुफ को क़त्ल न करो और तुम उसे कुऐं की तह (गहराई) में डाल दो कि उसे कोई मुसाफिर उठा ले जाए, अगर तुम (कुछ) करने ही वाले हो।

(11) उन्होंने कहाः अब्बाजान! आप को क्या है कि आप हम पर यूसुफ की बाबत एतबार (यक़ीन) नहीं करते हालांकि यक़ीनन हम उसके खैरख़्वाह हैं।

(12) आप कल उसे हमारे साथ भेजें कि खूब (फल) खाए और खेले कूदे और हम यक़ीनन उसके मुहाफिज़ हैं।

(13) याक़ूब ने कहाः बेशक मुझे तो यह बात ग़मग़ीन किये देती है कि तुम उसे ले जाओ और मुझे ख़ौफ आता है कि उसे भेड़िया खा जाए और तुम उससे लापरवाह हो।

(14) उन्होंने कहाः अगर उसे भेड़िया खा जाए जबकि हम एक ताक़तवर जमाअत हैं तो बिलाशुब्ह हम तो नुक्सान पाने वाले हुए।

(15) फ़िर जब वह उसे ले गए और उन्होंने तय कर लिया कि उसे कुऐं की तह में डाल दें, तब हमने युसूफ की तरफ वह्यी भेजी कि तू उन्हें उनका यह काम जताएगा जबकि वह नहीं समझते होंगे।

(16) और वह अपने बाप के पास इशा के वक़्त रोते हुए आए।

(17) उन्होंने कहाः अब्बाजान! बेशक हम दौड़ का मुक़ाबला करने लगे थे और यूसुफ को अपने सामान के पास छोड़ दिया था तो उसे भेड़िया खा गया और आप हमारी बात का यक़ीन करने वाले नहीं अगरचे हम सच्चे ही हों।

(18) और वह उसकी क़मीज पर झूठ मूठ का खून भी लगा लाए, याक़ूब ने कहाः (हक़ीक़त यह नहीं) बल्कि तुम्हारे दिलों ने तुम्हारे लिए एक (बुरी) बात अच्छी बना दी है, लिहाज़ा सब्र ही बेहतर है, और उस पर अल्लाह ही से मदद चाहते है जो तुम बयान करते हो।

(19) और एक क़ाफिला आया, फ़िर उन्होंने अपना पानी लाने वाला भेजा तो उसने अपना डोल लटकाया। वह (देखते ही) पुकार उठाः वह खुशखबरी है! यह तो लड़का है। और उन्होंने उसे पूंजी समझ कर छुपा लिया और अल्लाह उसे खूब जानता था जो वह कर रहे थे।

(20) और उन्होंने उसे मामूली क़ीमत (यानी) गिनती के चंद दिरहमों में बेच दिया और उन्हें उससे कोई लगाव ही न थी।

(21) और वह शख़्स जिसने यूसुफ को मिस्र में खरीदा था, उसने अपनी बीवी से कहाः उसकी अच्छी तरह देख भाल करना, उम्मीद है यह हमें नफा दे या यह कि हम इसे बेटा बना लें। और इसी तरह हमने यूसुफ को ज़मीन (मिस्र) में जगह दी ताकि हम उसे बातों की तावील (ख़्वाबों की ताबीर) सिखाऐं और अल्लाह अपने हर काम पर ग़ालिब है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

(22) और जब यूसुफ अपनी जवानी को पहुँचा तो हमने उसे हुक्म और इल्म दिया और इसी तरह हम नेकी करने वालों को जज़ा (बदला) देते हैं।

(23) और जिस औरत के घर में वह (यूसुफ) था उस औरत ने उसके जी से फुसलाया और दरवाज़े बन्द कर दिए और बोलीः लो आ जाओ, यूसुफ ने कहाः अल्लाह की पनाह! वह (अज़ीज़े मिस्र) तो मेरा आक़ा है, उसने मुझे अच्छा ठिकाना दिया, बेशक ज़ालिम लोग फलाह नहीं पाते।

(24) और अलबत्ता उस औरत ने यूसुफ का इरादा किया और वह भी उसका इरादा कर लेता अगर अपने रब की निशानी न देख लेता। इसी तरह होता कि हम उससे बुराई और बेहयाई को दूर करें, बेशक वह हमारे चुने हुए बन्दों में से था।

(25) और वह दोनों दरवाज़े की तरफ दौड़े, और उस (औरत) ने उस (यूसुफ) की क़मीज पीछे से फ़ाड़ दी और दोनों ने उसके खाविन्द को दरवाज़े के पास पाया तो वह (झट से) बोलीः उसकी क्या सज़ा है जो तेरी बीवी से बुराई का इरादा करे सिवाए उसके कि उसे क़ैद किया जाए या दर्दनाक अज़ाब (दिया जाए)?

(26) यूसुफ ने कहाः उसी ने मुझे मेरे जी से फुसलाया है औरत के खानदान में से एक शाहिद ने गवाही दी कि अगर यूसुफ की क़मीज आगे से फटी है तो औरत सच्ची है और यूसुफ झूठा है।

(27) और अगर उसकी क़मीज पीछे से फटी है तो औरत झूठी है और यूसुफ सच्चा है।

(28) फ़िर जब अज़ीज़ ने यूसुफ की क़मीज पीछे से फटी देखी तो वह कहने लगाः बेशक यह तुम औरतों के मक्रो फरेब में से है, बेशक तुम्हारा मक्र (कपट) बहुत बड़ा (खतरनाक) है।

(29) ऐ यूसुफ! इस (बात) से दरगुज़र कर और (बीवी से कहाः) तू अपने गुनाह पर बख़्शिश मांग, बेशक तू ही गुनाहगार है।

(30) और शहर में औरतें कहने लगीं कि अज़ीज़ की बीवी अपने गुलाम को उसके

जी से फुसलाती है, उसके दिल में (यूसुफ की) मुहब्बत घर कर गई है। बेशक हम उसे खुली गुमराही में देखते हैं।

(31) इसलिए जब उस (औरत) ने उनकी पुर मक्र (कपटपूर्ण) बातें सुनी तो उसने उनकी तरफ पैगाम भेजा और उनके लिए मसनदें तैयार कीं और उनमें से हर औरत को एक छुरी दी और (फ़िर यूसुफ से) कहाः निकल आ उनके सामने। फ़िर जब उन्होंने उसे देखा तो दंग रह गई और अपने हाथ काट डाले और बोलीं ''अल्लाह की पनाह!'' यह बशर (इन्सान) नहीं, यह तो निहायत इज्जतदार फरिश्ता है।

(32) उसने कहाः यही तो है वह जिसके बारे में तुम मुझे ताने देती थी और मैंने ही उसे उसके जी से फुसलाया था लेकिन उसने (खुद को) बचा लिया, अब अगर उसने वह न किया जो मैं हुक्म देती हूँ तो उसे ज़रूर क़ैद किया जाएगा और यक़ीनन वह बेइज़्ज़त होगा।

(33) यूसुफ ने कहाः ऐ मेरे रब! मुझे क़ैद खाना उससे ज़्यादा पसंद है जिसकी तरफ यह औरतें मुझे बुलाती हैं और अगर तूने उनका मक्र (धोखा) मुझसे दूर न किया तो मैं उनकी तरफ माईल हो जाऊंगा और मैं जाहिलों में से हो जाऊंगा।

(34) इसलिए उसके रब ने उसकी दुआ क़बूल कर ली, फ़िर उसने उससे उन (औरतों) का मक्र (छल कपट) दूर कर दिया, बेशक वही खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(35) फ़िर निशानियां देख लेने के बाद उन लोगों को यही सूझा कि वह उस (यूसुफ) को कुछ अर्से तक बहरहाल क़ैद रखें।

(36) और उसके साथ क़ैद खाने में दो जवान भी दाख़िल हुए। उनमें से एक ने कहाः बेशक मैं खुद को देखता हूँ कि शराब निचौड़ रहा हूँ और दूसरा बोलाः बेशक मैं खुद को देखता हूँ कि अपने सर पर रोटियां उठाए हुए हूँ, उनमें से परिन्दे खा रहे हैं तो हमें उनकी ताबीर बता, बेशक हम तुझे नेक समझते हैं।

(37) यूसुफ ने कहाः जो खाना तुम्हें यहाँ मिलता है उसके आने से पहले मैं तुम्हें उनकी ताबीर बतला दूंगा। यह उन चीज़ों में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाईं। बेशक मैंने उन लोगों का दीन छोड़ दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते और वह आख़िरत के भी इंकारी हैं।

(38) और मैंने इत्तेबा किया है अपने बाप दादा, इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब के दीन का। हमारे लिए जाईज़ नहीं कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक ठहराएें, यह अल्लाह का फज़ल है हम पर और (सब) लोगों पर, लेकिन अक्सर लोग

शुक्र अदा नहीं करते।

(39) मेरे क़ैदखाने के दो साथियो! भला कई जुदा जुदा मअबूद बेहतर हैं या एक अल्लाह, ज़बरदस्त?

(40) तुम उसके सिवा जिनकी इबादत करते हो वह नाम ही तो जो खुद तुमने और बाप दादाओं न रख लिए हैं, अल्लाह ने उनकी कोई सनद नाज़िल नहीं की। अल्लाह के सिवा किसी की हुकूमत नहीं। उसने हुक्म दिया है कि तुम सिर्फ उसकी इबादत करो यही सीधा दीन है, मगर अक्सर लोग इल्म नहीं रखते।

(41) मेरे क़ैदखाने के दो साथियो! तुम दोनों में से एक अपने मालिक को शराब पिलाएगा और दूसरा सूली दिया जाएगा और उसके सर में से परिन्दे (गौश्त) खाएँगे। इस मामले का फैसला किया जा चुका जिसकी बाबत तुम मुझ से पूछ रहे थे।

(42) और यूसुफ ने उसे कहा जिसका यक़ीन था कि वह उन दोनों में से निजात पाने वाला हैः तू अपने मालिक से मेरा ज़िक्र करना, फिर शैतान ने उसे भुला दिया अपने मालिक से (यूसुफ का) ज़िक्र करना, इसलिए यूसुफ क़ैदखाने में कई साल ठहरा रहा।

(43) और बादशाह ने कहाः बेशक मैं (ख्वाब में) सात मोटी गायें देखता हूँ जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात सब्ज़ (हरी) बालियां और दूसरी खुश्क (सूखी)। ऐ दरबारियो! अगर तुम ख्वाब की ताबीर कर सकते हो तो मुझे मेरे ख्वाब की ताबीर बताओ।

(44) उन्होंने कहाः यह परेशान ख्वाब हैं और हम ऐसे ख्वाबों की ताबीर नहीं जानते।

(45) और वह (शख्स) जिसने दोनों (क़ैदियों) में से निजात पाई थी उसे (यूसुफ) मुद्दत के बाद याद आया, बोलाः मैं तुम्हें उसकी ताबीर बताऊंगा, लिहाज़ा तुम मुझे (यूसुफ के पास) भेजो।

(46) (उसने जाकर कहाः) ऐ यूसुफ! ऐ बहुत ही सच्चे! हमें (उस ख्वाब की ताबीर) बतलाए कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और दूसरी खुश्क ताकि मैं लोगों की तरफ लौटूं ताकि वह मालूम कर लें।

(47) यूसुफ ने कहाः तुम सात साल लगातार काश्त (खेती) करोगे, इसलिए तुम जो (फसल) काटो तो वह उसकी बालियों ही में रहने दो सिवाए थोड़ी (मिक़दार) के जो तुम खाते हो।

(48) फ़िर उसके बाद सात साल सख्त आएँगे वह खा जाएँगे उसे जो तुमने उनके लिए ज़ख़ीरा किया होगा सिवाए थोड़े से गल्ले के जो तुम (बतौर बीज) महफ़ूज़ रखोगे।

(49) फ़िर उस (क़हत साली) के बाद एक

साल आएगा, उसमें लोग बारिश पाएँगे और वह उसमें रस निचोड़ेंगे।

(50) और बादशाह ने कहाः तुम उसे मेरे पास ले आओ, फ़िर जब उस (यूसुफ) के पास क़ासिद आया तो उसने कहाः तू अपने मालिक के पास लोट जा और उससे पूछ कि उन औरतों (के मामले) की क्या हक़ीक़त है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे? बेशक मेरा रब उनका मक्र (छल) खूब जानता है।

(51) बादशाह ने (औरतों से) कहाः तुम्हारा मामला क्या है जब तुमने यूसुफ को उसके जी से फुसलाया था? वह बोलींः ''अल्लाह की पनाह'' हमें उस (की ज़ात) में कोई बुराई मालूम नहीं। अज़ीज़ (मिस्र) की बीवी ने कहाः अब हक़ वाज़ेह हो गया है, मैंने ही उसे उसके जी से फुसलाया था और बिलाशुब्ह वह सच्चा है।

(52) (यूसुफ ने कहाः) यह इसलिए कि वह (अज़ीज़) जान ले कि बेशक मैंने उसके पीछे उसकी ख्यानत (विश्वासघात) नहीं की थी और यह कि बेशक अल्लाह खाईन (विश्वासघाती) का मक्र (छल) नहीं चलने देता।

(53) और मैं अपने नफ्स को बरी नहीं करता, बेशक नफ्स तो बुराई पर उकसाता है, मगर जिस पर मेरा रब रहम करे, बेशक मेरा रब गफुरूर्रहीम है।

(54) और बादशाह ने कहाः उसे मेरे पास लाओ, मैं उसे अपनी ज़ात के लिए मखसूस करूंगा, फ़िर जब उसने यूसुफ से गुफ्तगू (बातचीत) की, तो कहाः यक़ीनन आज तो हमारे यहाँ मर्तबे वाला, अमीन है।

(55) यूसुफ ने कहाः मुझे ज़मीन के खज़ानों (पैदावर) पर मुक़र्रर कर दीजिए, बेशक मैं खूब निगहबानी करने वाला, खूब जानने वाला हूँ।

(56) और इस तरह हमने यूसुफ को ज़मीन (मिस्र) में इक़्तिदार दिया, वह उसमें जहाँ चाहता क़याम करता, हम अपनी रहमत से जिसे चाहे नवाज़ते हैं, और हम नेकों का अज्र ज़ाया (बरबाद) नहीं करते।

(57) और यक़ीनन आख़िरत का अज्र बेहतर है उनके लिए जो ईमान लाए और उन्होंने तक़्वा इख्तियार किया।

(58) और यूसुफ के भाई (गल्ला लेने) आए और उसके पास पहुँचे, तो उसने उन्हें पहचान लिया और वह उसे नहीं पहचानते थे।

(59) और जब उसने उनका सामान तैयार करवाया तो कहाः मेरे पास अपने सौतेला भाई (बिनयामीन को) लाना क्या तुम देखते नहीं कि मैं पूरा माप (कर गल्ला) देता हूँ, और मैं बेहतरीन मेहमान नवाज़ हूँ?

(60) फ़िर अगर तुम उसे मेरे पास न लाए

तो तुम्हार लिए मेरे पास कोई माप (कर गल्ला) नहीं, और न तुम मेरे क़रीब आना।

(61) उन्होंने कहाः हम उसके बाप से उसे माँगेंगे और यक़ीनन हम (यह) करेंगे।

(62) और यूसुफ ने अपने खादिमों से कहाः उनकी पूंजी (नक़दी) उनके सामान में रख दो ताकि जब वह अपने अहल व अयाल में पहुँचें तो उसे पहचान लें, शायद वह वापस आएँ।

(63) फ़िर जब वह अपने बाप के पास लौटे तो बोलेः अब्बा जान! (आईन्दा) हमारे लिए माप (गल्ला) मम्नू ठहरा है, लिहाज़ा तू हमारे साथ हमारे भाई को भेज कि हम माप (गल्ला) लाए और बेशक हम उसके मुहाफिज़ हैं।

(64) याक़ूब ने कहाः क्या मैं उसकी बाबत तुम्हारा एतबार कर लूं जैसे पहले उसके भाई की बाबत तुम पर एतबार किया था? इसलिए अल्लाह ही बेहतर मुहाफिज़ है और वह सब मेहरबानों से ज़्यादा रहम करने वाला है।

(65) और जब उन्होंने अपना सामान खोला तो अपनी पूंजी पाई जो उन्हें लौटा दी गई थी। वह बोलेः अब्बा जान! हमें (और) क्या चाहिए? यह हमारी पूंजी हमें लौटा दी गई है, और हम अपने अहल व अयाल के लिए गल्ला लाएँगे और अपने भाई की हिफाज़त करेंगे और हम एक ऊँट का माप (गल्ला) ज़्यादा लाएँगे, यह माप (गल्ला मिलना) तो बहुत आसान है।

(66) याक़ूब ने कहाः मैं उसे तुम्हारे साथ हरगिज़ नहीं भेजूंगा यहाँ तक कि तुम मुझे अल्लाह का पुख़्ता अहद दो कि तुम उसे ज़रूर मेरे पास लाओगे सिवाए उसके कि तुम घिर जाओ। फ़िर जब उन्होंने उसे पुख़्ता अहद दिया तो वह बोलाः जो कुछ हम कहते हैं अल्लाह उस पर ज़ामिन है।

(67) और उसने कहाः ऐ मेरे बेटो! तुम एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना बल्कि अलग अलग दरवाज़ों से दाख़िल होना, और मैं तुम्हे अल्लाह (की तक़दीर) से ज़रा भी नहीं बचा सकता। हुक्म तो अल्लाह ही का है, उसी पर मैंने भरोसा किया है, और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए।

(68) और जब वह दाख़िल हुए जहाँ से उनके बाप ने उन्हें हुक्म दिया था, वह उन्हें अल्लाह (की तक़दीर) से ज़रा भी नहीं बचा सकता था, मगर याक़ूब के दिल में एक ख़्वाहिश थी सो वह पूरी कर चुका, और बिलाशुब्ह हमारे तालीम देने की वजह से वह साहबे इल्म था लेकिन अक्सर लोग इल्म नहीं रखते।

(69) और जब वह यूसुफ के पास पहुँचे तो उसने अपने (सगे) भाई (बिनयामीन)

को अपने पास रख लिया (और) कहाः बेशक मैं तेरा भाई हूँ, लिहाज़ा तू उसका ग़म न कर जो कुछ वह करते रहे।

(70) फ़िर जब यूसुफ ने उनका सामान तैयार कर दिया तो अपने भाई के सामान में एक प्याला रख दिया, फ़िर एक पुकारने वाले ने पुकाराः ऐ क़ाफिले वालों! यक़ीनन तुम चोर हो।

(71) वह उनकी तरफ मुतवज्जह हो कर बोलेः तुम क्या चीज़ गुम पाते हो?

(72) उन्होंने कहाः हम बादशाह का प्याला गुम पाते हैं, और जो शख़्स उसे लाए उसके लिए ऊँट भर (गल्ला) है और मैं उसका ज़ामिन हूँ।

(73) वह बोलेः अल्लाह की क़सम! तुम्हें इल्म है कि हम इस मुल्क में फसाद करने नहीं आए और न हम चोर हैं।

(74) उन्होंने कहाः फ़िर उस (चोर) की क्या सज़ा है अगर तुम झुठे हुए?

(75) वह बोलेः उसकी सज़ा यह है (कि) जिस के सामान में वह (प्याला) पाया जाए वही शख़्स उसका बदला है। हम ज़ालिमों को यही सज़ा देते हैं।

(76) इसलिए यूसुफ अपने भाई के बोरे से पहले उनके बोरों की तलाशी लेने लगा, फ़िर उसने अपने भाई के बोरे से वह (प्याला) निकाल लिया, इसी तरह हमने यूसुफ के लिए तदबीर की, वह उस बादशाह के क़ानून की रू से तो अपने भाई को नहीं रख सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे। हम जिसके चाहे दर्जे बुलंद करते हैं। और हर साहबे इल्म के ऊपर एक ज़्यादा इल्म वाला है।

(77) उन्होंने कहाः अगर उसने चोरी की है तो उससे पहले उसके एक भाई ने भी चोरी की थी। इसलिए यूसुफ ने यह (बात) अपने दिल में छुपाई और उन पर ज़ाहिर न की (और दिल में) कहाः तुम बदतरीन दर्जे पर हो, और अल्लाह खूब जानता है जो तुम बयान करते हो।

(78) उन्होंने कहाः ऐ अज़ीज़! बेशक उसका बाप बूढ़ा बड़ी उम्र का है, इसलिए आप उसकी जगह हममें से किसी को पकड़ लें। बेशक हम देखते हैं कि आप अहसान करने वाले हैं।

(79) यूसुफ ने कहाः अल्लाह पनाह दे कि जिस शख़्स के पास हमने अपनी चीज़ पाई, उसके सिवा किसी और को पकड़ें, तब तो बेशक हम ज़ालिम हुए।

(80) फ़िर जब वह उससे नाउम्मीद हो गए तो अलग हो कर मशवरा किया। उनके बड़े ने कहाः क्या तुम्हें इल्म नहीं कि बेशक तुम्हारे बाप ने तुम से अल्लाह का पुख़्ता अहद लिया है? और इससे पहले यूसुफ की बाबत तुम क़सूर कर चुके हो? इसलिए मैं

तो इस सरज़मीन को नहीं छोडूंगा यहाँ तक कि मेरा बाप मुझे हुक्म दे या अल्लाह मेरे लिए फैसला कर दे, और वह बेहतरीन फैसला करने वाला है।

(81) तुम अपने बाप के पास वापिस जाओ और कहोः अब्बाजान! बेशक आपके बेटे ने चोरी की और हमने वही गवाही दी थी जो हमें इल्म था और हमें ग़ैब की खबरे न थी।

(82) और आप उस बस्ती (वालों) से पूछ लें जिसमें हम रहे और उस क़ाफिले से भी जिसमें हम आए हैं और बेशक हम सच्चे हैं।

(83) याक़ूब ने कहाः (हक़ीक़त यह नहीं) बल्कि तुम्हारे लिए तुम्हारे दिलों ने एक (बुरी) बात बना दी है, इसलिए सब्र ही बेहतर है। शायद अल्लाह उन सबको मेरे पास ले आए, बेशक वही अलीम, हकीम है।

(84) और वह उनसे मुँह फ़ेर कर बोलाः हाय अफसोस यूसुफ पर! और उसकी आँखें ग़म से सफेद हो गई और वह ग़म से भरा हुआ था।

(85) बेटे बोलेः अल्लाह की क़सम! आप यूसुफ को सदा याद करते रहेंगे यहाँ तक कि आप (ग़म से) घुल जाए या हलाक हो जाए।

(86) उसने कहाः मैं तो अपनी परेशानी और ग़म का शिकवा अल्लाह ही से करता हूँ और मैं अल्लाह की तरफ से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

(87) ऐ मेरे बेटो! जाओ और यूसुफ और उसके भाई को ढूंढो और अल्लाह की रहमत से मायूस न होना, बेशक अल्लाह की रहमत से तो काफिर ही मायूस हुआ करते हैं।

(88) फ़िर जब वह यूसुफ के पास पहुँचे तो उन्होंने कहाः ऐ अज़ीज़! हमें और हमारी अहल व अयाल को तकलीफ पहुँची है और हम नाक़िस (कम) पूंजी लाए हैं, इसलिए आप हमें पूरा माप दें और हम पर सदक़ा खैरात करें, यक़ीनन अल्लाह सदक़ा खैरात करने वालों को जज़ा (बदला) देता है।

(89) उसने कहाः क्या तुम्हें मालूम है कि तुमने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या किया था जब तुम नादान थे?

(90) वह बोलेः क्या वाक़ई तू ही यूसुफ है? उसने कहाः (हाँ) मैं ही यूसुफ हूँ, और यह मेरा भाई है। यक़ीनन अल्लाह ने हम पर अहसान किया है। बेशक जो शख़्स तक़्वा इख़्तियार करे और सब्र करे तो अल्लाह नेकों का अज्र ज़ाया (बरबाद) नहीं करता।

(91) उन्होंने कहाः अल्लाह की क़सम! यक़ीनन अल्लाह ने तुझे हम पर फज़ीलत दी, और बिलाशुब्ह हम ही ख़ताकार थे।

(92) यूसुफ ने कहाः तुम पर आज कोई इल्ज़ाम नहीं, अल्लाह तुम्हारी मग्फिरत करे और वह बड़ा रहम करने वाला है।

(93) तुम मेरी क़मीज ले जाओ और उसे

मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, वह बीना (देखने वाले) हो जाएँगे और तुम अपने तमाम अहल व अयाल को मेरे पास ले आओ।

(94) और जब क़ाफ़िला (मिस्र से) चला तो उनके बाप ने कहाः बेशक मैं यूसुफ की महक पाता हूँ अगर तुम मुझे बहका हुआ न कहो।

(95) वह बोलेः अल्लाह की क़सम! बिलाशुब्ह आप अपनी क़दीम (पुरानी) गलती में हैं।

(96) फ़िर जब बशारत (खुशखबरी) देने वाला आया, उसने वह (क़मीज) उसके चेहरे पर डाली तो वह बीना (देखने वाला) हो गया, याक़ूब ने कहाः क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि बेशक मैं अल्लाह की तरफ से वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते?

(97) उन्होंने कहाः अब्बाजान! हमारे लिए हमारे गुनाहों की मग्फिरत माँगें, बेशक हम ही गुनाहगार थे।

(98) याक़ूब ने कहाः अनक़रीब (जल्द ही) मैं अपने रब से तुम्हारे लिए मग्फिरत मांगूगा, बेशक वही गफुरूर्रहीम है।

(99) इसलिए जब वह यूसुफ के पास पहुँचे तो उसने अपने माँ बाप को अपने पास जगह दी और कहाः तुम मिस्र में दाख़िल हो जाओ अगर अल्लाह ने चाहा तो अमन से रहोगे।

(100) और उसने अपने माँ बाप को तख़्त पर ऊँचा बिठाया और सब उसके आगे सज्दे में गिर गए और यूसुफ़ ने कहाः अब्बा जान! यह मेरे पहले ख्वाब की ताबीर है। मेरे रब ने उसे सच्चा कर दिया है और उसने मुझ पर अहसान किया जब उसने मुझे क़ैद से निकाला और तुम्हें देहात से (यहाँ) ले आया, इसके बाद कि शैतान ने मेरे और मेरे भाईयों के दरम्यान फसाद डाल दिया था, बेशक मेरा रब बारिक बीनी से जो चाहे तदबीर करता है, बेशक वही अलीम, हकीम है।

(101) ऐ मेरे रब! तूने मुझे कुछ हुकूमत दी है और मुझे ख्वाबों की ताबीर सिखाई है, ऐ आसमान और ज़मीन पैदा करने वाले! तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा कारसाज़ है, तू मुझे इस्लाम पर मौत दे और मुझे सालिहीन के साथ मिला।

(102) यह ग़ैब की कुछ खबरें हैं, यह हम आपकी तरफ वह्यी करते हैं और आप उन (यूसुफ के भाइयों) के पास नहीं थे जब उन्होंने अपनी एक बात पर इत्तेफाक़ किया था और वह मक्र कर रहे थे।

(103) और अक्सर लोग, अगरचे आप हिरस (तमन्ना) करें, ईमान लाने वाले नहीं।

(104) और आप इस (तबलीग) पर उन (मुश्रिकीने मक्का) से कोई अज्र नहीं मांगते। यह (कुरआन) तो सारे आलम के लिए

नसीहत (उपदेश) है।

(105) और आसमानों और ज़मीन में कितनी ही निशानियां हैं कि वह उन पर से गुज़रते हैं और उनसे बेध्यानी करते हैं।

(106) और उनके अक्सर अल्लाह पर (इस तरह) ईमान लाते हैं कि वह मुश्रिक ही होते हैं।

(107) क्या वह निडर हो गए हैं कि उन पर अल्लाह के अज़ाब की कोई आफत आए या अचानक उन पर क़यामत आ जाए और उन्हें खबर भी न हो।

(108) (ऐ नबी!) कह दीजिएः यही मेरी राह है, मैं (तुम्हें) अल्लाह की तरफ बुलाता हूँ, मैं और वह लोग, जिन्होंने मेरा इत्तेबा किया, दलील पर हैं और अल्लाह पाक है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ।

(109) और आप से पहले हमने मर्द ही (रसूल बना कर) भेजे, उनकी तरफ हम वह्यी करते थे (और) वह बस्तियों के रहने वाले थे। क्या फ़िर वह ज़मीन में नहीं चले फिरे कि देखते उन लोगों का अन्जाम क्या हुआ जो उन से पहले थे? और परहेज़गारों के लिए आख़िरत का घर ही बेहतर है। क्या फ़िर तुम समझते नहीं?

(110) यहाँ तक कि जब रसूल मायूस हो गए और वह ख्याल करने लगे कि उन्हें खिलाफ वाक़िया खबर दी गई तो उनके पास हमारी मदद आ पहुँची, फ़िर निजात मिली उसे जिसे हम ने चाहा और मुजरिम क़ौम से हमारा अज़ाब टाला नहीं जाता।

(111) यक़ीनन उनके किस्सो में अक़्ल वालों के लिए इबरत है। यह (क़ुरआन) गढ़ी हुई बात नहीं बल्कि अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ और हर चीज़ की तफ्सील है और ईमान लाने वालों के लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) और रहमत है।

सूरह रअद-13

(यह मदनी सूरत है इसमें 43 आयतें और 6 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलीफ लाम मीम रा, (ऐ नबी!) यह किताब की आयतें हैं, और जो आपके रब की तरफ से आप पर नाज़िल किया गया वह हक़ है लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते।

(2) अल्लाह वह ज़ात है जिसने सतूनो के बग़ेर आसमान बुलंद किये, तुम उन्हें देखते हो फ़िर वह अर्श पर मुस्तवी हुआ और सूरज और चाँद को काम पर लगाया, हर एक मुक़र्रर मुद्दत तक के लिए चल रहा है। वह काम की तदबीर करता है, (अपनी) निशानियां तफ्सील से बयान करता है ताकि तुम अपने रब से मुलाक़ात पर यक़ीन कर

लो।

(3) और वही है जिसने ज़मीन फैलाई और उसमें पहाड़ और नहरें बनाई और उसमें हर क़िस्म के फलों के दो दो जोड़े बनाए, वह दिन को रात से ढापंता है। बेशक उसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं।

(4) और ज़मीन में आपस में मिले हुए क़ितआत (भू-भाग) हैं, और अंगूर के बाग और खेतियां और खजूर के दरख़्त हैं जो जड़ से मिले हुए हैं और जुदा जुदा, जो एक ही पानी से सैराब होते हैं, हम कुछ को कुछ पर फलों (के ज़ायके) में फ़ज़ीलत देते हैं। बेशक उसमें उनके लिए निशानियां हैं जो समझते हैं।

(5) और अगर आप तअज्जुब करें तो उनका यह कहना अजीब तर है कि क्या जब हम मिट्टी हो जाएँगे तो हमें नए सिरे से पैदा किया जाएगा? यही लोग हैं जो अपने रब के इन्कारी हुए, और यह कि उनकी गर्दनों में तौक़ होंगे और यही दोज़ख वाले हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(6) और वह आपसे भलाई (रहमत) से पहले बुराई (अज़ाब) चाहते हैं, हालांकि उनसे पहले (अज़ाब की) मिसालें गुज़र चुकी हैं और बेशक आपका रब लोगों के ज़ुल्म के बावजूद उन्हें बख़्शने वाला है और यक़ीनन आपका रब सख़्त सज़ा वाला है।

(7) और काफिर लोग कहते हैंः उस पर उसके रब की तरफ से कोई निशानी क्यों न उतारी गई? (ऐ नबी!) आप तो सिर्फ डराने वाले हैं और हर क़ौम के लिए एक हादी (मार्गदर्शक) होता है।

(8) अल्लाह जानता है हर मादा जो कुछ पेट में उठाए फिरती है और अरहाम (गर्भ) की कमी बेशी भी, और उसके यहाँ हर चीज़ की एक मिक़दार (मुक़र्रर) है।

(9) वह ग़ैब और ज़ाहिर का जानने वाला, बहुत बड़ा निहायत बुलंद है।

(10) (अल्लाह के नज़दीक) बराबर है कि तुममें से जो कोई आहिस्ता बात कहे या बुलंद आवाज़ से कहे, और जो रात (की अंधेरे) में छुपा हो या दिन (की रोशनी) में चल रहा हो।

(11) इस (इंसान) के लिए बारी बारी आने वाले (फरिश्ते) हैं, उसके आगे से और उसके पीछे से, वह अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफाज़त करते हैं। बेशक अल्लाह किसी क़ौम की (अच्छी) हालत को नहीं बदलता यहाँ तक कि वह खुद अपने दिलों की हालात को बदल लें और जब अल्लाह किसी क़ौम के साथ बुराई (अज़ाब) का इरादा करता है तो उसे कोई टालने वाला नहीं और उनके लिए उसके सिवा कोई कारसाज़ (काम बनाने वाला) नहीं।

(12) वही है जो तुम्हें डराने और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और भारी बादल उठाता है।

(13) और (बादल की) गरज उसकी हम्द के साथ तस्बीह पढ़ती है और फरिश्ते भी उसके ख़ौफ से (तस्बीह पढ़ते हैं) और वही कड़कती बिजलियां भेजता है फ़िर उन्हें जिन पर चाहे गिराता है जबकि वह अल्लाह की बाबत झगड़ रहे होते हैं और उसकी चाल ज़बरदस्त है।

(14) उसी को पुकारना बरहक़ है और जो लोग उसके सिवा दूसरों को पुकारते हैं वह उन्हें किसी बात का जवाब नहीं देते मगर जैसे कोई शख़्स अपने दोनों हाथ पानी की तरफ फैलाऐ ताकि पानी उसके मुँह में आ पहुँचे जबकि वह उस (के मुँह) तक पहुँचने वाला नहीं। और काफिरों की पुकार सरासर गुमराही में है।

(15) और अल्लाह ही को सज्दा करता है जो कोई आसमान और ज़मीन में है, खुशी से और नखुशी से और उनके साये भी सुबह और शाम (सज्दे करते हैं)।

(16) (ऐ नबी!) पूछेः आसमानों और ज़मीन का रब कौन है? कह दीजिएः अल्लाह! (और) कहेः फ़िर क्या तुमने अल्लाह के सिवा हिमायती (मददगार) बना रखे हैं जो खुद अपने नफा नुक़सान के भी मालिक नहीं? कह दीजिएः क्या अन्धा और देखने वाला बराबर हो सकते हैं? या क्या अन्धेरे और रोशनी बराबर हो सकती हैं? क्या उन्होंने अल्लाह के शरीक ठहरा रखे हैं कि उन्होंने भी अल्लाह की मख़्लूक़ (सृष्टि) जैसी कोई मख़्लूक़ बनाई है फ़िर वह मख़्लूक़ उन पर मुशतबह (संदिग्ध) हो गई है? कहा दीजिएः अल्लाह ही हर चीज़ का खालिक़ (पैदा करने वाला) है और वही यक्ता (अकेला) है, निहायत गालिब।

(17) अल्लाह ने आसमान से पानी नाज़िल किया, तो नदी नाले अपनी अपनी गुन्जाईश के मुताबिक़ बह निकले, फ़िर सैलाब फूला हुआ झाग ऊपर ले आया। और उन (ध ातुओं) में से भी जिन्हें ज़ेवर या सामान बनाने के लिए आग में पिघलाते हैं, उसी तरह का झाग (उठता) है। अल्लाह इसी तरह हक़ और बातिल (कुफ्र) की मिसाल बयान करता है। इसलिए जो झाग है वह तो सूख कर ज़ाईल (खत्म) हो जाता है और जो चीज़ इंसानों को फायदा देती है वह ज़मीन में बाक़ी रहती है। अल्लाह इसी तरह मिसालें बयान करता है।

(18) जिन्होंने अपने रब का हुक्म माना उनके लिए भलाई है। और जिन्होंने उसका हुक्म न माना, अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है और इतना ही उसके साथ

(और भी) तो वह ज़रूर उसे फिदये (बदले) में दे दें। यही लोग हैं कि उनसे बुरी तरह हिसाब लिया जाएगा और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है।

(19) भला जो शख़्स जानता है कि जो कुछ आपके रब की तरफ से आप पर नाज़िल किया गया है, वही हक़ है, वह अन्धे जैसा हो सकता है? बस अक़्ल वाले ही नसीहत (उपदेश) पकड़ते हैं।

(20) वह जो अल्लाह का अहद (वादा) पूरा करते हैं और पुख़्ता वादा नहीं तोड़ते।

(21) और जो जोड़ते हैं वह चीज़ जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया और वह अपने रब से डरते हैं और सख़्त हिसाब से घबराते हैं।

(22) और जिन्होंने अपने रब के चेहरे की तलब के लिए सब्र किया और नमाज़ क़ायम की और हमारे दिए रिज़्क़ में से छुपे और खुले खर्च किया और वह बुराई को भलाई से दफा (दूर) करते हैं, उन्हीं लोगों के लिए आख़िरत का घर है।

(23) जो कि हमेशा के बाग हैं जिनमें वह दाख़िल होंगे और वह भी जो उनके बाप दादा और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से नेक हैं और फरिश्ते (जन्नत के) हर दरवाज़े से उनके पास आएँगे।

(24) (और कहेंगेः) तुम पर सलाम हो, इसलिए कि तुमने सब्र किया, लिहाज़ा आख़िरत का घर बहुत खूब है।

(25) और जो लोग अल्लाह के अहद (वादे) को पुख़्ता करने के बाद तोड़ देते हैं और वह चीज़ तोड़ देते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया, और वह ज़मीन में फसाद करते हैं, उन्हीं लोगों के लिए लअनत है और उनके लिए (आख़िरत का) बहुत बुरा घर है।

(26) अल्लाह जिसे चाहे खुला रिज़्क़ देता है और (जिसे चाहे) नपा तुला देता है और वह (काफिर) दुनिया की ज़िन्दगी पर इतराते हैं हालांकि दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत की निस्बत (कमतर) मताअ़ (सामान) ही तो है।

(27) और काफिर कहते हैंः उसके रब की तरफ से उस पर कोई निशानी क्यों नहीं नाज़िल की गई? कह दीजिएः बेशक अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करता है और उस शख़्स को अपनी तरफ हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है जो रूजू करे (पलटे)।

(28) जो लोग ईमान लाए और उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से इत्मिनान पाते हैं, जान लो! अल्लाह के ज़िक्र ही से दिल इत्मिनान पाते हैं।

(29) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किये, उनके लिए ख़ुशहाली और अच्छा ठिकाना है।

(30) (जैसे पहले रसूल भेजे थे) उसी तरह हमने आप को ऐसी उम्मत (समुदाय) में रसूल बना कर भेजा जिससे पहले कई उम्मतें गुज़र चुकी हैं ताकि आप उन्हें वह पढ़ कर सुनाऐं जो हमने आपकी तरफ वह्यी की और वह रहमान का इन्कार करते हैं, कह दीजिएः वह मेरा रब है, उसके सिवा कोई मअ़बूद (पूज्य) नहीं, मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी की तरफ मेरी तौबा है।

(31) और अगर बिलाशुब्ह ऐसा कुरआन होता कि उसके ज़रिये से पहाड़ चलाए जाते या उससे ज़मीन टुकड़े हो जाती या उससे मुरदे बोल पड़ते (तो भी कुफ्फार ईमान न लाते) बल्कि सारा इख्तियार (अधिकार) अल्लाह ही के पास है, क्या फ़िर ईमान वालों ने (अभी तक) नहीं जाना कि अगर अल्लाह चाहता तो सब ही लोगों को हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता? और जिन्होंने कुफ्र किया उनके करतूतों पर उन्हें आफत पहुँचती ही रहेगी या उनके घरों के क़रीब उतरेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पहुँचे। बेशक अल्लाह अपने वादे के खिलाफ नहीं करता।

(32) और (ऐ नबी!) आपसे पहले रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया गया तो मैंने काफिरों को ढील दी, फ़िर उन्हें पकड़ लिया, फ़िर मेरा अज़ाब कैसा (इबरतनाक) था?

(33) भला वह (अल्लाह) जो हर नफ्स (के आमाल) पर निगराँ है, जो उसने किये, (गैरूल्लाह के मानिन्द हो सकता है?) और उन्होंने अल्लाह के साथ शरीक ठहराए हैं। कह दीजिएः उनके नाम तो लो, क्या तुम अल्लाह को उस चीज़ की खबर देते हो जो वह नहीं जानता ज़मीन में? बल्कि बेकार बातों से तुम शरीक ठहराते हो, बल्कि काफिरों के लिए उनका मक्र (छल) खुशनुमा बना दिया गया और उन्हें राह हक़ से रोक दिया गया और जिसे अल्लाह गुमराह करे उसके लिए कोई हादी (मार्गदर्शक) नहीं।

(34) उनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो सख्त तरीन है और उन्हें अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने वाला कोई नहीं।

(35) जिस जन्नत का मुत्तक़ी (परहेज़गार) लोगों से वादा किया गया उसकी सिफत (खूबी) यह है कि उसके नीचे नहरें जारी हैं। उसके फल और उसके साया दायमी (हमेशा) हैं। यह उनका अंजाम है जो मुत्तक़ी हुए और काफिरों का अंजाम आग है।

(36) और जिन्हें हमने किताब दी वह उस (कुरआन) से खुश होते हैं जो आपकी तरफ नाज़िल किया गया और कुछ गिरोह हैं जो उसके कुछ अहकाम का इन्कार करते हैं। कह दीजिएः मुझे तो सिर्फ यह हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूं

और उसके साथ शिर्क न करूं। उसकी तरफ मैं दअवत देता हूँ और उसी की तरफ मेरी वापसी है।

(37) और इसी तरह हमने इस (कुरआन) की अरबी ज़बान में हुक्म (बना कर) नाज़िल किया और अगर आपने उसके बाद भी उनकी ख्वाहिशात का इत्तेबा किया कि आपके पास इल्म आ चुका तो आपके लिए अल्लाह के मुक़ाबले में कोई हिमायती और बचाने वाला न होगा।

(38) और बेशक हमने आपसे पहले कई रसूल भेजे और हमने उन्हें बीवी बच्चों वाले बनाया और किसी रसूल को यह इख्तियार न था कि वह अल्लाह के इज़्न (हुक्म) के बग़ैर कोई निशानी ला दिखाए। हर वादे के लिए लिखा हुआ वक़्त है।

(39) अल्लाह जिसे चाहता है मिटाता है और (जिसे चाहे) साबित रखता है और उसी के पास अस्ल किताब है।

(40) और (ऐ नबी!) जिस (अज़ाब) का हम उनसे वादा करते हैं चाहे उसका कुछ हिस्सा हम आपको दिखा दें या (उससे पहले) आपको वफात दे दें आपके ज़िम्मे तो सिर्फ पहुँचा देना है और हमारा काम हिसाब लेना है।

(41) क्या वह देखते नहीं कि बिलाशुब्ह हम (कुफ्र की) ज़मीन को हर तरफ से घटाते जा रहे हैं (यानी इस्लाम फैल रहा है) और अल्लाह हुक्म करता है, कोई उसका हुक्म रद्द करने वाला नहीं और वह जल्द हिसाब लेने वाला है।

(42) और बेशक वह लोग बहुत तदबीरें कर चुके जो उनसे पहले थे, बस अल्लाह ही के लिए हैं सारी तदबीरें। वह जानता है जो कुछ हर नफ्स (इंसान) कमाता है और जल्द ही कुफ्फार जान लेंगे कि आख़िरत का घर किसके लिए है।

(43) और काफिर कहते हैंः तुम रसूल नहीं हो। आप कह दीजिएः अल्लाह काफी है मेरे और तुम्हारे दरम्यान गवाह और वह शख्स भी जिसे किताब का इल्म है।

सूरह इब्राहीम-14

(यह मदनी सूरत है इसमें 52 आयतें और 7 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलीफ लाम रा, (ऐ नबी!) यह अज़ीमुश्शान किताब हमने आपकी तरफ नाज़िल की है ताकि आप लोगों को जुल्मतों (अंधेरों) से नूर (उजाले) की तरफ निकाल लाए, उनके रब के इज़्न (हुक्म) से ग़ालिब, तअरीफ के लायक़ के रास्ते की तरफ।

(2) (यानी) अल्लाह की तरफ जिसका

वह सब कुछ है जो आसमानों में और ज़मीन में है और काफिरों के लिए शदीद (सख्त) अज़ाब से तबाही है।

(3) जो आख़िरत पर दुनिया की ज़िन्दगी को महबूब रखते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें टेढ़ा पन ढूढ़ते हैं, वही दूर की गुमराही में हैं।

(4) और हमने हर रसूल उसकी अपनी क़ौम की ज़बान बोलने वाला भेजा ताकि उनके लिए खोल कर बयान करे। फ़िर अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करता है और जिसे चाहे हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है और वह ज़बरदस्त, खूब हिकमत वाला है।

(5) और बिलाशुब्ह हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को ज़ुल्मतों से नूर की तरफ निकाल ला और उन्हें अल्लाह के (यादगार) अय्याम (दिनों को) याद दिला। बेशक उनमें हर साबिर (सब्र करने वाले और) शाकिर (शुक्र करने वाले) के लिए निशानियां हैं।

(6) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहाः अपने ऊपर अल्लाह की नेअमत याद करो जब उसने तुम्हें आले फ़िरऔन से निजात दी, वह तुम्हें सख्त अज़ाब देते थे, तुम्हारे बेटे ज़ब्ह करते और तुम्हारी बेटियां ज़िन्दा छोड़ते थे और उसमें तुम्हारे रब की तरफ से अज़ीम आज़माईश थी।

(7) और जब तुम्हारे रब ने आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्र करोगे तो यक़ीनन मैं तुम्हें मज़ीद (ज्यादा) दूंगा और तुम कुफ्र करोगे तो बिलाशुब्ह मेरा अज़ाब बहुत शदीद (सख्त) है।

(8) और मूसा ने कहाः अगर तुम कुफ्र करोगे और वह सब लोग भी जो ज़मीन में हैं तो बेशक अल्लाह बेपरवा, तअरीफ के लायक़ है।

(9) क्या तुम्हें उनकी ख़बर नहीं पहुँची जो तुमसे पहले थे, (यानी) क़ौमे नूह और आद और समूद और जो उनके बाद हुए? जिन्हें सिर्फ अल्लाह जानता है। उनके पास उनके रसूल खुली निशानियां लाए तो उन्होंने अपने हाथ अपने मुँह में दबा लिए और बोलेः बेशक हम उसे नहीं मानते जो तुम्हारे हाथ भेजा गया है और जिस चीज़ की तरफ तुम हमें बुलाते हो उसमें हमें इज़तिराब (उलझन) में डालने वाला शक है।

(10) उनके रसूलों ने कहाः क्या (तुम्हें) उस अल्लाह की बाबत शक है जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है? वह तुम्हें बुलाता है कि तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें एक मुक़र्रर वक़्त तक मुहलत दे। वह कहने लगेः तुम हमारे जैसे बशर (इंसान) ही तो हो, तुम चाहते हो कि हमें उन (मअबूदों) से रोक दो जिनकी हमारे बाप दादा इबादत

करते थे, लिहाज़ा हमारे पास कोई खुली दलील ले आओ।

(11) उनके रसूलों ने उनसे कहाः वाक़ई हम तुम्हारे जैसे बशर ही हैं लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उस पर एहसान करता है। और हमें यह इख़्तियार नहीं कि अल्लाह के हुक्म के बग़ेर हम तुम्हारे पास कोई मोअजिज़ा (चमत्कार) ला सकें और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

(12) और हमारे पास क्या उज़्र (बहाना) है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें जबकि वह हमें हमारी राहें दिखा चुका है? और हम उन इज़ाओं (दुखों) पर ज़रूर सब्र करेंगे जो तुम हमें देते हो और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

(13) और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहाः हम तुम्हें अपनी ज़मीन से ज़रूर निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में लौट आओ, इसलिए उनके रब ने उनकी तरफ़ वह्यी की कि हम ज़ालिमों को ज़रूर हलाक कर देंगे।

(14) और उनके बाद हम ज़रूर तुम्हें इस सरज़मीन में आबाद करेंगे यह (इनआम) उसके लिए है कि जो मेरे हुज़ूर खड़ा होने से डरा और मेरी वईद (सज़ा) से डरा।

(15) और उन्होंने अपनी फतह मांगी और हर सरकश, ज़िद्दी नाकाम हुआ।

(16) उसके आगे जहन्नम है और (वहाँ) उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा।

(17) जिसे वह घूंट घूंट पीएगा मगर हलक़ से न उतर सकेगा और हर तरफ से मौत उसकी तरफ बढ़ेगी जबकि वह मरेगा नहीं और उसके आगे निहायत सख़्त अज़ाब होगा।

(18) जिन लोगों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया उनके (नेक) आमाल की मिसाल राख की सी है जिसे आँधी के दिन ज़ोर की हवा उड़ा ले जाए। जो कुछ उन्होंने कमाया वह उस पर कोई कुदरत नहीं रखेंगे। यही परले दर्जे की गुमराही है।

(19) क्या आपने नहीं देखा कि बेशक अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया। अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और नई मख़्लूक़ ले आए।

(20) और अल्लाह के लिए यह काम कुछ भी मुश्किल नहीं।

(21) और सब लोग अल्लाह के सामने खड़े होंगे तो कमज़ोर लोग उन लोगों से कहेंगे जो (दुनिया में) घमंड करते थेः बेशक हम तो तुम्हारे ताबे थे, फ़िर क्या तुम हमसे अल्लाह का कुछ अज़ाब दूर कर सकते हो? वह कहेंगेः अगर अल्लाह हमें हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता तो हम ज़रूर तुम्हें हिदायत करते। अब हमारे लिए बराबर है ख़्वाह हम

रोऐं पीटें या सब्र करें, हमारे लिए भागने की कोई जगह नहीं।

(22) और जब फैसला चुका दिया जाएगा तो शैतान कहेगाः बेशक अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था और मैंने तुमसे जो वादा किया था उसकी मैंने खिलाफ वर्जी की और मेरा तुम पर कोई ज़ोर न था मगर यह कि मैंने तुम्हें दअ्वत दी तो तुम ने मेरी बात मान ली, इसलिए तुम मुझे मलामत न करो अपने आपको मलामत करो। मैं तुम्हारा फरियाद रस नहीं और न तुम मेरे फरयाद रस हो। बिलाशुब्ह मैं तो उसका इन्कार करता हूँ जो तुम इससे पहले मुझे (अल्लाह का) शरीक ठहराते थे। बेशक ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(23) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये वह ऐसी जन्नतों में दाख़िल किये जाएँगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वह अपने रब के इज़्न (हुक्म) से हमेशा वहाँ रहेंगे। वहाँ उनकी (मुलाक़ात की) दुआ ''सलाम'' होगी।

(24) (ऐ नबी!) क्या आपने देखा नहीं अल्लाह ने कैसे मिसाल बयान की कलमा तय्यबा (इस्लाम) की कि वह पाकीज़ा दरख़्त (पेड़) की तरह है, उसकी जड़ मज़बूत है और उसकी शाखें आसमान में हैं।

(25) वह हर वक़्त पर अपने रब के हुक्म से फल लाता है और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है ताकि वह नसीहत (उपदेश) पकड़ें।

(26) और कलमा खबीसा (कुफ़्र व शिर्क) की मिसाल एक खबीस (गंदे) दरख़्त (पेड़) की सी है कि उसे ज़मीन पर से उखाड़ दिया जाए, उसके लिए कोई क़रार नहीं।

(27) अल्लाह ईमान वालों को क़ौले साबित (कलमा तौहीद) से दुनिया की ज़िन्दगी और आख़िरत में साबित क़दम रखता है और अल्लाह ज़ालिमों को गुमराह कर देता है और अल्लाह जो चाहे करता है।

(28) क्या आपने देखा नहीं उन लोगों को जिन्होंने अल्लाह की नेअमत (ईमान) को कुफ़्र से बदल डाला और अपनी क़ौम को हलाकत के घर में ले जा उतारा?

(29) (यानी) जहन्नम में, वह उसमें दाख़िल होंगे और वह बदतरीन ठिकाना है।

(30) और उन्होंने अल्लाह के शरीक बना रखे हैं ताकि वह (लोगों को) उसके रास्ते से भटका दें, कह दीजिएः फायदा उठाओ (दुनिया में) फिर यक़ीनन तुम्हारी वापसी आग की तरफ है।

(31) कह दीजिएः मेरे उन बन्दों से जो ईमान लाए कि वह नमाज़ क़ायम करें और हमने उन्हें जो रिज़्क़ दिया है उसमें से छुपा कर और ऐलानियां खर्च करें, इससे पहले

कि वह दिन आए जिसमें न सौदा बाज़ी होगी न दोस्ती (काम आएगी)।

(32) अल्लाह वह है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से पानी नाज़िल किया फ़िर उस (पानी) के ज़रिये से तुम्हारे लिए बतौर रिज़्क़ फल पैदा किये और कश्तियों को तुम्हारे बस में कर दिया ताकि समंदर में उसके हुक्म से चलें और तुम्हारे लिए दरिया को तुम्हारे बस में कर दिया।

(33) और तुम्हारे लिए सूरज और चाँद मुसख़्ख़र (अधीन) किये जो लगातार चल रहे हैं और तुम्हारे लिए रात और दिन को काम पर लगा रखा है।

(34) और तुम्हें हर वह चीज़ दी जो तुमने उससे मांगी और अगर तुम अल्लाह की नेअमतें गिनो तो उन्हें शुमार न कर सकोगे। बेशक इंसान बड़ा ज़ालिम, निहायत नाशुक्रा है।

(35) और जब इब्राहीम ने कहाः ऐ मेरे रब! इस शहर (मक्का) को अमन वाला बना दे और मुझे और मेरी औलाद को बुत परस्ती से बचाए रखना।

(36) ऐ मेरे रब! बेशक उन्होंने बहुत से लोग गुमराह किये हैं फ़िर जो मेरा इत्तेबा (अनुसरण) करे तो यक़ीनन वह मेरा है और जो मेरी नाफरमानी करे तो बिलाशुब्ह तू गफ़ूरूर्रहीम है।

(37) ऐ हमारे रब! बेशक मैंने अपनी कुछ औलाद एक बेज़राअत (बंजर) वादी में बसाई है, तेरे मुहतरम (एहतराम वाले) घर (काबा) के पास, ऐ हमारे रब! ताकि वह नमाज़ क़ायम करें, इसलिए तू कुछ लोगों के दिल उनकी तरफ माईल होने वाले कर दे और उन्हें हर क़िस्म के फलों से रिज़्क़ दे ताकि वह (तेरा) शुक्र करें।

(38) ऐ हमारे रब! बेशक तू सब कुछ जानता है जो हम छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं। और ज़मीन व आसमान में कोई चीज़ अल्लाह से मख़्फ़ी (छुपी) नहीं।

(39) तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझे बूढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ अता फरमाए, बेशक मेरा रब खूब दुआ सुनता है।

(40) ऐ हमारे रब! मुझे और मेरी औलाद को भी नमाज़ क़ायम करने वाला बना। ऐ हमारे रब! मेरी दुआ क़बूल फरमा।

(41) ऐ हमारे रब! जिस दिन हिसाब क़ायम होगा उस दिन मुझे, मेरे वाल्दैन (माँ, बाप) को और तमाम मोमिनों को माफ फरमाना।

(42) और (ऐ नबी!) आप मत ख्याल करें कि अल्लाह उन कामों से ग़ाफिल है जो ज़ालिम करते हैं, वह तो उन्हें सिर्फ उस दिन

तक मुहलत देता है जिसमें आँखें फटी की फटी रह जाएगी।

(43) वह अपने सर उठाए (मैदाने महशर की तरफ) दौड़ रहे होंगे, उनकी निगाह अपनी तरफ भी न फ़िर सकेगी और उनके दिल (ख़ौफ से) उड़े जा रहे होंगे।

(44) और (ऐ नबी!) लोगों को उस दिन से खबरदार कर दें जब उन्हें अज़ाब आ लेगा तो ज़ालिम कहेंगेः ऐ हमारे रब! हमें थोड़ी सी मुद्दत तक मुहलत दे (ताकि) हम तेरी दअवत क़बूल करें और रसूल का इत्तेबा करें। (उनसे कहा जाएगाः) क्या तुम इससे पहले क़समें नहीं खाते थे कि तुम्हारे लिए कोई ज़वाल (पतन) नहीं?

(45) और तुम उन लोगों की बस्तियों में आबाद थे जिन्होंने अपने आप पर जुल्म किया था और तुम पर वाज़ेह हो चुका था कि हमने उनसे क्या सलूक किया था, और हमने तुम्हारे लिए मिसालें बयान की थी।

(46) और यक़ीनन वह अपनी चालें चल चुके और उनकी सब चालें अल्लाह की नज़र में हैं और उनकी चालें ऐसी न थी कि उनकी वजह से पहाड़ हिल जाते।

(47) इसलिए आप हरगिज़ ख्याल न करें कि अल्लाह अपने रसूलों से वादा खिलाफी करेगा। बेशक अल्लाह ग़ालिब है, इन्तिक़ाम (बदला) लेने वाला।

(48) जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी, और आसमान भी और लोग अल्लाह, वाहिद (एक), कह्हार (जबरदस्त) वाले के सामने खड़े होंगे।

(49) और उस दिन आप तमाम मुजरिमों को ज़न्जीरों में जकड़े हुए देखेंगे।

(50) उनके कुरते गन्धक के होंगे, और आग उनके चेहरों को ढापती होगी।

(51) ताकि अल्लाह हर नफ्स को (उस अमल की) जज़ा (बदला) दे जो उसने कमाया। बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।

(52) यह (कुरआन) लोगों के लिए एक पैगाम है ताकि उसके ज़रिये से उन्हें डराया जाए और ताकि उन्हें मालूम हो जाए कि बेशक वही (अल्लाह) मअ़बूद वाहिद (अकेला) है और ताकि अक़्लमन्द नसीहत (उपदेश) हासिल करें।

सूरह हिज्र-15

(यह मक्की सूरत है इसमें 99 आयतें और 9 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलीफ लाम रा, यह आयात हैं किताब और क़ुरआन मुबीन की।

(2) किसी वक़्त काफिर चाहेंगे काश कि

वह मुसलमान होते।

(3) (ऐ नबी!) उन्हें छोड़ दीजिए, वह खाऐं (पीऐं) और मज़े करें, और (झूठी) उम्मीद उन्हें गफलत में डाले रखे, फ़िर जल्द उनको मालूम हो जाएगा।

(4) और हमने जिस बस्ती को भी हलाक (विनष्ट) किया है उस (की तबाही) के लिए वक़्त मुक़र्रर (निर्धारित) था।

(5) कोई उम्मत अपने (मुक़र्रर) वक़्त से न आगे निकल सकती है और न पीछे रह सकती है।

(6) और उन्होंने कहाः ऐ वह शख़्स! जिस पर यह ज़िक्र (क़ुरआन) नाज़िल किया गया है, यक़ीनन तू तो मजनून (दीवाना) है।

(7) तू हमारे पास फरिश्ते क्यों नहीं ले आता अगर तू सच्चों में से है?

(8) फरिश्ते तो हम सिर्फ हक़ (अज़ाब) के साथ नाज़िल करते हैं और फ़िर उस वक़्त उन (कुफ्फार) को ढील नहीं दी जाती।

(9) बेशक हम ही ने यह क़ुरआन नाज़िल किया और बेशक हम ही इसके मुहाफ़िज़ (रक्षक) हैं।

(10) और यक़ीनन आपसे पहले हम कई गिरोहों में रसूल भेज चुके हैं।

(11) और उनके पास जो भी रसूल आया वह उससे मज़ाक़ करते थे।

(12) हम इसी तरह मुजरिमों के दिलों में हंसी मज़ाक़ डालते हैं।

(13) वह इस (क़ुरआन) पर ईमान नहीं लाते और (यही) पहले लोगों का तरीक़ा गुज़र चुका है।

(14) और अगर हम उन पर आसमान से एक दरवाज़ा खोल दें, फ़िर वह उसमें चढ़ने लगें।

(15) तो भी वह यही कहेंगे कि हमारी तो नज़रें ही बन्द कर दी गई हैं बल्कि हम लोगों पर जादू हुआ है।

(16) और यक़ीनन हमने आसमान में बुर्ज (सितारे) बनाए और उन्हें देखने वालों के लिए ज़ीनत बनाया।

(17) और हमने उन्हें हर शैतान मरदूद से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रखा।

(18) मगर जो चोरी छुपे सुने तो चमकता शिहाब (दहकता शौला) उसका पीछे करता है।

(19) और हमने ज़मीन फैला दी और उसमें पहाड़ गाड़ दिए और उसमें हर चीज़ मुनासिब मिक़दार (उचित मात्रा) में उगाई।

(20) और हमने तुम्हारे लिए ज़मीन में रोज़ियाँ रख दी और उनके लिए भी जिन्हें तुम रिज़्क़ देने वाले नहीं हो।

(21) और हर चीज़ के खज़ाने हमारे पास ही हैं और हम हर चीज़ मालूम मिक़दार (निर्धारित मात्रा) ही में उतारते हैं।

(22) और हमने बोझल (बार आवर) हवाऐं भेजीं फ़िर आसमान से पानी नाज़िल किया, फ़िर वह तुम्हें पिलाया, और उस (पानी) का ज़खीरा (भण्डार) रखने वाले तुम नहीं हो।

(23) और बिलाशुब्ह हम ही ज़िन्दगी और मौत देते हैं, और बेशक हम ही (सबके) वारिस हैं।

(24) और यक़ीनन हमें उनका इल्म है जो तुममें से पहले गुज़र चुके और उनका (भी) इल्म है जो पीछे रहने वाले हैं।

(25) और (ऐ नबी!) बेशक आपका रब ही उन्हें इकट्ठा करेगा। बेशक वह हकीम (हिक्मत वाला), अलीम (सब कुछ जानने वाला) है।

(26) और यक़ीनन हमने इंसान का सड़े गारे की खनखनाती मिट्टी से तख़्लीक़ (पैदा) किया है।

(27) और उससे पहले जिन्न को हमने आतिशे सौज़ा (आग की लपट) से तख़्लीक़ (पैदा) किया।

(28) और जब आपके रब ने फरिश्तों से कहाः बेशक मैं सड़े गारे की खनखनाती मिट्टी से एक इंसान तख़्लीक़ (पैदा) करने वाला हूँ।

(29) फ़िर जब मैं उसे दुरूस्त कर लूं और अपनी रूह से उसमें फुंक दूं तो उसके आगे सज्दा करते गिर पड़ना।

(30) फ़िर सारे फरिश्तों ने इकट्ठे सज्दा किया।

(31) सिवाए इब्लीस के, वह न माना कि सज्दा करने वालों के साथ हो।

(32) अल्लाह ने फरमायाः ऐ इब्लीस! तुझे क्या है कि तू सज्दा करने वालों के साथ शामिल न हुआ?

(33) उसने कहाः मैं ऐसा नहीं कि एक बशर (इंसान) को सज्दा करूं जिसे तूने सड़े गारे की खनखनाती मिट्टी से पैदा किया।

(34) अल्लाह ने फरमायाः फ़िर तू यहाँ से निकल जा, बिलाशुब्ह तू मरदूद है।

(35) और बेशक तुझ पर हिसाब के दिन तक लअनत (फिटकार) है।

(36) उसने कहाः मेरा रब! मुझे उस दिन तक मुहलत दे जब (लोग) दुबारा उठाए जाऐं।

(37) अल्लाह ने फरमायाः बेशक तुझे मुहलत दी गई है।

(38) मुक़र्रर वक़्त के दिन तक।

(39) उसने कहाः मेरे रब! जैसे तूने मुझे गुमराह किया, यक़ीनन मैं उन (लोगों) के लिए ज़मीन में (गुनाह) खुशनुमा बना दूंगा और उन सब को गुमराह करूंगा।

(40) तेरे उन बन्दों के सिवा जो उनमें से चुने हुए हैं।

(41) अल्लाह ने फरमायाः यही मुझ तक (पहुचने वाली) सीधी राह है।

(42) बेशक मेरे बन्दों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, तेरा ज़ोर सिर्फ उन गुमराहों पर चलेगा जो तेरी इत्तेबा (अनुसरण) करेंगे।

(43) और यक़ीन उन सब के वादे की जगह जहन्नम है।

(44) उसके सात दरवाज़े हैं, उन (गुमराहों) में से हर दरवाज़े के लिए एक तक़्सीम शुदा (बटा हुआ) हिस्सा है।

(45) बेशक मुत्तक़ी (परेहजगार) लोग बागों और चश्मों में होंगे।

(46) (कहा जाएगाः) तुम उनमें सलामती से बा अमन दाख़िल हो जाओ।

(47) और उनके सीनों में जो कीना हसद (जलन, द्वेष) होगा हम निकाल देंगे, (वह) तख़्तों पर आमने सामने (बैठे) भाई भाई होंगे।

(48) उन्हें वहाँ कोई तकलीफ न पहुँचेगी और न वहाँ से निकाला जाएगा।

(49) (ऐ नबी!) मेरे बन्दों को खबर सुना दीजिए कि यक़ीनन मैं गफ़ूरूर्रहीम (बहुत रहम करने वाला) हूँ।

(50) बेशक मेरा अज़ाब भी बड़ा दर्दनाक अज़ाब है।

(51) और उन्हें इब्राहीम के मेहमानों की खबर सुना दीजिए।

(52) जब वह उसके पास पहुँचे तो उन्होंने सलाम किया, उसने कहाः बेशक हम तुमसे डरते हैं।

(53) वह बोलेः डर मत, बेशक हम तुझे एक इल्म वाले लड़के की खुशखबरी देते हैं।

(54) इब्राहीम ने कहाः क्या तुम मुझे खुश खबरी देते हो जबकि मुझ पर बुढ़ापा आ चुका? इसलिए (अब) किस बिना पर खुशखबरी देते हो?

(55) वह बोलेः हमने तुझे हक़ (सच्ची चीज़) की खुशखबरी दी है, इसलिए तू नाउम्मीद न हो।

(56) इब्राहीम ने कहाः और अपने रब की रहमत से तो गुमराह लोग ही नाउम्मीद होते हैं।

(57) इब्राहीम ने कहाः फ़िर तुम्हारा मक़सद क्या है? ऐ भेजे हुए (फरिश्तों!)।

(58) उन्होंने कहाः बेशक हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ भेजे गए हैं।

(59) सिवाए लूत के खानदान को, बेशक हम उन सब को बचाने वाले हैं।

(60) सिवाए उसकी बीवी के, हमने फैसला कर दिया बेशक वह रह जाने वालों में से होगी।

(61) फ़िर जब फरिश्ते आले लूत के यहाँ पहुँचे।

(62) तो लूत ने कहाः बेशक तुम लोग अजनबी हो।

(63) वह बोलेः बल्कि हम तेरे पास वह

(अज़ाब) लाए हैं जिसमें यह (लोग) शक करते थे।

(64) और हम तेरे पास हक़ (यक़ीनी चीज़) लाए हैं और बेशक हम सच्चे हैं।

(65) इसलिए तू कुछ रात रहे अपने अहल व अयाल (घर वालों) को ले कर निकल और तू उनके पीछे चल, और तुममें से कोई पीछे मुड़ कर न देखे, और चले जाओ जहाँ तुम्हें हुक्म दिया जाता है।

(66) और हमने उसे उस बात का फैसला सुना दिया कि बेशक सुबह होते उन लोगों की जड़ कट जाएगी।

(67) और शहर (सदूम) वाले खुशियां मनाते आए।

(68) लूत ने कहाः बेशक यह लोग मेरे मेहमान हैं, लिहाज़ा तुम मुझे रूस्वा (अपमानित) न करो।

(69) और अल्लाह से डरो और मुझे ज़लील (लज्जित) न करो।

(70) वह बोलेः क्या हमने तुझे दुनिया वालों (की हिमायत) से रोका नहीं?

(71) लूत ने कहाः यह मेरी (क़ौम की) बेटियां हैं (उनसे निकाह कर लो) अगर तुम (कुछ) करने वाले हो।

(72) (ऐ नबी!) आपकी उम्र की क़सम! बेशक वह अपनी मस्ती (गुमराही) में भटक रहे थे।

(73) फ़िर सूरज निकलते उन्हें एक चिंघाड़ ने आ पकड़ा।

(74) फ़िर हमने वह (बस्ती उलट कर) ऊपर नीचे कर दी और उन पर कंकर के पत्थर बरसाए।

(75) बेशक उसमे ध्यान करने वालों के लिए निशानियां हैं।

(76) और बेशक वह बस्ती सीधी राह पर है।

(77) और बेशक उसमें मोमिनों के लिए निशानी है।

(78) और बेशक ऐका (बस्ती) वाले भी ज़ालिम थे।

(79) इसलिए हमने उनसे इन्तिक़ाम (बदला) लिया और बेशक दोनों (तबाह शुदा बस्तियां) खुली शहराह (आम रास्ते) पर हैं।

(80) और यक़ीनन हिज्र वालों (समूद) ने रसूलों को झुठलाया।

(81) और हमने उन्हें अपनी निशानियां दीं, फ़िर वह उनसे मुहँ मोड़ते थे।

(82) और वह पहाड़ों में घर तरासते थे बेख़ौफ हो कर।

(83) इसलिए उन्हें सुबह होते ही चिंघाड़ ने आ पकड़ा।

(84) फ़िर उनके काम न आया जो वह कमाते थे।

(85) और हमने आसमानों और ज़मीन

को और जो उनके बीच है हक़ ही के साथ तख़्लीक़ (पैदा) किया है। और यक़ीनन क़यामत आने वाली है, तो (ऐ नबी!) आप (काफ़िरों से) खुबसूरत अन्दाज़ से दरगुज़र करें।

(86) बिलाशुब्ह आपका रब ही सबको तख़्लीक़ (पैदा) करने वाला, खूब जानने वाला है।

(87) बेशक हमने आपको बार बार दोहराई जाने वाली सात आयतें और क़ुरआन अज़ीम दिया है।

(88) और हमने कई क़िस्म के लोगों को जो माल व मताअ (धन दोलत) दिया है, उस पर आप अपनी नज़र न जमाऐं, और न उन (की हालत) पर ग़म खाऐं और अपने (मुहब्बत भरी) बाजू मोमिनों के लिए झुकाए रखें।

(89) और कह दीजिएः बेशक मैं तो साफ साफ डराने वाला हूँ।

(90) (ऐसे ही अज़ाब से) जैसाकि हमने तक़्सीम (विभाजन) करने वालों पर नाज़िल किया था।

(91) जिन्होंने (अपने) क़ुरआन (तौरात) को पारा पारा कर दिया।

(92) इसलिए अपके रब की क़सम! हम उन सब से ज़रूर पूछ करेंगे।

(93) उन आमालों की जो वह करते थे।

(94) इसलिए आपको जो हुक्म दिया जाता है, खोल कर सुना दें और मुश्रिकीन से बेरूखी बरतें।

(95) बिलाशुब्ह हम हंसी करने वालों के मुक़ाबले आपको काफी हैं।

(96) वह लोग जो अल्लाह के साथ किसी और को मअ़बूद (पूज्य) बनाते हैं, इसलिए वह (अपना अंजाम) जल्द जान लेंगे।

(97) और यक़ीनन हम जानते हैं कि जो कुछ वह कहते हैं उससे आपका सीना तंग होता है।

(98) आप अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करें और सज्दा गुज़ारों में हो जाएं।

(99) और आप अपने रब्ब की इबादत करें यहाँ तक कि आपके पास यक़ीन मौत आ जाए।

सूरह नहल-16

(यह मक्की सूरत है इसमें 128 आयतें और 16 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा, लिहाज़ा तुम उसे उजलत से न मांगो। वह पाक और उनसे बरतर है जिन्हें वह शरीक ठहराते हैं।

(2) वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे अपने हुक्म से वह्यी दे कर फरिश्ते नाज़िल

करता है कि तुम (लोगों को) इस बात से आगाह कर दो कि बिलाशुब्ह मेरे सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं, लिहाज़ा मुझ ही से डरो।

(3) उसने आसमान और ज़मीन हक़ के साथ तख़्लीक़ (पैदा) किये, वह उनसे बरतर है जिन्हें वह शरीक ठहराते हैं।

(4) उसने इंसान को नुत्फ़े से तख़्लीक़ (पैदा) किया, तो यकायक वह खुला झगड़ालू हो गया।

(5) और उसने चौपाऐ भी तख़्लीक़ किये, उनमें तुम्हारे लिए सर्दी से बचाओ और दीगर मुनाफे हैं और उनमें से कुछ को तुम खाते हो।

(6) और उनमें तुम्हारे लिए रौनक है जब तुम उन्हें शाम को चरा कर लाते हो और जब सुबह चराने ले जाते हो।

(7) और वह तुम्हारे बोझ उठा कर उन शहरों तक ले जाते हैं जहाँ तुम जिस्मानी मशक्क़त (जी तोड़ मेहनत) के बग़ेर नहीं पहुँच पाते थे। बेशक तुम्हारा रब बड़ा शफक्क़त (मोहब्बत करने) वाला, बहुत रहम वाला है।

(8) और (उसी ने) घोड़े, खच्चर और गध ो (पैदा किये) ताकि तुम उन पर सवार हो और वह ज़ीनत का ज़रिया हैं, और वह पैदा करता है जो तुम नहीं जानते।

(9) और सीधी राह अल्लाह तक (पहुँचती) है, और कुछ राहें टेढ़ी हैं और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता।

(10) वही है जिसने आसमान से तुम्हारे लिए पानी नाज़िल किया, उसी से पीना है और उसी से दरख़्त (उगते) हैं जिनमें तुम (जानवर) चराते हो।

(11) वह उसी (पानी) से तुम्हारे लिए खेती उगाता है और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल। बेशक उसमें गौरो फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए बहुत बड़ी निशानी है।

(12) और उसने तुम्हारे लिए रात और दिन और सूरज और चाँद को काम में लगा रखा और तमाम तारे भी उसी के हुक्म के पाबंद हैं। बेशक उसमें अक़्लमन्द लोगों के लिए कई निशानियां हैं।

(13) और रंगबिरंग की वह चीज़ें भी (ताबे कर दीं) जो उस (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए ज़मीन में पैदा कीं। बेशक उसमें बहुत बड़ी निशानी है उन लोगों के लिए जो नसीहत (उपदेश) पकड़ते हैं।

(14) और वही है जिसने समंदर को तुम्हारे वश में किया ताकि तुम उसमें से तरोताज़ा (मछली का) गोश्त खाओ, और उसमें से ज़ेवर (मोती) निकालो जो तुम पहनते हो, और तू कश्तियां देखता है कि पानी को चीरती चली जाती हैं और ताकि तुम अल्लाह

का फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो।

(15) और उसने ज़मीन में पहाड़ गाड़ दिए कि वह तुम्हारे समेत झुक (न) पड़ें और नहरें और रास्ते बनाए ताकि तुम राह पाओ।

(16) और (दीगर) निशानियां (बनाईं) और तारों से भी लोग राह पाते हैं।

(17) भला जो (अल्लाह सब कुछ) तख़्लीक़ (पैदा) करता है वह उस जैसा हो सकता है जो (कुछ भी) तख़्लीक़ नहीं करता? क्या फ़िर तुम नसीहत (उपदेश) नहीं पकड़ते?

(18) और अगर तुम अल्लाह की नेअमतें गिनना चाहो तो उन्हें गिन न सको। बेशक अल्लाह गफूरूर्रहीम (बड़ा माफ करने वाला रहम करने वाला) है।

(19) और अल्लाह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो।

(20) और लोग जिन्हें अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वह कोई चीज़ तख़्लीक़ (पैदा) नहीं करते जबकि वह खुद तख़्लीक़ होते हैं।

(21) वह मुरदे हैं, ज़िन्दा नहीं और वह समझ नहीं रखते कि वह कब उठाऐ जाएँगे?

(22) तुम्हारा मअ़बूद बस एक ही मअ़बूद है, इसलिए जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके दिल इन्कार करते हैं और वह घमंड करने वाले हैं।

(23) बिलाशुब्ह यक़ीनन अल्लाह जानता है जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, बेशक वह घमंड करने वालों को कृतअन पसंद नहीं करता।

(24) और जब उनसे कहा जाएः तुम्हारे रब ने क्या नाज़िल किया है? तो वह कहते हैंः यह पहले लोगों के क़िस्से कहानियां हैं।

(25) ताकि क़यामत के दिन वह अपने कामिल (पूरा) बोझ उठाएं और कुछ उनके बोझ भी जिन्हें वह बग़ेर इल्म के गुमराह करते हैं, जान लो! बुरा बोझ है जो वह उठाते हैं।

(26) बेशक वह लोग मक्र (धोखा) कर चुके हैं जो उनसे पहले थे, फ़िर अल्लाह ने उन (के मक्र) की इमारत को बुनियादों से आ लिया, इसलिए उनके ऊपर छत गिर पड़ी और उन पर अज़ाब आया जहाँ से वह समझ न रखते थे।

(27) फ़िर क़यामत के दिन अल्लाह उन्हें रूस्वा (लज्जित) करेगा और कहेगाः मेरे शरीक कहाँ हैं जिनकी बाबत तुम (मोमिनों से) झगड़ते थे? वह लोग कहेंगे जिन्हें इल्म दिया गया थाः बेशक आज काफिरों के लिए रूस्वाई और बदबख़्ती है।

(28) वह जिनकी रूह फरिश्ते इस हाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वह अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे होते हैं, तो वह (यह कहते हुए) सर को झुका देते हैं कि हम तो कोई बुरा अमल

नहीं करते थे। (फरिश्ते कहते हैं:) क्यो नहीं! बेशक अल्लाह को मालूम है जो तुम अमल करते थे।

(29) इसलिए तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा रहोगे। तो कैसा बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का!

(30) और (जब) पूछा जाता है मुत्तक़ी लोगों से कि तुम्हारे रब ने क्या नाज़िल किया है? तो वह कहते हैं "ख़ैर ही ख़ैर" जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आखिरत का घर तो यक़ीनन बेहतरीन है और क्या खूब है मुत्तक़ी लोगों का घर!

(31) (यानी) हमेशा के बाग़ात हैं, वह उनमें दाख़िल होंगे, उनके नीचे नहरें जारी हैं, वहाँ उनके लिए वह होगा जो वह चाहेंगे। अल्लाह इसी तरह मुत्तक़ी (परहेजगार) लोगों को जज़ा (बदला) देता है।

(32) जिनकी जान फरिश्ते इस हाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वह (कुफ्र व शिर्क से) पाक होते हैं, तो (फरिश्ते) कहते हैं: तुम पर सलाम हो, तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ उसके बदले जो तुम अमल करते थे।

(33) वह (काफिर) यही इन्तिज़ार तो करते हैं कि उनके पास फरिश्ते आएं या आपके रब का हुक्म आए। इसी तरह किया था उन लोगों ने जो उनसे पहले थे। और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया लेकिन वह खुद अपनी जानों पर जुल्म करते थे।

(34) फ़िर उन्हें उनके आमाल के बुरे बदले मिले और उन्हें उस (अज़ाब) ने घेर लिया जिसका वह मज़ाक़ उड़ाते थे।

(35) और मुश्रिक लोगों ने कहा: अगर अल्लाह चाहता तो हम उसके सिवा किसी चीज़ की इबादत न करते और न हमारे बाप दादा ही, और हम उस (के हुक्म) के बग़ैर कोई चीज़ हराम न ठहराते। इसी तरह किया था उन लोगों ने जो उनसे पहले थे, इसलिए रसूलों के ज़िम्मे तो सिर्फ साफ साफ पहुँचा देना है।

(36) और यक़ीनन हमने हर उम्मत में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और तागूत से बचो, फ़िर उनमें से कुछ को अल्लाह ने हिदायत (मार्ग-दर्शन) दी और उनमें से कुछ पर ज़लालत साबित हो गई, लिहाज़ा तुम ज़मीन में सैर करो, फ़िर देखो (रसूलों को) झुठलाने वालों का अंजाम कैसा (इबरतनाक) हुआ?

(37) (ऐ नबी!) ख्वाह आप उनकी हिदायत के लिए कितनी ही हिरस (ललसा) करें, तो बेशक अल्लाह जिसे गुमराह करे फ़िर उसे हिदायत नहीं देता, और उन (गुमराहो) का मददगार कोई भी नहीं।

(38) और वह अल्लाह की पुख्ता क़समें

खा कर कहते हैं कि जो मर जाता है अल्लाह उसे दोबारा नहीं उठाएगा। क्यों नहीं! (बल्कि वह उठाएगा) यह उसके ज़िम्मे सच्चा वादा है लेकिन अक्सर लोग इल्म नहीं रखते।

(39) ताकि उनके लिए वाज़ेह करे वह बात कि जिसमे वह इख़्तिलाफ करते थे और ताकि मालूम हो जाए कि काफिरों को बेशक वही झूठे थे।

(40) जब हम किसी चीज़ का इरादा कर लें तो उसके लिए हमारा सिर्फ यही कहना होता है कि हम उससे कहते हैंः हो जा तो वह हो जाती है।

(41) और जिन लोगों ने जुल्म व सितम सहने के बाद अल्लाह की राह में हिजरत की तो हम उन्हें दुनिया में अच्छा ठिकाना देंगे और यक़ीनन आख़िरत का अज्र (बदला) तो बहुत बड़ा है, काश! वह इल्म रखते।

(42) वह लोग जिन्होंने सब्र किया और वह अपने रब ही पर भरोसा करते हैं।

(43) और हमने आपसे पहले भी मर्द ही (नबी) भेजे थे, हम उनकी तरफ वह्यी करते थे, लिहाज़ा तुम अहले किताब से पूछ लो अगर तुम इल्म नहीं रखते।

(44) (हमने उन्हें) वाज़ेह दलाईल और किताबों के साथ (भेजा था) और हमने आप पर यह ज़िक्र (क़ुरआन) नाज़िल किया ताकि आप लोगों के सामने बयान करें जो कुछ उन की तरफ नाज़िल किया गया और ताकि वह गौरो फ़िक्र करें।

(45) क्या बेख़ौफ हो गए हैं जिन्होंने बुरे मक्र (छल-कपट) किये कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धंसा दे या उन पर अज़ाब ले आए जहाँ से वह समझ नहीं रखते।

(46) या उनके चलने फिरने में उन्हें पकड़ ले, फ़िर वह उसे मजबूर करने वाले नहीं।

(47) या उन्हें हालते ख़ौफ में मुब्तिला कर के पकड़ ले फ़िर बिलाशुब्ह तुम्हारा रब बहुत शफक्क़त वाला, बड़ा रहम वाला है।

(48) क्या यह लोग अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों को नहीं देखते कि उनके साये दायें और बायें जानिब से ढलते हैं अल्लाह को सज्दा करते हुए और (उसके सामने) वह सब आजिज़ (मजबूर) है?

(49) और आसमानों और ज़मीन के तमाम जानदार अल्लाह को सज्दा करते हैं और तमाम फरिश्ते भी और वह घमंड नहीं करते।

(50) वह अपने ऊपर अपने रब से डरते हैं और वही करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है।

(51) और अल्लाह ने फरमायाः दो इलाह (पूज्य) मत बनाओ, बस वह अकेला इलाह है, लिहाज़ा तुम मुझ से डरो।

(52) और उसी के लिए है जो आसमानों और ज़मीन में है और इताअत भी हमेशा

उसी की है। क्या फ़िर तुम गैरूल्लाह से डरते हो?

(53) और तुम्हारे पास जो भी नेअमत है तो वह अल्लाह की तरफ से है फ़िर जब तुम्हें कोई तकलीफ पहुँती है तो उसी से तुम फरियाद करते हो।

(54) फ़िर जब वह तुमसे तकलीफ हटा देता है तो तुममें से कुछ लोग अपने रब के साथ शिर्क करने लगता है।

(55) ताकि उन (नेअमतों) की नाशुक्री करें जो हमने उन्हें दीं, इसलिए तुम फायदा उठा लो, फ़िर जल्द तुम जान लोगे।

(56) और हमने उन्हें जो रिज़्क़ दिया है उसमें से उन (बातिल मअबूदों) का हिस्सा ठहराते हैं जिन्हें यह जानते भी नहीं, अल्लाह की क़सम! तुमसे इस बारे में ज़रूर पूछे जाओगे जो तुम झूठ बाँधते थे।

(57) और वह अल्लाह की बेटियां ठहराते हैं वह (औलाद से) पाक है और उनके लिए है जो वह चाहें (यानी बेटे)।

(58) और जब उनमें से किसी को बेटी की खुशखबरी दी जाए तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है और वह ग़म व गुस्से से भरा होता है।

(59) वह उस शर्म की वजह से, जिसकी उसे खबर दी गई, लोगों से छुपाता फिरता है, (सोचता है) क्या अपनी तौहीन के बावजूद उसे बाक़ी रखे या उसे मिट्टी में दबा दे? खबरदार रहो! बहुत बुरा है जो वह फैसला करते हैं।

(60) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके लिए बुरी मिसाल है, और अल्लाह के लिए आला मिसाल है, और वह ग़ालिब है, खूब हिकमत वाला।

(61) और अगर अल्लाह लोगों के ज़ुल्म पर उनकी पकड़ करे तो ज़मीन पर कोई चलने वाला (जानदार) न छोड़े लेकिन वह एक मुक़र्रर वक़्त (निश्चित समय) तक उन्हें ढील देता है। फ़िर जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ पहुँचता है तो वह एक घड़ी भी आगे पीछे नहीं हो सकते।

(62) और वह अल्लाह के लिए वह चीज़ ठहराते हैं जिससे खुद कराहत (नापसन्द) करते हैं और उनकी ज़बानें झूठ कहती हैं कि बेशक उनके लिए भलाई है। बिलाशुब्ह यक़ीनन उनके लिए आग है और बेशक वह उसमें सबसे आगे भेजे जाएंगे।

(63) अल्लाह की क़सम! हमने आपसे पहली क़ौमों की तरफ रसूल भेजे तो शैतान ने उनके (बुरे) आमाल उनके लिए खुशनुमा कर दिए, इसलिए आज वही उनका दोस्त है और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(64) और हमने आप पर किताब सिर्फ इसलिए नाज़िल की है ताकि आप उन पर

वह चीज़ वाज़ेह कर दें जिसमें वह इख़्तिलाफ (विभेद) करते हैं और वह ईमान लाने वालों के लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) और रहमत है।

(65) और अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया फ़िर उसके साथ ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा किया, बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो सुनते हैं।

(66) और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में भी इबरत (गौरो फ़िक्र का सामान) है। हम तुम्हें पिलाते हैं उससे जो उनके पेटों में है। गोबर और लहू के बीच से खालिस (शुद्ध) दूध, पीने वालों के लिए निहायत खुशगवार।

(67) और खजूर और अंगूर के कुछ फल वह है जिनसे तुम नशे की चीज़ और अच्छा रिज़्क़ हासिल करते हो। बेशक उसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं।

(68) और आपके रब ने शहद की मक्खी को इलहाम किया कि तू पहाड़ों में घर (छत्ते) बना और दरख़्तों (पेड़) में और उन (छपरों) में जिन पर लोग बल्लियां चढ़ाते हैं।

(69) फ़िर हर क़िस्म के फलों (और फूलों) से रस चूस, फ़िर अपने रब की हमवार राहों पर चल। उनके पेटों से मुख़्तलिफ (विभिन्न) रंगों का मशरूब (शहद) निकलता है, उसमें लोगों के लिए शिफा है, बेशक इसमें भी गौरो फ़िक्र करने वालों के लिए बहुत बड़ी निशानी है।

(70) और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया फ़िर वही तुम्हें वफात देता है और तुममें से कोई नाकारा उम्र तक पहुँच दिया जाता है ताकि वह इल्म के बाद कुछ न जाने, बेशक अल्लाह खूब जानने वाला, खूब कुदरत वाला है।

(71) और अल्लाह ने रिज़्क़ में तुममें से कुछ को कुछ पर फज़ीलत दी, फ़िर जिन लोगों को फज़ीलत दी गई वह अपना रिज़्क़ उन लोगों की तरफ नहीं लौटाते जो उनके दायें हाथ के क़ब्ज़े में (गुलाम) हैं कि वह उस (रिज़्क़) में बराबर हों। क्या फ़िर वह अल्लाह की नेअमत ही के मुन्कर हैं?

(72) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्ही में से बीवियां बनाईं और उसीने तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियों से बेटे और पोते बनाऐ, और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया। क्या फ़िर भी वह बातिल पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेअमतों (अनुग्रह) की नाशुक्री करते हैं?

(73) और वह अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करते हैं जिन्हें आसमानों और ज़मीन से उनके लिए किसी रिज़्क़ का कोई इख़्तियार नहीं और न वह (उसकी) ताक़त ही रखते हैं।

(74) इसलिए तुम अल्लाह के लिए मिसालें

न बयान करो। बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

(75) अल्लाह ने मिसाल बयान की एक गुलाम की जो किसी चीज़ पर कुदरत नहीं रखता और (दूसरा) वह जिसे हमने अपनी तरफ से अच्छा रिज़्क़ दिया, इसलिए वह उसमें से खुफिया (छुपा कर) और ऐलानिया खर्च करता है। क्या वह बराबर हो सकते हैं? तमाम हम्द (तारीफ) अल्लाह ही के लिए है बल्कि अक्सर लोग (यह वाज़ेह हक़ीक़त भी) नहीं जानते।

(76) और अल्लाह ने दो शख्सों की (की एक और) मिसाल बयान की, उनमें से एक गूंगा (और बहरा) है, वह किसी चीज़ पर कुदरत नहीं रखता जबकि वह अपने आक़ा पर एक बोझ है, जहाँ कहीं भी वह उसे भेजे वह कोई खैर और भलाई नहीं लाता। क्या वह उस शख्स के बराबर हो सकता है जो अदल का हुक्म देता है और वह सिराते मुस्तक़ीम पर है?

(77) और अल्लाह ही के पास है ग़ैब आसमानों और ज़मीन का, और क़यामत का मामला तो बस आँख झपकने की तरह है बल्कि उससे भी क़रीबतर, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(78) और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों से इस हाल में निकाला कि तुम कुछ इल्म नहीं रखते थे, और उसी ने तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाए ताकि तुम शुक्र करो।

(79) क्या उन्होंने परिन्दों (पक्षियों) की तरफ नहीं देखा, वह आसमानी फज़ा (नभमण्डल) में ताबे फरमान हैं। अल्लाह के सिवा, उन्हें (फज़ा में) कोई नहीं थाम रहा। बेशक उसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाते है।

(80) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए घरों को रहने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए चौपायों की खालों से ऐसे घर (खेमे) बनाए जिन्हें तुम हल्का समझते हो अपने कूच के दिन और अपने क़याम के दिन, और उन (भेड़ों) की ऊन से और उन (ऊंटों) के रूऐं से और उन (बकरियों) के बालों से घरेलू सामान और एक मुद्दत तक बरतने की चीज़ें (बनाई)।

(81) और अल्लाह ने अपनी तख्लीक़ (पैदा) करदा चीज़ों से तुम्हारे साये बनाए और तुम्हारे लिए पहाड़ों में छुपने के मुक़ाम (गुफा) बनाए और तुम्हारे लिए कुरते बनाए जो तुम्हें गर्मी से बचाते हैं और कुरते (जिरह बख्तर) जो तुम्हारी लड़ाई में तुम्हें बचाते हैं। इसी तरह वह तुम पर अपनी नेअमतें तमाम करता है ताकि तुम फ़रमाबरदार बन जाओ।

(82) फ़िर अगर वह मुँह मोड़ें तो आपके

ज़िम्मे तो सिर्फ साफ साफ पहुँचा देना है।

(83) वह अल्लाह की नेअमत को पहचानते हैं फ़िर उसका इन्कार करते हैं और उनमें अक्सर नाशुक्रे हैं।

(84) और (याद करो) जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गवाह खड़ा करेंगे फ़िर जिन्होंने कुफ़्र किया, उन्हें इजाज़त नहीं मिलेगी और न उनसे माफी की दरख़्वास्त ली जाएगी।

(85) और जिन लोगों ने जुल्म किया जब वह अज़ाब देख लेंगे तो न उनसे (अज़ाब में) कमी की जाएगी और न उनको ढील दी जाएगी।

(86) और जिन लोगों ने शिर्क किया, जब वह अपने (खुदसाख़्ता) शरीकों को देंखेंगे तो कहेंगेः ऐ हमारे रब! यह हमारे शरीक हैं जिन्हें हम तेरे सिवा पुकारते थे। तब वह (शरीक) उनकी बात उनके मुँह पर दे मारेंगे (और कहेंगे) बिलाशुब्ह तुम तो यक़ीनन झूठे हो।

(87) और उस दिन वह अल्लाह के सामने अपनी फरमाबरदारी (आजिज़ी) पेश करेंगे, और वह सब कुछ उनसे गुम हो जाएगा जो वह झूठ गढ़ते थे।

(88) जिन्होने कुफ़्र किया और (लोगों को) अल्लाह की राह से रोका, हम उन्हें ज़्यादा देंगे अज़ाब पर अज़ाब, इसलिए कि वह फसाद करते थे।

(89) और (ऐ नबी! याद करो) जिस दिन हम हर उम्मत में उन पर उन्हीं में से एक गवाह खड़ा करेंगे और आपको उन लोगों पर गवाह लाएँगे और हमने आप पर हर चीज़ खोल कर बयान करने वाली यह किताब नाज़िल की है जो मुसलमानों के लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन), रहमत और खुशखबरी है।

(90) बेशक अल्लाह अद्ल और एहसान और क़राबतदारों (रिश्तेदारों) को देने का हुक्म देता है और बेहयाई, बुरे काम और जुल्म व ज़्यादती से मना करता है। वह तुम्हें वाज़ (उपदेश) करता हे ताकि तुम नसीहत पकड़ो।

(91) और अल्लाह का अहद (वादा) पूरा करो जब तुम आपस में अहद कर लो और क़समें पक्की करने के बाद न तोड़ो जबकि तुमने अल्लाह को अपना कफील (ज़िम्मेदार) बनाया हो। बेशक अल्लाह जानता है जो तुम करते हो।

(92) और तुम उस औरत की तरह न हो जाओ जिसने अपना सूत मेहनत से कातने के बाद टुकड़े टुकड़े कर डाला, तुम अपनी क़समों को आपस में फरेब (छल कपट) का ज़रिया बनाते हो कि एक जमाअत दूसरी जमाअत से (माल व दौलत में) बढ़ जाए। बेशक अल्लाह उस (वादे) से तुम्हें आज़माता

है। और क़यामत के दिन वह तुम पर ज़रूर वाज़ेह कर देगा जिसमें तुम इख़्तिलाफ करते थे।

(93) और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक ही उम्मत बना देता लेकिन वह जिसे चाहे गुमराह करता है और जिसे चाहे हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है और तुमसे ज़रूर उसका सवाल होगा जो तुम अमल करते थे।

(94) और तुम अपनी क़समों को आपस में फरेब देने का ज़रिया न बनाओ कि (इस्लाम पर किसी का) क़दम जमने के बाद डगमगा जाए और तुम (दुनिया में) उसकी सज़ा भुगतो कि तुमने (उसे) अल्लाह की राह से रोका और (आख़िरत में) तुम्हारे लिए अज़ाबे अज़ीम होगा।

(95) और अल्लाह का अहद थोड़ी क़ीमत में न बेचो, बेशक जो अल्लाह के यहाँ (अज्र) है वही बेहतर है अगर तुम इल्म रखते हो।

(96) जो कुछ तुम्हारे पास है वह फना हो जाएगा, और जो कुछ अल्लाह के पास है वह (हमेशा) बाक़ी रहने वाला है और जिन लोगों ने सब्र किया हम ज़रूर उन्हें उनका अज्रो सवाब (बदला) उससे बेहतर देंगे जो वह अमल करते थे।

(97) जिसने नेक अमल किये, मर्द हो या औरत, जबकि वह मोमिन हो तो हम ज़रूर उसे पाकीज़ा ज़िन्दगी बसर कराएँगे और हम उन्हें ज़रूर उनका अज्रो सवाब (बदला) उससे बेहतर देंगे जो वह अमल करते थे।

(98) फ़िर जब आप कुरआन पढ़ने लगें तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांगें।

(99) बेशक उन लोगों पर उसका कोई ज़ोर नहीं चलता जो ईमान लाए और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं।

(100) बस उसका ज़ोर तो उन लोगों पर चलता है जो उसे दोस्त बनाते हैं और (उन पर) जो अल्लाह के साथ शरीक ठहराते हैं।

(101) और जब हम एक आयत की जगह बदल कर दूसरी आयत लाएँ और अल्लाह उसे खूब जानता है जो कुछ वह नाज़िल करता है तो वह (काफिर) कहते हैंः यक़ीनन तू गढ़ लाने वाला है लेकिन उनमें अक्सर इल्म नहीं रखते।

(102) कह दीजिएः इस (कुरआन) को रूहुल कुद्दुस (जिब्रिल) ने तेरे रब की तरफ से हक़ के साथ नाज़िल किया है ताकि अल्लाह ईमान वालों को साबित क़दम रखे और मुसलमानों के लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) और खुशखबरी हो।

(103) और हमें बखूबी इल्म है कि वह कहते हैंः यक़ीनन इस (नबी) को एक आदमी (रूमी गुलाम) सिखाता है। उस शख़्स की ज़बान जिसकी तरफ यह गलत निस्बत करते हैं, अजमी (गैर अरबी, विदेशी) है जबकि

यह (कुरआन) तो फसीह अरबी ज़बान है।

(104) बिलाशुब्ह जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, अल्लाह उन्हें हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(105) झूठ तो सिर्फ वह लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, और वही लोग झूठे हैं।

(106) जो शख़्स अपने ईमान के बाद अल्लाह से कुफ्र करे, सिवाए उसके जिस पर जब्र (बलप्रयोग) किया गया और उसका दिल ईमान पर मुतमईन (सन्तुष्ट) था, लेकिन जिसने कुफ्र के लिए अपना सीना खोल दिया (राज़ी खुशी कुफ्र किया) तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का गज़ब (प्रकोप) है और उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब (यातना) है।

(107) यह इसलिए कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत से ज़्यादा महबूब रखा और बेशक अल्लाह काफिरों की क़ौम को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता।

(108) यही वह लोग हैं जिनके दिलों, कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी, और यही लोग ग़ाफिल (बेखबर) हैं।

(109) बिलाशुब्ह यक़ीनन आख़िरत में यही लोग नुक्सान पाने वाले हैं।

(110) फ़िर बेशक आपका रब उन लोगों पर (मेहरबान है) जिन्होंने आज़माईश में पड़ने के बाद हिजरत की, फ़िर जिहाद किया और सब्र किया, बेशक आपका रब उन (आज़माइशों) के बाद (उन लोगों के लिए) गफूर्रूरहीम (माफ करने वाला, रहम करने वाला) है।

(111) जिस दिन हर नफ़्स (इंसान) अपनी तरफ से झगड़ता हुआ आएगा और हर किसी ने जो अमल किये उनका उसे पूरा बदला मिलेगा और उन पर जुल्म न होगा।

(112) और अल्लाह ने एक बस्ती की मिसाल बयान की है जो अमन व इत्मिनान से (आबाद) थी, उसका रिज़्क़ उसे हर जगह से फरागत के साथ आता था, फ़िर उस (के बाशिन्दों) ने अल्लाह की नेअमतों की नाशुक्री की तो अल्लाह ने उन्हें उनके करतूतों की वजह से भूख का मज़ा चखाया और ख़ौफ का लिबास (पहनाया)।

(113) और उनके पास एक रसूल उन्हीं में से आया तो उन्होंने उसको झुठलाया, तब उन्हें अज़ाब ने आ पकड़ा और वह ज़ालिम थे।

(114) इसलिए उसमें से खाओ (पीओ) जो अल्लाह ने तुम्हें हलाल पाकिज़ा रिज़्क़ दिया है और अगर तुम वाक़ई उसकी इबादत करते हो तो अल्लाह की नेअमत का शुक्र करो।

(115) अल्लाह ने तो बस तुम पर हराम किया हैः मुर्दार, खून, खिन्जीर (सूअर) का

गोश्त और जिस पर गैरूल्लाह का नाम लिया गया हो, फ़िर जो शख़्स मजबूर हो जाए जबकि न वह बागी हो और न हद से बढ़ने वाला हो तो बेशक अल्लाह गफूर्रुरहीम है।

(116) और अपनी ज़बानों के झूठ बयान करने की वजह से मत कहो कि यह हलाल है और यह हराम है ताकि तुम अल्लाह पर झूठ बान्धो। बेशक जो अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं वह फलाह (कामयाबी) नहीं पाएँगे।

(117) (उनके लिए) थोड़ा सा फायदा है और (आख़िरत में) उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(118) और जो लोग यहूदी हुए उन पर हमने वह चीज़ें हराम की थी जो हम पहले आपसे बयान कर चुके हैं और हमने उन पर जुल्म नहीं किया लेकिन वह खुद ही अपने आप पर जुल्म करते थे।

(119) फ़िर बेशक आपका रब उन पर (मेहरबान है) जिन्होंने जहालत से बुरे अमल किये, फ़िर उसके बाद उन्होंने तौबा की और अपनी इस्लाह कर ली, बेशक उसके बाद आपका रब (उन लोगों के लिए) गफूर्रुरहीम (बड़ा माफ करने वाला, बहुत रहम करने वाला) है।

(120) बिलाशुब्हे इब्राहीम एक उम्मत (समुदाय) था अल्लाह का फ़रमाबरदार उसकी तरफ यक्सू, और वह मुश्रिकों में से न था।

(121) वह अल्लाह की नेअमतों का शुक्र करने वाला था। अल्लाह ने उसे चुन लिया और उसको सिराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) की तरफ हिदायत (मार्ग-दर्शन) दी।

(122) और हमने उसे दुनिया में भलाई दी, और वह आख़िरत में ज़रूर सालेहिन (नेकूकारों) में से होगा।

(123) (ऐ नबी!) फ़िर हमने आपकी तरफ वह्यी की कि मिल्लते इब्राहीम का इत्तेबा करें जो (अल्लाह की तरफ) यक्सू था और वह मुश्रिकों में से न था।

(124) हफ्ते (के दिन) की तअज़ीम तो सिर्फ उन लोगों पर ज़रूरी क़रार दी गई थी जिन्होंने उसमें इख़्तिलाफ किया। और बेशक आपका रब उनके बीच क़यामत के दिन उस अम्र (बात) का फैसला करेगा जिसमें वह इख़्तिलाफ (विभेद) करते थे।

(125) (ऐ नबी!) अपने रब के रास्ते की तरफ हिकमत और अच्छे वाज़ (उपदेश) के साथ दअवत दीजिएः और उनसे अच्छे तरीक़े से बहस कीजिए। बेशक आपका रब ही खूब जानता है उस शख़्स को जो उसकी राह से भटका और वही हिदायत पाने वालों को खूब जानता है।

(126) और अगर तुम बदला लो तो इतना ही बदला लो जितनी तुम्हें तकलीफ पहुँची हो, और अगर तुम सब्र करो तो वह सब्र

करने वालों के लिए बेहतर है।

(127) और (ऐ नबी!) आप सब्र करें और आपका सब्र करना भी अल्लाह की की तौफीक़ (सहारे) से है और उन (कुफ्फार) पर ग़म न खायें, और न आप उस पर तंगी में मुब्तिला हों जो वह मक्र (साज़िशें) करते हैं।

(128) बिलाशुब्ह अल्लाह तक़्वा (परेहजगारी) इख़्तियार करने वालों और अहसान (नेकी) करने वालों के साथ है।

सूरह बनीइस्राईल-17

(यह मक्कर सूरत है इसमें 111 आयतें और 12 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) पाक ज़ात है (अल्लाह) जो अपने बन्दे को रात के एक हिस्से में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक ले गया जिसके माहौल को हमने बरकत दी है ताकि हम उसे अपनी निशानियां दिखाएँ। बेशक वही सुनने वाला, देखने वाला है।

(2) और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और हमने उसे बनीइस्राईल के लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) बनाया (और उन्हें हुक्म दिया) कि तुम मेरे सिवा किसीको कारसाज़ न ठहराओ।

(3) ऐ! उन लोगों की औलाद जिन्हें हमने नूह के साथ (कश्ती में) सवार किया था बेशक वह शुक्रगुज़ार बन्दा था।

(4) और हमने बनी इस्राईल को किताब (तौरात) में फैसला सुना दिया कि तुम ज़मीन में दोबारा ज़रूर फसाद करोगे और बहुत बड़ी सरकशी ज़रूर करोगे।

(5) फ़िर जब दोनों में से पहला वादा आया तो हमने तुम पर अपने सख़्त जंगजू बन्दे मुसल्लत कर दिए इसलिए वह (फसाद अंगेज़ी के लिए) शहरों के दरम्यान फैल गए। और यह वादा पूरा होना ही था।

(6) फ़िर हमने तुम्हें दोबारा उन पर गलबा दिया और तुम्हें माल और बेटों के साथ मदद दी और हमने तुम्हें तदाद में ज़्यादा कर दिया।

(7) अगर तुम भलाई करोगे तो अपने ही नफ्स के लिए करोगे, और अगर बुराई करोगे तो (वह भी) उसी के लिए होगी, फ़िर जब दूसरा वादा आया, (तो एक और क़ौम तुम पर ग़ालिब आई) ताकि वह तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें और मस्जिद (हैकले सुलेमानी) में दाख़िल हो जाएँ जैसे पहली बार उसमें दाख़िल हुए थे और ताकि वह जिस पर गलबा पाएँ उसे पूरी तरह तबाह कर दें।

(8) क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करे और अगर तुम फ़िर वही (सरकशी) करोगे तो हम भी वही (मामला) करेंगे और

हमने जहन्नम को काफिरों के लिए क़ैदखाना बनाया है।

(9) बेशक यह कुरआन वह राह बताता है जो सब से सीधी है और मोमिनों को बशारत (खुशखबरी) देता है जो नेक काम करते हैं कि यक़ीनन उनके लिए बहुत बड़ा अज्र है।

(10) और यह कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार किया है।

(11) और इन्सान बुराई की दुआ ऐसे मांगता है जैसा उसकी भलाई की दुआ हो और इन्सान बहुत जल्द करने वाला है।

(12) और हमने रात और दिन को दो निशानियां बनाया, फ़िर हमने रात की निशानी तो बेनूर (प्रकाशहीन) कर दी और दिन की निशानी रोशन बनाई ताकि तुम अपने रब का फज़्ल तलाश करो, और ताकि तुम बरसो की गिनती और हिसाब जान लो और हमने हर चीज़ खूब तफ्सील से बयान कर दी है।

(13) और हमने हर इंसान का आमाल नामा उसकी गर्दन से लगा दिया है और क़यामत के दिन हम उसके सामने एक किताब पेश करेंगे, वह उसे खुली पाएगा।

(14) (कहा जाएगाः) अपना आमाल नामा पढ़, तेरा नफ्स ही आज काफी है, तेरा हिसाब लेने वाला।

(15) जिसने हिदायत (मार्ग-दर्शन) पाई तो बस अपने आप के लिए हिदायत पाता है और जो गुमराह हुआ तो बस वह अपने नफ्स ही पर गुमराह होता है। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे को बोझ नहीं उठाएगा और हम उस वक़्त तक किसी को अज़ाब नहीं देते जब तक कोई रसूल न भेजें।

(16) और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहें तो उसके खुशहाल अफराद (लोगों) को हुक्म देते हैं, फ़िर वह उसमें नाफरमानी करने लगते हैं, इसलिए उस बस्ती पर (अज़ाब की) बात साबित हो जाती है, तब हम उसे (पूरे तौर पर) तबाह कर डालते हैं।

(17) और हमने नूह के बाद कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं, और आपका रब काफी है अपने बन्दों के गुनाहों की खूब खबर रखने वाला, (उन्हें) खूब देखने वाला।

(18) जो कोई जल्दी वाली (दुनिया) चाहे तो हम इसी दुनिया में जिसके लिए चाहें जिस क़दर चाहें जल्द अता करते हैं, फ़िर उसके लिए हम जहन्नम ठहरा देते हैं, वह उसमें बदहाल और धुत्कारा हुआ दाख़िल होगा।

(19) और जो आख़िरत चाहे और और उसके लिए पूरी पूरी कोशिश करे, जबकि

वह मोमिन हो, तो यही लोग हैं जिनकी कोशिश क़ाबिले क़द्र है।

(20) हम हर एक को आप के रब की अता से नवाज़ते हैं, उनको भी और इनको भी, और तेरे रब की अता (किसी से) रूकी हुई नहीं।

(21) देखिए! किस तरह हमने फ़ज़ीलत दी कुछ को कुछ पर, और यक़ीनन आख़िरत दरजों में बढ़ कर है और फ़ज़ीलत देने में भी बढ़ कर है।

(22) आप अल्लाह के साथ कोई मअ़बूद (पूज्य) न ठहराऐं, (वरना) फ़िर आप मज़मूम (बदहाल) और बेकस हो कर बैठे रहेंगे।

(23) और आपके रब ने फैसला कर दिया कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो, और वाल्दैन से अच्छा सलूक करो, अगर उन दोनों में से एक या दोनों तेरे सामने बूढ़ापे को पहुँच जाऐं तो उनसे ''उफ़'' तक न कह और उन्हें मत झिड़क, और उनसे नर्म लहजे में (अदब व एहतराम से) बात कर।

(24) और उनके सामने रहम दिली से आजिज़ी (विनम्रता) के साथ अपना बाज़ू (पहलू) झुकाए रख, और कहः मेरे रब! उन दोनों पर रहम फरमा जैसे उन्होंने बचपन में मेरी परवरिश की।

(25) तुम्हारा रब खूब जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, अगर तुम सालेह (नेक) होगे तो बिलाशुब्ह वह तौबा करने वालों को बड़ा बख्शने वाला है।

(26) और करबतदार (रिश्तेदारों) को उसका हक़ दे और मिस्कीन (गरीबों) और मुसाफिर को भी, और फिज़ूल खर्ची से माल न उड़ा।

(27) बेशक फिज़ूल खर्च शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का सख्त नाशुक्रा है।

(28) और अगर तू अपने रब की रहमत (रोज़ी) तलाश करने की वजह से उन (रिश्तेदारों) से मुहँ मोड़े तो उनसे नर्म बात कह।

(29) और अपना हाथ अपनी गर्दन के साथ बान्ध न रख और न उसे पूरी तरह खोल दे कि फ़िर मलामत ज़दा (धिक्कारा हुआ) और थका हारा हो कर बैठा रहे।

(30) बिलाशुब्ह आपका रब जिसके लिए चाहे रिज़्क़ खोल देता है और तंग भी कर देता है, बेशक वह अपने बन्दों की खूब खबर रखता, खूब देखता है।

(31) और तुम अपनी औलाद को गरीबी के डर से क़त्ल न करो, हम उन्हें भी रिज़्क़ देते हैं और तुम्हें भी, बेशक उनका क़त्ल कबीरा (बड़ा) गुनाह है।

(32) और तुम ज़िना (व्याभिचार) के क़रीब मत जाओ, यक़ीनन वह बेहयाई और बुरी

राह है।

(33) और तुम उस जान को क़त्ल न करो जिसे अल्लाह ने हराम किया है सिवाए हक़ के। और जो ज़ुल्म से क़त्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को इख़्तियार दिया है, इसलिए वह क़त्ल (क़सास) में ज़्यादती न करे, बेशक उसकी मदद की जाएगी।

(34) और तुम यतीम के माल के क़रीब न जाओ, सिवाए उसके जो अहसन (अच्छा) तरीक़ा हो यहाँ तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए, और तुम अहद (वादा) पूरा करो, बेशक अहद की बाबत सवाल होगा।

(35) और जब माप कर दो तो माप पूरा करो और सीधी तराज़ू से तौलो, यह बेहतरीन और अन्जाम कार (परिणाम) के लिहाज़ से अहसन (अच्छा) है।

(36) और जिस बात का आपको इल्म ही नहीं उसके पीछे न पड़ें, बेशक कान, आँख और दिल, इनमें से हर एक की बाबत सवाल होगा।

(37) और ज़मीन पर अकड़ कर मत चल। तू न तो ज़मीन फाड़ सकता है और न कभी लम्बाई में पहाड़ तक पहुँच सकता है।

(38) यह (ऊपर ज़िक्र) सारे काम, उनकी बुराई आपके रब के नज़दीक नापसंदीदा है।

(39) यह वह हिकमत की बातें हैं जो आपके रब ने आपकी तरफ वह्यी की हैं। और अल्लाह के साथ कोई और मअ़बूद (पूज्य) न ठहराओ वरना जहन्नम में डाले जाओगे, मलामत ज़दा, धुत्कारे हुए।

(40) क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटों के लिए चुन लिया और अपने लिए फरिश्तों में से बेटियां बना लीं? बिलाशुब्ह तुम बड़ी (नापंसदीदा और खतरनाक) बात कहते हो।

(41) और हमने इस क़ुरआन में हर तरह फ़ेर कर (हक़ाईक़ को) बयान किया है ताकि वह नसीहत (उपदेश) पकड़े लेकिन यह (चीज़) उनको नफरत ही में ज़्याद करती है।

(42) कह दीजिएः अगर उसके साथ और मअ़बूद (पूज्य) होते, जैसा कि वह (मुश्रिक) कहते हैं, तो वह साहबे अर्श (अल्लाह) तक पहुँचने के लिए ज़रूर कोई राह तलाश करते।

(43) वह पाक है और वह (मुश्रिक) जो कुछ कहते हैं उससे कहीं ज़्यादा आला, बुलंदतर है।

(44) उसकी तस्बीह (महिमागान) करते हैं सातों आसमान और ज़मीन और जो (मख़्लूक़) उनमें है, और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी हम्द के साथ तस्बीह न करती हो, लेकिन तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझ सकते। बेशक वह हलीम (बड़ा सहनसील), मग्फिरत (माफ करने) वाला है।

(45) और जब आप क़ुरआन पढ़ते हैं तो हम आपके और उन लोगों के दरम्यान, जो

आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, एक मख़फी (छुपा हुआ) परदा डाल देते हैं।

(46) और हमने उनके दिलों पर परदे डाल रखे हैं ताकि उसे न समझ पाएँ और उनके कानों में डाट लगा देते हैं और जब आप कुरआन में अपने अकेले रब का ज़िक्र करते हैं तो वह नफरत से अपनी पीठ फेर लेते हैं।

(47) हम खूब जानते हैं कि वह किस गर्ज़ से उस (कुरआन) को सुनते हैं, जब वह आपकी तरफ कान लगाते हैं और जब वह काना फूसी करते हैं (तब भी) जबकि ज़ालिम कहते हैंः तुम जिसकी इत्तेबा करते हो वह तो जादू मारा शख़्स है।

(48) देखिए! वह आपके लिए कैसी मिसालें बयान करते हैं, वह गुमराह हो गए, लिहाज़ा वह रास्ता नहीं पा सकते।

(49) और वह कहते हैंः क्या जब हम हड्डिया और चूरा हो जाएँगे तो क्या हम दोबारा अज़सरे नू (नए सिरे) उठाए जाएँगे?

(50) कहिएः तुम फ़िर पत्थर या लोहा हो जाओ।

(51) या कोई मखलूक़ जो तुम्हारे दिलों में बड़ी मालूम हो। फ़िर वह कहेंगेः कौन हमें दोबारा पैदा करेगा? कहिएः वह जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया, फ़िर वह आपकी तरफ अपने सर हिलाएँगे और कहेंगेः यह कब होगा? कह दीजिएः शायद कि वह क़रीब हो।

(52) जिस दिन वह (अल्लाह) तुम्हें बुलाएगा, तो तुम उसकी हम्द (प्रशंसा) करते चले आओगे और तुम ख्याल करोगे कि बस थोड़ा अर्सा (समय) ठहरे हो।

(53) और मेरे बन्दों से कह दीजिए कि वह बात कहें जो अहसन (अच्छी) हो, बेशक शैतान उनके दरम्यान फसाद डालता है, बिलाशुब्ह शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है।

(54) तुम्हारा रब तुम्हें बेहतर जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रहम करे, और अगर चाहे तो तुम्हे अज़ाब दे और हमने आपको उन पर ज़िम्मेदार बना कर नहीं भेजा।

(55) और आपका रब उन्हे खूब जानता है जो आसमानों और ज़मीन में हैं और यक़ीनन हमने कुछ नबियों को कुछ पर फज़ीलत दी है और हमने दाऊद को ज़बूर दी।

(56) कह दीजिएः पुकारो जिन्हें तुम उसके सिवा मअ़बूद (पूज्य) समझते हो, न तो वह तुमसे किसी तकलीफ को हटाने का कोई इख़्तियार (अधिकार) रखते हैं और न (उसे) बदलने ही का।

(57) जिन्हें यह (मुश्रिक) लोग पुकारते हैं

वह तो खुद अपने रब तक पहुँचने का वसीला ढूँढ़ते हैं कि उनमें से कौन (अल्लाह से) क़रीबतर (समीप हो सकता) है, और वह उसकी रहमत की उम्मीद रखते हैं और उसके अज़ाब से डरते हैं। बिलाशुब्ह आपके रब का अज़ाब डरने की चीज़ है।

(58) और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम क़यामत के दिन से पहले हलाक न करें या उसे शदीद (दर्दनाक) अज़ाब न दें, यह किताब (लौहे महफूज़) में लिखा हुआ है।

(59) और हमें निशानियां भेजने से सिर्फ उस चीज़ ने रोका है कि पहले लोगों ने उनको झुठलाया था। और हमने समूद को एक ऊँटनी दी थी वाज़ेह (खुली) निशानी, फ़िर उन्होंने उस पर जुल्म किया और हम तो सिर्फ डराने के लिए निशानियां भेजते हैं।

(60) और (याद करें) जब हमने आपसे कहाः बेशक आपके रब ने लोगों को घेर रखा है और हमने आपको (मेअराज में) जो मन्ज़र (दृश्य) दिखाया उसे लोगों के लिए बस एक फित्ना ही बना दिया और उस दरख्त (ज़क़्क़ूम) को भी जिस पर कुरआन में लअनत की गई और हम उन्हें डराते हैं, तो उनकी बड़ी सरकशी और ज़्यादा हो जाती है।

(61) और जब हमने फरिश्तों से कहाः आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस के सिवा उन सबने सज्दा किया, वह बोलाः क्या मैं उसे सज्दा करूं जिसे तूने मिट्टी से पैदा किया है?

(62) कहने लगाः भला देख तो उसे जिसे तूने मुझ पर इज्ज़त दी है, अगर तू मुझे क़यामत के दिन तक ढील दे, तो थोड़े लोगों के सिवा मैं उसकी तमाम नस्ल की जड़ काट दूंगा।

(63) अल्लाह ने फरमायाः जा! फ़िर उनमें से जो तेरी इत्तेबा करेगा तो बिलाशुब्ह तुम्हारी सज़ा जहन्नम है, पूरी पूरी सज़ा।

(64) और उनमें जिन पर भी तेरा बस चल सके उन्हें अपनी आवाज़ से बहका ले, और उन पर अपने सवार और प्यादे चढ़ा ला, और माल और औलाद में उनका शरीक बन जा और उन्हें (झूठे) वादे दे और शैतान तो उन्हें बस फरेब (छल) ही का वादा देता है।

(65) बेशक मेरे बन्दों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, और आपका रब काफी है कारसाज़।

(66) तुम्हारा रब तो वह है जो तुम्हारे लिए समंदर में कश्ती चलाता है ताकि तुम उसका फज़्ल तलाश करो, बेशक वह तुम पर बड़ा रहीम (बेहद मेहरबान) है।

(67) और जब समंदर में तुम्हें कोई तकलीफ पहुँचे तो तुम उनको, जिन्हें अल्लाह के सिवा पुकारते हो, भूल जाते हो फ़िर जब वह (अल्लाह) तुम्हें खुश्की (थल) की तरफ

निजात (सुरक्षित कर) देता है तो तुम मुँह मोड़ लेते हो और इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है।

(68) क्या फ़िर तुम उससे बेख़ौफ (निडर) हो गए हो कि वह तुम्हें खुश्की (थल) की जानिब (ज़मीन में) धंसा दे या तुम पर संगरेज़ों (कंकर पत्थर) वाली सख्त आंधी भेज दे, फ़िर तुम अपने लिए कोई कारसाज़ न पा सको।

(69) क्या तुम बेख़ौफ हो गए हो कि वह तुम्हें दोबारा उस (समंदर) में धकेल दे, फ़िर तुम पर तूफानी हवा भेजे, तो वह तुम्हारे कुफ्र की वजह से तुम्हें डुबो दे, फ़िर तुम अपने लिए हमारे खिलाफ उस पर कोई हमारा पीछा करने वाला भी पाओ।

(70) और बिलाशुब्ह यक़ीनन हमने बनी आदम को इज्ज़त दी है और उन्हें बहरो बर्र (ज़मीन और समन्दर) में सवारियां दीं, और उन्हें पाकिज़ा चीज़ों में से रिज़्क़ दिया और उन्हें अपनी कसीर (बहुत सी) मख्लूक़ात (सृष्टि) पर बड़ी फज़ीलत (बड़ाई) दी, जिन्हें हमने पैदा किया।

(71) जिस दिन हम तमाम इन्सानों को उनके इमाम के साथ बुलाएँगे, फ़िर जिसे उस का नामाऐ अमाल (कर्म-पात्र) उसके दांये हाथ में दिया गया तो वह अपना आमाल नामा पढ़ेंगे और उन पर (घुटली के) धागे के बराबर जुल्म न होगा।

(72) और जो इस दुनिया में अन्धा रहा, वह आखिरत में भी अन्धा और राह से बहुत ज़्यादा भटका हुआ रहेगा।

(73) और बिलाशुब्ह क़रीब था कि हमने आपकी तरफ जो वह्यी की है काफिर आपको उससे फुसला देते ताकि आप हम पर उसके अलावा कुछ और गढ़ लें और तब वह ज़रूर आपको अपना दिली दोस्त बना लेते।

(74) और अगर हम आपको साबित क़दम न रखते तो बिलाशुब्ह क़रीब था कि आप उनकी तरफ थोड़ा सा झुक जाते।

(75) (अगर ऐसा होता) तो हम आपको ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी दोगुना अज़ाब चखाते फ़िर आप अपने लिए हमारे खिलाफ कोई मददगार न पाते।

(76) और वह आपको इस ज़मीन (मक्का) से उखाड़ने ही लगे थे कि आपको यहाँ से निकाल दें और तब आपके पीछे थोड़ा ही ठहर पाते।

(77) उन रसूलों के तरीक़े की मानिन्द जिन्हें हमने आपसे पहले भेजा और आप हमारे तरीक़े (क़ानून) में कोई तब्दीली (परिवर्तन) न पाएँगे।

(78) सूरज ढलने से ले कर रात के अन्ध ोरे तक नमाज़ क़ायम कीजिए, और नमाज़ फजर भी, बेशक फजर की नमाज़ (फरिश्तों

के) हाज़िर होने का वक़्त है।

(79) और रात के कुछ हिस्से में भी आप इस (कुरआन) के साथ तहज्जुद पढ़ें, (यह) आपके लिए ज़ायद है, उम्मीद है कि आपका रब आपको मक़ामे महमूद (प्रशंसापूर्ण स्थान) पर खड़ा करेगा।

(80) और कहिएः ऐ मेरे रब! मुझे (जहाँ ले जाए तो) सच्चाई के साथ निकाल ले जा (जहाँ से निकाले तो) सच्चाई के साथ निकाल और मुझे अपने पास से मदद देने वाला गलबा अता कर।

(81) और कहेंः हक़ आ गया और बातिल मिट गया, बेशक बातिल तो मिटने ही वाला है।

(82) और हम कुरआन में से जो नाज़िल करते हैं वह मोमिनों के लिए शिफा और रहमत है और वह ज़ालिमों के खसारे (नुक़सान) ही में ज़्यादा करता है।

(83) और जब हम इन्सान पर इनआम करें तो वह मुँह मोड़ लेता है और अपना पहलू बचाता है और जब उसे तकलीफ पहुँचे तो मायूस हो जाता है।

(84) कह दीजिएः हर कोई अपने तरीक़े पर अमल करता है, इसलिए तुम्हारा रब खूब जानता है कि कौन ज़्यादा सीधे रास्ते पर है।

(85) और वह आप से रूह के मुतअल्लिक़ (बारे में) सवाल करते हैं। कहिएः रूह मेरे रब के हुक्म से है और तुम्हें तो बहुत ही थोड़ा इल्म (ज्ञान) दिया गया है।

(86) और अगर हम चाहें तो उसे ज़रूर ले जाएं जो कुछ हमने आपकी तरफ वह्यी की है, फ़िर आप उस पर हमारे मुक़ाबले में अपना कोई हिमायती न पाएँगे।

(87) सिवाए आपके रब की रहमत के, बेशक आप पर उसका फ़ज़्ल बहुत ज़्यादा है।

(88) कह दीजिएः अगर तमाम इन्सान और जिन्न मिल कर इस कुरआन की मिस्ल लाना चाहे तो वह इसकी मिस्ल न ला सकेंगे अगरचे वह एक दूसरे के मददगार भी बन जाएें।

(89) और बिलाशुब्ह हमने इस कुरआन में हर मिसाल फ़ेर फ़ेर कर बयान की है फ़िर भी अक्सर लोग नाशुक्रे हुए बग़ेर नहीं रहते।

(90) और वह बोलेः हम तुझ पर हरगिज़ ईमान नहीं लाएँगे यहाँ तक कि तू हमारे लिए ज़मीन से चश्मा (जलस्रोत) जारी कर दे।

(91) या तेरे लिए खजूर और अंगूरों का एक़ बाग हो फ़िर तू उस (बाग) के दरम्यान (जगह जगह) नहरें जारी कर दे।

(92) या तू आसमान टुकड़े टुकड़े करके, हम पर गिरा दे जैसे तू कहा करता है, या अल्लाह को और फरिश्तों को सामने ले आ।

(93) या तेरे लिए सोने का घर हो, या तू आसमान में चढ़ जाए, और हम तेरे चढ़ने

पर ईमान न लाएँगे यहाँ तक कि तू हम पर एक किताब उतार लाए जिसे हम पढ़ें, कहिएः मेरा रब पाक है, मैं तो एक बशर (इंसान) के सिवा कुछ नहीं जो रसूल है।

(94) और लोगों के पास हिदायत (मार्ग-दर्शन) आ जाने के बाद उनको ईमान लाने से सिर्फ उस चीज़ ने रोका कि उन्होंने कहाः क्या अल्लाह ने एक बशर (इंसान) को रसूल (पेग़ाम पहुँचाने वाला बना कर) भेजा है?

(95) कहाः दीजिए अगर ज़मीन में फरिश्ते होते जो यहाँ मुतमईन हो कर चलते फिरते तो हम उन पर आसमान से कोई फरिश्ता ही रसूल बना कर नाज़िल करते।

(96) कह दीजिएः मेरे और तुम्हारे दरम्यान बतौर गवाह अल्लाह काफी है। बेशक वह अपने बन्दों से बाखबर और (उन्हें) देखने वाला है।

(97) और जिसे अल्लाह हिदायत (मार्ग-दर्शन) दे, तो वही हिदायत याफ्ता है और जिसे वह गुमराह करे तो उनके लिए आप उसके सिवा कोई दोस्त हरगिज़ न पाएँगे और हम उन्हें क़यामत के दिन औन्धे मुँह, अन्धे, गूंगे और बहरे उठाएँगे, उनका ठिकाना जहन्नम होगा। जब वह बुझने लगेगी तो हम उनके लिए और भड़का देंगे।

(98) यह उनकी सज़ा है क्योंकि उन्होंने हमारी आयतों का इन्कार किया और कहाः क्या जब हम हड्डियां और चूरा हो जाएँगे तो क्या यक़ीनन हम दोबारा अज़सरे नू (नए सिरे से पैदा कर के) उठाए जाएँगे।

(99) क्या उन्होंने नहीं देखा कि बेशक जिस अल्लाह ने आसमान और ज़मीन पैदा किये, वह इस पर क़ादिर है कि उन जैसे फ़िर पैदा कर दे और अल्लाह ने उनके लिए एक वक़्त मुक़र्रर किया है जिसमें कोई शक नहीं लेकिन ज़ालिम सरकशी किये बग़ेर नहीं रहते।

(100) कह दीजिएः अगर तुम मेरे रब की रहमत के खज़ानों के मालिक होते तो उस वक़्त तुम उन्हें खर्च हो जाने के डर से ज़रूर रोक लेते और इन्सान निहायत कंजूस है।

(101) और हमने मूसा को नौ खुली निशानियां दीं, इसलिए आप बनी इस्राईल से पूछें, जब वह उनके पास आया तो फ़िरऔन ने उससे कहाः ऐ मूसा! बेशक मैं तुझे सहरज़दा (जादू का मारा हुआ) समझता हूँ।

(102) उस (मूसा) ने कहाः तू यक़ीनन जान चुका है कि यह चीज़ें आसमानों और ज़मीन के रब ही ने, निशानियां बना कर (ग़ौर करने के लिए) नाज़िल की हैं और ऐ फ़िरऔन! मैं तो तुझे हलाक किया हुआ समझता हूँ।

(103) फ़िर फ़िरऔन ने इरादा किया कि उन्हें उस ज़मीन से उखाड़ दे तो हमने उसे

और उसके सब साथियों के डुबो दिया।

(104) और उसके बाद हमने बनी इस्राईल से कहा कि उस ज़मीन में रहो फिर जब आख़िरत का वादा आएगा तो हम तुम सबको समेट लाएँगे।

(105) और हमने इस (कुरआन) को हक़ के साथ नाज़िल किया है और यह हक़ के साथ नाज़िल हुआ और हमने आपको सिर्फ बशारत (खुशखबरी) देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है।

(106) और कुरआन को हमने थोड़ा थोड़ा उतारा ताकि आप उसे लोगों को ठहर ठहर कर सुनाएं और हमने उसे थोड़ा थोड़ा ही नाज़िल किया है।

(107) कह दीजिएः इस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ, बिलाशुब्ह जिन्हें इससे पहले इल्म (ज्ञान) दिया गया जब उन पर तिलावत की जाती है तो वह अपनी ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पढ़ते हैं।

(108) और वह कहते हैंः पाक है हमारा रबः बेशक हमारे रब का वादा ज़रूर पूरा होना है।

(109) और वह रोते हुए अपनी ठोड़ियों के बाल गिर पड़ते हैं और यह (कुरआन) उनके खुशू (विनम्रता) को ज़्यादा करता है।

(110) कह दीजिएः (अल्लाह को) ''अल्लाह'' कह कर पुकारो या ''रहमान'' कह कर, तुम जिस नाम से भी पुकारो तो उसी के लिए अस्माऐ हुस्ना (अच्छे अच्छे नाम) हैं, अपनी नमाज़ न ज़्यादा बुलन्द आवाज़ से पढ़े न बिल्कुल पस्त आवाज़ से बल्कि उसके दर्मियानी रास्ता इख्तियार करें।

(111) और कह दीजिएः सारी हम्द (प्रशंसा) अल्लाह ही के लिए है जिसने (अपने लिए) कोई औलाद नहीं बनाई और न बादशाही में उसका कोई शरीक है और न उसे कमज़ोरी की वजह से कोई हिमायती दरकार है और आप उस (अल्लाह) की बड़ाई बयान करें, कमाल दर्जे की बड़ाई।

सूरह कहफ-18

(यह मदनी सूरत है इसमें 110 आयतें और 12 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) सारी हम्द अल्लाह ही के लिए है जिसने अपने बन्दे पर किताब नाज़िल की और उसमें कोई टेढ़ नहीं रखी।

(2) ठीक और सीधी, (बगेर किसी कमी बेशी के) ताकि वह उस (अल्लाह) की तरफ से सख्त अज़ाब से डराए और मोमिनों को बशारत (खुशखबरी) दे जो नेक अमल करते हैं कि बेशक उनके लिए अच्छा अज्र (बदला) है।

(3) जिसमें वह हमेशा रहेंगे।

(4) और उन लोगों को डराए जिन्होंने कहा कि अल्लाह औलाद रखता है।

(5) न उन्हें उसका कोई इल्म (ज्ञान) है और न उनके बाप दादा को था, उनके मुँह से बड़ी ही खतरनाक बात निकलती है। वह सरासर झूठ ही बकते हैं।

(6) फ़िर शायद आप तो खुद को उनके पीछे ग़म (दुख) से हलाक (समाप्त) करने वाले हैं अगर यह (काफिर) इस कुरआन पर ईमान न लाएं।

(7) बिलाशुब्ह हमने जो कुछ रूऐ ज़मीन पर है, उसे उसकी ज़ीनत (शोभा) बनाया है ताकि हम लोगों को आज़माएं कि उनमे से कौन अच्छे अमल (कर्म) करता है।

(8) और जो कुछ ज़मीन पर है, बिलाशुब्ह हम उसे चटियल मैदान बना देने वाले हैं।

(9) क्या आपने समझा कि ग़ार (गुफा) और कुतबे (शिलालेख) वाले हमारी निशानियों में से एक अजीब (अद्‌भुत) निशानी थे?

(10) जब उन नौवजानो ने ग़ार (गुफा) में पनाह (शरण) ली, तो उन्होंने कहाः ऐ हमारे रब! हमें अपने पास से रहमत (दयालुता) दे और हमारे लिए हमारे मामले में सहीह रहनुमाई फरमा।

(11) फ़िर हमने ग़ार (गुफा) में उनके कानों पर कई बरस के लिए परदा डाल दिया।

(12) फ़िर हमने उन्हें उठाया ताकि हम मालूम करें कि दो गिरोहों में से कौन उस मुद्दत (कालावधि) को ज़्यादा याद रखने वाला है जो उन्होंने गुज़ारी।

(13) हम उनका हाल ठीक ठीक आपसे बयान करते हैं, बेशक वह चन्द नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उन्हें हिदायत (मार्ग-दर्शन) में ज़्यादा किया था।

(14) और हमने उनके दिल मज़बूत कर दिए, जब वह खड़े हुए तो बोलेः हमारा रब तो आसमानों और ज़मीन का रब है, हम उसके सिवा किसी को मअ़बूद (पूज्य) नहीं पुकारेंगे, अगर पुकारा तो हमने जुल्म व ज़्यादती वाली बात कही।

(15) यह हमारी क़ौम है, उन्होंने अल्लाह के सिवा दूसरों को इलाह बना रखा है वह उन (की इबादत) पर वाज़ेह (खुली) दलील क्यों नहीं लाते? फ़िर उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन है जिसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा।

(16) और जब तुम उन लोगों से और जिन की वह अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं उनसे अलग हो गए हो तो गार में पनाह लो, तुम्हारा रब अपनी रहमत (दया) तुम पर फैला देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे काम में आसानी पैदा कर देगा।

(17) और आप सूरज को देखेंगे जब वह तुलू (उदय) होता है तो उनके गार (गुफा) से दाँई तरफ हट जाता है और जब गुरूब (अस्त) होता है तो उनके बाँये तरफ कतरा (कर निकल) जाता है, और वह गार के अन्दर खुली जगह में हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है। जिसे अल्लाह हिदायत (मार्ग-दर्शन) दे तो वही हिदायत याफ्ता है, और जिसे वह गुमराह करे, तो आप उसके लिए हरगिज़ कोई रहनुमा (मार्ग दर्शक) व दोस्त नहीं पाएँगे।

(18) और आप उन्हें जागते समझेंगे, हालांकि वह सोऐ हुए हैं, और हम उनकी दाँई और बाँई करवट बदलते हैं और उनका कुत्ता गार (गुफा) के दहाने (प्रवेश-मार्ग) पर अपने दोनों बाजू फैलाऐ हुए है, अगर आप उन्हें झांक कर देखें तो उनसे पीठ फेर कर भाग निकलें और आप में उनकी दहशत (भय) समा जाए।

(19) और इसी तरह हमने उन्हें उठाया ताकि वह बाहम (आपस में) सवाल करें, उनमें से एक कहने वाले ने कहाः तुम कितना अर्सा (समय) ठहरे हो? वह बोलेः हम एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा ठहरे हैं। फ़िर बोलेः तुम्हारा रब बेहतर जानता है जितनी देर तुम ठहरे, इसलिए अब तुम अपने चाँदी के यह सिक्के दे कर अपना एक आदमी शहर भेजो, फ़िर वह देखे कि शहर का कौन सा खाना पाकीज़ा तर है, तो वह उसमें से तुम्हारे लिए कुछ खाना ले आए और चाहिए कि वह नर्मी (से बात) करे और तुम्हारे बारे में बिल्कुल किसी को न बताए।

(20) बिलाशुब्ह अगर वह तुम पर ग़ालिब हो गए तो तुम्हें रजम (पथराव) कर देंगे या तुम्हें अपने दीन में पलटा लेंगे, और फ़िर उस वक़्त तुम कभी भी फलाह (कामयाबी) नहीं पा सकोगे।

(21) और इसी तरह हमने लोगों को उन पर ग़ालिब कर दिया ताकि वह जान लें कि बेशक अल्लाह का वादा हक़ है और यक़ीनन क़यामत में कोई शक नहीं, जब लोग उनके मामले में बाहम (आपस में) झगड़ रहे थे, तो उन्होंने कहाः उन पर एक इमारत बना दो, उनका रब उन्हे बेहतर जानता है, जिन्हें उनके मामले में गलबा हासिल था वह बोलेः हम उन पर ज़रूर एक इबादत गाह (उपासना गृह) बनाएँगे।

(22) कुछ लोग कहेंगेः वह तीन थे, चौथा उनका कुत्ता था। और कुछ (दूसरे) कहेंगेः वह पाँच थे छटा उनका कुत्ता था, (यह) अन्धेरे में तीर चलाना है। और कुछ (यह भी) कहेंगेः वह सात थे आठवां उनका कुत्ता था। आप कह दीजिएः मेरा रब ही उनकी गिनती खूब जानता है, बहुत थोड़े लोग ही उन (के हाल) को जानते हैं, आप उनकी

बाबत बहस न करें, सिवाए सरसरी बहस के। और आप उनके बारे में उनसे किसी से भी न पूछें।

(23) और आप किसी शै (चीज़) के बारे में न कहें: बेशक मैं उसे कल करने वाला हूँ।

(24) मगर यह कि अल्लाह चाहे। और जब आप भूल जाएं तो अपने रब को याद करें और कहें: उम्मीद है कि मेरा रब इस मामले में रूश्द (सु-पथ) व भलाई से क़रीब तर बात की तरफ मेरी रहनुमाई करेगा।

(25) और वह गार (गुफा) में तीन सौ साल और नौ साल ज़्यादा रहे।

(26) कह दीजिए: अल्लाह बेहतर जानता है जितना अर्सा (समय) वह रहे, आसमानों और ज़मीन का ग़ैब उसीके लिए है। क्या ही खूब है वह देखने वाला और सुनने वाला! उनके लिए उस (अल्लाह) के सिवा कोई दोस्त नहीं, और वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता।

(27) और आप उसकी तिलावत कीजिए जो कुछ आपके रब की किताब में से आपकी तरफ वह्यी किया गया है, उस के कलमात (बातों) को कोई बदलने वाला नहीं और आप उसके सिवा कोई जाए पनाह (शरणगाह) हरगिज़ नहीं पाएँगे।

(28) और अपने आपको उन लोगों के साथ रोक रखें जो सुबह शाम अपने रब को पुकारते हैं, वह उसका चेहरा चाहते हैं। और आपकी आँख उनसे हटने न पाएं कि दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ीनत (शोभा) चाहने लगें, और उसकी इताअत न करें जिसका दिल हमने अपने ज़िक्र से ग़ाफिल (विचलित) कर दिया और उसने अपनी ख्वाहिश (इच्छा) की पैरवी की और उसका मामला हद से बढ़ा हुआ है।

(29) और कह दीजिए: हक़ तो तुम्हारे रब की तरफ से है, फ़िर जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ्र करे, बिलाशुब्ह हमने ज़ालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसके शोलों ने उनको घेर रखा है, और अगर वह फरयाद करेंगे तो ऐसे पानी के साथ सुनी जाएगी जो तलछट के मानिन्द होगा वह (उनके) चेहरे भून डालेगा, क्या बुरा मशरूब (पेय) है और क्या बुरी आरामगाह (विश्राम स्थल) है।

(30) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल (अनुकूल कर्म) किये, यक़ीनन हम उसका अज्र ज़ाया नहीं करते जिसने अच्छा अमल (सद्-कर्म) किया।

(31) उन्हीं लोगों के लिए अब्दी (हमेशा के लिए) बागात हैं, जिनके नीचे नहरें जारी हैं, वहाँ उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएँगे, और वह बारिक और मोटे रेशम के सब्ज़ (हरे) कपड़े पहनेंगे, वहाँ तख़्तों पर तकये लगाए बैठे होंगे क्या अच्छा बदला है (जन्नत) और क्या

अच्छी आरामगाह (विश्रामगृह) है (वह)!

(32) और (ऐ नबी!) बयान कीजिए उनके लिए दो आदमियों की मिसाल, हमने उनमें से एक को अंगूरों के दो बाग अता किये, और उनके गिर्द खजूरों की बाड़ लगा दी, और उन दोनों के दरम्यान खेती उगाई।

(33) दोनों बाग अपना फल लाते, और उसमें से कुछ न घटाते, और उनके दरम्यान हमने एक नहर बहाई।

(34) और उसे फल मिला तो वह अपने साथी से कहने लगा जबकि वह उससे गुफ्तगू कर रहा थाः मैं तुझसे माल में ज़्यादा हूँ और जत्थे में (भी) ज़्यादा मुअज़्ज़ (इज़्ज़त वाला) हूँ।

(35) और वह अपने बाग में दाख़िल हुआ जबकि वह अपनी जान के लिए जालिम था, उसने कहाः मैं नहीं समझता कि यह (बाग) कभी तबाह होगा।

(36) और मैं नहीं समझता कि क़यामत क़ायम होनी है, और अगर (बिलफ़र्ज़) मुझे अपने रब की तरफ लौटाया गया तो यक़ीनन मैं वहाँ इन बागों से बेहतर लौटने की जगह पाऊँगा।

(37) उसके (मोमिन) साथी ने उससे कहा जबकि वह उससे गुफ्तगू (बात) कर रहा थाः क्या तू उससे कुफ्र करता है जिसने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फ़िर नुत्फे (वीर्य) से, फ़िर तुझे पूरा मर्द बना दिया?

(38) लेकिन (मेरा तो अक़ीदा है) वही अल्लाह है मेरा रब, और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता।

(39) और जब तू अपने बाग में दाख़िल हुआ तो क्यों न कहाः ''माशा अल्लाहु, ला कुव्वत इल्लाबिल्लाहि'' (जो अल्लाह ने चाहा, कुछ तकात नहीं मगर अल्लाह की मदद से) अगर तू मुझे माल और औलाद में कमतर देखता है।

(40) तो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग से बेहतर दे और उस (तेरे बाग) पर आसमान से कोई अज़ाब भेजे तो वह (बाग) चटियल मैदान हो जाए।

(41) या उसका पानी गहरा हो जाए, फ़िर तू उसे तलाश करने की ताक़त न रखे।

(42) और उसका फल घेर लिया (तबाह कर दिया) गया, फ़िर वह उस माल पर अपनी हथेलियां मलता रह गया जो उस पर खर्च किया था, जबकि वह (बाग) अपनी छतरियों पर गिरा हुआ था, और वह कहता थाः ऐ काश! मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न करता।

(43) और उसकी कोई ऐसी जमाअत न थी जो अल्लाह के सिवा उसकी मदद करती और न हुआ वह (हमसे) बदला लेने वाला।

(44) वहाँ तो तमाम इख़्तियार (अधिकार) अल्लाह सच्चे ही का है, वही है बेहतर सवाब

और बेहतर बदला देने वाला।

(45) और उनके लिए दुनियवी ज़िन्दगी की मिसाल बयान कीजिएः जैसे पानी (मेहँ) जिसे हमने आसमान से नाज़िल किया, फ़िर उससे ज़मीन की नबातात (वनस्पति) खूब फूली फली, फ़िर वह चूरा चूरा हो गई, उसे हवाऐं उड़ा ले जाती हैं और अल्लाह हर शै (चीज़) पर कुदरत (प्रभुत्व) रखने वाला है।

(46) यह माल और बेटे तो दुनियवी ज़िन्दगी की ज़ीनत (शोभा) हैं, और आपके रब के यहाँ बाक़ी रहने वाली नेकियां ही सवाब (बदले) में बेहतर (उत्तम) हैं और अच्छी उम्मीद लगाने के एतबार (दृष्टि) से भी बेहतर (उत्तम) हैं।

(47) और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएँगे और आप ज़मीन को साफ मैदान देखेंगे और हम उनको इकट्ठा करेंगे, इसलिए हम उनमें से किसी को भी नहीं छोड़ेंगे।

(48) और आपके रब के सामने सफबस्ता (पंक्ति में) पेश किये जाएँगे (कहा जाएगाः) यक़ीनन तुम हमारे पास आए हो जैसा हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था बल्कि तुम समझते थे कि हम तुम्हारे लिए कोई वादा नहीं ठहराएँगे।

(49) और (हर एक का) आमाल नामा (कर्म-पत्र) (सामने) रख दिया जाएगा, फ़िर आप मुजरिमों को देखेंगे कि वह उसके मुन्दरजात (लिखे हुए) से डर रहे होंगे और कहेंगेः हाय हमारी कमबख्ती! कैसा है यह आमाल नामा जो किसी छोटे और बड़े अमल को नहीं छोड़ रहा, इसने तो सब कुछ ही शुमार (गिन) कर रखा है। और उन्होंने जो अमल किये थे हाज़िर पाएँगे और आपका रब किसी पर जुल्म नहीं करेगा।

(50) और जब हमने फरिश्तों से कहाः तुम आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस के सिवा सबने सज्दा किया, वह जिन्नों में से था, इसलिए उसने अपने रब का हुक्म न माना, क्या फ़िर भी तुम मुझे छोड़ कर उसे और उसकी औलाद को दोस्त बनाते हो जबकि वह तुम्हारे दुश्मन हैं? ज़ालिमों के लिए बहुत बुरा बदला है।

(51) मैंने उन्हें आसमानों और ज़मीन की पैदाईश में गवाह नहीं बनाया था और न उनकी अपनी पैदाईश ही में, और मैं गुमराह करने वालों को (अपना) बाजू (मददगार) बनाने वाला नहीं।

(52) और जिस दिन अल्लाह कहेगाः बुलाओ मेरे शरीकों को जिन्हें तुम मेरा शरीक समझते थे, फ़िर वह उन्हें पुकारेंगे, मगर वह उन्हें कोई जवाब न देंगे, और हम उनके दरम्यान हलाकत गाह बना देंगे।

(53) और मुजरिम आग देखेंगे तो यक़ीन करेंगे कि बेशक वह उसमें गिरने वाले हैं

और वह उससे बचने की राह न पाएँगे।

(54) और हमने इस कुरआन में लोगों के लिए फ़ेर फ़ेर कर हर क़िस्म की मिसाल बयान की है और इन्सान तमाम चीज़ों से ज़्यादा झगड़ालू है।

(55) और लोगों को ईमान लाने से नहीं रोका और (न) अपने रब से इस्तिग्फ़ार करने से जबकि उनके पास हिदायत आ गई मगर सिर्फ इस बात ने कि (वह चाहते हैं) उन्हें पहले लोगों का सा मामला पेश आए या उन के सामने अज़ाब आ जाए।

(56) और हम रसूलों को सिर्फ इसलिए भेजते हैं कि वह (लोगों को) खुशखबरी दें और डराएं, और काफिर लोग तो बातिल (असत्य) तरीक़े से झगड़ते हैं ताकि उसके साथ हक़ को शिकस्त (पराजय) दें और उन्होंने हमारी आयतों को और जिस चीज़ से डराऐ गए उसको मज़ाक़ बना लिया।

(57) और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन है जिसे उसके रब की आयतों से नसीहत (उपदेश) की जाए तो वह उनसे मुहँ मोड़ ले और जो कुछ उसके दोनों हाथों ने आगे भेजा है उसे भूल जाए, बेशक हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिए हैं कि इस (कुरआन) को (न) समझे और उनके कानों में डाट हैं और अगर आप उन्हें हिदायत (मार्ग-दर्शन) की तरफ बुलाऐं तो वह कभी भी हिदायत न पाएँगे।

(58) और आप का रब खूब मग्फिरत (माफ करने) वाला और खूब रहमत (दया करने) वाला है। अगर वह उनके किये पर पकड़े तो उन पर जल्द अज़ाब ले आए बल्कि उनके लिए वादे का वक़्त मुक़र्रर है, वह उसके मुक़ाबिल कोई जाए पनाह (शरणगाह) नहीं पाएँगे।

(59) और यह बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक किया जब उन्होंने जुल्म किया और हम ने उनकी हलाकत के लिए एक वक़्त मुक़र्रर कर रखा था।

(60) और जब मूसा ने अपने जवान (यूशअ बिन नून) से कहाः मैं तो चलता ही रहूंगा, यहाँ तक कि ‘‘दो दरियाओं के संगम’’ पर पहुँच जाऊं, या मैं सालों चलता रहूँगा।

(61) फ़िर जब वह दोनों दरियाओं के संगम पर पहुँचे, तो वह अपनी मछली भूल गए और वह दरियां में सुरंग का रास्ता बना कर चली गई।

(62) फ़िर जब वह दोनों आगे चले तो उस (मूसा) ने अपने जवान से कहा कि हमारा नाश्ता हमारे पास लाओ। हमें हमारे सफर से थकावट हो गई है।

(63) वह बोलाः भला आपने देखा जब हम चट्टान के पास ठहरे थे तो मैं मछली भूल गया और मुझे शैतान ही ने भुलाया कि (आपसे) उसका ज़िक्र करूं और वह अजीब

तरह दरिया में रास्ता बना कर चली गई।

(64) मूसा ने कहाः यही तो है जो कुछ हम चाहते थे। फ़िर वह अपने क़दमों के निशानात देखते हुए लौटे।

(65) इसलिए उन दोनों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दे (खिज्र) को पाया, हमने उसे अपनी तरफ से रहमत दी थी और अपने पास से (खास) इल्म सिखाया था।

(66) मूसा ने उससे कहाः क्या (इस शर्त पर) मैं तेरी इत्तिबा कर सकता हूँ कि तू मुझे उसमें से सिखाए जो तुझे भलाई सिखाई गई है।

(67) वह बोलाः बेशक तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा।

(68) और जो चीज़ तेरे इल्म ही में नहीं तू उस पर सब्र कर भी कैसे कर सकता है?

(69) मूसा ने कहाः इन्शा अल्लाह तू मुझे साबिर (सब्र करने वाला) पाएगा और मैं किसी हुक्म में तेरी न फरमानी नहीं करूंगा।

(70) खिज्र ने कहाः फ़िर अगर तू मेरी इत्तेबा करना चाहता है तो किसी शै (चीज़) की बाबत मुझसे सवाल न करना यहाँ तक कि मैं खुद ही उसका ज़िक्र तुझसे करूं।

(71) फ़िर वह दोनों चले यहाँ तक कि जब वह कश्ती में सवार हुए तो खिज्र ने कश्ती के तख्ते तोड़ दिए, मूसा ने कहाः क्या तू उसे तोड़ रहा है ताकि इस कश्ती वालों को डुबो दे? तूने बड़ा होलनाक (खतरनाक) काम किया है।

(72) खिज्र ने कहाः क्या मैंने न कहा था कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र नहीं कर सकेगा?

(73) मूसा ने कहाः मेरी भूल चूक पर मुझे न पकड़, और मेरे मामले में मुझे मुश्किल में न डाल।

(74) फ़िर वह दोनों चले यहाँ तक कि उन्हे एक लड़का मिला तो खिज्र न उसे क़त्ल कर दिया, मूसा ने कहाः क्या तूने एक पाक नफ्स (बेगुनाह) को किसी जान के (क़सास के) बग़ेर क़त्ल कर दिया? यक़ीनन तूने तो बहुत बुरा काम किया!

(75) खिज्र ने कहाः क्या मैं ने तुझसे नहीं कहा था कि बिलाशुब्हे तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र नहीं कर सकेगा?

(76) मूसा ने कहाः अगर इसके बाद मैं तुझसे किसी चीज़ की बाबत (बारे में) सवाल करूं तो फ़िर मुझे हरगिज़ साथ न रखना, यक़ीनन मेरी तरफ से तुझे उज्र मिल गया है।

(77) फ़िर वह दोनों चले यहाँ तक कि एक गावं वालों के पास पहुँचे (और) उनसे खाना मांगा, तो उन्होंने उनकी मेहमानी करने से इन्कार कर दिया, फ़िर उन दोनों ने एक दीवार पाई जो गिरने ही वाली थी, तो खिज्र ने वह सीधी कर दी। मूसा ने कहाः अगर

तू चाहता तो उस पर उजरत ले लेता।

(78) खिज्र ने कहाः अब मेरे और तेरे दरम्यान जुदाई (अलगाव) है, अब मैं तुझे उन बातों की हक़ीक़त (वास्तविकता) बताऊंगा जिन तू सब्र न कर सका।

(79) वह कश्ती तो चन्द मिस्कीनों (गरीबों) की थी जो दरिया में चलाते थे, लिहाज़ा मैंने इरादा किया कि उसमें ऐब (खराबी) डाल दूं जबकि उनके आगे एक बादशाह था जो हर कश्ती छीन लेता था।

(80) और वह जो लड़का था, तो उसके माँ बाप मोमिन थे, लिहाज़ा हम डरे कि वह सरकशी और कुफ्र की वजह से उन्हें (गुनाह पर) मजबूर करेगा।

(81) इसलिए हमने चाहा कि उन दोनों का रब उन्हें ऐसा बदल दे जो उससे पाकिज़गी में बेहतर और मुहब्बत में क़रीब तर हो।

(82) और वह जो दीवार थी, तो वह उस शहर के दो यतीम लड़कों की थी, और उसके नीचे उनका खज़ाना था और उनका बाप नेक था, इसलिए तेरे रब ने चाहा कि वह दोनों यतीम अपनी जवानी को पहुँचें और तेरे रब की रहमत से अपना खज़ाना निकाल लें और मैंने यह अपनी राय से नहीं किया, यह उन बातों की हक़ीक़त है जिन पर तू सब्र न कर सका।

(83) और यह लोग आपसे जुलकरनैन के बारे में पूछते हैं। आप कह दीजिएः अन क़रीब (जल्द ही) मैं उसका कुछ ज़िक्र तुम्हारे सामने तिलावत करूंगा।

(84) बेशक हमने उसे ज़मीन में इक़्तिदार (प्रभुत्व) दिया था और उसे हर चीज़ के असबाब (साधन) दिए थे।

(85) इसलिए वह एक मुहिम के पीछे लगा।

(86) यहाँ तक कि वह गुरूबे आफताब (सूर्य अस्त) की जगह पहुँचा, उसने उसे पाया कि वह एक दलदली नदी में गुरूब (अस्त) हो रहा है और उसके पास एक क़ौम पाई। हमने कहाः ऐ जुलक़रनैन! (तुझे इख़्तियार है) चाहे तू उन्हें सज़ा दे, चाहे उनसे अच्छा बरताव करे।

(87) उसने कहाः वह जिसने जुल्म किया, तो उसे हम अन क़रीब सज़ा देगें फ़िर वह अपने रब की तरफ लौटाया जाएगा तो वह उसे सख़्त तरीन अज़ाब देगा।

(88) और वह जो ईमान लाया और नेक अमल किये तो उसके लिए (अल्लाह के यहाँ) अच्छी जज़ा (बदला) है और हम भी अपने काम में उसके लिए आसानी का हुक्म देंगे।

(89) फ़िर वह एक और मुहिम के पीछे लगा।

(90) यहाँ तक कि वह तुलू शम्स (सूर्य उदय) की जगह पहुँचा, उसने उसे पाया कि वह ऐसी क़ौम (समुदाय) पर तुलू (उदय) हो रहा है जिसके लिए हमने सूरज के दरम्यान कोई परदा नहीं रखा।

(91) वाक़या ऐसे ही है और उसके पास जो कुछ था उसकी तफ्सील हमारे इल्म में है।

(92) फ़िर वह एक और मुहिम के पीछे लगा।

(93) यहाँ तक कि जब वह दो दीवारों के दरम्यान (बीच में) पहुँचा तो उसने उन दोनों के उस तरफ एक क़ौम पाई कि लगता नहीं था कि वह कोई बात समझते हों।

(94) वह कहने लगेः ऐ जुल्क़रनैन! बेशक याजूज और माजूज इस सरज़मीन में फसाद मचाए रखते हैं तो क्या हम तेरे लिए कुछ माल इकट्ठा करें कि तू हमारे और उनके दरम्यान एक दिवार बना दे।

(95) उसने कहाः मेरे रब ने मुझे इसमें जो कुदरत दी है, बहुत बेहतर है, इसलिए तुम मेरी (आदमियों की) कुव्वत (शक्ति) से मदद करो तो मैं तुम्हारे और उनके दरम्यान (बीच में) एक मज़बूत बन्द बना दूंगा।

(96) तुम मुझे लौहे के तख्ते ला दो, यहाँ तक कि जब उसने दोनों पहाड़ों के दरम्यान खला (जगह) को बराबर कर दिया (तो) कहाः (अब इसमें) धोकों, यहाँ तक कि जब उसने उसे आग (जैसा) बना दिया तो कहाः मेरे पास पिघला तांबा लाओ कि उस पर डाल दूं।

(97) फ़िर वह (याजूज माजूज) इस्तेताअत (ताक़त) न रखते थे कि उस पर चढ़ जाए और ना यह ताक़त रखते थे कि उसमें सूराख कर दे।

(98) जुल्क़रनैन ने कहाः यह मेरे रब की रहमत है, फ़िर जब मेरे रब का वादा आ जाएगा तो वह उसे हमवार (ढा कर बराबर) कर देगा और मेरे रब का वादा हक़ है।

(99) और उस रोज़ हम उनके कुछ को छोड़ देंगे, वह एक दूसरे से गड्-मड् हो जाएँगे और सूर फूंका जाएगा फ़िर हम उन सब को जमा करेंगे।

(100) और उस दिन हम जहन्नम को काफिरों के रूबरू (सामने) ले आएँगे।

(101) जिनकी आँखें मेरी याद से परदे में थी और वह सुनने की ताक़त न रखते थे।

(102) क्या काफिरों ने यह समझ रखा है कि वह मुझे छोड़ कर मेरे बन्दों को हिमायती बना लेंगे? बेशक हमने काफिरों की मेहमानी के लिए जहन्नम तैयार किया है।

(103) कहेंः (अगर तुम कहो तो) क्या हम तुम्हें बताएें कि आमाल (कर्म) में सबसे ज़्यादा खसारे (घाटे) में कौन हैं?

(104) जिनकी सई (कोशिश) दुनियावी ज़िन्दगी में अकारत गई जबकि वह समझते हैं कि यक़ीनन वह अच्छे काम कर रहे हैं।

(105) वही हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों और उसकी मुलाक़ात का इन्कार किया, इसलिए उनके आमाल बरबाद हो गए, लिहाज़ा क़यामत के दिन हम उनके लिए कोई वज़न क़ायम नहीं करेंगे।

(106) यह है उनकी सज़ा जहन्नम, इसलिए कि उन्होंने कुफ्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों को मज़ाक बना लिया।

(107) बिलाशुब्ह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये उनकी मेहमानी के लिए बागाते फिरदौश हैं।

(108) वह उनमें हमेशा रहेंगे, वहाँ से जगह बदलना नहीं चाहँगे।

(109) कह दीजिएः अगर मेरे रब की बातों (के लिखने) के लिए समुद्र स्याही बन जाए तो मेरे रब की बातें खत्म होने से पहले समुद्र खत्म हो जाएगा अगरचे हम उसके मिस्ल (और समन्दर) मदद को ले आएं।

(110) (ऐ नबी!) कह दीजिएः मैं तो बस तुम्हारी तरह बशर (इन्सान) हूं, मेरी तरफ वह्यी आती है कि तुम्हारा इलाह सिर्फ एक इलाह है, फ़िर जो शख्स अपने रब से मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो, तो चाहिए कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे।

सूरह मरयम-19

(यह मक्की सूरत है इसमें 98 आयतें और 6 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) काफ हा या ऐन सॅाद।

(2) यह आपके रब की उस रहमत का ज़िक्र है जो उसने अपने बन्दे ज़करिया पर की थी।

(3) जब उसने अपने रब को आहिस्ता (ध ाीमी) आवाज़ से पुकारा था।

(4) ज़करिया ने कहाः ऐ मेरे रब! बेशक मेरी हड्डिया कमज़ोर हो गई और मेरा सर बूढ़ापे (की सफेदी) से भड़क उठा और ऐ मेरे रब! मैं तुझसे दुआ करके (कभी) महरूम (नाकाम) नहीं रहा।

(5) और बेशक मैं अपने पीछे अपने वारिसों से डरता हूँ और मेरी बीवी बांझ है, इसलिए तू मुझे अपने पास से एक वारिस अता कर।

(6) वह वारिस (उत्तराधिकारी) हो मेरा और वारिस हो आले याकूब का और ऐ मेरे रब! तू उसे पसंदीदा बना।

(7) (अल्लाह ने फरमायाः) ऐ ज़करिया! बेशक हम तुझे एक लड़के की बशारत (खुश खबरी) देते हैं, उसका नाम याह्या है, हमने

इससे पहले इसका कोई हमनाम नहीं बनाया।

(8) ज़करिया ने कहाः ऐ मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का कैसे हो सकता है जबकि मेरी बीवी बांझ है और मैं बूढ़ापे की आखरी हद को पहुँच गया हूँ?

(9) फरिश्ते ने कहाः ऐसा ही होगा, तेरे रब ने फरमायाः वह मुझ पर आसान है और मैंने इससे पहले तुझे पैदा किया जबकि तू कुछ भी नहीं था।

(10) ज़करिया ने कहाः ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी ठहरा, फरमायाः तेरी निशानी यह है कि तू भला चंगा होने के बावजूद तीन (दिन और तीन) रातें लोगों से कलाम न कर सकेगा।

(11) इसलिए वह हुजरे (कक्ष) से निकल कर अपनी क़ौम के पास आया तो उसने उन्हें इशारा किया कि तुम सुबह शाम तस्बीह बयान करो।

(12) (अल्लाह ने फरमायाः) ऐ याह्या! किताब को कुव्वत (मजबूती) से पकड़, और हमने उसे बचपन ही में कुव्वते फैसला दी।

(13) और अपनी तरफ से शफक्कत (दया) और पाकिज़गी (दी) और वह निहयात मुत्तक़ी था।

(14) और अपने वाल्दैन से नेकी करने वाला था और वह सरकश, नाफरमान नहीं था।

(15) और उस पर सलाम है जिस दिन वह पैदा हुआ, जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन वह दोबारा ज़िन्दा करके उठाया जाएगा।

(16) और इस किताब में मरयम का ज़िक्र कीजिए, जब वह अपने अहले खाना (परिवार) से अलग पूरब की तरफ मकान में जा बैठी।

(17) फ़िर उसने उनके आगे एक परदा तान लिया, तब हमने अपनी रूह (फरिश्ते) को उसके पास भेजा, तो वह उसके सामने कामिल (पूरा) आदमी बन कर आया।

(18) मरयम ने कहाः मैं तुझ से रहमान की पनाह (शरण) मांगती हूँ अगर तू डरने वाला है।

(19) फरिश्ते ने कहाः यक़ीनन मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूँ ताकि तुझे (हुक्मे इलाही से) एक पाकिज़ा लड़का अता करूं।

(20) मरयम ने कहाः मेरे लिए लड़का क्यों कर होगा जबकि मुझे किसी मर्द ने नहीं छुआ और न मैं बदकार हूँ।

(21) फरिश्ते ने कहाः इसी तरह होगा, तेरे रब ने कहा कि वह मुझ पर आसान है ताकि हम उसे लोगों के लिए निशानी और अपनी तरफ से रहमत बनाएं और यह अम्र (बात) तै शुदा है।

(22) बिला आखिर वह उसके साथ

हामला (गर्भवती) हो गई तो दूर के एक मकान में अगल जा बैठी।

(23) फ़िर दर्देज़ह (प्रसव-पीड़ा) उसे खजूर के एक तने की तरफ ले आया (तो) वह बोलीः ऐ काश! मैं इससे पहले मर जाती और भूली बिसरी हो जाती।

(24) फ़िर फरिश्ते न उसके नीचे से उसे आवाज़ दी कि ग़म न खा, तेरे रब ने तेरे नीचे एक चश्मा (जलस्रोत) जारी कर दिया है।

(25) और तू खजूर का तना अपनी तरफ हिला, वह तुझ पर ताज़ा पकी हुई खजूर गिराएगा।

(26) इसलिए तू खा और पी और (अपनी) आँखें ठन्डी कर, फ़िर अगर तू किसी आदमी को देख तो उससे कह देनाः बेशक मैंने रहमान के लिए रोज़े की नज़्र मानी है, लिहाज़ा आज मैं किसी इन्सान से हरगिज़ कलाम नहीं करूंगी।

(27) फ़िर वह उस (बच्चे) को उठाए अपनी क़ौम के पास आई, तो वह कहने लगेः ऐ मरयम! यक़ीनन तूने बहुत बुरा काम किया है।

(28) ऐ हारून की बहन! न तो तेरा बाप बुरा आदमी था और न तेरी माँ ही बदकार थी।

(29) इसलिए मरयम ने उस (बच्चे) की तरफ इशारा किया, तो वह कहने लगेः हम (इससे) कैसे बात करें जो गौद में बच्चा है?

(30) बच्चा बोल उठाः बिलाशुब्ह मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया है।

(31) और उसने मुझे बरकत वाला बनाया जहाँ भी मैं हूँ और मुझे नमाज़ और ज़कात की पाबन्दी का हुक्म दिया है जब तक मैं ज़िन्दा रहूं।

(32) और अपनी वल्दा (माँ) से नेकी करने वाला बनाया है और उसने मुझे सरकश (और) बदबख़्त नहीं बनाया।

(33) और सलाम है मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन मैं ज़िन्दा (करके) उठाया जाऊँगा।

(34) यह है ईसा इब्ने मरयम, (यही है) हक़ की बात जिसमें वह लोग शक करते हैं।

(35) अल्लाह के लायक़ ही नहीं कि वह औलाद रखे, वह पाक है, जब वह किसी काम का फैसला कर लेता है तो उसके लिए बस यही कहता है कि हो जा, तो वह हो जाता है।

(36) और बेशक अल्लह ही मेरा रब है और तुम्हारा रब है, लिहाज़ा तुम उसी की इबादत करो, यही है सीधी राह।

(37) फ़िर (मुख़्तलिफ) गिरोहों ने आपस में इख़्तिलाफ (विभेद) किया, इसलिए उनके लिए तबाही है जिन्होंने यौमे अज़ीम (बड़े

दिन) की पैशी का इन्कार किया।

(38) वह लोग क्या ही खूब सुनते और देखते होंगे जिस दिन वह हमारे पास आएँगे! लेकिन आज यह ज़ालिम खुली गुमराही में हैं।

(39) और आप उन्हें पछतावे के दिन से डराऐं जब हर मामले का फैसला किया जाएगा जबकि (आज) वह गफलत में हैं, और वह ईमान नहीं लाते।

(40) बिलाशुब्ह हम ही ज़मीन के और तमाम ज़मीन वालों के वारिस होंगे और हमारी ही तरफ वह लौटाए जाएँगे।

(41) और किताब में इब्राहीम का ज़िक्र कीजिए, बेशक वह निहायत सच्चा नबी था।

(42) जब उसने अपने बाप से कहाः ऐ मेरे बाप! तू उसकी इबादत क्यों करता हे जो न सुने, न देखे और न तेरे कुछ काम आए?

(43) ऐ मेरे बाप! बेशक मेरे पास वह इल्म आया है जो तेरे पास नहीं आया लिहाज़ा तू मेरी इत्तेबा कर, मैं तुझे सीधी राह दिखाऊँगा।

(44) ऐ मेरे बाप! तू शैतान की इबादत न कर, बिलाशुब्ह शैतान रहमान का सख्त न फरमान है।

(45) ऐ अब्बा जान! बेशक मैं इस बात से डरता हूँ कि तुझे रहमान की तरफ से अज़ाब आ पकड़े, फ़िर तू शैतान का साथी हो जाए।

(46) आज़र कहने लगाः ऐ इब्राहीम! क्या तू मेरे मअबूदों से मुँह फेरे हुए है? अगर तू इससे न रूका तो मैं तुझे ज़रूर रजम (पथराव) कर दूंगा और तू लम्बा अर्सा (वक्त) मुझसे दूर चला जा।

(47) इब्राहीम ने कहाः तुझ पर सलामती हो, अनक़रीब मैं तेरे लिए अपने रब से माफी की दुआ करूंगा, बेशक वह मुझ पर बहुत मेहरबान है।

(48) और मैं किनारा कश होता हूँ तुम से और उनसे जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो और मैं तो अपने रब ही को पुकारता हूँ, उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकार कर महरूम (नाकाम) न रहूंगा।

(49) फ़िर जब उसने किनारा किया उनसे और जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजते थे तो हमने उसे इस्हाक़ और याकूब बख़्शे और हमने हर एक को नबी बनाया।

(50) और हमने उन्हें अपनी रहमत बख़्शी और उनके लिए सच्चाई का बोल (ज़िक्रे खैर) बुलन्द किया।

(51) और किताब में मूसा का ज़िक्र कीजिए, बिलाशुब्ह वह चुना हुआ और रसूल नबी था।

(52) और हमने उसे तूर की दांये जानिब से पुकारा और उसे राज़ व नियाज़ के लिए

क़रीब किया।

(53) और उसे अपनी रहमत से उसका भाई हारून नबी बख़्शा।

(54) और किताब में इस्माईल का ज़िक्र कीजिए, बेशक वह वादे का सच्चा और रसूल नबी था।

(55) और वह अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था और वह अपने रब के यहाँ पसंदिदा था।

(56) और किताब में इदरीस का ज़िक्र कीजिए, बेशक वह निहायत सच्चा नबी था।

(57) और हमने उसे एक बुलन्द मुक़ाम पर उठा लिया।

(58) यह वह (अम्बिया) हैं जिन पर अल्लाह ने इनआम किया जो औलादे आदम में से हैं और उन लोगों (की नस्ल) में से जिन्हें हमने नूह के साथ (कश्ती में) सवार किया था, और इब्राहीम और इस्राईल की औलाद से, और उन लोगों में से जिन्हें हमने हिदायत (मार्ग-दर्शन) दी और चुन लिया, जब उन पर रहमान की आयतें तिलावत की जातीं तो वह सज्दे में गिर पड़ते और रोते।

(59) फ़िर उनके बाद नखलफ (न लायक़ उनके) जाँनशीन (उत्तराधिकारी) हुए, वह नमाज़ बरबाद करते और ख़्वाहिशात की पैरवी करते इसलिए जल्द ही (आगे) वह हलाकत और गुमराही के अन्जाम से दो चार होंगे।

(60) मगर जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किये, तो वह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उन पर कोई ज़ुल्म न होगा।

(61) (यानी) हमेशा बागात, जिन का रहमान ने अपने बन्दों के साथ ग़ैब से वादा किया है। बेशक उसका वादा (हर सूरत) आने वाला है।

(62) वह उसमें कोई लग्व (बेकार) बात नहीं सुनेंगे सिवाए सलाम के और वहाँ उनके लिए सुबह व शाम रिज़्क़ होगा।

(63) यही वह जन्नत है जिसका वारिस (उत्तराधिकारी) हम अपने बन्दों में से उसे बनाएँगे जो मुत्तक़ी होगा।

(64) और हम (फरिश्ते) आप के रब के हुक्म नाज़िल से होते हैं, उसी के लिए है जो कुछ हमारे आगे है और जो कुछ हमारे पीछे है और जो कुछ उसके दरम्यान है और आपका रब भूलने वाला नहीं।

(65) वही रब है आसमानों का, ज़मीन का और जो कुछ उनके दरम्यान है (सबका), इसलिए आप उसकी इबादत करें और उसकी इबादत पर क़ायम रहें, क्या आप उसका कोई हमनाम जानते हैं?

(66) और इन्सान कहता हैः क्या जब मैं मर जाऊँगा फ़िर मुझे ज़िन्दा निकाला

जाएगा?

(67) क्या इन्सान (इतना ही) याद नहीं रखता हमने इससे पहले उसे तख़्लीक़ (पैदा) किया जबकि वह कुछ भी न था।

(68) आपके रब की क़सम! हम ज़रूर उन (कुफ्फार) को शैतानों के हमराह इकट्ठा करेंगे फ़िर हम ज़रूर उन्हें घुटनों के बल जहन्नम के गिर्द (चारो तरफ) हाज़िर करेंगे।

(69) फ़िर हम ज़रूर हर गिरोह से उसे खीचं कर अलग करेंगे जो उनमें से रहमान के खिलाफ सरकशी में सख़्त तर था।

(70) फ़िर हमें उनका खूब इल्म है जो जहन्नम में जाने के ज़्यादा लायक़ हैं।

(71) और तुममें से कोई भी ऐसा नहीं जो जहन्नम पर वारिद (गुजरने वाला) न हो, यह आपके रब के ज़िम्मे यक़ीनी और तै शुदा बात है।

(72) फ़िर हम मुत्तक़ी लोगों को निजात देंगे, और हम ज़ालिमों को छोड़ देंगे उसमें घुटने के बल गिरे हुए।

(73) और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें तिलावत की जाती हैं तो काफिर मोमिनों से कहते हैंः दोनों गिरोह में से किसका मुक़ाम बेहतर और किसकी मज्लिस ज़्यादा अच्छी है?

(74) और उनसे पहले हमने कितनी ही क़ौमे हलाक कर दीं, वह उनसे सामानों और नाम व नमूद में कहीं बढ़ कर थी।

(75) कह दीजिएः जो शख़्स गुमराही में है, उसे रहमान लम्बी ढील देता है, यहाँ तक कि जब वह देखेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है, या अज़ाब या क़यामत, तो वह ज़रूर जान लेंगे कौन दर्जे में बदतरीन और फौजी लिहाज़ से कमज़ोर तर है।

(76) और राह हिदायात पर चलने वालों को अल्लाह मज़ीद हिदायत (मार्ग-दर्शन) अता करता है और बाक़ी रहने वाली नेकियां ही आपके रब के यहाँ सवाब और अन्जाम के एतबार से बहुत बेहतर हैं।

(77) क्या फ़िर आपने उसे देखा जिसने हमारी आयतों का इन्कार किया और कहाः मुझे ज़रूर माल और औलाद मिलेगी?

(78) क्या उसने ग़ैब की इतला (खबर) पाई या रहमान के यहाँ कोई वादा ले लिया है?

(79) हरगिज़ नहीं! हम ज़रूर लिखेंगे जो कुछ वह कहता है और हम उसके लिए अज़ाब बहुत बढ़ा देंगे।

(80) और उन चीज़ों के हम वारिस होंगे जो कुछ वह कहता है और वह हमारे पास अकेला आएगा।

(81) और उन्होंने अल्लाह के सिवा मअ़बूद बना लिए हैं ताकि वह उनके मददगार हों।

(82) हरगिज़ नहीं! अनक़रीब (जल्द) वह खुद उनकी इबादत का इन्कार करेंगे और उनके मुखालिफ हो जाएँगे।

(83) क्या आपने देखा नहीं कि बेशक हमने काफिरों पर शैतान छोड़ रखे हैं वह जो उन्हें खूब खूब (गुनाहों पर) उभारते हैं?

(84) इसलिए आप उनकी बाबत जल्दी न करें, हम तो बस उनके दिन गिन रहे हैं।

(85) जिस दिन हम मुत्तक़ियों को रहमान की तरफ (बतौर) मेहमान इकट्ठा कर लाएँगे।

(86) और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ प्यासे (ही) हांक ले जाएँगे।

(87) वह (उस रोज़) सिफारिश का इख्तियार नहीं रखेंगे सिवाए उसके जिसने रहमान से अहद (वादा) लिया।

(88) और उन्होंने कहाः रहमान औलाद रखता है।

(89) अलबत्ता तुम एक बहुत भारी बात (गुनाह) तक आ पहुँचे हो।

(90) क़रीब हैं कि आसमान इस (बात) से फट पड़ें, और ज़मीन शक (टुकड़े) हो जाए और पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो कर गिर पड़ें।

(91) इस (बात) पर कि उन्होंने रहमान के लिए औलाद का दावा किया।

(92) और रहमान के लायक़ नहीं कि वह किस को औलाद बनाए।

(93) आसमान और ज़मीन में जो कोई भी हैं वह सब रहमान के गुलाम बन कर आएँगे।

(94) यक़ीनन उस (रहमान) ने उनका शुमार कर रखा है और उन्हें खूब गिन रखा है।

(95) और वह सब क़यामत के दिन अल्लाह के पास तन्हा तन्हा आएँगे।

(96) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, यक़ीनन रहमान उनके लिए मुहब्बत पैदा कर देगा।

(97) यक़ीनन हमने तो इस (कुरआन) को आपकी ज़बान (अरबी) में खूब आसान कर दिया ताकि आप उससे मुत्तक़ीन को बशारत (खुशखबरी) दें और उसके साथ झगड़ालू क़ौम (समुदाय) को डराएं।

(98) और उनसे पहले हमने कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं, क्या आप उनमें से किसी एक को महसूस करते हैं या उनकी कोई भनक (अहट) भी सुनते हैं?

सूरह ताहा-20

(यह मक्की सूरत है इसमें 135 आयतें और 8 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ताहा।

(2) हमने आप पर कुरआन इसलिए

नाज़िल नहीं किया कि आप मशक़्क़त (परेशानी) में पड़ें।

(3) मगर (यह तो) उस शख़्स के लिए नसीहत (उपदेश) है जो अल्लाह से डरे।

(4) उस ज़ात की तरफ से नाज़िल हुआ है जिसने ज़मीन और ऊँचे आसमानों को पैदा किया।

(5) वह रहमान है, अर्श पर बुलंद हुआ।

(6) उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और जो कुछ इन दोनों के दरम्यान है और जो गिली मिट्टी के नीचे है।

(7) और अगर आप बुलन्द आवाज़ से बात करें तो बिलाशुब्ह वह हर राज़ और उससे भी छिपी हुई बात को जानता है।

(8) (वही) अल्लाह है, उसके सिवा कोई इलाह नहीं, उसी के हैं सब अच्छे नाम।

(9) और क्या आप तक मूसा की खबर पहुँची है?

(10) जब उसने (तूर पर) आग देखी तो अपने घर वालों से कहाः (यहाँ) ठहरो, बेशक मैंने आग देखी है शायद मैं उसमें से तुम्हारे लिए कोई अंगारा ले आऊं या आग के पास कोई रहबर पाऊं।

(11) इसलिए जब मूसा आग के पास पहुँचा तो आवाज़ दी गईः ऐ मूसा!

(12) बेशक मैं तेरा रब हूँ, लिहाज़ा तू अपने जूते उतार दे, बिलाशुब्ह तू मुक़द्दस (पवित्र) वादी (घाटी) तूवा में है।

(13) और मैंने तुझे चुन लिया है, लिहाज़ा जो वह्यी की जाती है उसे ग़ौर से सुन।

(14) बेशक मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं, इसलिए तू मेरी ही इबादत कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर।

(15) बेशक क़यामत आने वाली है, मैं उसका वक़्त छुपा कर रखना चाहता हूँ ताकि हर नफ़्स को (उसकी) कोशिश का बदला दिया जाए।

(16) लिहाज़ा इस (फिक्रे आख़िरत) से तुझे वह शख़्स रोकने न पाए जो उस पर ईमान नहीं रखता, और अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करता है, वरना तू (भी) हलाक हो जाएगा।

(17) और ऐ मूसा! यह तेरे दांये हाथ में क्या है?

(18) उसने कहाः यह मेरी लाठी है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते छाड़ता हूँ और इसमें मेरे लिए और भी काम हैं।

(19) अल्लाह ने फरमायाः ऐ मूसा! इसे फेंक दे।

(20) फिर जब उसने उसे फेंका, तब वह दौड़ता हुआ सांप बन गया।

(21) फरमायाः इसे पकड़ ले और मत डर,

हम उसे उसकी पहली हालत में ले आएँगे।

(22) और अपना हाथ अपनी बगल से लगा, वह बग़ेर किसी ऐब (बीमारी) के चमकता हुआ सफेद निकलेगा, (यह) दूसरी निशानी है।

(23) ताकि हम तुझे अपनी कुछ बड़ी बड़ी निशानियां दिखाएं।

(24) तू फ़िरऔन की तरफ जा, बेशक वह सरकश हो गया है।

(25) मूसा ने कहाः मेरे रब! मेरे लिए मेरा सीना खोल दे।

(26) और मेरे लिए मेरा काम आसान कर दे।

(27) और मेरी ज़बान की गिरोह खोल दे।

(28) ताकि वह मेरी बात समझ सके।

(29) और मेरे लिए मेरे कुनबे (घर वालों) में से एक वज़ीर (सहयोगी) बना दे।

(30) (यानी) मेरे भाई हारून को।

(31) उसके साथ मेरी कमर मज़बूत कर दे।

(32) और उसे मेरे काम (नबूवत) में शरीक कर दे।

(33) ताकि हम तेरी बहुत तस्बीह करें।

(34) और हम तुझे बहुत याद करें।

(35) बेशक तू हमें खूब देखता है।

(36) अल्लाह ने फरमायाः ऐ मूसा! जो कुछ तूने मांगा, तुझे दिया जाता है।

(37) हम तुझ पर एक बार और भी अहसान (उपकार) कर चुके हैं।

(38) जब हमने तेरी माँ को वह इलहाम किया था जो (अब) वह्यी की जाती है।

(39) यह कि तू उस (मूसा) को सन्दूक़ में डाल, फ़िर सन्दूक़ दरिया में डाल दे फ़िर दरिया उसे साहिल (किनारे) पर ला डालेगा मेरा और उसका दुश्मन उठा लेगा और मैंने अपनी तरफ से तुझ पर मुहब्बत डाल दी और यह (इसलिए) कि मेरी आँखों के सामने तेरी परवरिश हो।

(40) जब तेरी बहन चल रही थी और कह रही थीः क्या मैं तुम्हें उसका बताऊँ जो उसकी किफालत (पालन-पोषण) करे? फ़िर हमने तुझे तेरी माँ के पास लौटा दिया ताकि उसकी आँख ठन्डी रह और वह ग़म ना खाए, और तूने एक शख़्स को क़त्ल किया तो हमने तुझे उस ग़म से निजात दी और हमने तुझे खूब आज़माया, फ़िर तू मदयन वालों में कई साल ठहरा रहा, फ़िर ऐ मूसा! तू तक़दीर इलाही के मुताबिक़ यहाँ आया।

(41) और मैंने तुझे अपनी ज़ात के लिए खास कर लिया।

(42) तू और तेरा भाई मेरी निशानियां ले कर जाओ, तुम दोनों मेरी याद में सुस्ती न करना।

(43) तुम दोनों फ़िरऔन की तरफ जाओ, बिलाशुब्ह वह सरकश हो गया है।

(44) इसलिए तुम दोनों उससे नर्म बात कहना, शायद कि वह नसीहत (उपदेश) पकड़े या डरे।

(45) उन दोनों ने कहाः ऐ हमारे रब! बेशक हम तो डरते हैं कि वह हम पर ज़्यादती करे या सरकशी करे।

(46) अल्लाह ने फरमायाः तुम दोनों मत डरो, बिलाशुब्ह मैं तुम दोनों के साथ हूँ, मैं सुनता और देखता हूँ।

(47) लिहाज़ा तुम दोनों उसके पास जाओ और कहोः बेशक हम तेरे रब के रसूल हैं, इसलिए तू बनी इस्राईल को हमारे साथ भेज और उन्हें मत सता, यक़ीनन हम तेरे पास तेरे रब की तरफ से निशानी लाए हैं और जो हिदायत (मार्ग-दर्शन) का इत्तेबा करे उस पर सलामती है।

(48) बिलाशुब्ह हमारी तरफ वह्यी की गई है कि जो (हक़ को) झुठलाए और मुँह फ़ेर ले यक़ीनन उस पर अज़ाब है।

(49) फ़िरऔन ने कहाः ऐ मूसा! तुम दोनों का रब कौन है?

(50) मूसा ने कहाः हमारा रब वह है जिसने हर शै (चीज़) को उसकी शक्ल व सूरत दी, फ़िर हिदायत दी।

(51) फ़िरऔन ने कहाः अगली उम्मतों का क्या हाल है?

(52) मूसा ने कहाः उनका इल्म मेरे रब के पास एक किताब (लोहे महफ़ूज़) में है, मेरा रब न भटकता है और न भूलता है।

(53) वह ज़ात जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया और तुम्हारे चलने के लिए उसमें रास्ते बनाए और आसमान से पानी नाज़िल किया फ़िर हमने उसके ज़रिये से कई क़िस्म की मुख़्तलिफ नबातात (वनस्पती) निकालें।

(54) तुम खाओ और अपने मवेशियों को चराओ, बेशक उसमें अक़्ल मन्दों के लिए बहुत सी निशानियां हैं।

(55) हमने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और उसी में तुम्हें लौटाएगें और उसी में से तुम्हें एक बार फ़िर निकालेगें।

(56) और हमने उस फ़िरऔन को अपनी सब निशानियां दिखा दीं फ़िर भी उसने झुठलाया और इन्कार किया।

(57) कहने लगाः ऐ मूसा! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि अपने जादू से हमें हमारी सरज़मीन (देश) से निकाल दे?

(58) इसलिए हम तेरे (मुक़ाबिल) उस जैसा ही जादू लाऐंगे, लिहाज़ा तू हमारे और अपने दरम्यान एक वादा ठहरा, न हम उसकी खिलाफ वरज़ी करें और न तू, एक हमवार (समतल) मैदान में।

(59) मूसा ने कहाः तुम्हारा वादा ज़ीनत (जश्न) का दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े इकट्ठा किये जाएं।

(60) इसलिए फ़िरऔन (महल में) लौटा और अपनी सारी चालें जमा कीं, फ़िर (मैदान में) आ गया।

(61) मूसा ने उनसे कहाः तुम्हारे लिए हलाकत हो! तुम अल्लाह पर झूठ न गढ़ो, वरना वह अज़ाब से तुम्हें तबाह कर देगा और जिस ने झूठ गढ़ा यक़ीनन वह नाकाम रहा।

(62) फ़िर उन्होंने आपस में अपने मामले में आपस में इख्तिलाफ किया और राज़दारी से मश्वरा किया।

(63) वह बोलेः बिलाशुब्ह यह दोनों जादूगर हैं, यह चाहते हैं कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुम्हें तुम्हारी सरज़मीन (देश) से निकाल दें और तुम्हारा उम्दा निज़ाम (बेहतरीन तरीक़ा) तबाह बरबाद कर दें।

(64) लिहाज़ा अपनी तमाम तदबीरें (उपाय) पुख्ता कर लो फ़िर सफ बान्ध कर आ जाओ और जो (आज) ग़ालिब रहा वह कामयाब ठहरा।

(65) (उन जादूगरों ने) कहाः ऐ मूसा! या तो तू डाल या हम ही हों पहले डालने वाले?

(66) मूसा ने कहाः बल्कि तुम्ही डालो, फ़िर यकायक उनके जादू की वजह से मूसा को यह ख्याल गुज़रने लगा कि उनकी रस्सियां और उनकी लाठियां बिलशुब्ह दौड़ रही हैं।

(67) फ़िर मूसा ने अपने दिल में ख़ौफ महसूस किया।

(68) हमने कहाः ख़ौफ न खाओ, बेशक तू ही ग़ालिब रहेगा।

(69) और जो (लाठी) तेरे दांये हाथ में है उसे डाल दे, वह निगल जाएगी उसको जो कुछ उन्होंने बनाया है, बस उन्होंने तो जादूगर का फरेब तराशा (स्वांगरचा) है, और जादूगर जहाँ से भी आए कामयाब नहीं होता।

(70) इसलिए जादूगर बेइख्तियार सज्दे में गिर गए और कहने लगेः हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाए।

(71) फ़िरऔन ने कहाः क्या मेरी इजाज़त से पहले ही तुम उस पर ईमान लाए हो? यक़ीनन यह तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है, लिहाज़ा मैं तुम्हारे हाथ और पांव मुखालिफ सिम्तो (विपरीत दिशाओं) से ज़रूर कटवा दूंगा और तुम्हें खजूर के तनों पर ज़रूर सूली दूंगा और तुम्हें ज़रूर मालूम हो जाएगा कि हम में से किसका अज़ाब ज़्यादा सख्त और देर पा (स्थायी) है।

(72) वह कहने लगेः हम तुझे कभी तरजीह (प्रधानता) नहीं देंगे उन वाज़ेह दलाईल (स्पष्ट प्रमाण) पर जो हमारे पास आ चुके और न उस ज़ात पर जिसने हमें पैदा किया, लिहाज़ा तू जो कर सकता है कर

गुज़र, बस तू तो इस दुनयावी ज़िन्दगी ही में हुक्म चला सकता है।

(73) यक़ीनन हम अपने रब पर ईमान लाए हैं ताकि वह बख़्श (क्षमा कर) दे हमारी ख़ताएं (पापो को) और वह जादू भी जिस पर तूने हमें मजबूर किया और अल्लाह बहुत बेहतर और बहुत बाक़ी रहने वाला है।

(74) बेशक जो शख़्स अपने रब के पास मुजरिम (बन कर) हाज़िर होगा, तो यक़ीनन उसके लिए जहन्नम है जिसमें न तो वह मरेगा और न जियेगा।

(75) और जो मोमिन (बन कर) हाज़िर होगा जबकि उसने नेक अमल किये हों तो उन्हीं लोगों के दर्जे बुलन्द हैं।

(76) (यानी) सदा रहने वाले बाग़ात, जिनके नीचे नहरें जारी हैं, वह उनमें हमेशा रहेंगे और यही है जज़ा (बदला) उसकी जो (गुनाहों से) पाक हुआ।

(77) और बिलाशुब्ह हमने मूसा की तरफ वह्यी की कि रात को मेरे बन्दे निकाल ले चल फ़िर उनके लिए समुद्र में ख़ुश्क (सूखा) रास्ता बना जबकि तुझे न तो पकड़े जाने का ख़ौफ (डर) होगा और न (डुबने का) डर।

(78) फ़िर फिरऔन ने अपने लश्कर के साथ उनका पीछा किया तो उन्हें पानी ने घेर लिया जैसे घेरने का हक़ था।

(79) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और (सीधी) राह न दिखाई।

(80) ऐ बनी इस्राईल! हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से निजात दी, और हमने तुमसे तूर की दांये जानिब (तौरात देने) का वादा किया और हमने तुम पर मन्न व सलवा नाज़िल किया।

(81) और हमने तुम्हें जिन पाकीज़ा (पवित्र) चीज़ों से रिज़्क़ दिया है उनसे खाओ और तुम उसमें सरकशी न करो कि तुम पर मेरा ग़ज़ब उतरे और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा तो यक़ीनन वह तबाह हो गया।

(82) और बेशक मैं बहुत बख़्शने (क्षमा करने) वाला हूँ उसके लिए जो तौबा करे, ईमान लाए और नेक अमल करे, फ़िर हिदायत (मार्ग-दर्शन) पर रहे।

(83) और ऐ मूसा! कौन सी चीज़ तुझे तेरी क़ौम से जल्दी ले आई थी?

(84) उसने कहाः वह लोग मेरे पीछे हैं और मेरे रब! मैंने तेरी तरफ जल्दी की ताकि तू राज़ी हो जाए।

(85) अल्लाह ने फरमायाः इसलिए बेशक हमने तेरे बाद तेरी क़ौम को एक आज़माईश में डाल दिया और उन्हें सामरी ने गुमराह कर दिया।

(86) फ़िर मूसा अपनी क़ौम की तरफ ग़ज़बनाक और ग़मग़ीन लौटा (और) कहने लगाः ऐ मेरी क़ौम! क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें

अच्छा वादा न दिया था? क्या फ़िर तुम पर अहद (वादा) तवील (लम्बा) हो गया था या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का गुस्सा उतरे? तुमने मेरे वादे की खिलाफ वरजी की।

(87) वह कहने लगाः हमने तेरे वादे की अपने इख़्तियार से खिलाफ वरज़ी नहीं की लेकिन हमसे फ़िरऔन की क़ौम के ज़ेवरात का बोझा उठवाया गया था, तो हमने वह (आग में) डाल दिए और उसी तरह सामरी ने भी (ज़ेवर) डाला।

(88) फ़िर उसने उनके लिए एक बछड़ा, एक धड़ बना डाला, जिसकी आवाज़ गाय की सी थी, फ़िर वह (लोग) कहने लगेः यही है तुम्हारा इलाह और मूसा का इलाह, वह तो भूल गया है।

(89) भला वह देखते नहीं थे कि बिलाशुब्ह वह (बछड़ा) उनकी किसी बात का जवाब नहीं देता और न उनके किसी नफे व नुक्सान का कोई इख़्तियार रखता?

(90) और बिलाशुब्ह इससे पहले हारून ने उनसे कहा थाः ऐ मेरी क़ौम! यक़ीनन उसके साथ आज़माए गए हो और यक़ीनन तुम्हारा रब रहमान है, लिहाज़ा तुम मेरी इत्तेबा करो और मेरे हुक्म की इताअत करो।

(91) वह कहने लगेः हम तो हमेशा उसकी पूजा करते रहेंगे यहाँ तक कि मूसा हमारे पास लौट आए।

(92) मूसा ने कहाः ऐ हारून! तुझे किस चीज़ ने रोके रखा जब तूने उन्हें देखा कि वह भटक गए हैं।

(93) कि तूने मेरी इत्तेबा न किया? क्या तूने मेरे हुक्म की नाफरमानी की?

(94) हारून ने कहाः ऐ मेरी माँ के बेटे! मेरी दाढ़ी और मेरा सर न पकड़, मैं डरा कि तू कहेगाः तूने बनी इस्राईल के दरम्यान तफरक़ा (मतभेद) डाल दिया और मेरी बात याद न रखी।

(95) मूसा ने कहाः ऐ सामरी! तेरा क्या मामला है?

(96) उसने कहाः मैंने वह चीज़ देखी जो उन लोगों ने न देखी, इसलिए मैंने (मिट्टी की) एक मुट्ठी जिब्राईल (के घोड़े) के नक्शे क़दम से भर ली और वह उसमें डाल दी और मेरे नफ़्स (दिल) ने मुझे यही तरग़ीब (सीख) दी।

(97) मूसा ने कहाः तू दफा हो जा, अब यक़ीनन तेरे लिए ज़िन्दगी भर यही है कि तू कहता रहेः (मुझे) ना छूना और बेशक तेरे लिए एक वादा है, वह हरगिज़ तुझ से नहीं टल सकता और तू अपने मअ़बूद की तरफ देख, जिसकी पूजा में तू लगा रहा, हम उसे जला देंगे, फ़िर उड़ा कर समुद्र में बिखेर देंगे।

(98) बस तुम्हारा मअ़बूद अल्लाह है

जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, उसने हर चीज़ को अपने इल्म से घेर रखा है।

(99) इसी तरह हम आपको हाल सुनाते हैं जो पहले गुज़रे और यक़ीनन हमने आपको अपने पास से ज़िक्र (कुरआन) दिया।

(100) जिसने इससे मुहँ मोड़ा, तो यक़ीनन वह क़यामत के दिन एक बोझ उठाए हुए होगा।

(101) वह उस (तकलीफ) में हमेशा रहेंगे और क़यामत के दिन बोझ उठाना उनके लिए बुरा होगा।

(102) जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी और हम उस दिन मुजरिम इकट्ठा करेंगे (जिनकी) आँखें नीली (हो रही) होंगी।

(103) वह आपस में चुपके चुपके कहते होंगेः तुम (दुनिया में) नहीं ठहरे मगर सिर्फ दस दिन।

(104) हम को खूब मालूम है जो वह कहेंगे जबकि उनमें बेहतरीन राय वाला कहेगा तुम सिर्फ एक दिन ठहरे थे।

(105) और वह आपसे पहाड़ो की बाबत सवाल करते हैं, तो आप कह दीजिए मेरा रब उन्हें उड़ा कर बिखेर देगा।

(106) फ़िर वह इस (ज़मीन) को चटियल मैदान बना कर छोड़ेगा।

(107) आप उसमें न कोई कजी (मोड़) देखेंगे और न टीला।

(108) उस दिन सब लोग पुकारने वाले के पीछे चलेंगे, उसके लिए कोई कजी (टेढ़) न होगी और आवाज़ रहमान के सामने दब जाएंगी, फ़िर आप आहट के सिवा कुछ न सुनेंगे।

(109) उस दिन सिफारिश कोई नफा न देगी मगर सिर्फ उसकी जिसे रहमान इजाजत देगा और उसकी बात पसंद करेगा।

(110) जो कुछ उनके आगे और उनके पीछे है उसे अल्लाह ही जानता है, और वह (लोग) अपने इल्म से उसको घेर नहीं सकते।

(111) और सब चेहरे हय्यु (ज़िन्दा रहने वाले) व कय्यूम (क़ायम रहने वाले अल्लाह) के आगे झुक जाएंगे, और यक़ीनन वह नाकाम हुआ जिसने जुल्म (शिर्क) का बोझ उठाया।

(112) और जो शख़्स नेक अमल करे, जबकि वह मोमिन हो तो वह न जुल्म (बेइन्साफी) का ख़ौफ खाएगा और न हक़ में कमी का।

(113) और इसी तरह हमने इस कुरआन को अरबी में नाज़िल किया और उसमें बदल बदल कर सज़ा सुनाई ताकि वह तक़्वा अपनाएं या (कुरआन) उनके लिए नसीहत (उपदेश) पैदा करे।

(114) पस अल्लाह आला है, सच्चा बादशाह है, और (ऐ नबी!) आप कुरआन

(पढ़ने) में जल्दी न करें इसके पहले कि आपकी तरफ उसकी वह्यी पूरी की जाए और कहेंः ऐ मेरे रब! मुझे इल्म में ज़्यादा कर।

(115) और अलबत्ता हमने इससे पहले आदम से अहद (वादा) लिया था, तो वह भूल गया और हमने उसमें अज़्म (मज़बूती) न पाया।

(116) और जब हमने फ़रिश्तों से कहाः आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया सिवाये इब्लीस के, उसने इन्कार किया।

(117) फ़िर हमने कहाः ऐ आदम! बेशक यह (इब्लीस) तेरा और तेरी बीवी का दुश्मन है, कहीं वह तुम दोनों को जन्नत से न निकलवा दे कि तू परेशानी में पड़ जाए।

(118) बेशक तेरे लिए (यहाँ एहतमाम) है कि तू उसमें न भूखा होगा और न नंगा।

(119) और बेशक तू न प्यासा होगा और न तुझे धूप लगेगी।

(120) फ़िर शैतान ने उसकी तरफ वस्वसा डाला, उसने कहाः ऐ आदम! क्या मैं तुझे सदा जीने का दरख़्त और बादशाही न बताऊं जो पुरानी न हो?

(121) इसलिए उन दोनों ने उस दरख़्त का फल खाया तो उनकी शर्मगाहें (गुप्ताँग) उन पर ज़ाहिर हो गईं और वह दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते चिपाकने लगे और आदम ने अपने रब की नाफरमानी की तो वह भटक गया।

(122) फ़िर उसे उसके रब ने चुन लिया, उसकी तौबा क़बूल की और (उसे) हिदायत दी।

(123) अल्लाह ने फरमायाः तुम दोनों यहाँ से इकट्ठा उतर जाओ, तुम एक दूसरे के दुश्मन होंगे। फ़िर जब तुम्हारे पास मेरी हिदायत (मार्ग-दर्शन) पहुँचे तो जिसने मेरी हिदायत की पैरवी की, तो वह न गुमराह होगा और न मशक्क़त (कठिनाई) में पड़ेगा।

(124) और जिसने मेरी याद से मुँह मोड़ा तो बिलाशुब्ह उसकी ज़िन्दगी तंग होगी और क़यामत के दिन हम उसे अन्धा करके उठाएँगे।

(125) वह कहेगाः ऐ मेरे रब! तूने मुझे अन्धा क्यों उठाया? जबकि मैं तो (दुनिया में) देखने वाला था।

(126) इरशाद होगाः इसी तरह तेरे पास हमारी आयतें आईं, तो तूने वह भुला दीं और इसी तरह आज तुझे भी भुला दिया जाएगा।

(127) और जो हद से बढ़ गया और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाया, हम उसको इसी तरह सज़ा देंगे और यक़ीनन आख़िरत का अज़ाब शदीद तर और बहुत बाक़ी रहने वाला है।

(128) क्या फ़िर (उस चीज़ ने) उनकी

रहनुमाई नहीं की कि हमने उनसे पहले कितनी ही क़ौमें हलाक कर दीं? जिनकी बस्तियों में यह लोग चलते फिरते हैं, बेशक इसमें यक़ीनन अक़्ल वालों के लिए निशानियां हैं।

(129) और अगर आपके रब की तरफ से एक बात पहले ही से (तै) न हो चुकी होती और मियाद मुक़र्रर (निश्चित अवधि) भी (न होती) तो (उन्हें अज़ाब) चिमट के रहता।

(130) लिहाज़ा जो कुछ वह कहते हैं आप उस पर सब्र कीजिए और तुलू शम्स (सुर्य उदय) से पहले और गुरूब (अस्त) से पहले अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ तस्बीह कीजिए और रात की कुछ घड़ियों में भी तस्बीह कीजिए और दिन के (दोनों) हिस्सों में भी ताकि आप राज़ी हो जाएं।

(131) और (ऐ नबी!) उन चीज़ों की तरफ आप अपनी निगाहें उठा कर भी न देखें जो चीज़ ज़िन्दगानी दुनिया की आराईश (चमक- दमक) की हमने उनमें से मुख़्तलिफ (कई) क़िस्म के लोगों को दे रखी हैं ताकि हम उन्हें उनके ज़रिये से आज़माएं और आपके रब का रिज़्क़ बेहतर और बहुत बाक़ी रहने वाला है।

(132) और अपने अहलो अयाल (घर वालों) को नमाज़ का हुक्म दीजिए और (खुद भी) उस पर क़ायम रहें, हम आपसे रिज़्क़ नहीं मांगते, हम ही आपको रिज़्क़ देते हैं, और बेहतरीन अन्जाम तो (अहले) तक़्वा के लिए है।

(133) और उन्होंने कहाः वह हमारे पास अपने रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं लाता? क्या उनके पास पहले सहीफों (आसमानी किताबों) में वाज़ेह दलील नहीं आ चुकी?

(134) और अगर बिलाशुब्ह हम उन्हें इस (रसूल) से पहले किसी अज़ाब (यातना) से हलाक (विनष्ट) कर देते तो वह लोग कहतेः ऐ हमारे रब! तूने हमारी तरफ कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम ज़लील (अपमानित) व रूस्वा होने से पहले तेरी आयतों की पैरवी करते।

(135) आप कह दीएिजेः हर एक (अन्जाम कार का) इन्तिज़ार करे, लिहाज़ा तुम भी इन्तिज़ार करो, तुम जल्द ही जान लोगे कि राहे रास्त वाले कौन हैं और हिदायत याफ्ता कौन हैं?

सूरह अम्बिया-21

(यह मक्की सूरत है इसमें 112 आयतें और 7 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) लोगों के हिसाब का वक़्त क़रीब आ गया है, जबकि वह गफलत में मुहँ मोड़े हैं।

(2) उनके रब की तरफ से उनके पास जो भी नई नसीहत (उपदेश) आती है, उसे वह खेलते कुदते (हँसी मज़ाक़ ही में) सुनते हैं।

(3) उनके दिल ग़ाफिल हैं, और उन ज़ालिमों ने चुपके चुपके सरगोशियाँ (काना फूसी) कीं कि यह (रसूल) तुम जैसा ही बशर (इंसान) ही तो है, क्या फ़िर तुम देखते भालते (उसके) जादू में फंसते हो?

(4) (रसूल ने) कहाः मेरा रब आसमान और ज़मीन में हर बात जानता है, और वह सब कुछ सुनता जानता है।

(5) बल्कि उन्होंने कहाः यह उड़ते ख्वाब हैं, बल्कि उसने झूठ गढ़ लिया है, बल्कि वह शायर है, वरना उसे हमारे पास कोई ऐसी निशानी लानी चाहिए जैसे पहले रसूल भेजे गए थे।

(6) उनसे पहले कोई बस्ती भी, जिसे हमने हलाक (विनष्ट) किया, ईमान नहीं लाई थी, क्या फ़िर यह ईमान लाएँगे?

(7) (ऐ नबीं!) आपसे पहले हमने जितने रसूल भेजे, वह सब मर्द ही थे, उनकी तरफ हम वह्यी करते थे, इसलिए अगर तुम खुद नहीं जानते तो अहले ज़िक्र (अहले किताब) से पूछ लो।

(8) और हमने उन (नबियों) के ऐसे जिस्म नहीं बनाऐ थे कि वह खाना न खाते हों, और न वह हमेशा रहने वाले थे।

(9) फ़िर हमने उन (रसूलों) से वादा सच्चा कर दिखाया, इसलिए हमने उनको और जिसे हमने चाहा निजात दी, और हम ने असराफ (हद को पार) करने वालों को हलाक कर दिया।

(10) बिलाशुब्ह हमने तुम्हारी तरफ एक किताब नाज़िल की है, उसमें तुम्हारा ही ज़िक्र है, क्या फ़िर तुम नहीं समझते?

(11) और हमने कितनी ही बस्तियां तहस नहस कर दीं जो ज़ालिम थी, और उन के बाद दूसरी क़ौमें उठा खड़ी (पैदा) कीं।

(12) फ़िर जब उन्होंने हमारे अज़ाब की आहट महसूस की तो वह लोग वहाँ से भागने लगे।

(13) (उनसे कहा गयाः) मत भागो, और लौट जाओ जहाँ तुम्हें ऐश व इशरत दिया गया था और अपने मकानों की तरफ ताकि तुम से सवाल किया जाए।

(14) वह कहने लगेः हाय हमारी कम बख़्ती! बेशक हम ही ज़ालिम थे।

(15) फ़िर यही रही उनकी पुकार, यहाँ तक कि हमने उन्हें कटी फसल और बुझी राख जैसा बना दिया।

(16) और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच में है, खेलते हुए (बे मक़सद) पैदा नहीं किया।

(17) अगर हम (यूंही) तफरीह (तमाशे)

का सामान बनाना चाहते और अगर हमने यही कुछ करना होता तो अपने पास ही से यही कुछ कर लेते।

(18) बल्कि हम हक़ को बातिल पर फेंक मारते हैं, तो वह उसका सर फोड़ देता है, फ़िर यकायक वह (बातिल) मलयामेट हो जाता है और तुम्हारे लिए उन बातों की वजह से हलाकत है जो तुम बनाते हो।

(19) और उसी के लिए हैं जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और जो (फरिश्ते) उनके पास हैं वह उसकी इबादत करने से घमंड नहीं करते और न वह थकते (उकताते) हैं।

(20) वह रात दिन उसकी तस्बीह करते हैं, सुस्त नहीं पड़ते।

(21) क्या उन्होंने ज़मीन में से ऐसे मअ़बूद बना लिए हैं जो (मुर्दों को) ज़िन्दा कर देंगे?

(22) अगर उन दोनों (ज़मीन व आसमान) में अल्लाह के सिवा कई और मअ़बूद होते तो यह दोनों ही तबाह हो जाते, इसलिए अल्लाह, अर्श (आसमान) का रब, उन बातों से पाक है जो वह (मुश्रिक) बयान करते हैं।

(23) वह जो कुछ करता है उसकी बाबत उससे सवाल नहीं किया जा सकता, जबकि उन (लोगों) से पूछताछ होगी।

(24) क्या उन्होंने अल्लाह के सिवा और मअ़बूद बना लिए हैं? कह दीजिए: तुम अपनी दलील लाओ, यह (तौहीद ही) मेरे साथियों का ज़िक्र है और मुझ से पहलों का भी ज़िक्र था, बल्कि उनमें से अक्सर हक़ का इल्म नहीं रखते, लिहाज़ा वह (उससे) मुँह फ़ेर लेते हैं।

(25) और आपसे पहले हमने जो भी रसूल भेजा, उसकी तरफ यही वह्यी करते रहे कि बेशक मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं, लिहाज़ा तुम मेरी ही इबादत करो।

(26) और उन्होंने कहाः रहमान ने औलाद बनाई है। वह (उससे) पाक है, बल्कि वह (फरिश्ते) तो (अल्लाह के) इज्ज़तदार बन्दे हैं।

(27) वह बात करने में उससे सबक़त (पहल) नहीं करते, और वह उसी के हुक्म पर अमल करते हैं।

(28) वह जानता है जो कुछ उनके आगे और पीछे है, और वह सिर्फ उसकी सिफारिश करेंगे जिसके लिए अल्लाह पसंद करेगा, और वह उसी के ख़ौफ से डरने वाले हैं।

(29) और उनमें से जो यह कहे कि बेशक अल्लाह के सिवा मैं भी मअ़बूद हूँ, तो उसे हम जहन्नम की सज़ा देंगे, हम ज़ालिमों को इसी तरह सज़ा देते हैं।

(30) क्या काफिरों ने नहीं देखा (ग़ौर किया) कि बेशक आसमान और ज़मीन आपस में मिले हुए थे, फ़िर हमने उन दोनों को अलग अलग कर दिया? और हमने पानी

से हर ज़िन्दा शै (चीज़) बनाई, क्या फ़िर वह ईमान नहीं लाते?

(31) और हमने ज़मीन में पहाड़ बनाए ताकि वह उनके साथ झुकने (न) पाए, और हमने उसमें खुली राहें रखीं ताकि वह (लोग) राह पाएं।

(32) और हमने आसमान को महफ़ूज़ (सुरक्षित) छत बनाया जबकि वह उस (आसमान) की निशानियों से मुँह फ़ेर लेते हैं।

(33) और वही (अल्लाह) है जिसने रात और दिन और सूरज और चाँद को पैदा किया, सब अपने अपने मदार (कक्ष) में तैरते फिरते हैं।

(34) और (ऐ नबी!) हमने आपसे पहले भी किसी बशर (इन्सान) का हमेशा की ज़िन्दगी नहीं दी, फ़िर अगर आप मर जाएं तो क्या वह हमेशा रहने वाले हैं?

(35) हर नफ्स मौत को चखने वाला है। और हम तुम्हें परखने के लिए बुराई और भलाई से आज़माते हैं, और आखिरकार तुम्हें हमारी ही तरफ पलटना है।

(36) और जब काफिर आप को देखते हैं तो वह आपको मज़ाक़ ही का निशाना बनाते हैं (कहते हैंः) क्या यही है जो तुम्हारे मअबूदों का ज़िक्र (बुराई से) करता है? जबकि वह खुद रहमान के ज़िक्र के मुन्कर हैं।

(37) इन्सान जल्दबाज़ी (के खमीर) से पैदा किया गया है, मैं जल्द तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा, लिहाज़ा तुम मुझसे जल्द का मुतालबा न करो।

(38) और वह (मुसलमानों से) कहते हैंः अगर तुम सच्चे हो तो यह (अज़ाब या क़यामत का) वादा कब (पूरा) होगा?

(39) काश! काफिर उस वक़्त को जान लें जब वह अपने चेहरों से आग नहीं हटा सकेंगे और न अपनी पुश्तों से, और न उनकी मदद की जाएगी।

(40) बल्कि वह (क़यामत) अचानक ही उन्हें आ लेगी, वह उन के होश खो देगी, फ़िर वह उसे टाल न सकेंगे और न उन्हें मुहलत ही दी जाएगी।

(41) और (ऐ नबी!) बिलाशुब्ह आप से पहले भी रसूलों से मज़ाक़ किया गया, फ़िर उनमें से जिन लोगों ने मज़ाक़ उड़ाया उन्हें उस (अज़ाब) ने घेर लिया जिसका वह मज़ाक़ उड़ाते थे।

(42) कह दीजिएः रात और दिन में कौन तुम्हारी निगेहबानी (रक्षा) करता है रहमान (के अज़ाब) से? बल्कि वह अपने रब के ज़िक्र से मुँह मोड़ते हैं।

(43) क्या हमारे सिवा उनके कोई और मअ़बूद (पूज्य) हैं जो उन्हें बचाते हों? वह तो खुद अपनी मदद भी नहीं कर सकते,

और न वह हम (हमारे अज़ाब) ही से महफ़ूज़ (सुरक्षित) हैं।

(44) बल्कि हमने उन्हें और उनके बाप दादा को फायदा दिया यहाँ तक कि उन पर तवील (लम्बी) मुद्दत (अवधि) गुज़र गई, क्या फ़िर वह नहीं देखते कि बेशक हम ज़मीन को उसके अतराफ (किनारों) से घटाते आते हैं (कुफ्र सिमट रहा), क्या फ़िर भी वही ग़ालिब आने वाले हैं?

(45) कह दीजिएः बस मैं तो तुम्हें वह्यी के साथ डराता हूँ, और बहरे पुकार नहीं सुनते जब उन्हें डराया जाए।

(46) और यक़ीनन अगर उन्हें आप के रब के अज़ाब का एक हल्का झोंका भी छु जाए तो वह ज़रूर कहेंगेः हाय हमारी कम बख्ती! बिलाशुब्ह हम ही ज़ालिम थे।

(47) और हम क़यामत के दिन इन्साफ के तराज़ू रखेंगे, फ़िर किसी शख़्स पर कुछ जुल्म न होगा, और अगर राई के दाने के बराबर भी अमल होगा तो हम उसे (तोलने के लिए) ले आएँगे, और हम हिसाब करने वाले काफी हैं।

(48) और यक़ीनन हमने मूसा और हारून को फुरक़ान (तौरात) और रोशनी इनायत (प्रदान) की और उन मुत्तक़ीन के लिए नसीहत (उपदेश) दी।

(49) जो अपने रब से बिन देखे डरते हैं और वह क़यामत से भी डरते रहते हैं।

(50) और यह (कुरआन) बा बरकत ज़िक्र है जिसे हमने नाज़िल किया है, क्या फ़िर तुम उसके मुन्कर हो?

(51) और बिलाशुब्ह इससे पहले हमने इब्राहीम को उसकी दानाई (समझ-बूझ) दी थी, और हम उसे खूब जानने वाले थे।

(52) जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहाः यह क्या हैं मूर्तियों जिन से तुम लगे बैठे हो?

(53) वह कहने लगेः हमने अपने बाप दादा को उन्हीं की इबादत करते हुए पाया।

(54) इब्राहीम ने कहाः बिलाशुब्ह तुम और तुम्हारे बाप दादा खुली गुमराही में पड़े हुए हो।

(55) उन्होंने कहाः क्या तू हमारे पास हक़ लाया है या तू खेल करने वालों में से हैं?

(56) इब्राहीम ने कहाः बल्कि तुम्हारा रब आसमानों और ज़मीन का रब है जिसने उन्हें पैदा किया है, और मैं उस पर तुम्हारे सामने गवाही देता हूँ।

(57) और अल्लाह की क़सम! तुम्हारे जाने के बाद मैं ज़रूर तुम्हारे बुतों (मुर्तियों) का इलाज करूंगा।

(58) इसलिए उसने उनके बड़े (बुत) को छोड़ कर बाक़ी सब को टुकड़े टुकड़े कर डाला

ताकि वह उसकी तरफ रूजू करें।

(59) वह कहने लगेः किसने हमारे मअबूदों का यह हाल किया है? बिलाशुब्ह वह ज़रूर ज़ालिमों में से है।

(60) (कुछ लोग) कहने लगेः हमने एक नौजवान को उन का ज़िक्र (चर्चा) करते सुना था, उसे इब्राहीम कहा जाता है।

(61) उन्होंने कहाः फ़िर तुम उसे लोगों के सामने ले आओ ताकि वह देखें।

(62) उन्होंने पूछाः ऐ इब्राहीम! क्या तूने हमारे मअबूदों का यह हाल किया है?

(63) इब्राहीम ने कहाः (नहीं) बल्कि यह काम उनके उस बड़े ने किया है, लिहाज़ा तुम उनसे पूछ लो अगर वह बोलते हैं।

(64) फ़िर उन्होंने अपने दिल में सोचा, तो (आपस में) कहने लगेः बेशक तुम ही ज़ालिम हो।

(65) फ़िर वह (शर्मिंदगी के मारे) अपने सर डाल कर औन्धे हो रहे है (और कहाः) बिलाशुब्ह तू जानता है कि यह (बुत) बोलते नहीं।

(66) इब्राहीम ने कहाः क्या फिर तुम अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करते हो जो तुम्हें कुछ नफा नहीं दे सकते न तुम्हें नुक्सान दे सकते हैं।

(67) अफसोस है तुम पर और उन पर जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, क्या फ़िर तुम अक़्ल नहीं रखते?

(68) उन्होंने कहाः अगर तुम ने कुछ करना है तो इब्राहीम को जला दो और अपने मअबूदों की मदद करो।

(69) हमने कहाः ऐ आग! तू इब्राहीम पर ठन्डी और सलामती वाली हो जा।

(70) और उन्होंने इब्राहीम का बुरा चाहा था, तो हमने उन्हें ही बहुत खसारे (नुक्सान) में डाल दिया।

(71) और हमने उसे (इब्राहीम) और लूत को उस ज़मीन की तरफ निजात दी जिसमें हमने अहले इल्म के लिए बरकत रखी थी।

(72) और हमने उसे इस्हाक बख़्शा, और याकूब मज़ीद (दिया), और हर एक को हमने सालेह (नेक) बनाया।

(73) और हमने उन्हें इमाम बनाया, वह हमारे हुक्म से (लोगों को) राहे हिदायत (मार्ग-दर्शन) बताते थे, और हमने उन पर नेकियां करने, नमाज़ क़ायम रखने और ज़कात देने की वह्यी की, और वह हमारे इबादत गुज़ार थे।

(74) और हमने लूत को हिकमत (नबूव्वत) और इल्म दिया, और हमने उसे उस बस्ती से निजात दी जिसके बाशिन्दे बदकारियां करते थे। बिलाशुब्ह वह बहुत बुरे और नाफरमान लोग थे।

(75) और हमने उस (लूत) को अपनी

रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह सालिहीन (अच्छे लोगों) में से थे।

(76) और नूह (को याद करें) जब उन (सब नबियों) से पहले उसने (हमें) पुकारा तो हमने उसकी दुआ क़बूल की, इसलिए हमने उसे और उसके अहल (मोमिनों) को बहुत बड़े ग़म से निजात दी।

(77) और हमने उस क़ौम के खिलाफ उसकी मदद की जिसने हमारी आयतों को झुठलाया था, बेशक वह बुरे लोग थे, लिहाज़ा हमने उन सब को डूबो दिया।

(78) और (याद करें) दाऊद और सुलेमान को जब वह दोनों उस खेती की बाबत फैसला कर रहे थे जिसे रात को एक क़ौम की बकरियां चर गई थी, और हम उनके फैसले के शाहिद (गवाह) थे।

(79) इसलिए हमने वह (फैसला) सुलेमान को समझा दिया, और हर एक को हमने हुक्म और इल्म दिया, और हमने दाऊद के साथ पहाड़ और परिन्दे ताबेअ (आधिन) किये थे, वह तस्बीह करते थे, और (यह) हम ही करने वाले थे।

(80) और हमने उसे तुम्हारे लिए ज़िरह बनानी सिखाई थी ताकि तुम्हारी लड़ाई (की तकलीफ) से तुम्हें बचाए, फ़िर क्या तुम शुक्र करने वाले हो?

(81) और (हमने) सुलेमान के लिए तन्दो तेज़ हवा ताबेअ (आधिन) कर दी, व उसके हुक्म से उस सरज़मीन की तरफ चलती थी जिसमें हमने बरकत दी थी, और हम हर चीज़ को खूब जानते हैं।

(82) और कुछ शैतान भी (ताबेअ किये थे) जो उसके लिए (समंदर में) गोता लगाते, और उसके अलावा भी कई क़ाम करते थे, और हम ही उनके निगराँ थे।

(83) और (याद करें) अय्यूब को जब उसने अपने रब को पुकारा कि बेशक मुझे तकलीफ पहुँची है, और तू रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम वाला है।

(84) इसलिए हमने उसकी दुआ क़बूल की और जो तकलीफ उसे थी उसको हमने दूर कर दिया और हमने उसे उसके अहल व अयाल भी दिए, और अपनी मेहरबानी से उन के साथ इतने ही और भी अता किये ताकि यह इबादत गुज़ारों के लिए नसीहत (उपदेश) हो।

(85) और इस्माईल, इदरिस और जुलकिफल को (याद करें) यह सब साबिर थे।

(86) और हमने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल किया, बेशक वह सालिहीन में से थे।

(87) और (याद करें) मछली वाले (यूनुस) को, जब वह (अपनी क़ौम से) नाराज़ हो कर चला गया था और उसने समझा था कि हम

उस पर गिरफ्त नहीं करेंगे, फ़िर उसने (हमें) अन्धेरियों में पुकारा कि तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं, तू पाक है बिलाशुब्ह में ही ज़ालिमों में से हूँ।

(88) इसलिए हमने उसकी दुआ क़बूल की, और हमने उसे ग़म से निजात दी, और हम इसी तरह मोमिनों को निजात देते हैं।

(89) और (याद करें) ज़करिया को, जब उसने अपने रब को पुकारा थाः ऐ मेरे रब! तू मुझे अकेला न छोड़, और तू ही बेहतरीन वारिस है।

(90) इसलिए हमने उसकी दुआ क़बूल की, और हमने उसे यह्या अता किया, और हमने उसके लिए उसकी बीवी को दुरूस्त कर दिया, बेशक वह (अम्बिया अलै.) नेकियो में जल्दी करते, और हमें रगबत (उम्मीद) और डर से पुकारते थे, और वह हमारे आगे झुक जाने वाले थे।

(91) और उस औरत को (याद करें) जिसने अपनी आबरू (सतित्व) की हिफाज़त (रक्षा) की थी, फ़िर हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी, और उसे और उसके बेटे (ईसा) को अहले आलम (पूरे संसार) के लिए अज़ीम निशानी बना दिया।

(92) बिलाशुब्ह यह तुम्हारा दीन एक ही दीन है, और मैं तुम्हारा रब हूँ, लिहाज़ा तुम मेरी ही इबादत करो।

(93) और उन्होंने अपना दीन बाहम (आपस में) टुकड़े टुकड़े कर डाला, (बिलाआखिर) सब हमारी ही तरफ लौटेंगे।

(94) इसलिए जो भी नेक अमल करे और वह मोमिन (भी) हो, तो उसकी कोशिक की नाक़द्री (उपेक्षा) न होगी और बेशक हम उस (के अमलों) को लिख रहे हैं।

(95) और हर बस्ती जिसे हमने हलाक किया, उस पर लाज़िम है कि उसके बाशिन्दे (दुनिया की तरफ) नहीं लौटेंगे।

(96) यहाँ तक कि जब याजूज और माजूज खोल दिए जाएँगे और वह हर बुलंदी से तेज़ी से (दौड़ते) आएँगे।

(97) और सच्चा वादा (क़यामत का दिन) क़रीब आ पहुँचेगा, तब काफिरों की आँखें फटी की फटी रह जाएँगी, (और वह कहेंगे:) हाय हमारी कमबख्ती! हम इससे ग़फलत में रहे बल्कि हम ही ज़ालिम थे।

(98) बेशक तुम और जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, जहन्नम का इंध ांन हैं, तुम उस पर वारिद (हाजिर) होने वाले हो।

(99) अगर यह (वाक़ई) मअ़बूद होते तो उस पर वारिद (हाजिर) न होते, और वह हमेशा जहन्नम में रहेंगे।

(100) उसमें उनके लिए चीखना चिल्लाना होगा, और वह उसमें कुछ न सुन

पाएँगे।

(101) बेशक जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से पहले ही नेकी और भलाई मुक़द्दर हो चुकी है, वह उससे दूर रखे जाएँगे।

(102) वह उसकी आहट (भी) न सुनेंगे, और वह अपनी दिल पसंद नेअमतों में हमेशा रहेंगे।

(103) बड़ी घबराहट उन्हें ग़मग़ीन नहीं करेगी, और फरिश्ते उनसे यह कह कर मिलेंगेः यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा किया जाता था।

(104) जिस दिन हम आसमान को लिखे हुए कागज़ की तरह लपेट देंगे, जिस तरह हमने तख़्लीक़ की इब्तिदा की थी उसी तरह हम फ़िर उसका इआदा (पुनरावृति) करेंगे। (यह) हमारे ज़िम्मे वादा है, बेशक हम उसे पूरा करने वाले हैं।

(105) और बिलाशुब्ह हम ज़बूर में नसीहत (उपदेश) के बाद यह लिख चुके हैं कि बेशक मेरे नेक बन्दे ज़मीन के वारिस होंगे।

(106) बिलाशुब्ह इसमें हमारी इबादत गुज़ार बन्दों के लिए बहुत बड़ी इत्तेला (खबर) है।

(107) और (ऐ नबी!) हमने आपको तमाम जहान वालों के लिए रहमत बना कर ही भेजा है।

(108) कह दीजिएः मेरी तरफ तो सिर्फ यह वह्यी की जाती है कि बस तुम्हारा मअ़बूद एक ही है, फ़िर क्या मुसलमान हो?

(109) फ़िर अगर वह मुँह मोड़े तो कह दीजिएः मैंने तुम्हें यक्सा तौर पर खबरदार कर दिया है, और मैं नहीं जानता कि जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है वह क़रीब है या दूर?

(110) बेशक अल्लाह पुकार कर कही बात को भी जानता है, और जो तुम छुपाते हो, उसको भी जानता है।

(111) और मैं नहीं जानता शायद यह (अज़ाब में देरी) तुम्हारे लिए आज़माईश और एक वक़्त तक तुम्हें मज़े कराना हो।

(112) (रसूल ने) कहाः ऐ मेरे रब! हक़ के साथ फैसला फरमा, और हमारा रब निहायत मेहरबान है, जो बातें तुम बयान करते हो उन पर वही मदद मांगे जाने के लायक़ है।

सूरह हज्ज-22

(यह मदनी सूरत है इसमें 78 आयतें और 10 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ऐ लोगो! अपने रब से डरो, बेशक क़यामत का ज़लज़ला (भूकम्प) बहुत बड़ी (हौलनाक) चीज़ है।

(2) जिस दिन तुम उसे देखोगे (यह हाल

होगा) कि हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे से ग़ाफिल हो जाएगी, और हर हमल (गर्भ) वाली अपना हमल डाल देगी, और आप लोगों को नशे में (मदहौश) देखेंगे, हालांकि वह नशे में नहीं होंगे, लेकिन अल्लाह का अज़ाब (बड़ा ही) शदीद होगा।

(3) और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के बारे में इल्म के बग़ेर बहस करते हैं, और वह हर सरकश शैतान की इत्तेबा करते हैं।

(4) उसकी बाबत लिख दिया गया है कि बेशक जो कोई उससे दोस्ती करेगा, तो यक़ीनन वह उसे गुमराह करेगा और दोज़ख के अज़ाब की तरफ ले जाएगा।

(5) ऐ लोगों! अगर तुम दोबारा जी उठने के बारे में शक में हो तो (तुम्हें इल्म होना चाहिए कि) बिलाशुब्ह हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फ़िर नुत्फे (वीर्य) से, फ़िर जमे हुए खून से, फ़िर गोश्त के लोथड़े से, जो वाज़ेह शक्ल वाला भी होता है और गैर वाज़ेह (अधूरी) शक्ल वाला भी, ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी कुदरत व हिकमत) वाज़ेह करें, और हम जिस (नुत्फे) के बारे में चाहें उसे मुक़र्ररा मुद्दत (नियत समय) तक रहमों (गर्भाशयों) में ठहराते हैं, फ़िर तुम्हें मुकम्मिल बच्चा बना कर निकालते हैं ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचों, और तुममें से कोई फौत (मृत) कर दिया जाता है, और तुममें से कोई नाकारा उम्र की तरफ लौटाया जाता है ताकि वह जानने के बाद कुछ भी न जाने, और आप देखते हैं कि ज़मीन बन्जर और खुश्क पड़ी थी, फ़िर जब हमने उस पर पानी नाज़िल किया तो उसने हरकत की और लहलहा उठी, और फूली, और उसने हर तरह की खूशनुमा नबातात (वनस्पति) निकाली।

(6) यह (सब कुछ) इसलिए कि बेशक अल्लाह ही हक़ है, और बेशक वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और बेशक वह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(7) और यह कि बिलाशुब्ह क़यामत आने वाली है, इसमें कोई शक नहीं, और बेशक अल्लाह उनको उठाएगा जो क़ब्रों में (पड़े) हैं।

(8) और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के बारे में बग़ेर इल्म, बग़ेर हिदायत (मार्ग-दर्शन) और बग़ेर रोशन किताब के बहस करते हैं।

(9) (घमंड की वजह से हक़ से) पहलू तही करते हुए, ताकि (लोगों को) अल्लाह की राह से बहकाऐ, उसके लिए दुनिया में रूस्वाई है और क़यामत के दिन हम उसे जलाने वाला अज़ाब चखाएँगे।

(10) (कह जाएगाः) यह उसका बदला है जो तेरे दोनों हाथों ने आगे भेजा, और बेशक अल्लाह अपने बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं है।

(11) और लोगों में से कोई अल्लाह की

इबादत करता है किनारे (शक) पर, फ़िर अगर उसे भलाई मिल गई तो उस पर मुतमईन (निश्चित) हो गया, और अगर उसे कोई आज़माईश आ पढ़ी तो अपने मुँह के बल उलटा फ़िर जाता है, उसने दुनिया और आख़िरत में नुक्सान उठाया, यही खुला नुक्सान है।

(12) वह अल्लाह के सिवा उसे पुकारता है जो उसे न नुक्सान पहुँचा सकता है और न उसे नफा दे सकता है, यही है दूर की गुमराही।

(13) वह उसे पुकारता है जिसका नुक्सान उसके नफा से ज़्यादा क़रीब है, बिलाशुब्ह बुरा है वह कारसाज़ और बिलाशुब्ह बुरा है साथी।

(14) बेशक अल्लाह उन लोगों को, जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, ऐसे बागों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं, बेशक अल्लाह जो चाहे वही करता है।

(15) जो यह समझता हो कि अल्लाह दुनिया और आख़िरत में हरगिज़ इस (रसूल) की मदद न करेगा, तो चाहिए कि वह आसमान तक रस्सी दराज़ (लम्बी) करे, फ़िर उसे काट डाले और देखे कि क्या उसकी तदबीर उसके गुस्से को दूर करती है।

(16) और इसी तरह हमने इस (कुरआन) को वाज़ेह आयतों (की शक्ल में) नाज़िल किया है और बेशक अल्लाह जिसे चाहे उसे हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है।

(17) बेशक जो लोग ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और साबी (बेदीन) और नसारा और मजूसी (आग के पुजारी) और वह लोग जिन्होंने अल्लाह के साथ शिर्क किया, बेशक अल्लाह उनके बीच क़यामत के दिन फैसला करेगा, यक़ीनन अल्लाह हर शै (चीज़) पर शाहिद (गवाह) है।

(18) क्या आपने नहीं देखा कि बेशक अल्लाह को सज्दा करता है जो कोई आसमान में और जो कोई ज़मीन में है, और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और दरख्त (पेड़) और जानवर और बहुत से लोग, और बहुत सो पर उसका अज़ाब साबित हो चुका है, और जिसे अल्लाह ज़लील करे, उसे कोई इज्ज़त देने वाला नहीं, बेशक अल्लाह जो चाहे करता है।

(19) यह दो गिरोह हैं जो अपने रब के बारे में झगड़े हैं, इसलिए जिन लोगों ने कुफ्र किया उनके लिए आग के कपड़े काटे जाएँगे, उनके सरों पर खोलता पानी उड़ेला जाएगा।

(20) इससे वह सब कुछ गल जाएगा जो उनके पेटों में है और (उनकी) खालें भी।

(21) और उन (को मारने) के लिए लोहे के हथोड़े होंगे।

(22) और जब भी मारे ग़म के उससे बाहर निकलने का इरादा करेंगे, फ़िर उसमें डाल दिए जाएँगे और (कहा जाएगाः) जलाने वाले अज़ाब का मज़ा चखो।

(23) बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे अल्लाह उनको (ऐसे) बागों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं, वहाँ उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे और वहाँ उनका लिबास रेशम का होगा।

(24) और (दुनिया में) उन्हें पाकीज़ा बात (तौहीद) की हिदायत (मार्ग-दर्शन) दी गई, और क़ाबिले तअरीफ (अल्लाह) की राह दिखाई गई।

(25) बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया और वह (लोगों को) अल्लाह की राह और मस्जिदे हराम से रोकते हैं, जिसे हमने सब लोगों के लिए बनाया है, उसमें मुक़ीम (ठहरने वाले) और बाहर से आने वाले बराबर हैं, और जो उसमें ज़ुल्म के साथ इलहाद (बुराई) का इरादा करे तो हम उसे निहायत दर्दनाक अज़ाब चखाएँगे।

(26) और (याद करें) जब हमने इब्राहीम के लिए बैतुल्लाह की जगह मुक़र्रर कर दी (और उसे हुक्म दिया) कि तू मेरे साथ किसी शै (चीज़) को शरीक न कर और तवाफ करने वालों और क़याम करने वालों और रूकू और सज्दे करने वालों के लिए मेरा घर पाक रख।

(27) और लोगों में हज्ज का ऐलान कर दे, वह तेरे पास हर दूर दराज़ रास्ते से पैदल (चल कर) और दुबले पतले ऊँटों पर (सवार हो कर) आएँगे।

(28) ताकि वह अपने मुनाफे के लिए हाज़िर हों, और मालूम दिनों में (ज़िब्ह के वक़्त) उन चौपाए मवेशियों पर अल्लाह का नाम पढ़ें, जो अल्लाह ने उन्हें दिए हैं, फ़िर तुम (खुद भी) उनका गोश्त खाओ और खिलाओ हर भूखे फक़ीर को।

(29) फ़िर चाहिए कि वह अपना मैल कुचैल दूर करें, और चाहिए कि अपनी नज़रें पूरी करें, और चाहिए कि क़दीम (प्राचीन) घर (बैतुल्लाह) का तवाफ करें।

(30) यही (हुक्म) है, और जो शख़्स अल्लाह की हुरमतों (मर्यादाओं) की तअज़ीम करे तो यह उसके रब के यहाँ उसके लिए बहुत बेहतर है और तुम्हारे लिए चौपाऐ हलाल किये गए हैं, सिवाए उनके जो तुम्हें सुनाए जा चुके हैं, लिहाज़ा तुम बुतों की गन्दगी से बचो, और झूठी बात से भी बचो।

(31) अल्लाह के लिए यक्सू हो जाओ न कि उसके साथ शिर्क करने वाले, और जो कोई अल्लाह के साथ शिर्क करे तो जैसे वह आसमान से गिर पड़ा, फ़िर उसे परिन्दा

उचक ले जाएं या हवा किसी दूर दराज़ जगह ले जा फेंके।

(32) यही (हुक्म) है, और जो शख़्स अल्लाह की (अज़मत की) निशानियों की तअज़ीम करे, तो बिलाशुब्ह यह दिलों के तक़्वा से है।

(33) तुम्हारे लिए उन (चौपायों) में एक मुक़र्रर वक़्त (नियत समय) तक मुनाफा (लाभ) हैं, फ़िर उनके हलाल (ज़िब्ह) होने की जगह क़दीम (पुराना) घर (बैतुल्लाह) के पास है।

(34) और हमने हर उम्मत (समुदाय) के लिए क़ुरबानी मुक़र्रर की ताकि वह (ज़िब्ह के वक़्त) उन चौपाऐ मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें जो अल्लाह ने उन्हें दिए, फ़िर (समझ लो कि) तुम्हारा मअ़बूद एक ही है, लिहाज़ा तुम उसकी फरमाबरदारी करो, और आजिज़ी (विनय) करने वालों को बशारत (ख़ुशख़बरी सुना) दीजिए।

(35) वह लोग कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उनके दिल डर जाते हैं, और जो साबिर (सब्र करने वाले) हैं उस (तकलीफ) पर जो उन्हें पहुँचे और जो नमाज़ क़ायम करने वाले हैं, और हम ने उन्हें जो रिज़्क़ दिया उसमें से वह खर्च करते हैं।

(36) और क़ुरबानी के ऊँट भी जिन्हें हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियां बनाया है, तुम्हारे लिए उनमें भलाई है, लिहाज़ा (नहर के वक़्त) जब वह पांव बान्ध ो खड़े हों तो तुम उन पर अल्लाह का नाम लो, फिर जब वह पहलू के बल गिर जाएं तो तुम उनका गोश्त खाओ और क़नाअत पसंद (जो मांगने से बचता हो) और सवाली मुहताज को भी खिलाओ, इसी तरह हमने चौपाऐ तुम्हारे ताबे कर दिए ताकि तुम शुक्र करो।

(37) अल्लाह तक उन (क़ुरबानी के जानवरों) का गोश्त हरगिज़ नहीं पहुँचता और न उनका खून लेकिन उस तक तुम्हारा तक़्वा पहुँचता है, इसी तरह उसने उन (चौपायों) को तुम्हारे ताबे कर दिया ताकि तुम अल्लाह की बड़ाई बयान करो कि उसने तुम्हें हिदायत (मार्ग-दर्शन) दी, और नेकी करने वालों को बशारत (ख़ुशख़बरी) दीजिए।

(38) यक़ीनन अल्लाह ईमान वालों का दिफा (सुरक्षा) करता है, बेशक अल्लाह हर खाईन (विश्वासघाती और) नाशुक्रे (कृतध न) को पसंद नहीं करता।

(39) जिन लोगों से लड़ाई की जाती है उन्हें (जिहाद की) इजाज़त दी गई, इसलिए कि उन पर जुल्म हुआ, और यक़ीनन अल्लाह उनकी मदद पर ज़रूर क़ादिर (सामर्थ्य रखता) है।

(40) वह लोग जिन्हें उनके घरों से नाहक़ निकाल दिया गया, सिर्फ इसलिए कि वह

कहते हैं: हमारा रब अल्लाह है, और अगर अल्लाह लोगों में एक दूसरे के ज़रिये से दिफा (बचाओ) न करता तो बिलाशुब्ह खानकाहें और गिरजे और यहूदी इबादत खाने और मस्जिदें ढाह दी जातीं जिनमें अल्लाह का नाम बकसरत ज़िक्र किया जाता है और अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो उस (के दीन) की मदद करेगा, बेशक अल्लाह बहुत कुव्वत वाला, ग़ालिब है।

(41) यह वह लोग हैं कि जिन्हें अगर हम ज़मीन में इक्तिदार (राज-सत्ता) बख्शें तो वह नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, और नेकी का हुक्म दें और बुराई से रोकें, और तमाम उमूर (मामलों) का अन्जाम (परणिम) अल्लाह के इख्तियार (अधिकार) में है।

(42) और (ऐ नबी!) अगर वह आपको झुठलाऐं तो बिलाशुब्ह उनसे पहले क़ौमे नूह और आद और समूद ने भी (अपने अपने अम्बिया को) झुठलाया।

(43) और क़ौमे इब्राहीम और क़ौमे लूत ने भी।

(44) और मदयन वालों ने भी, और मूसा को भी झुठलाया गया, (पहले) तो मैंने काफिरों को ढील दी, फ़िर मैंने उन्हें पकड़ लिया, इसलिए कैसा था मेरा अज़ाब!

(45) इसलिए कितनी ही बस्तियों हैं कि हमने उन्हें हलाक कर दिया जबकि वह ज़ालिम थे, तो वह गिरी पड़ी हैं अपनी छतों पर, और (कितने ही) कुंऐ बेकार, और (कितने ही) मज़बूत महल (वीरान) पड़े हुए हैं!

(46) क्या फ़िर वह ज़मीन में चले फिरे नहीं कि उनके दिल होते जिनसे वह समझते, या कान (होते) जिनसे वह सुनते, पस बेशक (उनकी) आँखें अन्धी नहीं होतीं लेकिन दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।

(47) और वह आपसे जल्द अज़ाब मांगते हैं, और अल्लाह अपने वादे के खिलाफ नहीं करेगा, और बिलाशुब्ह आपके रब के यहाँ एक दिन तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार बरस की तरह है।

(48) और कितनी ही बस्तियां हैं कि मैंने उन्हें ढील दी जबकि वह ज़ालिम थीं, फ़िर मैंने उन्हें पकड़ लिया, और मेरी ही तरफ (सबकी) वापसी है।

(49) कह दीजिए: ऐ लोगो! मैं तो बस तुम्हें खुल्लम खुला डराने वाला हूँ।

(50) इसलिए जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उनके लिए मग्फिरत और इज्ज़त का रिज़्क़ है।

(51) और जिन लोगों ने (हमें) आजिज़ करने के लिए हमारी आयतों को हराने की कोशिश की, वही दोज़ख वाले हैं।

(52) और हम ने आपसे पहले जो भी रसूल और नबी भेजा जब वह तिलावत

करता तो शैतान उसकी तिलावत में (अपनी तरफ से कुछ) डाल देता, फ़िर अल्लाह उसे मिटा देता जो (वस्वसा) डाला होता, फ़िर अल्लाह अपनी आयतों को मुहकम (पुख़्ता) कर देता, और अल्लाह अलीम (जानने वाला), हकीम (हिक्मत वाला) है।

(53) ताकि शैतान के डाले हुए वस्वसे को बीमार दिल और संगदिल लोगों के लिए फ़ित्ना बना दे और बेशक ज़ालिम तो दूर की मुख़ालफ़त में (पड़े) हैं।

(54) और ताकि वह लोग जान लें जिन्हें इल्म दिया गया है कि बेशक यह (कुरआन) आपके रब की तरफ से हक़ है, फ़िर वह उस पर ईमान लाएं तो उनके दिल इस (हक़) के आगे झुक जाएं, और बेशक अल्लाह ईमान लाने वाले लोगों को ज़रूर सिराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) की तरफ हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है।

(55) और काफिर इस कुरआन की बाबत हमेशा शक में रहेंगे यहाँ तक कि उन पर अचानक क़यामत आ जाए, या उन पर निहायत मनहूस दिन का अज़ाब आ जाए।

(56) उस दिन बादशाही अल्लाह ही की होगी, वह उनके बीच फैसला करेगा। इसलिए जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे वह नेअमतों वाले बागो में होंगे।

(57) और जिन्होंने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, तो वही हैं जिनके लिए रुस्वाकुन (अपमान-जनक) अज़ाब है।

(58) और जिन्होंने अल्लाह की राह में हिजरत की, फ़िर वह क़त्ल हुए या मर गए, तो अल्लाह ज़रूर उन्हें अच्छा रिज़्क़ देगा और बिलाशुब्ह अल्लाह ही बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।

(59) वह उन्हें उस मुक़ाम में ज़रूर दाख़िल करेगा जिसे वह पसंद करेंगे, और बेशक अल्लाह अलीम (जानने वाला), हलीम (अत्यंत सहनशील) है।

(60) (बात) यही है, और जो शख़्स वैसा ही बदला ले जैसा उसक साथ किया गया था, फ़िर अगर उस पर ज़्यादती की जाए, तो अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा, बेशक अल्लाह बहुत माफ करने वाला, निहायत मग्फिरत वाला है।

(61) यह इसलिए कि बेशक अल्लाह ही रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और बेशक अल्लाह समी (सुनने वाला), बसीर (देखने वाला) है।

(62) यह इसलिए कि बेशक अल्लाह ही हक़ है, और बिलाशुब्ह जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वही बातिल है, और बिलाशुब्ह अल्लाह ही बुलंदतर, बहुत बड़ा है।

(63) क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह

ने आसमान से (मुर्दा ज़मीन पर) पानी नाज़िल किया, फ़िर उससे ज़मीन सरसब्ज़ (हरी) हो जाती है। बेशक अल्लाह निहायत बारीक बीन, बाख़बर है।

(64) उसी के लिए है जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है, और बिलाशुब्ह अल्लाह ही बेनियाज़ और लायक़ हम्द है।

(65) क्या आपने नहीं देखा कि बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिए ताबे किया जो कुछ ज़मीन में है, और कश्तियां जो उसके हुक्म से समदंर में चलती हैं, और वह आसमान को थामे हुए है कि उसके इज़्न (हुक्म) के बग़ेर वह ज़मीन पर (न) गिरे। बेशक अल्लाह लोगों के लिए रऊफ़ुर्रहीम (शफ़क़त करने वाला रहम करने वाला) है।

(66) और वही है जिसने तुम्हें हयात दी, फ़िर वही तुम्हें मौत देगा, फ़िर हयात (जिन्दगी) देगा, बेशक इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है।

(67) हर उम्मत के लिए हमने तरीक़ा इबादत मुक़र्रर किया है, वह उस पर अमल पैरा हैं, लिहाज़ा उन्हें उस अम्र (बात) में आपसे झगड़ा नहीं करना चाहिए, और आप अपने रब की तरफ दअवत दें, यक़ीनन आप राह रास्त पर हैं।

(68) और अगर वह आपसे झगड़ा करें तो आप कह दीजिएः तुम जो अमल करते हो अल्लाह उसे खूब जानता है।

(69) अल्लाह ही क़यामत के दिन तुम्हारे बीच उन बातों का फैसला करेगा जिनमें तुम इख़्तिलाफ करते रहे हो।

(70) क्या आप नहीं जानते कि बेशक अल्लाह ही जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, बिलाशुब्ह यह (सब कुछ) किताब (लौहे महफ़ूज़) में (दर्ज) है, बेशक यह अल्लाह पर बिल्कुल आसान है।

(71) और वह (मुश्रिक) अल्लाह के सिवा उस चीज़ की इबादत करते हैं जिसकी अल्लाह ने कोई सनद नाज़िल नहीं की और जिसका उन्हें कुछ इल्म नहीं, और उन ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

(72) और जब उनको हमारी वाज़ेह आयतें सुनाई जाएं, तो आप उन काफिरों के चेहरों पर नागवारी पहचानते हैं, लगता है कि वह उन लोगों पर चढ़ दौड़ेंगे जो उन्हें हमारी आयतें पढ़ कर सुनाते हैं, कह दीजिएः क्या फ़िर मैं तुम्हें इससे बदतर की खबर दूं? (वह) आग है, जिसका अल्लाह ने काफिरों से वादा कर रखा है, और बुरी है वह लौटने की जगह।

(73) ऐ लोगों! एक मिसाल बयान की जाती है, लिहाज़ा तुम उसे ग़ौर से सुनो, बेशक जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वह एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकेंगे अगरचे वह (सारे भी) उसके लिए जमा हो

जाएं, और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वह उसे उससे छुड़ा नहीं सकते, तालिब व मतलूब (आबिद व मअ़बूद) सब कमज़ोर हैं।

(74) उन्होंने अल्लाह की क़दर नहीं की जिस तरह उसकी क़दर करने का हक़ है, बेशक अल्लाह बहुत क़वी (ताक़त वाला), निहायत ग़ालिब (प्रभावशाली) है।

(75) अल्लाह फरिश्तों में से कुछ पैगाम रसां (संदेश वाहक) चुन लेता है और लोगों में से (भी), यक़ीनन अल्लाह समी (सुनने वाले), बसीर (देखने वाला) है।

(76) वह जानता है जो कुछ उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे है, और अल्लाह ही की तरफ तमाम उमूर (काम) लौटाए जाते हैं।

(77) ऐ ईमान वालो! रूकू करो और सज्दा करो, और अपने रब की इबादत करो, और भलाई (के काम) करो ताकि तुम फलाह (कामयाबी) पाओ।

(78) और तुम अल्लाह की राह में जिहाद करो जैसा कि जिहाद करने का हक़ है, उसने तुम्हें (अपने दीन के लिए) चुन लिया है, और उसने दीन में तुम्हारे लिए कोई तंगी नहीं रखी, अपने बाप इब्राहीम की मिल्लत की इत्तेबा करो, अल्लाह ने पहले भी तुम्हारा नाम मुसलमान रखा था और इस (कुरआन) में भी (तुम्हारा यही नाम है), ताकि रसूल तुम पर शाहिद (गवाह) हो, और तुम लोगों पर शाहिद हो जाओ, लिहाज़ा तुम नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात (धर्मदान) दो, और अल्लाह (के दीन) को मज़बूती से थामो, वही तुम्हारा कारसाज़ है, और वह बेहतर कारसाज़ (कामों का बनाने वाला) और बेहतरीन मददगार है।

सूरह मुमिनून-23

(यह मक्की सूरत है इसमें 118 आयतें और 6 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) मोमिन यक़ीनन फलाह (कामयबी) पा गए।

(2) वह जो अपनी नमाज़ में आजिज़ी (नम्रता ग्रहण) करने वाले हैं।

(3) और वह लग्व (बुरी) बातों से मुँह मोड़ने वाले हैं।

(4) और वह ज़कात अदा करने वाले हैं।

(5) और वह जो अपनी शर्मगाहों (गुप्ताँग) की हिफाज़त करने वाले हैं।

(6) सिवाए अपनी बीवियों या उन (कनीज़ों) के जिनके मालिक हुए उनके दाँये हाथ, बिलाशुब्ह (उनकी बाबत) उन पर कोई मलामत (निंदा) नहीं।

(7) फ़िर जो शख़्स उनके अलावा (रास्ता) तलाश करे तो ऐसे लोग ही हद से गुज़रने वाले हैं।

(8) और जो अपनी अमानतों और अपने अहद (प्रतिज्ञा) की हिफाज़त करने वाले हैं।

(9) और वह जो अपनी नमाज़ों की हिफाज़त करते हैं।

(10) यही लोग वारिस (उत्तराधिकारी) हैं।

(11) जो फिरदौस के वारिस होंगे, वह उसमें हमेशा रहेंगे।

(12) और बिलाशुब्ह हमने इन्सान को मिट्टी के जौहर से पैदा किया है।

(13) फ़िर हमने उसे एक महफूज़ क़रार गाह (गर्भाशय) में नुत्फा बना कर रखा।

(14) फ़िर हमने नुत्फे (वीर्य) को खून की फुटकी बनाया, फ़िर हमने फुटकी को लौथड़े में ढाला, फ़िर हमने लौथड़े से हड्डीया बनाईं, फ़िर हमने हड्डीयों पर गौश्त चढ़ाया, फ़िर हमने उसे एक और ही सूरत में बना दिया, इसलिए बड़ा बाबरकत है अल्लाह जो सब से उम्दा (उत्तम) बनाने वाला है।

(15) फ़िर बेशक तुम इसके बाद ज़रूर मरने वाले हो।

(16) फ़िर यक़ीनन तुम क़यामत के दिन दोबारा उठाए जाओगे।

(17) और बिलाशुब्ह हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमान तह ब तह पैदा किये, और हम (अपनी) मख़्लूक़ (सृष्टि) से ग़ाफिल नहीं हैं।

(18) और हमने आसमान से एक (खास) अन्दाज़े से पानी नाज़िल किया, फ़िर हमने उसे ज़मीन में ठहराया, और बिलशुब्ह हम उसे ले जाने पर भी यक़ीनन क़ादिर हैं।

(19) फ़िर हमने उस (पानी) के ज़रिये से तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बागात उगाए, उनमें तुम्हारे लिए बहुत से (लज़ीज़) फल हैं, और उन्हीं से तुम खाते हो।

(20) और वह दरख़्त (ज़ैतून) जो तूरे-सीना (पहाड़) में पैदा होता है, वह खाने वालों के लिए तेल और सालन लिए उगता है।

(21) और बिलाशुब्ह तुम्हारे लिए चौपायों में ज़रूर (सामाने) इबरत है, हम तुम्हें उसमें पिलाते हैं जो उने पेटों में (दूध) है, और तुम्हारे लिए उनमें कसीर (बहुत से) मुनाफे हैं, और उनमें कुछ को तुम खाते हो।

(22) और उन (चौपायों) पर और कश्तियों पर तुम सवार भी किये जाते हो।

(23) और बिलाशुब्ह हमने नूह को उसकी क़ौम (समुदाय) की तरफ भेजा तो उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत (अराधना) करो, उसके सिवा तुम्हारे लिए कोई मअ़बूद (पूज्य) नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं?

(24) इसलिए उसकी क़ौम के सरदार, जिन्होंने कुफ्र किया, कहने लगेः यह तो तुम

जैसा ही बशर (इन्सान) है, वह चाहता है कि तुम पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) पाए, और अगर अल्लाह चाहता तो (आसमान से) फ़रिश्ते ज़रूर नाज़िल (अवतरित) करता, हमने अपने पहले बाप दादा में यह (तौहीद) नहीं सुनी।

(25) यह एक आदमी ही तो है जिसे जुनून (उन्माद) हो गया है, लिहाज़ा तुम एक वक़्त तक उसकी बाबत इन्तिज़ार करो।

(26) नूह ने कहाः ऐ मेरे रब! मेरी मदद कर कि उन्होंने मुझे झुठलाया।

(27) इसलिए हमने उसकी तरफ़ वह्यी की कि हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्यी के मुताबिक़ कश्ती बना, फ़िर जब हमारा हुक्म आ जाए और तनूर उबल पड़े तो उसमें हर क़िस्म के जोड़े से दो (नर और मादा) और अपने अहल व अयाल सवार कर ले, सिवाए उसके जिसके बारे में हमारी बात पहले ही आ चुकी, और तू मुझसे ज़ालिमों के बारे में बात न करना, बिलाशुब्ह वह गर्क़ कर दिए जाएँगे।

(28) फ़िर जब तू और तेरे साथी इत्मिनान से कश्ती पर सवार हो चुकें तो कहः तमाम हम्द (प्रशंसा) अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें ज़ालिम क़ौम से निजात दी।

(29) और कहः ऐ मेरे रब! तू मुझे बाबरकत उतारना, और तू सबसे बेहतर उतारने वाला है।

(30) बेशक इस वाक़िए में भी निशानियां हैं, और बिलाशुब्ह हम ही इम्तिहान (परिक्षा) लेने वाले हैं।

(31) फ़िर हमने उनके बाद एक दूसरी उम्मत पैदा की।

(32) इसलिए हमने उनमें उन्ही में से एक रसूल भेजा कि तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारे लिए कोई मअ़बूद नहीं, फ़िर क्या तुम डरते नहीं?

(33) और उसकी क़ौम के सरदारों ने कहा, जिन्होंने कुफ़्र किया और (हमारी) आख़िरत की मुलाक़ात झुठलाई, और हमने उन्हें दुनियवी ज़िन्दगी में खुशहाली दी थी, कि यह तुम जैसा एक बशर (इन्सान) ही तो है, वह उसमें से खाते जिसमें तुम खाते हो, और वह उसमें से पीता है जो तुम पीते हो।

(34) और अगर तुमने अपने ही जैसे बशर (इन्सान) की इताअत की तो बिलाशुब्ह तुम उस वक़्त नुक्सान पाने वाले हो गए।

(35) क्या वह तुम्हें वादा देते हैं कि बेशक जब तुम मर गए और मिट्टी और हड्डीयां (अस्थियां) हो गए तो बिलाशुब्ह तुम (ज़िन्दा) निकाले जाओगे?

(36) नामुम्किन है, नामुम्किन है वह जो तुम्हें वादा दिया जाता है!

(37) यह हमारी दुनियावी ज़िन्दगी ही तो (सब कुछ) है (जिसमें) हम मरते और ज़िन्दा

रहते हैं, और हम दोबारा उठाए जाने वाले नहीं।

(38) वह एक शख़्स ही तो है जिसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है, और हम उस पर ईमान लाने वाले नहीं।

(39) उस (रसूल) ने कहाः ऐ मेरे रब! तू मेरी मदद फरमा इसलिए कि उन्होंने मुझे झुठलाया।

(40) अल्लाह ने फरमायाः बिलाशुब्ह थोड़े दिनों में वह (अपने किये पर) ज़रूर नादिम (लज्जित) होंगे।

(41) फ़िर उन्हें इन्साफ के साथ चिंघाड ने आ पकड़ा, फ़िर हमने उन्हें कूड़ा-करकट बना कर रख दिया, इसलिए लअनत है ज़ालिम लोगों के लिए।

(42) फ़िर हमने उनके बाद दूसरी उम्मतें पैदा कीं।

(43) कोई भी उम्म्त अपने मुक़र्रर वक़्त से आगे नहीं निकल सकती और न वह पीछे रह सकती है।

(44) फ़िर हम लगातार अपने रसूल भेजते रहे, जब भी किसी उम्मत के पास रसूल आया तो उन्होंने उसको झुठलाया, फ़िर हम एक के पीछे दूसरी क़ौम को हलाक करते रहे, और हमने उन्हें अफसाने (कहानियां) बना दिया, इसलिए उन लोगों के लिए लअनत है जो ईमान नहीं लाते।

(45) फ़िर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी निशानियों और खुली दलील के साथ भेजा।

(46) फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ, फ़िर उन्होंने घमंड किया और वह सरकश लोग थे।

(47) इसलिए वह कहने लगेः क्या हम अपनी ही तरह के दो इन्सानों पर ईमान लाएं जबकि उनकी क़ौम के लोग हमारे गुलाम (मातहत) हैं।

(48) फ़िर उन्होंने उन दोनों को झुठलाया, तो वह हलाक किये गए लोगों में से हो गए।

(49) और बिलाशुब्ह हमने मूसा को किताब दी ताकि वह (लोग) हिदायत (मार्ग-दर्शन) पाएं।

(50) और हमने (ईसा) इब्ने मरयम और उसकी माँ को एक निशानी बनाया और एक सुकून और जारी चश्मे (झरने) वाले टीले पर उन दोनों को ठिकाना दिया।

(51) (फरमायाः) ऐ रसूलों! तुम पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ और नेक अमल करो, बेशक तुम जो अमल करते हो मैं उसे खूब जानता हूँ।

(52) और बिलाशुब्ह यह तुम्हारी मिल्लत एक ही मिल्लत (समुदाय) व शरीअत है, और मैं तुम्हारा रब हूँ, लिहाज़ा तुम मुझ ही से डरो।

(53) फ़िर उन्होंने अपना अम्र (दीन) आपस

में टुकड़े टुकड़े कर डाला, हर फिरक़े के पास जो कुछ है वह उसी पर रिझे (मोहित) हुए है।

(54) इसलिए (ऐ नबी!) आप उन्हें उनकी गफलत में एक (मुक़र्रर) वक़्त तक छोड़ दें।

(55) क्या वह समझते हैं कि बेशक हम जो भी उनके माल और औलाद में इज़ाफा किये जा रहे हैं।

(56) (तो) क्या हम उनके लिए भलाईयों में जल्दी कर रहे हैं? (नहीं, नहीं) बल्कि, (अस्ल हक़ीक़त का) समझ नहीं रखते।

(57) बेशक जो लोग अपने रब के ख़ौफ से डरते रहते हैं।

(58) और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं।

(59) और जो लोग अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते।

(60) और जो लोग (अल्लाह की राह में) देते हैं जो कुछ भी देते हैं, तो इस तरह कि उनके दिल ख़ौफज़दा (भयभीत) होते हैं कि बेशक वह अपने रब की तरफ लौटने वाले हैं।

(61) यही लोग भलाईयों में जल्दी करते हैं, और वह उनमें आपस में सबक़त (जल्दी) करने वाले हैं।

(62) और हम किसी नफ्स को उसकी तक़ात से ज़्यादा तकलीफ नहीं देते, और हमारे पास एक ऐसी किताब (नामा-ए-आमाल) है जो (हर शख़्स का हाल) ठीक ठीक बता देगी, और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

(63) बल्कि उन (कुफ्फार) के दिल इस (क़ुरआन) से ग़ाफिल हैं, और इस (ग़फलत) के अलावा भी उनके कई (बुरे) आमाल हैं जिन्हें वह करने वाले हैं।

(64) यहाँ तक कि जब हम उनके खुशहाल (अय्याश) लोगों को अज़ाब में पकड़ेंगे तो उस वक़्त वह चीख पुकार करेंगे।

(65) (कहा जाएगाः) आज मत चीखों यक़ीनन हमारी तरफ से तुम्हें कोई मदद नहीं पहुँचेगी।

(66) बेशक मेरी आयतें तुम पर तिलावत की जाती थी तो तुम अपनी ऐड़ियों पर उलटे फ़िर जाते थे।

(67) घमंड करते हुए, इस (क़ुरआन) के साथ अफसाना गोई करते हुए तुम बेहूदा बकते थे।

(68) क्या फ़िर उन्होंने क़ुरआन में तदब्बुर (गोरो-फिक्र) नहीं किया, या फ़िर उनके पास वह चीज़ आ गई जो उनके पहले बाप दादा के पास नहीं आई थी?

(69) या उन्होंने अपने रसूल को नहीं पहचाना? लिहाज़ा वह इसके मुन्कर हैं।

(70) या वह कहते हैं कि उसे जुनून है? बल्कि वह उनके पास हक़ लाया है, और उनके अक्सर लोग हक़ को नापसंद करते हैं।

(71) और अगर हक़ उनकी ख्वाहिशत

की पैरवी करे तो आसमान और ज़मीन और जो उनमें हैं, सब तबाह हो जाएं, बल्कि हम उनके पास उनके लिए नसीहत (उपदेश) लाए हैं, और वह अपनी ही नसीहत से मुँह मोड़े हुए हैं।

(72) क्या आप उनसे उजरत (शुल्क) का सवाल करते हैं? तो आपके रब का सिला बेहतर है, और वह बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है।

(73) और बिलाशुब्ह आप उन्हें सिराते मुस्तक़ीम (इस्लाम) की तरफ बुलाते हैं।

(74) और बिलाशुब्ह जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, वह यक़ीनन सिराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) से हट रहे हैं।

(75) और अगर हम उन पर रहम करें और उन्हें होने वाली तकलीफ दूर कर दें तो फ़िर भी वह बराबर अपनी सरकशी में अड़े रहें (और) भटकते फिरें।

(76) और बिलाशुब्ह हमने उन्हें अज़ाब में पकड़ा था, फ़िर उन्होंने अपने रब के सामने आजिज़ी (विनती) की और न वह गिड़गिड़ाऐ।

(77) यहाँ तक कि जब हमने उन पर सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल दिया तो वह उसमें नाउम्मीद हो गए।

(78) और वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल पैदा किये, तुम कम ही शुक्र करते हो।

(79) और वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया, और उसी की तरफ तुम्हें इकट्ठा किया जाएगा।

(80) और वही है जो ज़िन्दा करता और मौत देता है और रात और दिन का इख़्तिलाफ उसी का (पैदा किया हुआ) है, क्या फ़िर भी तुम नहीं समझते?

(81) बल्कि उन्होंने वही कुछ कहा जो उनसे पहलों ने कहा था।

(82) उन्होंने कहाः क्या जब हम मर गए और मिट्टी और हड्डीया हो गए, तो क्या हमें दोबारा ज़िन्दा करके उठाया जाएगा?

(83) बिलाशुब्ह उसी बात का हम से और हमसे पहले हमारे बाप दादाओ से वादा होता आया है, यह तो महज़ पहले लोगों के अफसाने (कहानियां) हैं।

(84) (ऐ नबी!) आप (उनसे) पूछेंः अगर तुम जानते हो (तो बताओ) किसकी है यह ज़मीन और जो कुछ उसमें है?

(85) वह ज़रूर कहेंगेः अल्लाह ही की है, कह दीजिएः क्या फ़िर तुम नसीहत (उपदेश) नहीं पकड़ते?

(86) आप पूछेंः सातों आसमान का रब और अर्शे अज़ीम का रब कौन है?

(87) वह ज़रूर कहेंगेः (यह) अल्लाह ही के हैं, कह दीजिएः क्या फिर तुम डरते नहीं?

(88) आप (फ़िर) पूछेंः किस के हाथ में है

हर चीज़ की बादशाही, जबकि वही पनाह देता है और उसके मुक़ाबले किसी को पनाह नहीं दी जा सकती, अगर तुम जानते हो (तो बताओ?)

(89) वह ज़रूर कहेंगेः (बादशाही) अल्लाह ही की है, कह दीजिएः फ़िर कहाँ से तुम पर जादू किया जाता है?

(90) बल्कि हम उनके पास हक़ लाए हैं और बिलाशुब्ह वही झूठे हैं।

(91) अल्लाह ने अपनी कोई औलाद नहीं बनाई और न उसके साथ कोई (और) मअ़बूद है (अगर होता) तो हर मअ़बूद उस चीज़ को, जो उसने पैदा की, ले जाता और बिलाशुब्ह उनमें से हर एक दूसरे पर चढ़ाई करता, अल्लाह उन बातों से पाक है जो वह बयान करते हैं।

(92) वह ग़ैब और हाज़िर का जानने वाला है, इसलिए वह कहीं आला (उच्च) है उससे जो वह शिर्क करते हैं।

(93) कह दीजिए: ऐ मेरे रब! अगर तू मुझे दिखाए जो उन्होंने वादा दिया जाता है।

(94) (तो) ऐ मेरे रब! तू मुझे ज़ालिम लोगों में शामिल न करना।

(95) और बिलाशुब्ह हम इस बात पर कि आपको दिखाएं जिसका हम उनसे वादा करते हैं, ज़रूर क़ादिर हैं।

(96) बुराई को इस तरीक़े से दफ़ा कीजिए जो अहसन (अच्छा) हो, हम उसे खूब जानते हैं जो वह बयान करते हैं।

(97) और आप कहेंः ऐ मेरे रब! मैं शैतानों के वस्वसों से तेरी पनाह मांगता हूँ।

(98) और ऐ मेरे रब! उससे भी मैं तेरी पनाह मांगता हूँ कि वह मेरे पास हाज़िर हों।

(99) यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मौत आएगी तो वह कहेगाः ऐ मेरे रब! मुझे वापस भेज।

(100) ताकि मैं उसे दुनिया में, जिसे मैं छोड़ आया हूँ, नेक अमल करूं, हरगिज़ नहीं! बेशक यह एक बात है जो वह कहने वाला है। और उनके आगे परदा है उस दिन तक जब वह दोबारा उठाए जाएँगे।

(101) फ़िर जब सूर में फूंका जाएगा तो उस दिन न उनमें रिश्तेदारियां रहेंगी और न वह आपस में सवाल करेंगे।

(102) फ़िर जिसके पलड़े भारी हो गए तो वही फलाह पाने वाले हैं।

(103) और जिसके पलड़े हलके हो गए तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको खसारे में डाला, वह हमेशा जहन्नम में रहेंगे।

(104) आग उनके चेहरे जला डालेगी, और वह उसमें बदशक्ल होंगे।

(105) (कह जाएगाः) क्या तुम पर मेरी आयतें तिलावत नहीं की जाती थी, फ़िर तुम उनको झुठला दिया करते थे?

(106) वह कहेंगेः ऐ हमारे रब! हमारी

बदबख़्ती हम पर ग़ालिब आ गई, और (वाक़ई) हम लोग गुमराह थे।

(107) ऐ हमारे रब! हमें यहाँ से निकाल, फ़िर अगर हम दोबारा वही करें तो बिलाशुब्ह हम ज़ालिम होंगे।

(108) अल्लाह फरमाएगाः उसी में फटकारे पड़े रहो और मुझसे कलाम (बात) न करो।

(109) बेशक मेरे बन्दों में एक गिरोह वह था जो कहते थेः ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, लिहाज़ा तू हमारी मग्फिरत फरमा और रहम कर, और तू ही सब से बेहरतर रहम करने वाला है।

(110) फ़िर तुम उनसे मसखरी करते थे यहाँ तक कि उन्होंने तुम्हें मेरा ज़िक्र भुला दिया था, और तुम उन पर हंसी करते थे।

(111) बिलाशुब्ह मैं ने आज उन्हें उनके सब्र का बदला दे दिया है कि बेशक वही कामयाब हैं।

(112) अल्लाह फरमाएगाः ज़मीन में तुम कितने साल रहे?

(113) वह कहेंगेः हम एक दिन या दिन का भी कुछ हिस्सा रहे, गिनती करने वालों से पूछ लीजिए।

(114) अल्लाह फरमाएगाः वाक़ई तुम (वहाँ) थोड़ा सा वक़्त ही रहे, काश! तुम (यह बात दुनिया में) जानते होते।

(115) क्या तुमने समझ था कि हम ने तुम्हें बेफ़ायदा पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ लौट कर नहीं आओगे?

(116) इसलिए अल्लाह आला है, बादशाह सच्चा, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह अर्श करीम का रब है।

(117) और जो कोई अल्लाह क साथ किसी और मअ़बूद को पुकारे जिसकी उसके पास कोई दलील नहीं, तो यक़ीनन उसका हिसाब उसके रब के पास है, बेशक काफिर फलाह (कामयाबी) नहीं पाएँगे।

(118) और आप कहेंः ऐ मेरे रब! मेरी मग्फिरत फरमा, और (मुझ पर) रहम फरमा, और तू ही सब से बेहतर रहम करने वाला है।

सूरह नूर-24

(यह मदनी सूरत है इसमें 64 आयतें और 9 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (यह) एक सूरत है, हमने इसे नाज़िल (अवतरित) किया और हमने इस (के अहकाम) को फर्ज़ किया है, और हमने इसमें वाज़ेह (खुली) आयतें नाज़िल कीं ताकि तुम नसीहत (उपदेश) हासिल करो।

(2) ज़ानिया (व्याभिचारिणी) औरत और ज़ानी (व्याभिचारी) मर्द, तो उन दोनों में से हर एक को तुम सौ कोड़े मारो, और अगर

तुम अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो तो अल्लाह के दीन (पर अमल करने) के मामले में तुम्हें दोनों (ज़ानी और ज़ानिया) पर क़तअन (कभी भी) तरस नहीं आना चाहिए, और मोमिनों का एक गिरोह उन दोनों की सज़ा के वक़्त मौजूद होना चाहिए।

(3) ज़ानी मर्द निकाह नहीं करता मगर ज़ानिया या मुश्रिका (बहुदेववादी) औरत ही से, और ज़ानिया औरत से निकाह नहीं करता मगर ज़ानी या मुश्रिक मर्द ही, और मोमिनों पर यह (ज़िनाकार से निकाह) हराम ठहराया गया है।

(4) और जो लोग पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाते हैं, फ़िर वह चार गवाह नहीं लाते, तो तुम उन्हें अस्सी कौड़े मारो, और तुम उनकी शहादत (गवाही) कभी क़बूल न करो, और यही लोग नाफ़रमान हैं।

(5) मगर इसके बाद जिन लोगों ने तौबा की और इस्लाह (सुधार) कर ली, तो बिलाशुब्ह अल्लाह गफ़ूर्रुरहीम है।

(6) और जो लोग अपनी बीवियों पर तोहमत लगाएं और उनके पास अपने सिवा कोई गवाह न हों, तो उनमें से एक की शहादत इस तरह होगी कि चार बार अल्लाह की क़सम खा कर कहे कि बेशक वह सच्चो में से है।

(7) और पाँचवीं बार यह कहेः अगर वह झूठों में से हो तो उस पर अल्लाह की लअनत हो।

(8) और औरत से सज़ा तब टलती है कि वह चार बार अल्लाह की क़सम खा कर कहे कि बिलाशुब्ह वह (उस का खाविन्द) झूठों में से है।

(9) और पाचँवीं बार यह कहे कि अगर वह (उसका खाविंद) सच्चों में हो तो उस (औरत) पर अल्लाह का गज़ब हो।

(10) और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत न होती (तो झूठों को सज़ा मिलती) और यह कि बिलाशुब्ह अल्लाह बहुत तौबा क़बूल करने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(11) बेशक जो लोग (उम्मुलमोमिनीन आयशा सिद्दीक़ रज़ि. पर) बोहतान गढ़ लाए वह तुम्ही में से एक गिरोह हैं, तुम उसे अपने लिए बुरा न समझो बल्कि वह तुम्हारे लिए बेहतर है, उनमें से हर शख़्स के लिए उतना ही गुनाह है जो उसने कमाया, और उन में से वह शख़्स जिसने इस (गुनाह) का बड़ा बोझ उठाया, उसके लिए अज़ाबे अज़ीम है।

(12) जब तुमने यह (झूठ) सुना तो क्यों न मोमिन मर्दों और औरतों ने अपने नफ़्सों (दिलों) में अच्छा गुमान किया और (क्यों न) कहा कि

यह तो सरीह (खुला) बोहतान है?

(13) वह इस (इल्ज़ाम) पर चार गवाह क्यों न लाए? फ़िर जब वह गवाह नहीं लाए तो वही लोग अल्लाह के यहाँ झूठें हैं।

(14) और अगर तुम पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत न होती तो तुम जिन बातों में पड़ गए थे उस पर तुम्हें अज़ाबे अज़ीम आ लेता।

(15) जब तुम अपनी ज़बानों से इस बोहतान का चर्चा कर रहे थे और अपने मुँह से वह बात कह रहे थे जिसका तुम्हें इल्म न था, और तुम उसे मामूली समझ रहे थे जबकि वह अल्लाह के यहाँ बहुत बड़ी बात है।

(16) और जब तुमने उसे सुना तो क्यों न कहाः यह हमारे लायक़ नहीं कि हम यह बात ज़बान पर लाएं (या अल्लाह!) तू पाक है, यह बोहताने अज़ीम है।

(17) अल्लाह तुम्हें नसीहत (उपदेश) करता है कि अगर तुम मोमिन हो तो फ़िर कभी भी ऐसी हरकत न करना।

(18) और अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें बयान करता है, और अल्लाह खूब जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(19) बेशक जो लोग यह पसंद करते हैं कि ईमान लाने वालों में बेहयाई फैले, उनके लिए दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है, और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

(20) और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत न होती (तो अल्लाह बोहतान लगाने वालों को फौरन अज़ाब देता) और यह कि बिलाशुब्हे अल्लाह निहायत शफक्क़त करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(21) ऐ ईमान वालो! तुम शैतान के क़दमों का इत्तेबा न करो, और जो कोई शैतान के क़दमों का इत्तेबा करता है, तो बिलाशुब्हे वह (शैतान) तो बेहयाई और बुरे काम ही का हुक्म देता है, और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत न होती तो तुममे से कोई एक भी कभी पाक न होता लेकिन अल्लाह जिसे चाहे पाक करता है, और अल्लाह खूब सुनता, खूब जानता है।

(22) और तुम में से फ़ज़ल और वुसअत वाले, कुरबतदारों और मिस्कीनों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को (माली मदद) देने से क़सम न खाएं और चाहिए कि वह माफ कर दें और दरगुज़र करें। क्या तुम यह पसंद नहीं करते कि अल्लाह तुम्हारी मग्फिरत फरमाए? और अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(23) बिलाशुब्हे जो लोग पाक दामन, बेखबर मोमिन औरतों पर (ज़िना की) तौहमत

लगाते हैं, उन पर दुनिया और आख़िरत में लअनत की गई, और उनके लिए अज़ाबे अज़ीम है।

(24) जिस दिन उनकी ज़बानें और उनके हाथ और उनका पैर उनके खिलाफ, उन आमाल की गवाही देंगे जो वह करते थे।

(25) उस दिन अल्लाह उन्हें उनका पूरा पूरा, ठीक बदला देगा (जिसके वह हक़दार हैं), और वह जान लेंगे कि बेशक अल्लाह ही हक़ है, (हक़ को) वाज़ेह करने वाला है।

(26) खबीस औरतें खबीस मर्दों के लिए हैं और खबीस मर्द खबीस औरतों के लिए और पाकिज़ा औरतें पाकिज़ा मर्दों के लिए और पाकिज़ा मर्द पाकिज़ा औरतों के लिए, यह (पाकिज़ा) लोग उन बातों से बरी हैं जो वह (खबीस लोग उनकी बाबत) कहते हैं, उनके लिए मग्फिरत और इज्ज़त का रिज़्क़ है।

(27) ऐ ईमान वालो! अपने घरों के सिवा और घरों में दाख़िल न हुआ करो यहाँ तक कि तुम इजाज़त ले लो, और उन घर वालों को सलाम करो, यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है ताकि तुम नसीहत (उपदेश) हासिल करो।

(28) फ़िर अगर तुम उनमें किसी को न पाओ तो उनमे दाख़िल न हो यहाँ तक कि तुम्हें इजाज़त दे दी जाए, और अगर तुमसे कहा जाए कि लौट जाओ तो लौट आओ, यह तुम्हारे लिए बहुत पाकिज़ा (अमल) है, और जो तुम अमल करते हो अल्लाह उसे खूब जानता है।

(29) तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम उन घरों में दाख़िल हो जहाँ कोई रहता न हो (और) उनमें तुम्हारे फायदे की कोई चीज़ हो और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो।

(30) (ऐ नबी!) आप मोमिन मर्दों से कह दीजिए कि वह अपनी नज़रें नीची रखें, और अपनी शर्मगाहों (गुप्ताँगों) की हिफाज़त करें, यह उनके लिए बहत पाकिज़ा (अमल) है, जो कुछ वह करते हैं, बिलाशुब्ह अल्लाह उससे खूब बाखबर है।

(31) और आप मोमिन औरतों से कह दीजिए कि वह अपनी नज़रें नीची रखें, और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें, और अपनी ज़ीनत (श्रृंगार) न खोले मगर जो (अज़खुद) उसमें से ज़ाहिर हो, और अपनी औढ़नियां अपने गिरेबानों पर डाले रखें, और अपना बनाओ सिंगार ज़ाहिर न करें मगर अपने खाविन्दों (पतियों) पर, या अपने बाप दादा पर, या अपने खाविन्दों के बाप दादा पर, या अपने बेटों पर, या शौहरों के बेटों (सौतेले बेटों) पर, या अपने भाईयों पर, या अपने भतीजों पर, या अपने भान्जों पर, या अपनी (मुसलमान) औरतों पर, या अपने दांये हाथ

की मिल्कियत (कनीज़ों) पर, या औरतों से रगबत (चाहत) न रखने वाले नौकर चाकर मर्दों पर या उन लड़को पर जो औरतों की छुपी बातों से वाक़िफ (परिचित) न हों, और वह (औरतें) अपने पैर (ज़ोर ज़ोर से) ज़मीन पर मारती न चला करें कि अपनी जो ज़ीनत उन्होंने छुपा रखी है वह (लोगों को) मालूम हो जाए, और ऐ मोमिन! तुम सब मिल कर अल्लाह से तौबा करो ताकि तुम फलाह पाओ।

(32) और तुम अपने बेनिकाहों के निकाह कर दो और (उनके भी) जो तुम्हारे गुलाम और लोन्डियां नेक हों, अगर वह फक़ीर होंगे तो अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन्हे ग़नी कर देगा, और अल्लाह वुसअत वाला खूब जानने वाला है।

(33) और जो लोग निकाह (की ताक़त) नहीं पाते उन्हें पाक दामन रहना चाहिए यहाँ तक कि अल्लाह अपने फज़्ल से उन्हें ग़नी कर दे, और तुम्हारे जो लौन्डी गुलाम आज़ादी की तरहरीर लिखवाना चाहें, अगर तुम्हें उनमें कोई भलाई मालूम हो, तो तुम उन्हें लिख कर दे दो, और तुम उन्हें अल्लाह के उस माल में से दो जो उसने तुम्हें दिया है, और तुम्हारी लौन्डियां अगर पाक दामन रहना चाहें तो तुम दुनियावी ज़िन्दगी का सामान तलाश करने की खातिर उन्हें बदकारी पर मजबूर न करो और जो कोई उन्हें मजबूर करे तो बेशक उनके मजबूर किये जाने के बाद अल्लाह (उनके लिए) गफ़ूर्रुरहीम है।

(34) और बिलाशुब्ह हमने तुम्हारी तरफ खोल कर बयान करने वाली आयतें नाज़िल कीं, और कुछ हाल उन लोगों का जो तुम से पहले गुज़र चुके, और मुत्तक़ीन के लिए नसीहत।

(35) अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है, उसके नूर की मिसाल (यूं है) जैसे एक ताक़ हो, जिसमें चिराग हो, चिराग एक शीशे (की क़न्दील) में हो, शीशा जैसे चमकता सितारा हो, वह (चिराग) एक मुबारक दरख्त ज़ैतून (के तेल) से जलाया जाता हो जो न पूर्वी हो न पश्चिमी, यूं लगे जैसे उसका तेल खुद ब खुद सुलग उठेगा अगरचे उसे आग ने छुआ न हो, (वह) नूर अला नूर है। अल्लाह अपने नूर की तरफ हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है जिसे चाहे। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, और अल्लाह हर चीज़ का खूब जानता है।

(36) यह (चिराग और क़न्दीलें) उन घरों में हैं (जिनकी बाबत) अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उनको बुलंद किया जाए और उनमें अल्लाह का नाम ज़िक्र किया जाए (और) वह वहाँ सुबह व शाम उसकी तस्बीह करते हैं।

(37) वह लोग जिन्हें तिजारत (व्यपार) और खरीद फरोख्त (क्रय-विक्रय), अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने से ग़ाफिल नहीं करती, वह उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आँखें उलट जाएँगे।

(38) (वह यह काम करते हैं) ताकि अल्लाह उन्हें उनके आमाल की बेहतरीन जज़ा (बदला) दे और उन्हें अपने फज़्ल से ज़्यादा दे, और अल्लाह जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क़ देता है।

(39) और जिन लोगों ने कुफ्र किया उनके आमाल चटियल मैदान में चमकती रेत जैसे हैं, प्यासा उस (रेत) को पानी समझता रहा यहाँ तक कि जब वह उसके पास पहुँचा तो उसने वहाँ कुछ भी न पाया, और अल्लाह को अपने पास पाया, फ़िर अल्लाह ने उसका हिसाब पूरा पूरा चुका दिया और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

(40) या (काफिरों के आमाल) गहरे समदंर में अन्धेरों की तरह हैं, जिसे एक मौज ढांपती हो, उसके ऊपर एक और मौज हो, उसके ऊपर बादल हो, (गर्ज़) ऊपर तले अन्धेरे (ही अन्धेरे) हों, जब वह अपना हाथ निकाले तो लगता नहीं कि उसे देख सके, और जिसके लिए अल्लाह ने नूर नहीं बनाया तो उसके लिए (कहीं भी) कोई नूर नहीं।

(41) क्या आपने नहीं देखा कि बेशक अल्लाह की तस्बीह करता है जो कोई आसमान और ज़मीन में है, और (फज़ा में) पर फैलाए हुए परिन्दे भी? हर एक ने अपनी नमाज़ और अपनी तस्बीह जान ली है, और जो कुछ वह करते हैं अल्लाह उसे खूब जानता है।

(42) और अल्लाह ही के लिए है आसमानों और ज़मीन की बादशाही, और अल्लाह ही की तरफ (सबकी) वापसी है।

(43) क्या आपने नहीं देखा कि बेशक अल्लाह ही बादल चलाता है, फ़िर वह उन्हें आपस में मिलाता है, फ़िर उन्हें तह ब तह कर देता है, फ़िर आप देखते हैं कि उन (बादलों) के दरम्यान से मेंह (बारिश) निकालता है। और वह आसमान से उन पहाड़ों से जो उस में हैं, ओले बरसता है, फ़िर उन्हें जिस पर चाहे गिराता है, और जिससे चाहे फ़ेर देता है, लगता है कि उसकी बिजली की चमक आँखों (की रोशनी) को उचक ले जाएगी।

(44) अल्लाह ही रात और दिन को उलटता पलटता रहता है। बिलाशुब्ह इन (निशानियों) में अहले नज़र के लिए इबरत का सामान है।

(45) और अल्लाह ने ज़मीन पर चलने वाला हर जानदार पानी से पैदा किया, फ़िर उनमें से कोई अपने पेट के बल चलता है,

और उनमें से कोई दो पांव पर चलता है, और उनमे से कोई चार पांव पर चलता है, अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है, बिलाशुब्ह अल्लाह हर शै (चीज़) पर खूब क़ादिर है।

(46) बिलाशुब्ह हमने खोल कर बयान करने वाली आयतें नाज़िल कीं, और अल्लाह जिसे चाहता है सिराते मुस्तक़ीम की तरफ हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है।

(47) और वह (मुनाफिक़) कहते हैंः हम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, और हमने इताअत की, फ़िर इसके बाद उनमें से एक फरीक़ (इताअत से) फ़िर जाता है, और वह लोग मोमिन ही नहीं।

(48) और जब वह अल्लाह और उसके रसूल की तरफ बुलाए जाते हैं, ताकि वह उनके बीच फैसला करे, तो अचानक उनमें से एक फरीक़ मुँह मोड़ लेता है।

(49) और अगर उनके लिए हक़ (फायदा) हो तो वह उसकी तरफ फ़रमाबरदार हो कर चले आते हैं।

(50) क्या उनके दिलों में (निफाक़ का) मर्ज़ है या वह शक में पड़े हैं या ख़ौफ खाते हैं कि अल्लाह और उसका रसूल उन पर जुल्म करेंगे? (नहीं) बल्कि वह लोग खुद ही ज़ालिम हैं।

(51) बस मोमिनों की तो बात ही यह है कि जब वह अल्लाह और उसके रसूल की तरफ बुलाए जाते हैं, ताकि वह उनके बीच फैसला करे, तो वह कहते हैंः हमने सुना और इताअत की और वही लोग फलाह पाने वाले हैं।

(52) और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करे, अल्लाह से डरे और उसका तक़्वा इख्तियार करे, तो वही लोग कामयाब हैं।

(53) और उन्होंने अल्लाह की क़समें खाईं, अपनी पक्की क़समें कि अगर आप उन्हें हुक्म देंगे तो वह (जिहाद पर) ज़रूर निकलेंगे, कह दीजिएः तुम क़समें न खाओ, (तुम्हारी) इताअत मअरूफ है, बिलाशुब्ह जो अमल तुम कर रहे हो अल्लाह उससे खूब बाखबर है।

(54) कह दीजिएः अल्लाह की इताअत करो, और रसूल की इताअत करो, फ़िर अगर तुम मुँह मोड़ेगे तो इस रसूल के ज़िम्मे सिर्फ वह है जो उस पर बोझ डाला गया है और तुम्हारे ज़िम्मे सिर्फ वह है जो तुम पर बोझ डाला गया, और अगर तुम इस (रसूल) की इताअत करोगे तो हिदायत (मार्ग-दर्शन) पाओगे, और रसूल के ज़िम्मे सिर्फ खोल कर पहुँचा देना है।

(55) जो तुम में से ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है कि वह उन्हें ज़मीन में ज़रूर

खिलाफत देगा, जैसे उसने उनसे पहले लोगों को खिलाफत दी थी, और उनके लिए ज़रूर उनका वह दीन जमा देगा जो उसने उनके लिए चुना, और यक़ीनन उनकी हालते ख़ौफ को बदल कर वह ज़रूर उन्हें अमन देगा, वह मेरी इबादत करेंगे, मेरे साथ किसी शै (चीज़) को शरीक नहीं ठहराएँगे, और जो कोई इसके बाद कुफ्र करे तो वही लोग फासिक़ हैं।

(56) और तुम नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

(57) और काफिरों की बाबत आप यह ख्याल न करें कि वह ज़मीन में (अल्लाह को) आजिज़ कर देने वाले हैं, और उनका ठिकाना आग है, और बिलाशुब्ह वह वापसी की बुरी जगह है।

(58) ऐ ईमान वालो! तुम्हारे गुलामों, लोन्डियों और (उन लड़को और लड़कियों को) जो तुममें से बुलूगत (जवानी) को न पहुँचे हों, (उन्हें) चाहिए कि तुमसे तीन बार इजाज़त मांगें (फ़िर घर में दाख़िल हो,) नमाज़े फजर से पहले और जब तुम दोपहर को कपड़े उतारते हो और नमाज़े ईसा के बाद, यह तीन वक़्त तुम्हारे लिए खलवत (अकेले) और परदे के हैं, उन (वक़्तों) के बाद (बिला इजाज़त आने से) न तुम पर और न उन पर कोई गुनाह है, तुम एक दूसरे के पास बकसरत आया जाया ही करते हो, अल्लाह इसी तरह तुम्हारे लिए अपनी आयतें बयान करता है, और अल्लाह खूब जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(59) और जब तुममें से लड़के (और लड़कियां) बुलूगत (जवानी) की हद को पहुँच जाऐं तो उन्हें चाहिऐ कि वह भी इसी तरह इजाज़त मांगें जिस तरह उनसे पहले (उनके बड़े) इजाज़त मांगते रहे हैं, अल्लाह इसी तरह तुम्हारे लिए अपनी आयतें बयान करता है, और अल्लाह खूब जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(60) और घरों में बैठी रहने वाली (बूढ़ी) औरतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखती, तो उन पर कोई गुनाह नहीं कि वह अपने (परदेदारी के) कपड़े उतार दें जबकि वह (अपनी) ज़ैब व ज़ीनत (बनाव व श्रंगार) ज़ाहिर करने वाली न हों, और उनका इससे भी बचना उनके लिए बहुत बेहतर है, और अल्लाह समी (सुनने वाला), अलीम (जानने वाला) है।

(61) अन्धे पर कोई हर्ज नहीं और न लगड़े ही पर हर्ज है और न मरीज़ पर कोई हर्ज है और न खुद तुम्ही पर (कोई हर्ज है) कि तुम अपने घरों से खाओ, या अपने बाप दादा के घरों से, या अपनी माँओं के घरों से, या अपने भाईयों के घरों से, या अपनी बहनों

के घरों से, या अपने चचाओ के घरों से, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामूओं के घरों से, या अपनी खालाओं के (घरों से), या उन (घरों) से जिनकी चाबियों के तुम मालिक हो, या अपने दोस्तों के घरों से, इसमें भी कोई हर्ज नहीं कि तुम मिल कर खाओ या अलग अलग, फ़िर जब तुम घरों में दाख़िल हो तो अपने लोगों को सलाम कहो, (यह) अल्लाह की तरफ से बाबरकत (और) पाकीज़ा तोहफा है, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतें बयान करता है ताकि तुम समझो।

(62) बस मोमिन तो सिर्फ वह हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, और जब वह रसूल के साथ किसी इज्तिमाई काम पर होते हैं तो आपसे इजाज़त लिए बग़ेर वहाँ से चले नहीं जाते (ऐ नबी!) बिलाशुब्ह जो लोग आपसे इजाज़त मांगते हैं वही लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हैं, इसलिए जब वह अपने किसी काम के लिए आपसे इजाज़त मांगें तो आप उनमें से जिसे चाहे इजाज़त दें, और उनके लिए अल्लाह से मग़्फिरत मांगें, बेशक अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत मेहरबान है।

(63) तुम रसूल के बुलाने को आपस में एक दूसरे को बुलाने के मानिन्द (जैसा) न ठहराओ, यक़ीनन अल्लाह उन लोगों को जानता है जो तुममें से आँख बचा कर खिसक जाते हैं, लिहाज़ा चाहिए कि जो लोग इस (अल्लाह के रसूल) के हुक्म के खिलाफ वरज़ी करते हैं, इस (बात) से डरें कि उन्हें कोई आज़माईश आ पड़े या उन्हें दर्दनाक अज़ाब आ ले।

(64) खबरदार! बिलाशुब्ह अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, यक़ीनन वह उस (रविश) को जानता है जिस पर तुम हो, और जिस दिन वह उसकी तरफ लौटाऐ जाएँगे तो वह जताएगा जो उन्होंने अमल किये, और अल्लाह हर शै (चीज़) को खूब जानता है।

सूरह फ़ुरक़ान-25

(यह मक्की सूरत है इसमें 77 आयतें और 6 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) वह ज़ात बड़ी ही बाबरकत है जिसने अपने बन्दे पर फुरक़ान (कुरआन) नाज़िल (अवतरित) किया ताकि वह जहान (दुनिया) वालों के लिए डराने वाला बने।

(2) वही ज़ात जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, और उसने अपने लिए कोई औलाद नहीं बनाई और न बादशाही में उसका कोई शरीक है, और

उसने हर चीज़ को पैदा किया, फ़िर उसका ठीक ठीक अन्दाज़ा किया।

(3) और लोगों ने उसके सिवा (और) मअ़बूद बना लिए हैं जो कोई चीज़ पैदा नहीं करते, और वह तो (खुद) मख़्लूक़ हैं, और वह खुद अपने किसी नफा और नुक्सान का कुछ इख़्तियार नहीं रखते, और न मौत व ज़िन्दगी का, और न दोबारा जी उठने ही का इख़्तियार रखते हैं।

(4) और काफिरों ने कहाः यह (कुरआन) तो निरा झूठ है जिसे वह (नबी) खुद गढ़ लाया है, और इस (के गढ़ने) में और लोगों ने उसकी मदद की है। इसलिए (ऐ नबी!) उन्होंने जुल्म और झूठ का इरतिकाब किया।

(5) और उन्होंने कहाः यह अगलों के अफसाने (कहानियां) हैं (जो) उसने अपने लिए लिखवाए हैं, और वह सुबह शाम उस पर पढ़े जाते हैं।

(6) कह दीजिएः इसे उसने नाज़िल किया है जो आसमानों और ज़मीन के भेद जानता है, बिलाशुब्ह वह गफूर्रुरहीम है।

(7) और उन्होंने कहाः यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बज़ारों में चलता है? उस पर फरिश्ता क्यों न नाज़िल हुआ जो उसके हमराह (लोगों को) डराने वाला होता?

(8) या उस पर कोई खज़ाना उतारा जाता, या उसका कोई बाग होता जिसमें वह (फल) खाता और ज़ालिमों ने (मोमिनों से) कहाः तुम तो बस एक जादू के मारे शख़्स की ही इत्तेबा करते हो।

(9) देखो! उन्होंने आपके लिए कैसी मिसाल बयान की हैं, वह बहक गए हैं, लिहाज़ा वह राह नहीं पा सकते।

(10) वह ज़ात बड़ी ही बाबरकत है जो अगर चाहे तो आपके लिए इससे बेहतर (चीज़ें) बना दे, यानी ऐसे बाग जिनके नीचे नहरें जारी हों और आपके लिए महलात बना दे।

(11) लेकिन उन्होंने ने क़यामत को झुठलाया, और हमने उस शख़्स के लिए जो क़यामत को झुठलाए, भड़कती आग तैयार कर रखी है।

(12) जब वह (मुजरिमों) को दूरदराज़ जगह से देखगी तो वह उसका बिफरना और दाहड़ना सुनेंगे।

(13) और जब वह ज़ंजीरों में जकड़े उसकी किसी तंग जगह में झोंके जाएँगे, तो वह वहाँ मौत को पुकारेंगे।

(14) (कहा जाएगाः) तुम आज एक मौत को मत पुकारे बल्कि बहुत सी मौतों को पुकारो।

(15) कह दीजिएः क्या यह (अज़ाब) बेहतर है या हमेशा की जन्नत जिसका मुत्तक़ीन को वादा दिया गया है? वह उनके लिए

जज़ा (बदला) और वापसी की जगह है।

(16) उसमें उनके लिए होगा जो वह चाहेंगे, हमेशा (वहाँ) रहने वाले, यह आपके रब के ज़िम्मे वादा है जो क़ाबिले तलब है।

(17) और जिस दिन अल्लाह उन्हें और उनको जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं, जमा करेगा, फ़िर (उनसे) पूछेगाः क्या तुमने मेरे उन बन्दों को गुमराह किया था वह खुद ही राह से भटक गए थे?

(18) वह कहेंगेः तू पाक है हमारे लायक़ नहीं था कि हम तेरे सिवा कारसाज़ बनाऐं लेकिन तूने उन्हें ज़िन्दगी का सामान दिया, और उनके बाप दादा को भी यहाँ तक कि वह (तेरा) ज़िक्र भूल गए, और वह लोग हलाक होने वाले थे।

(19) (अल्लाह फरमाएगाः ऐ काफिरो!) यक़ीनन उन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी बातों में झुठला दिया, लिहाज़ा अब न तुम (अपने आपसे अज़ाब) टाल सकते हो और न (किसी से) मदद ले सकते हो, और तुममें से जो शख़्स जुल्म (शिर्क) करेगा तो उसे हम बहुत बड़ा अज़ाब चखाएंगे।

(20) और (ऐ नबी!) हमने आपसे पहले जितने भी रसूल भेजे, बिलाशुब्हे वह खाना खाते थे और बज़ारों में चलते थे, और हमने तुम्हें एक दूसरे के लिए आज़माईश बनाया, क्या तुम सब्र करते हो? और आपका रब (सब कुछ) खूब देख रहा है।

(21) और उन लोगों ने कहा जो हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखतेः हम पर फरिश्ते क्यों नहीं नाज़िल किये गए या हम अपने रब को देखते? बिलाशुब्हे उन्होंने अपने जानों पर घमंड किया और बहुत बड़ी सरकशी की।

(22) जिस दिन वह फरिश्तों को देखेंगे उस दिन मुजरिमो के लिए कोई खुशखबरी नहीं होगी और वह (फरिश्ते) कहेंगेः (तुम पर जन्नत) ममनू (मना) है, हराम की गई है।

(23) और उन्होंने जो (बज़ाहिर नेक) अमल किये होंगे हम उनकी तरफ बढ़ कर उनको उड़ता हुआ परगन्दा गर्द गुबार बना देंगे।

(24) जन्नती लोग उस दिन बेहतरीन ठिकाने और अहसन (अच्छी) आराम गाह में होंगे।

(25) और जिस दिन आसमान बादलों के साथ फट जाएगा और फरिश्ते लगातार उतारे जाएँगे।

(26) उस दिन हक़ीक़ी बादशाही रहमान ही की होगी, और वह दिन काफिरों पर बहुत सख़्त होगा।

(27) और जिस दिन (हर) ज़ालिम अपने हाथ दाँतों से काट खाएगा (और) कहेगाः ऐ काश! मैं रसूल के साथ राह इख़्तियार करता।

(28) हाय मेरी कमबख़्ती! काश! मैं फलां (शख़्स) को दोस्त न बनाता।

(29) बिलाशुब्ह उसने मेरे पास ज़िक्र (कुरआन) आ जाने के बाद मुझे (उससे) बहका दिया और शैतान इन्सान को (मुसीबत में) बेयारो-मददगार छोड़ देने वाला है।

(30) और रसूल कहेंगेः ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने इस कुरआन को पसे पुश्त (पीठ पीछे) डाल दिया था।

(31) और इसी तरह हमने हर नबी के दुश्मन मुजरिमों में से बनाए और आपका रब हिदायत देने वाला और मददगार काफी है।

(32) और काफिरों ने कहाः इस पर यह कुरआन एक ही बार इकट्ठा क्यों नहीं नाज़िल किया गया? इसी तरह (हमने नाज़िल किया) है, ताकि हम इससे आपका दिल मज़बूत करें और हमने उसे ठहर ठहर कर पढ़ सुनाया है।

(33) और वह (काफिर) जब आपके पास कोई मिसाल (एतराज़) ले कर आएं तो हम (जवाब में) आपको हक़ और (उसकी) बेहतरीन तौजीह (वज़ाहत) व तफ्सीर बता देते हैं।

(34) जो लोग अपने चेहरों के बल जहन्नम की तरफ इकट्ठे किये जाएँगे, वही लोग बदतरीन मकान वाले और गुमराह तरीन राह वाले हैं।

(35) और बिलाशुब्ह हमने मूसा को किताब दी, और उसके साथ उसके भाई हारून को मददगार बनाया।

(36) फ़िर हमने कहाः तुम दोनों उस क़ौम की तरफ जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, फ़िर हमने उन्हें बिल्कुल ही हलाक करके रख दिया।

(37) और क़ौमे नूह को भी, जब उसने रसूलों को झुठलाया, हमने उन्हें ग़र्क़ कर दिया और हमने उन्हें लोगों के लिए इबरत का निशान बना दिया और हमने ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

(38) और क़ौमे आद और समूद और कुंवे वाले और उनके दरम्यान (दीगर) बहुत सी क़ौमों को भी (हमने हलाक कर दिया)।

(39) और हर एक के लिए हमने मिसालें बयान कीं, और सब को तबाह व बरबाद कर के मलिया मेट कर दिया।

(40) और बिलाशुब्ह यह लोग उस (क़ौम की) बस्ती पर से तो गुज़रते हैं जिस पर बदतरीन बारिश बरसाई गई, क्या फ़िर वह उसे देखते नहीं रहे? बल्कि वह दोबारा जी उठने की उम्मीद नहीं रखते थे।

(41) और (ऐ नबी!) जब वह आपको देखते हैं तो आपको हंसी मज़ाक का निशाना बनाते हैं (और कहते हैंः) क्या यही है वह जिसे अल्लाह ने रसूल बना कर भेजा है?

(42) बेशक वह तो हमें हमारे मअबूदों से

बहकाने ही लगा था अगर हम उन (मअबूदों की अक़ीदत) पर जमे न रहते और जल्द वह जान लेंगे जब अज़ाब देखेंगे सब से ज़्यादा बेराह कौन है?

(43) क्या आपने उसे देखा जिसने अपनी ख्वाहिश को मअ्बूद बना लिया है? क्या फ़िर आप उसके ज़िम्मेदार बनते हैं।

(44) या आप समझते हैं कि बेशक उनमें से अक्सर सुनते या समझते हैं? वह तो जानवरों की तरह हैं बल्कि उनसे भी गये गुज़रे हैं।

(45) क्या आपने अपने रब (की कुदरत) की तरफ नहीं देखा कि उसने साया कैसा फैलाया है? और अगर वह चाहता तो उसे साकिन (ठहरा हुआ) कर देता, फ़िर हमने सूरज को उस (साये) पर रहनुमा बनाया।

(46) फ़िर हमने उसे आहिस्ता आहिस्ता अपनी तरफ समेट लिया।

(47) और वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हारे लिए रात को लिबास और नींद को (ज़रिया आराम) बनाया, और उसने दिन को उठ खड़े होने का वक़्त बनाया।

(48) और वही (अल्लाह) है जिसने अपनी रहमत (बारिश) से पहले बशारत (खुश खबरी) देने वाली हवाऐं चलाईं और हमने आसमान से पाकिज़ा (पवित्र) पानी उतारा।

(49) ताकि हम उससे मुर्दा शहर को ज़िन्दा करें और हम अपनी मख़्लूक़ में से बहुत से मावेशियों और इन्सानों को वह (पानी) पिलाएं।

(50) और बिलाशुब्ह हमने इस (कुरआन) को उनके दरम्यान फ़ेर फ़ेर कर बयान किया ताकि वह नसीहत (उपदेश) पकड़ें, फ़िर भी अक्सर लोग नाशुक्री के बग़ेर नहीं रहते।

(51) और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेजते।

(52) इसलिए आप काफिरों की इताअत न करें और उनसे कुरआन के ज़रिए बड़े ज़ोर का जिहाद करें।

(53) और वही (अल्लाह) है जिसने दो समंदर मिलाए, यह मीठा है प्यास बुझाने वाला और यह खारा है बहुत कड़वा और उसने उन दोनों के दरम्यान एक परदा और मज़बूत आड़ रखी।

(54) और वही (अल्लाह) है जिसने पानी (मनी) से इन्सान को पैदा किया, फ़िर उसने नसबी (खानदानी) और सुसराली रिश्ते ठहराए। और आपका रब बड़ी कुदरत वाला है।

(55) और वह अल्लाह को छोड़ कर उनकी इबादत करते हैं जो उन्हें न नफा दे सकते हैं और न नुक्सान पहुँचा सकते हैं, और काफिर तो अपने रब के मुक़ाबले (शैतान का) मददगार है।

(56) और (ऐ नबी!) हमने आपको बशारत देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है।

(57) कह दीजिएः मैं तुमसे इस (तब्लीग) पर कोई बदला नहीं मांगता मगर जो यह चाहे कि अपने रब की तरफ राह पकड़े (वह उसे मान ले)।

(58) और आप उस हमेशा ज़िन्दा (अल्लाह) पर भरोसा कीजिए जिसे मौत नहीं आती और उसकी हम्द के साथ तस्बीह कीजिए और वह अपने बन्दों के गुनाहों से बाखबर रहने को काफी है।

(59) वह ज़ात जिसने पैदा किया आसमान और ज़मीन का और जो कुछ उन दोनों के दरम्यान है, छः दिनों में, फ़िर वह अर्श पर मुस्तवा (विरजमान) हुआ, (वही) रहमान है, लिहाज़ा किसी बाखबर से उसकी शान पूछ लें।

(60) और जब उनसे कहा जाए रहमान को सज्दा करो तो वह कहते हैंः क्या है रहमान? क्या हम उसे सज्दा करें जिसका तू हमें हुक्म देता है? और इस (तब्लीग) ने उनको नफरत में ज़्यादा कर दिया।

(61) वह ज़ात बड़ी बाबरकत है जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें चिराग़ (सूरज) और रोशन चाँद बनाया।

(62) और वही (अल्लाह) है जिसने एक दूसरे के पीछे आने वाले रात और दिन बनाऐ, उस शख़्स (की नसीहत) के लिए जो नसीहत (उपदेश) पकड़न चाहे या शुक्र करना चाहे।

(63) और रहमान के बन्दे वह हैं जो ज़मीन पर अहिस्तगी (वक़ार और आजिज़ी) से चलते हैं और जब जाहिल लोग उनसे बात करें तो वह कहते हैंः सलाम है।

(64) और वह जो अपने रब के हुज़ूर सज्दे और क़याम में रात गुज़ारते हैं।

(65) और जो कहते हैंः ऐ हमारे रब! हमसे जहन्नम का अज़ाब फ़ेर दे, बिलाशुब्ह उसका अज़ाब हमेशा चिमटने वाला है।

(66) बेशक वह (जहन्नम) ठहरने और क़याम करने की बुरी जगह है।

(67) और वह लोग कि जब वह खर्च करते हैं तो न इसराफ (फिजूलखर्ची) करते हैं और न तंगी (कंजूसी) ही, और उनका खर्च उनके दरम्यान होता है।

(68) और वह जो अल्लाह के साथ किसी और मअ़बूद को नहीं पुकारते, और वह किसी नफ्स को भी जिसे (मारना) अल्लाह ने हराम ठहराया है, नाहक़ क़त्ल नहीं करते और वह ज़िना नहीं करते और जो कोई यह काम करेगा, वह गुनाह की सज़ा पाएगा।

(69) क़यामत के दिन उसका अज़ाब दोगुना कर दिया जाएगा और वह उसमें हमेशा ज़लील व ख्वार रहेगा।

(70) मगर जिसने तौबा की और वह ईमान लाया और नेक अमल किये, तो उन्ही लोगों की बुराईयों का अल्लाह अच्छाईयों से बदल देगा, और अल्लाह गफ़ूर्रुरहीम है।

(71) और जो तौबा करे और नेक काम करे, तो बिलाशुब्ह वह अल्लाह से तौबा करता है जैसे तौबा करने का हक़ है।

(72) और वह जो झूठी शहादत नहीं देते और जब किसी लग्व और बेहूदा काम से उनका गुज़र हो तो वह इज्ज़त व वक़ार से गुज़र जाते है।

(73) और वह कि जब उन्हें उनके रब की आयतों के ज़रिये से नसीहत (उपदेश) की जाती है तो वह उन पर बहरे और अन्धे हो कर नहीं गिर पढ़ते।

(74) और वह जो कहते हैंः ऐ हमारे रब! हमें हमारी बीवियों और औलाद की तरफ से आँखों की ठन्डक अता कर और हमें मुत्तक़ियों का इमाम बना।

(75) उन्हीं लोगों को उनके सब्र के बदले (जन्नत के) बालाखाने (ऊँचे मकान) जज़ा (बदले) में मिलेंगे और वहाँ दुआ और सलाम के साथ उनका इस्क़बाल होगा।

(76) वह हमेशा वहाँ रहेंगे, वह (बहिश्त) बहुत अच्छी आरामगाह होगी।

(77) कह दीजिएः अगर तुम्हारी दुआ और इल्तिजा न होती तो मेरा रब तुम्हारी परवाह न करता, तुम (हक़ को) झुठला चुके हो, लिहाज़ा (तुम्हें) उसकी सज़ा जल्द चिमटेगी।

सूरह शोअरा-26

(यह मक्की सूरत है इसमें 227 आयतें और 11 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ता सीन मीम।

(2) यह वाज़ेह किताब की आयतें हैं।

(3) (ऐ नबीं!) शायद इस (ग़म) से कि वह लोग ईमान नहीं लाते आप खुद को हलाक (खत्म) ही कर लेंगे।

(4) अगर हम चाहें तो उन पर आसमान से कोई निशानी उतार दें, फ़िर उसके आगे उनकी गर्दनें झुकी ही रह जाएं।

(5) और रहमान के पास से जो भी कोई नई नसीहत (उपदेश) आती है तो वह उससे मुँह मोड़ लेते हैं।

(6) इसलिए यक़ीनन वह झुठला चुका, लिहाज़ा जल्द उनके पास उसकी खबरे आएँगी जिसका वह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

(7) क्या उन्होंने ज़मीन को नहीं देखा कि हमने उसमें हर क़िस्म की कितनी ही उम्दा (उच्च) चीज़ें उगाई हैं?

(8) बिलाशुब्ह इसमें अज़ीम निशानी है,

और उनमें से अक्सर ईमान लाने वाले नहीं।

(9) और बेशक आपका रब, वही है ग़ालिब, बहुत रहम करने वाला।

(10) और (याद करें) जब आपके रब ने मूसा को पुकारा कि तू ज़ालिम क़ौम के पास जा।

(11) (यानी) क़ौमे फ़िरऔन के पास, क्या वह डरते नहीं?

(12) मूसा ने कहाः ऐ मेरे रब! बेशक मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुठला देंगे।

(13) और मेरा सीना तंग होता है और मेरी ज़बान नहीं चलती, लिहाज़ा तू हारून की तरफ भी वह्यी भेज।

(14) और उनका मेरे ज़िम्मे एक गुनाह (जुर्म) है, लिहाज़ा मुझे ख़ौफ आता है कहीं वह मुझे क़त्ल ही कर दें।

(15) फरमायाः हरगिज़ नहीं! इसलिए तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, यक़ीनन हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं।

(16) इसलिए तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और उससे कहोः बिलाशुब्ह हम रब्बुलआलमीन के रसूल हैं।

(17) यह कि बनी इस्राईल को (आज़ाद कर के) हमारे साथ भेज दे।

(18) फ़िरऔन ने कहाः क्या हमने अपने पास बचपन में तेरी परवरिश नहीं की और तू हमारे दरम्यान अपनी उम्र के कई बरस नहीं रहा?

(19) और तू अपना वह काम कर गया जो कर गया और तू नाशुक्रों में से है।

(20) मूसा ने कहाः मैं ने वह काम उस वक़्त किया था जबकि मैं भटके हुए लोगों में से था।

(21) फ़िर जब मैं तुमसे डरा तो मैं तुमसे भाग गया, फ़िर मेरे रब ने मुझे हुक्म बख़्शा और उसने मुझे रसूलों में से बनाया।

(22) और (क्या यही है) वह अहसान (उपकार) जो तू मुझ पर अहसान जतलाता है कि तूने बनी इस्राईल को गुलाम बना रखा है।

(23) फ़िरऔन ने कहाः और रब्बुल आलमीन क्या है?

(24) मूसा ने कहाः वह आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उन दोनों के दरम्यान है, उनका रब है, अगर तुम यक़ीन करने वाले हो।

(25) उसने अपने इर्द गिर्द वालों (दरबारियों) से कहाः क्या तुम सुनते नहीं हो?

(26) मूसा ने कहाः (वह) तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का रब है।

(27) उसने कहाः बिलाशुब्ह तुम्हारा यह रसूल, जो तुम्हारी तरफ भेजा गया है, यक़ीनन दीवाना है।

(28) मूसा ने कहाः (वह) पूरब व पश्चिम और जो कुछ उन दोनों के दरम्यान है उनका रब है, अगर तुम अक़्ल रखते हो।

(29) उसने कहाः अलबत्ता अगर तूने मेरे सिवा कोई और मअ़बूद पकड़ा तो मैं ज़रूर तुझे क़ैदियों में शामिल कर दूंगा।

(30) मूसा ने कहाः अगरचे मैं तेरे पास कोई वाज़ेह शै (दलील) लाऊं (तब भी)?

(31) उसने कहाः अगर तू सच्चों में से है तो वह तू ले ही आ।

(32) इसलिए मूसा ने अपना लाठी डाली तो आनन फानन वह वाज़ेह साँप बन गया।

(33) और उसने अपना हाथ (बगल में से) खींच निकाला तो उसी वक़्त वह नाज़रीन को सफेद (चमकता) नज़र आया।

(34) फ़िरऔन ने अपने इर्दगिर्द मौजूद सरदारों से कहाः बिलाशुब्ह यह ज़रूर माहिर जादूगर है।

(35) वह चाहता है कि अपने जादू से तुम्हे तुम्हारी ज़मीन से निकाल दे, लिहाज़ा तुम क्या मशवरा देते हो?

(36) उन्होंने कहाः इसे और इसके भाई को ढील दे और शहरों में (जादूगरो को) इकट्ठा करने वाले भेज दे।

(37) (कि) वह हर माहिर जादूगर को तेरे पास ले आएं।

(38) इसलिए जादूगर एक मुक़र्रर दिन को (खास) वक़्त पर जमा कर लिए गए।

(39) और लोगों से कहा गयाः क्या तुम भी जमा होगे?

(40) ताकि अगर वह (जादूगर) ग़ालिब आए तो हम उन जादूगरों का इत्तेबा करें।

(41) फ़िर जब जादूगर आए तो वह फ़िरऔन से कहने लगेः अगर हम ही ग़ालिब आए तो क्या हमारे लिए कोई सिला (बदला) होगा?

(42) फ़िरऔन ने कहाः हाँ! और बेशक तब तुम मेरे क़रीबी लोगों में से होगे।

(43) मूसा ने कहाः जो कुछ तुमने डालना है, डाल दो।

(44) तब उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं और कहने लगेः फ़िरऔन की इज्ज़त की क़सम! बिलशुब्ह हम ही ग़ालिब हैं।

(45) फ़िर मूसा ने अपना लाठी डाली तो वह फौरन ही उसे निगलने लगा जो उन्होंने स्वांग रचाया था।

(46) इसलिए जादूगर बेइख़्तियार सज्दे में गिर पड़े।

(47) वह कहने लगेः हम रब्बुलआलमीन पर ईमान लाए।

(48) मूसा और हारून के रब पर।

(49) फ़िरऔन ने कहाः मेरे इजाज़त देने से पहले तुमने उसे मान लिया, बेशक वह

तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है, लिहाज़ा जल्द तुम जान लोगे, मैं ज़रूर तुम्हारे हाथ और पैर मुखालिफ तरफ से काट दूंगा और तुम सब को ज़रूर सूली चढ़ाऊंगा।

(50) वह कहने लगेः कोई हर्ज नहीं, बेशक हम अपने रब ही की तरफ लौटने वाले हैं।

(51) बेशक हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी खताऐं बख्श (क्षमा कर) देगा इसलिए कि हम पहले ईमान लाने वाले बने हैं।

(52) और हमने मूसा की तरफ वह्यी की कि तू मेरे बन्दों को ले कर रातों रात निकल चल, बिलाशुब्ह तुम्हारा पीछा किया जाएगा।

(53) फ़िर फ़िरऔन ने शहरों में इकट्ठा करने वाले भेजे।

(54) (यह पैगाम दे कर कि) बेशक यह (बनी इस्राईल) छोटी सी जमाअत हैं।

(55) और बिलाशुब्ह वह हमें गुस्सा दिलाने वाले हैं।

(56) और बिलाशुब्ह हम चौकस और होशियार जमाअत हैं।

(57) इसलिए हमने उन (फिरऔनियों) को बागों और चश्मों से निकाला।

(58) और खज़ानों और उम्दा क़याम गाहों से।

(59) इसी तरह हुआ और हमने बनी इस्राईल को उन चीज़ों का वारिस बनाया।

(60) इसलिए (फिरऔनी) सूरज निकलते ही उनके पीछे निकले।

(61) फ़िर जब दोनों जमाअतें आमने-सामने हुईं तो मूसा की कौम वाले कहने लगे यक़ीनन हम तो पकड़े गए।

(62) मूसा ने कहाः हरगिज़ नहीं! बिलाशुब्ह मेरा रब मेरे साथ है, वह ज़रूर मेरी रहनुमाई करेगा।

(63) तब हमने मूसा की तरफ वह्यी की कि अपनी लाठी समंदर पर मार, तो वह फट गया, फिर (समंदर का) हर टुकड़ा यूं हो गया जैसे अज़ीम पहाड़।

(64) और हम वहाँ दूसरों (फिरऔनियों) को क़रीब ले आए।

(65) और हमने मूसा और जो उसके हमराह थे, सबको बचा लिया।

(66) फ़िर हमने दूसरों का डूबो दिया।

(67) बिलाशुब्ह उसमें अज़ीम निशानी है, और उनके अक्सर मोमिन नहीं हैं।

(68) और बेशक आपका रब, वही है ग़ालिब, बहुत रहम करने वाला।

(69) और उन (कुफ्फार) को इब्राहीम की खबर सुनाइये।

(70) जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहाः तुम क्या पूजते हो?

(71) वह कहने लगेः हम बुत पूजते हैं, और हम हमेशा उन्हीं के पुजारी रहेंगे।

(72) इब्राहीम ने कहाः वह तुम्हें सुनते हैं जब तुम उन्हें पुकारते हो।

(73) या वह तुम्हें नफ़ा देते हैं या नुक्सान पहुँचाते हैं?

(74) उन्होंने कहाः (नहीं) बल्कि हमने अपने बाप दादा को पाया, वह इसी तरह करते थे।

(75) इब्राहीम ने कहाः क्या भला देखा तुमने जिनको तुम पूजते आ रहे हो।

(76) तुम और तुम्हारे अगले बाप दादा?

(77) तो बिलाशुब्ह वह मेरे दुश्मन हैं, सिवाए रब्बुलआलमीन के।

(78) जिसने मुझे पैदा किया, फ़िर वही मेरी रहनुमाई करता है।

(79) और वही मुझे खिलाता है और पिलाता है।

(80) और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मेरी रहनुमाई करता है।

(81) और वही मुझे मौत देगा, फ़िर मुझे ज़िन्दा करेगा।

(82) और वही जिससे मैं उम्मीद रखता हूँ कि क़यामत के दिन मेरी खताऐं बख्श देगा।

(83) ऐ मेरे रब! मुझे हिकमत अता फरमा और मुझे नेक लोगों के साथ मिला।

(84) और बाद वालों में मेरा ज़िक्रे खैर जारी रख।

(85) और मुझे नेअमतों वाली जन्नत के वारिसों में शामिल फरमा।

(86) और मेरे बाप को बख्श दे, बेशक वह गुमराहों में से था।

(87) और जिस दिन लोग दुबारा उठाए जाएँगे, मुझे रूस्वा न करना।

(88) जिस दिन न माल कोई नफ़ा देगा और न औलाद ही।

(89) मगर यह कि कोई अल्लाह के पास सलामती वाले दिल के साथ हाज़िर हो।

(90) और जन्नत मुत्तक़ीन के क़रीब की जाएगी।

(91) और दोजख गुमराहों के सामने लाई जाएगी।

(92) और उनसे कहा जाएगाः कहां हैं वह जिन्हें तुम पूजते थे।

(93) अल्लाह के सिवा? क्या वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं या वह बदला ले सकते हैं?

(94) फ़िर वह और (सब) गुमराह उस जहन्नम में औन्धे मुँह डाले जाएँगे।

(95) और इब्लीस के सारे लश्कर भी।

(96) वह कहेंगे जबकि वह वहाँ झगड़ रहे होंगे।

(97) अल्लाह की क़सम! यक़ीनन हम ही खुली गुमराही में थे।

(98) जबकि हम तुम्हें रब्बुलआलमीन के

बराबर ठहराते थे।

(99) और हमें तो उन्हीं (बड़े) मुजरिमों ने बहकाया था।

(100) तो (अब) हमारे लिए कोई सिफारिशी नहीं है।

(101) और न कोई मुख्लिस दोस्त।

(102) फ़िर काश कि हमारे लिए एक बार (दुनिया में) वापसी हो तो हम मोमिनों में से हो जाएं।

(103) बेशक इसमें अज़ीम निशानी है और उनके अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

(104) और बेशक आपका रब वही है ग़ालिब, बहुत रहम करने वाला।

(105) क़ौमे नूह ने रसूलों को झुठलाया।

(106) जब उनसे उनके भाई नूह ने कहाः क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं?

(107) बेशक मैं तुम्हारे लिए अमीन रसूल हूँ।

(108) लिहाज़ा तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

(109) और मैं तुमसे इस (तब्लीग) पर कोई अज्र और सिला (बदला) नहीं मांगता, मेरा अज्र तो रब्बुलआलमीन ही के ज़िम्मे है।

(110) लिहाज़ा तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

(111) उन्होंने कहाः क्या हम तुझ पर ईमान लाएं हालांकि तेरी पैरवी तो रज़ील लोगों ने ही है।

(112) नूह ने कहाः और मुझे उसका क्या इल्म जो वह अमल करते रहे हैं।

(113) उनका हिसाब तो मेरे रब के ज़िम्मे है अगर तुम कुछ समझ रखते हो।

(114) और मैं मोमिनों को दूर करने वाला नहीं।

(115) मैं तो खुल्लम खुल्ला डराने वाला हूँ।

(116) वह बोलेः ऐ नूह! अगर तू न रूका तो तुझे ज़रूर संगसार कर दिया जाएगा।

(117) नूह ने कहाः ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने मुझे झुठलाया है।

(118) लिहाज़ा तू मेरे और उनके दरम्यान फैसला फरमा और मुझे और जो मेरे हमराह मोमिन हैं उनको निजात दे।

(119) इसलिए हमने उसे और जो लोग भरी कश्ती में उसके साथ थे उनको निजात दी।

(120) फ़िर उसके बाद हमने बाक़ी सब को डूबा दिया।

(121) बेशक इसमें अज़ीम निशानी है, और उनके अक्सर मोमिन नहीं।

(122) और बिलाशुब्ह आपका रब, वही है ग़ालिब, बहुत रहम करने वाला।

(123) (क़ौमे) आद ने रसूलों को झुठलाया।

(124) जब उनके भाई हूद ने कहाः क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो?

(125) बेशक मैं तुम्हारे लिए अमीन रसूल हूँ।

(126) लिहाज़ा तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

(127) और मैं तुमसे इस (तब्लीग) पर कोई अज्र नहीं मांगता, मेरा अज्र तो रब्बुलआलमीन ही के ज़िम्मे है।

(128) क्या तुम हर ऊँची जगह पर बतौर खेल तमाशा यादगार बनाते हो?

(129) और तुम मज़बूत महल बनाते हो, शायद तुम हमेशा (यहीं) रहोगे।

(130) और जब तुम (किसी पर) हाथ डालते हो तो सरकश बन कर ही हाथ डालते हो।

(131) लिहाज़ा तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

(132) और तुम उस ज़ात से डरो जिसने तुम्हें उन चीज़ों में बढ़ाया (मदद दी) है जो तुम जानते हो।

(133) उसने तुम्हें बढ़ाया है मवेशियों और बेटों में।

(134) और बाग़ों और चश्मों में।

(135) बिलाशुब्ह मैं तुम पर यौमे अज़ीम (बड़े दिन) के अज़ाब से डरता हूँ।

(136) उन्होंने कहाः हमारे लिए बराबर है, चाहे तू वाज़ व नसीहत (उपदेश) करे या नसीहत (उपदेश) करने वालों में से न हो।

(137) और यह तो पहले लोगों ही की आदत है।

(138) और हम अज़ाब दिए जाने वाले नहीं।

(139) फ़िर उन्होंने उसे झुठलाया तो हमने उन्हें हलाक कर दिया, बिलाशुब्ह इसमें अज़ीम निशानी है और उनके अक्सर ईमान लाने वाले न थे।

(140) और बेशक आपका रब वही ग़ालिब, बहुत रहम करने वाला।

(141) (क़ौमे) समूद ने रसूलों को झुठलाया।

(142) जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहाः क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं?

(143) बिलाशुब्ह मैं तुम्हारे लिए अमीन रसूल हूँ।

(144) लिहाज़ा तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

(145) और मैं इस (तब्लीग) पर तुमसे कोई अज्र नहीं मांगता, मेरा अज्र तो रब्बुलआलमीन ही के ज़िम्मे है।

(146) क्या तुम्हें यहाँ की चीज़ों में पुरअम्न (शांतिपूर्वक) छोड़ दिया जाएगा।

(147) (यानी) बागों और चश्मों में।

(148) और खेतों और खजूरों में जिनके शगूफे नर्म व नाजुक और मुलायम हैं।

(149) और तुम इतराते हुए पहाड़ों से घर तराशते हो।

(150) इसलिए तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

(151) और तुम हद से बढ़ने वालों के हुक्म की इताअत न करो।

(152) जो ज़मीन में फसाद करते हैं और इस्लाह नहीं करते।

(153) उन्होंने कहाः बस तू सहरज़दा (जादू किये) लोगों में से है।

(154) तू हमारी तरह एक इन्सान ही तो है, लिहाज़ा अगर तू सच्चों में से है तो कोई निशानी (मोअज्ज़ा) ले आ।

(155) सालेह ने कहाः यह ऊँटनी (मोजिजा) है, (एक दिन) उसकी पीने की बारी है और एक मुक़र्रर दिन तुम्हारी पीने की बारी है।

(156) और उसे बुरी नियत से हाथ न लगाना वरना तुम्हें यौमें अज़ीम (बड़े दिन) का अज़ाब आ पकड़ेगा।

(157) फ़िर उन्होंने उसकी टांगे काट डालीं, फ़िर वह नादिम (शर्मशार) हुए।

(158) फ़िर उन्हें अज़ाब ने आ पकड़ा, बेशक इसमें अज़ीम निशानी है और उनके अक्सर ईमान लाने वाले न थे।

(159) और बेशक आपका रब वही है ग़ालिब, बहुत रहम करने वाला।

(160) क़ौमे लूत ने रसूलों को झुठलाया।

(161) जब उनसे उनके भाई लूत ने कहाः क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं?

(162) बिलाशुब्ह मैं अमीन रसूल हूँ।

(163) लिहाज़ा तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

(164) और मैं इस पर तुमसे कोई अज्र नहीं मांगता, मेरा अज्र तो रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है।

(165) क्या तुम (जिन्सी तस्कीन की खातिर) जहान के मर्दों के पास आते हो?

(166) और तुम अपनी बीवियों छोड़ देते हो जिन्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए पैदा किया है, बल्कि तुम लोग हद से गुज़रने वाले हो।

(167) उन्होंने कहाः ऐ लूत! अगर तू बाज़ न आया तो यक़ीनन तुझे निकाल दिया जाएगा।

(168) लूत ने कहाः बेशक मैं तुम्हारे अमल का सख़्त दुश्मन हूँ।

(169) ऐ मेरे रब! तू मुझे और मेरे अहल को इस अमल (के बवाल) से निजात दे जो वह करते हैं।

(170) इसलिए हमने उसे और उसके सब अहल को निजात दी।

(171) सिवाए एक बुढ़िया के (जो) पीछे रहने वालों में से थी।

(172) फ़िर हमने दूसरों को हलाक कर दिया।

(173) और हमने उन पर (पत्थरों की) बारिश बरसाई, डराए गए लोगों पर (बरसाई गई) बदतरीन बारिश थी।

(174) बेशक इसमें अज़ीम (बड़ी) निशानी है और उनके अक्सर ईमान लाने वाले न थे।

(175) और बेशक आपका रब वही है ग़ालिब, बहुत रहम करने वाला।

(176) असहाबे ऐका ने रसूलों को झुठलाया।

(177) जब उनसे शुऐब ने कहाः क्या तुम डरते नहीं?

(178) बेशक मैं तुम्हारे लिए अमीन रसूल हूँ।

(179) लिहाज़ा तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

(180) और मैं इस (तब्लीग) पर तुमसे कोई अज्र नहीं मांगता, मेरा अज्र तो रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है।

(181) तुम माप पूरा भरा करो और दूसरों को नुक्सान देने वाले न बनो।

(182) और तुम बिल्कुल सीधी तराजू से तौलो।

(183) और तुम लोगों को उनकी चीज़ें कम न दो, और न तुम ज़मीन में फसाद करते हुए दौड़ो।

(184) और उस (अल्लाह) से डरो जिसने तुम्हें और पहली मख्लूक़ को पैदा किया।

(185) उन्होंने कहाः बस तू तो उन्हीं लोगों में से है जिन पर ज़बरदस्त जादू किया गया है।

(186) और तू हमारी तरह इन्सान ही तो है, और हम तुझे बिलाशुब्ह झूठों में ख्याल करते हैं।

(187) लिहाज़ा अगर तू सच्चों में से है तो हम पर आसमान से एक टुकड़ा गिरा दे।

(188) शुऐब ने कहाः मेरा रब खूब जानता है जो तुम अमल करते हो।

(189) इसलिए उन्होंने उसे (शुऐब को) झुठलाया, तो उन्हें साये वाले दिन के अज़ाब ने आन पकड़ा, बेशक वह यौमे अज़ीम (बड़े दिन) का अज़ाब था।

(190) बिलाशुब्ह इसमें अज़ीम निशानी है और उनके अक्सर ईमान लाने वाले न थे।

(191) और बेशक आपका रब, वही है ग़ालिब, बहुत रहम करने वाला।

(192) और बिलाशुब्ह यह (कुरआन) रब्बुलआलमीन का नाज़िल करदा है।

(193) रूहुलअमीन (जिब्रईल) उसे ले कर

नाज़िल हुआ।

(194) आपके दिल पर ताकि आप डराने वालों में से हों।

(195) फसीह (साफ) अरबी ज़बान में।

(196) और बिलाशुब्ह वह (कुरआन का ज़िक्र) पहली किताबों में भी है।

(197) क्या उनके लिए यह एक निशानी (काफी) नहीं कि बनीइस्राईल के उलमा भी इस (कुरआन या साहबे कुरआन) को जानते हैं?

(198) अगर हम इस (कुरआन) को किसी अ़ज़्मी (गैर-अरबी) पर नाज़िल करते।

(199) फ़िर वह उसे उन पर पढ़ता (तो भी) वह उस पर ईमान न लाते।

(200) इसी तरह हमने इस (झूठ) को मुजरिमों के दिलों में बैठाया है।

(201) वह इस पर ईमान नहीं लाएँगे यहाँ तक कि वह दर्दनाक अज़ाब देख लें।

(202) इसलिए वह उन पर अचानक आ पड़ेगा जबकि उन्हें खबर तक न होगी।

(203) फ़िर वह कहेंगेः क्या हमें (कुछ) मुहलत मिल सकती हैं?

(204) क्या वह लोग हमारा अज़ाब जल्द मांगते हैं?

(205) भला आप देखे तो! अगर हम उन्हें कई बरस (दुनिया का) मज़ा उठाने दें।

(206) फ़िर वह (अज़ाब) उन आ जाए जिससे उन्हें डराया धमकाया जा रहा है।

(207) तो जिस (सामने ऐ़श) से वह मज़ा उड़ा रहे थे उनके कुछ काम न आएगा।

(208) और हमने जिस बस्ती को भी हलाक किया, तो (पहले) उसके लिए डराने वाले (भेजे) थे।

(209) याद्दहानी के लिए, और हम ज़ालिम नहीं हैं।

(210) और शैतान इस (कुरआन) को ले कर नाज़िल नहीं हुए।

(211) और न यह उन के लायक़ है और न वह इसकी ताक़त ही रखते हैं।

(212) बिलाशुब्ह वह तो इसके सुनने से भी दूर रखे गए हैं।

(213) इसलिए (ऐ नबी!) आप अल्लाह के साथ किसी और मअ़बूद को मत पुकारें वरना आप अज़ाब पाने वालों में शामिल होंगे।

(214) और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराएं।

(215) और जो मोमिनों में से आपकी इत्तेबा करें, उनके लिए अपने बाजू झुकाए रखें।

(216) फ़िर अगर वह आपकी नाफरमानी करें तो कह दीजिएः बिलाशुब्ह तुम जो कुछ कर रहे हो, मैं उससे बरी हूँ।

(217) और आप (अल्लाह) ग़ालिब, रहीम

पर भरोसा रखें।

(218) जो आपको देखता है जब आप (अकेले नमाज़ में) क़याम करते हैं।

(219) और सज्दा करने वालों के साथ आपका उठना बैठना (भी देखता है।)

(220) बिलाशुब्ह वही (अल्लाह) समी (सुनने वाला), अलीम (जानने वाला) है।

(221) क्या मैं तुम्हे बताऊँ किस पर शैतान नाज़िल होते हैं?

(222) वह हर झूठ गढ़ने वाले, गुनाहगार पर नाज़िल होते हैं।

(223) जो (शैतानों की तरफ) कान लगाते हैं और उनके अक्सर झूठे हैं।

(224) और शायरों की पैरवी गुमराह लोग ही करते हैं।

(225) क्या आपने देखा नहीं कि बिलाशुब्ह वह (ख्याल की) हर वादी में सर मारते फिरते हैं।

(226) और बिलाशुब्ह वह (ऐसी बातें) कहते हैं जो करते नहीं।

(227) सिवाए उनके जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये और अल्लाह का बकसरत ज़िक्र किया और जब उन पर जुल्म हुआ तो उसके बाद उन्होंने बदला लिया, और ज़ालिम लोग जल्द जान लेंगे कि कौन सी लोटने की (ख़ौफनाक) जगह वह लौटेंगे।

सूरह नमल-27

(यह मक्की सूरत है इसमें 93 आयतें और 7 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ता सीन, यह कुरआन और रोशन किताब की आयतें हैं।

(2) (यह) हिदायत (मार्ग-दर्शन) और बशारत (खुशखबरी) है (उन) मोमिनों के लिए।

(3) जो नमाज़ क़ायम करते हैं, और ज़कात देते हैं और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।

(4) बिलाशुब्ह जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, हमने उनके लिए उनके आमाल (कर्म) पुर कशिश (शोभायमान) बना दिए हैं, लिहाज़ा वह भटके फिरते हैं।

(5) वही लोग हैं जिन के लिए बदतरीन अज़ाब है और आख़िरत में भी वही ज़्यादा खसारे (नुक्सान) में होंगे।

(6) और (ऐ नबीं!) बिलाशुब्ह आपको तो एक हकीम (हिक्मत वाले), अलीम (जानने वाले) की तरफ से यह कुरआन सिखाया

जाता है।

(7) (वह वक़्त याद करें) जब मूसा ने अपनी एहलिया (बीवी) से कहाः बेशक मैं ने आग देखी है, मैं अभी तुम्हारे पास वहाँ से कोई खबर या सुलगता अंगारा लाऊंगा ताकि तुम तापो।

(8) इसलिए जब मूसा उस (आग) के पास पहुँचा तो उसे आवाज़ दी गई कि मुबारक है वह जो इस आग (नूर) में है और जो उसके आस पास है और अल्लाह रब्बुलआलमीन पाक है।

(9) ऐ मूसा! बिलाशुब्ह मैं ही अल्लाह हूँ, निहायत ग़ालिब, खूब हिकमत वाला।

(10) और अपनी लाठी डाल दे, इसलिए जब (मूसा ने लाठी डाली और) उसे देखा कि वह हरकत कर रहा है जैसे कि वह सांप है तो पीठ फ़ेर कर पलटा और पीछे मुड़ कर न देखा, (अल्लाह ने फरमायाः) ऐ मूसा! मत डर, बिलाशुब्ह मेरे हुजूर में रसूल डरा नहीं करते।

(11) मगर जिसने जुल्म किया, फ़िर उसने बुराई के बाद (बुरे आमाल को) बदल कर नेकी की, तो बिलाशुब्ह मैं गफूर्रुरहीम हूँ।

(12) और अपना हाथ अपने गिरेबान में दाख़िल कर, वह सफेद (चमकता हुआ) बेऐब निकलेगा, यह उन नौ निशानियों (मोजिज़े) में से है (जिनके साथ तुम्हें) फ़िरऔन और उसकी क़ौम की तरफ (भेजा गया है) बेशक वह नाफरमान लोग हैं।

(13) फ़िर जब उनके पास हमारे वाज़ेह रोशन मोजिज़े (सत्य चमत्कार) पहुँचे तो उन्होंने कहाः यह तो सरीह (खुला) जादू है।

(14) और उन्होंने जुल्म और घमंड की वजह से उनका इन्कार कर दिया जबकि उनके दिलों ने उनका यक़ीन कर लिया था। फ़िर देखे फसादियों का अन्जाम कैसा हुआ?

(15) और बिलाशुब्ह हमने दाऊद और सुलेमान को (खास) इल्म दिया था, और उन दोनों ने कहाः तमाम हम्द अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें अपने बहुत से मोमिन बन्दों पर फज़ीलत दी।

(16) और दाऊद का वारिस सुलेमान बना और उसने कहाः ऐ लोगो! हमें परिन्दों की बोली सिखाई गई है और हमें हर चीज़ दी गई है, बिलाशुब्ह यह तो साफ (अल्लाह का) फज़्ल है।

(17) और सुलेमान के पास उसके सारे लश्कर, जिन्नों, इन्सानों और परिन्दों में से जमा किये गए और उनकी दरजा बन्दी की जा रही थी।

(18) यहाँ तक कि जब वह चीटिंयों की वादी में पहुँचे, तो एक चींटी ने कहाः ऐ चीटिंयों! तुम अपने बिलों में दाख़िल हो जाओ, कहीं सुलेमान और उसके लश्कर तुम्हें

कुचल न डालें जबकि उन्हें (इसकी) खबर ही न हो।

(19) इसलिए सुलेमान उस (चींटी) की बात पर मुस्करा कर हँस दिया और कहाः ऐ मेरे रब! मुझे तौफीक़ दे कि मैं तेरी इस नेअमत का शुक्र करूं जो तूने मुझ पर और मेरे वाल्दैन पर इनआम की है और इस बात की भी कि मैं ऐसे नेक काम करू जो तू पसंद करे और मुझे अपनी रहमत से अपने नेक बन्दों में दाख़िल कर।

(20) और उसने परिन्दों का जायज़ा लिया तो कहाः क्या बात है कि मझे हुदहुद नज़र नहीं आ रहा है? (क्या वह मौजूद है) या वाक़ई कहीं गायब हो गया है?

(21) (यही बात है तो) मैं उसे ज़रूर सज़ा दूंगा, सख्त सज़ा या उसे ज़िब्ह ही कर दूंगा या वह मेरे पास कोई वाज़ेह दलील लाए।

(22) अभी कोई ज़्यादा मुद्दत नहीं गुज़री थी, तो (हुदहुद आ गया और) उसने कहाः मैं वह बात मालूम कर के आया हूँ जो आपको मालूम नहीं और मैं आपके पास सबा से एक यक़ीनी ख़बर लाया हूँ।

(23) बिलाशुब्ह मैंने देखा कि एक औरत उन पर हुकूमत करती है और उसे (ज़रूरत की) हर चीज़ अता की गई है और उसका तख्त अज़ीमुश्शान है।

(24) मैं ने उसे और उसकी क़ौम को देखा कि वह अल्लाह के सिवा सूरज को सज्दा करते हैं और शैतान ने उनके आमाल उनके लिए पुरकशिश बना दिए हैं, फ़िर उन्हें राहे (हक़) से रोक दिया है, इसलिए वह हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं पाते।

(25) यह कि वह उस अल्लाह को सज्दा करें जो आसमानों और ज़मीन में छुपी चीज़ें निकालता है और वह (सब कुछ) जानता है जो तुम छुपाते हो और जो ज़ाहिर करते हो।

(26) अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वही अर्शे अज़ीम का मालिक है।

(27) सुलेमान ने कहाः हम अभी देखेंगे तूने सच कहा या तू झूठों में से (एक झूठा) है।

(28) मेरा यह खत ले जा और उसे उनकी तरफ डाल दे, फ़िर उनसे हट कर देख कि वह क्या जवाब देते हैं।

(29) बिलक़ीस ने कहाः ऐ दरबारियों! बिलाशुब्ह मेरे पास एक गिरामी नामा (खत) डाला गया है।

(30) बेशक वह सुलेमान की तरफ से है और बेशक उसका आगाज़ अल्लाह के नाम से है जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(31) यह कि तुम मेरे मुक़ाबले में सरकशी

न करो, और फ़रमाबरदार हो कर मेरे पास चले आओ।

(32) बिलक़ीस ने कहाः ऐ दरबारियों! मेरे इस मामले में मुझे मशवरा (राय) दो, किसी मामले का क़तई फैसला मैं उस वक़्त तक नहीं करती जब तक तुम मेरे पास मौजूद न हो (और मुझे मशवरा न दो)।

(33) उन्होंने कहाः हम कुव्वत वाले और सख़्त जंगजू हैं और (फैसले का) तमाम इख़्तियार आपके पास है, आप खुद देख लें कि आप क्या हुक्म देती हैं।

(34) उसने कहाः बिलाशुब्ह बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे खराब करते और उसके बाइज्ज़त लोगों को ज़लील करते हैं, और (यह भी) उसी तरह करेंगे।

(35) और बेशक मैं उनकी तरफ कोई हदिया (उपहार) भेजती हूँ, देखती हूँ क़ासिद (दूत) क्या (जवाब) ले कर लौटता हैं।

(36) इसलिए जब क़ासिद सुलेमान के पास पहुँचा, तो सुलेमान ने कहाः क्या तुम माल के साथ मेरी मदद करना चाहते हो, मुझे अल्लाह ने जो दिया है वह इससे बेहतर है जो उसने तुम्हें दिया है बल्कि तुम खुद ही अपने हदिये (उपहार) के साथ खुश रहो।

(37) तू उनके पास लौट जा, अब हम ज़रूर उन पर ऐसे लश्करों से चढ़ाई करेंगे कि उन (तुम्हारे लोगों) में उनके मुक़ाबले आने की हिम्मत न होगी और हम ज़रूर उन्हें ज़लील कर के वहाँ से निकाल देंगे और वह ख्वार (अपमानित) होंगे।

(38) (फ़िर) सुलेमान ने कहाः ऐ दरबारियों! तुममें से कौन है जो उनको मेरे पास फरमाबदार हो कर आने से पहले उस (बिलक़ीस) का तख़्त मेरे पास ले आए।

(39) जिन्नों में से एक देव (ताक़तवर जिन्न) ने कहाः वह मैं आपको ला देता हूँ, इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठे और बिलाशुब्ह मैं इसकी ताक़त रखता हूँ और मैं अमीन भी हूँ।

(40) जिसके पास किताब का इल्म था, उसने कहाः आपकी पलक झपकने से भी पहले वह तख़्त मैं आपको ला देता हूँ, फ़िर जब सुलेमान ने वह तख़्त अपने पास रखा हुआ देखा तो कहाः यह मेरे रब का फज़्ल(अनुग्रह) है ताकि वह मुझे आज़माए कि क्या मैं शुक्र (कृतज्ञता) करता हूँ या नशुक्री, और जो कोई शुक्र करे तो बस वह अपने ही लिए शुक्र करता है और जो कोई नाशुक्री करे तो बिलाशुब्ह मेरा रब बेपरवा (अपेक्षारहित), करीम (उदार) है।

(41) सुलेमान ने कहाः तुम उसके लिए उसके तख़्त की शक्ल बदल दो, हम देखते हैं वह राह पाती है या वह उन लोगों में से है जो राह नहीं पाते।

(42) फ़िर जब वह आई तो कहा गयाः क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है? वह बोलीः जैसे कि यह वही है और हमें इससे पहले ही इल्म हो चुका था और हम ताबेदार बन गए थे।

(43) और उसे (इबदते इलाही से) उस चीज़ ने रोक रखा था जिसकी वह अल्लाह के सिवा इबादत करती थी क्योंकि वह काफिर क़ौम में से थी।

(44) उससे कहा गयाः तू महल में दाख़िल हो जा, फ़िर जब उसने उसको देखा तो उसे गहरा पानी समझा और अपनी दोनों पिन्डलियां खोल दी, सुलेमान ने कहाः यह तो शीशों से जड़ा महल है, उसने कहाः ऐ मेरे रब! बेशक (अब तक सूरज की इबादत करके) मैंने अपने नफ़्स (जान) पर जुल्म किया और (अब) मैं सुलेमान के साथ अल्लाह रब्बुल आलमीन की फ़रमाबरदार हो गई हूँ।

(45) और बिलाशुब्ह हमने समूद की तरफ उनके भाई सालेह को भेजा कि अल्लाह की इबादत करो, तो उसी वक़्त वह लोग दो फरीक़ (मोमिन और काफिर) हो कर झगड़ने लगे।

(46) सालेह ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम भलाई (रहमत) से पहले बुराई (अज़ाब) क्यों तलब करते हो? तुम अल्लाह से मग्फिरत क्यों नहीं तलब करते ताकि तुम पर रहम किया जाए?

(47) उन्होंने कहाः हम तुम्हें और तुम्हारे साथियों को मनहूस (अपशकुन) समझते हैं, सालेह ने कहाः तुम्हारी नहूसत (शकुन-अपशकुन) तो अल्लाह के पास (उसके इख़्तियार में) है बल्कि तुम लोग तो आज़माए जा रहे हो।

(48) और उस शहर में नौ सरगने थे, वह ज़मीन में फसाद फैलाते रहते थे और इस्लाह नहीं करते थे।

(49) उन्होंने कहाः तुम आपस में अल्लाह की क़सम खाओ कि हम ज़रूर सालेह और उसके घरवालों पर रात में हमला करेंगे, फ़िर हम उसके वारिस से कहेंगे कि हम उसके घर वालों की हलाकत के वक़्त मौजूद न थे और बिलाशुब्ह हम सच्चे हैं।

(50) और उन्होंने एक चाल चली और हमने भी एक चाल चली और उन्हें ख़बर तक न हुई।

(51) फ़िर देखे! उनकी चाल का अन्जाम क्या हुआ, बिलाशुब्ह हमने उन (नौ सरगनों) को और उनकी सब क़ौम को तबह व बरबाद कर दिया।

(52) इसलिए यह हैं उनके घर खाली (उजड़े और वीरान) पड़े हुए, इसलिए कि उन्होंने जुल्म किया, बिलाशुब्ह इसमें इबरत (नसीहत) के लिए निशानी है उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं।

(53) और हमने उन्हें निजात दी जो ईमान लाए और वह (अल्लाह से) डरते थे।

(54) और (याद करें) लूत को जब उसने अपनी क़ौम से कहाः क्या तुम बेहयाई (बदकारी) करते हो जबकि तुम देखते हो (कि यह बेहायई है।)

(55) क्या तुम शवहत (कामेच्छा) के लिए (अपनी) औरतों को छोड़ कर मर्दों के पास आते हो? बल्कि तुम लोग तो जहालत के काम करते हो।

(56) फ़िर उसकी क़ौम का इसके सिवा कोई जवाब न था कि उन्होंने कहाः आले लूत को अपनी बस्ती से निकाल दो क्योंकि यह लोग बड़े पाक साफ बनते हैं।

(57) फ़िर हमने उसे और उसके अहले खाना को निजात दी, सिवाए उसकी बीवी के, हमने फैसला कर दिया था कि वह पीछे रहने वालों में से होगी।

(58) और हमने उन पर (पत्थरों की) बारिश बरसाई, तो डराऐ गए लोगों पर (पत्थरों की) बदतरीन बारिश बरसाई गई थी।

(59) (ऐ नबी!) कह दीजिएः तमाम हम्द अल्लाह ही के लिए है और उसके उन बन्दों पर सलाम है जिन्हें उसने चुन लिया, क्या अल्लाह बेहतर है या वह जिन्हें लोग शरीक ठहराते हैं?

(60) (क्या यह मअबूदाने बातिला बेहतर हैं) यह वह (अल्लाह) जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा? फ़िर हमने उससे ऐसे पुर रौनक़ बाग उगाए जिनके दरख़्त उगाने की तुम्हें क़ुदरत न थी, क्या अल्लाह के साथ कोई (और) मअ़बूद है? बल्कि (यह) वह लोग हैं जो (गैरूल्लाह को अल्लाह के) बराबर ठहराते हैं।

(61) (क्या यह बुत बेहतर हैं) या वह (अल्लाह) जिसने ज़मीन ठहरने के लायक़ बनाई, और उसके दरम्यान नहरें बनाई और उसके लिए उसने पहाड़ बनाए, और दो समन्दरों के दरम्यान आड़ रखी? क्या अल्लाह के साथ कोई (और) इलाह है? (नहीं!) बल्कि उनके अक्सर इल्म नहीं रखते।

(62) (क्या यह बुत बेहतर हैं) या वह (अल्लाह) जो मजबूर व लाचार की दुआ क़बूल करता है जब वह उसे पुकारता है, और वह उसकी तकलीफ दूर कर देता है, और वह तुम्हें ज़मीन में जाँनशीन (उत्तराधिकारी) बनाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई (और) मअ़बूद है? तुम कम ही नसीहत (उपदेश) हासिल करते हो।

(63) (क्या यह बुत बेहतर हैं) या वह (अल्लाह) जो तुम्हें ज़मीन और समुद्र के अन्धेरों में राह दिखाता है और जो अपनी रहमत (बारिश) से पहले खुशखबरी देने वाली

हवाऐं भेजता है? क्या अल्लाह के साथ कोई (और) मअ़बूद है? अल्लाह उससे कहीं आला है जिसे वह शरीक ठहराते हैं।

(64) (क्या यह बुत बेहतर हैं) या वह (अल्लाह) जो मख़्लूक़ को पहली बार पैदा करता है, फ़िर उसको लौटाएगा, और वह जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ देता है? क्या अल्लाह के साथ कोई (और) इलाह है? कह दीजिएः अगर तुम सच्चे हो तो अपनी कोई दलील ले आओ।

(65) कह दीजिएः आसमानों और ज़मीन में अल्लाह के सिवा कोई भी ग़ैब की बात नहीं जानता, और वह (खुद साख्ता मअ़बूद) तो यह भी नहीं जानते कि वह (क़ब्रों से) कब उठाए जाएँगे।

(66) बल्कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म खत्म हो चुका बल्कि वह आख़िरत के बारे में शक में हैं, बल्कि वह उससे अन्धे हैं।

(67) और काफिरों ने कहाः क्या जब हम और हमारे बाप-दादा मिट्टी हो जाएँगे तो क्या हमें (फ़िर क़ब्रों से) निकाला जाएगा?

(68) बिलाशुब्ह हमें और हमसे पहले हमारे बाप-दादा को भी यह वादे दिए जाते रहे हैं, लेकिन यह तो महज़ पहले लोगों के अफसाने (कहानियां) हैं।

(69) कह दीजिएः तुम ज़मीन में सफर करो, फ़िर देखो मुजरिमों का अन्जाम कैसा हुआ?

(70) और (ऐ नबी!) आप उन पर ग़म न करें और न उनके मक्रो फरेब पर तंगी महसूस करें जो मक्र (धोखा) वह कर रहे हैं।

(71) और वह कहते हैंः अगर तुम सच्चे हो तो यह (अज़ाब का) वादा कब पूरा होगा?

(72) आप कह दीजिएः जो अज़ाब तुम जल्दी तलब करते हो शायद (उसमें से) कुछ तुम्हारे क़रीब आ लगा हो।

(73) और बेशक आपका रब लोगों पर बहुत फज़्ल (फरमाने) वाला है लेकिन उनके अक्सर शुक्र नहीं करते।

(74) और बिलाशुब्ह आपका रब (वह बातें) जानता है जो उनके सीने छुपाते हैं और जो कुछ वह ज़ाहिर करते है।

(75) और आसमान व ज़मीन में गायब कोई चीज़ ऐसी नहीं जो किताबे मुबीन (लोहे महफूज़) में (लिखी हुई) न हो।

(76) बेशक यह कुरआन बनी इस्राईल पर अक्सर वह बातें बयान करता है जिनमें वह इख़्तिलाफ करते हैं।

(77) और बिलाशुब्ह यह (कुरआन) मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है।

(78) बेशक आपका रब उनके दरम्यान अपने हुक्म से फैसला करेगा और वह निहायत ग़ालिब (प्रभावशाली) है, बहुत इल्म वाला है।

(79) लिहाज़ा (ऐ नबी!) आप अल्लाह पर भरोसा करें, बिलाशुब्ह आप वाज़ेह हक़ पर हैं।

(80) यक़ीनन आप मुर्दो को नहीं सुना सकते, और न आप बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हैं जबकि वह पीठ फ़ेर कर फ़िर जाएं।

(81) और न आप अन्धों को उनकी गुमराही से राहे हिदायत (मार्ग-दर्शन) पर ला सकते हैं, आप तो बस उन्हें ही सुना सकते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, तो वही फ़रमाबरदार हैं।

(82) और जब उन पर (हमारा) क़ौल (बात) वाक़ई (होने को) होगा तो हम उनके लिए ज़मीन से एक जानवर निकालेंगे, वह उनसे कलाम करेगा कि बेशक यह लोग हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं रखते थे।

(83) और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह इकट्ठा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, फ़िर उनकी दरजा बन्दी की जाएगी।

(84) यहाँ तक कि जब वह सब (मैदाने महशर में) आ पहुँचेंगे तो अल्लाह फरमाएगाः क्या तुमने मेरी आयतों को झुठलाया था जबकि तुमने उनका पूरा इल्म हासिल नहीं किया था, या क्या था जो तुम किया करते थे?

(85) और उनके जुल्म की वजह से उन पर (अज़ाब की) बात पूरी हो जाएगी, तो वह (कुछ भी) नहीं बोल सकेंगे।

(86) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात बनाई ताकि वह उसमें आराम व सुकून करें और दिन को दिखाने वाला (रोशन बनाया?) बिलाशुब्ह उसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान लाते हैं।

(87) और जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो जो कोई आसमानों में है और जो कोई ज़मीन में है (सब) घबरा उठेंगे, सिवाए उसके जिसे अल्लाह चाहे, और सब हक़ीर बन कर अल्लाह के हुज़ूर जाएँगे।

(88) और आप पहाड़ों को देखेंगे तो उनको जामिद (अपनी जगह जमे हुए) समझेंगे जबकि वह बादलों के चलने की तरह चल रहे होंगे, यह अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज़ को पुख़्ता और मज़बूत बनाया, बेशक वह बाखबर है उससे जो तुम करते हो।

(89) जो शख़्स नेकी लाएगा, तो उसके लिए उससे बहुत बेहतर (बदला) होगा और वह उस दिन हर घबराहट से बेख़ौफ होंगे।

(90) और जो शख़्स बुराई लाएगा, तो उनके मुँह आग में औन्धे कर दिए जाएँगे (और कहा जाएगाः) तुम बस उसी का बदला पाओगे जो तुम अमल करते थे।

(91) (आप कह दीजिएः) बस मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूं जिसने इसे हुरमत बख़्शी है और हर शै (चीज़) उसी के लिए है, और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं मुसलमानों में से हो जाऊं।

(92) और यह कि मैं कुरआन की तिलावत करूं, फ़िर जिसने हिदायत (मार्ग-दर्शन) पाई तो बस वह अपनी ही ज़ात के लिए हिदायत पाता है और जो गुमराह हुआ तो आप कह दीजिएः मैं तो सिर्फ डराने वालों में से हूँ।

(93) और कह दीजिएः तमाम हम्द अल्लाह ही के लिए है, वह जल्द ही तुम्हें अपनी निशानियां दिखाएगा, फ़िर तुम उन्हें पहचान लोगे और जो कुछ तुम अमल करते रहे हो आपका रब उससे ग़ाफिल नहीं।

सूरह क़सस-28

(यह मक्की सूरत है इसमें 88 आयतें और 9 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ता सीन मीम।

(2) यह वाज़ेह किताब की आयतें हैं।

(3) हम आपको मूसा और फ़िरऔन का कुछ हाल ठीक ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।

(4) बेशक फ़िरऔन ने ज़मीन (मिस्र) में सरकशी की और उसने अहले मिस्र के कई गिरोह बना दिए, उनमे से एक गिरोह (बनी इस्राईल) को उसने ज़ईफ (कमज़ोर) जान कर दबा रखा था, वह उनके बेटे ज़िब्ह करता और उनकी बेटियां ज़िन्दा रखता, बिलाशुब्ह वह फसादियों में से था।

(5) और हम चाहते थे कि उन लोगों पर अहसान करें जिन्हें ज़मीन में ज़ईफ जान (कर दबा) लिया गया था और उन्हें पेशवा बनाएँ और उन्हें (मुल्क मिस्र के) वारिस बनाएँ।

(6) और (यह कि) हम उन्हें ज़मीन (फिलिस्तीन) में इक्तिदार (आधिपत्य) बख़्शें और हम फ़िरऔन और हामान और और उन दोनों के लश्करों को उन (कमज़ोर लोगों) के हाथों वह चीज़ दिखाएँ जिससे वह डरते थे।

(7) और हम ने मूसा की माँ को इलहाम किया कि तू उसे दूध पिला, फ़िर जब तू उसके बारे में डरे तो उसे दरिया में डाल देना और न डरना और न ग़म खाना, बेशक हम उसे तेरी तरफ लोटाने वाले हैं और उसे रसूल बनाने वाले हैं।

(8) इसलिए फ़िरऔन के घर वालों ने उसे (दरिया से) उठा लिया ताकि वह उनके लिए दुश्मन और ग़म की वजह बने, बिलाशुब्ह

फ़िरऔन और हामान और उन दोनों के लश्कर खताकार (अपराधी) थे।

(9) और फ़िरऔन की बीवी ने कहाः (यह तो) मेरे लिए और तेरे लिए आँखो की ठन्डक है, इसे क़त्ल न करो, शायद यह हमें नफा (लाभ) दे या हम इसे बेटा बना लें और वह (अन्जाम से) बेखबर थे।

(10) और मूसा की माँ के दिल का क़रार जाता रहा, बेशक क़रीब था कि वह उसे ज़ाहिर कर देती, अगर हमने उसका दिल मज़बूत न कर दिया होता, ताकि वह (हमारे वादे पर) ईमान वालों में से हो।

(11) और मूसा की माँ ने उसकी बहन से कहाः तू उसके पीछे पीछे जा, फ़िर वह (गई तो) उसे दूर से देखती रही जबकि वह (फिरऔनी) बेखबर थे।

(12) और हमने मूसा पर दाईयों (के दूध) को पहले ही से हराम कर दिया था, फ़िर मूसा की बहन ने कहाः क्या मैं तुम्हें एक घर वालों का बताऊं जो तुम्हारे लिए इसकी परवरिश करें जबकि वह उसके खैरख्वाह (हितैषी) भी हों?

(13) इसलिए हमने उसे उसकी माँ के पास लोटा दिया ताकि उसकी आँखें ठन्डी हों और वह ग़म न खाए और ताकि वह जान ले कि बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

(14) और जब वह (मूसा) अपनी जवानी को पहुँचा और (अक़्ल व समझ में) कामिल (पूर्ण) हो गया तो हमने उसे हुक्म (बुद्धि) और इल्म (ज्ञान) दिया और हम नेकी करने वालों को इसी तरह जज़ा (बदला) देते हैं।

(15) और वह शहर में ऐसे वक़्त दाख़िल हुआ जबकि शहर वाले गफलत (बेख़बरी) में थे, फ़िर उसने शहर में दो आदमियों को आपस में लड़ते पाया, यह (एक तो) उसके अपने गिरोह में से था और यह (दूसरा) उसके दुश्मनों में से था, फ़िर जो उसके अपने गिरोह में से था उसने मूसा से उस शख्स के खिलाफ मदद मांगी जो उसके दुश्मनों में से था, इसलिए मूसा ने उसे घूसां मारा तो उसका काम ही तमाम कर दिया (फ़िर) कहाः यह (क़त्ल) शैतान का अमल है, बिलाशुब्ह वह गुमराह करने वाला खुल्लम खुल्ला दुश्मन है।

(16) मूसा ने कहाः ऐ मेरे रब! बेशक मैंने अपनी जान पर जुल्म किया है, लिहाज़ा तू मेरी मग्फिरत फरमा, फिर अल्लाह ने उसे बख्श (क्षमा कर) दिया, बिलाशुब्ह वह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(17) मूसा ने कहाः ऐ मेरे रब! चूंकि तूने मुझ पर इनआम किया है, लिहाज़ा मैं मुजरिमों का मददगार हरगिज़ नहीं बनूंगा।

(18) फ़िर मूसा ने शहर में डरते डरते इध

ार उधर देखते सुबह की, तो अचानक (देखा कि) वह शख़्स जिसने कल उससे मदद मांगी थी, उसे मदद के लिए पुकार रहा है, मूसा ने उससे कहाः बिलाशुब्ह तू तो साफ गुमराह शख़्स है।

(19) फ़िर जब मूसा ने इरादा किया कि उस शख़्स को पकड़े जो उन दोनों का दुश्मन था तो वह (इस्राईली) बोल उठाः ऐ मूसाः क्या तू मुझे भी क़त्ल करना चाहता है जैसे तूने कल एक शख़्स का क़त्ल कर दिया था, तू यही चाहता है कि ज़मीन में जुल्म व जब्र करता फिरे, और तू नहीं चाहता कि तू इस्लाह(सुधार) करने वालों में से हो।

(20) और शहर के परले (दूसरे) किनारे से एक शख़्स दौड़ता आया (और) उसने कहाः ऐ मूसा! बिलाशुब्ह दरबार वाले तेरे खिलाफ मशवरा कर रहे हैं कि तुझे क़त्ल कर डालें, लिहाज़ा तू निकल जा, बेशक मैं तेरा खैर ख्वाहों (हित चाहने वालों) में से हूँ।

(21) तो मूसा उस शहर से डरते सहमते, इधर उधर देखते निकले, (और) उसने कहाः ऐ मेरे रब! तू मुझे ज़ालिम क़ौम से निजात दे।

(22) और जब उसने मदयन का रूख किया तो कहाः उम्मीद है कि मेरा रब मुझे सीधी राह की हिदायत (मार्ग-दर्शन) देगा।

(23) और जब वह मदयन के पानी (कुंवे) पर पहुँचा तो उस पर उसने लोगो का एक गिरोह पाया, वह (अपने मवेशियों को) पानी पिला रहे थे, और उनके अलावा दो औरतों को देखा जो (अपने जानवर) रोक कर खड़ी थी, मूसा ने कहाः तुम्हारा क्या मामला है? उन दोनों ने कहाः हम पानी नहीं पिलाते यहाँ तक कि चरवाहे (अपने मवेशी) वापस ले जाएँ, जबकि हमारा बाप बड़ी उमर का बूढ़ा है।

(24) इसलिए उसने उन दोनों की खातिर पानी पिलाया, फ़िर वह पीछे साये की तरफ हट आया, और कहाः ऐ मेरे रब! बेशक तू मेरी तरफ जो भी खैर (भलाई) नाज़िल करे, मैं उसका मुहताज हूँ।

(25) फ़िर उन दोनों में से एक (लड़की) शर्म व हया से चलती उसके पास आई, उसने कहाः बेशक मेरे वालिद (पिता) तुझे बुलाते हैं ताकि वह तुझे उसकी मजदूरी दें जो तूने हमारी खातिर पानी पिलाया है, फ़िर जब मूसा उसके पास आया और उसे सारा क़िस्सा सुनाया तो उसने कहाः तू मत डर, तूने उस ज़ामिल क़ौम से निजात पा ली है।

(26) उन दोनों में एक (लड़की) ने कहाः ऐ अब्बा जान! उसे उजरत पर रख लीजिए, बिलाशुब्ह बेहतरीन शख़्स, जिसे आप उजरत पर रखें, वही हो सकता जो ताक़तवर और अमीन हो।

(27) उसने (मूसा से) कहाः मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दोनों बेटियों में से एक का निकाह तुझसे इस शर्त पर कर दूं कि तू आठ साल मेरी नौकरी करे, फ़िर अगर तू दस साल पूरे करे तो तेरी मेहरबानी होगी और में तुझ पर सख़्ती नहीं करना चाहता, इन्शाअल्लाह यक़ीनन तू मुझे नेक लोगों में पाएगा।

(28) मूसा ने कहाः यह मेरे और आपके दरम्यान (मुआहिदा) है, मैं दो मुद्दत में से जो भी पूरी कर लूं तो मुझ पर कोई ज़्यादी न होगी, और जो कुछ हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह निगराँ है।

(29) फ़िर जब मूसा ने वह मुद्दत पूरी कर ली और अपनी अहलिया (बीवी) को ले कर चला ता उसने कोहे तूर की एक जानिब से आग देखी, उसने अपनी अहलिया से कहाः तुम (यहीं) ठहरो, बेशक मैंने आग देखी है, शायद मैं वहाँ से तुम्हारे पास कोई खबर या आग का अंगारा ले आऊं ताकि तुम ताप सको।

(30) फिर जब वह उसके पास पहुँचा तो उसे वादी के दांये किनारे एक मुबारक जगह में एक दरख़्त से आवाज़ दी गईः ऐ मूसा! यक़ीनन मैं अल्लाह ही हूँ, सब जहाँनों का रब।

(31) और यह (भी कहा गयाः) कि तू अपनी लाठी डाल दे, फ़िर जब मूसा ने असा (लाठी) को देखा कि वह सांप की तरह हरकत कर रहा है तो वह पीठ फ़ेर कर पीछे हटा और उसने पीछे मुड़ कर न देखा, (अल्लाह ने फरमायाः) ऐ मूसा! तू आगे आ और मत डर, बिलाशुब्ह तू अमन वालों में से है।

(32) अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल, (फ़िर निकाल तो) वह (सफेद) चमकता हुआ बेऐब निकलेगा और ख़ौफ से (बचने के लिए) अपना बाजू अपनी तरफ मिला ले, इसलिए तेरे रब की तरफ से यह दोनों मोजिज़े फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ (भेजने के लिए) हैंः बिलाशुब्ह वह नाफरमान लोग हैं।

(33) मूसा ने कहाः ऐ मेरे रब! बेशक मैंने उनमे से एक शख़्स क़त्ल कर दिया था, लिहाज़ा मैं डरता हूँ कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे।

(34) और मेरे भाई हारून ज़बान के लिहाज़ से मुझ से ज़्यादा फसीह (साफ) है, लिहाज़ा तू उसे मेरे साथ मददगार बना कर भेज दे कि वह मेरी तस्दीक़ करे, बिलाशुब्ह मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुठलाएँगे।

(35) अल्लाह ने फरमायाः हम तेरे भाई के ज़रिये से तेरा बाजू मज़बूत कर देंगे और तुम दोनों को गलबा अता करेंगे, फ़िर वह तुम तक नहीं पहुँच सकेंगे, हमारी निशानियों

के साथ (जाओ), तुम दोनों और जिन्होंने तुम्हारी पैरवी की, ग़ालिब रहेंगे।

(36) फ़िर जब मूसा ने हमारी खुली निशानियों के साथ उनके पास पहुँचा तो वह बोलेः यह तो बस गढ़ा हुआ जादू है और हमने अपने पहले आबा अजदाद (बाप-दादा) में तो यह बातें (कभी) नहीं सुनी।

(37) और मूसा ने कहाः मेरा रब उसे खूब जानता है जो उसकी तरफ से हिदायत (मार्ग-दर्शन) ले कर आया और जिसका आख़िरत का अन्जाम बेहतर होगा, बेशक ज़ालिम फलाह नहीं पाते।

(38) और फ़िरऔन ने कहाः ऐ दरबारियों! मैं तो अपने सिवा तुम्हारा कोई मअ़बूद नहीं जानता, लिहाज़ा ऐ हामान! तू मेरे लिए गारे (की ईंटों) को आग दे, फ़िर मेरे लिए एक महल बना ताकि मैं (उस पर चढ़ कर) मूसा के मअ़बूद की तरफ झांकू, और बिलाशुब्ह मैं उसे झूठा समझता हूँ।

(39) और उस (फ़िरऔन) ने और उसके लश्करों ने ज़मीन (मिस्र) में नाहक़ घमंड किया, और उन्होंने समझ रखा था कि बेशक उन्हें हमारी तरफ लोटाया नहीं जाएगा।

(40) इसलिए हमने उसे और उसके लश्करों को पकड़ा और हमने उन्हें समन्दरों में फेंक दिया, तो देखो उन ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुआ!

(41) और हमने उन्हें (लोगों को) आग की तरफ बुलाने वाले सरगने बना दिया, और क़यामत के दिन उनकी कोई मदद नहीं की जाएगी।

(42) और हमने इस दुनिया में लअनत उनके पीछे लगा दी, और क़यामत के दिन वह बदहालों में से होंगे।

(43) और बिलाशुब्ह हमने पहली उम्मतों को हलाक करने के बाद मूसा को किताब दी, लोगों की बसीरत (दलील), हिदायत (मार्ग-दर्शन) और रहमत के लिए ताकि वह नसीहत (उपदेश) हासिल करें।

(44) और (ऐ नबीं!) जब हमने मूसा पर अम्र (हुक्म) खास की वह्यी की तो आप (तूर की) मग्रिबी (पश्चिमी) जानिब (तरफ) नहीं थे, और न आप (उस वाक़िये के) गवाह थे।

(45) लेकिन हमने कई उम्मतें पैदा कीं, फ़िर उनकी उम्रें तवील हुईं, और आप अहले मदयन में नहीं रहते थे कि उन पर हमारी आयतें तिलावत करते, लेकिन हम ही रसूल भेजने वाले थे।

(46) और आप तूर की जानिब नहीं थे जब हमने (मूसा को) पुकारा था, लेकिन यह (वह्यी तो) आपके रब की तरफ से रहमत है ताकि आप उन लोगों को डराएं जिनके पास

इससे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, शायद कि वह नसीहत (उपदेश) हासिल करें।

(47) और अगर यह बात न होती कि लोगों के हाथों के आगे भेजे हुए आमाल की वजह से उन पर कोई मुसीबत आती तो वह कहतेः ऐ हमारे रब! तूने हमारी तरफ कोई रसूल क्यों न भेजा, फ़िर हम तेरी आयतों का इत्तेबा करते और हम मोमिनों में से हो जाते (तो हम रसूल न भेजते)।

(48) लिहाज़ा जब हमारी तरफ से उनके पास हक़ (कुरआन) आ गया तो वह कहने लगेः इसे वैसे मोजिज़े क्यों नहीं दिए गए जैसे मूसा को दिए गए थे? क्या वह उन (मोजिज़े) का इन्कार नहीं कर चुके जो इससे पहले मूसा को दिए गए थे? उन्होंने कहाः यह दोनों एक दूसरे के मददगार जादूगर हैं, और उन्होंने कहाः बिलाशुब्ह हम हर एक के मुन्कर हैं।

(49) कह दीजिएः अगर तुम सच्चे हो तो अल्लाह के पास से कोई ऐसी किताब ले आओ जो इन दोनों से ज़्यादा हिदायत (मार्ग-दर्शन) वाली हो ताकि मैं भी उसकी इत्तेबा करूं।

(50) तो फ़िर अगर वह आपकी बात क़बूल न करें तो जान लीजिए कि वह सिर्फ अपनी ख़्वाहिशें (इच्छाओं) की पैरवी कर रहे हैं, और उससे ज़्यादा गुमराह कौन हो सकता है जो अल्लाह की तरफ से हिदायत के बग़ेर अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे? बिलाशुब्ह अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।

(51) और बिलाशुब्ह हम उन्हें लगातार अपनी (हिदायत व नसीहत की) बातें पहुँचाते रहे ताकि वह नसीहत (उपदेश) हासिल करें।

(52) वह लोग जिन्हें हमने इस (कुरआन) से पहले किताब दी थी, वही इस पर ईमान लाते हैं।

(53) और जब उन पर (कुरआन की) तिलावत की जाती है तो वह कहते हैंः हम इस पर ईमान लाए, बेशक यह हमारे रब की तरफ से हक़ है, बिलाशुब्ह हम तो इससे पहले ही मुसलमान थे।

(54) उन लोगों को उनका दोबारा अज्र दिया जाएगा क्योंकि उन्होंने सब्र किया और वह भलाई के साथ बुराई को दूर करते हैं और जो हमने उन्हें रिज़्क़ दिया है उसमें से खर्च करते हैं।

(55) और जब वह लग्व (बुरी) बात सुनते हैं तो वह उससे मुँह मोड़ लेते हैं और कहते हैंः हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं, तुम्हें सलाम हो, हम जाहिलों को नहीं चाहते।

(56) (ऐ नबी!) बेशक जिसे आप चाहें हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं दे सकते बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहे हिदायत देता है और

वह हिदायत पाने वालों को खूब जानता है।

(57) वह (मुश्रिकीन मक्का) कहते हैंः अगर हमने तेरे साथ हिदायत की पैरवी की तो हमें हमारी ज़मीन से उचक लिया जाएगा, क्या हमने उन्हें पुर अम्न हरम में जगह नहीं दी जिसकी तरफ हर क़िस्म के फल हमारी तरफ से बतौर रिज़्क़ लाए जाते हैं? लेकिन उनके अक्सर नहीं जानते।

(58) और हमने कितनी ही बस्तियां हलाक (बरबाद) कर दीं जो अपने रहन-सहन पर इतराती थी, इसलिए उनके यह घर (उजड़ पड़े) हैं, उनके बाद बहुत थोड़े ही आबाद हुए, और हम ही (उन सब के) वारिस हुए।

(59) और आपका रब बस्तियों को हलाक करने वाला नहीं यहाँ तक कि वह उन की किसी बड़ी बस्ती में कोई रसूल भेजता है, वह उन पर हमारी आयतें तिलावत करता है और हम बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं मगर (उसी वक़्त) जबकि उनके बाशिन्दे (रहने वाले) ज़ालिम हों।

(60) और तुम्हें जो भी चीज़ दी गई है वह दुनियावी ज़िन्दगी की मताअ (समान) और उसकी ज़ीनत है और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बहुत बेहतर और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला है, क्या फ़िर तुम अक़्ल नहीं रखते?

(61) भला वह शख़्स जिसे हमने अच्छा वादा दिया, वह उस (वादे) को पाने वाला है, (क्या) उस शख़्स जैसा है जिसे हमने दुनियावी ज़िन्दगी की मताअ (सुख-सामग्री) दी, फ़िर वह क़यामत के दिन (अज़ाब में) हाज़िर किये जाने वाले लोगों में से होगा?

(62) और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा, फ़िर वह कहेगाः मेरे वह शरीक कहाँ हैं जिन्हें तुम मेरा शरीक समझते थे?

(63) वह लोग जिन पर हुक्म (अज़ाब) साबित हो चुका, कहेंगेः ऐ हमारे रब! यही वह लोग हैं जिन्हें हमने गुमराह किया, हमने उन्हें ऐसे गुमराह किया जैसे हम (खुद) गुमराह हुए थे, हम तेरे सामने बरी होने का ऐलान करते हैं कि वह हमारी इबादत किया ही नहीं करते थे।

(64) और (उनसे) कहा जाएगाः तुम अपने शरीकों को बुलाओ, इसलिए वह उन्हे पुकारेंगे तो वह उन्हें जवाब नहीं देंगे, और वह (सब) अज़ाब देख लेंगे, काश! वह हिदायत (मार्ग -दर्शन) पर चलते होते।

(65) और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा, तो वह कहेगाः तुमने रसूलों को क्या जवाब दिया था?

(66) तो उस दिन सारी ख़बरे उन पर गुम हो जाएँगी, और वह एक दूसरे से सवाल तक न कर सकेंगे।

(67) लेकिन जिसने तौबा की और ईमान

लाया और उसने नेक अमल किये, तो उम्मीद है कि वह फलाह (कायाबी) पाने वालों में से होगा।

(68) और आपका रब जो चाहता है पैदा करता है और (जिसे चाहता है) पसंद कर लेता है। उन (लोगों) के लिए कोई इख़्तियार नहीं, अल्लाह पाक है और उनसे कहीं आला है जिन्हें वह शरीक ठहराते हैं।

(69) और आपका रब जानता है जो कुछ उनके सीने छुपाते हैं और जो कुछ वह ज़ाहिर करते हैं।

(70) और वही अल्लाह है, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, दुनिया और आख़िरत में तमाम हम्द उसी के लिए है, और उसी का हुक्म चलता है, और उसकी तरफ तुम लौटाए जाओगे।

(71) (ऐ नबी!) कह दीजिएः देखो तो! अगर अल्लाह तुम पर क़यामत तक हमेशा के लिए रात ही तारी कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन इलाह है जो तुम्हें रोशनी (दिन) ला दे? क्या फ़िर तुम सुनते नहीं?

(72) कह दीजिएः देखो तो! अगर अल्लाह तुम पर क़यामत तक हमेशा के लिए दिन ही तारी कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन इलाह है जो तुम्हें रात ला दे कि तुम उसमें आराम कर सको? क्या फ़िर तुम देखते नहीं?

(73) और उसने अपनी रहमत ही से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए ताकि तुम उस (रात) में आराम करो, और ताकि तुम (दिन में) उसका फ़ज़्ल तलाश करो, और शायद कि तुम शुक्र करो।

(74) और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा, फ़िर वह कहेगाः कहाँ हैं मेरे वह शरीक जिन्हें तुम मेरा शरीक समझते थे?

(75) और हम हर उम्मत (समुदाय) में से एक गवाह निकालेंगे, फ़िर हम कहेंगेः तुम (मेरे साथ शरीक करने पर) अपनी दलील लाओ, फ़िर वह जान लेंगे कि बेशक सच्ची बात अल्लाह ही की है, और उनसे गुम हो जाएगा जो कुछ वह झूठ गढ़ते थे।

(76) बेशक क़ारून मूसा की क़ौम में से था, फ़िर उसने उन पर ज़ुल्म किया, और हमने उसे इस क़दर खज़ाने दिए थे कि बिलाशुब्ह उसकी चाबियां ताक़तवर मर्दों की एक जमाअत को थका देती थी, (याद करो) जब उसकी क़ौम ने उससे कहाः तू इतरा मत, बेशक अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता।

(77) और जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, तू उससे से आख़िरत का घर तलाश कर, और तू दुनिया में भी अपना हिस्सा मत भूल और तू (लोगों से) ऐसे अहसान कर जैसे अल्लाह ने तुझ पर अहसान किया है, और तू ज़मीन में फसाद न कर, बेशक अल्लाह

फसादियों को पसंद नहीं करता।

(78) क़ारून ने कहाः मुझे तो यह (माल) महज़ उस इल्म की बिना पर दिया गया है जो मेरे पास है। क्या वह नहीं जानता था कि बेशक अल्लाह ने उससे पहले ऐसे बहुत से लोग हलाक कर दिए थे जो कुव्वत में उससे ज़्यादा थे और माल (या जमाअत) में ज़्यादा थे, और मुजरिमों से उनके गुनाहों के बारे में नहीं पूछा जाता।

(79) फ़िर वह अपने पूरे कर्रो फर (ठाठ-बाट) के साथ अपनी क़ौम के सामने निकला (तो) जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी चाहते थे, कहने लगेः काश हमारे लिए भी वह सब कुछ होता जो क़ारून को दिया गया है, बिलाशुब्ह वह बड़े नसीबे वाला है।

(80) और जिन लोगों को इल्म दिया था, उन्होंने कहाः अफसोस तुम पर! उस शख़्स के लिए अल्लाह का सवाब बेहतर है जो ईमान लाया और उसने नेक अमल किये, और यह बात सब्र करने वालों ही को सिखाई जाती है।

(81) इसलिए हमने उसे और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया, फ़िर उसके लिए (उसके हामियों की) कोई ऐसी जमाअत न थी जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद करती और न वह खुद ही बदला ले सका।

(82) और जिन्होंने कल उसके मर्तबे (पद) की तमन्ना की थी, वह (सुबह उठ कर) कहने लगेः हाय शामत! अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहे रिज़्क़ कुशादा (ज़्यादा) करता है और (जिसके लिए चाहे) तंग करता है, अगर अल्लाह ने हम पर अहसान न किया होता तो यक़ीनन वह हमें भी धंसा देता, हाय शामत! काफिर फलाह (सफलता) नहीं पाते।

(83) वह आख़िरत का घर हम उन लोगों को देंगे जो ज़मीन में न बड़ाई चाहते हैं और न फसाद, और अच्छा अन्जाम तो मुत्तक़ीन ही का है।

(84) जो कोई नेकी लाएगा तो उसके लिए उससे बेहतर (बदला) होगा, और जो कोई बुराई लाएगा तो बुरे अमल करने वालों को वही बदला दिया जाएगा जो वह अमल करते थे।

(85) बिलाशुब्ह वह (अल्लाह) जिसने आप पर कुरआन नाज़िल किया, यक़ीनन वह आपको (अच्छे) अन्जाम तक पहुँचाने वाला है, कह दीजिएः मेरा रब खूब जानता है कि कौन हिदायत (मार्ग-दर्शन) के साथ आया और कौन खुली गुमराही में है।

(86) और आप उम्मीद नहीं रखते थे कि आप की तरफ (यह) किताब नाज़िल की जाएगी मगर यह आपके रब की रहमत ही से (नाज़िल हुई) है, लिहाज़ा आप काफिरों

के मददगार हरगिज़ न हों।

(87) और वह (काफिर) आपको अल्लाह की आयतों (की तब्लीग़) से न रोक दें इसके बाद कि वह आपकी तरफ उतारी गई और आप (उन्हें) अपने रब की तरफ बुलाएँ, और मुश्रिकों में से हरगिज़ न हों।

(88) और आप अल्लाह के साथ किसी और इलाह को मत पुकारें, अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं, हर चीज़ हलाक होने वाली है सिवाए उसके चेहरे के, उसी का हुक्म चलता है और तुम (सब) उसी की तरफ लौटाए जाओगे।

सूरह अनकबूत-29

(यह मक्की सूरत है इसमें 69 आयतें और 7 रूकू है)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलिफ. लाम. मीम.।

(2) क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वह सिर्फ यह कहने पर छोड़ दिए जाएँगे कि हम ईमान लाए और उन्हें आज़माया नहीं जाएगा?

(3) और हमने उन लोगों को आज़माया है जो उनसे पहले थे, इसलिए अल्लाह उन लोगों को ज़रूर ज़ाहिर करेगा जिन्होंने सच बोला, और वह ज़रूर ज़ाहिर करेगा उनको जो झूठे हैं।

(4) क्या जो लोग बुरे अमल करते हैं उन्होंने यह समझ रखा है कि वह हमसे बच कर निकल जाएँगे? बहुत बुरा है जो वह फैसला करते हैं।

(5) जो शख़्स अल्लाह से मुलाक़ात की उम्मीद रखता है (वह जान लेगा कि) बिलाशुब्ह अल्लाह का वादा ज़रूर आने वाला है और वह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(6) और जो शख़्स जिहाद करे तो बस वह अपने ही फायदे के लिए जिहाद करता है, बेशक अल्लाह तमाम जहान वालों से बेनियाज़ है।

(7) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, हम उनसे उनकी बुराईयां ज़रूर मिटा देंगे और जो अमल वह करते रहे, हम उन्हें ज़रूर उनकी बेहतरीन जज़ा (बदला) देंगे।

(8) और हमने इन्सान को अपने वाल्दैन से नेक सुलूक करने की वसियत की और अगर वह दोनों तुझ पर ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ उस चीज़ को शरीक ठहराए जिसका तुझे इल्म नहीं तो उन दोनों की इताअत न करना, मेरी ही तरफ तुम्हें लौट कर आना हैं फ़िर में तुम्हें बताऊंगा जो कुछ तुम अमल करते थे।

(9) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, हमने उन्हें नेक लोगों में ज़रूर दाख़िल करेंगे।

(10) और लोगों में से कुछ वह है जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाए, फ़िर जब अल्लाह की राह में उन्हें तकलीफ दी जाती है तो वह लोगों के सताने को अल्लाह के अज़ाब के बराबर ठहराते हैं और आपके रब की तरफ से मदद आ जाए तो ज़रूर कहेंगेः बेशक हम तुम्हारे साथ थे, क्या जो कुछ जहान (संसार) वालों के सीनों में है अल्लाह उसे खूब जानने वाला नहीं?

(11) और अल्लाह उन्हें ज़रूर ज़ाहिर करेगा जो ईमान लाए और वह मुनाफ़िक़ों को भी ज़रूर ज़ाहिर करेगा।

(12) और जिन लोगों ने कुफ्र किया उन्होंने ईमान वालों से कहाः तुम हमारे रास्ते की पैरवी करो और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे, हालांकि वह उनके गुनाहों में से कुछ भी नहीं उठाएँगे, बेशक वह झूठे हैं।

(13) और यक़ीनन वह अपने बोझ और अपने बोझों के साथ कई और बोझ ज़रूर उठाएंगे, और जो कुछ वह झूठ गढ़ते रहे, क़यामत के दिन उनके बारे में उनसे ज़रूर पूछा जाएगा।

(14) और बिलाशुब्ह हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ भेजा, इसलिए वह उनमें पचास कम एक हज़ार साल रहा, फ़िर उन्हें तूफ़ान ने इस हाल में पकड़ लिया कि वह ज़ालिम थे।

(15) फ़िर हमने उसे और कश्ती वालों को निजात दी, और हमने उस (कश्ती) को दुनिया वालों के लिए अज़ीम निशानी बना दिया।

(16) और (हमने) इब्राहीम को (भेजा) जब उसने अपनी क़ौम से कहाः तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो, अगर तुम जानते हो तो यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है।

(17) तुम तो अल्लाह के सिवा बुतों ही की इबादत करते हो, और तुम झूठ गढ़ते हो, बिलाशुब्ह अल्लाह के सिवा जिनकी तुम इबादत करते हो वह तुम्हारे लिए रिज़्क़ का इख़्तियार नहीं रखते, लिहाज़ा तुम अल्लाह के यहाँ रिज़्क़ तलाश करो, और तुम उसी की इबादत करो और तुम उसी का शुक्र करो, तुम उसी की तरफ लोटाए जाओगे।

(18) और अगर तुम झुठलाओ तो तुमसे पहले कई उम्मतों ने झुठलाया है, और रसूल का काम तो सिर्फ खोल कर पहुँचा देना है।

(19) क्या उन्होंने देखा नहीं कि अल्लाह मख़्लूक़ को पहली बार कैसे पैदा करता है, फ़िर वह उसे लौटाएगा, बिलाशुब्ह यह अल्लाह पर बहुत आसान है।

(20) कह दीजिएः तुम ज़मीन में सैर करो, फ़िर देखो उसने मख्लूक़ पहली बार कैसे पैदा की, फ़िर अल्लाह ही (उसे) दोबारा पैदा करेगा, बिलाशुब्ह अल्लाह हर शै पर खूब क़ादिर है।

(21) वह जिसे चाहे अज़ाब देगा और जिसे पर चाहे रहम करेगा और तुम उसी की तरफ लोटाए जाओगे।

(22) और तुम (अल्लाह को) न ज़मीन में आजिज़ (मजबूर) करने वाले हो और न आसमान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई दोस्त है और न कोई मददगार।

(23) और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों और उसकी मुलाक़ात का इन्कार किया, वही लोग मेरी रहमत से नाउम्मीद हो चुके हैं, और उन्हीं के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(24) फ़िर इब्राहीम की क़ौम का जवाब बस यही था कि उन्होंने कहाः इसे क़त्ल कर दो या इसे जला दो, फ़िर अल्लाह ने उसे आग से निजात दी, बेशक उसमें ईमान लाने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं।

(25) और इब्राहीम ने कहाः तुमने अल्लाह के सिवा जिन बुतों को मअ़बूद ठहरा लिया है, तो यह महज़ तुम्हारी आपस की दुनिया की दोस्ती की वजह से है, फ़िर क़यामत के दिन तुममें से एक दूसरे का इन्कार करेगा और तुममें से एक दूसरे पर लअनत भेजेगा और तुम्हारा ठिकाना आग है, और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं होगा।

(26) फ़िर इब्राहीम पर लूत ईमान लाया, और इब्राहीम ने कहाः बेशक मैं अपने रब की तरफ हिजरत करने वाला हूँ, बिलाशुब्ह वह निहायत ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(27) और हमने उसे इस्हाक़ और याक़ूब दिए और उसकी औलाद में नबुव्वत और किताब रख दी, और हमने उसे उसका अज्र दुनिया में भी दिया, और बिलाशुब्ह वह आख़िरत में सालेह (अच्छे) लोगों में से होगा।

(28) और (हमने भेजा) लूत को जब उसने अपनी क़ौम से कहाः बेशक तुम ऐसी फहाशी (बदकारी) पर उतर आए हो जो तुमसे पहले दुनिया में किसी ने भी नहीं की।

(29) क्या तुम लोग मर्दों के पास (जिन्सी तस्कीन के लिए) आते हो और तुम रास्ते काटते हो और तुम अपनी मजलिसों (सभाओं) में बुरे काम (बेहयाई) करते हो? फ़िर उनकी क़ौम का जवाब बस यही था कि उन्होंने कहाः अगर तू सच्चों में से है तो अल्लाह का अज़ाब ले आ।

(30) लूत ने कहाः ऐ मेरे रब! फसादी लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद फरमा।

(31) और जब हमारे क़ासिद (फरिश्ते)

इब्राहीम के पास बशारत (खुशखबरी) ले कर आए तो उन्होंने कहाः बेशक हम उस बस्ती (सदूम) वालों को हलाक करने वाले हैं, बिलाशुब्ह उस बस्ती वाले ज़ालिम हैं।

(32) इब्राहीम ने कहाः बेशक उसमें तो लूत भी है, उन्होंने कहाः हम खूब जानते हैं जो कोई उसमे है, यक़ीनन हम उसे और उसके घर वालों को बचा लेंगे सिवाए उसकी बीवी के, वह पीछे रह जाने वालों में से होगी।

(33) और जब हमारे क़ासिद लूत के पास आए तो वह उन के आने पर ग़म ज़दा हुआ और उनकी वजह से (उसका) सीना तंग हुआ और फरिश्तों ने कहाः तू मत डर और मत ग़म खा, बिलाशुब्ह हम तुझे और तेरे घर वालों को निजात देनें वाले हैं, सिवाए तेरी बीवी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है।

(34) बेशक हम उस बस्ती वालों पर उनके फिस्क़ (अवज्ञा) की वजह से आसमान से अज़ाब नाज़िल करने वाले हैं।

(35) और बिलाशुब्ह हमने उस बस्ती को उन लोगों के लिए (बतौर) खुली निशानी छोड़ रखा है जो अक़्ल रखते हैं।

(36) और (हमने) मदयन की तरफ उनके भाई शुऐब को भेजा तो उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखो, और तुम ज़मीन में फसाद करते न फिरो।

(37) फ़िर उन्होंने उसे झुठलाया, तो उन्हें ज़लज़ले (भूकम्प) ने आन पकड़ा, फ़िर वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।

(38) और आद और समूद (को भी हमने हलाक किया) और यह बात तुम्हारे लिए उनके (तबाह शुदा) बस्तियों से वाज़ेह हो चुकी है, और शैतान ने उनके आमाल उनके लिए मुज़य्यन (सुसज्जित) कर दिए थे, फ़िर उसने उन्हें सीधी राह से रोक दिया, हालांकि वह समझ बूझ वाले थे।

(39) और क़ारून और फ़िरऔन और हामान को (भी हलाक कर दिया) और बिलाशुब्ह उनके पास मूसा खुली निशानियां ले कर आए, फ़िर भी उन्होंने ज़मीन में घमंड किया, और वह (अज़ाब) से बच कर निकल जाने वाले न थे।

(40) फ़िर हमने हर एक को उसके गुनाह पर पकड़ा, इसलिए उनमें से कोई तो वह थे जिन पर हमने पथराव करने वाली आँधी भेजी, और उनमें से कोई वह थे जिन्हें चिघांड़ ने आन पकड़ा और उनमें से कोई वह थे जिन्हें हमने ज़मीन में धंसा दिया और उनमें से कोई वह थे जिन्हें हमने ग़र्क़ कर दिया और अल्लाह उन पर ज़ुल्म करने वाला नहीं था बल्कि वह खुद ही अपने आप पर ज़ुल्म करते थे।

(41) उन लोगों की मिसाल, जिन्होंने अल्लाह के सिवा कारसाज़ बनाए मकड़ी की सी है उसने एक घर बनाया और बेशक घरों में सब से कमज़ोर मकड़ी का घर है, काश! वह जानते होते।

(42) बिलाशुब्ह अल्लाह जानता है उन चीज़ों को जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं और वह निहायत ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(43) और यह मिसालें हम लोगों (को समझाने) के लिए बयान करते हैं और उन्हें बस इल्म वाले ही समझते हैं।

(44) अल्लाह ने ज़मीन और आसमान हक़ के साथ पैदा किये हैं, बिलाशुब्ह उसमें मोमिनों के लिए अज़ीम निशानी है।

(45) (ऐ नबी!) इस किताब की तिलावत कीजिए जो आपकी तरफ वह्यी की गई है और नमाज़ क़ायम कीजिए, यक़ीनन नमाज़ बे हयाई और बुरे कामों से रोकती है और बिलाशुब्ह अल्लाह का ज़िक्र तो सबसे बड़ी चीज़ है और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(46) और तुम अहले किताब से अहसन अंदाज़ ही से बहस व तकरार करो, सिवाए उन लोगों के जो उनमें जालिम हैं और तुम (उनसे) कहोः हम इस (किताब) पर ईमान लाए हैं जो हमारी तरफ नाज़िल की गई और (जो) तुम्हारी तरफ नाज़िल की गई, और हमारा मअ़बूद और तुम्हारा मअ़बूद एक ही है और हम उसके फ़रमाबरदार हैं।

(47) और (ऐ नबी! जैसे पहले नबियों पर किताबें नाज़िल कीं) उसी तरह हमने आपकी तरफ यह किताब नाज़िल की है, तो इस (कुरआन) पर वह लोग ईमान लाते हैं जिन्हें हमने (इससे पहले) किताब दी और उन (अहले मक्का) में से भी बअज़ उस पर ईमान लाते हैं, और हमारी आयतों का इन्कार तो काफिर ही करते हैं।

(48) और आप इस (किताब) से पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न अपने दायें हाथ से लिखते थे (अगर ऐसा होता) तो बातिल परस्त यक़ीनन शक कर सकते थे।

(49) बल्कि यह कुरआन तो वाज़ेह आयतें हैं, उन लोगों के सीनों में (महफ़ूज़) हैं जिन्हें इल्म दिया गया और ज़ालिम लोग ही हमारी आयतों का इन्कार करते हैं।

(50) और उन्होंने कहाः उसके रब की तरफ से मोजिज़े (निशान) क्यों नहीं उतारे गए? (ऐ नबी!) आप कह दीजिएः पस मोजिज़े तो अल्लाह के पास हैं और मैं तो महज़ एक खुल्लम खुल्ला डराने वाला हूँ।

(51) क्या उन्हें (यह निशानी) काफी नहीं कि बेशक हमने आप पर (यह) किताब नाज़िल

की जो उन पर पढ़ी जाती है? बिलाशुब्ह उसमें उन लोगों के लिए रहमत और नसीहत (उपदेश) है जो ईमान लाते हैं।

(52) आप कह दीजिएः मेरे और तुम्हारे दरम्यान अल्लाह बतौर गवाह काफी है, आसमानों और ज़मीन में से जो कुछ है, वह उसे जानता है और जो लोग बातिल पर ईमान लाए और उन्होंने अल्लाह के साथ कुफ्र किया, वही नुक्सान पाने वाले हैं।

(53) और यह लोग आपसे जल्द अज़ाब मांगते हैं और अगर (अज़ाब का) वक़्त मुक़र्रर न होता उन्हें अज़ाब ज़रूर आ लेता और यक़ीनन वह उन्हें अचानक ही आ लेगा और उन्हें खबर तक न होगी।

(54) यह लोग आपसे जल्द अज़ाब मांग रहे हैं और बिलाशुब्ह जहन्नम काफिरों को घेरे हुए है।

(55) उस दिन उनके ऊपर से और उनके पांव के नीचे से, अज़ाब उन्हें ढांप लेगा और अल्लाह फरमाएगाः जो कुछ तुम करते थे उसका मज़ा चखो।

(56) ऐ मेरे बन्दे जो ईमान लाए हो! बिलाशुब्ह मेरी ज़मीन वसी है तो मेरी ही इबादत करो।

(57) हर जानदार मौत का मज़ा चखने वाला है फ़िर तुम हमारी ही तरफ लोटाए जाओगे।

(58) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, हम उन्हें जन्नत के बाला खानों में ज़रूर जगह देंगे, उनके नीचे नहरें जारी होंगी, वह उनमें हमेशा रहेंगे, (नेक) अमल करने वालों का अज्र बहुत अच्छा है।

(59) जिन लोगों ने सब्र किया और वह अपने रब ही पर भरोसा करते हैं।

(60) और ज़मीन पर चलने वाले कितने ही जानवर हैं जो अपना रिज़्क़ उठाऐ नहीं फिरते, अल्लाह उन्हें और तुम्हें भी रिज़्क़ देता है और वह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(61) और बिलाशुब्ह अगर आप उनसे पूछें कि आसमान और ज़मीन किसने पैदा किये और (किसने) सूरज और चाँद खिदमत पर लगाए? तो वह ज़रूर कहेंगेः अल्लाह ने! फ़िर वह कहाँ बहकाए जाते हैं?

(62) अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा (ज़्यादा) करता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है, बिला शुब्ह अल्लाह हर चीज़ को खूब जानता है।

(63) और अलबत्ता अगर आप उनसे पूछें कि किसने आसमान से पानी नाज़िल किया, फ़िर किसने ज़मीन की मौत (वीरानी) के बाद उस पानी से उसे ज़िन्दा (तरोताज़ा) किया? तो वह ज़रूर कहेंगेः अल्लाह ने! तो

आप कह दीजिएः ''अलहम्दुलिल्लाह'' लेकिन उनके अक्सर अक़्ल से काम नहीं लेते।

(64) और यह दुनिया की ज़िन्दगी एक खेल तमाशे के सिवा कुछ नहीं, और बिलाशुब्ह आख़िरत का घर (ज़िन्दगी) ही असल ज़िन्दगी है, काश! लोग जानते होते।

(65) फ़िर जब वह (मुश्रिकीन) कश्ती में सवार होते हैं तो वह खालिस अल्लाह की इताअत करते हुए उसे पुकारते हैं, फ़िर जब वह उन्हें खुश्की की तरफ निजात देता है तो खुश्की पर आते ही वह शिर्क करने लगते हैं।

(66) ताकि वह (निअमत) की नाशुक्री करें जो हमने उन्हें दी और ताकि वह मज़े उड़ायें, फ़िर जल्द वह (उसका अन्जाम) जान लेंगे।

(67) क्या उन्होंने देखा नहीं कि बेशक हमने हरम (मक्का) को पुर अमन बनाया है जबकि लोग उसके इर्द गिर्द से उचक लिए जाते हैं? क्या वह बातिल पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की निअमत की नाशुक्री करते हैं?

(68) और उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन है जिसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा, या जब हक़ उसके पास आया तो उसने उसे झुठला दिया, क्या (ऐसे) काफिरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है।

(69) और जो लोग हमारी राह में जिहाद करें हम उन्हें अपनी राहें ज़रूर दिखाते हैं और यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों के साथ है।

सूरह रूम-30

(यह मक्की सूरत है इसमें 60 आयतें और 6 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलीफ. लाम. मीम.।

(2) रूमी मगलूब हो गए।

(3) क़रीब तरीन सरज़मीन (शाम व फिलस्तीन) मैं और वह अपने मगलूब (पराजित) होने के बाद जल्द ग़ालिब (विजय) होंगे।

(4) चन्द बरसों में, इक्तिदार (अधिकार) अल्लाह ही के लिए पहले भी और बाद में भी, और उस (गलबे वाले) दिन मोमिन भी (अपनी फतह पर) खुश होंगे।

(5) अल्लाह की मदद से, वह जिसे चाहता है मदद देता है और वह निहायत ग़ालिब, बहुत रहम करने वाला है।

(6) (यह) अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के खिलाफ नहीं करता और लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

(7) वह दुनिया की ज़िन्दगी का सिर्फ ज़ाहिरी पहलू जानते हैं और वह आख़िरत

से तो बिल्कुल ही ग़ाफिल (बेखबर) हैं।

(8) क्या उन्होंने अपने दिलों में गौरो फ़िक्र नहीं किया कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरम्यान है सिर्फ हक़ के साथ और मुक़र्रर वक़्त के लिए पैदा किया है? और बिलाशुब्ह अक्सर लोग अपने रब की मुलाक़ात ही के मुन्कर हैं।

(9) क्या वह ज़मीन में घूमे फिरे नहीं, फ़िर वह देखते कि उन लोगों का अन्जाम कैसा हुआ जो उनसे पहले थे? वह उनसे कुव्वत में ज़्यादा थे, और उन्होंने ज़मीन को उससे ज़्यादा जोता और आबाद किया था जितना कि उन्होंने (कुफ्फ़ारे अरब) ने आबाद किया है, और उनके रसूल उनके पास खुली निशानियां ले कर आए थे, फ़िर अल्लाह (ऐसा) न था कि उन पर जुल्म करता लेकिन वह (खुद ही) अपने आप पर जुल्म करते थे।

(10) फ़िर जिन लोगों ने बुरे काम किये थे उनका अन्जाम भी बुरा ही हुआ, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया था और वह उनका मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

(11) अल्लाह ही पहली बार मख्लूक़ को पैदा करता है फ़िर वही उसे दोबारा पैदा करेगा, फ़िर उसी की तरफ तुम्हें लौटाया जाएगा।

(12) और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी (तो) मुजरिम लोग सख़्त मायूस होंगे।

(13) और उनके शरीकों (मअबूदों) में से कोई उनका सिफारशी नहीं बनेगा और वह खुद भी अपने शरीकों के मुन्कर हो जाएँगे।

(14) और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी उस दिन लोग (मोमिन और काफिर) अलग अलग हो जाएँगे।

(15) फ़िर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, तो वह बाग़ (जन्नत) में खुश व खुर्रम होंगे।

(16) और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों और आख़िरत की मुलाक़ात को झुठलाया तो वह अज़ाब में गिरफ्तार किये जाएँगे।

(17) लिहाज़ा तुम अल्लाह की तस्बीह (पाकी बयान) करो जब तुम शाम करो और जब तुम सुबह करो।

(18) और आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए तमाम हम्द है और (तस्बीह करो) पिछले पहर और जब तुम ज़ोहर करो।

(19) वह ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और वही ज़मीन को उसके मुर्दा (वीरान) होने के बाद ज़िन्दा (आबाद) करता है और इसी तरह तुम्हें भी (ज़मीन से) निकाला जाएगा।

(20) और (यह) उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फ़िर

अब तुम इन्सान हो (जो) हर तरफ फैल रहे हो।

(21) और (यह) उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स से बीवियां पैदा कीं ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो, और उसने तुम्हारे दरम्यान मुहब्बत और रहमत पैदा कर दी, बिलाशुब्ह उसमें उन लोगों के लिए अज़ीम निशानियां हैं जो गौरो फ़िक्र करते हैं।

(22) और उसकी निशानियों में से आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ और तुम्हारी ज़बानों और रंगों का इख़्तिलाफ भी है, बिलाशुब्ह इसमें इल्म वालो के लिए अज़ीम निशानियां हैं।

(23) और उसकी निशानियों में से है तुम्हारा रात और दिन को सोना और तुम्हारा उसके फज़्ल को तलाश करना, बेशक उसमें उन लोगों के लिए अज़ीम निशानियां हैं जो सुनते हैं।

(24) और (यह भी) उसकी निशानियों में से है कि वह तुम्हें डराने और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और वह आसमान से पानी नाज़िल करता है, फ़िर उससे ज़मीन के मुर्दा हो जाने के बाद उसे ज़िन्दा करता है, बिलाशुब्ह उसमें उन लोगों के लिए अज़ीम निशानियां हैं जो अक़्ल रखते हैं।

(25) और (यह भी) उसकी निशानियों में से है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं, फ़िर जब वह तुम्हें ज़मीन में से एक ही बार पुकारेगा तो तुम यकायक (बाहर) निकल आओगे।

(26) और आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी हैं, उसी की मिल्कियत हैं, सब उसकी फ़रमाबरदार हैं।

(27) और वही (अल्लाह) है जो मख़्लूक़ को पहली बार पैदा करता है, फ़िर वही उसे दोबारा पैदा करेगा और यह उसके लिए ज़्यादा आसान है और आसमानों और ज़मीन में उसी की सिफते आला है और वही ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(28) उसने तुम्हारे (समझाने के) लिए खुद तुम्ही में से एक मिसाल बयान की है कि हमने तुम्हें जो रिज़्क़ दिया है, क्या उसमें तुम्हारे गुलामों में से भी कोई तुम्हारा शरीक हो सकते हैं कि तुम उसमें बराबर हो जाओ? तुम उनसे ऐसे डरते हो जैसे अपने (हमसर) लोगों से, इसी तरह हम (अपनी) आयतें उन लोगों के लिए खोल कर बयान करते हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं।

(29) बल्कि जिन लोगों ने जुल्म किया उन्होंने बग़ैर इल्म के अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की, फ़िर जिसे अल्लाह ने गुमराह कर दिया हो उसे कौन हिदायत (मार्ग-दर्शन) दे सकता है? और उनका कोई मददगार न

होगा।

(30) इसलिए (ऐ नबी!) आप यक्सू हो कर अपना रूख दीन की तरफ सीधा रखें, अल्लाह की फितरत (इख्तियार करो) जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है, अल्लाह की तख्लीक़ में तब्दीली नहीं हो सकती, यही सीधा दीन है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

(31) उसकी तरफ रूजू करते हुए (दीन पर क़ायम रहो) और तुम उससे डरते रहो और नमाज़ क़ायम करो और मुश्रिकों में से न हो जाओ।

(32) (यानी) जिन लोगों ने अपने दीन को टुकड़ टुकड़े कर दिया और वह कई गिरोह हो गए, हर गिरोह के पास जो कुछ है वह उसी पर खुश है।

(33) और जब लोगों को कोई तकलीफ पहुँचती है तो वह अपने रब की तरफ रूजू करते हुए उसीको पुकारते हैं, फ़िर जब वह अपनी तरफ से उन्हें रहमत (का मज़ा) चखाते है तो उनमें से कुछ लोग अपने रब के साथ शिर्क करने लगते हैं।

(34) ताकि वह उस चीज़ (निअमत) की नाशुक्री करें जो हमने उन्हें दी, तो तुम फ़ायदा उठा लो, फ़िर जल्द तुम जान लोगे।

(35) क्या हमने उन पर कोई ऐसी दलील नाज़िल की है कि वह उनके शिर्क करने को (सहीह) बताती हो?

(36) और जब हम लोगों को (अपनी) रहमत (मज़ा) चखाते हैं तो वह उस पर खुश होते हैं और अगर उनके हाथों के आगे भेजी हुई कमाई की वजह से कोई मुसीबत उन्हें आ ले तो वह फौरन न उम्मीद हो जाते हैं।

(37) क्या उन्होंने नहीं देखा कि बेशक अल्लाह जिसके लिए चाहे रिज़्क़ कुशादा कर देता है और (जिसके लिए चाहे) तंग कर देता है? बिलाशुब्ह इस (फराख़ी व तंगी) में उन लोगों के लिए अज़ीम निशानियां हैं जो ईमान लाते हैं।

(38) लिहाज़ा आप क़राबत दार को उसका हक़ दें और मिस्कीन और मुसाफिर को भी, यह उन लोगों के लिए बेहतर है जो अल्लाह का चेहरा चाहते हैं और यही लोग फलाह पाने वाले हैं।

(39) और तुम सूद पर जो (क़र्ज़) दो ताकि वह लोगों के मालों में (शामिल हो कर) बढ़ता रहे, तो वह अल्लाह के यहाँ नहीं बढ़ता और तुम अल्लाह का चेहरा चाहते हुए जो कुछ बतौर ज़कात दो तो ऐसे लोग ही (अपना माल) कई गुना बढ़ाने वाले हैं।

(40) अल्लाह वह ज़ात है जिसने तुम्हें पैदा किया फ़िर उसने तुम्हें रिज़्क़ दिया, फ़िर वह तुम्हें मौत देगा फ़िर वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा, क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई है जो उन (कामों) में से कुछ कर सके? अल्लाह

उनके शरीक ठहराने से पाक और आला है।

(41) ज़मीन और समुद्र में फसाद ज़ाहिर हो गया जो लोगों के हाथों की कमाई का नतीजा है ताकि अल्लाह उन्हें उनके कुछ आमाल का मज़ा चखाऐ जो उन्होंने किये ताकि वह (हिदायत की तरफ) रूजू करें।

(42) आप कह दीजिए: तुम ज़मीन में सैर करो, फ़िर देखो उन लोगों का कैसा अन्जाम हुआ और जो उनसे पहले थे? उनके अक्सर मुश्रिक ही थे।

(43) आप अपना रूख दुरूस्त दीन की तरफ सीधा रखें, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जो अल्लाह की तरफ से टलने वाला नहीं, उस दिन वह (मोमिन और काफिर) अलग अलग हो जाएँगे।

(44) जिस शख़्स ने कुफ़्र किया, तो उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर होगा और जिन्होंने नेक अमल किये तो वह अपने ही लिए राह हमवार कर रहे हैं।

(45) ताकि अल्लाह उन लोगों को अपने फज़ल से जज़ा (बदला) दे जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, बिलाशुब्ह अल्लाह काफिरों को पंसद नहीं करता।

(46) और उसी की निशानियों में से यह है कि वह बशारत (खुशखबरी) देने वाली हवाऐं भेजता है और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत (का मज़ा) चखाए और ताकि उसके हुक्म से कश्तियां चलें और ताकि तुम उसका फज़ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो।

(47) और बिलाशुब्ह हमने आपसे पहले कई रसूल उनकी क़ौमों की तरफ भेजे, फ़िर वह उनके पास रोशन दलाईल ले कर आए (मगर उन्होंने उन्हें झुठलाया), फ़िर जिन लोगों ने जुर्म किये थे हमने उनसे इन्तिक़ाम लिया और मोमिनों की मदद करना हम पर लाज़िम है।

(48) अल्लाह वह ज़ात है जो हवाऐं भेजता है, फ़िर वह बादल उठाती हैं, फ़िर अल्लाह उसे आसमान में जिस तरह चाहता है फैलाता है और वह उसे टुकड़े टुकड़े कर देता है, फ़िर आप देखते हैं कि उसके अन्दर से बारिश निकलती है, फ़िर जब वह अपने बन्दों में से जिन्हें चाहता है उन पर बारिश बरसाता है तो उस वक़्त वह खुश हो जाते हैं।

(49) और बिलाशुब्ह इससे पहले कि उन पर बारिश नाज़िल हो वह न उम्मीद हो रहे थे।

(50) इसलिए आप अल्लाह की रहमत के आसार की तरफ देखें, वह ज़मीन को उसकी मौत (वीरानी) के बाद कैसे जिन्दा करता है, बेशक वह ज़रूर मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है और वह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(51) और अगर हम (तन्दो तेज़) हवा भेज दें, फ़िर वह उस (खेती) को पीली पड़ती

देखें, तो उसके बाद वह ज़रूर नाशुक्री करने लगते हैं।

(52) (ऐ नबी!) बिलाशुब्ह आप मुर्दों को नहीं सुना सकते और न आप बहरों को (अपनी) पुकार सुना सकते हैं जबकि वह पीठ फे़र कर लौट जाएं।

(53) और न आप अन्धों को उनकी गुमराही से हिदायत (मार्ग-दर्शन) की तरफ ला सकते हैं, आप तो सिर्फ उन्हें सुना सकते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, लिहाज़ा वही फ़रमाबरदार हैं।

(54) अल्लाह वह ज़ात है जिसने तुम्हें कमज़ोरी (की हालत) से पैदा किया, फ़िर उसने कमज़ोरी के बाद कुव्वत दी, फ़िर उसने कुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया, वह जो चाहे पैदा करता है और वह खूब जानने वाला बड़ा कुदरत वाला है।

(55) और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी, मुजरिम क़समें खाएँगे कि वह (दुनिया में) घड़ी भर के सिवा नहीं ठहरे, इसी तरह वह (दुनिया में) बहके रहे।

(56) और जिन लोगों को इल्म और ईमान दिया गया वह कहेंगेः यक़ीनन तुम जैसाकि अल्लाह की किताब (लौह महफूज़) में है, दोबारा उठाने के दिन (क़यामत) तक ठहरे रहे, इसलिए यही दोबारा उठाने का दिन है लेकिन तुम तो (उसे हक़) नहीं जानते थे।

(57) इसलिए उस दिन ज़ालिम लोगों उनका माफी माँगना कोई नफा न देगा और न उनको तौबा का मौक़ा दिया जाएगा।

(58) और बिलाशुब्ह हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर मिसाल बयान कर दी है और अगर आप उनके पास कोई निशानी लाएं तो जिन लोगों ने कुफ्ऱ किया वह ज़रूर कहेंगेः तुम तो निरे झूठे हो।

(59) इसी तरह अल्लाह उन लोगों के दिलों पर, जो समझ नहीं रखते, मुहर लगा देता है।

(60) लिहाज़ा आप सब्र कीजिएः बिलाशुब्ह अल्लाह का वादा सच्चा है, और आपको वह लोग हल्का (बेसब्रा) न कर दें जो यक़ीन नहीं रखते।

सूरह लुक़्मान-31

(यह मक्की सूरत है इसमें 34 आयतें और 4 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलीफ. लाम. मीम.।

(2) यह हिकमत वाली किताब की आयतें हैं।

(3) (जो) नेकूकारों (उत्तमकारों) के लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) और रहमत हैं।

(4) जो लोग नमाज़ क़ायम करते हैं और

ज़कात देते हैं और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।

(5) यही लोग अपने रब की तरफ से हिदायत पर हैं और यही लोग फलाह (सफलता) पाने वाले हैं।

(6) और लोगों में बअ़ज़ वह हैं जो लग्व (बुरी) बातें खरीदते हैं ताकि वह इल्म के बग़ेर अल्लाह की राह (दीन) से गुमराह करें और उसका मज़ाक़ उड़ाएं, यही लोग हैं जिनके लिए रूस्वा कुन अज़ाब है।

(7) और जब ऐसे शख़्स पर हमारी आयतें तिलावत की जाती हैं तो वह घमंड करते हुए पलट जाता है जैसे उसने वह सुनी ही नहीं जैसे कि उसके दोनों कानों में डाट हो, इसलिए आप उसे दर्दनाक अज़ाब की खबर सुना दीजिए।

(8) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, उन के लिए नेअमत से भरे बाग़ हैं।

(9) वह उनमें हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह का सच्चा वादा है और वह निहायत ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(10) उस (अल्लाह) ने सतूनों (खंभों) के बग़ेर आसमान पैदा किये, तुम उन्हें देखते हो और उसने ज़मीन में मज़बूत पहाड़ गाड़ दिए ताकि ज़मीन तुम्हें साथ ले झुक न पड़े और उसने उसमें हर क़िस्म के चौपाए फैलाएं और हमने आसमान से पानी नाज़िल किया, फ़िर उस (ज़मीन) में हर क़िस्म की नफीस (सुन्दर) और उम्दा (उत्तम) चीज़ें उगाईं।

(11) यह तो है अल्लाह की मख़्लूक़, फ़िर मुझे दिखाओ कि औरों ने उस (अल्लाह) के सिवा क्या तख़्लीक़ (पैदा) किया है? (कुछ भी नहीं) बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही में हैं।

(12) और बिलाशुब्ह हमने लुक्मान को हिकमत (सूझ-बूझ) दी थी कि तू अल्लाह का शुक्र कर और जो कोई शुक्र (कृतज्ञता) करे तो यक़ीनन वह अपनी ही ज़ात के लिए शुक्र करता है और जिसने नाशुक्री की तो बिलाशुब्ह अल्लाह बेपरवह है, सब खूबियों वाला है।

(13) और (याद करें) जब लुक़्मान ने अपने बेटे से कहा था जबकि वह उसे नसीहत (उपदेश) कर रहा थाः ऐ मेरे प्यारे बेटे! तू अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहरा, बेशक शिर्क तो ज़ुल्म अज़ीम है।

(14) और हमने इंसान को उसके वाल्दैन (माँ-बाप) के बारे में (अच्छे बरताव का) हुक्म दिया है, उसकी माँ ने उसे (पेट में) कमज़ोरी पर कमज़ोरी के बावजूद उठाए रखा और उसका दूध दो साल में छुड़ाना होता है, (और) यह कि तू मेरा और अपने वाल्दैन (माँ-बाप) का शुक्र कर (बिला आखिर) मेरी

ही तरफ लौट कर आना है।

(15) और अगर वह दोनों तुझ पर ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ शिर्क करे, जिसका तुझे इल्म नहीं, तू उनकी इताअत न करना और दुनिया में मारूफ (भले) तरीक़े से उन दोनों से अच्छा सलूक कर और उस शख़्स के तरीक़े का इत्तेबा कर जो मेरी तरफ रूजू करता है, फ़िर मेरी ही तरफ तुम्हारी वापसी है, फ़िर मैं तुम्हें बताऊंगा जो कुछ तुम अमल किया करते थे।

(16) ऐ मेरे प्यारे बेटे! बेशक अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो और वह किसी चट्टान में या आसमान और ज़मीन के अन्दर कहीं भी हो, तो अल्लाह उसे निकाल लाएगा, बिलाशुब्हे अल्लाह निहायत बारीक बीन, बहुत बाख़बर है।

(17) ऐ मेरे प्यारे बेटे! तू नमाज़ क़ायम कर और नेकी का हुक्म दे और बुराई से मना कर और जो तकलीफ तुझे पहुँचे उस पर सब्र कर, बेशक यह हिम्मत के कामों में से है।

(18) और तू लोगों से बेरूखी न कर और ज़मीन में अकड़ कर न चल, बेशक अल्लाह हर मग़रूर, डींगें मारने वाले को पंसद नहीं करता।

(19) और तू अपनी चाल दर्मियानी रख, और अपनी आवाज़ धीमी रख, बिलाशुब्हे सब आवाज़ों से बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।

(20) क्या तुमने देखा नहीं कि बेशक अल्लाह ने जो कुछ आसमनों में है और जो कुछ ज़मीन में है तुम्हारे काम में लगा दिया है और उसने तुम पर अपनी ज़ाहिरी और छुपी नेअमतें पूरी कर दीं हैं और कुछ लोग वह हैं जो अल्लाह के बारे में बग़ेर इल्म, बग़ेर हिदायत (मार्ग-दर्शन) और बग़ेर किसी रोशन किताब के झगड़ा करते हैं।

(21) और जब उनसे कहा जाये कि तुम उसका इत्तेबा करो जो अल्लाह ने नाज़िल किया है, तो वह कहते हैंः हम तो उसी (तरीक़े) की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया, क्या अगरचे शैतान उन्हें अज़ाबे जहन्नम की तरफ बुलाता रहा हो तब भी?

(22) और जो शख़्स फरमाबरदारी से अपना मुँह अल्लाह की तरफ झुका दे जबकि वह नेकूकार हो तो बिलाशुब्हे उसने मज़बूत सहारा पकड़ लिया और सब कामों का अन्जाम अल्लाह ही के पास है।

(23) और (ऐ नबी!) जिस किसी ने कुफ़्र किया तो उसका कुफ़्र आपको ग़म में न डाले, (बिला आखिर) हमारी ही तरफ उनकी वापसी है, इसलिए हम उन्हें बताएंगे जो कुछ उन्होंने किया होगा, बेशक अल्लाह सीनों

के राज़ खूब जानता है।

(24) हम उन्हें थोड़ा सा फायदा देते हैं, फ़िर हम उन्हें सख्त अज़ाब की तरफ धकेल देंगे।

(25) और अगर आप उनसे पूछें कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया है? तो वह ज़रूर कहेंगेः अल्लाह ने! आप कह दीजिएः सब तअरीफ अल्लाह ही के लिए है लेकिन उनके अक्सर नहीं जानते।

(26) अल्लाह ही के लिए जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, बेशक अल्लाह ही बेनियाज़, तअ़रीफ के लायक़ है।

(27) और अगर ज़मीन में जितने दरख्त (पेड़) हैं सब क़लम बन जाएं और समंदर (रोशनाई बन जाए) और उसके बाद सात समंदर उसमें मज़ीद रोशनाई (स्याही) शामिल करें तो भी अल्लाह के कलमात खत्म न हों, बेशक अल्लाह निहायत ग़ालिब, बहुत हिकमत वाला है।

(28) तुम्हें पैदा करना और तुम्हें दोबारा उठाना (अल्लाह के नज़दीक) ऐसा ही है जैसे एक नफ्स को पैदा करना, बिलाशुब्ह अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब देखने वाला है।

(29) क्या आपने नहीं देखा कि बेशक अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा दिया है, हर एक मुक़र्ररा (निश्चित) वक़्त तक चलता रहेगा और बेशक जो तुम अमल करते हो, अल्लाह उससे खूब बाखबर है।

(30) यह इसलिए कि बेशक अल्लाह ही हक़ है और बेशक उसके सिवा जिसे वह पुकारते हैं बातिल (असत्य) है, और बिलाशुब्ह अल्लाह ही बुलंद मर्तबा, बहुत बड़ा है।

(31) क्या आपने देखा नहीं कि बेशक समंदर में अल्लाह के फ़ज़्ल से कश्तियां चलती हैं ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाए, उसमें बिलाशुब्ह हर बड़े साबिर (सब्र करने वाले) शाकिर (शुक्र करने वाले) के लिए निशानियां हैं।

(32) और जब (समंदर में) सायबानों (छप्परों) की मानिन्द (जैसी) कोई मौज (ध ारायें) उन्हें ढाँप लेती है तो वह खालिस (विशुद्ध) एतक़ाद (आस्था) के साथ अल्लाह ही को पुकारते हैं, फ़िर जब वह उन्हें खुश्की (थल) की तरफ निजात देता है तो उनमें से चंद लोग ही अहद (वादे) पर क़ायम रहते हैं, और हर अहद तोड़ने वाला नाशुक्रा ही हमारी आयतों का इन्कार करता है।

(33) ऐ लोगो! अपने रब का तक़्वा इख्तियार करो, और डरो उस दिन से जब कोई बाप अपनी औलाद के काम न आएगा और न औलाद अपने बाप के कुछ काम

आएगी, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, लिहाज़ा दुनयावी ज़िन्दगी तुम्हें धोखे में न डाल दे और कोई धोकेबाज़ तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखे में न डाले।

(34) बेशक क़यामत का इल्म अल्लाह ही के पास है और वही बारिश नाज़िल करता है और वही जानता है जो माँओं के पेटों में है और कोई नहीं जानता कि वह कल क्या काम करेगा और कोई नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा, बेशक अल्लाह खूब जानने वाला, खूब बाखबर है।

सूरह सज्दा-32

(यह मक्की सूरत है इसमें 30 आयतें और 3 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अलीफ. लाम. मीम.।

(2) इसमें कोई शक नहीं कि इस किताब का नुजूल रब्बुलआलमीन की तरफ से है।

(3) क्या वह कहते हैं कि नबी ने उसे खुद गढ़ लिया है, (नहीं) बल्कि वह आपके रब की तरफ से हक़ है ताकि आप उन लोगों को डराएं जिनके पास आपसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, शायद कि वह हिदायत पाएं।

(4) अल्लाह वह है जिसने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरम्यान है छः दिन में पैदा किया, फ़िर वह अर्श पर मुस्तवी (विराजमान) हुआ, उसके सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न कोई सिफारिशी, क्या फ़िर तुम नसीहत (उपदेश) नहीं पकड़ते?

(5) वही आसमान से ज़मीन तक (सारे) मआमले की तदबीर करता है, फ़िर एक दिन में, जिसकी मिक़दार (गणना) तुम्हारे शुमार के मुताबिक़ एक हज़ार साल है, वह मुआमला (मामला) ऊपर उसके पास जाता है।

(6) वही छुपे और ज़ाहिर का जानने वाला, निहायत ग़ालिब, खूब रहम करने वाला है।

(7) जिसने हर चीज़ जो भी पैदा की, अच्छे तरीक़े से बनाई और उसने तख़्लीक़े इंसान की इब्तिदा (शुरूआत) मिट्टी से की।

(8) फ़िर उसकी नस्ल एक हक़ीर (तुच्छ) पानी के जोहर (नुत्फ़े) से चलाई।

(9) फ़िर उस (के अंग) को दुरूस्त किया और उसमें अपनी रूह फूकीं, और उसने तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाएं, तुम कम ही शुक्र करते हो।

(10) और उन लोगों (काफिरों) ने कहाः क्या जब हम ज़मीन में गुम हो जाएँगे तो क्या ज़रूर हम नई पैदाईश में (ज़ाहिर) होंगे? (नहीं!) बल्कि वह तो अपने रब की मुलाक़ात ही के मुन्कर हैं।

(11) कह दीजिएः तुम्हें मौत का फरिश्ता

फौत करता है जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, फ़िर तुम अपने रब ही की तरफ लौटाए जाओगे।

(12) काश! आप देखें जब मुजरिम अपने रब के हुज़ूर सर झुकाए (पेश) होंगे, (वह कहेंगे:) ऐ हमारे रब! हमने देख लिया और हमने सुन लिया, लिहाज़ा हमें वापस भेज कि हम नेक अमल करें, बेशक हम यक़ीन करने वाले हैं।

(13) और अगर हम चाहते तो हम हर शख़्स को उसकी हिदायत (मार्ग-दर्शन) दे देते, लेकिन मेरी तरफ से बात (वादा) साबित हो गया कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों, सब से ज़रूर भर दूंगा।

(14) तुम (अज़ाब) चखो इसलिए कि तुमने अपने इस दिन की मुलाक़ात भुलाए रखी, बेशक (आज) हमने भी तुम्हें भुला दिया, और जो (बुरे) अमल तुम करते थे, उनकी वजह से तुम हमेशा का अज़ाब चखो।

(15) हमारी आयतों पर तो सिर्फ वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन्हें उनके साथ नसीहत की जाती है तो वह सज्दे में गिर पड़ते हैं और वह अपने रब की हम्द के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं और वह घमंड नहीं करते।

(16) उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं (और) वह अपने रब को ख़ौफ और उम्मीद से पुकारते हैं और जो हमने उन्हें रिज़्क़ दिया है उसमें से वह खर्च करते हैं।

(17) कोई नफ्स नहीं जानता कि उनके आमाल के बदले में, उनके लिए आँखों की ठंडक की कौन कौन सी चीज़ें पोशीदा (छुपा) रखी गई हैं।

(18) क्या फ़िर मोमिन ऐसे हो सकता है जैसे फ़ासिक़, वह (कभी) बराबर नहीं हो सकते।

(19) लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, उनके लिए रहने के बागात हैं, उन आमाल के बदले में मेहमानी है जो वह किया करते थे।

(20) और लेकिन जिन लोगों ने नाफरमानी की तो उनका ठिकाना आग है, जब भी वह इरादा करेंगे कि वह उससे निकलें तो उन्हें उसीमें लौटा दिया जाएगा और उनसे कहा जाएगा कि उस आग का अज़ाब चखो जिसे तुम झुठलाते थे।

(21) और हम (आख़िरत के) बड़े अज़ाब से पहले उन्हें (दुनिया का) छोटा अज़ाब ज़रूर चखाएँगे ताकि वह (हमारी तरफ) रूजू करें।

(22) और उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन है जिसे उसके रब की आयतों के साथ नसीहत (उपदेश) की गई, फ़िर उसने मुँह मोड़ा, यक़ीनन हम मुजरिमों से इन्तिक़ाम

लेने वाले हैं।

(23) और बिलाशुब्ह हमने मूसा को किताब दी, लिहाज़ा (ऐ नबी!) आप उसकी मुलाक़ात के मुतअ़लिक़ शक में न रहें और हमने उस (तौरात) को बनी इस्राईल के लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) बनाया।

(24) और जब उन्होंने सब्र किया तो हमने उनमें कुछ ऐसे पेशवा बनाए जो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे और वह हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे।

(25) बिलाशुब्ह आपका रब ही रोज़े क़यामत उनके बीच उसका फैसला करेगा जिसमें वह इख़्तिलाफ करते थे।

(26) क्या उन पर वाज़ेह नहीं हुआ कि हमने उनसे पहले कितनी ही उम्मतें हलाक कर दीं जिनके घरों में (अब) वह चलते फिरते हैं? बेशक उसमें अ़ज़ीम निशानियां हैं, क्या फ़िर वह सुनते नहीं?

(27) क्या उन्होंने देखा नहीं कि बेशक हम पानी को बन्जर ज़मीन की तरफ बहा ले जाते हैं, फ़िर हम उसके ज़रिये से खेती निकालते हैं, उसे उनके चौपाए और वह खुद भी खाते हैं, क्या फ़िर वह ग़ौर नहीं करते?

(28) और वह कहते हैंः अगर तुम सच्चे हो तो (बताओ) यह फैसला कब होगा?

(29) कह दीजिएः फैसले के दिन कुफ्र वालों को उनका ईमान लाना नफा नहीं देगा और न उन्हें मोहलत ही दी जाएगी।

(30) इसलिए आप उनसे मुँह फ़ेर लें और इन्तिज़ार करें, बेशक वह भी इन्ज़िार कर रहे हैं।

सूरह अहज़ाब-33

(यह मदनी सूरत है इसमें 73 आयतें और 9 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ऐ नबी! अल्लाह से डरते रहीये और काफिरों और मुनाफिक़ों की इताअत न कीजिए, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(2) और उसका इत्तेबा कीजिए जो आपके रब की तरफ से आप पर वह्यी की जाती है, बेशक तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उससे खूब बाखबर है।

(3) और आप अल्लाह पर भरोसा कीजिए, और अल्लाह बतौर कारसाज़ काफी है।

(4) अल्लाह ने किसी शख़्स के सीने में दो दिल नहीं रखे। और तुम अपनी जिन बीवियों को माँ कह बेठते हो, उन्हें अल्लाह ने तुम्हारी (हक़ीक़ी) माँऐं नहीं बनाया और न उसने तुम्हारे लेपालकों (मुँह बोले बेटों) को तुम्हारे (हक़ीक़ी) बेटे बनाया है, यह तो

तुम्हारे अपने मुँह की बातें हैं और अल्लाह हक़ (बात) कहता है और वही सीधा रास्ता दिखाता है।

(5) उन (लेपालकों) को उनके (हक़ीक़ी) बापों की निस्बत से पुकारो, अल्लाह के नज़दीक यह बहुत इंसाफ की बात है, फ़िर अगर तुम्हें उनके बापों का इल्म न हो तो वह तुम्हारे दीनी भाई और तुम्हारे दोस्त हैं और उस मामले में तुम भूल चूक जाओ तो उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं लेकिन तुम्हारे दिल जिस बात का अज़्म कर लें (तो वह गुनाह है) और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बड़ा रहम करने वाला है।

(6) नबी मोमिनों पर ख़ुद उनसे भी ज़्यादा हक़ रखने वाले हैं और नबी की बीवियां उनकी माँऐं हैं और रिश्तेदार अल्लाह की किताब की रू से (दूसरे) मोमिनों और मुहाजरीन की निस्बत आपस में (तरके के) ज़्यादा हक़दार हैं मगर तुम अपने दोस्तों से कोई भलाई करना चाहो (तो कर सकते हो), यह किताबे इलाही में लिखा हुआ है।

(7) और (ऐ नबी! याद करें) जब हमने तमाम नबियों से उनका अ़हद लिया और आपसे भी और नूह और इब्राहीम और मूसा और ईसा इब्ने मरयम से भी और उनसे हमने पुख़्ता अ़हद लिया।

(8) ताकि अल्लाह सच्चों से उनकी सच्चाई के बारे में पूछे, और उसने काफिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

(9) ऐ ईमान वालो! तुम अपने ऊपर अल्लाह का अहसान याद करो, जब तुम पर (कुफ्फार के) लश्कर चढ़ आए थे, फ़िर हमने उन पर आंधी और (फरिश्तों के) ऐसे लश्कर भेजे जिन्हें तुमने देखा नहीं और तुम जो अमल करते हो, अल्लाह उसे खूब देख रहा है।

(10) जब दुश्मन तुम पर तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से चढ़ आए और जब आँखें पथरा गई और कलेजा मुँह को आने लगे और तुम अल्लाह के बारे में तरह तरह के गुमान करने लगे।

(11) वहाँ मोमिन आज़माए गए और शिद्दत से हिला मारे गए।

(12) और जब मुनाफिक़ और जिन लोगों के दिलों में मर्ज़ था, कह रहे थेः अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे महज़ धोखे का वादा किया था।

(13) और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा थाः ऐ अहले यसरब (मदीना)! (आज) तुम्हारे लिए (लश्कर के साथ) ठहरने का मौक़ा नहीं, लिहाज़ा तुम लौट चलो और उनमें से एक गिरोह नबी से इजाज़त मांग रहा था, वह कहते थेः बेशक हमारे घर गैर महफूज़ हैं हालांकि वह गैर महफूज़ नहीं थे,

वह तो सिर्फ (जंग से) फरार चाहते थे।

(14) और अगर इस (मदीना) के अतराफ (चारों तरफ) से उन पर (कुफ्फर के) लश्कर दाख़िल किये जाते, फ़िर उन्हें फित्ने (खानाजंगी) की दअवत दी जाती तो (फौरन) उसमें कूद पढ़ते और उसमें बस थोड़ी ही देर करते।

(15) और बिलाशुब्ह उससे पहले उन्होंने अल्लाह से अहद किया था कि वह पीठ नहीं फेरेंगे और अल्लाह के अहद की पूछ गाछ तो होनी है।

(16) आप कह दीजिएः अगर तुम मौत से या क़त्ल होने से भागो तो तुम्हारे भागना तुम्हे हरगिज़ नफा नहीं देगा और तब तुम बहुत कम फायदा उठाओगे।

(17) कह दीजिए: कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सके अगर वह तुम्हें नुक़्सान (पहुँचाने) का इरादा करे या वह तुम पर रहमत का इरादा करे? और वह अल्लाह के सिवा अपने लिए न कोई हिमायती पाएँगे और न कोई मददगार।

(18) बेशक अल्लाह उन्हें जानता है जो तुममें से (जिहाद में) रूकावटें डालने वाले हैं और उन्हें भी जो अपने भाईयों से कहते हैंः हमारे पास आ जाओ और वह जंग में कम ही शरीक होते हैं।

(19) इस हाल में कि वह तुम्हारा साथ देने में सख़्त बखील (कंजूस) हैं, इसलिए जब ख़ौफ (का वक़्त) आए तो आप उन्हें देखते हैं कि वह यूं आँखें घुमा घुमा कर आपकी तरफ देखते हैं जैसे वह शख़्स जिस पर मौत की ग़शी तारी हो, फ़िर जब खतरा दूर हो जाए तो माले (ग़नीमत) के इन्तिहाई हरीस (लालची) बनकर तुम्हारे सामने तेज़ तेज़ ज़बाने चलाने लगते हैं, यह लोग ईमान लाए ही नहीं लिहाज़ा अल्लाह ने उनके आमाल बरबाद कर दिए और यह अल्लाह के लिए निहायत आसान है।

(20) वह समझते हैं कि (अभी तक) लश्कर गए नहीं और अगर यह लश्कर चढ़ आएं तो वह तमन्ना करते हैं काश! वह सेहरा नशीन (रेगिस्तान में रहने वाले) देहातियों में जा बसे होते और (वहाँ) तुम्हारी खबरें दरयाफ्त (मालूम) किया करते, और अगर वह तुम में मौजूद होते तो वह (दुश्मन से) लड़ाई में कम ही हिस्सा लेते।

(21) यक़ीनन तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह (की ज़ात) में बेहतरीन नमूना है, हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह (से मुलाक़ात) और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता है और कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करता है।

(22) और मोमिनों ने जब लश्कर देखे तो कहाः यह तो वही है जिस का अल्लाह और उसके रसूल ने हम से वादा किया था और

अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा था और उस (चीज़) ने उनके ईमान और फरमाबरदारी को और ज़्यादा कर दिया।

(23) मोमिनों में से कुछ वह लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से जो अहद किया था वह सच कर दिखाया इसलिए उनमें से बअ्ज़ ने अपना अहद पूरा किया (शहादत पा गए) और उनमें से बअ्ज़ इन्तिज़ार में हैं और उन्होंने (अहद में) कोई तब्दीली नहीं की।

(24) ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई की जज़ा (बदला) दे और मुनाफिक़ों को अगर चाहे तो अज़ाब दे या उनकी तौबा क़बूल फरमाए, यक़ीनन अल्लाह बहुत मग्फिरत वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(25) और (ग़ज़्व-ए-अहज़ाब में) अल्लाह ने काफिरों को उनके (नाकामी के) गुस्से में लौटा दिया, वह कोई फायदा हासिल न कर सके और (उस) लड़ाई में अल्लाह मोमिनों के लिए काफी हो गया, और अल्लाह बड़ी कुव्वत वाला, निहायत ग़ालिब है।

(26) और अहले किताब में से जिन लोगों ने काफिरों की मदद की थी उन्हें अल्लाह ने उनके क़िलों से उतारा और उनके दिलों में रौब डाल दिया, तुम उन (बनूक़ुरैज़ा) के एक गिरोह को क़त्ल कर रहे थे और दूसरे गिरोह को क़ैदी बना रहे थे।

(27) और अल्लाह ने तुम्हें उनकी ज़मीनों, उनके घरों, उनके मालों और उस ज़मीन का वारिस बना दिया जिसे तुम्हरे क़दमों ने रोन्दा नहीं था, और अल्लाह हर शै (चीज़) पर खूब क़ादिर है।

(28) ऐ नबी! अपनी बीवियों से कह दीजिएः अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़ीनत (शोभा) चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ सामान दूं और तुम्हें भले तरीक़े से रूख़्सत कर दूं।

(29) और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हो, तो अल्लाह ने तुममें से नेक काम करने वालों के लिए अज्रे अज़ीम (बड़ा बदला) तैयार कर रखा है।

(30) ऐ नबी की बीवियों! तुममें से जो कोई खुली बेहयाई का काम करे, उसे दोहरा अज़ाब दिया जाएगा और अल्लाह के लिए यह निहायत आसान है।

(31) और तुममें से जो अल्लाह और उसके रसूल की फरमाबरदारी करे और नेक अमल करे तो हम उसे उसका अज्र (बदला) दुगना देंगे और उसके लिए हमने इज्ज़त का रिज़्क़ तैयार कर रखा है।

(32) ऐ नबी की बीवियो! तुम आम औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम तक़्वा (परहेज़गारी) इख़्तियार करती हो तो (किसी

भी गैरमहरम से) नज़ाकत से (नर्म व मुलायम लहज़े में) बात न किया करो कि फ़िर वह शख़्स जिसके दिल में रोग हो तमा (लालच) करने लगे और तुम माकूल (अच्छी) बात कहा करो।

(33) और तुम अपने घरों में टिक कर रहो, और गुज़िश्ता दौरे (भूतपूर्व) जाहलियत (अज्ञानता) की ज़ैब व ज़ीनत (सज-धज) की नुमाईश के मानिन्द (अपनी) ज़ैब व ज़ीनत की नुमाईश न करती फिरो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो, ऐ अहले बैत! और अल्लाह तो चाहता है कि वह तुम से नापाकी दूर कर दे और तुम्हें खूब पाक कर दे।

(34) और तुम्हारे घरों में जो अल्लाह की आयतें और हिकमत (की बातें) पढ़ी जाती हैं वह याद करो, यक़ीनन अल्लाह निहायत बारीक बीन, खूब बाखबर है।

(35) बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, फ़रमाबरदार मर्द और फरमाबरदार औरतें, सच्चे मर्द और सच्ची औरतें, साबिर मर्द और साबिर औरतें, आजिज़ी करने वाले मर्द और आजिज़ी करने वाली औरतें, सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें, रोज़ादार मर्द और रोज़ादार औरतें, अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले मर्द और हिफाज़त करने वाली औरतें और अल्लाह का बकसरत ज़िक्र करने वाले मर्द और ज़िक्र करने वाली औरतें, उन सबके लिए अल्लाह ने मग्फिरत (क्षमा) और अज्रे अज़ीम (बड़ा बदला) तैयार कर रखा है।

(36) और किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत को यह हक़ नहीं कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फैसला कर दें तो उनके लिए अपने मामले में उनका कोई इख्तियार (बाक़ी) रहे और जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करे तो वह यक़ीनन खुली गुमराही में जा पड़ा।

(37) और (ऐ नबी! याद करें) जब आप उस शख़्स (ज़ैद बिन हारसा) से जिस पर अल्लाह ने इनआम किया और आपने भी इनआम किया था, कहा रहे थे कि तू अपनी बीवी (ज़ैनब) को अपने पास रख और अल्लाह से डर और आप अपने दिल में वह बात (ले पालक की तलाक दी हुई से निकाह करने की बात) छुपाते थे जिसे अल्लाह ज़ाहिर करना चाहता था और आप लोगों से डरते थे, हालांकि अल्लाह ज़्यादा हक़दार है कि आप उससे डरें, फ़िर जब ज़ैद ने उससे अपनी हाजत पूरी कर ली तो हमने उसका निकाह आपसे कर दिया ताकि मोमिनों के लिए अपने मुँह बोले बेटों की बीवियों (से निकाह)

में कोई हर्ज न रहे, जब वह उन से (अपनी) हाजत (जरूरत) पूरी कर लें और अल्लाह का हुक्म तो (पूरा) हो कर ही रहता है।

(38) और नबी के लिए इस बात में कोई हर्ज नहीं जो अल्लाह ने उसके लिए मुक़र्रर कर दी, जो लोग (अम्बिया) पहले गुज़र चुके हैं उनमें भी अल्लाह का यही तरीक़ा रहा है और अल्लाह का हुक्म एक तै शुदा फैसला होता है।

(39) वह (अम्बिया) जो अल्लाह के पैगाम पहुँचाते थे और उससे डरते थे और उसके सिवा किसी से नहीं डरते थे और अल्लाह हिसाब लेने वाला काफी है।

(40) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और खातिमुन्नबीईन हैं और अल्लाह हर शै (चीज़) को खूब जानने वाला है।

(41) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह को कसरत से याद करो।

(42) और तुम सुबह व शाम उसकी तस्बीह बयान करो।

(43) वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उसके फरिश्ते (रहमत की दुआ करते हैं) ताकि वह तुम्हें अन्धेरों से रोशनी की तरफ निकाल लाए और अल्लाह मोमिनों पर बहुत रहम करने वाला है।

(44) जिस दिन वह अल्लाह से मिलेंगे तो उनके लिए दुआ होगी ''सलाम'' और अल्लाह ने उनके लिए इज्ज़त वाला अज्र तैयार किया है।

(45) ऐ नबी! बिलाशुब्ह हमने आपको गवाही देने वाला, बशारत (खुशखबरी) देने वाला और डराने वाला (बना कर) भेजा है।

(46) और अल्लाह के हुक्म से उस की तरफ दअवत देने वाला और रोशन चिराग़ (बना कर भेजा है)।

(47) और मोमिनों को इस बात की बशारत (खुशखबरी) दे दीजिए कि बेशक उनके लिए अल्लाह की तरफ से बहुत बड़ा फज़ल है।

(48) और काफिरों और मुनाफ़िक़ों की इताअत न कीजिए और उनकी इज़ा रसानी (तकलीफ) नज़र अन्दाज़ कर दीजिए और अल्लाह पर भरोसा कीजिए और अल्लाह कारसाज़ (काम बनाने के लिए) काफी है।

(49) ऐ ईमान वालो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो फ़िर उन्हें छूने से पहले उनको तलाक़ दे दो तो तुम्हारे लिए उन पर कोई इद्दत (तलाक़ के बाद मुक़र्रर वक़्त तक की मना की हुई मुद्दत) नहीं कि तुम उस (इद्दत) को शुमार करो, लिहाज़ा तुम उन्हें कुछ दे दिला कर निहायत अच्छे तरीक़े से रूख़्सत (विदा) कर दो।

(50) ऐ नबी! बेशक हमने आपके लिए

आपकी वह बीवियां हलाल कर दी हैं जिनके मेहर आपने अदा कर दिए और वह कनीज़ें भी जो आपकी मिल्कियत ठहरी उन (कनीज़ों) में से जो अल्लाह ने आपको ग़नीमत में दीं और आपके चचा की बेटियां और आपकी फुफियों की बेटियां और आपके मामूओं की बेटियां और आपकी खालाओं की बेटियां भी, जिन्होंने आपके साथ हिजरत की और मोमिन औरत भी, अगर वह अपने आपको नबी के लिए हिबा (वक़्फ) कर दे, अगर नबी यह इरादा करे कि उसे (अपने) निकाह में ले आए, जबकि यह (इजाज़त) दूसरे मुसलमानों के सिवा खास आपके लिए है, हम (खूब) जानते हैं जो कुछ हमने उन (मोमिनों) पर उनकी बीवियो और उनकी लोंडियों के बारे में फर्ज़ किया है, (आपके लिए अजवाज़ की यह हिल्लत इसलिए है) कि आप पर कोई तंगी न रहे और अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(51) आप अपनी बीवियों में से जिसे चाहें (अपने से) अलग रखें और जिसे चाहे अपने पास जगह दें और जिन्हें आपने अलग रखा, उनमें से जिसे भी आप (अपने पास रखना) चाहें, तो भी आप पर कोई गुनाह नहीं, यह (इख्तियार) इस बात के ज़्यादा क़रीब है कि उनकी आँखें ठंडी हों और वह ग़मग़ीन न हों और जो कुछ भी आप उन्हें दें वह सब उस पर राज़ी हों और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है और अल्लाह खूब जानने वाला, निहायत हलीम (सहनशील) है।

(52) और इनके बाद आपके लिए (और) औरतें हलाल नहीं और न यह (जाईज़ है) कि आप उन (मौजूदा बीवियों) की जगह और बीवियों बदल लें अगरचे उनका हुस्न आपको अच्छा लगे, सिवाए उन लौंडियों के जो आपकी मिल्कियत ठहरें और अल्लाह हर चीज़ पर खूब निगहेबान है।

(53) ऐ ईमान वालो! तुम नबी के घरों में दाख़िल न हुआ करो अव्वलन यह कि तुम्हें खाने के लिए इजाज़त दी जाए, न यह कि (वह जा कर) खाना पकने का इन्तिज़ार करते रहो, लेकिन जब तुम्हें दअवत दी जाए तब तुम दाख़िल हो जाओ, फ़िर जब खाना खा चुको तो मुन्तशिर (जुदा) हो जाओ और (वहीं) बातों में न लगे रहो, बिलाशुब्ह तुम्हारी यह रविश (तरीका) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तकलीफ देती है, इसलिए वह तुम से शरमाते हैं और अल्लाह हक़ बात से नहीं शरमाता और जब तुम उन (नबी की बीवियों) से कोई चीज़ मांगों तो परदे के पीछे से मांगों, यह बात तुम्हारे दिलों और उनके दिलों के लिए ज़्यादा पाकीज़ा है और

तुम्हारे लिए यह जाईज़ नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को इज़ा (कष्ट) दो और न यह (जाईज़ है) कि तुम उस (की वफात) के बाद कभी उसकी बीवियों से निकाह करो, बेशक तुम्हारा यह अमल अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा गुनाह है।

(54) अगर तुम कोई चीज़ ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ तो बिलाशुब्ह अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

(55) औरतों पर अपने बापों और अपने बेटों और अपने भाईयों और अपने भतीजों और अपने भान्जों और अपनी औरतों और अपनी मिल्कियत में आने वालों यानी लोंडी गुलामों (के सामने आने) में कोई गुनाह नहीं, और (औरतों!) तुम अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।

(56) बिलाशुब्ह अल्लाह और उसके फरिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी उस पर दरूद भेजो और खूब सलाम भेजो।

(57) बिलाशुब्ह जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को इज़ा (तकलीफ) पहुँचाते हैं, अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लअनत की है और उनके लिए रूस्वाकुन अज़ाब तैयार किया है।

(58) और जो लोग मोमिन मर्दो और मोमिन औरतों को इज़ा (तकलीफ) पहुँचाएं जबकि उन्होंने कोई जुर्म न किया हो तो यक़ीनन उन लोगों ने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ उठाया।

(59) ऐ नबी! अपनी बीवियों और अपनी बेटियों और मोमिनों की औरतों से कह दीजिए कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें, यह (बात) इसके ज़्यादा क़रीब है कि वह पहचान ली जाएं और उन्हें इज़ा न पहुँचाई जाए और अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(60) अगर मुनाफिक़ीन और जिन लोगों के दिलों में मर्ज़ है और मदीने में झूठी अफवाहें उड़ाने वाले बाज न आए तो हम ज़रूर आपको उन पर मुसल्लत कर देंगे, फ़िर वह आपके पास इस (मदीने) में थोड़ी मुद्दत ही रह सकेंगे।

(61) वह धुतकारे हुए हैं, जहाँ भी वह पाए जाएं पकड़ लिए जाएँगे और बुरी तरह क़त्ल कर दिए जाएँगे।

(62) जो लोग पहले गुज़र चुके हैं उनमें भी अल्लाह का यही तरीक़ा रहा है और आप अल्लाह के तरीके में हरगिज़ कोई तब्दीली नहीं पाएँगे।

(63) लोग आपसे क़यामत के बारे में पूछते हैं, कह दीजिएः उसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है, आपको क्या खबर, शायद क़यामत क़रीब ही हो?

(64) बिलाशुब्ह अल्लाह ने काफिरों पर लअनत की है और उनके लिए खूब खड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।

(65) वह उसमें हमेशा हमेशा तक रहेंगे, वह (अपना) कोई दोस्त और कोई मददगार न पाएँगें।

(66) जिस दिन आग में उनके चेहरे उलट पुलट किये जाएँगे तो वह कहेंगेः ऐ काश! हमने अल्लाह की इताअत की होती और हमने रसूल की इताअत की होती।

(67) और वह कहेंगेः ऐ हमारे रब! बेशक हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों की इताअत की, तो उन्होंने हमें सीधी राह से भटका दिया।

(68) ऐ हमारे रब! उनको दोगुना अज़ाब दे और उन पर बड़ी सख्त (और ज़्यादा) लअनत कर।

(69) ऐ ईमान वालों! तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा को इज़ा (तकलीफ) दी थी, फ़िर अल्लाह ने उसे उस (झूठी बात) से बरी कर दिया जो उन्होंने कही थी और वह अल्लाह के नज़दीक बड़े रूतबे वाला था।

(70) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी सच्ची बात कहा करो।

(71) वह तुम्हारे अमल दुरूस्त कर देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह बख्श (क्षमा कर) देगा और जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करे, तो यक़ीनन उसने बहुत बड़ी कामयाबी हासिल कर ली।

(72) बिलाशुब्ह हमने (अपनी) अमानत आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की तो उन्होंने उसे उठाने से इन्कार कर दिया और वह उससे डर गए और वह (अमानत) इन्सान ने उठा ली, यक़ीनन वह बड़ा ज़ालिम और बहुत जाहिल है।

(73) (हमने यह अमानत इसलिए उठवाई) कि अल्लाह मुनाफिक़ मर्दों और मुनाफिक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को अज़ाब दे और अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर रहम फरमाए, और अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

सूरह सबा-34

(यह मक्की सूरत है इसमें 54 आयतें और 6 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) तमाम तअरीफें अल्लाह ही के लिए है जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है और आख़िरत में भी हम्द उसी के लिए है और वह निहायत हिकमत वाला, बाखबर है।

(2) वह जानता है जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है और जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है और वह निहायत रहम करने वाला, बहुत बख़्शने वाला है।

(3) और काफिरों ने कहाः हम पर क़यामत नहीं आएगी, कह दीजिएः क्यों नहीं! मेरे आलिमुल ग़ैब रब की क़सम! बिलाशुब्ह वह तुम पर ज़रूर आएगी, आसमानों में और ज़मीन में ज़र्रा बराबर कोई चीज़ भी उससे छुपी नहीं रह सकती, और ज़र्रे से छोटी और बड़ी कोई चीज़ ऐसी नहीं जो वाज़ेह किताब (लोह महफूज़) में दर्ज न हो।

(4) ताकि अल्लाह उन लोगों को जज़ा (बदला) दे जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, वही लोग हैं जिनके लिए मग्फिरत और बइज्ज़त रोज़ी है।

(5) और जिन लोगों ने हमारी आयतों में (हमें) आजिज़ करने की कोशिश की, उन्ही लोगों के लिए सख्त तरीन, दर्दनाक अज़ाब है।

(6) और जिन लोगों को इल्म दिया गया वह जानते हैं कि जो कुछ आपकी तरफ आपके रब की तरफ से नाज़िल किया गया वह बरहक़ (सत्य) है और वह अल्लाह ग़ालिब, तअरीफ वाले के रास्ते की तरफ रहनुमाई करता है।

(7) और काफिरों ने कहाः क्या हम तुम्हें एक ऐसा शख्स बताएं जो तुम्हे यह खबर देता है कि जब तुम बिल्कुल ही पारा पारा कर दिए जाओगे तो बेशक तुम अज़सरे नू पैदा (नये सिरे से) किये जाओगे?

(8) क्या उसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है या उसे जुनून (लाहक़) है? (बिल्कुल नहीं!) बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वह अज़ाब और दूर की गुमराही में पड़े हैं।

(9) क्या फ़िर उन्होंने अपने आगे और पीछे आसमान व ज़मीन की तरफ नहीं देखा? अगर हम चाहे तो उन्हें ज़मीन में धंसा दें या हम उन पर आसमान के टुकड़े गिरा दें, बिलाशुब्ह उसमें हर रूजू करने वाले बन्दे के लिए ज़रूर एक निशानी है।

(10) और यक़ीनन हमने दाऊद को अपनी तरफ से फज़ीलत अता की, (हमने हुक्म दियाः) ऐ पहाड़ों! उसके साथ तस्बीह दोहराओ, और (ऐ) परिन्दो! (तुम भी) और हमने उसके लिए लोहा नर्म कर दिया।

(11) कि तू कामिल कुशादा ज़िरहें बना और कड़ियां जोड़ने में (मुनासिब) अन्दाज़ रख और तुम (सब) नेक अमल करो, तुम जो करते हो बिलाशुब्ह उसे मैं खूब देख रहा हूँ।

(12) और हवा को सुलेमान के (ताबे

किया), उसका सुबह का चलना एक माह (की मुसाफत) था और शाम का चलना भी एक माह (की मुसाफत) था, और हमने उसके लिए पिघले हुए तांबे का चश्मा बहा दिया और कुछ जिन्न (उसके ताबे कर दिए) जो उसके सामने उसके रब के हुक्म से काम करते थे और उनमें से जो हमारे हुक्म से सरकशी करता तो हम उसे खूब भड़कती आग के अज़ाब का मज़ा चखाते।

(13) सुलेमान जो चाहता जिन्न उसके लिए वही बना देते, मसलन आलीशान इमारतें और तसवीरें और हौज़ों जैसे (बड़े बड़े) लगन और एक ही जगह (चुल्हों पर) जमी हुई देगें, ऐ आले दाऊद! शुक्राने के तौर पर (नेक) अमल करो और मेरे बन्दों में से शुक्रगुज़ार थोड़े ही हैं।

(14) फ़िर जब हमने सुलेमान पर मौत का फैसला नाफिज़ किया तो जिन्नों को घुन के कीड़े के सिवा किसी चीज़ ने भी सुलेमान की मौत की इत्तिला न दी, वह उसकी लाठी को खाते रहा, फ़िर जब वह गिर पड़ा तो जिन्नों ने जान लिया कि अगर वह ग़ैब जानते होते तो वह उस रूस्वा कुन मश्क्क़त में मुब्तिला न रहते।

(15) सबा (की क़ौम) के लिए उनकी बस्ती में यक़ीनन एक अज़ीम निशानी थी, दाँये और बाँये तरफ दो बाग थे, (हमने कहाः) तुम अपने रब का रिज़्क़ खाओ, और उसका शुक्र अदा करो, (यह) पाकीज़ा शहर है और रब बड़ा बख्शने वाला है।

(16) फ़िर उन्होंने (जब हिदायत से) मुँह मोड़ा तो हमने उन पर पर बाँध (डेम) का सैलाब भेज दिया और उनके दोनों बागों के बदले में हमने उन्हें दो ऐसे बाग दिए जो बदमज़ा फल, (बकसरत) झाऊ और कुछ बैरियों वाले थे।

(17) यह हमने उन्हें उनकी नाशुक्री की सज़ा दी और हम नाशुक्रों ही को सज़ा देते हैं।

(18) और हमने उन (अहले सबा) के और बस्तियों के दरम्यान जिनमें हमने बरकत रखी थी, कई बस्तियां आपस में (सरे राह आबाद) रखी थी और उनमें हमने चलने (आने जाने) की मन्जिलें मुक़र्रर कर दी थी, (हमने कहाः) तुम उनमें रातों और दिनों को अमन से सफर करो।

(19) फ़िर उन्होंने ने कहाः ऐ हमारे रब! हमारे सफरों में दूरियाँ पैदा कर दे और उन्होंने अपने पर जुल्म किया, इसलिए हमने उन्हें अफसाने बना डाला और पूरे तौर पर टुकड़े टुकड़े कर दिया, बिलाशुब्ह उसमें हर साबिर व शाकिर के लिए अज़ीम निशानियां हैं।

(20) और इब्लीस ने उनके मुतअल्लिक़ अपना ख्याल यक़ीनन सच कर दिखाया,

इसलिए मोमिनों की एक जमाअत के सिवा सब ने उसका इत्तिबा किया।

(21) और उस (इब्लीस) का उन पर कोई ज़ोर न था मगर इसलिए कि हम उसे जान लें जो आख़िरत पर ईमान रखता है, उनमें से जो आख़िरत के बारे में शक में है, और आपका रब हर चीज़ पर खूब निगहबान है।

(22) (ऐ नबी!) आप कह दीजिएः उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने अल्लाह के सिवा (मअ़बूद) ख्याल किया था, वह आसमानों में और ज़मीनों में ज़र्रा बराबर इख्तियार नहीं रखते, और न उनका दोनों में कोई हिस्सा है और न उनमें से कोई अल्लाह का मददगार ही है।

(23) और उसके यहाँ सिर्फ उस शख़्स की सिफारिश नफा देगी जिसे अल्लाह इजाज़त देगा यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो (आपस में) कहते हैंः तुम्हारे रब ने क्या कहा? वह कहते हैंः हक़ (सच कहा) और वह बहुत बुलंद, बहुत बड़ा है।

(24) कह दीजिएः तुम्हें आसमानों और ज़मीन से कौन रिज़्क़ देता है? कह दीजिएः अल्लाह ही, और बिलाशुब्ह हम या तुम हिदायत (मार्ग-दर्शन) पर हैं या खुली गुमराही में।

(25) कह दीजिएः जो हमने जुर्म किया तुमसे उसकी बाबत (बारे में) नहीं पूछा जाएगा और हमसे उसकी बाबत पूछा जाएगा जो तुम अमल करते हो।

(26) कह दीजिएः हमारे रब हम सब को जमा करेगा, फ़िर वह हमारे दरम्यान हक़ के साथ फैसला करेगा और वही है बेहतर फैसला करने वाला, खूब जानने वाला।

(27) कह दीजिएः तुम मुझे वह (मअ़बूद) दिखाओ जिन्हें तुमने शरीक ठहरा कर अल्लाह के साथ मिला दिया है, (ऐसा) हरगिज़ नहीं! बल्कि वही अल्लाह ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(28) और हमने आपको तमाम इंसानों के लिए बशारत देने वाला और डराने वाला ही बना कर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

(29) और वह कहते हैंः अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा कब (पूरा) होगा?

(30) कह दीजिएः तुम्हारे लिए एक ऐसे दिन का वादा है कि न तुम उससे एक घड़ी पीछे रह सकोगे और न तुम आगे बढ़ सकोगे।

(31) और जिन लोगों ने कुफ्र किया उन्होंने कहाः हम इस कुरआन पर हरगिज़ ईमान नहीं लाएँगे और न उन किताबों पर जो इससे पहले की हैं, और (ऐ नबी!) काश आप देखें! जब ज़ालिम लोग अपने रब के सामने खड़े किये जाएँगे, इस हाल में कि वह

एक दूसरे को इल्ज़ाम दे रहे होंगे, तो जो लोग (दुनिया में) कमज़ोर समझे जाते थे वह उन लोगों से कहेंगे जो घमंड करते थेः अगर तुम न होते तो यक़ीनन हम मोमिन होते।

(32) वह लोग जो घमंड करते थे उन लोगों से कहेंगे जो कमज़ोर समझे जाते थेः क्या हमने तुम्हें हिदायत से रोका था जबकि वह तुम्हारे पास आ गई थी? बल्कि तुम (खुद ही) मुजरिम थे।

(33) और वह लोग जो कमज़ोर समझे जाते थे, उन लोगों से कहेंगे जो घमंड करते थेः (नहीं!) बल्कि (तुम्हारी) रात और दिन की चालों ही ने (हमें रोका था) जब तुम हमें हुक्म देते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ्र करें और उसके शरीक ठहराएं, और वह (सब दिल में) नदामत (शर्म) छुपाएँगे जब अज़ाब देखेंगे और हम उन लोगों की गर्दनों में तौक़ डाल देंगे जिन्होंने कुफ्र किया, उन्हें उसी का बदला दिया जाएगा जो वह अमल करते थे।

(34) और हमने जिस बस्ती में भी कोई डराने वाला (रसूल) भेजा तो उसके खुशहाल लोगों ने यही कहाः बिलाशुब्ह जिस चीज़ के साथ तुम्हें भेजा गया है, हम उसका इन्कार करते हैं।

(35) और उन्होंने कहाः हम (तुमसे) माल और औलाद में ज़्यादा हैं और हमें अज़ाब नहीं दिया जाएगा।

(36) आप कह दीजिएः बिलाशुब्ह मेरा रब जिसके लिए चाहे रिज़्क़ कुशादा करता है और (जिसके लिऐं चाहे) तंग करता है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

(37) और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद ऐसे नहीं जो तुम्हें दर्जे में हमारे क़रीब कर दें मगर (मुक़र्रब वह है) जो ईमान लाया और उसने नेक अमल किये, यही लोग हैं जिनके लिए उनके आमाल का दोगुना बदला है और वह बालाखानों में अमन से रहेंगे।

(38) और जो लोग हमें आजिज़ करने के लिए हमारी आयतों (को झुठलाने) में लगे हुए हैं वही लोग अज़ाब में हाज़िर किये जाएँगे।

(39) कह दीजिएः बेशक मेरा रब अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहे रिज़्क़ कुशादा करता है और (जिसके लिए चाहे) तंग करता है, और तुम जो चीज़ भी खर्च करते हो तो वह उसका एवज़ (बदला) देता है, और वह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।

(40) और जिस दिन वह उन सबको जमा करेगा, तो वह फरिश्तों से कहेगाः क्या यह लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे?

(41) वह कहेंगेः तू पाक है, तू ही उनके सिवा हमारा कारसाज़ है, बल्कि वह तो

जिन्नों की इबादत करते थे, उनके अक्सर उन्हीं पर ईमान रखते थे।

(42) इसलिए (कहा जाएगाः) आज तुम्हारा कोई भी किसी के लिए नफा व नुक़्सान का कुछ इख़्तियार नहीं रखता, और हम उन ज़ालिमों (मुशिरकों) से कहेंगेः उस आग के अज़ाब का मज़ा चखो जिसे तुम झुठलाते थे।

(43) और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें तिलावत की जाती है (तो) वह कहते हैंः यह ऐसा आदमी ही तो है जो चाहता है कि तुम्हें उन (मअबूदों) से रोक दे जिनकी तुम्हारे बाप दादा इबादत किया करते थे और वह कहते हैंः यह (कुरआन) गढ़ा हुआ झूठ ही तो है और जब उन काफिर लोगों के पास हक़ आया तो उन्होंने उसके बारे में कहाः यह तो खुला जादू है।

(44) और हमने उन (कुफ्फार) को कोई किताब नहीं दी कि वह उसे पढ़ते हों और हमने आपसे पहले उनकी तरफ कोई डराने वाला नहीं भेजा।

(45) और उनसे पहले के लोगों ने भी (हक़ को) झुठलाया था जबकि यह तो उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचता जो हमने उनको दिया था फ़िर उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया तो कैसा हुआ उन पर मेरा अज़ाब ?

(46) कह दीजिएः बस मैं तो तुम्हें एक बात की नसीहत (उपदेश) करता हूँ कि तुम अल्लाह के लिए दो दो और एक एक खड़े हो जाओ, फ़िर तुम ग़ौर फ़िक्र करो, तुम्हारे साथी (नबी) में कोई दीवानगी (की बात) नहीं, वह तो सिर्फ तुम्हें सख्त अज़ाब के आने से पहले डराने वाला है।

(47) आप कहः दीजिए मैंने तुमसे कोई सिला (बदला) मांगा हो तो वह तुम्हारे लिए है, मेरा सिला तो अल्लाह के ज़िम्मे है और वह हर शै (चीज़) पर शाहिद (गवाह) है।

(48) कह दीजिएः बिलाशुब्ह मेरा रब ही (पैगम्बर पर) हक़ बात इलक़ा करता है, (वह) ग़ैब खूब जानता है।

(49) आप कह दीजिएः हक़ आ गया और बातिल न पहली बार उभरा न दोबारा उभरेगा।

(50) कह दीजिएः अगर मैं बहका हुआ हूँ तो बिलाशुब्ह मेरे बहकने का वबाल मुझी पर होगा और अगर मैं हिदायत पर हूँ तो यह वह्यी की वजह से है जो मेरा रब मेरी तरफ करता है, बेशक वह खूब सुनने वाला, निहायत क़रीब है।

(51) और काश आप देखें जब वह घबराए हुए होंगे, तो वह (भाग कर) बच न सकेंगे और वह क़रीब ही की जगह से पकड़ लिए जाऐंगे।

(52) और वह कहेंगेः हम (अब) इस पर ईमान लाए हैं और उनके लिए (इतनी) दूर की जगह से (ईमान का) हासिल होना कहाँ (मुम्किन) होगा!

(53) हालांकि इससे पहले (दुनिया में) वह उसके मुन्कर थे और दूर की जगह से बिन देखे ही (अटकल के तीर) फेंकते रहे।

(54) और उनके और उनकी चाहतों के दरम्यान आड़ कर दी जाएगी जैसे इससे पहले उन जैसों के साथ किया गया था, यक़ीनन वह ऐसे शक में पड़े हुए थे जो बेचेन रखने वाला था।

सूरह फातिर-35

(यह मक्की सूरत है इसमें 45 आयतें और 5 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) तमाम तअरीफ अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, फरिश्तों को क़ासिद बनाने वाला, जो दो दो, तीन तीन और चार चार परों वाले हैं, वह अल्लाह जो चाहे (अपनी) मख़्लूक़ (सृष्टि) में ज़्यादा करता है, बिलाशुब्ह अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(2) अल्लाह लोगों के लिए (अपनी) रहमत से जो खोल दे तो कोई उसे बन्द करने वाला नहीं और जिसे वह बन्द करे दे, उसके बाद कोई उसे भेजने (खोलने) वाला नहीं और वह ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(3) ऐ लोगों! अपने ऊपर अल्लाह की नेअमत याद करो, क्या अल्लाह के सिवा कोई और खालिक़ (सृष्टा) है जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ दे? उसके सिवा कोई (सच्चा) मअ़बूद नहीं, फ़िर तुम कहाँ बहकाए जाते हो?

(4) और अगर यह लोग आप को झुठलाते हैं तो आपसे पहले कई रसूल झुठलाए गए हैं और सब काम अल्लाह ही की तरफ लौटाए जाते हैं।

(5) ऐ लोगों! बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, फ़िर तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी धोखे में न डाले और तुम्हें बहुत बड़ा ध ोखेबाज़ (शैतान भी) अल्लाह के बारे में ध ोखे में न डाले।

(6) बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है, लिहाज़ा तुम उसे दुश्मन ही जानो, बस वह तो अपने गिरोह को इसलिए बुलाता है कि वह जहन्नम वाले हों जाएं।

(7) जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उनके लिए सख्त अज़ाब है, और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये उनके लिए मग्फिरत और बहुत बड़ा अज्र है।

(8) क्या फ़िर वह शख़्स जिसके लिए उसका बुरा अमल पुरकशिश बना दिया गया तो वह उसे अच्छा देखता है (हिदायत याफ्ता शख़्स की तरह हो सकता है?) इसलिए बेशक अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करता है और जिसे चाहे हिदायत देता है, लिहाज़ा आपकी जान उन पर अफसोस करते हुए न जाती रहे, यक़ीनन अल्लाह जानता है जो कुछ वह करते हैं।

(9) और अल्लाह ही वह ज़ात है जो हवाएें भेजता है, वह बादल उठाती हैं तो हम उसे मुर्दा शहर की तरफ हांक ले जाते हैं, फ़िर हम उसके ज़रिये से ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा करते हैं, इसी तरह (इन्सानों का) दोबारा जी उठना है।

(10) जो शख़्स इज्ज़त चाहता है, तो इज्ज़त सारी की सारी अल्लाह ही के लिए है, उसकी तरफ पाकिज़ा कलमात चढ़ते हैं और अमल सालेह उन्हें ऊपर उठाता है, और जो लोग बुरी चालें चलते हैं, उनके लिए सख़्त अज़ाब है, और उन्हीं लोगों की चाल बरबाद हो कर रहेगी।

(11) और अल्लाह ही ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फ़िर नुत्फे से, फ़िर तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया, और जो भी मादा हामला (गर्भवती) होती और बच्चा जनती है, अल्लाह को उसका इल्म होता है और जिस बड़ी उम्र वाले को उम्र दी जाती है या उसकी उम्र कम की जाती है तो (वह) एक किताब (लौहे महफ़ूज़) में (दर्ज) है, बिलाशुब्ह यह बात अल्लाह पर निहायत आसान है।

(12) और दो दरिया बराबर नहीं, यह (एक) मीठा खूब मीठा पीने में खुशगवार है और यह (दूसरा) खारा सख़्त कड़वा है, और हर एक में से तुम ताज़ा गोश्त (मछली) खाते हो और ज़ेवर निकालते हो जो तुम पहनते हो और आप दरिया में कश्तियां देखेंगे पानी को फाड़ कर चलने वाली ताकि तुम अल्लाह का फज़्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो।

(13) वह रात को दिन में दाख़िल करता और दिन को रात में दाख़िल करता है, और उसने सूरज और चांद को काम पर लगा दिया है, हर एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए चल रहा है, यही अल्लाह तुम्हारा रब, उसी की बादशाही है और जिन्हें तुम उसके सिवा पुकारते हो वह खजूर की गुठली की बारीक झिल्ली जितना भी इख़्तियार नहीं रखते।

(14) अगर तुम उन्हें पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे और अगर वह सुन भी लें तो वह तुम्हें जवाब नहीं दे सकते और क़यामत के दिन वह तुम्हारे (इस) शिर्क का

इन्कार कर देंगे और कोई आपको खूब बाखबर (अल्लाह) के मानिन्द खबर नही देगा।

(15) ऐ लोगों! तुम ही (सब) अल्लाह के मुहताज हो और अल्लाह तो बिल्कुल बेनियाज़, क़ाबिले तअरीफ है।

(16) अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए (फना कर दे) और (तुम्हारी जगह) एक नई मख़्लूक़ (सृष्टि) ले आए।

(17) और अल्लाह के लिए यह बात कुछ मुश्किल नहीं।

(18) कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा और कोई बोझ लदा शख़्स अपना बोझ उठाने को बुलाएगा तो उसके बोझ में से कुछ भी उठाया न जाएगा अगरचे वह रिश्तेदार ही हो, बस आप तो उन्हीं लोगों को डराते हैं जो अपने रब से बिन देखे डरते हैं और वह नमाज़ क़ायम करते हैं, और जो पाक हो गया तो वह अपने ही लिए पाक होता है और (सबको) अल्लाह ही की तरफ लौट कर जाना है।

(19) और अन्धा और देखने वाला बराबर नहीं (हो सकता)।

(20) और न अन्धेरे और रोशनी।

(21) और न साया और धूप।

(22) और न ज़िन्दे और मुरदे बराबर हो सकता हैं, बेशक अल्लाह जिसे चाहे सुनवा देता है, और आप उनको नहीं सुनवा सकते जो क़ब्रों में हैं।

(23) आप तो सिर्फ एक डराने वाले हैं।

(24) बिलाशुब्ह हमने आपको हक़ के साथ बशीर (खुशखबरी सुनाने वाला) व नज़ीर (डराने वाला) बना कर भेजा है और कोई उम्मत ऐसी नहीं हुई जिसमें कोई डराने वाला न आया हो।

(25) और अगर वह आपको झुठलाते हैं तो उन लोगों ने भी तो झुठलाया था जो उनसे पहले हुए, उनके पास उनके रसूल वाज़ेह निशानियां और सहीफे और रोशन किताब ले कर आए थे।

(26) फ़िर मैंने उन लोगों को पकड़ लिया जिन्होंने कुफ़्र किया था, फ़िर (देखो) मेरा अज़ाब कैसा (इबरतनाक) था?

(27) क्या आपने देखा नहीं कि बिलाशुब्ह अल्लाह ने आसमान से पानी नाज़िल किया, फ़िर हमने उसके ज़रिये से ऐसे फल निकाले जिनके रंग मुख़्तलिफ हैं और पहाड़ों में सफेद और सुर्ख़ घाटिया हैं, उनके रंग मुख़्तलिफ हैं और बहुत गहरे स्याह (काले) भी।

(28) और इसी तरह इंसानों और जानवरों और चौपयों में से भी (ऐसे हैं कि) उनके रंग मुख़्तलिफ हैं, बस अल्लाह से उसके बन्दों में से सिर्फ औलमा ही डरते

हैं, बिलाशुब्ह अल्लाह बहुत ग़ालिब, बहुत बख़्शने वाला है।

(29) बिलाशुब्ह जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते और नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है उसमें से पोशिदा (छुपे) और ऐलानिया (खुले) खर्च करते हैं, वह ऐसी तिजारत (व्यापार) की उम्मीद रखते हैं जो हरगिज़ तबाह नहीं होगी।

(30) ताकि वह (अल्लाह) उन्हें उनके अज्र पूरे दे और उन्हें अपने फ़ज़्ल से ज़्यादा दे, बेशक वह बहुत बख़्शने वाला, निहायत क़द्रदाँ है।

(31) और (ऐ नबी!) हमने जो किताब आपकी तरफ वह्यी की, वह हक़ है, जबकि वह उन (किताब) की तस्दीक़ करने वाली है जो इससे पहले हैं, बेशक अल्लाह अपने बन्दों से खूब बाखबर, (उन्हें) खूब देखने वाला है।

(32) फ़िर हमने उन लोगों को किताब का वारिस बनाया जिन्हें हमने अपने बन्दों में से चुन लिया, फ़िर कुछ तो उनमें अपनी जानों पर जुल्म करने वाले हैं और कुछ उनमें दर्मियानी हैं और कुछ उनमें अल्लाह की तौफीक़ से नेकियों में पहल करने वाले हैं, यही बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।

(33) हमेशा रहने के बाग हैं जिनमें वह दाख़िल होंगे, वहाँ उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएँगे और वहाँ उनका लिबास रेशम का होगा।

(34) और वह कहेंगेः तमाम तअरीफें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हमसे ग़म दूर कर दिया, बेशक हमारा रब बहुत बख़्शने वाला, खूब क़द्रदाँ (कदर करने वाला) है।

(35) जिसने अपने फ़ज़्ल से हमें हमेशा रहने के घर में उतारा, इसमें हमें कोई तकलीफ नहीं पहुँचती और उसमें हमें कोई थकावट महसूस नहीं होती।

(36) और जिन लोगों ने कुफ्र किया, उनके लिए जहन्नम की आग है, उनके बारे में यह फैसला नहीं किया जाएगा कि वह मर जाएं और न उनसे उस (जहन्नम) का अज़ाब हल्का किया जाएगा, हम हर नाशुक्रे को इसी तरह सज़ा देते हैं।

(37) और वह उस (जहन्नम) में चिल्लाएँगे (और कहेंगेः) ऐ हमारे रब! तू हमें (उससे) निकाल, हम (अब) नेक अमल करेंगे न कि वह जो (पहले) करते थे, (अल्लाह फरमाएगाः) क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि उसमें जो शख़्स नसीहत हासिल करना चाहता तो नसीहत (उपदेश) हासिल कर लेता ? और तुम्हारे पास डराने वाला भी आया था? तो अब तुम (अज़ाब का) मज़ा चखो कि ज़ालिमों के लिए कोई

मददगार नहीं।

(38) बिलाशुब्ह अल्लाह आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें जानता है, बेशक वह सीनों के भेद खूब जानता है।

(39) वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में जाँनशीन बनाया, फ़िर जिसने कुफ़्र किया तो उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर होगा और काफिरों को उनका कुफ़्र उनके रब के यहाँ नाराज़ी ही में ज़्यादा करता है और काफिरों को उनका कुफ़्र नुक़्सान ही में ज़्यादा करता है।

(40) आप कह दीजिएः भला बताओ तो अपने जिन शरीकों (मअबूदों) को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ उन्होंने ज़मीन से क्या कुछ पैदा किया है या उनका आसमानों में कोई हिस्सा है? या हमने उन्हें कोई किताब दी है और वह उसकी किसी वाज़ेह दलील पर (क़ायम) हैं? बल्कि यह ज़ालिम एक दूसरे से महज़ पुर फरेब वादे करते चले आ रहे हैं।

(41) बिलाशुब्ह अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन को थमे हुए है (कहीं) वह दोनों (अपनी जगह से) हट न जाएं और अगर वह हट जाएं तो उसके बाद उन्हें कोई भी नहीं थाम सकेगा, बिलाशुब्ह वह बड़ा हलीम, बहुत बख़्शने वाला है।

(42) और उन्होंने अल्लाह की पुख़्ता क़समें खाईं कि अगर उनके पास कोई डराने वाला आया तो वह ज़रूर हर एक उम्मत से ज़्यादा हिदायत याफ्ता होंगे, फ़िर जब उनके पास डराने वाला आया तो उस (की आमद) ने उनको (हक़ से) नफरत ही में ज़्यादा किया।

(43) ज़मीन में घमंड करने और बुरी चाल की वजह से, और बुरी चाल उसके चलने वाले ही को घेरती है, फ़िर वह पहले लोगों के (बारे में अल्लाह के) तरीक़े का इन्तिज़ार ही तो करते हैं, इसलिए आप अल्लाह का तरीक़ा बदलता हरगिज़ न पाएँगे और आप अल्लाह का तरीक़ा टलता हरगिज़ न पाएँगे।

(44) क्या वह ज़मीन में चलते फिरते नहीं कि वह देखते उन लोगों का अन्जाम कैसा हुआ जो उनसे पहले थे जबकि वह उनसे ज़्यादा ताक़तवर थे और अल्लाह ऐसा नहीं कि उसे कोई चीज़ आसमानों में और ज़मीन में आजिज़ कर दे, बिलाशुब्ह वह खूब जानने वाला, बड़ी कुदरत वाला है।

(45) और अगर अल्लाह लोगों को उनके आमाल की वजह से पकड़ता तो वह उस (ज़मीन) की पुश्त पर चलने वाला कोई जानदार न छोड़ता लेकिन वह उन्हें एक मुक़र्ररा वक़्त तक ढील देता है, फ़िर जब

उनका मुक़र्रर वक़्त आ जाएगा तो (वही उन्हें सज़ा देगा) बिलाशुब्ह अल्लाह अपने बन्दों को खूब देख रहा है।

सूरह यासीन-36

(यह मक्की सूरत है इसमें 83 आयतें और 5 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) यासीन।

(2) क़सम है कुरआन हकीम की।

(3) बिलाशुब्ह आप यक़ीनन रसूलों में से हैं।

(4) राह रास्त पर हैं।

(5) (यह कुरआन) निहायत ग़ालिब, खूब रहम करने वाले (अल्लाह) का उतारा हुआ है।

(6) ताकि आप उस क़ौम (समुदाय) को डराएं जिसके बाप दादा नहीं डराए गए, लिहाज़ा वह (दीन से) ग़ाफिल हैं।

(7) बिलाशुब्ह उनकी अक्सरियत पर (अल्लाह का) क़ौल (बात) साबित हो गया है, इसलिए वह ईमान नहीं लाएँगे।

(8) बेशक हमने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं और वह (उनकी) ठोड़ियों तक हैं, लिहाज़ा वह सर ऊपर उठाए हुए हैं।

(9) और हमने उनके आगे एक दीवार बना दी है और उनके पीछे भी एक दीवार, फ़िर हमने उनकी आँखें ढांक दी हैं, लिहाज़ा वह देख नहीं सकते।

(10) और उनके लिए बराबर है चाहे आप उन्हें डराऐं या न डराऐं, वह ईमान नहीं लाएँगे।

(11) बस आप तो सिर्फ उस शख़्स को डराते हैं जो नसीहत (उपदेश) की पैरवी करे और रहमान से बिन देखे डरे, लिहाज़ा आप उसे मग्फिरत और बाइज़्ज़त अज्र की बशारत (खुशखबरी) दे दीजिए।

(12) बिलाशुब्ह हम ही मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे और जो (आमाल) वह आगे भेज चुके, उन्हें हम लिख रहे हैं और उनके आसार (निशानाते क़दम) को भी, और हमने हर शै (चीज़) को वाज़ेह (खुली) किताब में महफूज़ (सुरक्षित) कर रखा है।

(13) और आप उनके लिए बस्ती वालों की मिसाल बयान कीजिए जब उनके पास (अल्लाह के) भेजे हुए आए।

(14) जब हमने उनकी तरफ दो (रसूल) भेजे तो उन्होंने उन्हें झुठलाया, फ़िर हमने (उन्हें) तीसरे के साथ तक़वियत (मजबूती) दी, तब उन्होंने कहाः बिलाशुब्ह हम तुम्हारी तरफ भेजे गए रसूल हैं।

(15) वह कहने लगेः तुम हम जैसे बशर (इन्सान) ही तो हो और रहमान ने (तुम पर)

कोई चीज़ नाज़िल नहीं की, तुम तो निरा झूठ बोलते हो।

(16) उन्होंने कहाः हमारा रब जानता है कि हम यक़ीनन तुम्हारी ही तरफ भेजे गए हैं।

(17) और हमारे ज़िम्मे तो सिर्फ खोल कर पहुँचा देना है।

(18) वह कहने लगेः हम तो तुम्हें मनहूस ख्याल करते हैं, अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें ज़रूर संगसार कर (पत्थरों से मार) देंगे और तुम्हें हमारी तरफ से ज़रूर दर्दनाक सज़ा मिलेगी।

(19) उन्होंने कहाः तुम्हारी नहूसत (अपशकुन) तो तुम्हारे साथ ही है, क्या अगर तुम्हें नसीहत (उपदेश) की जाए (तो यह नहूसत है? हरगिज़ नहीं!) बल्कि तुम लोग ही हद से बढ़ने वाले हो।

(20) और शहर के परले सिरे (दूरस्थ भाग) से एक आदमी दौड़ता हुआ आया, उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम (जाति)! तुम रसूलों की पैरवी करो।

(21) तुम उनकी पैरवी करो जो तुम से कोई सिला (बदला) नहीं मांगते जबकि वह (खुद) हिदायत याफ्ता (सीधे मार्ग पर) हैं।

(22) और मुझे क्या है कि मैं उस ज़ात की इबादत न करूं जिसने मुझे पैदा किया? और तुम (सब) उसी की तरफ लौटाए जाओगे।

(23) क्या मैं उस (अल्लाह) के सिवा (दूसरों को) मअ़बूद बना लूं? अगर रहमान मुझे तकलीफ पहुँचाने का इरादा करे तो उनकी शफाअत (सिफारिश) मेरे कुछ भी काम न आएगी और न वह मुझे छुड़ा सकेंगे।

(24) यक़ीनन मैं उस वक़्त खुली गुमराही में रहूंगा।

(25) बिलाशुब्ह मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया हूँ, लिहाज़ा तुम मेरी बात सुनो।

(26) कहा गयाः तू जन्नत में दाख़िल हो जा, उसने कहाः काश! मेरी क़ौम जान ले।

(27) (यह बात) कि मुझे मेरे रब ने बख्श (माफ कर) दिया है और उसने मुझे इज्जतदार लोगों में शामिल कर दिया है।

(28) और हमने उसके बाद उसकी क़ौम पर आसमान से कोई फौज नाज़िल नहीं की और न हम नाज़िल की करने वाले थे।

(29) वह तो सिर्फ एक (होलनाक) चीख थी? फ़िर यकायक वह सब बूझ कर रह गए।

(30) हाय अफसोस बन्दों पर! उनके पास जो भी रसूल आता रहा वह उसका मज़ाक़ ही उड़ाते रहे।

(31) क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने उनसे पहले कितनी उम्मतें (नस्लें) हलाक (विनष्ट) कर दीं? बेशक वह उनके पास

लौट कर न आएँगी।

(32) और सारे के सारे (लोग) ही हमारे पास हाज़िर किये जाएंगे।

(33) और उनके लिए मुर्दा ज़मीन एक अज़ीम निशानी है, हमने उसे ज़िन्दा किया और हमने उससे अनाज निकाला, फ़िर उसी में से वह खाते हैं।

(34) और हमने उस (ज़मीन) में खजूरों और अंगूरों के बागात पैदा किये और हमने उनमें चश्मे जारी किए।

(35) ताकि वह उसके फलों से खाएं और वह (फल) उनके हाथों ने नहीं बनाए, फ़िर क्या वह शुक्र नहीं करते?

(36) पाक है वह ज़ात जिसने सबके सब जोड़े पैदा किये, उन चीज़ों के भी जिन्हें ज़मीन उगाती है और खुद उन (इन्सानों) के अपने भी, और उनके भी जिन्हें वह नहीं जानते।

(37) और उनके लिए एक निशानी रात है, हम उस से दिन को खींच निकालते हैं, फ़िर (दिन खत्म होने पर) यकायक वह अन्धेरे में ढूब जाते हैं।

(38) और सूरज अपने ठिकाने (पर पहुँचने) के लिए रवां दवां रहता है, यह निहायत ग़ालिब, खूब जानने वाले (अल्लाह) का अन्दाज़ा है।

(39) और चाँद की हमने (अठ्ठाईस) मन्ज़िलें मुक़र्रर कर रखी हैं यहाँ तक कि वह खजूर के खोशे की पुरानी टेढ़ी डन्डी की तरह हो जाता है।

(40) न सूरज की यह मजाल है कि व चाँद को पकड़ ले और न रात दिन से पहले आ सकती है और हर एक (अपने अपने) मदार (कक्ष) में तैरता फिरता है।

(41) और उनके लिए एक निशानी यह है कि बेशक हमने उनकी नस्ल को (नूह की) भरी हुई कश्ती में सवार किया।

(42) और हमने उनके लिए वैसी ही और चीज़ें पैदा कीं जिन पर वह सवार होते हैं।

(43) और अगर हम चाहें तो उन्हें ग़र्क़ कर दें फ़िर न तो कोई उनकी फरियाद सुनने वाला होगा और न वह छुड़ाए ही जा सकेंगे।

(44) मगर (उनकी निजात) हमारी रहमत ही से है और एक मुद्दत तक फायदा उठाने के लिए है।

(45) और जब उनसे कहा जाता हैः उस (अज़ाब) से डरो जो तुम्हरे सामने (दुनिया में) और जो तुम्हारे पीछे (आख़िरत में) है ताकि तुम पर रहम किया जाए (तो वह मुँह मोड़ते हैं)।

(46) और उनके रब की निशानियों में से जो भी निशानी उनके पास आती है तो वह उससे मुँह मोड़ लेते हैं।

(47) और जब उनसे कहा जाता हैः

अल्लाह ने तुम्हें जो रिज़्क़ दिया है उसमें से खर्च करो (तो) वह लोग जिन्होंने कुफ्र किया, उन लोगों से जो ईमान लाए, कहते हैंः क्या हम उसे खिलाएं जिसे अगर अल्लाह चाहता तो खिला देता? तुम तो खुली गुमराही में हो।

(48) और वह कहते हैः अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?

(49) वह तो सिर्फ एक (हौलनाक) चीख का इन्तिज़ार कर रहे हैं जो उन्हें आ पकड़ेगी जबकि वह आपस में झगड़ रहे होंगे।

(50) फ़िर न तो वह कोई वसियत कर सकेंगे और न अपने अहल व अयाल (घर वालों) के पास लौट ही सकेंगे।

(51) और (जब) सूर फूंका जाएगा तो यका यक वह अपनी क़ब्रों से (निकल कर) अपने रब की तरफ तेज़ी से दौड़ेंगे।

(52) वह कहेंगेः हाय हमारी बरबादी! किसने हमें हमारी ख्वाबगाह से उठा दिया? यही तो है जो रहमान ने वादा किया था और रसूलों ने सच कहा था।

(53) वह तो बस एक (हौलनाक) चीख होगी, फ़िर यकायक वह सब हमारे सामने हाज़िर कर दिए जाएँगे।

(54) इसलिए आज किसी शख्स पर कुछ भी जुल्म नहीं किया जाएगा और तुम्हें सिर्फ उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम अमल करते थे।

(55) बेशक अहले जन्नत आज ऐश व निशात (मनोरंजन) में खुश व खुर्रम (आनन्दित) होंगे।

(56) वह और उनकी बीवियां सायों में तख्तों पर टेक लगाए होंगे।

(57) उनके लिए वहाँ (हर क़िस्म के) फल होंगे और उनके लिए होगा जो वह माँगेंगे।

(58) उन्हें निहायत रहमान रब की तरफ से सलाम कहा जाएगा।

(59) ऐ मुजरिमो! आज अलग हो जाओ।

(60) ऐ बनी आदम! क्या मैंने तुम्हें इस बात की ताकीद नहीं की थी कि तुम शैतान की इबादत (उपासना) न करना, बिलाशुब्ह वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

(61) और यह कि तुम मेरी ही इबादत करो, यही सीधा रास्ता है।

(62) और बिलाशुब्ह उसने तुममें से बहुत सी मख्लूक़ को गुमराह कर दिया, क्या फ़िर भी तुम नहीं समझते?

(63) यह वह जहन्नम है जिसका तुमसे वादा किया जाता था।

(64) आज के दिन उसमें दाख़िल हो जाओ क्योंकि तुम कुफ्र किया करते थे।

(65) आज हम उनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हम से कलाम (बात) करेंगे, और उनके पैर गवाही देंगे उसकी जो

कुछ वह करते रहे थे।

(66) और अगर हम चाहें तो उनकी आँखें मिटा दें, फ़िर वह दोड़े रास्ता (तलाश करने) को, तो वह क्यों कर देख सकेंगे?

(67) और अगर हम चाहें तो उनकी उसी जगह पर उनकी सूरतें मस्ख़ (विकृत) कर दें, फ़िर वह न आगे चल सकें और न लौट सकें।

(68) और जिस शख़्स को हम ज़्यादा उम्र दें (जैसे) उसे हालते पैदाईश की तरफ लौटा देते हैं, क्या फ़िर वह अक़्ल नहीं रखते?

(69) और हमने इस (रसूल) को शेर (काव्य) कहना नहीं सिखाया और न यह उसके लायक़ ही थे, यह (कलामे इलाही) तो सरासर नसीहत (उपदेश) और वाज़ेह (साफ) कुरआन है।

(70) ताकि वह उसे डराए जो जिन्दा है और काफिरों पर (अल्लाह के अज़ाब की) बात साबित हो जाए।

(71) क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने अपने हाथों से जो चीज़े बनाई उनमें यक़ीनन हमने उनके चौपाए भी पैदा किये, फ़िर वह उनके मालिक (बन गए) हैं?

(72) और हमने उन्हें उनके ताबे (वश में) कर दिया, इसलिए उनमें से कुछ उनकी सवारियां हैं, और उनमें से कुछ को वह खाते हैं।

(73) और उन के लिए उन (चौपाओ) में (और भी) फ़ायदे और पीने की चीज़ें हैं, क्या फ़िर वह शुक्र नहीं करते?

(74) और उन्होंने अल्लाह के सिवा कई मअ़बूद बना लिए ताकि उनकी मदद की जाए।

(75) वह (मअ़बूद) उनकी मदद नहीं कर सकते और यह (मुश्रिकीन) तो खुद उन (बुतों) के लश्कर (हिमायती) हैं, जो हाज़िर किये हुए हैं।

(76) लिहाज़ा उनकी बातें आपको ग़मग़ीन न करें, बिलाशुब्ह हम जानते हैं जो कुछ वह छुपाते हैं और जो कुछ वह ज़ाहिर करते हैं।

(77) क्या इंसान ने देखा नहीं कि बेशक हमने उसे नुत्फे (वीर्य) से पैदा किया है? फ़िर यका यक वह खुला झगड़ालु हो गया।

(78) और उसने हमारे लिए एक मिसाल बयान की और वह अपनी पैदाईश को भूल गया, उसने कहाः हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा जबकि वह गली सड़ी हो गई?

(79) आप कह दीजिएः उन्हें वही (अल्लाह) ज़िन्दा करेगा जिसने उन्हें पहली बार पैदा किया और वह हर तरह के पैदा करने को खूब जानता है।

(80) वह (अल्लाह) जिसने तुम्हारे लिए सब्ज़ (हरे) दरख़्त (पेड़) से आग बना दी, फ़िर यकायक तुम उससे आग सुलगा लेते

हो।

(81) क्या वह (अल्लाह) जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, इस बात पर क़ादिर नहीं कि वह उन जैसे (इंसान) पैदा कर दे, क्यों नहीं! वही तो (सब कुछ) पैदा करने वाला, खूब जानने वाल है।

(82) जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो बस उसका हुक्म सिर्फ यह होता है कि वह उससे कहता हैः हो जा, तो वह हो जाती है।

(83) इसलिए पाक है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाही है और उसी की तरफ तुम लौटए जाओगे।

सूरह साफ्फात-37

(यह मक्की सूरत है इसमें 182 आयतें और 5 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) क़सम है क़तार दर क़तार सफें बान्धने वालों (फरिश्तों) की।

(2) फ़िर झिड़क कर डाँटने वालों की।

(3) फ़िर कुरआन की तिलावत करने वालों की।

(4) बिलाशुब्ह तुम्हारा मअ़बूद एक ही है।

(5) (वही) रब है आसमानों और ज़मीन का और उसका भी जो कुछ उन दोनों के दरम्यान है और (तमाम) मश्रिकों (पूरब) का रब है।

(6) बेशक हमने दुनिया के आसमान को सितारों से ज़ीनत (शोभा) दे कर सजाया है।

(7) और हर सरकश शैतान से (उसकी) हिफाज़त का बन्दोबस्त किया है।

(8) (ताकि) वह आलमे बाला की बातें सुन न पाएं और उन पर हर तरफ से (शहाब) फेंके जाते हैं।

(9) (उन्हें) भगाने के लिए, और उनके लिए दायमी (हमेशा का) अज़ाब है।

(10) मगर जो कोई एक आध बात उचक कर ले भागे तो शहाबे साक़िब (दहकता हुआ शोला) उसके पीछे लग जाता है।

(11) फ़िर आप उनसे पूछेः क्या उन्हें पैदा करना ज़्यादा मुश्किल है या जो कुछ हम पैदा कर चुके हैं? बेशक हमने उन (इंसानों) को लेसदार मिट्टी से पैदा किया।

(12) बल्कि आप (कुफ्फार के इन्कारे आख़िरत पर) तअज्जुब (अचम्भा) करते हैं जबकि वह मज़ाक करते हैं।

(13) और जब उन्हें नसीहत की जाती है तो नसीहत क़बूल नहीं करते।

(14) और जब वह कोई निशानी देखते हैं तो खूब मज़ाक़ उड़ाते हैं।

(15) और वह कहते हैंः यह तो बिल्कुल खुला जादू है।

(16) क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाएँगे तो क्या हमे सचमुच (दोबारा) उठाया जाएगा?

(17) क्या हमारे पहले बाप दादाओं को भी?

(18) आप कह दीजिएः हाँ! और तुम ज़लील व ख्वार होगे।

(19) फ़िर वह (उठाना) तो बस एक झिड़की ही होगी, तो वह यकायक (ज़िन्दा हो कर) देखते होंगे।

(20) और वह कहेंगेः हाय हमारी बदबख़्ती! यह तो जज़ा (बदला) का दिन है।

(21) यही फैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते थे।

(22) (ऐ फरिश्तो!) इकट्ठा करो उन लोगों को जिन्होंने ज़ुल्म किया और उनके जोड़ों को और (उनको) जिनकी वह इबादत किया करते थे।

(23) अल्लाह के सिवा, फ़िर उन्हें दोज़ख की राह दिखा दो।

(24) और उन्हें ठहराओ, बिलाशुब्ह उनसे पुछताछ की जाएगी।

(25) (कहा जाएगा!) तुम्हें क्या हुआ, तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते?

(26) बल्कि आज वह (सब) फ़रमाबरदार (आज्ञाकारी) होंगे।

(27) और वह एक दूसरे की तरफ मुतवज्जा हो कर आपस में पूछेंगे।

(28) कहेंगेः बेशक तुम तो हमारे पास दायें (और बायें) तरफ से आया करते थे।

(29) वह कहेंगेः (नहीं!) बल्कि तुम खुद ही ईमान लाने वाले नहीं थे।

(30) और तुम पर हमारा कोई ज़ोर नहीं था बल्कि तुम खुद ही सरकश लोग थे।

(31) फ़िर हम (सब) पर हमारे रब की बात साबित हो गई, बेशक हम (सब ही अज़ाब का मज़ा) चखने वाले हैं।

(32) इसलिए हमने तुम्हें गुमराह किया, बिलाशुब्ह हम खुद भी गुमराह थे।

(33) इसलिए वह उस दिन अज़ाब में आपस में शरीक होंगे।

(34) बेशक हम मुजरिमों से ऐसा ही (सलूक) करते हैं।

(35) बेशक जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं तो वह घमंड करते थे।

(36) और कहतेः क्या भला हम अपने मअबूदों (पूज्यों) को एक दीवाने शायर के कहने पर छोड़ दें,

(37) बल्कि वह तो हक़ लाया है और उसने (सब) रसूलों की तस्दीक़ की है।

(38) बेशक तुम अब दर्दनाक अज़ाब (का मज़ा) ज़रूर चखोगे।

(39) तुम्हें बस उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम अमल करते थे।

(40) मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे (अज़ाब से महफूज रहेंगे)।

(41) उन्हीं के लिए मुक़र्रर रोज़ी है।

(42) (यानी जन्नत के) लज़ीज़ फल, और वह लोग इज्ज़तदार होंगे।

(43) नेअमत के बागों में।

(44) एक दूसरे के सामने तख़्तों पर (विराजमान) होंगे।

(45) उनके लिए जारी चश्मे से शराब (तहूर) के भरे जाम गर्दिश कर रहे होंगे।

(46) निहायत सफेद रंग (बिल्कुल साफ शफ्फाफ) पीने वालों के लिए लज्ज़त (वाली)।

(47) न उससे सर चकराएगा और न उससे वह मदहोश होंगे।

(48) और उनके पास होंगी नीची निगाह वालीं, ग़ज़ाला चश्म (खूब सूरत आँखों वाली हूरें)।

(49) जैसे वह (शतुरमुर्ग के) अण्डे हों, परदों में छुपाए हुए (पैकर हुस्न व जमाल)।

(50) वह (जन्नती) एक दूसरे की तरफ मुतवज्जह हो कर आपस में पूछेंगे।

(51) उनमें से एक कहने वाला कहेगाः बेशक (दुनिया में) मेरा एक हमनशीन (मिलने वाला) था।

(52) जो कहता थाः क्या भला तू भी (क़यामत की) तस्दीक़ करने वालों में से है?

(53) क्या जब हम मर जाएँगे और हड्डियां हो जाएँगे तो क्या वाक़ई हमें (उठा कर) सज़ा व जज़ा दी जाएगी?

(54) वह (जन्नती साथियों से) कहेगाः क्या तुम (जहन्नम में) झांक कर देखोगे?

(55) फ़िर वह झाकेगा और उसे जहन्नम के दरम्यान देखेगा।

(56) वह (उससे) कहेगाः अल्लाह की क़सम! यक़ीनन क़रीब था कि तू मुझे हलाक कर डालता।

(57) और अगर मेरे रब का फैसला न होता तो मैं ज़रूर हाज़िर किये हुए (मुजरिमों) में होता।

(58) (जन्नती साथियों से कहेगाः) क्या फ़िर (अब) हम मरेंगे नहीं।

(59) अपने पहली बार मरने के सिवा? और न हमें अज़ाब ही होगा?

(60) बिलाशुब्ह यह तो बहुत बड़ी कामयाबी है।

(61) अमल करने वालों को ऐसी ही (कामयाबी) के लिए अमल करना चाहिए।

(62) क्या यह बेहतर मेहमानी है या

(दोज़ख में) ज़क्कूम का दरख्त?

(63) बिलाशुब्ह हमने उसे ज़ालिमों के लिए फित्ना बनाया है।

(64) बेशक वह एक दरख्त है जो दोज़ख की तह में उगता है।

(65) उसका फल जैसे शैतानों के सर हैं।

(66) तो बिलाशुब्ह वह (दोज़खी) उसमें से खाएंगे, फ़िर उससे (अपने) पेट भरेंगे।

(67) फ़िर उस पर बेशक उनके लिए (पीने को) गर्म खौलते पानी की आमीज़ह होगा।

(68) फ़िर यक़ीनन उनकी वापसी भड़कती आग की तरफ होगी।

(69) बिलाशुब्ह उन्होंने अपने बाप दादाओं को गुमराह पाया।

(70) तो वह उन्हीं के नक्शे क़दम पर दौड़ते भागते रहे।

(71) और बिलाशुब्ह उनसे पहले बहुत से अगले लोग गुमराह हुए।

(72) और यक़ीनन हमने उनमें डराने वाले भेजे थे।

(73) फ़िर देख लीजिए उनका अन्जाम कैसा हुआ जिन्हें डराया गया था?

(74) सिवाए अल्लाह के चुने हुए बन्दों के।

(75) और यक़ीनन नूह ने हमें पुकारा था, (देखो!) हम क्या ही खूब देने वाले हैं!

(76) और हमने उसे और उसके अहल (घर वालों) को बहुत बड़ी निशानी से निजात दी।

(77) और हमने उसकी औलाद को बाकी रहने वाले बना दिया।

(78) और हमने उसका ज़िक्रे खैर पीछे आने वालों में बाक़ी रखा।

(79) नूह पर तमाम जहानों में सलाम हो।

(80) बिलाशुब्ह हम नेकूकारों (उत्तमकारों) को इसी तरह जज़ा (बदला) देते हैं।

(81) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से था।

(82) फ़िर हमने दूसरों को ग़र्क़ कर दिया।

(83) और बेशक इब्राहीम भी उसी (नूह) के गिरोह से था।

(84) जब वह अपने रब के पास क़ल्बे सलीम (पाक साफ दिल) के साथ आया।

(85) उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहाः तुम किस चीज़ की इबादत करते हो?

(86) क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर झूठे गढ़े हुए मअ़बूद चाहते हो?

(87) फ़िर रब्बुलआलमीन की निस्बत तुम्हारा क्या ख्याल है?

(88) तब उसने एक निगाह डाल कर सितारों को देखा।

(89) फ़िर कहाः बेशक मैं तो बीमार हूँ।

(90) इसलिए वह उससे पीठ फ़ेर कर लौट गए।

(91) फ़िर वह उनके मअबूदों की तरफ मुतवज्जह हुआ और कहाः क्या तुम खाते नहीं?

(92) तुम्हें क्या है, तुम बोलते नहीं?

(93) फ़िर वह उन्हें दायें हाथ से मार मार कर तोड़ते चले गए।

(94) फ़िर वह लोग दौड़ते हुए उसकी तरफ आए।

(95) उसने कहाः क्या तुम उनकी इबादत करते हो जिन्हें तुम खुद तराशते हो?

(96) हालांकि अल्लाह ही ने तुम्हें और तुम्हारे आमाल को पैदा किया है।

(97) वह कहने लगेः उसके लिए एक मकान बनाओ (उसमें आग जलाओ) और उसे दहकती आग में डाल दो।

(98) फ़िर उन्होने उसके साथ एक चाल चलने का इरादा किया, तो हमने उन्हें नीचा दिखा दिया।

(99) और उसने कहाः बेशक मैं अपने रब की तरफ जाने वाला हूँ, यक़ीनन वह मेरी रहनुमाई फरमाएगा।

(100) ऐ मेरे रब! मुझे (बेटा) अता फरमा जो सालिहीन (नेकों) में से हो।

(101) इसलिए हमने उसे बहुत हलीम (अक़्लमंद) लड़के की बशारत (खुशखबरी) दी।

(102) फ़िर जब वह (लड़का) उसके साथ दौड़ने भागने (की उम्र) को पहुँचा तो उसने कहाः ऐ मेरे प्यारे बेटे! बेशक मैं ख्वाब में देखता हूँ कि मैं तुझे ज़िब्ह कर रहा हूँ, अब देख! तेरी क्या राय है? बेटे ने कहाः अब्बा जान! जो आपको हुक्म दिया गया है कर गुज़रें, इन्शा अल्लाह आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएँगे।

(103) फ़िर जब दोनों ने हुक्म मान लिया और उस (बाप) ने उस (बेटे) को करवट के बल डाल दिया।

(104) और हमने उसे पुकाराः ऐ इब्राहीम!

(105) तूने अपना ख्वाब यक़ीनन सच कर दिखाया है, बेशक हम नेकूकारों (उत्तमकारों) को उसी तरह बदला देते हैं।

(106) बिलाशुब्ह यह खुली आज़माईश ही थी।

(107) और हमने उस (इस्माईल) के बदले में एक अज़ीमुल क़दर (जानवर) ज़िब्ह करने को दिया।

(108) और हमने उसका ज़िक्रे खैर पीछे आने वालों में बाक़ी रखा।

(109) इब्राहीम पर सलाम हो।

(110) हम नेकूकारों (उत्तमकारों) को इसी तरह जज़ा (बदला) देते हैं।

(111) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से था।

(112) और हमने इब्राहीम को इस्हाक़ (बेटे) की बशारत (शुभ-सूचना) दी, जो सालेह (नेक) लोगों में से नबी होगा।

(113) और हमने उस पर और इस्हाक़ पर बरकत नाज़िल की और उन दोनों की औलाद में से कोई नेकी करने वाला और कोई अपने आप पर खुल्लम खुल्ला जुल्म करने वाला है।

(114) और यक़ीनन हमने मूसा और हारून पर भी एहसान किया।

(115) और हमने उन दोनों को और उनकी क़ौम को बहुत बड़ी मुसीबत से निजात दी।

(116) और हमने उसकी मदद की, इसलिए वही ग़ालिब आए।

(117) और हमने उन दोनों को इन्तिहाई वाज़ेह किताब दी।

(118) और हमने उन दोनों को सिराते मुस्तक़ीम (सीधे रास्ते) की हिदायत (मार्ग-दर्शन) दी।

(119) और हमने उन दोनों का ज़िक्रे खैर पीछे आने वालों में बाक़ी रखा।

(120) मूसा और हारून पर सलाम हो।

(121) बेशक हम नेकूकरों को इसी तरह जज़ा (बदला) देते हैं।

(122) बिलाशुब्ह वह दोनों हमारे मोमिन बन्दों में से थे।

(123) और बेशक इलियास भी यक़ीनन रसूलों में से था।

(124) जब उसने अपनी क़ौम से कहाः क्या तुम डरते नहीं?

(125) क्या तुम बअ्ल (बुत) को पुकारते हो और सब से बेहतर पैदा करने वाले को छोड़ देते हो।

(126) (यानी) अल्लाह को जो तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादाओ का रब है?

(127) फ़िर उन्होंने उसे झुठलाया, लिहाज़ा यक़ीनन वह सब (अज़ाब में) ज़रूर हाज़िर किये जाएँगे।

(128) सिवाए अल्लाह के चुने हुए बन्दों के।

(129) और हमने उसका ज़िक्रे खैर पीछे आने वालों में बाक़ी रखा।

(130) इलयासीन (इलियास) पर सलाम हो।

(131) बेशक हमने नेकूकरों को इसी तरह जज़ा (बदला) देते हैं।

(132) यक़ीनन वह हमारे मोमिन बन्दों में से था।

(133) और बिलाशुब्ह लूत भी रसूलों में से था।

(134) जब हमने उसे और उसके सब अहल (घर वालों) को निजात दी।

(135) सिवाए एक बुढ़िया (लूत की बीवी) के जो पीछे रह जाने वालों में थी।

(136) फ़िर हमने दूसरों को हलाक कर दिया।

(137) और बिलाशुब्ह तुम सुबह को उन (की तबाह शुदा बस्तियों) पर से गुज़रते हो।

(138) और रात को भी, क्या फ़िर तुम अक़्ल नहीं रखते?

(139) और बेशक यूनुस यक़ीनन रसूलों में से था।

(140) वह एक भरी हुई कश्ती की तरफ भाग कर गया।

(141) फ़िर (कश्ती वालों ने) क़ुरअ (पर्ची) डाला तो वह मगलूब हो गया।

(142) तब उसे मछली ने निगल लिया जबकि वह (खुद को) मलामत कर रहा था।

(143) फ़िर अगर यह बात न होती कि बेशक वह तस्बीह करने वालों में से था।

(144) तो वह लोगों के दोबारा ज़िन्दा करके उठाए जाने के दिन (रोज़े क़यामत) तक उसी (मछली) के पेट में रहता।

(145) फ़िर हमने उसे चटियल मैदान में डाल दिया जबकि वह बीमार था।

(146) और हमने उस पर एक बेलदार दरख्त (कद्दू) उगा दिया।

(147) और हमने उसे एक लाख (इंसानों) की तरफ भेजा या वह उससे कुछ ज़्यादा होंगे।

(148) इसलिए वह लोग ईमान ले आए तो हमने उन्हें एक (मुक़र्रर) वक़्त तक फायदा (उठाने का मौक़ा) दिया।

(149) फ़िर उन (अहले मक्का) से पूछेः क्या आपके रब के लिए तो बेटियां हैं और उनके लिए बेटे?

(150) या हमने फरिश्तों को मौअन्नस (औरते) पैदा किया और वह हाज़िर थे?

(151) खबरदार! बिलाशुब्ह वह अपनी तरफ से झूठ गढ़ कर कहते हैं।

(152) कि ''अल्लाह की औलाद है'' और यक़ीनन वह झूटे हैं।

(153) क्या उसने बेटियों पर बेटों को पंसद किया (तरजीह दी) है?

(154) क्या हो गया है तुम्हें, तुम कैसा फैसला करते हो?

(155) क्या फ़िर तुम ग़ौर नहीं करते।

(156) या तुम्हारे पास कोई वाज़ेह (खुली) दलील है?

(157) फ़िर तुम अपनी किताब ले आओ अगर तुम सच्चे हो।

(158) और उन्होंने उस (अल्लाह) के और जिन्नों के दरम्यान रिश्ता ठहराया है, हालांकि बिलाशुब्ह खुद जिन्न खूब जानते हैं कि वह (अल्लाह के सामने) ज़रूर हाज़िर किये जाएँगे।

(159) अल्लाह उन बातों से पाक है जो वह (उसके बारे में) बयान करते हैं।

(160) सिवाए अल्लाह के चुने हुए बन्दों के (वह ऐसी बातें नहीं करते)।

(161) (ऐ मुश्रिको!) बेशक तुम और (वह) जिनकी तुम इबादत करते हो।

(162) तुम (उन मुखलिस बन्दों को) अल्लाह के खिलाफ बहका नहीं सकते।

(163) मगर उसी को जो जहन्नम में जाने वाला है।

(164) (फरिश्ते कहते हैंः) हममें से तो हर एक का मुक़ाम मुक़र्रर है।

(165) और हम (अल्लाह के हुजूर) यक़ीनन सफ बान्धे खड़े रहने वाले हैं।

(166) और बेशक हम तस्बीह करने वाले हैं।

(167) और बिलाशुब्ह वह (कुफ्फार) कहते थे।

(168) अगर हमारे पास अगलों की नसीहत (किताब) होती।

(169) तो हम ज़रूर अल्लाह के चुने हुए बन्दे होते।

(170) फ़िर (पैगम्बर कुरआन ले कर आया तो) उन्होंने उस (कुरआन) का इन्कार कर दिया, लिहाज़ा अनक़रीब वह जान लेंगे।

(171) और दर हक़ीक़त हमारा वादा पहले ही अपने उन बन्दों के लिए सादिर (लागू) हो चुका है जो रसूल हैं।

(172) कि यक़ीनन उन्हीं की मदद की जाएगी।

(173) और बिलाशुब्ह हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहेगा।

(174) तो एक मुद्दत तक आप उनसे मुँह मोड़ लीजिए।

(175) और उन्हें देखते रहे (कि उन पर अज़ाब आया ही चाहता है) फ़िर जल्द ही वह भी देख लेंगे।

(176) क्या फ़िर वह हमारा अज़ाब जल्दी मांगते हैं?

(177) फ़िर जब वह उनके सहन (आंगन) में नाज़िल होगा तो डराए गए लोगों की सुबह बहुत बुरी होगी।

(178) और उनसे एक मुद्दत तक मुँह मोड़ लीजिए।

(179) और (उन्हें) देखते रहे, जल्द ही वह भी देख लेंगे।

(180) आपका रब, इज्ज़त का मालिक, उन बातों से पाक है जो वह (मुश्रिक) बयान करते हैं।

(181) और तमाम रसूलों पर सलाम है।

(182) और सब तारीफें अल्लाह रब्बुलआलमीन ही के लिए हैं।

सूरह साद-38

(यह मक्की सूरत है इसमें 88 आयतें और 5 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) साद, क़सम है नसीहत (उपदेश) वाले कुरआन की!

(2) बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह घमंड और मुखालफत में (पड़े) हैं।

(3) हमने उनसे पहले कितनी ही क़ौमें हलाक कर दी, तो (अज़ाब आने पर) उन्होंने (मदद को) पुकारा जबकि वह खुलासी (बच निकलने) का वक़्त न था।

(4) और उन्होंने इस बात पर ताज्जुब किया कि उनके पास उन्हीं में से एक डराने वाला आ गया और काफिरों ने कहाः यह तो एक जादूगर है बड़ा झूठा।

(5) क्या उसने सारे मअबूदों को एक ही मअ़बूद कर दिया? बेशक यह तो यक़ीनन एक बड़ी अजीब चीज़ है।

(6) और उनके सरदार (आवाज़े हक़ सुन कर यह कहते हुए) चल दिए कि चलो और अपने मअबूदों पर जमा रहो, बेशक यह चीज़ है जो (खास) इरादे से पेश की जा रही है।

(7) हमने यह बात पिछले दीन में नहीं सुनी, यह तो बस गढ़ी हुई बात है।

(8) क्या हममें से उसी पर ज़िक्र (कुरआन) नाज़िल हुआ है? बल्कि वह तो मेरे ज़िक्र (वह्यी) के बारे में शक में हैं, बल्कि अभी तक उन्होंने मेरा अज़ाब नहीं चखा।

(9) क्या उनके पास आपके रब की रहमत के खज़ाने हैं जो निहायत ग़ालिब, खूब अता करने वाला है?

(10) या आसमानों और ज़मीन और उनके दरम्यान हर चीज़ की बादशाहत उन्हीं के लिए है? (अगर ऐसा है) तो चाहिए कि वह रस्सियों के ज़रिये से (आसमान पर) चढ़ जाएं।

(11) (यह तो) यहाँ के शिकस्तखोर (पराजित) लश्करों में से एक हक़ीर (तुच्छ) सा लश्कर है।

(12) उनसे पहले क़ौमे नूह और आद और मेंखों (कीलों) वाले फ़िरऔन ने (हक़ को) झुठलाया।

(13) और क़ौमे समूद और क़ौमे लूत और असहाबे ऐका (जंगल में रहने वालों) ने भी (झुठलाया, वाक़ई) यह बहुत बड़े (और ताक़तवर लश्कर) थे।

(14) (उनमें से) हर एक ने रसूलों को झुठलाया, लिहाज़ा (उन पर) मेरा अज़ाब

साबित हो गया।

(15) यह लोग तो बस एक (हौलनाक) चीख का इन्तिज़ार कर रहे हैं जिसमें कोई वक़्फ़ा नहीं होगा।

(16) और उन्होंने कहाः ऐ हमारे रब! हमें हमारे (अज़ाब का) हिस्सा हिसाब कि दिन से पहले जल्द दे दें।

(17) (ऐ नबी!) जो कुछ यह कहते हैं आप उस पर सब्र कीजिए और हमारे बन्दे दाऊद को याद कीजिए जो साहबे कुव्वत था, बेशक वह बहुत रूजू करने वाला था।

(18) बेशक हमने पहाड़ उसके ताबे कर दिए थे जबकि वह (उसके साथ) सुबह व शाम तस्बीह बयान करते रहते थे।

(19) और परिन्दे (पक्षियों को) भी (ताबे कर दिए थे) इकट्ठा किये हुए, सब उसके आगे रूजू करने वाले थे।

(20) और हमने उसकी बादशाही मुस्तहकम (दृढ़) कर दी थी और हमने उसे हिकमत और फैसलाकुन बात (की सलाहियत) दी थी।

(21) और क्या आपके पास झगड़ने वालों की खबरे आई जब वह दीवार फांद कर कमरे में आ गए।

(22) जब वह दाऊद के पास अन्दर आए तो वह उनसे डर गए, उन्होंने कहाः आप मत डरें! हम दो झगड़ने वाले हैं, हममें से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है, लिहाज़ा आप हमारे दरम्यान इंसाफ से फैसला फरमाएं और बेइंसाफी न करें और सीधी राह की तरफ हमारी रहनुमाई करें।

(23) बेशक यह मेरा भाई है, उसके पास निन्नावे दुम्बें हैं और मेरे पास एक ही दुम्बी है, तो यह कहता है कि वह भी मेरे सुपुर्द कर दे और बातचीत में मुझे दबा लेता है।

(24) आपने फरमायाः तेरी दुम्बी अपनी दुम्बियों में मिलाने का सवाल करके उसने यक़ीनन तुझ पर जुल्म किया है और बिलाशुब्ह अक्सर साझी एक दूसरे पर ज़्यादती करते हैं सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये और ऐसे लोग थोड़े ही हैं, और दाऊद ने जान लिया कि हमने उसे आज़माया है, लिहाज़ा उसने अपने रब से बख्शिश मांगी और वह रूकू में गिर पढ़ा और (अल्लाह की तरफ) रूजू किया।

(25) फ़िर हमने उसकी यह गलती बख्श (क्षमा कर) दी और बेशक उसके लिए हमारे पास बड़ा क़रीब और अच्छा ठिकाना है।

(26) (हमने कहाः) ऐ दाऊद! बेशक हमने तुझे ज़मीन में खलीफा बनाया है, लिहाज़ा तू लोगों के दरम्यान इंसाफ से फैसला करना और नफ्सानी ख्वाहिश की पैरवी न करना कि वह तुझे अल्लाह के रास्ते से भटका देगी, बिलाशुब्ह जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटक

जाते हैं उनके लिए शदीद (सख़्त) अज़ाब है, इसलिए कि वह हिसाब के दिन को भूल गए।

(27) और हमने आसमान व ज़मीन को और जो कुछ उनके दरम्यान है, बेकार पैदा नहीं किया, यह उन लोगों का ख्याल है जिन्होंने कुफ़्र किया, जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिए दोज़ख की हलाकत है।

(28) क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, उन लोगों के मानिन्द (जैसा) कर देंगे जो ज़मीन में फसाद करने वाले हैं? या हम मुत्तक़ीन (परेहजगार) को बदकार के मानिन्द कर देंगे?

(29) (यह कुरआन) एक किताब है, हमने उसे आपकी तरफ नाज़िल किया, बड़ी बरकत वाली है ताकि वह उसकी आयतों पर ग़ौर करें और अक़्लमन्द उससे नसीहत (उपदेश) हासिल करें।

(30) और हमने दाऊद को सुलेमान अता किया, (वह) अच्छा बन्दा था, बिलाशुब्ह वह (अल्लाह की तरफ) बहुत रूजू करने वाला था।

(31) जब शाम के वक़्त उसके सामने तेज चलने वाले घोड़े पेश किये गए।

(32) तब उसने कहाः बिलाशुब्ह मैंने अपने रब की याद की वजह से उस माल (घोड़े) से मुहब्बत की यहाँ तक (घोड़े) ओट में छुप गए।

(33) (कहाः) उन्हें मेरे पास वापस लाओ, फ़िर वह (उनकी) पिन्डलियों और गर्दनों पर (हाथ) फेरने लगा।

(34) और बिलाशुब्ह हमने सुलेमान को आज़माया और हमने उसकी कुर्सी पर एक ढेर डाल दिया फ़िर उसने (अल्लाह की तरफ) बहुत रूजू किया।

(35) उनसे कहाः एक मेरे रब! मुझे बख़्श (क्षमा कर) दे और मुझे ऐसी बादशाही अता कर कि वह मेरे बाद किसी के लायक़ न हो, बिलाशुब्ह तू ही बहुत अता करने वाला है।

(36) इसलिए हमने हवा उसके ताबे कर दी थी, वह उसके हुक्म से नर्मी से चलती थी जहाँ का वह इरादा करता था।

(37) और शयातीन (जिन्नात) को (भी ताबे कर दिया) हर इमारत बनाने वाले और गौता लगाने वाले को।

(38) और दूसरों को (जो) जंजीर में जकड़े हुए थे।

(39) यह हमारी बख़्शिश (देन) है, लिहाज़ा (लोगों पर) एहसान कर या रोक रख कोई हिसाब नहीं होगा।

(40) और बेशक उसके लिए हमारे पास बड़ा क़रीब और अच्छा ठिकाना है।

(41) और हमारे बन्दे अय्यूब को याद कीजिए, जब उसने अपने रब को पुकारा कि

बिलाशुब्ह मुझे शैतान ने तकलीफ और इज़ा (यातना) पहुँचाई है।

(42) (हमने कहाः) अपना पैर ज़मीन पर मार, यह गुस्ल करने और पीने को ठन्डा पानी है।

(43) और हमने उसका पूरा कुनबा और उनके साथ उतने ही और अता किये, अपनी तरफ से (बतौर) रहमत और यह अक्लमन्द के लिए एक नसीहत (उपदेश) है।

(44) और (हमनें कहाः) अपने हाथ में सौ तिनकों का एक झाड़ू पकड़ और उसके साथ (क़सम पूरी करने के लिए अपनी बीवी को) मार और क़सम न तोड़ बेशक हमने उसे साबिर पाया (वह) अच्छा बन्दा था, बिलाशुब्ह वह (अल्लाह की तरफ) बहुत रूजू करने वाला था।

(45) और हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और याकूब को याद कीजिए जो कुव्वत (शक्ति -शाली) व बसीरत (देखने) वाले थे।

(46) बेशक हमने उन्हें एक खास सिफत, आख़िरत की याद के साथ चुन लिया था।

(47) और वह हमारे नज़दीक यक़ीनन बुरगज़ीदा, नेक बन्दों में से थे।

(48) और इस्माईल और यसअ और जुलकिफ्ल को याद कीजिए और (उनमें से) हर एक नेकुकरों में से था।

(49) यह एक नसीहत (अनुस्मारक) है, और बेशक मुत्तक़ीन के लिए बहुत अच्छा ठिकाना है।

(50) हमेशा रहने के बाग जिनके दरवाज़े उनके लिए खुले होंगे।

(51) जबकि वह उनमें तकिये लगाए (बैठे) होंगे और वहाँ तरह तरह के फलों और शरबतों की फरमाईश करेंगे।

(52) और उनके पास नीची निगाह रखने वालीं, हम उम्र (बीवियां) होंगी।

(53) (कहा जाएगाः) यह (वह बदला) जिसका हिसाब के दिन के लिए तुमसे वादा किया जाता था।

(54) बेशक यह हमारा रिज़्क़ (अतिया) है जो कभी खत्म नहीं होगा।

(55) यह (मामला अहले खैर का) है और बिलाशुब्ह (निश्चय) सरकशों के लिए बहुत बुरा ठिकाना है।

(56) (यानी) जहन्नम, वह उमसें दाख़िल होंगे, इसलिए वह आराम करने की बुरी जगह है।

(57) यह है गरम खौलता हुआ पानी और पीप, अब वह उसका मज़ा चखें।

(58) और उनके मानिन्द (जैसे) कई क़िस्म के दूसरे (अज़ाब) होंगे।

(59) यह (तुम्हारे पैरूकारों का) एक गिरोह है जो तुम्हारे साथ घुसा चला आता है,

उनके लिए खुशी और फराखी न हो, बेशक यह आग में दाख़िल होने वाले हैं।

(60) वह कहेंगेः बल्कि तुम ही (इस लायक़) हो कि तुम्हारे लिए ख़ुशी और फराखी न हो, तुम्ही उसे हमारे सामने लाए हो, तो (यह) बहुत बुरी रहने की जगह है।

(61) वह कहेंगेः ऐ हमारे रब! जो शख़्स हमारे सामने यह (अन्जाम) लाया है उसके लिए जहन्नम में अज़ाब दूगना ज़्यादा कर दे।

(62) और वह कहेंगेः हमें क्या है कि हम उन लोगों को (जहन्नम में) नहीं देखते जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे?

(63) क्या हमने उन्हें (दुनिया में यू हीं) मज़ाक़ (का निशान) बनाए रखा या हमारी निगाहें उनसे फ़िर गई हैं।

(64) बिलाशुब्ह यह अहले दोज़ख का बाहम (आपस में) झगड़ा नाहक़ है।

(65) आप कह दीजिएः बस मैं ता सिर्फ एक डराने वाला हूँ और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो एक है, बड़ा ज़बरदस्त।

(66) आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके दरम्यान है उसका रब है, निहायत ग़ालिब, बहुत माफ करने वाला।

(67) कह दीजिएः वह एक बहुत बड़ी खबर है।

(68) तुम उससे मुँह फैरने वाले हो।

(69) मुझे (फरिश्तों की) मज्लिसे आला का कोई इल्म नहीं था जब वह तकरार कर रहे थे।

(70) मेरी तरफ तो यही वह्यी की जाती है कि बस मैं तो सिर्फ एक खोल कर डराने वाला हूँ।

(71) (याद कीजिए) जब आपके रब ने फरिश्तों से कहाः बेशक मैं मिट्टी से एक इंसान पैदा करने वाला हूँ।

(72) इसलिए जब मैं उस ठीक ठीक बना दूँ और उसमें अपनी रूह फूंक दूँ, तो तुम उसके आगे सज्दा करते हुए गिर पड़ना।

(73) तब तमाम फरिश्तो नें (एक वक़्त) इकट्ठे सज्दा किया।

(74) सिवाए इब्लीस के, उसने घमंड किया और वह काफिरों में से हो गया।

(75) अल्लाह ने फरमायाः ऐ इब्लीस! तुझे किस चीज़ ने उस (आदम) को सज्दा करने से मना किया जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से पैदा किया? क्या तूने घमंड किया या तू ऊँचे दर्जे वालों में से हैं?

(76) उसने कहाः मैं इससे बेहतर हूँ, मुझे तूने आग से पैदा किया और इसे तूने मिट्टी से पैदा किया।

(77) अल्लाह ने फरमायाः अब तू यहाँ निकल जा, बेशक तू मरदूद है।

(78) और बिलाशुब्ह तुझ पर रोज़े जज़ा (बदला के दिन) तक मेरी लअनत है।

(79) इब्लीस ने कहाः ऐ मेरे रब! अब तू मुझे उस दिन तक मुहलत दे जब लोग दोबारा उठाए जाएँगे।

(80) अल्लाह ने फरमायाः पस बिलाशुब्ह तू मुहलत दिया गए लोगों में से है।

(81) उस दिन तक जिसका वक़्त (मेरे यहाँ) मुक़र्रर है।

(82) उसने कहाः तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं उन सबको ज़रूर गुमराह करूंगा।

(83) सिवाए तेरे उन बन्दों के जो उनमें से चुने हुए और पसंदीदा हों।

(84) फरमायाः तो हक़ यही है और मैं हक़ बात ही कहता हूँ।

(85) मैं तुझसे और उन सब से जिन्होंने तेरी पैरवी की जहन्नम को ज़रूर भर दूँगा।

(86) (ऐ नबी!) आप कह दीजिएः मैं तुमसे (तब्लीगे दीन) पर कोई अज्र (बदला) नहीं मांगता और मैं तकल्लुफ (बनावटी काम) करने वालों में से नहीं।

(87) यह (कुरआन) जहाँन के लिए नसीहत (उपदेश) ही तो है।

(88) और तुम उसकी हक़ीक़त कुछ मुद्दत के बाद ज़रूर जान लोगे।

सूरह ज़ुमर-39

(यह मक्की सूरत है इसमें 75 आयतें और 8 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (यह) अल्लाह की तरफ से नाज़िल करदा किताब है जो निहायत ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(2) बेशक हमने यह किताब आपकी तरफ हक़ के साथ नाज़िल की है, लिहाज़ा आप अल्लाह के लिए बन्दगी को खालिस करते हुए उसकी इबादत कीजिए।

(3) सुनो! बन्दगी अल्लाह ही के लिए है, और जिन लोगों ने उसके सिवा कारसाज़ बना रखे हैं, (वह कहते हैंः) हम उनकी इबादत सिर्फ इसलिए करते हैं वह हमें अल्लाह के ज़्यादा क़रीब कर दें, यक़ीनन अल्लाह उनके दर्मियान उन बातों का फैसला फरमाएगा जिनमें वह इख़्तिलाफ करते हैं, बेशक अल्लाह उसे हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता जो झूठा, नाशुक्रा हो।

(4) अगर अल्लाह (अपना) कोई बेटा बनाने का इरादा करता तो उनमें से जिन्हें वह पैदा करता है, जिसे चाहता चुन लेता, लेकिन वह तो (उन बातों से) पाक है, वह अल्लाह वाहिद (एक) है, बड़ा ज़बरदस्त।

(5) उसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया, वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उसने सूरज और चाँद को काम पर

लगा दिया है, हर एक मुक़र्रर वक़्त तक चल रहा है, सुनो! वह निहायत ग़ालिब, बहुत बख़्शने वाला है।

(6) उसने तुम्हें एक ही जान से पैदा किया फ़िर उसने उससे उसका जोड़ा बनाया और उसने तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ जोड़े (नर और मादा) उतारा है, वह तुम्हें तुम्हारी माओ के पेटों में पैदा करता है, एक पैदाईश (मरहले) के बाद दूसरी पैदाईश (मरहले) में, तीन क़िस्म के अन्धेरों (परदों) में, यह है अल्लाह तुम्हारा रब, उसकी बादशाही है, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, फ़िर तुम कहाँ फिरे (बहके) जाते हो?

(7) अगर तुम कुफ़्र करोगे तो अल्लाह यक़ीनन तुमसे बेपरवह है, और वह अपने बन्दों के लिए कुफ़्र पसंद नहीं करता और अगर तुम शुक्र करोगे तो वह तुम्हारे लिए पसंद करता है, और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, फ़िर तुम्हें अपने रब ही की तरफ लौटना है तो वह तुम्हें बताएगा जो कुछ तुम करते रहे, बिलाशुब्ह वह सीनों के राज़ खूब जानता है।

(8) और जब इंसान को कोई तकलीफ पहुँचती है तो वह अपने रब की तरफ रूजू करते हुए उसे पुकारता है, फ़िर जब वह उसे अपनी तरफ से कोई नेअमत अता करता है तो वह उससे पहले जो दुआ किया करता था उसे भूल जाता है और अल्लाह के लिए शरीक ठहरता है ताकि उसके रास्ते से (लोगों को) बहकाए, आप कह दीजिएः तू अपने कुफ़्र के साथ कुछ (दुनियावी) फायदा उठा ले, बिलाशुब्ह तू दोज़ख़ियों में से है।

(9) क्या (मुश्रिक बेहतर है या) जो रात की घड़ियों में सज्दा करते और खड़े हुए इबादत करता है जब कि वह आख़िरत से डरता और अपने रब की रहमत की उम्मीद भी रखता है? कह दीजिएः क्या जो लोग इल्म रखते हैं और जो इल्म नहीं रखते, बराबर हो सकते हैं? बस अक़्ल वाले ही नसीहत (उपदेश) पकड़ते हैं।

(10) कह दीजिएः ऐ मेरे बन्दों जो ईमान लाए हो! अपने रब से डरो, जिन्होंने इस दुनिया में अच्छे अमल किये उनके लिए भलाई है और अल्लाह की ज़मीन वसी (विशाल) है, बिलाशुब्ह सब्र करने वालों को उनका पूरा अज्र बेहिसाब दिया जाएगा।

(11) आप कह दीजिएः बेशक मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की बन्दगी को खालिस करते हुए उसकी इबादत करूं।

(12) और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं पहला मुसलमान बन जाऊं।

(13) कह दीजिएः अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूं तो यक़ीनन मुझे बड़े दिन (क़यामत) के अज़ाब से डर लगता है।

(14) कह दीजिएः मैं अल्लाह के लिए अपनी बन्दगी को खालिस करते हुए उसकी इबादत करता हूँ।

(15) तो तुम उसके सिवा जिसकी चाहो इबादत करो, कह दीजिएः बिलाशुब्ह नुक्सान उठाने वाले तो वह लोग हैं जिन्होंने रोज़े क़यामत अपने आपको और अपने घर वालों को खसारे (नुक्सान) में डाला, खबरदार! यही खुला नुक्सान है।

(16) उनके लिए उनके ऊपर आग के सायबान (तंबू) होंगे और उनके नीचे (भी आग के) सायबान (तंबू) होंगे, यही वह (अज़ाब) है जिससे अल्लाह अपने बन्दों को डरता है, लिहाज़ा ऐ मेरे बन्दों! तुम मुझ ही से डरते रहो।

(17) और जो लोग तागूत की इबादत करने से बचे रहे और उन्होंने अल्लाह की तरफ रूजू किया, उनके लिए बशारत (खुशखबरी) है, लिहाज़ा आप मेरे (उन) बन्दों की बशारत दे दें।

(18) जो ग़ौर से बात सुनते हैं, और अच्छी बात की पैरवी करते हैं, वही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत (मार्ग-दर्शन) दी और वही लोग अक़्ल वाले हैं।

(19) क्या फ़िर जिस शख़्स पर अज़ाब की बात साबित हो चुकी हो तो (ऐ नबी!) क्या आप उसे छुड़ा लेंगे जो आग (दोज़ख) में है?

(20) लेकिन जो लोग अपने रब से डर गए उनके लिए बालाखाने (ऊँचे घर) हैं, उनके ऊपर (और) बालाखाने (अटारियाँ) बने हुए हैं जबकि उनके नीचे नहरें जारी हैं, (यह) अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के खिलाफ नहीं करता।

(21) क्या आपने नहीं देखा कि बेशक अल्लाह ने आसमान से पानी नाज़िल किया फ़िर उसे ज़मीन के चश्मों में दाख़िल किया, फ़िर वह उसके ज़रिये से खेती निकालता है जबकि उसके मुख़्तलिफ रंग होते हैं, फ़िर वह (पक कर) खुश्क हो जाती है, आप उसे ज़र्द हुई देखते हैं, फ़िर वह उसे रेज़ा-रेज़ा (चूरा-चूरा) कर देता है, बिलाशुब्ह उसमें अक़्ल (बुद्धि) वालों के लिए नसीहत (उपदेश) है।

(22) क्या फ़िर जिस शख़्स का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया है और वह अपने रब की तरफ से रोशनी पर है (वह सख़्त और तंग दिल काफिर के बराबर हो सकता है?) इसलिए हलाकत है उनके लिए जिन के दिल अल्लाह की याद के मामले में सख़्त हैं, वही लोग खुली गुमराही में हैं।

(23) अल्लाह ने बेहतरीन (सर्वोत्तम) कलाम (बात) नाज़िल किया जो एक किताब है आपस में मिलती जुलती, बार बार दोहराई जाने वाली, जिससे उन लोगों के रोंगटे खड़े

हो जाते हैं जो अपने रब से डरते हैं, फ़िर उनकी जिल्दें (खालें) और उनके दिल अल्लाह की याद की तरफ़ नर्म (हो कर माईल) हो जाते हैं, यही अल्लाह की हिदायत (मार्ग-दर्शन) है, वह उसके ज़रिये से जिसे चाहता है हिदायत देता है और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

(24) क्या फ़िर जो शख़्स रोज़े क़यामत बुरे अज़ाब से अपने चेहरे (की ढाल) के ज़रिये से बचने की कोशिश करता है (वह जन्नती के बराबर हो सकता है?) और ज़ालिमों से कहा जाएगाः तुम (उसका मज़ा) चखो जो तुम कमाते थे।

(25) जो लोग उनसे पहले थे उन्होंने (दीने हक़) को झुठलाया तो उन पर ऐसी जगह से अज़ाब आया जिसका उन्हें गुमान तक न था।

(26) इसलिए अल्लाह ने उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी में रूस्वाई (अपमान) का मज़ा चखाया, और आख़िरत का अज़ाब तो यक़ीनन बहुत बड़ा है, काश! वह जानते होते।

(27) और बिलाशुब्ह हमने इस कुरआन में लोगों के लिए हर क़िस्म की मिसाल बयान की ताकि वह नसीहत (उपदेश) पकड़ें।

(28) कुरआन अरबी (ज़बान) में है, कजी (टेढ़) वाला नहीं ताकि वह डरें।

(29) अल्लाह ने एक आदमी (गुलाम) की मिसाल बयान की जिसमें कई आपस में इख़्तिलाफ रखने वाले शरीक हैं और एक दूसरा आदमी जो खालिस एक ही शख़्स का (गुलाम) है, क्या (उन) दोनों की हालत यक्सा हो सकती है? (नहीं) अलहमदुल्लिाह! बल्कि उनमें अक्सर लोग नहीं जानते।

(30) (ऐ नबीं!) बिलाशुब्ह आप भी मरने वाले हैं और वह भी यक़ीनन मरने वाले हैं।

(31) फ़िर बिलाशुब्ह तुम क़यामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे।

(32) फ़िर उस शख़्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन है जिसने अल्लाह पर झूठ बोला और सच्चाई को झुठलाया जबकि वह उसके पास आ गई, क्या काफिरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं?

(33) और जो शख़्स सच्चाई (दीने हक़) ले कर आया और जिसने उसकी तस्दीक़ की, वही लोग मुत्तक़ी (हर तरह के गुनाह से बचते) हैं।

(34) उनके लिए उनके रब के पास वह (सब कुछ) है जो वह चाहेंगे, नेकी करने वालों का यही बदला है।

(35) ताकि अल्लाह उनसे वह बुराईयों दूर कर दे जो उन्होंने की और उन्हें उनका अज्र बेहतरीन (उत्तम) आमाल (कर्मों) के

मुताबिक़ दे जो वह करते रहे थे।

(36) क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफी नहीं? और वह आपको उन (मअबूदों) से डराते हैं जो (उन्होंने) अल्लाह के सिवा (बना रखे) हैं, और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो उसे कोई हिदायत (मार्ग-दर्शन) देने वाला नहीं।

(37) और जिसे अल्लाह हिदायत दे तो उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह निहायत ग़ालिब, इन्तिक़ाम लेने वाला नहीं?

(38) और अगर आप उनसे पूछें कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया? तो वह ज़रूर कहेंगेः अल्लाह ने! कह दीजिएः भला देखो तो! जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ पहुँचाना चाहे तो क्या वह उसकी रहमत को रोक सकते हैं? कह दीजिएः मुझे अल्लाह काफी है? भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।

(39) कह दीजिएः ऐ मेरी क़ौमः तुम अपने तरीक़े (और हालत) पर अमल करो, बेशक मैं (अपने तरीक़े पर) अमल करने वाला हूँ, इसलिए जल्द तुम जान लोगे।

(40) कि किस पर ऐसा अज़ाब आता है जो उसे रूस्वा कर दे और किस पर हमेशा रहने वाला अज़ाब उतरता है?

(41) बिलाशुब्ह हमने लोगों के लिए आप पर (यह) किताब हक़ के साथ नाज़िल की है, फ़िर जिसने हिदायत पाई तो अपने ही भले के लिए और जो गुमराह हुआ तो बस उसकी गुमराही (का बवाल) उसी पर है और आप उनके ज़िम्मेदार नहीं।

(42) अल्लाह ही मौत के वक़्त जानें क़ब्ज़ करता है और जिसकी मौत नहीं आई होती, उसे उसकी नींद में (क़ब्ज़ करता है) फ़िर वह उस (रूह) को रोक लेता है जिस पर उसने मौत का फैसला कर दिया हो और दूसरो को एक मुक़र्रर वक़्त तक (वापस) भेज देता है, बिलाशुब्ह उसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो गौरो फ़िक्र करते हैं।

(43) क्या उन्होंने अल्लाह के सिवा सिफारिशी बना रखे हैं? कह दीजिएः ख्वाह (चाहे) वह किसी चीज़ का भी इख्तियार न रखते हों और न (कुछ) समझते हों (फ़िर भी वह सिफारिशी हैं?)।

(44) कह दीजिएः सारी सिफरिश अल्लाह ही के इख्तियार में है, आसमानों और ज़मीन में उसकी बादशाही है, फ़िर तुम उसकी तरफ लौटाए जाओगे।

(45) और जब तन्हा अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उन लोगों के दिल कुढ़ने लगते हैं जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते, और जब अल्लाह के सिवा दूसरों का ज़िक्र

किया जाता है तो उस वक़्त वह बड़े खुश होते हैं।

(46) आप कह दीजिएः ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, छुपे और ज़ाहिर के जानने वाले! तू ही अपने बन्दों के दरम्यान उन बातों का फैसला करेगा जिनमें वह इख़्तिलाफ किया करते थे।

(47) और अगर उन ज़ालिमों के पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है और उसके साथ उतना ही और हो, तो वह क़यामत के रोज़ बुरे अज़ाब (यातना) से (बचने के लिए) उसे ज़रूर फिदये (बदले) में दे दें और उनके लिए अल्लाह की तरफ से वह (अज़ाब) ज़ाहिर हो जाएगा जिसका वह गुमान भी नहीं रखते थे।

(48) और उनके लिए उनके अमलों (कर्मों) की बुराइयां ज़ाहिर हो जाएँगी और उन्हें वह (अज़ाब) घेर लेगा जिसका वह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

(49) फ़िर जब इंसान को कोई तकलीफ पहुँचती है तो वह हमें पुकारता है और जब हम अपनी तरफ से उसे कोई नेअमत (सुख) अता (प्रदान) कर देते हैं तो वह कहता हैः बस मुझे तो यह (मेरे) इल्म (ज्ञान) की बदौलत दी गई है, (नहीं) बल्कि वह तो एक आज़माईश (परीक्षा) है लेकिन उनमें अक्सर नहीं जानते।

(50) बेशक यही बात उन लोगों ने भी कही थी जो उनसे पहले हुए, फ़िर उनके काम न आया जो वह कमाते थे।

(51) इसलिए उन्हें उनके अमलों की सज़ा मिली और उनमें से जिन लोगों ने जुल्म किया, जल्द उन्हें भी उनके अमलों की सज़ा मिलेगी, और वह (अल्लाह को) आजिज़ नहीं कर सकते।

(52) क्या उन्हें मालूम नहीं कि बेशक अल्लाह ही जिसके लिए चाहे रिज़्क़ कुशादा करता है, और तंग करता है, बिलाशुब्ह उसमें उन लोगों के लिए निशनियां हैं जो ईमान रखते हैं।

(53) आप कह दीजिएः (अल्लाह फरमाता हैः) ऐ मेरे बन्दों जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया है! तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह सब गुनाह माफ कर देता है, यक़ीनन वही बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(54) और तुम अपने रब की तरफ रूजू करो और उसके फ़रमाबरदार हो जाओ इससे पहले कि तुम पर अज़ाब आ जाए फ़िर तुम्हारी मदद न की जाएगी।

(55) और तुम उस बेहतरीन चीज़ की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी तरफ नाज़िल की गई है इससे पहले की तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए जबकि तुम्हें

उसकी खबर तक न हो।

(56) (ऐसा न हो) कि कोई शख़्स कहेः हाय अफसोस! उस पर जो मैंने अल्लाह के हक़ (इताअत) में कोताही की, बिलाशुब्ह मैं मज़ाक़ उड़ाने वालों में शामिल रहा।

(57) या वह कहेः अगर बेशक अल्लाह मुझे हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता तो मैं ज़रूर मुत्तक़ियों में से हो जाता।

(58) या वह जिस वक़्त अज़ाब देखे तो यह कहेः काश कि मेरे लिए एक बार लौटना हो तो मैं नेकूकरों में से हो जाओ।

(59) (अल्लाह फरमाएगा!) क्यों नहीं! तेरे पास मेरी आयतें आईं तो तूने उन्हें झुठलाया और तूने घमंड किया और तू काफिरों में से था।

(60) और आप रोज़े क़यामत उन्हें देंखेगे जिन्होंने (दुनिया में) अल्लाह पर झूठ बान्धा कि उनके मुँह काले होंगे, क्या घमंड करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं,

(61) और जिन लोगों ने तक़्वा इख़्तियार किया, अल्लाह उन्हें उनकी कामयाबी के सबब निजात देगा, उन्हें कोई तकलीफ नहीं पहुँचेगी और न वह ग़मग़ीन होंगे।

(62) अल्लाह ही हर चीज़ का खालिक़ है और वह हर चीज़ पर निगहेबान है।

(63) उसी के पास आसमानों और ज़मीन की चाबियां है, और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, वही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं।

(64) कह दीजिएः ऐ जाहिलों (मूर्खो)! क्या तुम मुझे गैरूल्लाह के बारे में हुक्म देते हो कि मैं (उनकी) इबादत करूं?

(65) और बिलाशुब्ह आपकी तरफ और उन लोगों (नबियों) की तरफ, जो आपसे पहले हुए, (यह) वह्यी की गई कि अगर आपने शिर्क किया तो आपके अमाल ज़रूर बर्बाद हो जाएँगे और आप ज़रूर नुक्सान उठाने वालों में से हो जाएँगे।

(66) बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत करें और शुक्र गुज़ारों में से हो जाएं।

(67) और उन्होंने अल्लाह की क़द्र नहीं कि जैसा कि उसकी क़द्र करने का हक़ है और क़यामत के दिन सारी ज़मीन उसकी मुठ्ठी में होगी और आसमान उसके दायें हाथ में लिपटे होंगे, वह पाक है और उस शिर्क से बालातर (उच्च) है जो वह करते हैं।

(68) और सूर में फूंका जाएगा तो जो कोई आसमानों और ज़मीन में है बेहोश हो जाएगा सिवाए उसके जिसे अल्लाह चाहे, फ़िर उसमें दूसरी बार फूंका जाएगा तो वह यकायक खड़े (हो कर) देखने लगेंगे।

(69) और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी और (अमलों की) किताब रखी जाएगी और अम्बिया और गवाह लाए

जाएँगे और लोगों के दरम्यान हक़ के साथ फैसला किया जाएगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

(70) और हर शख़्स ने जो अमल किया होगा उसे उसका पूरा अज्र दिया जाएगा और जो कुछ वह कर रहे हैं अल्लाह उसको खूब जानता है।

(71) और जिन लोगों ने कुफ्र किया, वह जहन्नम की तरफ गिरोह दर गिरोह हांके जाएँगे यहाँ तक कि जब वह उसके पास पहुँचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिए जाएँगे और उसके दरबान कहेंगेः क्या तुम्हारे पास तुम्ही में से रसूल नहीं आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें तुम्हारी इस दिन की मुलाक़ात से डराते थे? वह कहेंगेः क्यों नहीं! लेकिन काफिरों पर अज़ाब का फैसला साबित हो चुका।

(72) (उन्हें) कहा जाएगाः तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें तुम हमेशा रहोगे, इसलिए घमंड करने वालों का (यह) ठिकाना बहुत बुरा है।

(73) और जो लोग अपने रब से डरते रहे होंगे, वह जन्नत की तरफ गिरोह दर गिरोह ले जाए जाएँगे यहाँ तक कि जब वह उसके पास पहुँचेंगे तो उसके दरवाज़े खुले होंगे और उसके दरबान उनसे कहेंगेः तुम पर सलाम हो, तुम पाकीज़ा रहे, अब तुम उसमें हमेशा के लिए दाख़िल हो जाए।

(74) और वह कहेंगेः सब तारीफ उस अल्लाह ही के लिए है जिसने हमसे (किया हुआ) अपना वादा सच्चा कर दिखाया और हमें इस सरज़मीन (जन्नत) का वारिस बना दिया, हम जन्नत में जहाँ चाहें अपना ठिकाना बनाएं, इसलिए अमल करने वालों का (यह) अज्र बहुत अच्छा है।

(75) और आप फरिश्तों को अर्श के इर्द गिर्द हलक़ा बनाए देखेंगे जबकि वह अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह बयान कर रहे होंगे और लोगों के दरम्यान हक़ के साथ फैसला किया जाएगा और कहा जाएगाः सब तारीफ अल्लाह रब्बुलआलमीन ही के लिए है।

सूरह मोमिन-40

(यह मक्की सूरत है इसमें 85 आयतें और 9 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) हा मीम।

(2) इस किताब का नुज़ूल (अवतरण) अल्लाह की तरफ से है जो निहायत ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), खूब जानने वाला है।

(3) गुनाह बख़्शने वाला तौबा क़बूल करने वाला है, सख़्त सज़ा देने वाला, बड़ा फ़ज़्ल

वाला है, उसके सिवा कोई सच्चा मअ़बूद (पूज्य) नहीं, उसकी तरफ लौट कर जाना है।

(4) अल्लाह की आयतों में सिर्फ काफिर लोग ही झगड़ा करते हैं, लिहाज़ा आपको उनका शहरों में चलना फिरना धोखे में न डाले।

(5) उनसे पहले क़ौमे नूह ने और उनके बाद (दूसरे) गिरोह ने भी (अम्बिया को) झुठलाया और हर उम्मत ने अपने रसूल के बारे में इरादा किया कि उसे गिरफ्तार कर लें और उन्होंने नाहक़ झगड़ा किया ताकि उस (बातिल) के ज़रिये से हक़ (सत्य) को नीचा दिखाएं, फ़िर मैंने उन्हें पकड़ लिया, तो (देख लो!) मेरी सज़ा कैसी थी?

(6) और इसी तरह उन लोगों पर आपके रब का फैसला साबित हो गया जिन्होंने कुफ्र किया कि बिलाशुब्ह यह दोज़खी हैं।

(7) जो (फरिश्ते) अर्श को उठाए हुए और जो उसके इर्द गिर्द हैं, वह अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह बयान करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और मोमिनों के लिए बख्शिश मांगते हैं, (वह कहते हैं:) ऐ हमारे रब! तू (अपनी) रहमत और (अपने) इल्म से हर चीज़ पर छाया हुआ है, लिहाज़ा उन लोगों को बख्श (क्षमा कर) दे जिन्होंने तौबा की और तेरे रास्ते की पैरवी की और उन्हें दोज़ख के अज़ाब से बचा।

(8) ऐ हमारे रब! और उन्हें उन हमेशा के लिए बागों में दाख़िल फरमा जिन का तूने उनसे वादा किया है और उनको भी जो उनके बाप दादाओं और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से नेक हो, बेशक तू (हर चीज़ पर) ग़ालिब, निहायत हिकमत वाला है।

(9) और उन्हें बुराइयों से बचा, और जिसे तूने उस दिन बुराइयों (की सज़ा) से बचा लिया तो दर हक़ीक़त तूने उस पर रहम किया और यही तो बहुत बड़ी कामयाबी है।

(10) बिलाशब्ह जिन लोगों ने कुफ्र किया, उनसे पुकार कर कहा जाएगाः (आज) तुम्हें जितना (शदीद) गुस्सा अपने आप पर आ रहा है, अल्लाह को तुम पर उससे कहीं ज़्यादा गुस्सा उस वक़्त आता था जब (दुनिया में) तुम्हें ईमान की तरफ बुलाया जाता था तो तुम इन्कार कर देते थे।

(11) वह कहेंगेः ऐ हमारे रब! तूने हमें दोबारा मौत दी और तूने हमें दोबारा ज़िन्दा किया तो हम अपने गुनाहों का इक़रार करते हैं, फ़िर क्या (उस अज़ाब से) निकलने का कोई रास्ता है?

(12) (फरमाया जाएगाः) तुम्हें अज़ाब इस वजह से है कि बिलाशुब्ह जब तन्हा अल्लाह को पुकारा जाता था तो तुम (उसकी तौहीद का) इन्कार करते थे, और अगर उसके साथ

किसी को शरीक ठहराया जाता तो तुम (उस शिर्क को) मान लेते थे, अब हुक्म तो अल्लाह ही का है जो निहायत बरतर (उच्च) और बहुत बड़ा है।

(13) वही तो है जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रिज़्क़ नाज़िल करता है और नसीहत (उपदेश) तो वही पकड़ता है जो (अल्लाह की तरफ) रूजू करता हो।

(14) लिहाज़ा तुम अल्लाह के लिए बन्दगी खालिस करते हुए उसी को पुकारो, अगरचे काफिर नापंसद ही करें।

(15) वह बहुत बुलंद दर्जा वाला, अर्श का मालिक है, वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे अपने हुक्म से वह्यी नाज़िल करता है ताकि वह (लोगों को) मुलाक़ात के दिन से डराए।

(16) जिस दिन वह (क़ब्रों से) निकलेंगे, अल्लाह पर उनकी कोई चीज़ छुपी न होगी। (अल्लाह पूछेगाः) आज किसकी बादशाही है? (फ़िर खूद ही फरमाएगाः) सिर्फ अल्लाह वाहिद (अकेला), क़ह्हार (जबरदस्त) की।

(17) आज हर नफ्स को उसका बदला दिया जाएगा जो उसने कमाया। आज कोई जुल्म नहीं होगा, बिलाशुब्ह अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

(18) और आप उन्हें क़रीब आने वाले दिन (क़यामत) से डराऐं जबकि ग़म से भरे कलेजे मुँह को आ रहे होंगे, ज़ालिमों के लिए न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफारशी कि जिसकी बात मानी जाए।

(19) वह जानता है ख्यानत करने वाली आँखों को और उसे भी जो सीने में छुपाते हैं।

(20) और अल्लाह ही हक़ के साथ फैसला करेगा और वह उसके सिवा जिन्हें पुकारते हैं वह किसी भी चीज़ का फैसला नहीं कर सकते, बिलाशुब्ह अल्लाह ही खूब सुनने वाला, खूब देखने वाला है।

(21) क्या वह लोग ज़मीन में घूमे फिरे नहीं फ़िर वह देखते उन लोगों का अन्जाम क्या हुआ जो उनसे पहले थे? वह उनसे कुव्वत में और ज़मीन में (छोड़ी हुई) निशानियों के लिहाज़ से कहीं बढ़ कर थे फ़िर अल्लाह ने उनके गुनाहों के बाइस (कारण) उन्हें पकड़ लिया और उनको अल्लाह से बचाने वाला कोई न था।

(22) यह इसलिए कि बेशक उनके रसूल उनके पास खुली निशानियां ले कर आए थे तो उन्होंने इन्कार किया, लिहाज़ा अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया, यक़ीनन अल्लाह बड़ी कुव्वत वाला, सख्त सज़ा देने वाला है।

(23) और यक़ीनन हमने मूसा को अपनी निशानियां और वाज़ेह दलील के साथ भेजा।

(24) फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ, इसलिए उन्होंने कहाः (यह तो) जादूगर है बड़ा झूठा है।

(25) फ़िर जब वह हमारी तरफ से उनके पास हक़ ले कर आया तो उन्होंने कहाः जो लोग उसके साथ ईमान लाए हैं उनके बेटों को क़त्ल कर दो और उनकी बेटियों को ज़िन्दा रखो, और काफिरों की चाल तो बिल्कुल ही नाकाम थी।

(26) और फ़िरऔन ने कहाः मुझे छोड़ दो, मैं मूसा को क़त्ल कर दूं और उसे चाहिए कि वह अपने रब को बुला ले, बिलाशुब्ह मैं तो डरता हूँ कि वह तुम्हारे दीन को बदल डालेगा या कि वह ज़मीन में फसाद फैलाएगा।

(27) और मूसा ने कहाः बेशक मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह में आ चुका हूँ, हर उस मुतकब्बिर (घमण्डी) से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता।

(28) और आले फ़िरऔन में से एक मर्द मोमिन, जो अपना ईमान छुपाता था, कहने लगाः क्या तुम एक शख़्स को इस बात पर क़त्ल करते हो कि वह कहता हैः मेरा रब अल्लाह है जबकि वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से खुली निशानियां ले कर आया है, और अगर वह झूठा है तो उसके झूठ का वबाल उसी पर है और अगर वह सच्चा है तो तुम्हें (उस अज़ाब का) कुछ हिस्सा मिलेगा जिसका वह तुमसे वादा करता है, यक़ीनन अल्लाह उस शख़्स को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता जो हद से बढ़ने वाला, कज़्ज़ाब (झूठा) हो।

(29) ऐ मेरी क़ौम! आज तुम्हारी ही हुकूमत है जबकि ज़मीन में (तुम ही) ग़ालिब हो, फ़िर हमें अल्लाह के अज़ाब से कौन बचाएगा अगर वह हम पर आ पड़ा? फ़िरऔन ने कहाः मैं तुम्हें वही (राह) दिखाता हूँ जो मैं (खुद) देखता हूँ और मैं भलाई ही के रास्ते की तरफ तुम्हारी रहनुमाई करता हूँ।

(30) और जो शख़्स ईमान लाया था उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम! बिलाशुब्ह तुम्हारी निस्बत दूसरे गिरोहों (साबिक़ा उम्मतों) जैसे दिन (के अज़ाब) का डर है।

(31) जैसे क़ौमे नूह का हाल (हुआ) और आद और समूद और उन लोगों का जो उनके बाद हुए, और अल्लाह (अपने) बन्दों पर ज़ुल्म करना नहीं चाहता।

(32) और ऐ मेरी क़ौम! बेशक मुझे तुम पर बाहमी पुकार के दिन (क़यामत) का डर है।

(33) जिस दिन तुम पीठ फ़ेर कर भागोगे, तो कोई तुम्हें अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने वाला न होगा। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो उसे कोई हिदायत (मार्ग-दर्शन)

देने वाला नहीं।

(34) और बिलाशुब्ह इससे पहले यूसुफ भी तुम्हारे पास खुली निशानियां ले कर आया था, फ़िर तुम हमेशा उसके बारे में शक में रहे जो वह तुम्हारे पास लाया, यहाँ तक कि जब वह फौत हो गया तो तुमने कहाः इसके बाद अल्लाह हरगिज़ कोई रसूल नहीं भेजेगा, अल्लाह उस शख़्स को उसी तरह गुमराह करता है जो हद से बढ़ने वाला, शक करने वाला हो।

(35) जो लोग अल्लाह की आयतों में किसी दलील के बग़ेर झगड़ते हैं, जो उनके पास आई हो, (यह रवय्या) अल्लाह के नज़दीक और उन लोगों के नज़दीक, जो ईमान लाए, बड़ी नाराज़ी का बाइस (कारण) है, अल्लाह हर मुतकब्बिर (घमण्डी), सरकश के दिल पर इसी तरह मुहर लगा देता है।

(36) और फ़िरऔन ने कहाः ऐ हामान! तू मेरे लिए एक बुलंद (ऊँची) इमारत बना ताकि मैं रास्तों तक पहुँचू।

(37) आसमानों के रास्तों तक, फ़िर मैं झांक कर मूसा के मअ़बूद की तरफ देखूं, और बेशक मैं तो उसे झूठा ख्याल करता हूँ, और इसी तरफ फ़िरऔन के लिए उसका बुरा अमल पुरकशिश (लुभावने) बना दिया गया और उसे (सीधे) रास्ते से रोक दिया गया, और फ़िरऔन की चाल तो बस तबाह व बरबाद हो कर रही।

(38) और जो शख़्स ईमान लाया था, उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम मेरी पैरवी करो मैं तुम्हें भलाई का रास्ता बताऊंगा।

(39) ऐ मेरी क़ौम! यह दुनियावी ज़िन्दगी तो बस (थोड़ा सा) फायदा उठाना है, और बेशक आख़िरत ही हमेशा रहने का घर है।

(40) जिसने कोई बुराई की तो उसे बस उसके बराबर ही बदला दिया जाएगा और जिसने कोई नेक काम किया वह मर्द हो या औरत जबकि वह मोमिन हो, तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे वहाँ, उन्हें बेहिसाब रिज़्क़ दिया जाएगा।

(41) और ऐ मेरी क़ौम! मुझे क्या है कि मैं तो तुम्हें निजात की तरफ बुलाता हूँ और तुम मुझे आग की तरफ बुलाते हो,

(42) तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ्र करूं और उसके साथ ऐसी चीज़ें शरीक ठहराऊं जिनके बारे में मुझे कोई इल्म नहीं और मैं तुम्हें निहायत ग़ालिब, खूब बख़्शने वाले की तरफ बुलाता हूँ।

(43) यक़ीनी बात है कि तुम मुझे जिसकी तरफ बुलाते हो, वह न तो दुनिया में पुकारे जाने के क़ाबिल है और न आख़िरत में और बिलाशुब्ह हमारी वापसी अल्लाह ही की तरफ है और बिलाशुब्ह हद से बढ़ने वाले ही दोज़ख़ी हैं।

(44) लिहाज़ा तुम अनक़रीब उन बातों को याद करोगे जो मैं तुमसे कह रहा हूँ और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपर्द करता हूँ, बिलाशुब्ह अल्लाह बन्दों को खूब देख रहा है।

(45) फ़िर उन्होंने जो मक्र (फरेब) किया था, अल्लाह ने उसकी बुराइयों से उस (ईमानदार को) बचा लिया और आले फ़िरऔन को बुरे अज़ाब ने घेर लिया।

(46) (वह दोज़ख की) आग है जिस पर उन्हें सुबह व शाम पेश किया जाता है, और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी, (कहा जाएगाः) आले फ़िरऔन को सख़्त तरीन अज़ाब में दाख़िल करो।

(47) और जब वह जहन्नम में आपस में झगड़ेंगे तो जिन लोगों ने घमंड किया था उनसे कमज़ोर लोग कहेंगेः बिलाशुब्ह हम तो (दुनिया में) तुम्हारे ताबे थे, फ़िर क्या तुम हमसे आग का कुछ हिस्सा हटाओगे?

(48) जिन लोगों ने तकब्बुर (घमण्ड) किया था वह कहेंगेः बेशक हम सब ही उस (आग) में हैं, बिलाशुब्ह अल्लाह ने बन्दों के दरम्यान (बीच) फैसला कर दिया है।

(49) और वह (सब) लोग जो आग में होंगे, जहन्नम के दरबानों से कहेंगेः तुम अपने रब से दुआ करो कि वह एक दिन तो हम से कुछ अज़ाब कम कर दे।

(50) वह कहेंगेः क्या तुम्हारे रसूल तुम्हारे पास खुली निशानियां ले कर आते थे? वह (जवाब में) कहेंगेः क्यों नहीं! वह (दरबान) कहेंगेः फ़िर तुम (खुद ही) दुआ कर लो, और काफिरों की दुआ तो बेकार ही जाएगी।

(51) बिलाशुब्ह हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की मदद दुनियावी ज़िन्दगी में भी करते हैं और उस दिन भी (करेंगे) जब वह गवाह खड़े होंगे।

(52) उस दिन ज़ालिमों को उनकी मअज़रत (बहानेबाजी) कोई नफा नहीं देगी और उनके लिए लअनत होगी और उनके लिए बुरा घर होगा।

(53) और बिलाशुब्ह हमने मूसा को हिदायत दी, और हमने बनी इस्राईल को किताब का वारिस बनाया।

(54) अक़्लमन्दों की हिदायत (मार्ग-दर्शन) और नसीहत (उपदेश) के लिए।

(55) लिहाज़ा (ऐ नबी!) आप सब्र कीजिए, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और अपने गुनाह की माफी मांगे और शाम को और सुबह को अपने रब की हम्द (प्रंशसा) के साथ तस्बीह बयान कीजिए।

(56) बिलाशुब्ह जो लोग अल्लाह की आयतों में किसी दलील के बग़ेर झगड़ते हैं जो उनके पास आई हो, उनके सीनों में सिर्फ बड़ाई (का खब्त) है, वह उस तक

कभी पहुँच नहीं सकेंगे, लिहाज़ा आप (उनके शर से) अल्लाह की पनाह मांगे, बिलाशुब्ह वही खूब सुनने वाला, खूब देखने वाला है।

(57) आसमानों और ज़मीन को पैदा करना लोगों को पैदा करने से कहीं ज़्यादा बड़ा (काम) है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

(58) और अन्धे और देखने वाला बराबर नहीं और वह लोग जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये और बुराई करने वाले (बराबर नहीं) तुम बहुत कम नसीहत पकड़ते हो।

(59) बिलाशुब्ह क़यामत यक़ीनन आने वाली है, उसमें कोई शक नहीं लेकिन अक्सर ईमान नहीं लाते।

(60) और तुम्हारे रब ने कहा हैः तुम मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी (दुआऐं) क़बूल करूंगा, बिलाशुब्ह जो लोग मेरी इबादत से सरकशी करते हैं, वह अनक़रीब ज़लील व ख्वार (अपमानित) हो कर जहन्नम में दाख़िल होंगे।

(61) अल्लाह वह जिसने तुम्हारे लिए रात (अन्धेरी) बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन को दिखलाने वाला (रोशन) बनाया, बिलाशुब्ह अल्लाह लोगों पर बड़े फज़ल वाला है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।

(62) यही अल्लाह तुम्हारा रब है, हर शै (चीज़) को पैदा करने वाला, उसके सिवा कोई सच्चा मअ़बूद नहीं, फ़िर तुम कहाँ बहकाए जाते हो?

(63) इसी तरह वह लोग बहकाए जाते रह हैं जो अल्लाह की आयतों का इन्कार किया करते थे।

(64) अल्लाह वह है जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए क़रारगाह और आसमान को छत बनाया और उसने तुम्हारी सूरतें बनाई तो बहुत अच्छी सूरतें बनाई और उसने तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया, यही अल्लाह तुम्हारा रब है, सो अल्लाह रब्बुलआलमीन बहुत बाबरकत है।

(65) वह ज़िन्दा है, उसके सिवा कोई बरहक़ मअ़बूद नहीं, लिहाज़ा तुम उसके लिए बन्दगी को खालिस करते हुए उसी को पुकारो, सब तारीफें अल्लाह रब्बुलआलमीन के लिए हैं।

(66) आप कह दीजिएः बेशक मुझे उससे रोक दिया गया है कि मैं उनकी इबादत करूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो जबकि मेरे पास मेरे रब की तरफ से वाज़ेह निशानियां आ गई, और मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं रब्बुलआलमीन का फरमाबरदार हूँ।

(67) वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फ़िर नुत्फे से, फ़िर जमे हुए खून से, फ़िर वह तुम्हें बच्चा बना कर निकालता है फ़िर ताकि तुम अपनी जवानी (कुव्वतों) को

पहुँचो, फ़िर ताकि तुम बुढ़े हो जाओ, और तुममें से कुछ वह हैं जो उससे पहले ही फौत कर दिए जाते हैं ताकि तुम एक मुक़र्ररा मुद्दत को पहुँचो और ताकि तुम समझो।

(68) वही तो है जो ज़िन्दा करता है और मारता है, फ़िर जब वह किसी काम का फैसला कर लेता है तो वह बस उसे कहता हैः हो जा, तो वह हो जाता है।

(69) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं? वह कहाँ फिरे जा रहे हैं?

(70) जिन्होंने इस किताब (कुरआन) को झुठलाया और उन (तालिमात) को भी जिनके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा, तो वह अनक़रीब जान लेंगे।

(71) जब उनकी गर्दनों में तौक़ और बेड़ियां होंगी (जिनमें जकड़ कर) वह घसीटे जाएँगे।

(72) खौलते हुए पानी में, फ़िर वह आग में झोंक दिए जाएंगे।

(73) फ़िर उनसे कहा जाएगाः कहाँ हैं वह जिन्हें तुम शरीक ठहराते थे।

(74) अल्लाह के सिवा? वह कहेंगेः वह तो हमसे गुम हो गए बल्कि हम तो इससे पहले किसी को भी न पुकारते थे। अल्लाह इसी तरह काफिरों को गुमराह करता है।

(75) (कहा जाएगाः) तुम्हारा यह (अन्जाम) इसलिए हुआ कि तुम ज़मीन में नाहक़ इतराते थे और इसलिए कि तुम अकड़ते थे।

(76) (अब) तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, तुम उसमें हमेशा रहोगे, इसलिए घमंड करने वालों का ठिकाना बहुत बुरा है।

(77) लिहाज़ा (ऐ नबी!) आप सब्र कीजिए, बिलाशुब्ह अल्लाह का वादा हक़ है, फ़िर अगर हम (चाहें तो) आपको उस (अज़ाब) मेंसे कुछ दिखा दें जिसका हम उनसे वादा करते हैं या हम आपको (इससे पहले ही) फौत कर दें, बिलाआखिर वह हमारी ही तरफ लौटाए जाएँगे।

(78) और बिलाशुब्ह हमने आपसे पहले कई रसूल भेजे, उनमें से कुछ वह हैं जिनका हाल हमने आपसे बयान कर दिया और उनमें से कुछ वह हैं जिनका हाल हमने आपसे बयान नहीं किया और किसी रसूल को यह (इख्तियार) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के सिवा कोई निशानी ले आए, फ़िर जब अल्लाह का हुक्म आ गया तो हक़ के साथ फैसला कर दिया गया और उस मौक़े पर अहले बातिल (झुठे लोगों) ने नुक्सान उठाया।

(79) अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए ताकि तुम उनमें से कुछ पर सवारी करो और उनमें से कुछ को तुम खाते

हो।

(80) और तुम्हारे लिए उनमें (और भी) बहुत से फायदे हैं और ताकि तुम उन पर (सवार हो कर अपनी) इस हाजत (मन्ज़िले मक़सूद) को पहुँचो जो तुम्हारे दिलों में हो और तुम उन पर और कश्तियों पर (भी) सवार किये जाते हो।

(81) और अल्लाह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, फ़िर तुम अल्लाह की कौन कौनसी निशानियों का इन्कार करोगे?

(82) क्या फ़िर उन्होंने ज़मीन की सैर नहीं की कि वह देखते उन लोगों का अन्जाम कैसा हुआ जो उनसे पहले थे? वह (तअदाद में) उनसे ज़्यादा और कुव्वत और ज़मीन में (छोड़े हुए) आसार के लिहाज़ से कहीं बढ़ कर थे, फ़िर जो कुछ वह करते रहे उनके किसी काम न आया।

(83) फ़िर जब उनके रसूल खुली निशानियां ले कर उनके पास आए तो वह उस (झुठे) इल्म पर इतराते रहे जो उनके पास था, और उन्हें उस (अज़ाब) ने घेर लिया जिसका वह मज़ाक़ उड़ाते थे।

(84) इसलिए जब उन्होंने हमारा अज़ाब देखा तो कहाः हम अल्लाह वाहिद (अकेले) पर ईमान लाए और हम उन चीज़ों का इन्कार करते हैं जिन्हें हम अल्लाह के साथ शरीक ठहराते थे।

(85) फ़िर जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया तो उन्हें उनके ईमान (लाने) ने कोई नफा न दिया, यही अल्लाह का तरीक़ा है जो उसके बन्दों में गुज़रा, और उस (अज़ाब के) मौक़े पर काफिरों ने नुक्सान उठाया।

सूरह हा मीम सज्दा-41

(यह मक्की सूरत है इसमें 54 आयतें और 6 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) हा मीम।

(2) (यह कुरआन) रहमान (अत्यन्त कृपाशील), रहीम (दयावान्) की तरफ से नाज़िल किया हुआ है।

(3) (यह) ऐसी किताब है जिसकी आयतें खोल कर बयान की गई हैं दरां हालांकि (यह) कुरआन अरबी है, उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं।

(4) जो बशारत देने वाला और डराने वाला है, फ़िर उनमें से अक्सर ने (उससे) मुँह मोड़ लिया तो वह सुनते ही नहीं।

(5) और उन्होंने कहाः जिसकी तरफ तू हमें बुलाता है उससे हमारे दिल परदों में हैं और हमारे कानों में डाट हैं और हमारे और तेरे दरम्यान (बीच) एक परदा है, लिहाज़ा तू (अपना) काम कर, बिलाशुब्ह हम (अपना)

काम करने वाले हैं।

(6) कह दीजिएः बस मैं तो तुम्हारे जैसा ही एक बशर (इन्सान) हूँ, मेरी तरफ वह्यी की जाती है, यह कि तुम्हारा मअ़बूद सिर्फ एक ही मअ़बूद है, लिहाज़ा उसी की तरफ सीधे हो जाओ और उसी से बख़्शिश मांगो और मुश्रिकीन के लिए हलाकत है।

(7) जो ज़कात नहीं देते और वह आख़िरत के भी मुन्कर हैं।

(8) बिलाशुब्ह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये उनके लिए न ख़त्म होने वाला अज्र (बदला) है।

(9) आप कह दीजिएः क्या तुम वाक़ई उस ज़ात का इन्कार करते हो जिसने ज़मीन को दो दिनों में पैदा किया और तुम उसके साथ शरीक ठहारते हो? वह तो जहानों का रब है।

(10) और उसने उस (ज़मीन) में उसके ऊपर मज़बूत पहाड़ बनाए और उसमें बरकतें रखीं और उसमें ग़िज़ाओं (आहार) का (ठीक) अन्दाज़ा रखा, (यह काम) चार दिनों में (हुआ) पूछने वालों के लिए ठीक (जवाब) हो गया।

(11) फ़िर वह आसमान की तरफ मुतवज्जा हुआ जबकि वह धुआं था, तब अल्लाह ने उससे और ज़मीन से कहाः तुम दोनों खुशी या नखुशी से आओ, तो उन दोनों ने कहाः हम दोनों बखुशी हाज़िर हैं।

(12) फ़िर (अल्लाह ने) उन्हें दो रोज़ में सात आसमान बना दिया और हर आसमान में उसका काम इलहाम कर दिया और हमने दुनिया के आसमान को चिरागों (सितारों) से ज़ीनत (शोभा) दी और (उसकी खूब) हिफाज़त की, यह निहायत ग़ालिब, खूब जानने वाले की तदबीर है।

(13) फ़िर अगर वह मुँह मोड़ें तो कह दीजिएः मैंने तुम्हें ऐसी कड़क (आसमानी अज़ाब) से डरा दिया है जो आद और समूद की कड़क की मानिन्द होगी।

(14) जब रसूल उनके पास उनके सामने से और उनके पीछे से (यह कहते हुए) आए कि तुम अल्लाह ही की इबादत करो, (तो) उन्होंने कहाः अगर हमारा रब चाहता तो ज़रूर फरिश्ते नाज़िल करता, लिहाज़ा जो कुछ दे कर तुम्हें भेजा गया है हम तो यक़ीनन उसके मुन्कर हैं।

(15) फ़िर जो आद थे तो उन्होंने ज़मीन में नाहक़ घमंड किया और बोलेः क़ुव्वत (तक़ात) में हमसे ज़्यादा सख़्त कौन है? क्या उन्होंने देखा नहीं कि बेशक अल्लाह जिसने उन्हें पैदा किया वह क़ुव्वत में उनसे ज़्यादा सख़्त है? और वह हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।

(16) इसलिए हमने उन पर मनहूस

(साबित होने वाले) दिनों में तूफ़ानी हवा भेजी ताकि हम उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी ही में ज़िल्लत व रूस्वाई (अपमान) के अज़ाब का मज़ा चखाएँ और बिलाशुब्ह आख़िरत का अज़ाब सब से ज़्यादा रूस्वा कुन है और उनकी मदद नहीं की जाएगी।

(17) और जो समूद थे, तो हमने उनकी रहनुमाई की तो उन्होंने हिदायत (मार्ग-दर्शन) पर अन्धेपन को पसंद किया, फ़िर उनके करतूतों की वजह से उन्हें ज़िल्लत व रूस्वाई के अज़ाब की कड़क ने आ लिया।

(18) और हमने उन लोगों को निजात दी जो ईमान लाए और वह तक़्वा इख्तियर करते थे।

(19) और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन (हांक कर) आग की तरफ इकट्ठे किये जाएँगे तो उनकी दरजा बन्दी की जाएगी।

(20) यहाँ तक कि जब वह उस (दोज़ख) के पास पहुँचेंगे तो उनके खिलाफ उनका कान और उनकी आँखें और उनकी जिल्दें (खालें) उन आमालों की गवाही देंगे जो वह करते थे।

(21) और वह अपनी जिल्दों (खालों) से कहेंगेः तुमने हमारे खिलाफ गवाही क्यों दी? वह कहेंगीः हमें उसी अल्लाह ने बुलवाया जिसने हर चीज़ को बुलवाया और उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया और तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे।

(22) और तुम (गुनाह करते वक़्त यह सोच कर) परदा नहीं किया करते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारे चमड़े तुम्हारे खिलाफ गवाही देंगे बल्कि तुम समझते थे कि बेशक अल्लाह तुम्हारे बहुत से आमाल को नहीं जानता जो तुम करते थे।

(23) और तुम्हारा यही गुमान जो तुमने अपने रब के बारे में किया, उसी ने तुम्हें हलाक किया, इसलिए तुम नुक्सान पाने वालों में से हो गए।

(24) फ़िर अगर वह सब्र करें तो भी आग ही उनका ठिकाना है और अगर वह माफी मांगेंगे तो वह माफ किये गए लोगों में से न होंगे।

(25) और हमने उनके कुछ (बुरे) हमनशीन (साथी) मुक़र्रर (नियुक्त) कर दिए तो उन्होंने उनके अगले और पिछले (तमाम) आमाल खूशनुमा बना कर उनको दिखाए, आखिरकर उन पर भी (अल्लाह के अज़ाब की वह) वह बात पूरी हुई जो उनसे पहले गुज़रने वाले जिन्नों और इन्सानों के गिरोहों पर पूरी हो चुकी थी कि बिलाशुब्ह वह नुक्सान पाने वालों में से थे।

(26) और काफिरों ने (एक दूसरे से) कहाः तुम इस क़ुरआन को मत सुनो और (जब पढ़ा जाए तो) शोर मचाओ ताकि तुम ग़ालिब

आ जाओ।

(27) इसलिए जिन लोगों ने कुफ़्र किया, हमने उन्हें ज़रूर सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएँगे और जो बदतरीन अमल वह करते रहे हैं हम उन्हें उनका बदला ज़रूर देंगे।

(28) यह आग ही अल्लाह के दुश्मनों की सज़ा है, उनके लिए उसी में हमेशा रहने का घर है। यह सज़ा है उस (जुर्म) की कि वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे।

(29) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह कहेंगेः ऐ हमारे रब! हमें जिन्नों और इन्सानों में से वह दोनों (फरीक़) दिखा जिन्होंने हमें गुमराह किया था हम उन्हें पैरों तले रौंद डालें ताकि वह इन्तिहाई ज़लील व ख्वार लोगों में से हों।

(30) बिलाशुब्ह जिन लोगों ने कहाः हमारा रब अल्लाह है, फ़िर उस पर जम गए, उन पर फरिश्ते (यह कहते हुए) उतरते हैंः न तुम डरो और न ग़म खाओ और उस जन्नत से खुश हो जाओ जिसका तुमसे वादा किया जाता था।

(31) हम दुनियवी ज़िन्दगी में भी तुम्हारे दोस्त थे और आख़िरत में भी (दोस्त) हैं और उसमें तुम्हारे लिए वह सब कुछ है जो तुम्हारे जी चाहेंगे और उसमें तुम्हारे लिए वह सब कुछ है जो तुम मांगोगे।

(32) (यह) गफूर्रुरहीम (बड़ा माफ करने वाला बड़े मेहरबान) की तरफ से मेहमान नवाज़ी होगी।

(33) और उस शख़्स से ज़्यादा अच्छी बात किसकी हो सकती है जिसने (लोगों को) अल्लाह की तरफ बुलाया और नेक अमल किये और कहाः बेशक मैं तो फरमाबदारों में से हूं।

(34) और नेकी और बुराई बराबर नहीं हो सकतीं, आप (बुराई को) ऐसी बात से टाले जो अहसन (अच्छा) हो, तो (आप देखेंगे) यकायक वह शख़्स कि आपके और उसके दरम्यान दुश्मनी है (ऐसा हो जाएगा) जैसे जिगरी दोस्त हो।

(35) और यह (खुशनसीबी) उन्हीं लोगों को नसीब होती है जो सब्र करते हैं और यह उसी को नसीब होती है जो बड़े नसीब वाला हो।

(36) और अगर आपको शैतान की तरफ से कोई वस्वसा उभारे, तो अल्लाह की पनाह मांगे, यक़ीनन वह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(37) और उसी (अल्लाह) की निशानियों में से रात और दिन और सूरज और चाँद भी हैं। तुम लोग न तो सूरज को सज्दा करो और न चाँद को, अगर वाक़ई तुम उसी की इबादत करते हो तो तुम उस अल्लाह को सज्दा करो जिसने उन (सब) को पैदा किया है।

(38) फ़िर अगर वह घमंड करें तो (परवाह नहीं क्योंकि) जो (फरिश्ते) आपके रब के पास हैं, वह उसकी रात दिन तस्बीह करते हैं और वह थकते नहीं।

(39) और उसकी निशानियों में से है कि आप ज़मीन को दबी हुई (खुश्क और बंजर) देखते हैं, फ़िर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह लहलहाने लगती है और उभरने (फलने फुलने) लगती है, बिलाशुब्ह वह (अल्लाह) जिसने उस (ज़मीन) को ज़िन्दा किया, वह मुर्दा को ज़रूर ज़िन्दा करने वाला है। बेशक वह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(40) बिलाशुब्ह जो लोग हमारी आयतों में कजरवी (टेढ़ापन) करते हैं, वह हमसे छुपे नहीं रहते। क्या फ़िर जो शख़्स आग में डाला जाएगा वह बेहतर है या वह जो क़यामत के रोज़ अमन के साथ आएगा? तुम जो चाहो अमल करो, तुम जो कुछ करते हो बेशक अल्लाह उसे खूब देख रहा है।

(41) बेशक जिन लोगों ने ज़िक्र (कुरआन) को न माना जब वह उनके पास आया (तो वह अपना अन्जाम देख लेंगे) हालांकि बिलाशुब्ह यह तो एक बहुत बुलंद मर्तबा किताब है।

(42) बातिल उसके पास फटक भी नहीं सकता उसके आगे से न उसके पीछे से, यह बड़ी हिकमत वाली और क़ाबिले तारीफ हस्ती की तरफ से नाज़िल की गई है।

(43) आपसे भी वही कुछ कहा जा रहा है जो आप से पहले रसूलों से कहा गया, बेशक आपका रब माफ कर देने वाला भी और दर्दनाक अज़ाब देने वाला भी।

(44) अगर हम उसे अजमी (गैर अरबी ज़बान का) कुरआन बना कर भेजते तो वह ज़रूर कहतेः इसकी आयतें (अरबी में) खोल कर बयान क्यों नहीं की गई? क्या (किताब) अजमी है और (रसूल) अरबी? कह दीजिएः वह उनके लिए, जो ईमान लाए, हिदायत (मार्ग- दर्शन) और शिफा है और जो लोग ईमान नहीं लाते उनके कानों में डाट है और वह उनके हक़ में अन्धापन है, यह लोग (जो हक़ बात नहीं सुनते जैसे) दूर जगह से पुकारे जा रहे हों।

(45) और बेशक हमने मूसा को किताब दी फ़िर उसमें इख़्तिलाफ किया गया, और अगर आपके रब की तरफ से एक बात पहले तय न हो चुकी होती, तो उनके दरम्यान ज़रूर फैसला कर दिया जाता और बिलाशुब्ह वह उस (कुरआन) के मुतअल्लिक़ बेचैन कर देने वाले शक में पड़े हुए हैं।

(46) जिसने नेक अमल किया तो उसके अपने ही लिए है और जिसने बुरा किया तो (उसका) वबाल उसी पर है और आपका रब बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं।

(47) क़यामत (के आने) का इल्म अल्लाह ही की तरफ लौटाया जाता है और जो भी फल अपने शगूफ़ों से निकलते हैं और जो मादा हमल (गर्भ) से होती है और बच्चा जनती है (सब कुछ) अल्लाह के इल्म में है और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगाः मेरे शरीक कहाँ हैं? वह कहेंगेः हम आपसे अर्ज़ कर चुके हैं (कि आज) हममें से कोई भी (शरीक) गवाह नहीं।

(48) और उनसे वह गुम हो जाएँगे जिन्हें वह इससे पहले पुकारा करते थे, और वह यक़ीन कर लेंगे कि उनके लिए कोई भागने की जगह नहीं।

(49) इन्सान भलाई मांगने से नहीं थकता और अगर उसे कोई तकलीफ पहुँचे तो वह इन्तिहाई मायूस, सख़्त नाउम्मीद हो जाता है।

(50) और जो तकलीफ उसे पहुँचती है, उसके बाद अगर हम उसे अपनी रहमत (का मज़ा) चखाएँ तो वह यक़ीनन कहता हैः यह तो मेरे ही लिए है, और मैं नहीं समझता कि क़यामत आने वाली है और अगर मुझे मेरे रब की तरफ लौटाया गया तो बिलाशुब्हे उसके पास मेरे लिए भलाई ही होगी, इसलिए हम उन काफिरों को ज़रूर बताएँगे जो कुछ वह करते रहे और हम उन्हें सख़्त अज़ाब (का मज़ा) ज़रूर चखाएँगे।

(51) और जब हम इन्सान पर एहसान करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है, और किनारा कश हो जाता है और जब उसे तकलीफ पहुँचती है लम्बी चौड़ी दुआऐं करने वाला बन जाता है।

(52) आप कह दीजिएः भला देखो तो! अगर यह (कुरआन) अल्लाह तरफ से हो, फ़िर तुम उसका इन्कार करो तो उस शख़्स से ज़्यादा गुमराह कौन है जो (हक़ की) मुख़ालफत (विरोध) में दूर चला जाए।

(53) जल्द हम उन्हें अपनी निशानियां आफाक़ (दुनिया) में भी और खुद उनकी ज़ात में भी दिखाएँगे यहाँ तक कि उनके लिए वाज़ेह हो जाएगा कि बेशक यह (क़ुरआन) हक़ है। क्या यह बात काफी नहीं कि बेशक आपका रब हर चीज़ का शाहिद (गवाह) है?

(54) खबरदार! बेशक वह लोग अपने रब की मुलाक़ात से शक में हैं। खबरदार! बेशक वह हर चीज़ को घेरे हुए है।

सूरह शूरा-42

(यह मक्की सूरत है इसमें 53 आयतें और 5 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) हा मीम्।

(2) ऐन सीन क़ाफ।

(3) अल्लाह ज़बरदस्त ग़ालिब व हिकमत वाला आपकी तरफ और उन लोगों की तरफ, जो आपसे पहले थे, इसी तरह वह्यी करता है।

(4) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और वह बुलंद मर्तबा, बड़ी अज़मत वाला है।

(5) क़रीब है कि आसमान (अल्लाह की अज़मत व जलाल के बाइस) अपने ऊपर से फट जाएँ और तमाम फरिश्ते अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और अहले ज़मीन के लिए मग्फिरत मांगते हैं। खबरदार! बिलाशुब्ह अल्लाह ही बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(6) और जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा (दूसरे) कारसाज़ बना लिए हैं, अल्लाह उन पर निगराँ है और आप उनके ज़िम्मेदार नहीं।

(7) और उसी तरह हमने आपकी तरफ एक अरबी कुरआन की वह्यी की ताकि आप अहले मक्का और उसके आस-पास वालों को डराएँ और आप जमा होने के दिन से डराएँ जिसमें कोई शक नहीं। एक गिरोह जन्नत में होगा और दूसरा भड़कने वाली आग में।

(8) और अगर अल्लाह चाहता तो यक़ीनन उन (सब) को एक ही उम्मत कर देता लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है और ज़ालिमों के लिए न कोई दोस्त है और न कोई मददगार।

(9) क्या उन्होंने उसके सिवा (दूसरे) कारसाज़ बना लिए हैं? दर हक़ीक़त अल्लाह ही कारसाज़ है और वही मुर्दा को ज़िन्दा करेगा और वह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(10) और (दीन की) जिस चीज़ में भी तुमने इख़्तिलाफ (मतभेद) किया तो उसका फैसला अल्लाह के सुपुर्द है, यही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ मैं रूजू करता हूँ।

(11) (वह) आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला है, उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्सी से जोड़े बना दिए और चौपायों के भी (उन की जिन्सी से) जोड़े बनाए, वह तुम्हें उस (ज़मीन) में फैलाता है, उस जैसी कोई चीज़ नहीं, और वह खूब सुनने वाला, खूब देखने वाला है।

(12) उसीके पास आसमानों और ज़मीन की कुन्जियां हैं, वह जिसके लिए चाहे रिज़्क़ कुशादा करता है और वही (जिसके लिए चाहे) तंग कर देता है, बिलाशुब्ह वह हर शै (चीज़) को खूब जानने वाला है।

(13) उसने तुम्हारे लिए वही दीन मुक़र्रर किया है जिसका हुक्म उसने नूह को दिया था और जो हमने (ऐ नबी!) आपकी तरफ

वह्यी किया और जिसका ताकीदी हुक्म हमने इब्राहीम, मूसा, और ईसा को दिया था कि तुम दीन को क़ायम रखो और तुम उसमें फिरक़ा फिरक़ा न हो जाओ यही बात तो मुश्रिकीन पर गिराँ गुज़रती है जिसकी तरफ आप उन्हें बुलाते हैं, अल्लाह जिसे चाहे अपने लिए चुन लेता है और हिदायत उसे देता जो उसकी तरफ रूजू करे।

(14) और वह लोग अपने पास इल्म आ जाने के बाद सिर्फ आपस में ज़िद की वजह से फिरक़े बन्दी का शिकार हुए और अगर आपके रब की तरफ से एक बात मुक़र्रर वक़्त तक पहले से तय न हो चुकी होती तो उन (फिरक़ेबाज़ों) के दरम्यान ज़रूर फैसला कर दिया जाता और बिलाशुब्ह जो लोग उनके बाद उस किताब के वारिस बनाए गए, वह उसके बारे में बेचैन कर देने वाले शक में हैं।

(15) लिहाज़ा आप उसी (दीन) के तरफ (सबको) बुलाएँ और साबित क़दम रहें जैसे आपको हुक्म दिया गया है और उनकी ख्वाहिशात की पैरवी न करें और कह दीजिएः अल्लाह ने जो किताब भी नाज़िल की है, मैं उस पर ईमान लाया हूँ और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं तुम्हारे दरम्यान इंसाफ करूं, अल्लाह ही हमारा रब है और तुम्हारा भी रब है, हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल, हमारे और तुम्हारे दरम्यान कोई झगड़ा नहीं, अल्लाह (रोज़े क़यामत) हम सब को जमा करेगा और उसी की तरफ लौट कर जाना है।

(16) और जो लोग अल्लाह के बारे में, उसको तस्लीम कर लिए जाने के बाद, झगड़ा करते हैं, उनकी दलील उनके रब के नज़दीक बातिल है और उन पर (अल्लाह का) गज़ब है, और उनके लिए शदीद (दर्दनाक) अज़ाब है।

(17) अल्लाह ही है जिसने हक़ के साथ किताब और तराजु नाज़िल की और आपको क्या मालूम शायद क़यामत क़रीब ही हो।

(18) जो लोग उस (क़यामत) पर ईमान नहीं रखते वह उसके लिए जल्दी मचाते हैं और जो लोग ईमान लाए वह उससे डरने वाले हैं और वह जानते हैं कि वह बरहक़ है। आगाह रहो! बिलाशुब्ह जो लोग क़यामत के बारे में झगड़ते हैं, वह दूर की गुमराही में (पड़े) हैं।

(19) अल्लाह अपने बन्दों पर बहुत मेहरबान है। वह जिसे चाहता है रिज़्क़ देता है और वह खूब ताक़तवर, निहायत ग़ालिब है।

(20) जो शख़्स आख़िरत की खेती चाहता है, हम उसके लिए उसकी खेती में इज़ाफा करते हैं और जो शख़्स दुनिया की खेती चाहता है, हम उसमें से कुछ दे देते हैं और उसके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं।

(21) क्या उनके लिए (अल्लाह के सिवा) शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए वह दीन मुक़र्रर किया है जिसका अल्लाह ने हुक्म नहीं दिया? और अगर (वादे के दिन) फैसला करने की बात न होती, तो यक़ीनन (फौरन ही) फैसला कर दिया जाता और बिलाशुब्ह ज़ालिम लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(22) आप ज़ालिमों को देखेंगे वह उन (आमालों की सज़ा) से डर रहे होंगे जो उन्होंने कमाए जबकि वह (सज़ा) उन्हें मिल कर रहेगी, और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये वह जन्नत के बागात में होंगे, उनके रब के पास वह (सब कुछ) होगा जो वह चाहेंगे, यही बहुत बड़ा फज़्ल है।

(23) यही (फज़्ल) है जिसकी अल्लाह अपने बन्दों को बशारत देता है जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये। (ऐ नबी!) आप कह दीजिए: मैं तुमसे इस (तब्लीगे रिसालत) पर किसी सिले (बदले) का सवाल नहीं करता मगर रिश्ते दारी की मुहब्बत (ज़रूर चाहता हूँ) और जो शख्स कोई नेकी कमाता है तो हम उसके लिए उसमें भलाई बढ़ा देता हैं। बेशक अल्लाह बहुत बख्शने वाला, निहायत क़द्रदान है।

(24) क्या वह कहते हैं कि उसने अल्लाह पर झूठ गढ़ लिया है? सो अगर अल्लाह चाहे तो आपके दिल पर मुहर लगा दे और अल्लाह बातिल को मिटाता है और हक़ को अपने कलमात के ज़रिये से साबित करता है। बिलाशुब्ह वह सीनों के राज़ खूब जानता है।

(25) और वही तो है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और (उनकी) बुराईयों से दरगुज़र फरमाता है और जो कुछ तुम कर रहे हो उसे जानता है।

(26) और वह उन लोगों की (दुआ) क़बूल करता है जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये और वह उन्हें अपने फज़्ल से ज़्यादा देता है और काफिरों के लिए शदीद अज़ाब है।

(27) और अगर अल्लाह अपने (तमाम) बन्दों के लिए रिज़्क़ फराख कर देता तो वह ज़मीन में ज़रूर सरकशी करते, लेकिन वह उस अन्दाज़ से (रिज़्क़) नाज़िल करता है जितना चाहता है। बिलाशुब्ह वह अपने बन्दों से खूब बाखबर है, (उन्हें) खूब देखने वाला है।

(28) और वही है जो लोगों के नाउम्मीद हो जाने के बाद बारिश नाज़िल करता है और वह अपनी रहमत आम कर देता है और वही कारसाज़, तअरीफ के लायक़ है।

(29) और उसी की निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और जानदार जो उसने इन दोनों में फैला रखा हैं, और वह जब भी चाहे उनके जमा करने पर

क़ादिर है।

(30) और तुम्हें जो भी मुसीबत पहुँचती है तो वह तुम्हारे अपने ही करतूतो की वजह से (पहुँचती है) और बहुत सी बातों से तो वह दरगुज़र (माफ) ही फरमाता है।

(31) और तुम (उसे) ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार।

(32) और उसीकी निशानियों में से है समंदर में चलने वाले पहाड़ों जैसे जहाज़ (और कश्तियां)।

(33) अगर वह चाहे तो हवा को रोक ले, फ़िर वह (जहाज़) समंदर की सतह पर खड़े रह जाएँ। बिलाशुब्ह उसमें हर साबिर शाकिर के लिए अज़ीम (बड़ी) निशानियां हैं।

(34) या वह (चाहे तो) उन्हें उनके करतूतों की वजह से तबाह कर दे और (चाहे तो) बहुत सों से दरगुज़र करे।

(35) और (ताकि) वह लोग जान लें जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं कि उनके लिए भागने की कोई जगह नहीं।

(36) इसलिए तुम्हें जो भी शै (चीज़) दी गई है तो वह दुनियवी ज़िन्दगी का (हक़ीर सा) सामान है और जो कुछ अल्लाह के पास है वह उन लोगों के लिए कहीं बेहतर और बहुत पायदार है जो ईमान लाए और वह अपने रब ही पर भरोसा करते हैं।

(37) और वह लोग जो कबीरा (बड़े) गुनाहों और बेहयाई के कामों से बचते हैं और जब गुस्सा आए तो वह माफ कर देते हैं।

(38) और वह लोग जिन्होंने अपने रब का हुक्म माना और नमाज़ क़ायम की, और उनका (हर) काम आपसी मशवरे से होता है और हमने उन्हें जो कुछ दिया है वह उसमें से खर्च करते हैं।

(39) और वह लोग कि जब उन पर ज़ुल्म व ज़्यादती हो तो वह बस बदला लेते हैं।

(40) और बुराई का बदला वैसी ही बुराई है, फ़िर जो माफ कर दे और सुलह कर ले तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है, बिलाशुब्ह अल्लाह ज़ालिमों का पसंद नहीं करता।

(41) और अलबत्ता जो शख़्स अपने मज़लूम होने के बाद बदला ले, तो ऐसे लोगों पर कोई (मलामत की) राह नहीं।

(42) (मलामत की) राह तो बस उन लोगों पर है जो दूसरों पर ज़ुल्म करते और ज़मीन में नाहक़ सरकशी करते हैं। यही लोग हैं जिन के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(43) और अलबत्ता जो सब्र करे और माफ कर दे तो बिलाशुब्ह हिम्मत के कामों में से हैं।

(44) और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो अल्लाह के बाद उसके लिए कोई वली (कारसाज़) नहीं, और आप ज़ालिमों को देखेंगे

कि जब वह अज़ाब देखेंगे तो कहेंगेः क्या वापसी का कोई रास्ता है?

(45) और आप उन्हें देखेंगे कि वह जहन्नम पर पेश किये जाएँगे तो ज़िल्लत के मारे झुके जा रहे होंगे, वह नज़रें चुरा कर देखते होंगे और जो लोग ईमान लाए थे वह कहेंगेः बेशक नुक्सान पाने वाले तो वही लोग हैं जिन्होंने क़यामत के रोज़ अपने आपको और अपने घर वालों को खसारे (नुक्सान) में डाला, आगाह रहो! बिलाशुब्ह ज़ालिम लोग ही हमेशा के अज़ाब में होंगे।

(46) और उनके लिए अल्लाह के सिवा, कोई ऐसे दोस्त नहीं होंगे जो उनकी मदद कर सकें और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो उसके लिए (हिदायत का) कोई रास्ता ही नहीं।

(47) तुम अपने रब का फरमान क़बूल कर लो इससे पहले कि अल्लाह की तरफ से वह दिन आ जाए जो (किसी तरह भी) टाला नहीं जा सकता, उस दिन तुम्हारे लिए कोई जाए पनाह नहीं होगी और न तुमसे (गुनहों का) इन्कार ही बन पड़ेगा।

(48) फ़िर अगर वह मुँह मोड़ें तो (ऐ नबी!) हमने आपको उन पर कोई निगराँ (बना कर) नहीं भेजा, आपके ज़िम्मे तो पहुँचा देना ही है और बिलाशुब्ह जब हम इन्सान को अपनी रहमत (का मज़ा) चखाते हैं तो वह उस पर इतराने लगता है और अगर उन्हें उनके करतूतों की वजह से कोई तकलीफ पहुँचे तो बिलाशुब्ह इन्सान बहुत ही नाशुक्रा बन जाता है।

(49) आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह की के लिए है। वह जो चाहे पैदा करता है। जिसे चाहे (सिर्फ) बेटियां अता करता है और जिसे चाहे (सिर्फ) बेटे अता करता है।

(50) या उनको बेटे और बेटियां मिला कर देता है, और जिसे चाहे बेऔलाद रखता है। बेशक वह खूब जानने वाला, बहुत क़ुदरत वाला है।

(51) और यह किसी बशर के लायक़ नहीं कि अल्लाह उससे कलाम करे मगर इलहाम (दिल में इलक़ा) करे या परदे के पीछे से या फरिश्ते भेज कर और वह (फरिश्ता) अल्लाह के हुक्म से, जो अल्लाह चाहे वह्यी करता है। बिलाशुब्ह वह बुलंद मर्तबा, खूब हिकमत वाला है।

(52) और इसी तरह हमने आपकी तरफ अपने हुक्म से एक रूह (क़ुरआन) की वह्यी की। आप नहीं जानते थे कि किताब क्या है और ईमान क्या है? लेकिन हमने उसे नूर बना दिया, हम अपने बन्दों में जिसे चाहें उसके ज़रिये से हिदायत (मार्ग-दर्शन) देते हैं, और बिलाशुब्ह आप सीधे रास्ते ही की तरफ

रहनुमाई करते हैं।

(53) उस अल्लाह के रास्ते की तरफ जो आसमानों और ज़मीन की हर चीज़ का मालिक है। आगाह रहो! अल्लाह ही की तरफ तमाम मामलात लौटते हैं।

सूरह जुखरूफ-43

(यह मक्की सूरत है इसमें 89 आयतें और 7 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) हा मीम।

(2) क़सम है उस वाज़ेह किताब की।

(3) बेशक हमने उसे अरबी (ज़बान का) कुरआन बनाया है ताकि तुम समझो।

(4) और बिलाशुब्ह वह हमारे पास अस्ल किताब (लौहे महफ़ूज़) में, बहुत बुलंद (उच्च) मर्तबा, निहायत हिकमत वाला है।

(5) क्या हम तुमसे इस बिना पर मुँह मोड़ कर ज़िक्र व नसीहत (उपदेश) रोक लेंगे कि तुम हद से गुज़रने वाले लोग हो।

(6) और हमने पहले लोगों में कितने ही नबी भेजे।

(7) और उनके पास जो भी नबी आता, वह उससे मज़ाक़ ही करते थे।

(8) फ़िर हमने उनसे कहीं ज़्यादा ज़ोरावर (ताक़तवर) लोग हलाक कर दिए और अगले लोगों की मिसाल गुज़र चुकी है।

(9) और अगर आप उनसे सवाल करें किसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया? तो यक़ीनन वह यही कहेंगे कि उन्हें निहायत ग़ालिब, खूब जानने वाले ने पैदा किया।

(10) वह (अल्लाह) जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए, ताकि तुम राह पाओ।

(11) और वह (अल्लाह) जिसने आसमान से पानी एक अन्दाज़े से नाज़िल किया, फ़िर हमने उसके ज़रिये से मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दिया, इसी तरह तुम दोबारा (क़ब्रों से) निकाले जाओगे।

(12) और वह जिसने सब जोड़े पैदा किये और तुम्हारे लिए कश्तियां और चौपाऐ बनाए जिन पर तुम सवार होते हो।

(13) ताकि तुम उनकी पीठ पर जम कर बैठो, फ़िर जब उन पर जमकर बैठ जाओ तो तुम अपने रब की नेअमत याद करो, और कहोः वह (अल्लाह) पाक है जिसने इसे हमारे ताबे कर दिया वरना हम इसे क़ाबू में कर लेने वाले नहीं थे।

(14) और यक़ीनन हम अपने रब ही की तरफ लौटने वाले हैं।

(15) और उन्होंने अल्लाह के कुछ बन्दों को उसका जुज़ (औलाद) ठहरा दिया, बिलाशुब्ह इंसान तो खुल्लम खुला नाशुक्रा है।

(16) क्या उसने उनमें से जो वह पैदा करता है (अपने लिए तो) बेटियां रख लीं और तुम्हें बेटों से नवाज़ दिया?

(17) और जब उनमें से किसी को उस (बेटी पैदा होने) की बशारत (मंगलसूचना) दी जाती है जबकि उसने रहमान के लिए मिसाल बयान की, तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है जबकि वह ग़म से भरा होता है।

(18) क्या (वह अल्लाह की औलाद है?) जिसकी ज़ेवर में परवरिश की जाती है और वह झगड़े में अपनी बात वाज़ेह नहीं कर पाती।

(19) और उन्होंने फरिश्तों को, जो रहमान के बन्दे हैं, (रहमान की) बेटियां ठहराया है। क्या वह उनकी पैदाईश के वक़्त हाज़िर थे? उनकी शहादत ज़रूर लिखी जाएगी और उनसे (उस चीज़ की) पूछताछ होगी।

(20) और उन्होंने कहाः अगर रहमान चाहता तो हम उन (झूठे मअबूदों) की इबादत न करते। उन्हें इसकी बाबत कोई इल्म नहीं। वह तो सिर्फ तीर तुक्के चलाते हैं।

(21) या हमने उन्हें इससे पहले कोई किताब दी है, सो वह उसे मज़बूती से थामे हुए हैं?

(22) (नहीं) बल्कि उन्होंने कहाः बिलाशुब्ह हमने अपने बाप दादाओं को एक तरीक़े पर पाया, और बेशक हम तो उन्हीं की नक्शे क़दम पर चलने वाले हैं।

(23) और इसी तरह आपसे पहले हमने जिस बस्ती में कोई भी डराने वाला भेजा, तो उनके ख़ुशहाल लोगों ने यही कहाः बिलाशुब्ह हमने आपने बाप दादाओं को एक तरीक़े पर पाया और हम तो उन्हीं के नक्शे क़दम की पैरवी करने वाले हैं।

(24) नबी ने कहाः अगरचे मैं तुम्हारे पास उससे ज़्यादा सीधा रास्ता लाया हूं जिस पर तुमने अपने बाप दादाओं को पाया? वह कहने लगेः यक़ीनन तुम्हें जिसके साथ भेजा गया है हम तो उसका इन्कार करते हैं।

(25) इसलिए हमने उनसे इन्तिक़ाम लिया, फ़िर देखें झुठलाने वालों का क्या अन्जाम हुआ?

(26) और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहाः बिलाशुब्ह मैं उन (बुतों) से बेज़ार हूं जिनकी तुम इबादत करते हो।

(27) सिवाए उस (अल्लाह) के जिसने मुझे पैदा किया, तो बेशक वही जल्द मेरी रहनुमाई फरमाएगा।

(28) और इब्राहीम अपनी औलाद में (भी) उसी (कलमा तौहीद) को एक बाक़ी रहने वाला कलमा बना गए ताकि वह (अल्लाह की तरफ) रूजू करें।

(29) बल्कि मैंने उन्हें और उनके बाप दादाओं को फायदा पहुँचाया, यहाँ तक कि

उनके पास हक़ और खोल कर बयान करने वाला रसूल आ गया।

(30) और जब उनके पास हक़ आया तो उन्होंने कहाः यह तो जादू है और बिलाशुब्ह हम उसके मुन्किर हैं।

(31) और उन्होंने कहाः यह कुरआन इन दोनों शहरों में से किसी बड़े आदमी पर नाज़िल क्यों नहीं किया गया?

(32) क्या वह आपके रब की रहमत तक़्सीम करते हैं? हमीं ने दुनयावी ज़िन्दगी में उनके दरम्यान उनकी रोज़ी तक़्सीम की है और हमी ने दरजात में उन्हें एक दूसरे पर बरतरी दी है ताकि वह एक दूसरे को खिदमतगार बनाएँ और आपके रब की रहमत उससे बहुत बेहतर है जो वह जमा करते हैं।

(33) और अगर यह अन्देशा न होता कि तमाम लोग एक ही गिरोह (काफिर) हो जाएँगे तो हम उन लोगों के लिए जो रहमान के साथ कुफ़्र करते हैं, उनके घरों की छत चांदी की बना देते और सीढ़ियां भी, जिन पर वह चढ़ते।

(34) और उनके घरों के दरवाज़े और तख़्त भी (चांदी के बना देते) जिन पर तकिया लगा कर बैठते।

(35) और सोने के भी, और यह सब कुछ तो बस दुनियावी ज़िन्दगी का सामान है और आख़िरत आपके रब के नज़दीक मुत्तक़ीन के लिए है।

(36) और जो रहमान के ज़िक्र से अन्धा (ग़ाफिल) हो जाए तो हम उसके लिए एक शैतान को मुक़र्रर कर देते हैं, फ़िर वह उसका साथी बन जाता है।

(37) और बिलाशुब्ह वह (शयातीन) उन्हें सीधे रास्ते से रोकते हैं, जबकि वह ख्याल करते हैं कि बेशक वह हिदायत पर हैं।

(38) यहाँ तक कि जब वह (गुमराह शख़्स) हमारे पास आएगा तो (शैतान से) कहेगाः काश! मेरे और तेरे दरम्यान पूरब व पश्चिम की दूरी होती, तू तो बड़ा बुरा साथी है।

(39) और जब तुम ज़ुल्म कर चुके हो तो आज यह बात तुम्हें हरगिज़ नफा न देगी कि तुम (सब) अज़ाब में शरीक हो।

(40) क्या फ़िर आप बहरों को सुना सकते हैं या अन्धों को राह दिखा सकते हैं और (उनको) जो खुली गुमराही में हैं?

(41) फ़िर अगर हम आपको (दुनिया से) ले जाएँ तो बहर हाल हम उनसे इन्तिक़ाम लेने वाले हैं।

(42) या हम आपको वह (अज़ाब) दिखा दें जिसका हमने उनसे वादा किया है, तो बिलाशुब्ह हम उन पर कुदरत रखते हैं।

(43) लिहाज़ा आप उस चीज़ को मज़बूती से थाम लें जो आपकी तरफ वह्यी की गई है, यक़ीनन आप सीधे रास्ते पर हैं।

(44) और यक़ीनन यह (क़ुरआन) आपके लिए और आपकी क़ौम के लिए एक नसीहत है और जल्द तुम लोगों से पुछताछ होगी।

(45) और हमने जो अपने रसूल आपसे पहले भेजे थे उनसे पूछें, क्या हमने रहमान के सिवा कोई और मअ़बूद मुक़र्रर किये थे कि उनकी इबादत की जाए?

(46) और बिलाशुब्ह हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उस (की क़ौम) के सरदारों की तरफ भेजा, इसलिए मूसा ने कहाः बेशक मैं रब्बुलआलमीन का रसूल हूं।

(47) फ़िर जब वह उनके पास हमारी निशानियां ले कर आया तो वहाँ वह उनकी हंसी उड़ाने लगे।

(48) और हम उन्हें जो भी निशानी दिखाते थे वह उस जैसी (पहली निशानी) से ज़्यादा ही बड़ी होती थी और हमने उन्हें अज़ाब में पकड़ा ताकि वह (कुफ्र से) बाज़ (रूक) आएँ।

(49) और उन्होंने कहाः ऐ साहिर (जादूगर)! तेरे रब ने जो तुझ से (दुआ क़बूल करने का) वादा कर रखा है, उसके मुताबिक़ तू हमारे लिए अपने रब से दुआ कर (अब) हम ज़रूर हिदायत (मार्ग-दर्शन) पाने वाले हैं।

(50) फ़िर जब हम उनसे अज़ाब दूर कर देते तो वहाँ वह अहद तोड़ देते।

(51) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम में मुनादी कराई, उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरे लिए मिस्र की बादशाही और यह नहरें नहीं जो मेरे महलात के नीचे बहती हैं? क्या फ़िर तुम देखते नहीं?

(52) बल्कि मैं तो इस (मूसा) से कहीं बेहतर हूं जो हक़ीर है और साफ बोल भी नहीं सकता।

(53) फ़िर उस पर सोने के कंगन क्यों नहीं उतारे गए या उसके साथ फरिश्ते सफें बान्धे आते?

(54) तब उसने अपनी क़ौम की मत मार दी और उन्होंने उसकी इताअत की। बिलाशुब्ह वही लोग फासिक़ थे।

(55) फ़िर जब उन्होंने हमें गुस्सा दिलाया तो हमने उनसे इन्तिक़ाम लिया और उन सबको ग़र्क़ कर दिया।

(56) तो यूं हमने उन्हें गए गुज़रे कर दिया और पिछलों के लिए (शिक्षाप्रद) मिसाल बना दिया।

(57) और जब ईसा इब्ने मरयम की मिसाल बयान की गई तो आपकी क़ौम उस (खुशी) से चिल्ला उठी।

(58) और उन्होंने कहाः क्या हमारे मअ़बूद बेहतर हैं या वह (ईसा)? उन्होंने आपसे यह मिसाल महज़ झगड़े के लिए बयान की, बल्कि यह लोग निरे झगड़लू हैं।

(59) वह (ईसा) तो सिर्फ एक बन्दा है जिस पर हमने इनआम किया और उसे बनी इस्राईल के लिए (अपनी कुदरत का) एक नमूना बना दिया।

(60) और अगर हम चाहते तो तुममें से फरिश्ते बना देते जो ज़मीन में (तुम्हारे) जाँनशीन होते।

(61) और बेशक वह (ईसा) क़यामत की एक निशानी है, लिहाज़ा तुम उस (क़यामत के आने) में शक न करो और तुम मेरी पैरवी करो, यही सीधा रास्ता है।

(62) और शैतान तुम्हें (राहे हक़ से) हरगिज़ रोक दे, बिलाशुब्ह वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

(63) और जब ईसा खुली निशानियां (मोजिज़े) ले कर आया तो उसने कहाः बेशक मैं तुम्हारे पास हिकमत लाया हूं और ताकि मैं तुम पर कुछ वह बातें वाज़ेह कर दूं जिन में तुम इख़्तिलाफ करते हो, लिहाज़ा तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

(64) बिलाशुब्ह अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा रब है, लिहाज़ा तुम उसकी इबादत करो, यही सीधा रास्ता है।

(65) फ़िर उन्हीं (बनीइस्राईल) में से जमाअतों ने आपस में इख़्तिलाफ किया, तो जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनके लिए अलमनाक दिन के अज़ाब से हलाकत है।

(66) वह क़यामत ही का इन्तिज़ार तो कर रहे हैं कि वह उन पर अचानक आ पड़े जबकि उन्हें खबर तक न हो।

(67) उस दिन मुत्तक़ीन के सिवा तमाम (जिगरी) दोस्त भी एक दूसरे के दुश्मन बन जाएँगे।

(68) (उन्हें कहा जाएगाः) ऐ मेरे बन्दों! तुम पर आज कोई ख़ौफ नहीं और न ग़मग़ीन होगे।

(69) (यानी) जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाए और वह फरमांबरदार थे।

(70) तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ, तुम्हें और तुम्हारी बीबियों को खुश कर दिया जाएगा।

(71) उनके आगे सोने की रकाबियों और साग़रों के दौर चल रहे होंगे और हर मन पंसद और आँखों की लज्ज़त देने वाली चीज़ें उस (जन्नत) में होंगी और तुम उसमें हमेशा रहोगे।

(72) उसमें तुम्हारे लिए बहुत से फल होंगे जिनमें से तुम खाओगे।

(74) बेशक मुजरिम लोग अज़ाबे जहन्नम में हमेशा रहेंगे।

(75) उनसे वह (अज़ाब) हल्का नहीं किया जाएगा और वह उसमें नाउम्मीद पड़े रहेंगे।

(76) और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह खुद ही ज़ालिम थे।

(77) और वह (दारोगा जहन्नम को) पुकारेंगेः ऐ मालिक! तेरा रब हमारा काम ही तमाम कर दे, वह कहेगाः बेशक तुम तो हमेशा (उस अज़ाब में) रहोगे।

(78) बिलाशुब्ह हम तुम्हारे पास हक़ लाए थे, लेकिन तुम्हारे अक्सर लोग हक़ को नापसंद ही करने वाले थे।

(79) क्या उन (मुश्रिकीन मक्का) ने (किसी इक़दाम का) पुख़्ता फैसला कर लिया है, तो हम भी पुख़्ता फैसला करने वाले हैं।

(80) क्या वह ख्याल करते हैं कि बेशक हम उनकी खुफिया बातें और सरगोशियाँ नहीं सुनते? क्यों नहीं! और हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) उनके पास ही लिखते रहते हैं।

(81) (ऐ नबी!) आप कह दीजिएः अगर रहमान की कोई औलाद होती तो सब से पहले मैं ही (उसकी) इबादत करने वाला होता।

(82) आसमानों और ज़मीन का रब और अर्श का रब उन बातों से पाक है जो वह बयान करते हैं।

(83) इसलिए आप उन्हें छोड़ दीजिए, वह (अपने बातिल ख्यालत में) उलझे रहें और खेल तमाशे में लगे रहें यहाँ तक कि वह अपने उस दिन को देख लें जिसका उनसे वादा किया जाता है।

(84) और वही (अल्लाह) आसमान में भी मअ़बूद है और ज़मीन में भी मअ़बूद है और वह बहुत हिकमत वाला, खूब जानने वाला है।

(85) और वह बहुत बाकरकत ज़ात है जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके दरम्यान है उस (सब) की बादशाही है, और उसी के पास क़यामत का इल्म है और तुम उसीकी तरफ लौटाए जाओगे।

(86) और वह अल्लाह को छोड़ कर जिन्हें पुकारते हैं, वह सिफारिश का इख़्तियार नहीं रखते, सिवाए उनके जिन्होंने हक़ की गवाही दी और वह इल्म भी रखते हैं।

(87) और अगर आप उनसे पूछें कि उन्हें किसने पैदा किया? तो वह ज़रूर कहेंगेः अल्लाह ने! फ़िर वह कहाँ बहकाए जाते हैं?

(88) उस (रसूल) की उस बात की क़सम है कि ऐ रब! बेशक यह लोग ईमान नहीं लाएँगे।

(89) लिहाज़ा (ऐ नबी!) उनसे दरगुज़र कीजिए और कह दीजिएः सलाम है, फ़िर अनक़रीब वह जान लेंगे।

सूरह दुखान-44

(यह मक्की सूरत है इसमें 59 आयतें और 3 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान,

बहुत रहम करने वाला है।

(1) हा मीम्।

(2) क़सम है वह वाज़ेह किताब की।

(3) बिलाशुब्ह हमने इसे एक बाबरकत रात में नाज़िल किया, बेशक हम डराने वाले हैं।

(4) उसी (रात) में हर हिकमत वाले मामले का फैसला किया जाता है।

(5) खास हमारे हुक्म से, बेशक हम ही (रसूल) भेजने वाले हैं।

(6) आपके रब की खास रहमत से? बिलाशुब्ह वही खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(7) जो आसमानों और ज़मीन का रब है और (उनका भी) जो कुछ उन दोनों के दरम्यान हैं, अगर तुम यक़ीन करने वाले हो।

(8) उसके सिवा कोई सच्चा मअ़बूद नहीं, वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है, वही तुम्हारे अगले बाप दादाओं का रब है।

(9) (मगर कुफ्फार को यक़ीन नहीं) बल्कि वह शक में पड़े खेल रहे हैं।

(10) तो आप उस दिन का इन्तिज़ार कीजिए जब आसमान साफ धुआँ लाएगा।

(11) जो लोगों को ढांप लेगा (कहा जाएगाः) यह है दर्दनाक अज़ाब!

(12) (काफिर कहेंगेः) ऐ हमारे रब! हम से यह अज़ाब दूर कर दे बिलाशुब्ह हम ईमान लाने वाले हैं।

(13) उनके लिए नसीहत (उपदेश) क्यों कर होगी जबकि उनके पास एक बयान करने वाला रसूल आ गया।

(14) फ़िर उन्होंने उससे मुँह मोड़ लिया और (कुछ ने) कहाः यह तो सिखाया पढ़ाया है (और कुछ ने कहाः) दिवाना है।

(15) बेशक हम थोड़ी देर के लिए अज़ाब दूर करने वाले हैं, बिलाशुब्ह तुम दोबारा वही करने वाले हो।

(16) जिस दिन हम बड़ी सख्त पकड़ पकड़ेंगे, यक़ीनन हम इन्तिक़ाम (बदला) लेने वाले हैं।

(17) और अलबत्ता उनसे पहले हमने क़ौमे फ़िरऔन को आज़माया, और उनके पास एक बहुत बाइज्ज़त (सम्मानित) रसूल आया था।

(18) (उसने कहाः) कि अल्लाह के बन्दों (बनी इस्राईल) को मेरे हवाले कर दो, बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानत दार रसूल हूं।

(19) और यह कि तुम अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो, बिलाशुब्ह मैं तुम्हारे सामने वाज़ेह (खुल) दलील पेश करता हूं।

(20) और मैंने अपने रब और तुम्हारे रब की पनाह ली है उससे कि तुम मुझे संगसार कर दो।

(21) और अगर तुम मेरी बात पर ईमान

नहीं लाते तो तुम मुझ से अलग हो जाओ।

(22) फिर उसने अपने रब को पुकारा कि बिलाशुब्ह यह लोग तो मुजरिम हैं।

(23) (हुक्म हुआ कि) अब मेरे बन्दों को रात के वक़्त ले चल, यक़ीनन तुम्हारा पीछा किया जाएगा।

(24) और तू समंदर को रूका हुआ छोड़ जा, बिलाशुब्ह यह लोग (फ़िरऔन की ज़ाति) गर्क़ शुदा (डूब जाने वाले) लश्कर हैं।

(25) वह कितने ही बागात और चश्मे छोड़ गए।

(26) और खेतियां और शानदार महल।

(27) और ऐश (विलासिता) के सामान जिनमें वह मज़ा कर रहे थे।

(28) इसी तरह हुआ और हमने एक दूसरी क़ौम को उन (सब) का वारिस बना दिया।

(29) फ़िर उन पर आसमान और ज़मीन न रोये और न उन्हें मुहलत दी गई।

(30) और यक़ीनन हमने बनी इस्राईल को रूस्वा कुन (अपमान भरे) अज़ाब से निजात (मुक्ति) दी।

(31) (यानी) फ़िरऔन से, बिलाशुब्ह वह बड़ा ही सरकश (और) हद से गुज़रने वालों में से था।

(32) और बेशक हमने बनी इस्राईल को (अपने) इल्म की बिना पर जहाँनों पर तरजीह दी।

(33) और हमने उन्हें निशानियां दी थी जिनमें खुली आज़माईश थी।

(34) बिलाशुब्ह यह लोग तो बड़े ज़ोर से कहते हैं।

(35) हमें मरना तो बस पहली बार है और हमें दोबारा तो नहीं उठाया जाएगा।

(36) फ़िर अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादाओं को ले आओ।

(37) क्या यह लोग बेहतर हैं या क़ौमे तुब्बअ और वह लोग जो उनसे पहले हुए? हमने उन्हें हलाक कर दिया, बिलाशुब्ह वह मुजरिम थे।

(38) और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरम्यान है उसे खेलते हुए पैदा नहीं किया।

(39) हमने यह दोनों हक़ (एक मक़सद) ही के साथ पैदा किये हैं, लेकिन उनमें से अक्सर नहीं जानते।

(40) बिलाशुब्ह फैसले का दिन उन सब के लिए तय शुदा वक़्त है।

(41) उस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम नहीं आएगा, और न उनकी मदद ही की जाएगी।

(42) सिवाए उसके जिस पर अल्लाह ने रहम किया। बिलाशुब्ह वह निहायत ग़ालिब, खूब रहम करने वाला है।

(43) बेशक थूहड़ (ज़क़्क़ूम) का दरख़्त।

(44) गुनाहगार का खाना है।

(45) पिघले तांबे (या तलछट) के मानिन्द, वह पेट में खौलेगे।

(46) तैज़ गर्म पानी को खौलने की तरह।

(47) (हुक्म होगाः) उसे पकड़ो और घसीटते हुए जहन्नम के दरम्यान ले जाओ।

(48) फ़िर उसके सर पर तैज़ गर्म पानी का अज़ाब उन्डेलो।

(49) (मज़ा) चखो! बेशक तू बड़ा इज्ज़त वाला, सरदार बना फिरता था।

(50) बिलाशुब्ह वह (अज़ाब) है जिसमें तुम शक करते थे।

(51) बेशक मुत्तक़ीन (अल्लाह का डर रखने वाले) अमन चैन की जगह होंगे।

(52) बागात और चश्मों में।

(53) वह बारीक और मोटा रेशम पहनेंगें, आमने सामने बैठे होंगे।

(54) इसी तरह होगा। और हम ग़ज़ाला चश्म (बड़ी बड़ी आँखों वाली) हूरों को उनकी बीवियां बना देंगे।

(55) वहाँ वह इत्मिनान से हर क़िस्म का फल तलब करेंगे।

(56) वहाँ वह मौत (का मज़ा) न चखेंगे, सिवाए पहली मौत के और अल्लाह उन्हें दोज़ख के अज़ाब से बचा लेगा।

(57) (यह) आपके रब का फज़ल होगा। यही अज़ीम (बड़ी) कामयाबी है।

(58) बस (ऐ नबी!) हमने इस (कुरआन) को आपकी ज़बान में आसान कर दिया है ताकि वह नसीहत (उपदेश) पकड़ें।

(59) अब आप इन्तिज़ार कीजिए। बिलाशुब्ह वह भी मुन्तज़िर (इन्ज़िार कर रहे) हैं।

सूरह जासिया-45

(यह मक्की सूरत है इसमें 37 आयतें और 4 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) हा मीम्।

(2) इस किताब का नुजूल अल्लाह की तरफ से है जो बड़ा ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है।

(3) बिलाशुब्ह आसमानों और ज़मीन में मोमिनों के लिए वाक़ई निशानियां हैं।

(4) और तुम्हारी पैदाईश में, और जानवरों में जो वह फैलाता है, उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो यक़ीन रखते हैं।

(5) और रात और दिन के बदल बदल कर आने जाने में और उस रिज़्क़ (पानी) में जो अल्लाह ने आसमान से नाज़िल किया, फ़िर उसके ज़रिये से ज़मीन को, उसके मुर्दा हो जाने के बाद, ज़िन्दा किया और हवाओं के (रूख) बदलने में उन लोगों के लिए

निशानियां हैं जो अक़्ल रखते हैं।

(6) यह अल्लाह की आयतें हैं, हम आप पर हक़ के साथ उनकी तिलावत करते हैं, फ़िर अल्लाह और उसकी आयतों के बदले वह किस बात पर ईमान लाएँगे?

(7) हर सख़्त झूठे, गुनाहगार के लिए हलाकत (तबाही) है।

(8) जो अल्लाह की आयतें सुनता है जबकि वह उस पर तिलावत की जाती हैं, फ़िर वह घमंड करते हुए (अपनी बात पर) अड़ जाता है जैसे उसने सुना ही नहीं, तो (ऐ नबी!) आप उसे दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी दे दीजिए।

(9) और जब उसने हमारी कुछ आयतें जान लीं तो उन्हें मज़ाक़ बना लिया, यही लोग हैं जिनके लिए रूस्वाकुन (अपमानित करने वाला) अज़ाब है।

(10) उनके आगे जहन्नम है और जो कुछ उन्होंने कमाया है उनके कुछ भी काम न आएगा और न वह (देवता काम आएँगे) जिन्हें उन्होंने अल्लाह के सिवा कारसाज़ बना लिया, और उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।

(11) यह (कुरआन) तो हिदायत (मार्ग-दर्शन) है, और वह लोग जिन्होंने अपने रब की आयतों का इन्कार किया, उनके लिए सख़्त क़िस्म का दर्दनाक अज़ाब है।

(12) अल्लाह वही है जिसने समंदर को तुम्हारे ताबे कर (काम पर लगा) दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियां चलें और ताकि उसका फज़ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो।

(13) उसने अपनी तरफ से जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में हैं, सब तुम्हारे ताबे कर दिया। बेशक उसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो गौरो फिक्र करते हैं।

(14) (ऐ नबीं!) आप ईमान वालों से कह दीजिएः कि वह उन लोगों से दरगुज़र करें जो अल्लाह के अय्याम (गिरफ्त के दिनों) की उम्मीद नहीं रखते, ताकि अल्लाह कुछ लोगों को उन (आमालों) की सज़ा दे जो वह कमाते रहे।

(15) जिसने नेक आमाल किया तो उसका फायदा उसी को है, और जिसने बुरा किया तो उसका वबाल उसी पर है, फ़िर तुम अपने रब ही की तरफ लौटाए जाओगे।

(16) और यक़ीनन हमने बनी इस्राईल को किताब और हिकमत और नबूवत दी, और हमने उन्हें पाकिज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया, और हमने उन्हे जहानों पर फ़ज़ीलत दी।

(17) और हमने उन्हे दीन की बाबत वाज़ेह निशानियां दी, फ़िर उन्होंने अपने पास इल्म आ जाने के बाद ही महज़ आपस

की ज़िद से, इख़्तिलाफ बरपा किया। बेशक आपका रब क़यामत के रोज़ उनके दरम्यान उन बातों का फैसला करेगा जिनमें वह इख़्तिलाफ (मतभेद) करते रहे हैं।

(18) फ़िर हमने (ऐ नबी!) आपको दीन के (वाज़ेह) रास्ते पर लगा दिया, लिहाज़ा आप उसकी पैरवी करें और उन लोगों की ख़्वाहिशात (इच्छाओं) की पैरवी न करें जो इल्म नहीं रखते।

(19) बिलाशुब्ह वह अल्लाह (के अज़ाब) से आपके कुछ काम नहीं आएँगे। और बेशक ज़ालिम लोग एक दूसरे के दोस्त हैं और अल्लाह मुत्तक़ीन का दोस्त है।

(20) यह (कुरआन, इसमें) लोगों के लिए बसीरत अफरोज़ दलाईल हैं, और उन लोगों के लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) और रहमत है जो यक़ीन रखते हैं।

(21) क्या जिन लोगों ने बुरे काम किये, वह यह ख़्याल करते हैं कि हम उन्हें उन लोगों के मानिन्द कर देंगे जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये उनका जीना और मरना बराबर है। बुरा है जो वह फैसला करत है।

(22) और अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया, ताकि हर शख़्स उसके आमाल की ठीक ठीक जज़ा (बदला) दी जाए, और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा।

(23) क्या फ़िर आपने उसे देखा जिसने अपनी ख़्वाहिशे नफ्स (मनोकांक्षा) को अपना मअ़बूद बना लिया? और अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया जबकि उसे (हक़ का) इल्म था और उसके कानों और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँखों पर परदा डाल दिया, फ़िर कौन है जो अल्लाह के बाद उसे हिदायत (मार्ग-दर्शन) दे? क्या फ़िर तुम नसीहत (उपदेश) नहीं पकड़ते?

(24) और उन्होंने कहाः बस यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते और जिन्दा होते हैं, और हमे बस ज़माना ही हलाक करता है। और उन्हें उसका कोई इल्म नहीं, वह तो बस गुमान करते हैं।

(25) और जब उन पर हमारी आयतें तिलावत की जाती है जो वाज़ेह होती हैं तो उनकी दलील बस यही होती है कि वह कहते हैंः अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादाओं को लाओ।

(26) (ऐ नबी!) आप कह दीजिएः अल्लाह ही तुम्हें ज़िन्दा करता है, फ़िर वही तुम्हें मारता है, फ़िर वही तुम्हें रोज़े क़यामत जमा करेगा जिसमें कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

(27) और अल्लाह ही के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, और जिस दिन

क़यामत बरपा होगी उस दिन बातिल परस्त खसारे (नुक्सान) में रहेंगे।

(28) और आप हर उम्मत घुटनो के बल (गिरी) देखेंगे, हर उम्मत अपने नामाऐ आमाल (कर्मपत्र) की तरफ बुलाई जाएगी (उन्हें कहा जाएगाः) आज तुम्हें उन आमाल का बदला दिया जाएगा जो तुम करते रहे थे।

(29) (कहा जाएगाः) यह हमारी किताब है, यह तुम्हारे बारे में सच सच बोलती है। बिलाशुब्ह हम लिखवाते थे जो तुम अमल करते रहे थे।

(30) लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, तो अल्लाह उन्हें अपनी रहमत (जन्नत) में दाख़िल करेगा। यही वाज़ेह कामयाबी है।

(31) लेकिन जिन लोगों ने कुफ्र किया (उनसे कहा जाएगाः) क्या फ़िर तुम पर मेरी आयतें तिलावत नहीं की जाती थी? तो तुमने घमंड किया, और तुम मुजरिम लोग थे।

(32) और जब (तुमसे) कहा जाता कि बिलाशुब्ह अल्लाह का वादा सच्चा है, और क़यामत (के आने) में कोई शक नहीं तो तुम कहते थेः हम नहीं जानते क़यामत क्या है? हमें (क़यामत का) यूंही ख्याल सा आता है, और हम (उस पर) यक़ीन नहीं कर सकते।

(33) और उनके सामने उनके आमाल की बुराइयां ज़ाहिर हो जाएँगीः और उन्हें वह अज़ाब घेर लेगा जिसका वह मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

(34) और (उनसे) कहा जाएगाः आज हम तुम्हें भूल जाएँगे जैसे तुम अपने इस दिन की मुलाक़ात को भूल गए थे, और तुम्हारा ठिकाना आग है, और तुम्हारा मददगार कोई नहीं।

(35) यह इसलिए कि बेशक तुमने अल्लाह की आयतों की हंसी उड़ाई, और तुम्हें दुनियवी ज़िन्दगी ने धोखे में डाल दिया, लिहाज़ा आज वह उस (आग) से नहीं निकाले जाएँगे, और न उनसे अल्लाह को राज़ी करने का मुतालबा ही किया जाएगा।

(36) इसलिए तमाम तअरीफे अल्लाह की के लिए है जो आसमानों का रब है, और ज़मीन का रब है, रब्बुलआलमीन है।

(37) और आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए बड़ाई है, और वही निहायत ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

सूरह अहक़ाफ़-46

(यह मक्की सूरत है इसमें 35 आयतें और 4 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) हा मीम।

(2) (इस) किताब का नुज़ूल अल्लाह

ग़ालिब, हिकमत वाले की तरफ से है।

(3) हमने आसमानों और ज़मीन को और (उसको) जो कुछ उन दोनों के दर्मियान है, सरासर बरहक़ और मुक़र्ररा मुद्दत (निश्चित समय) के लिए पैदा किया है। और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह उन चीज़ों से मुँह मोड़े हुए हैं जिनसे उन्हें डराया गया है।

(4) आप कह दीजिएः भला बताओ तो! जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में से क्या चीज़ पैदा की? या आसमान में कोई हिस्सा है? अगर तुम सच्चे हो इस (कुरआन) से पहले की (नाज़िल शुदा) कोई किताब या इल्मी रिवायत मेरे पास लाओ।

(5) और उससे ज़्यादा गुमराह कौन शख़्स है जो अल्लाह के सिवा उसको पुकारते है जो उसे क़यामत तक जवाब नहीं दे सकता? जबकि वह उनकी पुकार ही से ग़ाफिल हैं।

(6) और जब लोग इकट्ठे किये जाएँगे तो वह (झूठे मअ़बूद) उनके दुश्मन होंगे और वह उनकी इबादत के इन्कारी होंगे।

(7) और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात तिलावत की जाती हैं तो काफिर लोग, इस हक़ (कुरआन) के बारे में जब वह उनके पास आ चुका, कहते हैंः यह तो खुला जादू है।

(8) बल्कि वह कहते हैंः उसने यह खुद गढ़ लिया है। आप कह दीजिएः अगर मैंने यह खुद गढ़ है तो तुम मुझे अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने का कोई इख्तियार नहीं रखते। वह उन बातों को खूब जानता है जो तुम इस (कुरआन) के बारे में बनाते हो। वह मेरे और तुम्हारे दरम्यान (बतौर) गवाह काफी है, और वह निहायत बख़्शने वाला, खूब रहम करने वाला है।

(9) कह दीजिएः मैं रसूलों से अनोखा नहीं, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा? मैं तो बस उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ वह्यी की जाती है और मैं तो फक़त साफ डराने वाला हूँ।

(10) कह दीजिएः भला बताओ तो! अगर यह (कुरआन) अल्लाह ही की तरफ से हो और तुमने उसका इन्कार कर दिया (तो तुम्हारा अन्जाम क्या होगा?) और बनी इस्राईल का एक गवाह उस जैसी (किताब उतारने) की गवाही दे चुका, फ़िर वह ईमान ले आया और तुमने घमंड किया, बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता।

(11) और कुफ़्र करने वालों ने ईमान लाने वालों से कहाः अगर वह (दीन) बेहतर होता तो वह (आम लोग) इस (को क़बूल करने) में हमसे पहल न करते, और जब उन्होंने इस (कुरआन) के ज़रिये से हिदायत न पाई तो

अब वह ज़रूर कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है।

(12) और इस (कुरआन) से पहले मूसा की किताब पैशवा और रहमत थी, और यह (कुरआन) अरबी ज़बान में तस्दीक़ करने वाली किताब है ताकि वह उन लोगों को डराये जिन्होने जुल्म किया और नेकी करने वालों के लिए खुशखबरी है।

(13) बेशक जिन लोगों ने कहाः हमारा रब अल्लाह है फ़िर वह (उस पर) क़ायम रहे तो उन पर न कोई ख़ौफ है और न वह ग़मग़ीन होंगे।

(14) यही लोग जन्नती है, वह उसमें हमेशा रहेंगे। (यह) उन आमाल की जज़ा (बदला) है जो वह किया करते थे।

(15) और हमने इन्सान को उसके वाल्दैन के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया, उसकी माँ ने उसे तकलीफ से पेट में उठाए रखा और तकलीफ से जना और उसका हमल और दुध छुड़ाना तीस माह (की मुद्दत) है यहाँ तक, कि जब वह अपनी कमाल जवानी को पहुँचा और चालीस बरस का हो गया तो उसने दुआ कीः ऐ मेरे रब! तु मुझे तौफिक़ दे कि मैं तेरी उस नेअमत का शुक्र करूं जो तूने मुझ पर और मेरे वाल्दैन पर की और यह कि मैं नेक अमल करूं जो तू पसन्द करे और तू मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाह कर, बिलाशुब्ह मैंने तेरी तरफ तौबा की और बिलाशुब्ह मैं मुसलमानों में से हूँ।

(16) यह वह लोग हैं जिनसे हम अच्छे अमल क़बूल करते हैं जो उन्होंने किये और उनकी बुराइयों से हम दरगुज़र करते हैं (तो यह) जन्नतों में होंगे। (यह) सच्चा वादा है जो उनसे किया जाता रहा है।

(17) और जिसने अपने वाल्दैन से कहाः तुम दोनो पर ऊफ (अफसोस) है, क्या तुम दोनों मुझे वादा देते हो कि मुझे (क़ब्र से) निकाला जाएगा, हालांकि मुझसे पहले बहुत सी उम्मते गुज़र चुकी हैं जबकि वह दोनों अल्लाह से फरियाद करते (और कहते) हैंः तू हलाक हो जाए! ईमान ले आ, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तब वह कहता हैः यह तो बस अगले लोगों की कहानियां हैं।

(18) यह वह लोग हैं जिन पर (अल्लाह के अज़ाब की) बात साबित हो गई, जिन्नों और इन्सानों के उन गिरहों के साथ जो उनसे पहले गुज़रे हैं, बेशक वह नुक्सान पाने वाले थे।

(19) और हर एक के लिए उसके आमाल के मुताबिक़ दर्जे हैं ताकि वह (अल्लाह) उन्हें उनके आमाल का पूरा बदला दे और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा।

(20) और जिस दिन अहले कुफ़्र को आग के सामने पेश किया जाएगा (तो कह जाएगाः)

तुमने दुनियावी ज़िन्दगी ही में अपनी लज़्ज़तों का (पूरा) हिस्सा ले लिया और तुमने उनसे फायदा उठा लिया, इसलिए आज तुम्हें ज़िल्लत के अज़ाब की सज़ा दी जाएगी, इसलिए कि तुम ज़मीन में नाहक़ घमंड करते रहे और इसलिए कि तुम नाफरमानी करते रहे।

(21) और आद के भाई (हूद) को याद कीजिए, जब उसने अहक़ाफ (यमन) में अपनी क़ौम को डराया और यक़ीनन उससे पहले भी कई डराने वाले गुज़र चुके और उसके बाद भी तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, बिलाशुब्ह मैं तुम पर एक अज़ीम दिन के अज़ाब से डराता हूँ।

(22) उन्होंने कहाः क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि तू हमें हमारे मअबूदों (की परस्तिश) से फ़ेर दे? इसलिए अगर तू सच्चों में से है तो हमारे पास वह (अज़ाब) ले आ जिसका तू हमें वादा देता है।

(23) (हूद ने) कहाः बस (इसका) इल्म तो अल्लाह ही के पास है और मैं तुम्हें वह चीज़ पहुँचा रहा हूँ जिसके साथ मुझे भेजा गया, लेकिन मैं तुम्हें ऐसे लोग देखता हूँ कि तुम जहालत करते हो।

(24) फ़िर जब उन्होंने उस (अज़ाब) को देखा कि उनकी वादियों के सामने एक बादल चला आ रहा है (तो) वह कहने लगेः यह बादल हम पर बारिश बरसाने वाला है (हूद ने कहाः नहीं!) बल्कि यह तो अज़ाब है जिसे तुम जल्दी तलब करते थे। (यह) आंधी है, उसमें निहायत दर्दनाक अज़ाब है।

(25) वह अपने रब के हुक्म से हर चीज़ को तबाह कर देगी, फ़िर वह ऐसे हो गए कि उन घरों के सिवा वहाँ कुछ भी दिखाई न देता था, हम मुजरिमों को इसी तरह सज़ा देते हैं।

(26) और यक़ीनन हमने क़ौमे आद को उस चीज़ की कुदरत दी थी जिसकी तुम्हें कुदरत नहीं दी और हमने उन्हें कान और आँखें और दिल दिये थे तो उनके कानों और उनकी आँखों और उनके दिलों ने उन्हें कोई फायदा न दिया जबकि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते रहे और उन्हें उस (अज़ाब) ने घेर लिया जिसका वह मज़ाक़ उड़ाते थे।

(27) और यक़ीनन हमने तुम्हारे पास की बस्तियां हलाक कर दीं और हमने आयतें फ़ेर फ़ेर कर बयान कीं ताकि वह (हमारी तरफ) रूजू करें।

(28) फ़िर उन लोगों ने उनकी मदद क्यों न की जिन्हें उन्होंने कुरबे इलाही (अल्लाह की निकटता) हासिल करने के लिए अल्लाह को छोड़ कर मअ़बूद बना रखा था, बल्कि वह (मअ़बूद) उनसे गुम हो गए और यह था

उनका झूठ और उनका इफ्तिरा।

(29) और (याद कीजिए) जब हमने जिन्नों की एक जमाअत को आपकी तरफ मुतवज्जा किया जबकि वह कुरआन सुनते थे, फ़िर जब वह उस (की तिलावत सुनने) को हाज़िर हुए, तो (एक दूसरे से) कहाः खामोश रहो, इसलिए जब (तिलावत) खत्म हो गई तो वह अपनी क़ौम की तरफ डराने वाले बन कर लोटे।

(30) उन्होंने कहाः ऐ हमारी क़ौम! बेशक हमने एक किताब सुनी जो मूसा के बाद नाज़िल की गई है, वह उन किताबों की तस्दीक़ करती है जो उससे पहले की हैं, वह हक़ की तरफ और सिराते मुस्तक़ीम की तरफ रहनुमाई करती है।

(31) ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह के दाई (अल्लाह की तरफ दावत देने वाले) की बात को क़बूल कर लो और उस पर ईमान ले आओ, वह तुम्हारे लिए तुम्हारे (कुछ) गुनाह बख्श (क्षमा कर) देगा और वह तुम्हें निहायत दर्दनाक अज़ाब से पनाह देगा।

(32) और जो कोई अल्लाह के दाई की बात को क़बूल नहीं करेगा तो वह ज़मीन में (अल्लाह को) आजिज़ (मजबूर) नहीं कर सकेगा और अल्लाह के सिवा उसका कोई हिमायती नहीं होगा, यही लोग खुली गुमराही में हैं।

(33) क्या उन्होंने देखा (व जाना) नहीं कि बेशक अल्लाह, जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और वह उनके पैदा करने से थका नहीं, उस पर क़ादिर है कि मुर्दों को ज़िन्दा करे? क्यों नहीं! बिलाशुब्ह वह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(34) और जिस दिन अहले कुफ्र आग के सामने पेश किये जाएँगे (तो उनसे कहा जाएगाः) क्या यह (दोज़ख) हक़ नहीं है? तो वह कहेंगेः क्यों नहीं हमारे रब की क़सम! (यह हक़ है) अल्लाह फरमाएगाः अब तुम अपने कुफ्र की वजह से अज़ाब (के मज़े) चखो।

(35) तो (ऐ नबी!) आप सब्र करें जिस तरह अज़्म व हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया, और उनके लिए जल्दी (अज़ाब) तलब न करें, जैसे कि वह (काफिर) जिस दिन उस (अज़ाब) को देखेंगे, जिसका उनसे वादा किया जाता है, (तो समझेंगे कि) वह तो (दुनिया में) दिन की बस एक घड़ी ही ठहरे। यह (तो पैगाम) पहुँचा देना है, इसलिए नाफरमान लोगों के सिवा कोई हलाक नहीं किया जाएगा।

सूरह मुहम्मद-47

(यह मदनी सूरत है इसमें 38 आयतें और 4 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) जिन लोगों ने कुफ्र किया और (दूसरों को) अल्लाह की राह से रोका, अल्लाह ने उनके अमल ज़ाया (बरबाद) कर दिए।

(2) और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, और वह उस (कुरआन) पर भी ईमान लाए जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर नाज़िल किया गया, और वह उनके रब की तरफ से हक़ है, अल्लाह ने उनसे उनकी बुराईयां दूर कर दीं और उनके हाल की इस्लाह कर दी।

(3) यह इसलिए कि बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया उन्होंने बातिल की पैरवी की, और बिलाशुब्ह जो लोग ईमान लाए उन्होंने अपने रब की तरफ से हक़ की पैरवी की, अल्लाह इसी तरह लोगों के लिए उनकी मिसालें बयान करता है।

(4) इसलिए जब तुम (जिहाद में) उन लोगों से मिलो जिन्होंने कुफ्र किया तो (उनकी) गर्दनें उड़ाओ, यहाँ तक कि जब तुम उन्हें खूब क़त्ल कर चुको तो (क़ैदियों को) बेड़ियों में मज़बूती से बान्ध दो फ़िर या तो उसके बाद उन पर अहसान करना है या फिदया लेना है यहाँ तक कि लड़ाई अपने हथियार डाल दे, (हुक्म) यही है, और अगर अल्लाह चाहता (तो खुद ही) उनसे बदला ले लेता लेकिन (उसने तुम्हे हुक्म दिया है) ताकि वह तुम्हें एक दूसरे से आज़माए और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल (शहीद) किये गए, तो अल्लाह उनके आमाल हरगिज़ ज़ाया (बरबाद) नहीं करेगा।

(5) वह जल्द उनकी रहनुमाइ करेगा और उनके हाल की इस्लाह करेगा।

(6) और वह उन्हें (उस) जन्नत में दाख़िल करेगा जिसकी उनको खूब पहचान करवा चुका है।

(7) ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह (के दीन) की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम साबित रखेगा।

(8) और जिन लोगों ने कुफ्र किया, उनके लिए हलाकत है और अल्लाह उनके आमाल ज़ाया (अकारथ) कर देगा।

(9) यह इसलिए कि बेशक उन्होंने उस चीज़ को नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल की, फ़िर उसने भी उनके (नेक) आमाल ज़ाया (नष्ट) कर दिए।

(10) क्या फ़िर उन्होंने ज़मीन में सैर नहीं की तो वह देखते उन लोगों का अन्जाम कैसा हुआ जो उनसे पहले थे? अल्लाह उन पर तबाही डाल दी और काफिरों के लिए ऐसी ही सज़ा हैं।

(11) यह इसलिए कि बेशक अल्लाह उन लोगों का मददगार है जो ईमान लाए और

बेशक (जो) काफिर हैं उनका कोई मददगार नहीं।

(12) बिलाशुब्ह जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, अल्लाह उन्हें ऐसे बागात में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं और जिन लोगों ने कुफ्र किया वह (दुनिया का) फायदा उठाते हैं और वह यूं (बेफिक्र हो कर) खाते हैं जैसे चौपाए खाते हैं और आग ही उनका ठिकाना है।

(13) और कितनी ही बस्तियां कि वह आपकी इस बस्ती (मक्का) से जिस (के बाशिन्दों) ने आपको निकाल दिया है, कहीं ज़्यादा ताक़तवर थी, हम ने उन्हें हलाक कर दिया फ़िर कोई भी उनकी मदद करने वाला न था।

(14) क्या फ़िर वह शख़्स जो अपने रब की तरफ से वाज़ेह दलील पर हो, उस शख़्स की मानिन्द (जैसा) हो सकता है जिसके लिए उसकी बदअमली पुरकशिश बना दी गई और उन्होंने अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी की?

(15) उस जन्नत की सिफत (गुण) जिसका मुत्तक़ीन से वादा किया गया है यह है कि उसमें (ऐसे) पानी की नहरें हैं जो बदलने वाला नहीं और ऐसे दूध की नहरें हैं जिसका ज़ायक़ा (कभी) बदलने वाला न होगा और ऐसी शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिए लज़ीज़ है और साफ शफ्फाफ शहद की नहरें हैं, और वहाँ उन (मुत्तक़ीन) के लिए हर तरह के फल होंगे और उनके रब की तरफ से मग्फिरत होगी। (क्या यह लोग) उन लोगों के मानिन्द हो सकते हैं जो आग में हमेशा रहने वाले हैं और उन्हें सख़्त गर्म खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, तो वह उनकी आंतें टुकड़े टुकड़े कर देगा?

(16) और उन (मुनाफिक़ीन) में से कुछ वह हैं जो आपकी तरफ कान लगाते हैं यहाँ तक कि जब वह आपके पास से जाते हैं तो उन लोगों से जिन्हें इल्म दिया गया है, कहते हैंः इस (नबी) ने अभी क्या कहा था? यही लोग है जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और उन्होंने अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी की।

(17) और जिन लोगों ने हिदायत (मार्ग-दर्शन) पाई है, अल्लाह ने उन्हें हिदायत में ज़्यादा किया, और उन्हें उनका तक़्वा अता फरमाया।

(18) इसलिए यह लोग तो बस क़यामत ही के मुन्तज़िर (इन्तिज़ार में) हैं कि वह उनके पास अचानक आ जाए, यक़ीनन उसकी निशानियां आ चुकी हैं, तो जब क़यामत उनके पास आ पहुँचेगी तो उनके लिए कहाँ होगा नसीहत (उपदेश) हासिल करना?

(19) पस (ऐ नबीं!) आप जान लीजिए कि बिलाशुब्ह अल्लाह के सिवा कोई सच्चा मअ़बूद नहीं और अपने गुनाह की बख़्शिश मांगे और मोमिन मर्दों और औरतों के लिए भी और अल्लाह तुम्हारे चलने फिरने और बसर करने को जानता है।

(20) और जो लोग ईमान लाए वह कहते हैं: (जिहाद के बारे में) कोई सूरत क्यों नहीं नाज़िल की गई? फ़िर जब कोई मुहकम सूरत नाज़िल की जाती है और उसमें क़िताल (जिहाद) का ज़िक्र किया जाता है तो आप उन लोगों के देखते हैं जिनके दिलों में रोग है कि वह आपकी तरफ उस शख़्स की तरह नज़रें डालते हैं जिस पर मौत की वजह से गशी तारी हो, इसलिए उनके लिए हलाकत है।

(21) इताअत करना और भली बात कहना (बेहतर है) फ़िर जब (जिहाद का) कतई फैसला हो जाता है कि अगर वह अल्लाह से सच्चे रहें तो यह उनके लिए बेहतर है।

(22) फ़िर (ऐ मुनाफिक़ों) तुमसे यही उम्मीद है कि अगर तुम हुक्मरान (राजा) बन जाओ तो तुम ज़मीन में फसाद करो और अपने रिश्ते नाते तोड़ डालो।

(23) यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लअनत की है फ़िर उसने उन्हें बहरा बना दिया और उनकी आँखें अन्धी कर दें।

(24) क्या फ़िर वह लोग क़ुरआन में गौरो फ़िक्र नहीं करते या उनके दिलों पर ताले लगे हुए हैं?

(25) बेशक जो लोग अपनी पीठ पीछे पलट गए उसके बाद कि उन पर हिदायत (मार्ग- दर्शन) ज़ाहिर हो गई, शैतान ने उनके लिए (उनके अमल) पुरकशिश बना दिए और (अल्लाह ने) उन्हें ढील दे दी।

(26) यह इसलिए कि बेशक उन्होंने उन लोगों (यहूद) से, जिन्होंने इस चीज़ (क़ुरआन) को नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल की, कहा कि कुछ ऊमूर (कामों) में हम आपकी बात मानेंगे और अल्लाह उनके राज़ जानता है।

(27) फ़िर क्या हाल होगा जब फरिश्ते उनकी रूहें क़ब्ज़ करेंगे जबकि वह उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते होंगे?

(28) यह (मार) इसलिए कि बेशक उन्होंने उस चीज़ की पैरवी की जिसने अल्लाह को नाराज़ कर दिया और उन्होंने अल्लाह की रज़ामन्दी नापसंद की, लिहाज़ा अल्लाह ने उनके आमाल बरबाद कर दिए।

(29) क्या उन लोगों ने जिनके दिलों में रोग है, यह समझ रखा है कि अल्लाह उनके कीने (कपट) हरगिज़ ज़ाहिर नहीं करेगा?

(30) और अगर हम चाहते तो यक़ीनन आपको वह (मुनाफिक़) दिखा देते, फ़िर आप

उन्हें उनके चेहरों की अलामतों से ज़रूर पहचान लेते और यक़ीनन आप उन्हें गुफ़्तुगू (बातचीत) के लहजे (ढंग) से पहचान लेंगे, और अल्लाह तुम्हारे आमाल जानता है।

(31) और हम तुम्हें ज़रूर आज़माएँगे यहाँ तक कि तुम में से मुजाहिदीन को और सब्र करने वालों को मालूम कर लें और हम तुम्हारे हालात जाँच लें।

(32) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (दूसरों को) अल्लाह की राह से रोका और उन पर हिदायत वाज़ेह हो जाने के बाद रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की मुख़ालफ़त की वह अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे और अनक़रीब वह उनके आमाल बरबाद कर देगा।

(33) ऐ ईमान वालों! तुम अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो और अपने अमालों को बातिल न करो।

(34) बिलाशुब्ह जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (दूसरों को) अल्लाह की राह से रोका, फ़िर वह उसी हालते कुफ़्र में मर गए तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ नहीं बख़्शेगा।

(35) इसलिए तुम सुस्ती न करो और तुम सुलह की तरफ न बुलाओ जबकि तुम ही ग़ालिब हो और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह तुम्हारे आमलों (के सवाब) को हरगिज़ कम नहीं करेगा।

(36) बस दुनियावी ज़िन्दगी तो महज़ एक खेल और तमाशा है, और अगर तुम ईमान लाओ और तक़्वा इख़्तियार करो (तो) अल्लाह तुम्हें तुम्हारे अज्र (बदला) देगा, और वह तुमसे तुम्हारे (तमाम) माल नहीं मांगेगा।

(37) अगर अल्लाह तुमसे उस (तमाम माल) का सवाल करे, फ़िर वह (उस पर) इसरार करे, तो तुम बुख़्ल (कंजूसी) करोगे, और वह तुम्हारे कीने (छल-कपट) निकाल बाहर करेगा।

(38) सुनो! तुम तो वह लोग हो कि तुम्हें दअवत दी जाती है कि तुम अल्लाह की राह में खर्च करो, फ़िर तुममें से कुछ वह हैं जो बुख़्ल करते हैं, और जो बुख़्ल (कंजूसी) करता है तो बस वह अपने आप ही से बुख़्ल करता है, और अल्लाह बेनियाज़ है और तुम मुहताज हो, और अगर तुम मुँह मोड़ोगे तो अल्लाह तुम्हारे सिवा दूसरे लोग बदल लाएगा, फ़िर वह तुम जैसे (नाफरमान) न होंगे।

सूरह फतह-48

(यह मदनी सूरत है इसमें 29 आयतें और 4 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) बिलाशुब्ह हमने आपको

फतह मुबीन (खुली विजय) दी।

(2) ताकि अल्लाह आपके लिए आपकी अगली पिछली हर गलती माफ कर दे और आप पर अपनी नेअमत पूरी करे, और आपको सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत (मार्ग-दर्शन) दे।

(3) और (ताकि) अल्लाह आपकी बड़ी ज़बरदस्त मदद करे।

(4) वही है जिसने मोमिनों के दिलों में तस्कीन नाज़िल की ताकि उनके ईमान में और (मज़ीद) ईमान का इज़ाफा हो? और आसमानों और ज़मीन के (सब) लश्कर अल्लाह ही के हैं, अल्लाह खूब जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(5) (यह सब इसलिए किया) ताकि वह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे बागात में दाख़िल करे जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उनमें हमेशा रहेंगे, और (ताकि) उनसे उनकी बुराईयां दूर कर दे, और अल्लाह के यहाँ बहुत बड़ी कामयाबी है।

(6) और (ताकि) मुनाफिक़ मर्दों और मुनाफिक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को अज़ाब दे जो अल्लाह के बारे में बुरे गुमान रखते हैं, बुरी गर्दिश उन्हीं पर है और अल्लाह उन पर नाराज़ हुआ और उसने उन पर लअनत की और उसने उनके लिए जहन्नम तैयार कर रखी है और वह लौटने की बुरी जगह है।

(7) और आसमानों और ज़मीन के (सब) लश्कर अल्लाह ही के लिए हैं और अल्लाह निहायत ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(8) (ऐ नबी!) बिलाशुब्ह हमने आपको गवाही देने वाला और बशारत (ख़ुशखबरी) देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है।

(9) ताकि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और तुम उसकी मदद करो और उसका अदब करो और तुम सुबह और शाम (अल्लाह) की पाकी बयान करो।

(10) बिलाशुब्ह जो लोग आपसे बेअत करते हैं वह तो बस अल्लाह से बेअत करते हैं, अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है, फ़िर जिसने अहद शिकनी (वादा खिलाफी) की तो बस वह अपनी ज़ात ही के खिलाफ अहद शिकनी करता है और जिसने (वह) अहद पूरा किया जो उसने अल्लाह से बान्धा था तो अनक़रीब वह उसे अज्र अज़ीम देगा।

(11) देहातियों में से पीछे छोड़े जाने वाले लोग आपसे ज़रूर कहेंगेः हमारे मालों और हमारे घरवालों ने हमें मशगूल (व्यस्त) कर दिया था, लिहाज़ा आप हमारे लिए मग्फिरत तलब करें, वह अपनी ज़बानों से वह (बात) कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है, आप कह दीजिएः फ़िर कौन तुम्हारे लिए अल्लाह से किसी शै का इख्तियार रखता है अगर वह

तुम्हें कोई नुक्सान पहुँचाना चाहे या कोई नफा देना चाहे? (कोई भी नहीं) बल्कि अल्लाह उससे खूब बाखबर है जो अमल तुम करते हो।

(12) बल्कि तुमने गुमान किया था कि रसूल और मोमिनीन अपने घरवालों के पास हरगिज़ नहीं लोटेंगे और यह बात तुम्हारे दिलों में पुरकशिश बना दी गई थी और तुमने गुमान किया था और तुम लोग हो भी हलाक होने वाले।

(13) और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान नहीं लाया तो बिलशुब्ह हमने ऐसे काफिरों के लिए खूब खड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।

(14) और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है। वह जिसे चाहे माफ करे और जिसे चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह गफूरुर्रहीम है।

(15) अनक़रीब जब तुम माले ग़नीमत हासिल करने के लिए (खैबर को) चलोगे तो पीछे छोड़े जाने वाले लोग कहेंगेः हमें इजाज़त दीजिए हम भी तुम्हारे साथ चलते हैं, वह चाहते हैं कि अल्लाह का कलाम (वादा) बदल दें, कह दीजिएः तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चलोगे, अल्लाह ने पहले ही से यह फरमा दिया है। फ़िर वह यक़ीनन कहेंगेः (नहीं) बल्कि तुम हम से हसद करते हो, (ऐसा नहीं) बल्कि वह लोग कम ही समझते हैं।

(16) आप उन पीछे छूट जाने वाले देहतियों से कह दीजिएः अनक़रीब तुम एक सख़्त जंगजू क़ौम की तरफ बुलाए जाओगे, तुम उनसे लड़ोगे या वह मुसलमान हो जाएँगे। फ़िर अगर तुम इताअत करोगे तो अल्लाह तुम्हें नेक अज्र देगा, और अगर तुम मुँह मोड़ोगे जैसा कि इससे पहले तुमने मुँह मोड़ा तो वह तुम्हें निहायत दर्दनाक अज़ाब देगा।

(17) (जिहाद से पीछे रहने में) अन्धे पर कोई गुनाह नहीं और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न मरीज़ पर कोई गुनाह है और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करे, अल्लाह उसे ऐसे बागात में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं और जो शख़्स (हक़) से मुँह मोड़े तो वह उसे निहायत दर्दनाक अज़ाब देगा।

(18) यक़ीनन अल्लाह मोमिनों से राज़ी हो गया जब वह दरख़्त के नीचे आपसे बैअत कर रहे थे इसलिए उनके दिलों में जो (खुलूस) था, वह उसने जान लिया तो उसने उन पर तस्कीन नाज़िल की और बदले में उन्हें क़रीब की फतह दी।

(19) और बहुत से माले ग़नीमत भी (अता कर दिए) जो वह हासिल करेंगे। और अल्लाह निहायत ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(20) और अल्लाह ने तुमसे बहुत से माले

ग़नीमत का वादा फरमाया है कि तुम उन्हें हासिल करोगे, इसलिए उसने जल्द ही वह तुम्हें अता कर दिए, और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए, ताकि यह मोमिनों के लिए एक निशानी हो जाए, और ताकि वह तुम्हें सिराते मुस्तक़ीम की हिदायत दे।

(21) और (अल्लाह ने) दूसरी गनीमतों का भी (वादा किया) जिन पर तुम कुदरत नहीं रखते थे (मगर) अल्लाह ने उनको काबू में रखा है, और अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(22) और अगर वह लोग, जिन्होंने कुफ्र किया, तुमसे लड़ते तो यक़ीनन वह पीठ फेर जाते, फिर वह कोई दोस्त और कोई मददगार न पाते।

(23) यह अल्लाह का तरीक़ा है जो पहले से चला आ रहा है, और आप अल्लाह के तरीक़े में हरगिज़ तब्दीली नहीं पाएंगे।

(24) और वह (अल्लाह) ही तो है जिसने वादी-ए-मक्का में उन (कुफ्फार) के हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए बाद उसके कि उसने तुम्हें कामयाबी दी थी, और अल्लाह उसे खूब देख रहा है जो तुम अमल करते हो।

(25) यह वही लोग है जिन्होंने कुफ्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका, और कुरबानी के जानवरों को भी अपनी कुरबानी गाह तक पहुँचाने से रोके रखा, और अगर (मक्का में कुछ) मोमिन मर्द और मोमिन औरतें न होतें जिन (के ईमान) को तुम नहीं जानते, (अगर यह खतरा न होता) कि तुम उन्हें रोन्द डालोगे, फिर बेखबरी में उन (के क़त्ल) की वजह से तुम्हें तकलीफ पहुँचती (तो तुम्हें लड़ने की इजाज़त दे दी जाती लेकिन ऐसा नहीं किया गया) ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करे। अगर वह (मोमिन और काफिर) अलग अलग होते तो उनमें जो काफिर थे, हम उन्हें निहायत दर्दनाक अज़ाब देते।

(26) जिन लोगों ने कुफ्र किया जब उन्होंने अपने दिलों में ज़िद पैदा कर ली, जाहलियत की ज़िद, तो अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनों पर तस्कीन नाज़िल की और उनको तक़्वा की बात पर साबित क़दम रखा और वह उसके ज़्यादा मुस्तहक़ और अहल थे। और अल्लाह हर शै को खूब जानता है।

(27) यक़ीनन अल्लाह ने अपने रसूल को ख्वाब में हक़ के साथ सच्ची खबर दी कि अगर अल्लाह ने चाहा तो अपने सर मुंडाते और बाल कतरवाते हुए मस्जिदे हराम में ज़रूर दाख़िल होगें, (किसी से) न डरते होगें, इसलिए कि अल्लाह वह बात जानता था जो तुम नहीं जानते थे, लिहाज़ा उसने उससे पहले एक फतह जल्द ही अता कर दी।

(28) और वह (अल्लाह) ही तो है जिसने अपना रसूल हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि वह उसे सब दीनों पर ग़ालिब कर दे और अल्लाह बतौर गवाह काफी है।

(29) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग आपके साथ हैं, वह काफिरों पर सख़्त हैं, आपस में निहायत मेहरबान हैं, आप उन्हें रूकू व सुजूद करते देखोंगे, वह अल्लाह का फ़ज़ल और (उसकी) रज़मन्दी तलाश करते हैं, उनकी खुसूसी पहचान उनके चेहरों में सज्दों का निशान है, उनकी यह सिफत तौरात में है और इंजील में उनकी सिफत उस खेती की मानिन्द है जिसने अपनी कोपल निकाली फ़िर उसे मज़बूत किया और वह (पौधा) मोटा हो गया, फ़िर अपने तने पर सीधा खड़ा हो गया, किसानों को खुश करता है, (अल्लाह ने यह इसलिए किया) ताकि उन (सहाबा किराम) की वजह से कुफ्फार को खूब जलाए, अल्लाह ने उन लोगों से जो उनमें से ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, मग्फिरत और अज्रे अज़ीम का वादा किया है।

सूरह हुजरात-49

(यह मदनी सूरत है इसमें 18 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और तुम अल्लाह से डरो, बिलाशुब्ह अल्लाह खूब सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

(2) ऐ ईमान वालो! तुम अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से बुलंद न करो और आपसे ऊँची आवाज़ में बात न करो, जैसे तुम एक दूसरे से ऊँची आवाज़ में (बात) करते हो, कहीं तुम्हारे अमल बरबाद न हो जाएं और तुम्हें खबर तक न हो।

(3) बिलाशुब्ह जो लोग रसूलुल्लाह के पास अपनी आवाज़ नीची रखते हैं, यही लोग हैं जिनके दिल अल्लाह ने तक़्वे के लिए परख कर खालिस कर दिए। उनके लिए मग्फिरत और अज्रे अज़ीम है।

(4) बिलाशुब्ह जो लोग आपको हुजरों (कमरों) के बाहर से पुकारते हैं, उनमें से अक्सर बेअक़्ल हैं।

(5) और अगर बेशक वह सब्र करते यहाँ तक कि आप (खुद ही) उनकी तरफ निकलते, तो उनके लिए बहुत बेहतर होता, और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(6) ऐ ईमान वालो! अगर कोई फासिक़ तुम्हारे पास कोई खबर लाए तो तहक़ीक़ कर लिया करो (ताकि) तुम किसी क़ौम को

नादानी से तकलीफ (न) पहुँचाओ कि फ़िर तुम अपने किये पर पछताते फिरो।

(7) और जान लो! बिलाशुब्ह तुममें अल्लाह के रसूल हैं, अगर बहुत से मामलात में वह तुम्हारी इताअत करें (तो) यक़ीनन तुम मशक्क़त (संकट) में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह ने ईमान को तुम्हारा महबूब बना दिया है और उसने उसे तुम्हारे दिलों में ज़ीनत दे रखी है और उसने तुम्हारे लिए कुफ्र व फिस्क़ और नाफरमानी को नापसंद बना दिया है (और) यही लोग रूशदो हिदायत (मार्ग-दर्शन) वाले हैं।

(8) अल्लाह के फज़्ल और अहसान से और अल्लाह खूब जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(9) और अगर मोमिनों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो तुम उनके दरम्यान सुलह करा दो, फ़िर अगर (उन) दोनों में से एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे तो तुम उससे लड़ो जो ज़्यादती करता है यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ लौट आए, फ़िर अगर वह लौट आए तो तुम उन दोनों के दरम्यान अद्ल (हक़) के साथ सुलह करा दो, और तुम इन्साफ करो, बिलाशुब्ह अल्लाह इन्साफ करने वालों को पसन्द करता है।

(10) यक़ीनन मोमिन तो (एक दूसरे के) भाई हैं, लिहाज़ा तुम अपने भाईयों के दरम्यान सुलह करा दो और तुम अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

(11) ऐ ईमान वालो! मर्दों की कोई जमाअत दूसरे मर्दों का मज़ाक़ न उड़ाए, हो सकता वह लोग उनसे बेहतर हों और न औरतें दूसरी औरतों का (मज़ाक़ उड़ाऐं) हो सकता है कि वह (औरतें) उनसे बेहतर हों और तुम आपस में (एक दूसरे पर) ऐब न लगाओ और तुम एक दूसरे को बुरे लक़ब (नाम) से न पुकारो, ईमान (लाने) के बाद फासिक़ाना नाम (से पुकारना) बुरा है और जिसने तौबा न की तो वही (लोग) ज़ालिम हैं।

(12) ऐ ईमान वालो! बहुत सी बदगुमानियों से बचो, बिलाशुब्ह कुछ बदगुमानियां गुनाह हैं और तुम एक दूसरे की जासूसी न करो और तुममें से कोई दूसरे की गीबत न करे, क्या तुम में से कोई यह पसन्द करता है कि वह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए? तो (ज़ाहिर है कि) तुम उसे नापसन्द करते हो और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बहुत तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(13) ऐ लोगो! बिलाशुब्ह हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और हमने तुम्हारे खानदान और क़बीले बनाए ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो, बिलाशुब्ह अल्लाह के यहाँ तुममें से ज़्यादा इज्ज़त वाला

(वह है जो) तुममें से ज़्यादा मुत्तक़ी है, बिलाशुब्ह अल्लाह बहुत इल्म वाला, खूब बाखबर है।

(14) देहातियों ने कहाः हम ईमान लाए। आप कह दीजिएः तुम ईमान नहीं लाए तुम यूँ कहो कि हम इस्लाम लाए और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल (रासिख) नहीं हुआ, और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो तो वह तुम्हारे आमाल (की जज़ा) में से कुछ भी कम नहीं करेगा, बिलाशुब्ह अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(15) बस (सच्चे) मोमिन तो वह हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, फ़िर उन्होंने शक न किया, और उन्होंने अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया। यही लोग सच्चे (मोमिन) हैं।

(16) (ऐ नबी!) आप कह दीजिएः क्या तुम अल्लाह को अपने दीन की खबर देते हो? और अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

(17) वह (देहाती) आप पर अहसान जताते हैं कि वह मुसलमान हुए, कह दीजिएः तुम मुझ पर अपने इस्लाम (लाने) का अहसान न जताओ, बल्कि अल्लाह तुम पर यह अहसान फरमाता है कि उसने तुम्हें ईमान की हिदायत (मार्ग-दर्शन) दी, अगर तुम सच्चे हो।

(18) बिलाशुब्ह अल्लाह आसमानों और ज़मीन की छुपी बातें जानता है, और अल्लाह खूब देख रहा है जो तुम अमल करते हो।

सूरह क़ाफ़-50

(यह मक्की सूरत है इसमें 45 आयतें और 3 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) क़ाफ़! क़सम है कुरआन मजीद की।

(2) बल्कि उन्होंने तअज्जुब किया कि उनके पास उन्हीं में से एक डराने वाला आया, फ़िर काफिरों ने कहाः यह तो अजीब बात है।

(3) क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो जाऐंगे (तो क्या दोबारा उठाए जाएँगे) यह वापसी तो (अक़्ल से) बहुत दूर है।

(4) यक़ीनन हमें इल्म है जो कुछ ज़मीन उनमें से कम करती है और हमारे पास एक किताब (हर चीज़ की) हिफाज़त करने वाली है।

(5) बल्कि उन्होंने हक़ को झुठलाया जब वह उनका पास आया, इसलिए वह एक उलझे हुए मामले में हैं।

(6) क्या फ़िर उन्होंने अपने ऊपर

आसमान की तरफ नहीं देखा कि हमने उसे कैसा बनाया और हमने उसे आरास्ता (सजाया) किया और उसमें कोई शिगाफ (छेद) नहीं?

(7) और हमने ज़मीन फैलाई और हमने उसमें मज़बूत पहाड़ गाड़ दिए और हमने उसमें हर तरह की खूशनुमा चीज़ उगाई।

(8) (हक़ की तरफ) रूजू करने वाले हर बन्दे की बसीरत (देखने) और नसीहत (समझने) के लिए।

(9) और हमने आसमान से बाबरकत पानी नाज़िल किया, फ़िर हमने उसके ज़रिये से बागात और अनाज की काटने वाली फसल उगाई।

(10) और खजूर के बुलन्द व बाला दरख्त (पैदा किये) जिनके शगूफे तह ब तह हैं।

(11) बन्दो की रोज़ी के लिए और हमने उस (पानी) के ज़रिये से ज़मीन को ज़िन्दा किया, इसी तरह (मरने के बाद क़ब्रों से) निकलना है।

(12) उनसे पहले क़ौमे नूह ने और रस्स वालों ने और समूद ने झुठलाया।

(13) और आद और फ़िरऔन और लूत के भाईयों ने।

(14) और ऐका (बस्ती) वालों और क़ौम तुब्बअ ने, (उन) सबने रसूलों को झुठलाया तो (उन पर) मेरी सज़ा का वादा सच हो गया।

(15) क्या फ़िर हम पहली बार पैदा करके थक गए हैं? (नहीं!) बल्कि वह अज़सरे नू (नए सिरे से) पैदाईश के बारे में शक में हैं।

(16) और यक़ीनन हमने इन्सान को पैदा किया और उसके दिल में उभरने वाले वस्वसों को भी हम जानते हैं और हम (उसकी) शहरग से भी ज़्यादा उसके क़रीब हैं।

(17) जब अखज़ करते (लिखते) हैं दो अखज़ करने (लिखने) वाले (फरिश्ते), उसके दाँयें तरफ और बाँये तरफ बैठे हुए।

(18) इन्सान जो बात भी मुँह से निकालता है वह लिखने को उसके पास एक निगरां (फरिश्ता) तैयार होता है।

(19) और मौत की सख्ती हक़ को (सामने) ले आती है। (कहा जाता है) यही है वह (मौत) जिससे तू भागता था।

(20) और सूर में फूंका जाएगाः यह सज़ा का दिन है।

(21) और हर नफ्स (इंसान) आएगा, उसके साथ एक हांकने वाला एक शहादत देने वाला होगा।

(22) यक़ीनन तू इससे गफलत में था, तो हमने तुझसे तेरा परदा हटा दिया, इसलिए आज तेरी निगाह बहुत तेज़ है।

(23) और उसका साथी (फरिश्ता) कहेगाः यह है वह (रोज़नामचा) जो मेरे पास तैयार

है।

(24) (हुक्म होगाः) तुम दोनों हर काफिर सरकश को जहन्नम में डाल दो।

(25) भलाई से मना करने वाले को, हद से निकलने वाले को (और दीन में) शक करने वाले को।

(26) वह जिसने अल्लाह के साथ दूसरे मअ़बूद बना लिया था, लिहाज़ा तुम दोनों उसे शदीद अज़ाब में डाल दो।

(27) उसका साथी (शैतान) कहेगाः ऐ हमारे रब! मैंने उसे सरकश नहीं बनाया था लेकिन वह (खुद ही) परले दर्जे की गुमराही में पड़ा रहा।

(28) अल्लाह फरमाएगाः तुम मेरे पास झगड़ा न करो, हालांकि मैं पहले ही तुम्हारी तरफ (अज़ाब का) वादा भेज चुका था।

(29) मेरे यहाँ बात बदली नहीं जाती और मैं बन्दों पर जुल्म तोड़ने वाला नहीं।

(30) (याद करो!) जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगेः क्या तू भर गई है? और वह कहेगीः क्या कुछ और है?

(31) और जन्नत मुत्तक़ीन के क़रीब की जाएगी, (वह) दूर नहीं होगी।

(32) (कहा जाएगाः) यह है वह जिसका तुमसे वादा किया जाता था खूब रूजू करने वाले, (हुक्म इलाही की) हिफाज़त करने वाले हर शख्स से।

(33) जो रहमान से बिन देखे डरता था और वह रूजू करने वाला दिल ले आया है।

(34) (कहा जाएगाः) तुम उस (जन्नत) में सलामती से दाख़िल हो जाओ, यही हमेशा रहने का दिन है।

(35) वह जो कुछ चाहेंगे उनके लिए उसमें होगा और हमारे पास ज़्यादा भी है।

(36) और उनसे पहले हमने कितनी ही कौमें हलाक कर दीं, वह उनसे कुव्वत (शक्ति) में ज़्यादा सख्त थी, फ़िर उन्होंने शहरों में भाग दौड़ की, क्या उन्हें (हमारे अज़ाब से) कोई बच निकलने की जगह मिली?

(37) बिलाशुब्ह उसमें उस शख्स के लिए नसीहत (उपदेश) है जो (आगाह) दिल रखता है या वह कान लगाए जबकि वह (दिल व दिमाग़ से) हाज़िर हो।

(38) और यक़ीनन हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के दरम्यान है, छः दिनों में पैदा किया और हमें किसी क़िस्म की थकावट ने छुआ तक नहीं।

(39) (ऐ नबी!) जो वह कहते हैं अब आप उस पर सब्र करें और अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करें, तुलू आफताब (सूर्य निकलने) से पहले और (आफताब) गुरूब (डूबने) से पहले।

(40) और रात के कुछ हिस्से में फ़िर आप उसकी तस्बीह करें और नमाज़ों के बाद

भी।

(41) और ग़ौर से सुनें! जिस दिन मुनादी करने वाला क़रीब के मुक़ाम से निदा (आवाज़) देगा।

(42) जिस दिन वह उस चीख को हक़ीक़त में सुनेगा, यही (क़रीब से) निकलने का दिन होगा।

(43) बिलाशुब्ह हम ही जिन्दा करते और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ (सबकी) वापसी है।

(44) जिस दिन उस पर ज़मीन फटेगी जबकि वह (उसमें से निकल कर) दौड़ते होंगे। यह हश्र (बरपा करना) हम पर निहायत आसान है।

(45) हम उसे खूब जानते हैं जो वह (मुश्रिकीन) कहते हैं और आप उन पर ज़बरदस्ती करने वाले नहीं, लिहाज़ा आप इस कुरआन के ज़रिये से उस शख्स को नसीहत (उपदेश) करते रहें जो मेरी सज़ा से डरता है।

सूरह ज़ारियात-51

(यह मक्की सूरत है इसमें 60 आयतें और 3 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) क़सम है उन हवाओं की जो (मिट्टी वगैरा को) उड़ा कर बिखेरने वाली हैं।

(2) फ़िर उन बादलो की (क़सम) जो (पानी का) बोझा उठाने वाले हैं।

(3) फ़िर उन कश्तियों की (क़सम) जो आसानी से चलने वाली हैं।

(4) फ़िर उन फरिश्तों की (क़सम) जो काम तक़्सीम करने वाले हैं।

(5) बिलाशुब्ह तुम्हें जो वादा दिया जाता है वह ज़रूर सच्चा है।

(6) और बिलाशुब्ह (आमाल की) जज़ा (बदला) ज़रूर मिलने वाली है।

(7) क़सम है आसमान की जो रास्तों वाला है।

(8) बिलाशुब्ह तुम (आपस में) मुख्तलिफ (विरोधी) बातों में (पड़े) हो।

(9) उस (ईमान) से फेरा जाता है जो शख्स (भलाई से) फेरा गया।

(10) अटकल पच्चू करने वाले मारे गए।

(11) वह लोग जो गफलत में भूले पड़े हैं।

(12) वह पूछते हैंः जज़ा (बदला) का दिन कब होगा?

(13) जिस दिन वह आग में जलाए जाएँगे।

(14) (कहा जाएगाः) तुम अपना अज़ाब चखो, यह वह अज़ाब है जिसे तुम जल्द मांगते थे।

(15) बिलाशुब्ह मुत्तक़ीन बागात और चश्मों (झरनों) में होंगे।

(16) जो कुछ उनका रब उन्हें देगा, वह उसे ले रहे होंगे। बिलाशुब्ह वह इससे पहले नेकूकार थे।

(17) वह रात को बहुत ही थोड़ा सोते थे।

(18) और वह सहरी के वक़्त मग्फिरत मांगा करते थे।

(19) और उनके मालों में सवाली (मांगने वाले) और महरूम (न मांगने वाले) शख़्स का हक़ (हिस्सा) होता था।

(20) और यक़ीन करने वालों के लिए ज़मीन में (बहुत सी) निशानियां है।

(21) और (खुद) तुम्हारे नफ़्सों में भी, क्या फ़िर तुम देखते नहीं?

(22) और आसमान में तुम्हरा रिज़्क़ है और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है।

(23) फ़िर क़सम है आसमान और ज़मीन के रब की! बिलाशुब्ह यह (ऊपर ज़िक्र बातें उसी तरह) हक़ हैं, जैसे तुम बोलते हो।

(24) (ऐ नबी!) क्या आपके पास इब्राहीम के गिरामी क़द्र मेहमानों की खबर आई है?

(25) जब वह उसके पास पहुँचे तो उन्होंने सलाम कहा, इब्राहीम ने भी कहाः (तुम पर) सलाम हो, (फ़िर दिल में कहा तुम) लोग तो अजनबी हो।

(26) फ़िर चुपके से अपने अहल (घर वालों) की तरफ चला गया और एक मोटा ताज़ा बछड़ा (भून कर) ले आया।

(27) फ़िर वह उन्हें पेश किया (और) कहाः तुम खाते क्यों नहीं?

(28) तब उसने (दिल में) उनसे ख़ौफ महसूस किया। उन्होंने कहाः तू न डर। और उन्होंने उसे बड़े ज़ीइल्म (बहुत इल्म वाले) बेटे की बशारत (खुशखबरी) दी।

(29) फ़िर इब्राहीम की औरत हैरत ज़दा सामने आई, उसने तअज्जुब से अपने चेहरे पर हाथ मारा और कहाः (मैं) बांझ, बुढ़िया हूँ (औलाद कैसे?)।

(30) उन्होंने कहाः तेरे रब ने इसी तरह कहा है, बिलाशुब्ह वह हकीम (बहुत हिक्मत वाला), हलीम (बेहद इल्म वाला) है।

(31) इब्राहीम ने कहाः अच्छा तुम्हारा मक़सद क्या है, ऐ भेजे हुए फरिश्तों?

(32) उन्होंने कहाः बिलाशुब्ह हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ भेजे गए हैं।

(33) ताकि हम उन पर मिट्टी के पत्थर (कंकरिया) बरसाएँ।

(34) जो आपके रब के यहाँ हद से गुज़र जाने वालों के लिए नामज़द हो चुके हैं।

(35) फ़िर वहाँ जो भी मोमिन थे हमने उन्हें निकाल लिया।

(36) और हमने वहाँ मुसलमानों का सिर्फ एक ही घराना पाया।

(37) और हमने वहाँ उन लोगों के लिए

एक निशानी छोड़ी जो दर्दनाक अज़ाब से ख़ौफ खाते हैं।

(38) और मूसा (के क़िस्से) में (अज़ीम निशानी है) जब हमने उसे फ़िरऔन के तरफ एक खुले मोज्जजे के साथ भेजा।

(39) तो उसने अपनी कुव्वत (शक्ति) के बल पर (हक़ से) मुँह मोड़ा और कहाः (मूसा) जादूगर या दिवाना है।

(40) फ़िर हमने उसे और उसके लश्करों को पकड़ा और उन्हें समंदर में फेंक दिया जबकि वह क़ाबिले मलामत (काम करता) था।

(41) और आद (के क़िस्से) में (निशानी है) जब हमने उन पर बेख़ैरो-बरकत हवा भेजी।

(42) वह जिस चीज़ पर भी गुज़रती उसे गली सड़ी हड्डी के मानिन्द रेज़ा रेज़ा कर डालती थी।

(43) और समूद (के क़िस्से) में (निशानी है), जब उनसे कहा गयाः तुम एक वक़्त (तीन दिन) तक फायदा उठाओ।

(44) फ़िर उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की तो उन्हें कड़क ने आ पकड़ा जबकि वह देख रहे थे।

(45) फ़िर न तो उनमें उठने की सकत (शक्ति) थी और न वह बदला लेने वाले थे।

(46) और उनसे पहले (हमने) क़ौमे नूह को (हलाक किया), बिलाशुब्ह वह लोग फसिक़ थे।

(47) और हमने आसमान को अपने हाथों से बनाया और बिलाशुब्ह हम बहुत वुसअत वाले हैं।

(48) और हमने ज़मीन को बिछाया, तो हम क्या ही खूब बिछाने वाले हैं!

(49) और हमने हर (जानदार) चीज़ से जोड़े पैदा किये ताकि तुम नसीहत (उपदेश) पकड़ो।

(50) लिहाज़ा तुम अल्लाह की तरफ दौड़ो, बिलाशुब्ह मैं तुम्हें उससे खुला डराने वाला हूँ।

(51) और तुम अल्लाह के साथ किसी और को मअ़बूद न बनाओ, बिलाशुब्ह मैं तुम्हें उससे खुला डराने वाला हूँ।

(52) इसी तरह जो लोग उनसे पहले गुज़रे, उनके पास जो भी रसूल आया तो उन्होंने बस यही कहा कि (यह) जादूगर है या दिवाना।

(53) क्या वह एक दूसरे को इस बात की वसियत करते आए हैं? (नहीं) बल्कि वह (सब) लोग सरकश हैं।

(54) लिहाज़ा आप उनसे मुँह फे़र लें तो आप पर कुछ मलामत नहीं।

(55) और आप नसीहत (उपदेश) करते

रहें, इसलिए कि बेशक नसीहत मोमिनों को नफा (लाभ) देती है।

(56) और मैंने जिन्न और इन्सान इसीलिए पैदा किये हैं कि वह मेरी ही इबादत करें।

(57) मैं उनसे कोई रिज़्क़ नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वह मुझे खिलाएँ।

(58) बिलाशुब्ह अल्लाह तो खुद रज़्ज़ाक़ (रोज़ी देने वाला) है, बड़ी कुव्वत वाला, निहायत ताक़तवर है।

(59) फ़िर बेशक जिन लोगों ने जुल्म किया उनके नसीब में (अज़ाब) है जैसा उनके साथियों के नसीब में (था) लिहाज़ा वह मुझसे (अज़ाब) जल्दी न मांगे।

(60) इसलिए काफिरों के लिए उनके उस दिन (के आने) से तबाही है जिसका उनसे वादा किया जा रहा है।

सूरह तूर-52

(यह मक्की सूरत है इसमें 49 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) क़सम है तूर (पहाड़) की।

(2) और एक किताब की (क़सम) जो लिखी हुई है।

(3) खुले काग़ज़ में।

(4) और बैते मामूर की (क़सम)।

(5) और ऊँची छत की (क़सम)।

(6) और भड़काए हुए समंदर की (क़सम)।

(7) बेशक आपके रब का अज़ाब ज़रूर होकर रहने वाला है।

(8) उसे कोई रोकने वाला नहीं।

(9) (वह होकर रहेगा) जिस दिन आसमान तेज़ तेज़ हरकत करने लगेगा।

(10) और पहाड़ चलने लग जाएँगे।

(11) इसलिए उस दिन झुठलाने वालों के लिए तबाही है।

(12) (वह) जो फजूल बातों में खेल रहे हैं।

(13) जिस दिन उन्हें निहायत सख्ती से धक्के दे दे कर जहन्नम की आग की तरफ ध केला जाएगा।

(14) (कहा जाएगाः) यही है वह आग जिसे तुम झुठलाया करते थे।

(15) क्या फ़िर यह जादू है? या तुम देखते ही नहीं?

(16) तुम उस (दोज़ख) में दाख़िल हो जाओ, अब तुम सब्र करो या सब्र न करो तुम्हारे लिए बराबर है, तुम्हें बस उसी की सज़ा दी जाएगी जो तुम अमल किया करते थे।

(17) बिलाशुब्ह मुत्तक़ीन (परेहज़गार) बागात और नेअमतों में होंगे।

(18) वह उन चीज़ों से लुत्फ उठा रहे

होंगे जो उनके रब ने उन्हें दीं और उनके रब ने उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा लिया।

(19) (उन्हें कहा जाएगाः) खूब मज़े से खाओ और पीओ, उन आमाल के बदले में जो तुम किया करते थे।

(20) जबकि वह आपस में बराबर बिछे तख्तों पर तकिये लगाए होंगे और हम उन्हें ग़ज़ाला चश्म (बड़ी बड़ी आँखों वाली) हूरों से ब्याह देंगे।

(21) और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद ने भी ईमान के साथ उनकी पैरवी की, तो हम उनकी औलाद को (जन्नत में) उनसे मिला देंगे और हम उनके अमल में से कुछ भी कम नहीं करेंगे। हर शख्स उसके एवज़ (बदले) जो उसने कमाया गिरवी है।

(22) और वह जो चाहेंगे उनमें से हम उन्हें लज़ीज़ फल और गोश्त ज़्यादा देंगे।

(23) वहाँ वह शराब के छलकते जाम एक दूसरे से झपट रहे होंगे, उसमें न बेहूदा बातें होगी और न गुनाह का काम।

(24) और उन (की खिदमत) के लिए उनके आसपास नव उम्र लड़के फ़िर रहे होंगे (ऐसे हसीन) जैसे वे छुपा कर रखे गए मोती हैं।

(25) और वह (अहले जन्नत) एक दूसरे की तरफ मुतवज्जा हो कर आपस में (हाल) पूछेंगे।

(26) वह कहेंगेः बिलाशुब्ह हम (इससे पहले) अपने अहलो अयाल (घर वालों) में (अल्लाह से) डरा करते थे।

(27) फ़िर अल्लाह ने हम पर अहसान किया और उसने हमें (जला देने वाली) लौ के अज़ाब से बचा लिया।

(28) बिलाशुब्ह हम पहले ही उस (अल्लाह) को पुकारा करते थे, बेशक वही खूब एहसान करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(29) तो (ऐ नबी!) आप नसीहत (उपदेश) करते रहें कि आप अपने रब के फज़्ल से न तो काहिन (ज्योतिषी) हैं और न दिवाने।

(30) क्या वह (काफिर) कहते हैं कि (यह नबी) शायर है और हम उसके बारे में हादसाते ज़माने (मौत) का इन्तिज़ार कर रहे हैं?

(31) कह दीजिएः तुम इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ।

(32) क्या उनकी अक़्ले उन्हें यह सबक़ देती हैं या फ़िर वह लोग सरकश हैं?

(33) क्या वह कहते हैं कि उसने खुद ही यह (कुरआन) गढ़ा है? बल्कि वह ईमान नहीं लाते।

(34) फ़िर (उन्हें) चाहिए कि इस (कुरआन) जैसी एक बात ले आए अगर वह सच्चे हैं।

(35) क्या वह बग़ेर किसी खालिक़ (पैदा

करने वाले) के पैदा किये गए हैं, या वही (खुद अपने) खालिक़ हैं?

(36) क्या उन्होंने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया? बल्कि वह यक़ीन नहीं रखते।

(37) क्या उनके पास आपके रब के ख़ज़ाने हैं? या वह (उनके) दारोग़े हैं?

(38) क्या उनके लिए कोई सीढ़ी है कि वह उस पर (चढ़ कर आसमान की बातें) सुन लेते हैं? फ़िर चाहिए कि सुनने वाला कोई वाज़ेह दलील ले आए।

(39) क्या उस (अल्लाह) के लिए बेटियां हैं और तुम्हारे लिए बेटें?

(40) क्या आप उनसे कोई उज्र मांगते हैं कि वह (उसके) तावुन से बोझ तले दब गए हैं?

(41) या उनके पास (इल्मे) ग़ैब है, तो वह लिखते हैं।

(42) क्या वह किसी फरेब का इरादा करते हैं? तो जिन लोगों ने कुफ्र किया वही फरेब खाने वाले हैं।

(43) क्या उनके लिए अल्लाह के सिवा और कोई मअ़बूद है? अल्लाह पाक है उससे जो वह शरीक ठहराते हैं।

(44) और अगर वह आसमान से गिरता हुआ कोई टुकड़ा भी देखें तो वह कहेंगेः (यह) तह ब तह बादल है।

(45) लिहाज़ा (ऐ नबीं!) आप उन्हें (उनके हाल पर) छोड़ दीजिए यहाँ तक कि वह अपने उस दिन से मिलें जिसमें वह बेहोश किये जाएँगे।

(46) उस दिन उन्हें उनका फरेब कुछ फायदा नहीं देगा और न उनकी मदद की जाएगी।

(47) और बिलाशुब्ह जिन लोगों ने जुल्म किया, उनके लिए उस अज़ाब के अलावा (दुनिया में) भी एक अज़ाब है लेकिन उनमें अक्सर नहीं जानते।

(48) और (ऐ नबी!) अपने रब का हुक्म आने तक सब्र कीजिए, बिलाशुब्ह आप हमारी आँखों के सामने हैं और जब आप खड़े हों तो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए।

(49) और (कुछ हिस्सा) रात में भी, पस आप उसकी तस्बीह कीजिए और सितारे ग़ुरूब होने के बाद भी।

सूरह नज्म-53

(यह मक्की सूरत है इसमें 62 आयतें और 3 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) क़सम है सितारे की जब वह गिरता है।

(2) तुम्हारा साथी नहीं बहका और न वह भटका है।

(3) और वह (अपनी) ख़्वाहिश (मर्जी) से नहीं बोलता।

(4) वह वह्यी ही तो है जो (उसकी तरफ) भेजी जाती है।

(5) उसे मज़बूत कुव्वतों वाले (जिब्रईल) ने सिखाया।

(6) जो निहायत ताक़तवर है, सो वह (अपनी अस्ली सूरत में) सीधा खड़ा हो गया।

(7) जबकि वह (आसमान के) बुलंद किनारे पर था।

(8) फ़िर वह क़रीब हुआ और उतर आया।

(9) तो वह कमानों जितना बल्कि उससे भी क़रीब तर हो गया।

(10) फ़िर उसने अल्लाह के बन्दे को वह्यी पहुँचाई जो वह्यी पहुँचाई।

(11) उस (रसूल) ने जो कुछ देखा, उसके दिल ने (उसके बारे में) झूठ नहीं बोला।

(12) क्या फ़िर तुम उस चीज़ पर उस (नबी) से झगड़ते हो जो वह देखता है।

(13) और यक़ीनन उस (रसूल) ने उस (जिब्रईल) को एक बार और भी देखा।

(14) सिदरतुल मुन्तहा के क़रीब।

(15) उसके नज़दीक ही जन्नतुल मावा है।

(16) उस वक़्त सिदरा पर छा रहा था जो कुछ छा रहा था।

(17) निगाह न तो बहकी और न हद से बड़ी।

(18) यक़ीनन उस (रसूल) ने अपने रब की कुछ बड़ी बड़ी निशानियां देखीं।

(19) तुम मुझे लात और उज्ज़ा की खबर दो।

(20) और तीसरी (देवी) मनात की।

(21) क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और अल्लाह के लिए बेटियां।

(22) यह तो फ़िर बड़ी ही बेइन्साफी की तक़्सीम (बटवारा) है।

(23) यह तो महज़ चन्द नाम ही हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने रख लिए हैं, अल्लाह ने उनकी कोई सनद नाज़िल नहीं की, वह लोग तो गुमान ही की पैरवी करते हैं और उस चीज़ की जो उनके दिल चाहते हैं, हालांकि उनके रब की तरफ से उनके पास यक़ीनन हिदायत (मार्ग-दर्शन) आ चुकी है।

(24) क्या इंसान के लिए (हर चीज़ मेयस्सर) है जो वह तमन्ना करे।

(25) पस अल्लाह ही के लिए है आख़िरत और दुनिया।

(26) और आसमानों में कितने ही फरिश्ते हैं जिनकी सिफारिश कुछ भी फायदा नहीं देगी मगर उसके बाद अल्लाह इजाज़त दे जिसके लिये चाहे और पसंद करे।

(27) बिलाशुब्ह जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते वह फरिश्तों के नाम औरतों के से रखते हैं।

(28) हालांकि उन्हें इसका कोई इल्म नहीं,

वह तो बस गुमान की पैरवी करते हैं और बिलाशुब्ह गुमान हक़ के मुक़ाबले में कुछ भी फायदा नहीं देता।

(29) लिहाज़ा (ऐ नबी!) आप उससे मुँह फेर लें जो हमारे ज़िक्र से मुँह मोड़े और वह सिर्फ दुनियावी ज़िन्दगी चाहता हो।

(30) उनके इल्म की यही इन्तिहा है, बिलाशुब्ह आपका रब ही उस शख़्स को खूब जानता है जो उसके रास्ते से भटक गया और वही उस शख़्स को खूब जानता है जिसने हिदायत पाई।

(31) और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है ताकि वह उन लोगों को जिन्होंने बुरे काम किये, उनके आमाल की सज़ा दे और उन लोगों को, जिन्होंने अच्छाइयां कीं, अच्छा बदला दे।

(32) वह लोग जो कबीरा (बड़े) गुनाहों और बेहयाई के कामों से बचते हैं मगर यह कि कोई सगीरा (छोटा) गुनाह (सरज़द) हो, बेशक आप का रब बड़ी वसी मग्फिरत वाला है, वह तुम्हें (उस वक़्त से) खूब जानता है जब उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और जब तुम अपनी माँओं के पेटों में बच्चे थे, लिहाज़ा तुम अपने आपकी पाकी बयान न करो, वह उसे खूब जानता है जिसने तक़्वा इख़्तियार किया।

(33) क्या फ़िर आपने उसे देखा जिसने (हक़ से) मुँह मोड़ा?

(34) और उसने क़लील (माल) दिया और (फ़िर देना) बन्द कर दिया।

(35) क्या उसके पास इल्मे ग़ैब है कि वह (सब कुछ) देख रहा है?

(36) क्या उसे उन (बातों) की खबर नहीं दी गई जो मूसा के सहीफों में हैं?

(37) और इब्राहीम के (सहीफों में) जो वफादार था?

(38) यह कि कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।

(39) और यह कि इन्सान के लिए बस वही कुछ है जिसकी उसने कोशिश की।

(40) और बिलाशुब्ह उसकी कोशिश देखी जाएगी।

(41) फ़िर उसे पूरी पूरी जज़ा (बदला) दी जाएगी।

(42) और बेशक (सबको) आपके रब ही के पास पहुँचना है।

(43) और बिलाशुब्ह वही हँसाता और वही रूलाता है।

(44) और बेशक वही मारता और वही ज़िन्दा करता है।

(45) और बिलाशुब्ह उसी ने जोड़ा (यानी) नर और मादा पैदा किए।

(46) नुत्फे (वीर्य) से जब वह (रहम में)

डाला जाता है।

(47) और बिलाशुब्ह दूसरी बार पैदाईश भी उसी के ज़िम्मे है।

(48) और बेशक वही ग़नी करता और सरमायादार (मालदार) बनाता है।

(49) और यक़ीनन वही शेअ़रा (नाम के सितारे) का रब है।

(50) और बिलाशुब्ह उसी ने पहले आद को हलाक किया।

(51) और समूद को भी, फ़िर उसी ने (किसी को भी) बाक़ी न छोड़ा।

(52) और (उनसे) पहले क़ौमे नूह को भी, बिलाशुब्ह वह निहायत ज़ालिम और बड़े सरकश थे।

(53) और उसी ने उलट जाने वाली बस्ती को ज़मीन पर दे मारा।

(54) फ़िर उस बस्ती को ढांप लिया जिस (संगसारी) ने ढांप लिया।

(55) फ़िर (ऐ इन्सान!) तू अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों में शक करेगा?

(56) यह (रसूल) तो पहले डराने वालों में से एक डराने वाला है।

(57) क़रीब आने वाली (क़यामत) क़रीब आ गई।

(58) उस क़यामत को अल्लाह के सिवा कोई ज़ाहिर करने वाला नहीं।

(59) क्या फ़िर इस बात (कुरआन) पर तुम ताज्जुब करते हो?

(60) और तुम हँसते हो और रोते नहीं।

(61) और तुम खेल कूद में मस्त हो।

(62) अब तुम (रूक जाओ और) अल्लाह को सज्दा करो और (उसी की) इबादत करो।

सूरह क़मर-54

(यह मक्की सूरत है इसमें 55 आयतें और 3 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) क़यामत क़रीब आ गई और चाँद फट गया।

(2) और अगर वह (मुश्रिक) कोई मोजिजे (निशानी) देखें तो मुँह मोड़ते और कहते हैं कि (यह) जादू तो हमेशा से चला आता है।

(3) और उन्होंने (उसे) झुठलाया और अपनी ख्वाहिश की पैरवी की, और हर काम का वक़्त मुक़र्रर (समय निश्चित) है।

(4) और यक़ीनन उनके पास वह खबरें आ चुकी हैं जिनमें तम्बीह व नसीहत (उपदेश) है।

(5) कमाल को पहुँची हुई हिकमत, फ़िर महज़ डरावे फायदा नहीं देते।

(6) लिहाज़ा (ऐ नबी!) उनसे मुँह मोड़ लीजिए, (याद करें) जिस दिन बुलाने वाला निहायत होलनाक चीज़ की तरफ बुलाएगा।

(7) उनकी निगाहें झुकी होंगी, वह क़ब्रों से यूँ निकलेंगे जैसे वह फैला हुआ टिड्डी दल हों।

(8) जबकि वह बुलाने वाले की तरफ दौड़ रहे होंगे। काफिर कहेंगेः यह दिन निहायत सख्त है।

(9) उनसे पहले क़ौमे नूह ने झुठलाया था, इसलिए उन्होंने हमारे बन्दे को झुठलाया और कहाः (यह तो) दिवाना है और (उसको) झिड़क दिया गया।

(10) तब उसने अपने रब को पुकारा कि बेशक मैं बेबस हूँ, तू ही इन्तिक़ाम ले।

(11) इसलिए हमने ज़ोर से बरसने वाले पानी के साथ आसमान के दहाने खोल दिए।

(12) और हमने ज़मीन से चश्मे (जल स्रोत) जारी कर दिए, तो (आसमान और ज़मीन का) पानी जमा हो गया जो तकदीर में लिख दिया गया था।

(13) और हमने नूह को ताख़्तों और मेंखों (कीलों) वाली (कश्ती) पर सवार किया।

(14) वह हमारी आँखों के सामने चलती थी, (हमने यह किया) उस शख्स का इन्तिक़ाम लेने की खातिर जिसका इन्कार किया गया था।

(15) और यक़ीनन हमने उस (कश्ती) को एक निशानी (बना) छोड़ा, फ़िर क्या कोई नसीहत (उपदेश) पकड़ने वाला है?

(16) फ़िर (देखों) मेरा डरावा कैसा था?

(17) और यक़ीनन हमने कुरआन को नसीहत (उपदेश) के लिए आसान किया है, फ़िर क्या कोई नसीहत पकड़ने वाला है?

(18) (क़ौमे) आद ने झुठलाया, फ़िर (देखो) मेरा अज़ाब और मेरा डरावा कैसा था।

(19) बिलाशुब्ह हमने उन पर एक हमेशा रहने वाले नहूसत के दिन में शदीद (सख्त) तूफानी हवा भेजी।

(20) वह लोगो को यूँ उखाड़ फेंकती थी जैसे वह जड़ से उखाड़े खजूर के तने हैं।

(21) फ़िर मेरा अज़ाब और मेरा डरावा कैसा था?

(22) और यक़ीनन हमने कुरआन को नसीहत (उपदेश) के लिए आसान किया है, फ़िर क्या कोई नसीहत पकड़ने वाला है?

(23) (क़ौमे) समूद ने डराने वालों को झुठलाया।

(24) तो उन्होंने कहाः भला एक ऐसा आदमी जो हम ही में से है, हम उसकी पैरवी करें? बिलाशुब्ह हम तो तब गुमराही और दिवानगी में होंगे।

(25) क्या हमारे दरम्यान से उसी पर वह्यी नाज़िल की गई है? (नहीं) बल्कि वह सख्त झूठा और शेखीबाज़ है।

(26) कल ही जान लेंगे कौन झूठा और शैखीबाज़ है?

(27) बिलाशुब्ह हम उनकी आज़माईश के लिए ऊँटनी भेजने (चट्टान से निकालने) वाले हैं, लिहाज़ा (ऐ सालेह!) तू उन (के अन्जाम) का इन्तिज़ार कर और सब्र कर।

(28) और उन्हें बता दें कि बेशक पानी उनके (और ऊँटनी के) दरम्यान तक़्सीम होगा, हर एक (अपनी) बारी पर हाज़िर होगा।

(29) फ़िर उन्होंने अपने (एक) साथी को पुकारो तो उसने (ऊँटनी को) पकड़ा, फ़िर मार डाला।

(30) फ़िर (देखो) मेरा अज़ाब और डरावा कैसा था।

(31) बिलाशुब्ह हमने उन पर एक ही चिंघाड़ भेजी तो वह बाड़ लगाने वाले की रौंदी हुई बाड़ की तरह (चूर चूर) हो गए।

(32) और यक़ीनन हमने कुरआन को नसीहत (उपदेश) के लिए आसान किया है तो क्या कोई नसीहत पकड़ने वाला है?

(33) क़ौमे लूत ने डाराने वालों को झुठलाया।

(34) बिलाशुब्ह हमने उन पत्थर बरसाने वाली हवा भेजी सिवाए आले लूत के, हमने उन्हें सुबह के वक़्त निजात दी।

(35) अपने खालिस फज़्ल से हम इसी तरह उसे जज़ा (बदला) देते हैं जो शुक्र करे।

(36) और यक़ीनन लूत ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया था तो उन्होंने डरावे में शक किया।

(37) और यक़ीनन उन्होंने लूत से उसके मेहमान मांगे थे तो हमने उनकी आँखें मिटा दी, इसलिए तुम मेरा अज़ाब और मेरे डरावे का मज़ा चखो।

(38) और यक़ीनन सुबह के वक़्त अटल अज़ाब ने उन्हें हलाक कर दिया।

(39) इसलिए तुम मेरा अज़ाब और मेरे डरावे का मज़ा चखो।

(40) और यक़ीनन हमने कुरआन को नसीहत (उपदेश) के लिए आसान किया फ़िर क्या कोई नसीहत पकड़ने वाला है?

(41) और यक़ीनन आले फ़िरऔन के पास (भी) डराने वाले आए।

(42) उन्होंने हमारी सब निशानियां झुठलाईं, तो हमने उन्हें एक ज़बरदस्त कुदरत वाले के पकड़ने की तरह पकड़ लिया।

(43) (ऐ अहले अरब!) क्या तुम्हारे काफिर उन (काफिरों) से बेहतर हैं या तुम्हारे लिए (पिछले) सहीफों में कोई निजात (लिखी हुई) हैं?

(44) क्या वह (मुश्रिकीन) कहते हैं कि हम एक ग़ालिब आने वाली जमाअत हैं।

(45) अनक़रीब वह जमाअत शिकस्त खाएगी और वह पीठ फ़ेर कर भागेगी।

(46) बिलाशुब्ह क़यामत उनके वादे का वक़्त है और क़यामत बहुत बड़ी आफ़त

और निहायत तल्ख (कड़वी) है।

(47) बिलाशुब्ह मुजरिमीन (अपराधी) गुमराही और दिवानगी में (पड़े) हैं।

(48) जिस दिन वह आग में अपने चेहरों के बल घसीटे जाएँगे (कहा जाएगाः) तुम जहन्नम (के अज़ाब) की तकलीफ चखो।

(49) बिलाशुब्ह हमने हर चीज़ एक मुक़र्रा अन्दाज़े के मुताबिक़ पैदा की है।

(50) और हमारा हुक्म आँख झपकने की तरह एक (कलमा) ही होता है।

(51) और (ऐ अहले अरब!) यक़ीनन हम (पहले) तुम जैसों को हलाक कर चुके हैं फ़िर क्या कोई नसीहत (उपदेश) पकड़ने वाला है?

(52) और जो कुछ उन्होंने किया है, वह सहीफों में (दर्ज) है।

(53) और हर छोटा बड़ा (अमल लोहे महफूज़ में) लिखा हुआ है।

(54) बिलाशुब्ह मुत्तक़ीन बागात और नहरों में होंगे।

(55) हक़ीक़ी इज्ज़त की जगह हर तरह की कुदरत वाले बादशाह के नज़दीक।

सूरह रहमान-55

(यह मदनी सूरत है इसमें 78 आयतें और 3 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (अल्लाह) रहमान।

(2) उसी ने कुरआन सिखाया।

(3) उसी ने इन्सान को पैदा किया।

(4) उसे बोलना सिखाया।

(5) सूरज और चाँद एक हिसाब से (चलते) हैं।

(6) और बेलें और दरख़्त (पेड़) सज्दा करते हैं।

(7) और आसमान को उसी (रहमान) ने बुलन्द किया और उसी ने तराज़ू रखी।

(8) ताकि तुम तोलने में गड़बड़ न करो।

(9) और तुम इन्साफ से वज़न करो और तोल में कमी न करो।

(10) और उसी ने ज़मीन को मख़्लूक़ के लिए बिछाया।

(11) उसमें लज़ीज़ फल और खजूर के दरख़्त हैं जिनके शगूफे (गुच्छे) गिलाफों में लपटे होते हैं।

(12) और भूसे वाले दाने (अनाज) और खूशबुदार फूल हैं।

(13) फ़िर (ऐ जिन्न व इन्स!) तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(14) उसी ने इन्सान को ठीकरे जैसी खनकती मिट्टी से पैदा किया।

(15) और उसने जिन्न को आग के शोले

से पैदा किया।

(16) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों कों झुठलाओगे?

(17) (वही) दोनों मश्रिकों (पूरब) और दोंनों मग्रिबों (पश्चिम) का रब है।

(18) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(19) रहमान ने दो समंदर जारी किये जो बाहम (आपस में) मिलते हैं।

(20) उन दोनों के दरम्यान एक परदा है, वह दोनों उससे बढ़ नहीं सकते।

(21) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(22) उन दोनों समंदरों से मोती और मरजान (मूंगे) निकलते हैं।

(23) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(24) और उसी के हैं चलने वाले (जहाज़ और कश्तियां) जो समंदर में पहाड़ों की तरह ऊँचे उठे हुए हैं।

(25) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(26) हर चीज़ जो ज़मीन पर है, फना (समाप्त) होने वाली है।

(27) और आपके रब जुलजलाल वल इकराम का चेहरा बाक़ी रहेगा।

(28) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(29) जो कोई आसमान और ज़मीन में है, उसी से मांगता है, वह हर रोज़ (हर वक़्त) एक (नई) शान में होता है।

(30) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(31) ऐ जिन्न व इन्स (इन्सान)! अनक़रीब (जल्द ही) हम तुम्हारे (हिसाब के) लिए फारिग होंगे।

(32) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(33) ऐ गिरोह जिन्न व इन्स! अगर तुम आसमान और ज़मीन के किनारों से निकल भगने की ताक़त रखते हो तो निकल जाओ, कुव्वत और गलबे के बग़ेर तो तुम निकल ही नहीं सकते (और वह कुव्वत तुममें कहाँ!)

(34) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(35) तुम दोनों पर आग के शोले और ध ुआँ छोड़ा जाएँगे फ़िर तुम (उसका) मुक़ाबला न कर सकोगे।

(36) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(37) फ़िर जब आसमान फट जाएगा तो वह सुर्ख चमड़े की तरह लाल हो जाएगा।

(38) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(39) फ़िर उस दिन किसी इन्सान और किसी जिन्न से उसके गुनाह की बाबत नहीं पूछा जाएगा।

(40) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(41) मुजरिम अपने चेहरे की अलामत ही से पहचान लिए जाएँगे, फ़िर वह पेशानी (माथे) के बालों और क़दमों से पकड़े (और घसीट कर जहन्नम में डाले) जाएँगे।

(42) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(43) (उन्हें कहा जाएगाः) यही वह जहन्नम (नरक) है जिसे मुजरिम लोग झुठलाते थे।

(44) वह जहन्नम के दरम्यान और सख़्त गर्म खोलते हुए पानी के दरम्यान चक्कर लगाएँगे।

(45) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(46) और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डर गया उस के लिए दो बाग है।

(47) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(48) (वह) दोनों बहुत ज़्यादा शाखों वाले हैं।

(49) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(50) उन दोनों (बागों) में दो चश्मे जारी होंगे।

(51) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(52) उन दोनों (जन्नतों) में हर फल की दो दों क़िस्में होंगी।

(53) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(54) (अहले जन्नत) ऐसी मसनदों पर तकिये लगाए (बैठे) होंगे जिनके अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे और उन दोनों बागों के फल क़रीब ही होंगे।

(55) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(56) उनमें झुकी नज़रों वाली (शर्मीली और बा हया हूरें) होंगी, उनसे पहले उन्हें किसी इन्सान और किसी जिन्न ने हाथ नहीं लगाया होगा।

(57) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(58) जैसे वह हीरे और मरजान (मूंगे) हैं।

(59) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(60) एहसान की जज़ा (बदला) तो एहसान ही है।

(61) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन

कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(62) और उन दो बागों के अलावा दो बाग (और) हैं।

(63) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(64) जो गहरे सब्ज़ स्याही माईल हैं।

(65) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(66) उनमें जोश मारते दो चश्मे हैं।

(67) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(68) उन दोनों में लज़ीज़ फल होंगे और खजूरें और अनार भी।

(69) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(70) उन (सब बागों) में खूब सीरत (और) खूबसूरत औरतें हैं।

(71) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओ?

(72) हूरें जो खैमों में महफूज (सुरक्षित) होंगी।

(73) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(74) उनसे पहले उन्हें किसी इन्सान और किसी जिन्न ने हाथ नहीं लगाया होगा।

(75) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(76) सब्ज़ (हरे) और निहायत नफीस नादिर (असाधारण) क़ालिनों पर तकिये लगाए (बैठे) होंगे।

(77) फ़िर तुम दोनों अपने रब की कौन कौन सी नेअमतों को झुठलाओगे?

(78) आपका रब जुलजलाल वल इकराम का नाम बहुत ही बरकत वाला है।

सूरह वाक़िया-56

(यह मक्की सूरत है इसमें 96 आयतें और 3 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) जब वाक़े (क़ायम) होने वाली (क़यामत) वाक़े होगी।

(2) उसके वाक़े होने के वक़्त कोई भी झुठलाने वाला न होगा।

(3) पस्त करने वाली, बुलंद करने वाली।

(4) जब ज़मीन निहायत बुरी तरह हिलाई जाएगी।

(5) और पहाड़ (फोड़ कर) रेज़ा रेज़ा (चूरा-चूरा) कर दिए जाएँगे।

(6) तब वह परागन्दा गुबार जैसे हो जाएँगे।

(7) और तुम तीन क़िस्में हो जाओगे।

(8) सो दायें (हाथ) वाले, क्या (खूब) हैं दांये (हाथ) वाले!

(9) और बांये (हाथ) वाले, क्या (हक़ीर) हैं बांये (हाथ) वाले!

(10) और सबक़त ले जाने वाले तो सबक़त ले जाने वाले ही हैं।

(11) यही लोग मुक़र्रब (निकट) हैं।

(12) नेअमतों वाले बागात में।

(13) बहुत बड़ी जमाअत अगलों में से।

(14) और थोड़ी सी पिछलों में से।

(15) जबकि वह सोने के तारों से जड़े तख़्तों पर (बैठे) होंगे।

(16) उन पर आमने सामने तकिये लगाए हुए।

(17) उनके पास सदा लड़के ही रहने वाले लड़के आते जाते होंगे।

(18) प्याले और सुराही और शराब के जारी चश्मे से झलकते जाम लिए हुए।

(19) वह उससे न सर दर्द में मुब्तिला होंगे और न मदहोश।

(20) और उस क़िस्म के लज़ीज़ फल (लिए हुए) जो वह पसंद करेंगे।

(21) और उस क़िस्म का परिन्दों का गोश्त जो वह चाहेंगे।

(22) और (उनके लिए) गज़ाला चश्म (बड़ी बड़ी आँखे वाली) हूरें (होंगी)।

(23) जैसे गिलाफ में लिपटे हुए मोती।

(24) (यहा) जज़ा (बदला) उन आमालों की जो वह करते रहे।

(25) और वह जन्नत में न लग्व (बेकार) सुनेंगे और न कोई गुनाह की बात।

(26) (हाँ) मगर एक बोल सलाम, सलाम।

(27) और दायें (हाथ) वाले, क्या (खूब) हैं दायें (हाथ) वाले!

(28) वह बिना काँटों के बैरों में होंगे।

(29) और तह बह तह केलों में।

(30) और लम्बे सायों में।

(31) और (हर दम) बहते पानी में।

(32) और बहुत ज़्यादा फलों में।

(33) जो न तो कभी खत्म होंगे और न ममनू (रोक-टोक)।

(34) और ऊँची नशिस्त गाहों (बेठकों) में।

(35) बिलाशुब्ह हम उन (की बीवियों) को एक खास उठान पर उठाएँगे।

(36) तो हम उन्हें कुंवारियाँ बनाएँगे।

(37) मनमोहनी, हम उम्र।

(38) दांये हाथ वालों के लिए।

(39) कसीर (बड़ी) जमाअत अगलों में से।

(40) और कसीर जमाअत पिछलों में से।

(41) और बांये (हाथ) वाले, क्या (हक़ीर) हैं बांये हाथ वाले!

(42) (वह) सख्त गर्म हवा और गर्म खोलते पानी में होंगे।

(43) और स्याह तरीन धुंऐ के साये में।

(44) न (वह) ठन्डा होगा और न फरहत बख़्श (सुखदायक)।

(45) बिलाशुब्ह वह उससे पहले नाज़ों (आराम) में पले थे।

(46) और वह बड़े गुनाह (शिर्क) पर इसरार करते थे।

(47) और वह कहते थेः क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हडि्डयां हो जाएँगे तो क्या फिलवाक़य हम दोबारा उठाए जाएँगे?

(48) क्या (हम) और हमारे अगले बाप दादा भी?

(49) (ऐ नबी!) आप कह दीजिएः बिलाशुब्ह अगले भी और पिछले भी।

(50) यक़ीनन एक मालूम दिन के मुक़र्रर वक़्त पर सब जमा किये जाएँगे।

(51) फ़िर यक़ीनन तुम लोग ऐ गुमराहो, झुठलाने वालो!

(52) (तुम) थुहड़ (ज़क़्क़ूम) के दरख़्त (पेड़) से ज़रूर खाओगे।

(53) फ़िर उससे अपना पेट भरोगे।

(54) फ़िर उस पर गर्म खोलता हुआ पानी पीओगे।

(55) सो प्यासे ऊँटों की तरह पीओगे।

(56) रोज़े क़यामत यह होगी उनकी मेहमानी।

(57) हम ही ने तुम्हें पैदा किया, फ़िर तुम (दोबारा जी उठने की) की तस्दीक़ (स्वीकार) क्यों नहीं करते?

(58) भला बताओ तो! जो मनी तुम टपकाते हो।

(59) क्या वह तुम पैदा करते हो या हम (उसके) खालिक़ (पैदा करने वाले) हैं?

(60) हम ही ने तुम्हारे दरम्यान मुक़द्दर कर दी है और हम आजिज़ (मजबूर) नहीं।

(61) (बल्कि क़ादिर हैं) इस बात पर कि तुम जैसी और मख़्लूक़ बदल कर ले आएँ और तुम्हें ऐसी सूरत में पैदा करें जो तुम नहीं जानते।

(62) और यक़ीनन तुम ने पहली पैदाईश को जान लिया है? फ़िर तुम नसीहत क्यों नहीं पकड़ते?

(63) भला बताओ! जो कुछ तुम बोते हो।

(64) क्या तुम उगाते हो या हम उगाने वाले हैं?

(65) अगर हम चाहे तो उसे ज़रूर रेज़ा-रेज़ा (कण-कण) कर दें फ़िर तुम हैरत व तअज्जुब से बातें बनाते रह जाओ।

(66) कि बिलाशुब्ह हम पर सजा डाल दी गई।

(67) (नहीं) बल्कि हम महरूम ही रह गए।

(68) भला बताओ! तो! वह पानी जो

तुम पीते हो।

(69) क्या वह तुम ने बादलों से नाजिल किया है या हम नाज़िल करने वाले हैं?

(70) अगर हम चाहे तो उसे खारा कर दें, फ़िर तुम शुक्र क्यों नहीं करते?

(71) भला बताओ! वह आग जो तुम जलाते हो।

(72) क्या उस का दरख्त (पेड़) तुमने पैदा किया है या हम पैदा करने वाले हैं?

(73) हम ही ने उसे याद दहानी को ज़रिया और मुसाफिरों के लिए फायदा बनाया है।

(74) लिहाज़ा आप अपने रब्बे अज़ीम के नाम की तस्बीह कीजिए।

(75) फ़िर मैं सितारों के गिरने की क़सम खाता हूँ।

(76) और बिलाशुब्ह अगर तुम्हें इल्म हो तो यह बहुत बड़ी क़सम है।

(77) कि बिलाशुब्ह यह कुरआन निहायत इज्ज़त वाला है।

(78) एक महफ़ूज़ किताब में।

(79) उसे बस पाक (फरिश्ते) ही हाथ लगाते हैं।

(80) (यह) रब्बुलआलमीन की तरफ से नाज़िल करदा है।

(81) क्या फ़िर तुम इस कलाम (कुरआन) से बेपरवाई करते हो?

(82) और तुम (अल्लाह की उस नेअमत में) अपना हिस्सा यह रखते हो कि उसे झुठलाते हो।

(83) फ़िर क्यों नहीं (तुम रूह को फ़ेर लेते) जब वह हलक़ तक पहुंचती है?

(84) और तुम उस वक़्त देख रहे होते हो।

(85) और हम तुम्हारी निस्बत उसके ज़्यादा क़रीब होते हैं अगर तुम सच्चे हो?

(86) फ़िर अगर तुम किसी के महकूम (अधीन) नही तो क्यों नहीं।

(87) उस (रूह) को फ़ेर लेते, अगर तुम सच्चे हो?

(88) पस लेकिन अगर वह (मुर्दा) मुक़र्रबीन में से हो।

(89) तो (उसके लिए) राहत और खूशबू और नेअमतों वाले बाग है।

(90) और लेकिन अगर वह असहाबे यमीन में से हो।

(91) तो (कहा जाएगाः) तेरे लिए सलामती है, (यक़ीनन) तू असहाबे यमीन में से है।

(92) और लेकिन अगर वह झुठलाने वाले गुमराहों में से हो।

(93) तो (उसकी) मेहमानी गर्म खोलते पानी से होगी।

(94) और (उसे) जहन्नम में दाख़िल होना है।

(95) बिलाशुब्ह यही (खबर) हक्कुल यक़ीन

(बिल्कुल सच) है।

(96) लिहाज़ा आप अपने रब्बे अज़ीम के नाम की तस्बीह कीजिए।

सूरह हदीद-57

(यह मदनी सूरत है इसमें 29 आयतें और 4 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) आसमानों और ज़मीन में जो चीज़ भी है, अल्लाह की तस्बीह करती है और वह निहायत ग़ालिब, खूब हिकमत वाला है।

(2) आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है, वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है और वह हर शै पर खूब क़ादिर है।

(3) वही अव्वल (आदि) है और आखीर (अन्त) भी ज़ाहिर (बाहर) भी और बातिन (भीतर) भी और वही हर शै (चीज़) को खूब जानने वाला है।

(4) वही है जिसने आसमान को छः दिनों में पैदा किया, फ़िर अर्श पर मुस्तवी हो गया। वह जानता है जो चीज़ ज़मीन में दाख़िल होती है और जो उससे निकलती है और जो चीज़ आसमान से उतरती है और जो उसमें ऊपर चढ़ती है और तुम जहाँ कहीं हो वह तुम्हारे साथ है और अल्लाह खूब देख रहा है जो तुम अमल करते हो।

(5) उसी के लिए आसमान और ज़मीन की बादशाही है और तमाम उमूर अल्लाह ही की तरफ लोटाए जाते हैं।

(6) वही रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और वह सीनों के राज़ खूब जानता है।

(7) अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उस (माल) में से खर्च करो जिसमे उसने तुम्हें जाँनशीन बनाया है, फ़िर तुममें से जो लोग ईमान लाए और उन्होने खर्च किया, उनके लिए बहुत बड़ा अज्र है।

(8) और तुम्हें क्या है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते? जबकि रसूल तुम्हें बुलाता है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और यक़ीनन वह तुमसे पुख्ता वादा ले चुका है अगर तुम मोमिन हो?

(9) वही तो है जो अपने बन्दे पर वाज़ेह आयतें नाज़िल करता है ताकि वह तुम्हे अन्ध ोरों से उजाले की तरफ निकाले और बिलाशुब्ह अल्लाह तुम पर निहायत शफीक़, खूब रहम करने वाला है।

(10) और तुम्हें क्या है कि तुम अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते? जबकि आसमानों और ज़मीन की मिरास अल्लाह ही के लिए है! तुम में से जिन लोगों ने फतह (मक्का) से पहले खर्च किया और जिहाद किया, यह

(उन लोगों के) बराबर नहीं हैं (जिन्होंने फतह मक्का के बाद यही काम किये) यह (पहले करने वाले) लोग दर्जे में अज़ीम तरीन उन लोगों से जिन्होंने उस (फतह) के बाद खर्च किया और लड़ाई की, और अल्लाह ने हर एक से नेक जज़ा (बदला) का वादा किया है और अल्लाह उससे खूब बाखबर है जो तुम अमल करते हो।

(11) कौन है वह जो अल्लाह को क़र्ज़े हसना (अच्छा उधार) दे, फ़िर वह उसे उसके लिए बढ़ा दे? और उसके लिए उम्दा अज्र है।

(12) उस दिन आप ईमान वालों और ईमान वालियों को देखेंगे कि उनका नूर उनके आगे और उनके दाँये दौड़ता होगा। (कहा जाएगाः) आज तुम्हें ऐसे बागात की बशारत (ख़ुशखबरी) है जिनके नीचे नहरें जारी हैं, वह उनमें हमेशा रहेंगे, यही बहुत बड़ी कामयाबी है।

(13) उस दिन मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें उन लोगों से, जो ईमान लाए, कहेंगेः तुम हमारा इन्तिज़ार करो कि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी हासिल कर लें। (उनसे) कहा जाएगाः अपने पीछे की तरफ लौट जाओ फ़िर नूर तलाश करो। तब उनके दरम्यान एक दीवार हाईल (खड़ी) कर दी जाएगी जिसका एक दरवाज़ा होगा, उसके अन्दर रहमत होगी और उसके बाहर की तरफ अज़ाब होगा।

(14) वह (मुनाफिक़) उन (मोमिनों) को पुकारेंगेः क्या हम (दुनिया में) तुम्हारे साथ नहीं थे? वह कहेंगेः (हाँ) क्यों नहीं लेकिन तुमने अपने आपको फित्ने में डाल लिया था और तुमने (अहले ईमान की बाबत गर्दिशें ज़माना का) इन्तिज़ार किया और तुमने शक किया और तुम्हें ख्वाहिशों (कामनाओं) ने फरेब दी यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा और तुम्हें धोखेबाज़ (शैतान) ने अल्लाह की बाबत धोखा दिया।

(15) लिहाज़ा आज तुमसे कोई फिदया न लिया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने कुफ्र किया। तुम्हारा ठिकाना आग है, वह तुम्हारे लिए ज़्यादा मौज़ू है और वह लौट जाने की बहुत बुरी जगह है।

(16) क्या ईमान वालों को अभी वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल ज़िक्रे इलाही के लिए झुक जाएँ और (उस के लिए) जो हक़ (अल्लाह) की तरफ से नाज़िल हुआ? और वह उन लोगों के मानिन्द न हों जिन्हें इससे पहले किताब दी गई, फ़िर उन पर लम्बी मुद्दत गुज़र गई तो उनके दिल सख्त हो गए और उनमें से बहुत से फासिक़ हैं।

(17) तुम जान लो कि बिलाशुब्ह अल्लाह ही ज़मीन की मौत के बाद उसे ज़िन्दा करता

है। यक़ीनन हमने तुम्हारे लिए आयतें (निशानियां) बयान कीं ताकि तुम समझो।

(18) बिलाशुब्ह सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें और जिन्होंने क़र्ज़े हसना दिया तो वह उनके लिए बढ़ाया जाएगा और उनके लिए उम्दा अज्र है।

(19) और जो लोग अल्लाह पर उसके रसूलों पर ईमान लाए, वही लोग अपने रब के यहाँ सिद्दीक और शहीद हैं। उन के लिए उनका अज्र है और उनका नूर है और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही दौज़खी हैं।

(20) तुम जान लो दुनियावी ज़िन्दगी महज़ खेल, तमाशा और ज़ीनत है और आपस में फख्र जताना और एक दूसरे पर माल और औलाद में कसरत जताना है। (उसकी मिसाल यूं है) जैसे बारिश कि उससे (पैदाशुदा) निबातात (वनस्पति) किसानों को खुश करती हैं, फ़िर वह खुश्क हो जाती हैं तो आप उसे ज़र्द होती देखते हैं, फ़िर वह चूर चूर हो जाती हैं, और आख़िरत में (कुफ्फार के लिए) शदीद अज़ाब है, और (मोमिन के लिए) अल्लाह की तरफ से मग्फिरत और रज़ामन्दी है और दुनियावी ज़िन्दगी तो बस धोखे का सामान है।

(21) तुम अपने रब की मग्फिरत और जन्नत की तरफ दौड़ो जिसका अर्ज़ आसमान और ज़मीन के अर्ज़ की तरह है वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए, यह अल्लाह का फज़ल है, वह जिसे चाहे देता है, और अल्लाह अज़ीम फज़ल वाला है।

(22) ज़मीन में और तुम्हारी जानों पर जो भी मुसीबत आती है वह तो किताब में (लिखी हुई) है इससे पहले कि हम उसे पैदा करें। यक़ीनन यह अल्लाह पर बहुत आसान है।

(23) ताकि तुम उस (चीज़) पर ग़म न खाओ जो (तुम्हारे हाथ से) जाती रहे और तू उस पर न इतराओ जो वह तुम्हें अता करे, और अल्लाह हर इतराने वाले, फख्र करने वाले को पसंद नहीं करता।

(24) वह लोग जो (खुद भी) बुख्ल (कंजूसी) करते हैं और लोगों को बुख्ल (करने) का हुक्म देते हैं और जो शख्स (एहकामे इलाही से) मुँह फेरे तो बिलाशुब्ह अल्लाह बेपरवा निहायत क़ाबिले तअरीफ है।

(25) यक़ीनन हमने अपने रसूल वाज़ेह निशानियों के साथ भेजे और हमने उन पर किताब और मिज़ान नाज़िल की ताकि लोग इन्साफ पर क़ायम रहें और हमने लोहा पैदा किया, उसमें बड़ा ज़ोर है और लोगों के लिए फायदे हैं ताकि अल्लाह उसे जान ले जो बिन देखे उसकी और उसके रसूलों की मदद

करता है। बिलाशुब्ह अल्लाह क़वी (ताक़तवर), अज़ीज़ (ग़ालिब) है।

(26) और यक़ीनन हमने नूह को और इब्राहीम को (रसूल बना कर) भेजा और हमने उन दोनों की औलाद में नबुव्वत और किताब रखी, फ़िर उनमें से कुछ हिदायत (मार्ग-दर्शन) पाने वाले हैं और उनमें से बहुत फ़ासिक़ हैं।

(27) फ़िर हमने उन के पीछे लगातार अपने रसूल भेजे और हमने ईसा इब्ने मरयम को (उन सबके) पीछे भेजा और हमने उसे इन्जील दी और हमने उनके दिलों में, जिन्होंने उसकी पैरवी की, शफ़्फ़क़त और मेहरबानी रख दी, और रहबानियत तो उन्होंने खुद ही ईजाद कर ली थी, उसे हमने तो उन पर फर्ज़ नहीं किया था मगर यह कि रज़ाए इलाही तलाश करें, फ़िर उन्होंने उस का ख्याल न रखा जैसा ख्याल रखने का हक़ था, फ़िर हमने उन लोगों को, जो उनमें से ईमान लाए, उनका अज्र दिया और उनमें से बहुत से फ़ासिक़ हैं।

(28) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत से दो हिस्से (अज्र) देगा और तुम्हारे लिए ऐसा नूर बनाएगा कि तुम उसकी रोशनी में चलोगे और वह तुम्हें बख्श (क्षमा) देगा और अल्लाह बहुत माफ करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(29) ताकि अहले किताब यह जान लें कि बिलाशुब्ह वह अल्लाह के फ़ज़ल में से किसी शै पर क़ुदरत नहीं रखते और बेशक तमाम फ़ज़ल अल्लाह के हाथ में है वह जिसे चाहे यह (फ़ज़ल) अता करता है, और अल्लाह अज़ीम फ़ज़ल वाला है।

सूरह मुजादला-58

(यह मदनी सूरत है इसमें 22 आयतें और 3 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) अल्लाह ने उस औरत (खौला बिन्ते सअलबा) की बात सुन ली जो अपने खाविन्द (औवेस बिन सामत) के बारे में आपसे झगड़ रही थी और वह अल्लाह से शिकवा (शिकायत) कर रही थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ्तगू (बातचीत) सुन रहा था, बेशक अल्लाह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब देखने वाला है।

(2) तुममें से जो लोग अपनी बीवियों से ''ज़िहार'' करते हैं, वह उनकी मांऐ नहीं, उनकी माऐं तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जना (जन्म दिया) और बेशक अल्लाह बहुत माफ करने वाला, निहायत बख्शने वाला है।

(3) और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करें, फ़िर अपनी कही हुई बात से रूजू करना चाहें, तो एक गर्दन आज़ाद करनी है, इससे पहले कि वह एक दूसरे को छुए, इस (हुक्म) की तुम्हें नसीहत (उपदेश) की जाती है और अल्लाह (उससे) बाख़बर है जो तुम अमल करते हो।

(4) फ़िर जो शख़्स (गुलाम) न पाए तो दो माह के लागतार रोज़े (रखने) हैं इससे पहले कि वह एक दूसरे को छुए, फ़िर जो शख़्स हिम्मत न रखता हो तो साठ मिस्कीनों (भूखे, गरीबों) को खाना देना है। यह (हुक्म) इसलिए है कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और यह अल्लाह की हदें हैं, और काफिरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(5) बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफत करते है, वह ज़लील किये जाएँगे जैसे वह लोग ज़लील (अपमानित) किये गए जो उनसे पहले थे, और हमने साफ आयतें उतारी हैं, और काफिरों के लिए रूस्वा कुन अज़ाब है।

(6) जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा, फ़िर उनको जताएगा जो उन्होंने अमल किए। अल्लाह ने उनको गिन रखा है जबकि वह उन्हें भूल गए, और अल्लाह हर चीज़ पर निगराँ है।

(7) (ऐ नबी!) आपने नहीं देखा बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। तीन (लोगों) की कोई सरगोशी (कानाफूसी) नहीं होती, मगर वह उनमें चौथा होता है और न पाँच आदमियों की, मगर वह उनमें छटा होता है और न उससे कम और न ज़्यादा, मगर वह उनके साथ होता है, जहाँ कहीं भी वह हों, फ़िर वह रोज़े क़यामत उन्हें जताएगा जो उन्होंने अमल किये थे, बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जानता है।

(8) क्या आपने उन लोगों की तरफ नहीं देखा जिन्होने सरगोशियाँ (गुप्त वार्ताएं) करने से रोका गया था, फ़िर वह उस चीज़ की तरफ लौटते हैं जिससे उन्हें रोका गया था, और वह गुनाह, ज़्यादती और रसूलों की नाफरमानी की सरगोशियाँ करते हैं। और जब वह आपके पास आते है तो आपको उस (कलमे) के साथ सलाम कहते हैं कि अल्लाह ने उस के साथ आपको (कभी) सलाम नहीं किया, और वह अपने दिल में कहते हैंः अल्लाह हमें उसकी वजह से क्यों अज़ाब नहीं देता जो हम कहते हैं? उनके लिए जहन्नम काफी है, वह उसमें दाख़िल होंगे, पस वह बुरा ठिकाना है।

(9) ऐ ईमान वालो! जब तुम

सरगोशियाँ करो, तो गुनाह, ज़्यादती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियाँ मत करो, और तुम नेकी और तक़्वा की सरगोशियाँ करो, और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम्हें इकट्ठा किया जाएगा।

(10) (बुरी) सरगोशी तो है ही शैतान की तरफ से ताकि वह ईमान वालों को ग़मग़ीन करे, और वह उन्हें कोई नुक्सान नहीं पहुँचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से, अैर मोमिनों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा करें।

(11) ऐ ईमान वालों! जब तुम से कहा जाए कि मजलिसों में खुल बैठों, तो तुम खुल बैठा करो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी देगा, और जब कहा जाए उठ खड़े हो, ता उठ खड़े हुआ करो। तुममें से जो ईमान लाए हैं और जिन्हें इल्म दिया गया है, अल्लाह उनके दरजात बुलंद करेगा, और अल्लाह (उससे) बाखबर है जो तुम करते हो।

(12) ऐ ईमान वालों! जब रसूल से सरगोशी करो तो अपनी सरगोशी से पहले सदक़ा (दान) करो, यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर और ज़्यादा पाकीज़ा है। फिर अगर तुम (सदक़े की हिम्मत) न पाओ तो बेशक अल्लाह गफ़ूर्रुरहीम है।

(13) क्या तुम (उससे) डर गए हो कि अपनी सरगोशियों से पहले सदक़ात (दान) पेश करो? इसलिए जब तुमने (यह) न किया और अल्लाह ने (भी) तुम्हें माफ किया तो (अब) तुम नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो, और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो, और अल्लाह उससे बाखबर है जो तुम करते हो।

(14) क्या आपने उन लोगों (मुनाफिक़ीन) को नहीं देखा जिन्होंने उस क़ौम (यहूद) से दोस्ती की जिन पर अल्लाह गुस्सा हुआ। न वह तुममें से हैं और न उनमें से। और वह झूठ पर क़समें खाते हैं, हालांकि वह जानते हैं।

(15) अल्लाह ने उनके लिए शदीद (सख्त) अज़ाब तैयार किया है। बेशक बुरा हैं जो वह अमल करते रहे हैं।

(16) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है, फ़िर उन्होंने अल्लाह की राह से रोका, लिहाज़ा उनके लिए रूस्वाकुन अज़ाब है।

(17) उनके माल और उनकी औलाद उन्हें अल्लाह (के अज़ाब) से हरगिज़ कुछ फायदा नहीं देंगे। यही लोग दोजखी हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगें।

(18) जिस दिन अल्लाह उन सब को दोबारा उठाएगा तो वह उसके सामने क़समें खाएँगे जैसे तुम्हारे सामने क़समें

खाते हैं, और वह समझते हैं कि बेशक वह एक शै (अच्छी राह) पर हैं। खबरदार! बेशक वही झूठे हैं।

(19) उन पर शैतान ग़ालिब आ गया है, फ़िर उसने उन्हें अल्लाह का ज़िक्र भुला दिया। यह लोग शैतान का गिरोह हैं। खबरदार! बेशक शैतानी गिरोह ही नुक्सान पाने वाला है।

(20) बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफत (विरोध) करते हैं, वही ज़लील तरीन (अपमानित) लोग में से हैं।

(21) अल्लाह ने लिख रखा है कि मैं और मेरे रसूल ज़रूर ग़ालिब आएँगे, बेशक अल्लाह क़वी, बड़ा ज़बरदस्त है।

(22) (ऐ नबी!) आप (ऐसी) कोई क़ौम नहीं पाएँगे जो अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखती हो, कि वह उनसे दोस्ती करें जो अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफत करते हों, अगरचे वह उनके बाप या उनके बेटे या उनका भाई या उनके कुनबा क़बीला हों। यही लोग हैं कि अल्लाह ने उनके दिलों में ईमान लिख दिया है और उनकी ताईद की है अपने ग़ैब के फैज़ से, और वह उन्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वह उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी है और वह उससे राज़ी हैं, यही लोग अल्लाह का गिरोह हैं, जान लो! बेशक (जो) अल्लाह का गिरोह है, वही फलाह पाने वाला है।

सूरह हश्र-59

(यह मदनी सूरत है इसमें 24 आयतें और 3 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अल्लाह के लिए तस्बीह करती है जो चीज़ आसमानों में है और जो ज़मीन में है, और वही ग़ालिब है, खूब हिकमत वाला।

(2) वही है जिसने अहले किताब के काफिरों को पहली जिलावतनी के वक़्त उनके घरों से निकाल दिया, तुमने कभी यह ख्याल ही नही किया था कि वह (मदीना से) निकलेंगे, और उन्होंने समझा था कि बेशक उनके क़िले उन्हे अल्लाह (के अज़ाब) से बचा लेंगे, फ़िर उन पर अल्लाह (का अज़ाब) आया जहाँ से उन्होंने गुमान भी नहीं किया था, और उसने उनके दिलों में रौब डाल दिया, वह अपने घर अपने हाथों उजाड़ते थे और मोमिनों के हाथों भी, तो ऐ आँख वालो! इबरत पकड़ो।

(3) और अगर यह न होता कि अल्लाह ने उनका जिलावतनी होना लिख दिया था

तो वह उन्हें ज़रूर दुनिया ही में अज़ाब देता, और उनके लिए आख़िरत में आग का अज़ाब है।

(4) यह इसलिए कि बेशक उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफत की, और जो कोई अल्लाह की मुखालफत (विरोध) करे तो बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।

(5) तुमने जो भी खजूर का दरख़्त (वृक्ष) काटा या उसकी जड़ो पर खड़ा छोड़ दिया तो (यह) अल्लाह के हुक्म से है, ताकि वह नाफरमानों को रूस्वा करे।

(6) और अल्लाह ने उनसे अपने रसूल की तरफ जो माल लौटाया तो उसके लिए तुम ने घोड़े और ऊँट नहीं दौड़ाए, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है गलबा देता है। और अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(7) अल्लाह अपने रसूल की तरफ बस्तियों वालों (के माल) से जो कुछ लौटा दे, तो वह अल्लाह के लिए और उसके रसूल के लिए और (उसके) कुरबत दारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफिरो के लिए है, ताकि वह (माल) तुम्हारे दौलतमन्दों ही के दरम्यान गर्दिश न करता रहे। और अल्लाह का रसूल तुम्हे जो कुछ दे वह ले लो, और जिस से मना करे तो उसे छोड़ दो, और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।

(8) (माले फी) उन मुहाजिर फुक़रा (गरीबों) के लिए है जो अपने घरों और अपनी जायजादों से निकाले गए, वह अल्लाह का फज़ल और उसकी रज़ा ढुढ़ते है और अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं।

(9) और (उन के लिए है) जिन्होंने (मदीने को) घर बना लिया था और उन (मुहाजरीन) से पहले ईमान ला चुके थे, वह (अन्सार) उनसे मुहब्बत करते हैं जो उनकी तरफ हिजरत करे, और वह अपने दिलों में उस (माल) की कोई हाजत नहीं पाते जो उन (मुहाजरीन) को दिया जाए और अपनी ज़ात पर (उनको) तरजीह देते हैं अगरचे खुद उन्हें सख़्त ज़रूरत हो, और जो अपने नफ्स के लालच से बचा लिया गया, तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं।

(10) और (फी उनके लिए है) जो उन (मुहाजरीन व अन्सार) के बाद आए, वह कहते हैंः ऐ हमारे रब! हमें और हमारे उन भाईयों को बख़्श (क्षमा कर) दे जिन्होंने ईमान में हमसे पहल की और हमारे दिलों में अहले ईमान के लिए कोई कीना न रख। ऐ हमारे रब! बेशक तू बहुत नर्मी वाला, निहायत रहम करने वाला है।

(11) (ऐ नबी!) क्या आपने वह लोग नहीं देखे जिन्होंने मुनाफ़िक़त की? वह अपने उन भाईयों से, जो अहले किताब में से काफिर हुए, कहते हैः अगर तुम (मदीने से) निकाले गए तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकलेंगे, और हम तुम्हारे मामले में कभी किसी की इताअत नहीं करेंगे, और अगर तुमसे लड़ाई की गई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि बेशक वह झूठे हैं।

(12) अगर वह (यहूद) निकाले गए तो यह (मुनाफ़िक़ीन) उनके साथ नहीं निकलेंगे, और अगर तुमसे लड़ाई की गई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, और अगर उनकी मदद को पहुँचे भी तो ज़रूर पीठ फ़ेर कर भागेंगे, फ़िर उनकी मदद नहीं की जाएगी।

(13) (ऐ मुसलमानो!) यक़ीनन उनके सीनों में अल्लाह की निस्बत तुम्हारा डर ज़्यादा है, यह इसलिए कि बेशक वह ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं।

(14) वह सब मिल कर भी तुमसे नहीं लड़ सकेंगे, मगर ऐसी बस्तियों में जो क़िले बन्द हैं या दीवारो की ओंट से, उनकी आपस की लड़ाई (दुश्मनी) बहुत सख्त है, आप उन्हें इकट्ठा समझते हैं जबकि उनके दिल जुदा जुदा हैं, यह इसलिए कि बेशक वह ऐसे लोग हैं जो अक़्ल नहीं रखते।

(15) उनकी मिसाल उन लोगों की सी है जो उनसे पहले क़रीब ही (बद्र में) अपनी बद आमाली का वबाल चख चुके हैं, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(16) उनकी मिसाल शैतान की सी है जब वह इन्सान से कहता है कि कुफ़्र कर, फ़िर जब वह कुफ़्र करता है तो शैतान कहता हैः बेशक मैं तुझसे बरी हूँ, मैं अल्लाह रब्बलआलमीन से डरता हूँ।

(17) लिहाज़ा उन दोनों का अन्जाम यही होगा कि बेशक वह हमेशा (दोज़ख की) आग में रहेंगे, और ज़ालिमों की सज़ा यही है।

(18) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और (हर) शख़्स को देखना चाहिए कि उसने कल के लिए आगे क्या भेजा है, और तुम अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह को खबर है जो तुम अमल करते हो।

(19) और उनकी तरह न हो जाओ जिन्होंने अल्लाह को झुठला दिया, तो अल्लाह ने उन्हें अपना आप भुलवा दिया, यही लोग नाफरमान है।

(20) आग वाले (दोज़ख़ी, नरकवासी) और बाग वाले (जन्नती) कभी बराबर नहीं हो सकते, जन्नती ही कामयाब हैं।

(21) (ऐ नबी!) अगर हम इस कुरआन

को किसी पहाड़ पर नाज़िल करते तो आप देखते कि वह अल्लाह के ख़ौफ से दब जाता (और) फट जाता, और यह मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं शायद कि वह गौरो फ़िक्र करें।

(22) वह अल्लाह ही जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह ग़ैब और हाज़िर का जानने वाला है, वह रहमान है, रहीम है।

(23) अल्लाह ही वह हस्ती है कि उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह बादशाह है, निहायत पाक, सलामती वाला, अमन देने वाला, निगेहबान, ज़बरदस्त, जोरावर, बड़ाई वाला, पाक है अल्लाह उससे जो वह शिर्क करते हैं।

(24) वह अल्लाह है, खालिक़ (पैदा करने वाले) है, मौजूद (अविष्कारक), सूरतगिर (सूरतें बनाने वाला), उसी के लिए हैं अस्माए हुस्ना, उसी की तस्बीह पढ़ती है जो चीज़ आसमान और ज़मीन में है, और वह ग़ालिब है, खूब हिकमत वाला।

सूरह मुम्तहिना-60

(यह मदनी सूरत है इसमें 13 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ऐ ईमान वालो! तुम मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनकी तरफ दोस्ती का पैगाम (संदेश) भेजते हो, हालांकि वह हक़ (सच्चे दीन) के मुन्कर हुए हैं जो तुम्हारे पास आया है, वह रसूल को और तुम्हें भी जिलावतनी करते हैं, इसलिए तुम अपने रब अल्लाह पर ईमान रखते हो। अगर तुम मेरे रास्ते में निकले हो, जिहाद और मेरी रज़ा ढुढंने के लिए (तो कुफ्फार को दोस्त न बनाओ) तुम उनको दोस्ती का खुफिया पैगाम भेजते हो, और मैं खूब जानता हूँ जो तुम छुपाते हो और जो ज़ाहिर करते हो, और तुममें से जो कोई ऐसा करेगा, तो यक़ीनन वह सीधी राह पर से भटक गया।

(2) अगर वह तुम्हें (कहीं) पाएं तो तुम्हारी जान के दुश्मन हो जाएं और अपने हाथ और अपनी ज़बानें तुम्हारी तरफ दराज़ करें बुराई (की नियत) से, और वह चाहते हैं कि किसी तरह तुम भी (दीने हक़ के) मुन्किर हो जाओ।

(3) तुम्हारे रिश्ते नाते क़यामत के दिन तुम्हें हरगिज़ नफा (लाभ) नही देंगे और न तुम्हारी औलाद, वह तुम्हारे दरम्यान (बीच) फैसला करेगा, और अल्लाह खूब देखने वाला है जो तुम अमल करते हो।

(4) यक़ीनन तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है इब्राहीम और उन लोगों में जो उसके

साथ थे, जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा थाः बेशक हम तुमसे और उनसे बरी (विमुख) हैं जिनकी तुम इबादत करते हो सिवाए अल्लाह के, हम तुमसे मुन्कर हुए, हमारे और तुम्हारे दरम्यान हमेशा के लिए दुश्मनी और बुग्ज़ (कपट) ज़ाहिर हो गया है, यहाँ तक तुम अल्लाह अकेले पर ईमान ले आओ, मगर इब्राहीम का अपने बाप से यह कहना कि मैं ज़रूर तेरे लिए बख़्शिश मांगूगा, और मैं तेरे लिए अल्लाह (की तरफ) से किसी चीज़ का इख़्तियार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हमने तुझ पर भरोसा किया और तेरी ही तरफ रूजू किया, और तेरी ही तरफ हमें लौटना है।

(5) ऐ हमारे रब! तू हमें उन लोगों के लिए फित्ना (आज़माईश) न बना जिन्होंने कुफ़्र किया, और हमें बख़्श (क्षमा कर) दे, ऐ हमारे रब! बेशक तू ही बड़ा ज़बरदस्त, खूब हिकमत वाला है।

(6) बिलाशुब्ह तुम्हारे लिए उनमें बेहतरीन नमूना है, उस शख़्स के लिए जो अल्लाह (से मिलने) और यौमे आख़िरत (क़यामत के दिन) की उम्मीद रखता हो, और जो कोई (हक़ से) मुँह मोड़े तो बेशक अल्लाह ही बेपरवह क़ाबिले तअरीफ है।

(7) उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के दरम्यान दोस्ती (पैदा) कर दे जिनसे तुम्हारी दुश्मनी है, और अल्लाह बहुत कुदरत वाला है, और अल्लाह गफूर्रुरहीम है।

(8) अल्लाह तुम्हें उन लोगों की बाबत नहीं रोकता जो तुमसे दीन पर नहीं लड़े और उन्होंने तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला, कि तुम उनसे भलाई करो और उनसे इन्साफ करो, बेशक अल्लाह इन्साफ करने वालों को पसंद करता है।

(9) बेशक अल्लाह तो तुम्हें उन लोगों की बाबत रोकता है जो तुमसे दीन पर लड़े, और जो कोई उनसे दोस्ती करे तो वही लोग ज़ालिम हैं।

(10) ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें हिजरत करके आएं तो तुम उनका इम्तिहान लो, अल्लाह उनके ईमान को खूब जानता है, फ़िर अगर तुम उन्हें मोमिन जानो तो उन्हें कुफ्फार की तरफ न लौटाओ, न वह (औरतें) उन (कुफ्फार) के लिए हलाल हैं और न वह (काफिर) उन (औरतों) के लिए हलाल हैं, और तुम उन (कुफ्फार) को दे दो जो (मेहर) उन्होंने खर्च किया, और तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम उनसे निकाह कर लो जब तुम उन्हें मेहर दे दो, और तुम काफिर औरतों की असमतें क़ब्ज़े में न रखो, और मांग लो जो (मेहर) तुमने खर्च किया और

चाहिए कि वह (कुफ्फार) भी मांग लें जो (मेहर) उन्होंने खर्च किया, यह अल्लाह का हुक्म (फैसला) है वह तुम्हारे दरम्यान फैसला करता है और अल्लाह खूब जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(11) और अगर कोई तुम्हारी बीवियां तुमसे कुफ्फार की तरफ चली जाएं, फ़िर तुम (कुफ्फार से) लड़ो (और ग़नीमत हाथ लगे) तो जिनकी बीवियां चली गईं, उन्हें उस (मेहर) के बारबर दे दो जो उन्होंने खर्च किया, और तुम अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो।

(12) ऐ नबी! जब आपके पास मोमिन औरतें आएं (और) वह आपसे (उन उमूर पर) बेअत करें कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएंगी, और न चोरी करेंगी, और न ज़िना करेंगी, और न अपनी औलाद क़त्ल करेंगी, और न बोहतान लगाऐंगी जो अपने हाथों और पांवों के सामने गढ़ लें, और न नेक काम में आपकी नाफरमानी करेंगी, तो आप उनसे बेअत ले लें और उनके लिए अल्लाह से मग्फिरत मांगे, बेशक अल्लाह गफूर्रुरहीम है।

(13) ऐ ईमान वालो! तुम उस क़ौम से दोस्ती न करो जिन पर अल्लाह ने गज़ब (नाज़िल) किया, वह आख़िरत से मायूस हो गए हैं जैसे कुफ्फार क़ब्र वालो से मायूस हो गए।

सूरह सफ्फ-61

(यह मदनी सूरत है इसमें 14 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अल्लाह की तस्बीह करती है जो चीज़ आसमानों में और ज़मीन में है, और वह बड़ा ज़बरदस्त, खूब हिकमत वाला है।

(2) ऐ ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं?

(3) अल्लाह के यहाँ बड़ी नाराज़ी है कि तुम वह बात कहों जो तुम करते नहीं।

(4) बेशक अल्लाह उन लोगों को पसंद करता है जो उसकी राह में सफें (पंक्ति) बान्धे लड़ते हैं, जैसे वह सीसा पिलाई हुई इमारत हैं।

(5) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम मुझे इज़ा (तकलीफ) क्यों देते हो? हालांकि तुम जानते हो कि बिलाशुब्ह मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का रसूल हूँ, फ़िर जब वह टेढ़े हो गए तो अल्लाह ने उनके दिल टेढ़े कर दिए, और अल्लाह नाफरमान लोगो

को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता।

(6) और जब ईसा इब्ने मरयम ने कहाः ऐ बनी इस्राईल! बेशक मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का रसूल हूँ, तस्दीक़ (पुष्टि) करने वाला हूँ उस (किताब) तौरात की जो मुझ से पहले है और एक रसूल की बसारत (खुशखबरी) देने वाला हूँ, वह मेरे बाद आएगा, उसका नाम एहमद होगा, फ़िर जब वह (रसूल) उनके पास खुली निशानियों के साथ आया तो वह बोलेः यह तो खुला जादू है।

(7) और उस शख्स से ज़्यादा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, हालांकि उसे इस्लाम की तरफ बुलाया जाता है? और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता।

(8) वह चाहता हैं कि अल्लाह का नूर (दीने इस्लाम) अपने मुँह से बुझा दें, जबकि अल्लाह अपना नूर पूरा करने वाला है अगरचे काफिर नापसंद ही करें।

(9) वही है जिसने अपना रसूल हिदायत (मार्ग-दर्शन) और दीने हक़ के साथ भेजा, ताकि वह उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब करे अगरचे मुश्रिक नापसंद ही करें।

(10) ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत (व्यापार) बताऊं जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से निजात दे?

(11) तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और अल्लाह की राह में जिहाद करो अपने मालों और अपनी जानों के साथ। यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है अगर तुम इल्म (ज्ञान) रखते हो।

(12) वह (अल्लाह) तुम्हारे गुनाह बख्श (क्षमा कर) देगा और तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और पाकीज़ा महलात में (जो) हमेशा रहने वाली जन्नतों में हैं, यह है अज़ीम (बड़ी) कामयाबी।

(13) और एक और (नेअमत) जिसे तुम पसंद करते हो, अल्लाह की तरफ से मदद और फतह क़रीब, और मोमिनों को बशारत (खुशखबरी) दे दीजिए।

(14) ऐ ईमान वालों! तुम अल्लाह के मददगार हो जाओ, जैसे ईसा इब्ने मरयम ने हवारियों से कहा थाः अल्लाह की राह में मेरा मददगार कौन है? हवारियों ने कहाः हम अल्लाह के मददगार हैं, तो बनी इस्राईल में से एक गिरोह ईमान लाया और दूसरे गिरोह ने कुफ्र किया, तो हमने उन लोगों को, जो ईमान लाए, उनके दुश्मनों पर कुव्वत दी तो वह ग़ालिब आ गए।

सूरह जुमा-62

(यह मदनी सूरत है इसमें 11 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अल्लाह की तस्बीह करती है जो चीज़ आसमानों में और ज़मीन में है, (वह) बादशाह है, पाक ज़ात, ज़बरदस्त, बहुत हिकमत वाला।

(2) वही हे जिसने अनपढ़ों में एक रसूल भेजा उन्हीं में से, वह उसकी आयतें उन पर तिलावत करता है और उनका तज़किया करता है और उन्हे किताब व हिकमत की तालीम देता है, और इससे पहले वह खुली गुमराही में पड़े थे।

(3) और उन्हीं में से दूसरे लोगों के लिए भी (भेजा) जो अभी तक उनके साथ नहीं मिले, और वह (अल्लाह) ज़बरदस्त, खूब हिकमत वाला है।

(4) यह अल्लाह का फ़ज़ल (कृपा) है, वह जिसे चाहता है यह (फ़ज़ल) देता है, और अल्लाह अज़ीम फ़ज़ल वाला है।

(5) उन लोगों की मिसाल जिन पर तौरात का बोझ रखा गया फ़िर वह उसे न उठा पाए, उस गधे की सी है जो किताबें उठाता है, बुरी मिसाल है उस क़ौम की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह ज़ालिम कौम को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता।

(6) (ऐ नबी!) कह दीजिएः ऐ लोगों जो यहूदी हुए! अगर तुम दावा करते हो कि बेशक तुम अल्लाह के दोस्त हो सब लोगों के सिवा तो मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो।

(7) और वह कभी यह तमन्ना नहीं करेंगे उन (बुरे आमाल) की वजह से जो वह अपने हाथों आगे भेज चुके हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानता है।

(8) कह दीजिएः बेशक मौत जिससे तुम फरार होते हो, वह तो यक़ीनन तुम्हें मिलने वाली है, फ़िर तुम उसकी तरफ लौटाए जाओगे जो ग़ैब और हाज़िर को जानने वाला है, फ़िर वह तुम्हें जताएगा जो तुम अमल करते थे।

(9) ऐ ईमान वालों! जब अज़ान दी जाए नमाज़ के लिए जुमा के दिन, तो तुम अल्लाह के ज़िक्र की तरफ दौड़ो और खरीद फरोख्त (क्रय-विक्रय) करना छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानते हो।

(10) फ़िर जब नमाज़ पूरी जो जाए, तो तुम ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़ल (कृपा) तलाश करो, और अल्लाह को कसरत से याद करो, शायद तुम फलाह (कामयाबी) पाओ।

(11) और (ऐ नबी!) जब वह तिजारत होती या कोई तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं और आपको खड़ा छोड़ जाते हैं, कह दीजिएः जो अल्लाह के पास है वह तमाशे और (सामाने) तिजारत से कहीं बेहतर है और अल्लाह बेहतर रिज़्क़ देने वाला है।

सूरह मुनाफिकून-63

(यह मदनी सूरत है इसमें 11 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) जब मुनाफिक़ आपके पास आते हैं तो वह कहते हैंः हम शहादत (गवाही) देते हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं, और अल्लाह जानता हे कि बेशक आप उसके रसूल हैं। और अल्लाह शहादत देता है कि यक़ीनन मुनाफिक़ झूठे हैं।

(2) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है, फ़िर वह (लोगों को) अल्लाह की राह से रोकते हैं, बेशक बहुत बुरा है जो वह अमल करते हैं।

(3) यह इसलिए कि बेशक वह ईमान लाए, फ़िर उन्होंने कुफ़्र किया, तो उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई, वह समझते ही नहीं।

(4) और जब आप उन्हें देखें तो आपको उनके जिस्म अच्छे लगते हैं और अगर वह (कोई बात) कहें तो आप उनकी बात पर कान लगाए जैसे वह टेक लगी लकड़ियां हो। वह हर ऊँची आवाज़ को समझते हैं कि उन्हीं पर (बला आई) है, वही (अस्ल) दुश्मन हैं, लिहाज़ा आप उनसे बचें, अल्लाह उन्हें हलाक करे वह कहाँ फिरे जाते हैं।

(5) और जब उनसे कहा जाएः आओ रसूलुल्लाह तुम्हारे लिए इस्तिग्फार करें, तो वह (मना में) सर हिलाते हैं, और आप उन्हें देखते हैं कि वह घमंड करते हुए रूक जाते हैं।

(6) उनके हक़ में बराबर है कि आप उनके लिए इस्तिग्फार (माफी की प्रार्थना) करें या इस्तिग्फार न करें, अल्लाह उन्हें हरगिज़ नहीं बख़्शेगा, बेशक अल्लाह न फरमान क़ौम को हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता।

(7) वही हैं जो कहते हैं कि तुम उन पर खर्च न करो जो रसूलुल्लाह के पास हैं ताकि वह भाग जाएं, और अल्लाह ही के लिए हैं आसमानों और ज़मीन के खज़ाने लेकिन मुनाफिक़ समझते नहीं।

(8) वह कहते हैंः अलबत्ता अगर हम लौट कर मदीना गए तो इज्ज़त वाले लोग वहाँ से ज़लील तरीन लोगों को निकाल देंगे, और इज्ज़त अल्लाह ही के लिए है, और

उसके रसूल के लिए, और मोमिनों के लिए लेकिन मुनाफ़िक़ (इस सच्चाई को) नहीं जानते।

(9) ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दें, और जो कोई यह काम करें तो वही लोग नुक्सान पाने वाले हैं।

(10) और तुम उसमें से खर्च करो जो हमने तुम्हें रिज़्क़ दिया है, इससे पहले कि तुममें से किसी को मौत आए, फ़िर वह कहेः ऐ मेरे रब! तूने मुझे कुछ मुद्दत तक और क्यों न मुहलत दी कि मैं सदक़ा करता और नेक लोगों में से होता।

(11) और अल्लाह किसी को हरगिज़ मुहलत न देगा जब उसकी मौत आ जाएगी, और अल्लाह उससे बाखबर है जो तुम अमल करते हो।

सूरह तगाबुन-64

(यह मदनी सूरत है इसमें 18 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अल्लाह की तस्बीह करती है तो चीज़ आसमानों में और जो ज़मीन में है। उसीके लिए बादशाही है और उसी के लिए (हर क़िस्म की) हम्द है, और वह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(2) वह है जिसने तुम्हें पैदा किया, फ़िर तुममें से कोई काफिर है और और कोई मोमिन, और तुम जो अमल करते हो अल्लाह उसे खूब देखने वाला है।

(3) उसने आसमान और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया और तुम्हें सूरत दी, तो तुम्हारी सूरतें बहुत अच्छी बनाईं और उसी की तरफ लौट कर जाना है।

(4) वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते और ज़ाहिर करते हो, और अल्लाह सीनों के राज़ खूब जानता है।

(5) क्या तुम्हारे पास उन लोगों की खबर नहीं आई जिन्होंने इससे पहले कुफ़्र किया? फ़िर उन्होंने अपने आमालों का वबाल चखा, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

(6) यह इसलिए कि बेशक उनके रसूल उनके पास खुली निशानियां लाते तो वह कहतेः क्यों हमें बशर (इन्सान) राह दिखाएगा? फ़िर उन्होंने कुफ़्र किया और (हक़ से) मुँह मोड़ा और अल्लाह ने (उनसे) बेपरवाही की, और अल्लाह बेपरवह, बहुत क़ाबिले तअरीफ है।

(7) काफिरों ने दावा किया कि उन्हें (क़ब्रों से) हरगिज़ नहीं उठाया जाएगा। (ऐ नबी!) कह दीजिएः क्यों नहीं? मेरे रब की क़सम! तुम्हें ज़रूर जताए जाएँगे जो

तुमने अमल किये, और यह अल्लाह पर बिल्कुल आसान है।

(8) इसलिए तुम अल्लाह और उसके रसूल और उस नूर पर ईमान लाओ जो हमने नाज़िल किया, और अल्लाह उससे खूब बाखबर है जो तुम अमल करते हो।

(9) जिस दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा जमा होने के दिन, वह हार जीत का दिन है। और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाए और नेक अमल करे तो अल्लाह उससे उसकी बुराईयां दूर कर देगा और उसे उन जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वह उनमें हमेशा रहेंगे। यही अज़ीम कामयाबी है।

(10) और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी अयातें झुठलाईं, वही दोजख वाले हैं, वह उसमें हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है।

(11) जो मुसीबत भी आती है, वह अल्लाह ही के हुक्म से आती है, और जो कोई अल्लाह पर ईमान लाए तो वह उसके दिल को हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है और अल्लाह हर चीज़ को खूब जानने वाला है।

(12) और तुम अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। फ़िर अगर तुम (हक़ से) मुँह मोड़ो, तो हमारे रसूल का काम बस खोल कर पहुँचा देना है।

(13) अल्लाह (वह है कि) उसके सिवा कोई मअ़बूद (बर हक़) नहीं, और चाहिए कि मोमिन अल्लाह ही पर तवक्कुल (भरोसा) करें।

(14) ऐ ईमान वालों! बेशक तुम्हारी बीवियां और तुम्हारी औलाद में से कुछ तुम्हारे दुश्मन हैं, लिहाज़ा तुम उनसे बचो। और अगर माफ करो और दरगुज़र करो और बख्श दो तो बेशक अल्लाह गफूरूर्रहीम है।

(15) बिलाशुब्ह तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद फित्ना (आज़माईश) हैं, और अल्लाह ही के पास अज्रे अज़ीम है।

(16) इसलिए जहाँ तक तुमसे हो सके तुम अल्लाह से डरों और सुनो, और इताअत करो, और खर्च करो, यह तुम्हारी ज़ात के लिए बेहतर है और जिसे अपने नफ्स के लालच से बचा लिया गया, तो वही लोग कामयाबी पाने वाले हैं।

(17) अगर तुम अल्लाह को क़र्ज़ दो, क़र्ज़े हसना (अच्छा), तो वह उसे तुम्हारे लिए बड़ाएगा और तुम्हें बख्श (क्षमा कर) देगा। और अल्लाह बड़ा क़द्रदान, बहुत हलीम है।

(18) वह ग़ैब और ज़ाहिर का इल्म रखने वाला है, ज़बरदस्त, खूब हिकमत वाला है।

सूरह तलाक़-65

(यह मदनी सूरत है इसमें 12 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ऐ नबी! जब तुम औरतों को तलाक़ देने लगो तो उन्हें उनकी इद्दत के (आगाज़ के) वक़्त में तलाक़ दो, और इद्दत गिनते रहो। और अल्लाह से जो तुम्हारा रब है, डरो। तुम उन्हें उनके घरों से न निकालो, और न वह खुद निकलें, मगर यह कि वह कोई खुली बेहयाई करें, और यह अल्लाह की हदें हैं और जो शख़्स अल्लाह की हदों से आगे बड़े तो यक़ीनन उसने खुद पर जुल्म किया। (ऐ मुखातिब!) तू नहीं जानता शायद अल्लाह उस (तलाक़) के बाद कोई नई राह निकाल दे।

(2) फ़िर जब वह अपनी इद्दत (खत्म होने) को पहुँचे तो तुम उन्हें मअरूफ तरीक़े से रोक लो या उन्हें मअरूफ (अच्छे) तरीक़े से छोड़ दो, और तुम अपने में से दो इंसाफ करने वाले आदमी गवाह बना लो, और अल्लाह लिए गवाही क़ायम करो, इस (हुक्म) की उसे नसीहत की जाती है जो कोई अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए, और जो शख़्स अल्लाह से डरे तो वह उसके लिए (मुश्किलात से) निकलने का रास्ता बना देता है।

(3) और उसे रिज़्क़ देता है जहाँ से उसे गुमान तक नहीं होता। और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उस लिए काफी है, बेशक अल्लाह अपना काम पूरा कर के रहता है। बेशक अल्लाह ने हर चीज़ के लिए अन्दाज़ा मुक़र्रर कर रखा है।

(4) और वह जो हैज़ से मायूस हो जाए तुम्हारी (तलाक़ दी हुई) औरतों में से, अगर तुम शक में पड़ो तो उनकी इद्दत तीन माह है, और (इसी तरह) उनकी भी जिन्हें (अभी) हैज़ नहीं आया। और हमल (गर्भ) वाली औरतों की इद्दत बच्चा पैदा होने तक है। और जो शख़्स अल्लाह से डरे तो वह उसके लिए उसके काम में आसानी फरमाता है।

(5) यह अल्लाह का हुक्म है जिसे उसने तुम्हारी तरफ नाज़िल किया है, और जो शख़्स अल्लाह से डरे तो वह उसकी बुराईयां दूर कर देता है और उसे ज़्यादा अज्र देता है।

(6) तुम उन्हें रखो जहाँ तुम (खुद) रहते हो अपनी हैसियत के मुताबिक़, और उनको तंग करने के लिए उन्हें तकलीफ न दो। और अगर वह (तलाक़ दी हुइ या) हमल (गर्भ) वालियां हों तो बच्चा पैदा होने तक उन पर खर्च करो, फ़िर अगर वह (बच्चे को) तुम्हारे लिए दूध पिलाए तो तुम उन्हें उनकी

उजरत दो, और (यह) आपस में दस्तूर के मुताबिक़ मश्वरे से (तय) करो, और अगर तुम आपस में ज़िद पकड़ लो तो उसे कोई और औरत दूध पिलाए।

(7) चाहिए कि वुसअत वाला अपनी वुसअत के मुताबिक़ खर्च करे, और जिसे उसका रिज़्क़ नपा तुला मिले तो वह उसी में से खर्च करे जो उसे अल्लाह ने दिया। अल्लाह किसी शख़्स पर उतनी ही ज़िम्मेदारी डालता है जितना उसने उसे दिया। अल्लाह तंगी के बाद जल्द आसानी फरमा देगा।

(8) और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूल के हुक्म से सरकशी की तो हमने उनका सख़्त हिसाब लिया, और हमने उन्हें हौलनाक (दर्दनाक) अज़ाब दिया।

(9) बिलआखिर (उन बस्तियों ने) अपने करतूतों का वबाल चखा और उनके करतूतों का अन्जाम नुक्सान ही था।

(10) अल्लाह ने उनके लिए शदीद अज़ाब तैयार किया है, लिहाज़ा तुम अल्लाह से डरो ऐ अक़्ल वाले जो ईमान लाए हो! बेशक अल्लाह ने तुम्हारी तरफ ज़िक्र (कुरआन) नाज़िल किया है।

(11) (और) एक रसूल जो तुम पर अल्लाह की वाज़ेह (स्पष्ट) आयतें तिलावत करता है ताकि उन लोगों को निकाल लाए, जो ईमान ले आएं और नेक अमल करें अन्धेरों से रोशनी की तरफ। और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाए और नेक अमल करे, वह उसे उन जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वह उनमे हमेशा रहेंगे अब्द (हमेशा) तक। अल्लाह ने उसे खूब रिज़्क़ दिया है।

(12) अल्लाह वह ज़ात है जिसने सात आसमान पैदा किये और ज़मीनें भी उतनी ही, उनके दरम्यान उसका हुक्म नाज़िल होता है ताकि तुम जान लो कि बिलाशुब्ह अल्लाह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है, और बिलाशुब्ह अल्लाह ने (अपने) इल्म से हर शै को घेर रखा है।

सूरह तहरीम-66

(यह मदनी सूरत है इसमें 12 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ऐ नबी! आप हराम (अवैध) क्यों ठहराते हैं जो अल्लाह ने आपके लिए हलाल (वैध) किया है? आप अपनी बीवियों की रज़ामन्दी चाहते हैं। और अल्लाह गफूर्रुरहीम है।

(2) अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी (नाजाईज़) क़समें खोलना (तोड़ना) फर्ज़

कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा मौला (कारसाज) है, और वह खूब जानने वाला, खूब हिकमत वाला है।

(3) और जब नबी ने अपनी किसी बीवी से एक बात छुपा कर कही, फ़िर जब उसने (दूसरी को) वह बता दी और अल्लाह ने वह (बात) उस (नबी) पर ज़ाहिर कर दी तो उसने उसमें से कुछ (उस बीवी को) जताई और कुछ टाल दी। फ़िर जब उस (नबी) ने उसे वह (सारी बात) बताई तो वह कहने लगीः आपको यह किसने बताई? उस (नबी) ने फरमायाः मुझे अलीम (सब कुछ जानने वाले), खबीर (पूरी खबर रखने वाले अल्लाह) ने खबर दी है।

(4) अगर तुम दोनों अल्लाह से तौबा करती हो (तो बेहतर है) पस तुम्हारे दिल (हक़ से) हट गए हैं, और अगर तुम दोनों इस (नबी) के खिलाफ एका करोगी तो अल्लाह खुद उसका मददगार है और जिब्रईल और तमाम नेक मोमिन और उनके अलावा (तमाम) फरिश्ते (भी) मददगार हैं।

(5) अगर वह (नबी) तुम्हें तलाक़ दे दे तो शायद उसका रब उसको तुम से बेहतर बीवियां बदले में दे, मुसलमान, मोमिन, फ़रमाबरदार, तौबा करने वाली, इबादत गुज़ार, रोज़ादार, (पहले) ब्याही और कुंवारी औरतें।

(6) ऐ ईमान वालो! तुम खुद को और अपने अहलो अयाल (परिवार) को उस आग से बचाओ जिसका ईधन इन्सान और पत्थर हैं, उस पर तुन्द मिज़ाज और सख्तगीर फरिश्ते (मुक़र्रर) हैं, अल्लाह उन्हें जो हुक्म दे वह उसकी नाफरमानी नहीं करते, और वह वही करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है।

(7) ऐ कुफ्र करने वालो! तुम आज उज्र (बहाने) पेश न करो, यक़ीनन तुम्हें वही बदला दिया जाएगा जो तुम अमल (कार्य) करते थे।

(8) ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के हुजूर खालिस तौबा करो, शायद तुम्हारा रब तुमसे तुम्हारी बुराईयां दूर कर दे और तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें जारी हैं, उस दिन जब अल्लाह नबी को और उसके साथ ईमान लाने वालों को रूस्वा (अपमानित) नहीं करेगा, उनका नूर (प्रकाश) उनके आगे और उनके दाँये दौड़ता होगा वह कहेंगेः ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर और हमारी मग्फिरत फरमा बेशक तू हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(9) ऐ नबी! कुफ्फार और मुनाफिक़ीन से जिहाद कीजिए और उन पर सख्ती कीजिए, और उनका ठिकाना जहन्नम है

और वह बुरा ठिकाना है।

(10) कुफ़्र करने वालों के लिए अल्लाह ने मिसाल बयान फरमाई नूह की बीवी और लूत की बीवी की, दोनों हमारे दो नेक बन्दों के तहत (निकाह में) थी, तो उन दोनों (औरतों) ने उनकी ख़्यानत की, फ़िर वह दोनों (रसूल) उन दोनों (औरतों) को अल्लाह (के अज़ाब) से बचाने में कुछ काम न आए और उनसे कहा गयाः तुम दोनों दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ।

(11) और अल्लाह ने अहले ईमान के लिए फ़िरऔन की बीवी की मिसाल बयान की, जब उसने कहाः ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने यहाँ जन्नत में एक घर बना, और मुझे फ़िरऔन और उसके अमल (शर) से निजात दे, और मुझे ज़ालिम क़ौम से निजात दे।

(12) (और मिसाल बयान फरमाई) मरयम बिन्ते इमरान की जिसने अपनी अस्मत (इज्ज़त) की हिफाज़त की तो हमने उस (के गिरेबान) में अपनी रूह फूंकी, और उसने अपने रब के कलमात और उसकी किताबों की तस्दीक़ की, और वह फरमाबरदारों में से थी।

सूरह मुल्क-67

(यह मक्की सूरत है इसमें 30 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) वह ज़ात बड़ी बाबरकत है जिसके हाथ में बादशाही है और वह हर चीज़ पर खूब क़ादिर है।

(2) वह जिसने मौत व हयात (जिन्दगी) को पैदा किया ताकि वह तुम्हें आज़माए कि तुममें से कौन अमल में ज़्यादा अच्छा है। और वह ज़बरदस्त है खूब बख़्शने वाला।

(3) वह जिसने सात आसमान ऊपर नीचे पैदा किए। (ऐ इन्सान!) तू रहमान की तख़्लीक़ (पैदाईश) में कोई फर्क़ नहीं देखेगा, फ़िर निगाह डाल, क्या तू कोई दरार देखता है?

(4) फ़िर बार बार निगाह दौड़ा, (तेरी) निगाह ज़लील व ख़्वार (अपमानित) हो कर तेरी तरफ लौट आएगी जबकि वह थकी मानिन्द होगी।

(5) और बिलाशुब्ह हमने आसमाने दुनिया को चिरागों (सितारों) से ज़ीनत (शोभा) दी है, और उन्हें शैतानों को मार भगाने का ज़रिया बनाया है और हमने उनके लिए भड़कती आग का अज़ाब तैयार कर रखा

है।

(6) और जिन लोगों ने अपने रब से कुफ्र किया, उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है, और (वह) बुरा ठिकाना है।

(7) जब वह उसमें डाले जाएँगे तो उसकी दहाड़ सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी।

(8) क़रीब है कि वह ग़ैज़ो ग़ज़ब (गुस्से) से फट पड़े। जब भी कोई गिरोह उसमें डाला जाएगा, उसके दारोगा उनसे पूछेंगेः क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था?

(9) वह कहेंगेः क्यों नहीं यक़ीनन डराने वाला हमारे पास आया था, हमने (उस डराने वाले को) झुठलाया और कहा कि अल्लाह ने (किसी पर) कुछ नहीं उतारा, तुम तो बहुत बड़ी गुमराही में हो।

(10) और वह कहेंगेः काश हम सुनते या देखते होते तो हम दोज़खियों में न होते।

(11) फ़िर वह अपने गुनाह का एतराफ करेंगे, इसलिए दोज़खियों पर लअनत है।

(12) बेशक जो लोग अपने रब से बिन देखे डरते हैं, उनके लिए मग्फिरत और बहुत बड़ा अज्र है।

(13) और तुम अपनी बात छुपा कर कहो या पुकार कर कहो, बेशक वह सीनों के भेद जानता है।

(14) भला वह न जानेगा जिसने (सबको) पैदा किया। और वही बारिक बीन, बाखबर है।

(15) वही है जिसने ज़मीन को तुम्हारे ताबे कर दिया, लिहाज़ा तुम उसकी राहों में चलों और उस (अल्लाह) के रिज़्क़ में से खाओ, और उसी की तरफ जी उठना है।

(16) क्या तुम उस (अल्लाह) से बेख़ौफ हो गए हो जो आसमान में है, यह कि वह तुम्हें ज़मीन में धंसा दे तो अचानक वह लरज़ने (कपकपाने) लगे?

(17) या तुम उस (अल्लाह) से बेख़ौफ हो गए हो जो आसमन में है, यह कि वह तुम पर पथराव करने वाली आंधी भेजे? फ़िर जल्द तुम जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है?

(18) और बिलाशुब्ह झुठला चुके वह जो उनसे पहले थे, इसलिए (देख लो) मेरा अज़ाब कैसा था?

(19) क्या उन्होंने अपने ऊपर परिन्दे नहीं देखे, पर फेलाते और समेटते हुऐ। उन्हे (अल्लाह) रहमान के सिवा कोई नहीं थामता, बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है।

(20) भला ऐसा कौन है जो तुम्हारी फौज बन कर तुम्हारी मदद करे सिवाए रहमान के? काफिर निरे धोखे में हैं।

(21) भला ऐसा कौन है जो तुम्हें रिज़्क़ दे अगर रहमान अपना रिज़्क़ रोक ले? (कोई नहीं) लेकिन वह सरकशी और (हक़ से)

गुरैज़ (इन्कार) पर अड़े हुए हैं।

(22) भला जो शख़्स औंधा हो कर अपने चेहरे के बल चलता हो, वह ज़्यादा हिदायत याफ्ता है या वह जो बिल्कुल सीधा हो कर सिराते मुस्तक़ीम पर चलता हो?

(23) कह दीजिएः वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे कान और आँख और दिल बनाऐ, तुम कम ही शुक्र अदा करते हो।

(24) कह दीजिएः वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया, और उसी के हुज़ूर तुम इकट्ठा किये जाओगे।

(25) और वह (काफिर) कहते हैं यह (क़यामत का) वादा कब (पूरा) होगा अगर तुम सच्चे हो?

(26) कह दीजिएः बेशक (इसका) इल्म (ज्ञान) तो सिर्फ अल्लाह के पास है, और बस मैं तो वाज़ेह (खुले) तौर पर डराने वाला हूँ।

(27) फ़िर जब वह उसे क़रीब देखेंगे तो काफिरों के चेहरे बिगड़ जाएँगे और कहा जाएगाः यही है जो तुम चाहते थे।

(28) कह दीजिएः भला देखे तो! अल्लाह ख्वाह मुझे और उनको जो मेरे साथ हैं, हलाक कर दे या हम पर रहम करे तो काफिरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन पनाह देगा?

(29) कह दीजिएः वह रहमान है, हम उस पर ईमान लाए और उसी पर हमने भरोसा किया, इसलिए तुम जल्द जान लोगे कि कौन खुली गुमराही में है।

(30) कह दीजिएः भला देखो तो! अगर तुम्हारा (कुवें का) पानी गहरा हो जाए तो तुम्हारे पास निथरा पानी कौन लाएगा?

सूरह क़लम-68

(यह मक्की सूरत है इसमें 52 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ''नून'' क़सम है क़लम की और उसकी जो वह लिखते हैं।

(2) (ऐ नबी!) आप अपने रब के फ़ज़ल से मजनून (पागल) नहीं।

(3) और बेशक आपके लिए बेइन्तिहा अज्र (न खत्म होने वाला बदला) है।

(4) और यक़ीनन आप खुल्क़े अज़ीम (अच्छे स्वभाव) पर (कारबन्द) हैं।

(5) फ़िर जल्द ही आप देख लेंगे और वह (कुफ्फार) भी देख लेंगे।

(6) कि तुम में से कौन दिवाना है।

(7) बेशक आपका रब ही उसे बेहतर जानता है जो उसकी राह से भटका और वही बेहतर जानता है हिदायत (मार्ग-दर्शन) पाने वालों को।

(8) तो आप झुठलाने वालों की इताअत (आज्ञापालन) न करें।

(9) वह चाहते हैं कि आप (कुछ) नर्म पड़े तो वह भी नर्म पड़ जाएं।

(10) और आप हर क़समें खाने वाले ज़लील की बात न मानें।

(11) जो ताने देने वाला, इन्तिहाई चुगल खोर है।

(12) भलाई से रोकने वाला, हद से गुज़रने वाला, सख़्त गुनाहगार है।

(13) उज्जड, इसके अलावा हराम ज़ादा है।

(14) इसलिए कि (वह) माल और बेटियों वाला है।

(15) जब उस पर हमारी आयतें तिलावत की जाती हैं तो कहता है कि (यह) पहलों के अफसाने (कथाए) हैं।

(16) हम जल्द उसे उसकी सून्ड (नाक) पर दाग़ लगाएँगे।

(17) बेशक हमने उन्हें आज़माया जैसे हमने बाग़ वालों को आज़माया था, जब उन्होंने क़सम खाई कि सुबह होते ही उसके फल को ज़रूर तोड़ लेंगे।

(18) और वह ''इन्शाअल्लाह'' नहीं कह रहे थे।

(19) तो आपके रब की तरफ से कोई फिरने वाला (अज़ाब) उस (बाग़) पर फ़िर गया, जबकि वह सो रहे थे।

(20) फ़िर वह बाग़ कटी हुई खेती की तरह हो गया।

(21) फ़िर सुबह होते ही उन्होंने एक दूसरे को पुकारा।

(22) कि तुम अपनी खेती पर सुबह सवेरे चलो अगर तुम्हें फल तोड़ना है।

(23) इसलिए वह चल पड़े और आपस में चुपके चुपके कह रहे थे।

(24) कि आज तुम्हारे पास बाग में कोई मिस्कीन (भिखारी) दाख़िल न होने पाए।

(25) और वह सुबह सवेरे (यह सोच कर) लपकते गए कि वह (मिस्कीनों को) रोकने पर क़ादिर हैं।

(26) फ़िर जब उन्होंने बाग देखा तो कहाः यक़ीनन हम (राह) भूल गए हैं।

(27) (नहीं) बल्कि हम तो महरूम हो गए।

(28) उनका बेहतरीन कहने लगाः क्या मैंने तुम्हें नहीं कहा था कि तुम तस्बीह क्यों नहीं करते?

(29) उन्होंने कहाः पाक है हमारा रब, बेशक हम ही ज़ालिम थे।

(30) फ़िर वह एक दूसरे की तरफ मुहँ करके मलामत करने लगे।

(31) (और) कहने लगेः हाय हम पर अफसोस! बेशक हम ही सरकश थे।

(32) शायद हमारा रब बदले में इससे बेहतर हमें दे, बेशक हम अपने रब की तरफ रग़बत करने वाले हैं।

(33) इसी तरह होता है अज़ाब। और आख़िरत का अज़ाब तो सबसे बड़ा है। काश! उन्हें इल्म (ज्ञान) होता।

(34) बेशक मुत्तक़ीन के लिए उनके रब के यहाँ नेअमत के बाग हैं।

(35) क्या फ़िर हम मुसलमानों को मुजरिमों के बराबर ठहराएँगे?

(36) तुम्हें क्या हुआ, तुम कैसे फैसले करते हो?

(37) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ लेते हो?

(38) (कि) उस (किताब) में तुम्हारी मन मानी बातें हों?

(39) क्या तुमने हमसे क़यामत तक पहुँचने वाली क़सम ली हैं कि तुम्हारे लिए वह होगा जो तुम फैसला करोगे?

(40) उन से पूछे कि उनमें कौन इसका ज़िम्मा लेता हैं।

(41) क्या उनके कोई शरीक हैं? तो चाहिए कि वह अपने शरीक ले आएं अगर वह सच्चे हैं।

(42) जिस दिन पिन्डली खोल दी जाएगी और उन्हें सज्दे के लिए बुलाया जाएगा तो वह (सज्दा) न कर सकेंगे।

(43) उनकी नज़रें झुकी हुई होंगी, उन पर ज़िल्लत छा रही होगी। और बेशक (दुनिया में) उन्हें सज्दे के लिए बुलाया जाता था जब कि वह सहीह सालिम थे।

(44) लिहाज़ा छोड़ दीजिए मुझे और उसको जो इस हदीस (कुरआन) को झुठलाता है, हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता (धीरे-धीरे तबाही की तरफ) ले जाएँगे इस तरह कि उन्हें इल्म (ज्ञान) तक न होगा।

(45) और मैं उन्हें ढील देता हूँ, बेशक मेरी तदबीर (योजना) इन्तिहाई पुख़्ता है।

(46) (ऐ नबीं!) क्या आप उनसे अज्र (बदला) मांगते हैं जो वह चट्टी के बोझ से दबे जा रहे हैं?

(47) क्या उनके पास (इल्मे) ग़ैब है तो वह (उससे) लिख लाते हैं?

(48) इसलिए आप अपने रब के हुक्म के लिए सब्र करें और मछली वाले (यूनुस) की तरह न हों, जब उसने (अल्लाह को) पुकारा था जबकि वह ग़म से भरा हुआ था।

(49) अगर उसके रब का एहसान उसे न सभांल लेता तो वह चटियल मैदान में फेंका जाता जबकि वह मज़मूम (बुरी हालत में) होता।

(50) फ़िर उसके रब ने उसे नवाज़ा और उसको सालिहीन (नेक लोगों) में शामिल किया।

(51) यूं लगता है जैसे काफिर अपनी (बुरी) नज़रों से आपको फुसला देंगे जब वह यह ज़िक्र (कुरआन) सुनते हैं और कहते हैं कि बेशक वह तो यक़ीनन दिवाना है।

(52) और यह (कुरआन) तो बस जहानों के लिए नसीहत (उपदेश) है।

सूरह हक़्क़ा-69

(यह मक्की सूरत है इसमें 52 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) साबित होने वाली।

(2) क्या है साबित होने वाली?

(3) और आपको किसने खबर दी क्या है साबित होने वाली?

(4) समूद और आद ने उस तहलका खेज़ (क़यामत) को झुठलाया।

(5) तो जो समूद थे वह इन्तिहाई ऊँची ख़ौफनाक आवाज़ से हलाक किये गए।

(6) और जो आद थे वह सख़्त तेज़ बेकाबू आन्धी से हलाक हुए।

(7) अल्लाह ने उसे उन पर सात रातें और आठ दिन जड़ काटने (फना करने) के लिए मुसल्लत रखा, फ़िर तुम उस क़ौम को पछाड़े (हलाक किये) हुए देखते हो जैसे वह खजूर के खुले तने हों।

(8) फ़िर क्या आप उनके कोई निशानात देखते हों?

(9) और फ़िरऔन और जो उससे पहले थे और उलटाई गई बस्तियों वाले गुनाह करते थे।

(10) फ़िर उन्होंने अपने रब के रसूल की नाफ़रमानी की तो उस (रब) ने उन्हें निहायत सख़्त गिरफ्त में ले लिया।

(11) बेशक जब पानी में बाढ़ आई तो हमने तुम्हें बहती नांव में सवार किया।

(12) ताकि हम तुम्हारे लिए उस (अमल) को नसीहत (उपदेश) बना दें और (ताकि) याद रखने वाले कान उसे याद रखें।

(13) फ़िर जब सूर में एक ही बार फूंक मारी जाएगी।

(14) और ज़मीन और पहाड़ उठा कर एक ही चोट से रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएँगे।

(15) जो उस दिन वाक़े होने वाली (क़यामत) वाक़े होगी।

(16) और आसमान फट जाएगा, तो वह उस दिन बोदा होगा।

(17) और फरिश्ते उसके किनारों पर होंगे, और उस दिन आठ (फरिश्ते) आपके रब का अर्श अपने ऊपर उठाए होंगे।

(18) उस दिन तुम्हारी पैशी होगी और तुम्हारा कोई राज़ (रहस्य) खुफिया (छुपा) न रहेगा।

(19) फ़िर जिसे उसका आमाल नामा उसके दांये हाथ में दिया गया तो वह कहेगाः लो! मेरा आमाल नामा पढ़ो।

(20) बेशक मुझे यक़ीन था कि मुझे अपने हिसाब को मिलना है।

(21) इसलिए वह पसन्दीदा ज़िन्दगी में होगा।

(22) बहिश्ते बरीं (आलीशान जन्नत) में।

(23) उसके फल क़रीब झुके होंगे।

(24) (कहा जाएगाः) मज़े से खाओ और पीओ उस (आमाल) के बदले जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजे।

(25) और जिसे उसका आमालनामा (कर्मपत्र) उसके बांये हाथ में दिया गया तो वह कहेगाः काश! मुझे मेरा आमालनामा न दिया जाता।

(26) और मुझे खबर न होती मेरा हिसाब क्या है।

(27) काश! वही (मौत) फैसलाकुन (साबित) होती।

(28) मुझे मेरे माल ने कुछ फायदा न दिया।

(29) मेरी सुल्तानी (हुकूमत) मुझसे छीन गई।

(30) (हुक्म होगाः) उसे पकड़ो, फ़िर तौक़ (गले में जंजीर) डाल दो।

(31) फ़िर उसे जहन्नम की आग में झोंक दो।

(32) फ़िर एक जंजीर में, जिसकी पैमाईश (नाप) सत्तर गज़ है, उसे जकड़ दो।

(33) बेशक वह अल्लाह अज़ीम पर ईमान नहीं लाता था।

(34) और न मिस्कीन (गरीब) को खाना खिलाने पर शौक़ दिलाता था।

(35) लिहाज़ा आज यहाँ कोई उसका ग़मख्वार (दुख बाटने वाला) दोस्त नहीं।

(36) और ज़ख्मों के धोवन (पीप) के सिवा कोई खाना नहीं।

(37) खताकारों (पापियों) के सिवा उसे कोई नहीं खाता।

(38) तो मैं उन चीज़ों की क़सम खाता हूँ जो तुम देखते हो।

(39) और (उनकी) जो तुम नहीं देखते।

(40) बिलाशुब्ह यह (कुरआन) रसूले करीम की बात है।

(41) और यह किसी शायर की बात नहीं, तुम कम ही ईमान लाते हो।

(42) और न (यह) किसी काहिन (ज्योतिषी) की बात है, तुम कम ही नसीहत (उपदेश) पकड़ते हो।

(43) (यह तो) रब्बुलआलमीन की तरफ से नाज़िल शुदा है।

(44) और अगर यह हम पर कोई बात

गढ़ कर लगाता।

(45) तो यक़ीनन हम उसका दांया हाथ पकड़ लेते।

(46) फ़िर हम उसकी शह रग काट डालते।

(47) फ़िर तुममें से कोई एक भी (हमें) उससे रोकने वाला न होता।

(48) और बिलाशुब्ह यह (कुरआन) तो मुत्तक़ीन (परेहजगारों) के लिए नसीहत (शिक्षा) है।

(49) और यक़ीनन हमें इल्म है कि तुममें से कुछ (इसको) झुठलाते हैं।

(50) और यक़ीनन वह (झुठलाना) काफिरों के लिए हसरत की वजह है।

(51) और बेशक यह हक़्कुलयक़ीन (यक़ीन करने वाला सच) है।

(52) इसलिए अपने रब अज़ीम के नाम की तस्बीह (पवित्रता का बयान) कीजिए।

सूरह मआरिज-70

(यह मक्की सूरत है इसमें 44 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) एक साईल (मांगने वाले) ने अज़ाब मांगा जो वाक़ई होने वाला है।

(2) काफिरों पर, कोई उसे टालने वाला नहीं।

(3) उस अल्लाह की तरफ से जो ऊँचें दर्जे वाला है।

(4) फरिश्ते और रूह (जिबरील) उसकी तरफ चढ़ेंगे ऐसे दिन में जिसकी मिक़दार (अवधि) पचास हज़ार साल है।

(5) तो (ऐ नबी!) आप सब्रे जमील (बहुत अच्छा सब्र) से काम लीजिए।

(6) बेशक वह (लोग) उसको दूर देखते हैं।

(7) और हम उसे क़रीब देखते हैं।

(8) जिस दिन आसमान पिघले तांबे जैसा होगा।

(9) और पहाड़ धुनकी हुई रंगीन ऊन जैसा हो जाएंगे।

(10) और कोई जिगरी दोस्त किसी जिगरी दोस्त को न पूछेगा।

(11) हालांकि वह उन्हें दिखला भी दिए जाएंगे। मुजरिम चाहेगा काश! अज़ाब से (बचने को) अपने बेटे फिदये (जुर्माने) में दे दे।

(12) और अपनी बीवी और अपना भाई।

(13) और अपना खानदान जो उसे पनाह देता था।

(14) और जितने ज़मीन पर है सब फ़िर वह (फिदया) उसे निजात दिला दे।

(15) हरगिज़ नहीं! बेशक वह भड़कती आग है।

(16) चमड़ियां उधेड़ देने वाली।

(17) वह (हर) उस शख़्स को पुकारेगी जिसने पीठ फेरी और (हक़ से) मुँह मोड़ा।

(18) और (माल) जमा किया और सैंत सैंत (संभाल) कर रखा।

(19) बेशक इन्सान को बेसब्रा पैदा किया गया।

(20) जब उसे शर पहुँचे तो घबरा जाता है।

(21) और जब उसे ख़ैर मिले तो निहायत कंजूस बन जाता है।

(22) मगर वह नमाज़ी।

(23) जो अपनी नमाज़ पर हमेशा क़ायम हैं।

(24) और जिनके मालों में हक़ मुक़र्रर है।

(25) सवाली और महरूम का।

(26) और जो हिसाब के दिन की तस्दीक़ करते हैं।

(27) और जो अपने रब के अज़ाब से डरने वाले हैं।

(28) बेशक उनके रब का अज़ाब बेख़ौफ होने की चीज़ नहीं।

(29) और जो अपनी शर्मगाहों (गुप्तांगों) की हिफाज़त करने वाले हैं।

(30) सिवाए अपनी बीवियों या अपनी लोडियों के, फ़िर यक़ीनन उन पर कोई मलामत नहीं।

(31) फ़िर जो कोई उसके अलावा चाहे तो वही हद से गुज़रने वाले हैं।

(32) और जो अपनी अमानतें अैर अपने अहद (वचन) निभाने वाले हैं।

(33) और जो अपनी शहादतों (गवाहियों) पर क़ायम हैं।

(34) और जो अपनी नमाज़ की हिफाज़त करते हैं।

(35) वही लोग बागों में इज्ज़त वाले होंगे।

(36) फ़िर (ऐ नबी!) काफिरों को क्या हुआ है कि आपकी तरफ दौड़े आ रहे हैं।

(37) दांये से और बांये से गिरोह के गिरोह?

(38) क्या उनमें से हर शख़्स आरज़ू (इच्छा) रखता है कि उसे नेअमतों वाली जन्नत में दाख़िल किया जाएगा?

(39) हरगिज़ नहीं! बेशक हमने उन्हें उस चीज़ से पैदा किया जिसे वह जानते हैं।

(40) तो मैं मश्रिकों और मग्रिबों के रब की क़सम खाता हूँ, यक़ीनन हम क़ादिर हैं।

(41) इस बात पर कि (उन्हें) बदल कर उनसे बेहतर ले आएं, और हम आजिज़ व मगलूब नहीं।

(42) इसलिए आप उन्हें छोड़ दीजिए, वह बातें बनाएं और खेलें यहाँ तक कि अपने उस दिन से दोचार हों जिसका उनसे

वादा किया जाता है।

(43) जिस दिन वह क़ब्रों से दौड़ते निकलेंगे जैसे वह आस्तानों की तरफ दौड़ रहे हों।

(44) उनकी निगाहें झुकी होंगी, उन पर ज़िल्लत छा रही होगी। यही वह दिन है जिसका उनसे वादा किया जाता है।

सूरह नूह-71

(यह मक्की सूरत है इसमें 28 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) बेशक हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ भेजा कि तू अपनी क़ौम को डरा, इससे पहले कि उन्हें दर्दनाक अज़ाब आ ले।

(2) उसने कहाः ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं तुम्हें खुल्लम खुला डराने वाला हूँ।

(3) यह कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो और मेरी इताअत करो।

(4) वह गुनाहों से तुम्हारी मग्फिरत करेगा और तुम्हें एक मुक़र्रर वक़्त तक मुहलत देगा। बेशक जब अल्लाह का मुक़र्रर वक़्त आ जाए तो वह रूकता नहीं। काश! तुम्हें इल्म (ज्ञान) होता।

(5) उसने कहाः मेरे रब! बेशक मैंने अपनी क़ौम को रात दिन दवअत दी।

(6) चुनान्चें मेरी दअवत ने उनके (हक़ से) फरारी (दूरी) को ज़्यादा किया।

(7) और मैंने जब भी उन्हें दअवत दी ताकि तू उनकी मग्फिरत करे, तो उन्होंने अपनी उँगलियां अपने कानों में डाल लीं और अपने कपड़ो (ऊपर) लपेट लिए और ज़िद की और इन्तिहाई (बहुत ज्यादा) घमंड किया।

(8) फ़िर बेशक मैंने उन्हें खुली दअवत दी।

(9) फ़िर मैंने उनसे ऐलानिया कहा और चुपके चुपके भी समझाया।

(10) इसलिए मैंने कहाः तुम अपने रब से माफी मांगों। बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है।

(11) वह तुम पर आसमान से मूसलाधार बारिश बरसाऐगा।

(12) और तुम्हें माल और बेटों से बढ़ायेगा और तुम्हारे लिए बाग पैदा करेगा और नहरे जारी करेगा।

(13) तुम्हें क्या हुआ है कि अल्लाह के लिए वक़ार (अज़मत) का अक़ीदा नहीं रखते?

(14) हालांकि उसने तुम्हें कई मरहलों में पैदा किया है।

(15) क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने सात आसमान तह ब तह कैसे बनाए?

(16) और उसने उनमें चाँद को रोशन

और सूरज को चिराग बनाया?

(17) और अल्लाह ही ने तुम्हें ज़मीन से (खास अन्दाज़े से) उगाया?

(18) फ़िर वह तुम्हें उसमें लौटाएगा, और फ़िर तुम्हें (दोबारा) निकालेगा।

(19) और अल्लाह ने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया।

(20) ताकि तुम उसकी खुली राहों में चलो।

(21) नूह ने कहाः ऐ मेरे रब! बेशक उन्होंने मेरी नाफरमानी की और उनका इत्तेबा किया जिन्हें उनके माल और औलाद ने खसारे (नुक्सान) ही में बढ़ाया।

(22) और उन्होने बड़े बड़े फरेब (धोखे) किए।

(23) और उन्होंने कहाः तुम अपने मअबूदों को न छोड़ो, और न छोड़ो वद्द का और न सुवाअ को न यगूस और न यऊक़ और न नसर को।

(24) और उन्होंने बहुतो को गुमराह किया, और (ऐ अल्लाह!) तू ज़ालिमों को ज़लालत ही में ज़्यादा कर।

(25) वह अपनी खताकारियों (पापों) की वजह से गर्क़ किये गए, फ़िर दोज़ख में दाख़िल किये गए, तो उन्होंने अल्लाह के सिवा कोई अपना मददगार न पाया।

(26) और नूह ने कहाः ऐ मेरे रब! ज़मीन पर बसने वाले किसी काफिर को न छोड़।

(27) बिलाशुब्ह अगर तू उन्हें छोड़ देगा तो वह तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और (आईन्दा) फाजिर काफिर ही जनेंगे।

(28) ऐ मेरे रब! तू मेरी और मेरे वाल्दैन की मग्फिरत फरमा और (हर) उस शख्स की जो मेरे घर में मोमिन हो कर दाख़िल हुआ और मोमिन और मोमिनात की (मग्फिरत कर) और ज़ालिमों को बरबादी और हलाकत ही में ज़्यादा कर।

सूरह जिन्न-72

(यह मक्की सूरत है इसमें 28 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) कह दीजिएः मेरी तरफ वह्यी की गई हे कि जिन्नों की एक जमाअत ने (कुरआन) ग़ौर से सुना, तो उन्होंने कहाः बेशक हमने एक अजीब कुरआन सुना है।

(2) वह रूश्द व हिदायत (मार्ग-दर्शन) की राह दिखाता है, तो हम उस पर ईमान लाए हैं, और हम किसी को भी अपने रब का शरीक नहीं ठहराएंगे।

(3) और यह कि हमारे रब की शान बहुत ऊँची है, न उसने (अपनी) कोई बीवी बनाई और न औलाद।

(4) और यह कि हमारे बेवक़ूफ़? अल्लाह की बाबत नाहक़ झूठी बातें लगाते रहे हैं।

(5) और यह कि हमारा ख़्याल था कि इन्सान और जिन्न अल्लाह पर हरगिज़ झूठ नहीं बोलेंगे।

(6) और बेशक इन्सानों के कुछ मर्द जिन्नों के कुछ मर्दों की पनाह पकड़ते थे, तो उन्होंने उनकी सरकशी में बढ़ाया।

(7) और यह कि उन्होंने ख़्याल किया था कि जैसे तुम (जिन्नों) ने ख़्याल किया था कि अल्लाह किसी को दोबारा नहीं उठाएगा।

(8) और यह कि हमने आसमान को टटोला तो उसे सख़्त पहरेदारों और शहाबो (शोलों) से भरा पाया।

(9) और यह कि हम आसमान के ठिकानों में सुन गुन लेने को बैठा करते थे, इसलिए अब जो सुनने की कोशिश करता है तो एक शहाब अपनी घात में पाता है।

(10) और यह कि हम नहीं जानते कि क्या ज़मीन वालों के लिए बुरा इरादा किया गया है या उनके रब ने उनके लिए भलाई का इरादा किया है।

(11) और यह कि हममें से नेक भी हैं और उसके सिवा भी हैं, हम मुख़्तलिफ तरीक़ों (मज़हब) पर थे।

(12) और यह कि हमें यक़ीन हो चुका कि हम अल्लाह को ज़मीन में हरगिज़ आजिज़ (मजबूर) नहीं कर सकते और न (कहीं) भाग कर ही आजिज़ कर सकते हैं।

(13) और यह कि जब हमने हिदायत (की बात) सुनी तो उस पर ईमान ले आए, फ़िर जो कोई अपने रब पर ईमान लाए तो उसे न किसी नुक्सान का ख़ौफ होगा और न ज़ुल्म का।

(14) और यह कि हममें मुसलमान भी हैं और ज़ालिम भी, फ़िर जो कोई इस्लाम लाए तो उन्होंने हिदायत (मार्ग-दर्शन) की राह ढूढ़ ली।

(15) और लेकिन जो ज़ालिम हैं तो वह जहन्नम का ईंधन हैं।

(16) और (वह्यी की गई है) कि अगर (लोग) सीधी राह पर क़ायम रहते तो हम उन्हें खूब सैराब करते (पिलाते)।

(17) ताकि हम उसमें उन्हें आज़माएं, और जो कोई अपने रब के ज़िक्र से मुँह मोड़ेगा तो उसे वह बढ़ते चढ़ते अज़ाब में मुब्तिला करेगा।

(18) और यह कि मस्जिदें अल्लाह ही के लिए हैं, लिहाज़ा अल्लाह के साथ किसी को शरीक न पुकारो।

(19) और यह कि जब अल्लाह का बन्दा (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह को पुकारने के लिए खड़ा हुआ तो क़रीब था कि लोग (कुफ्फार) उस पर टूट

पड़ें।

(20) कह दीजिए बेशक में अपने रब ही को पुकारता हूँ और उसके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता।

(21) कह दीजिएः बिलाशुब्ह मैं तुम्हारे लिए किसी नुक्सान का इख़्तियार नहीं रखता और न भलाई का।

(22) कह दीजिएः यक़ीनन मुझे अल्लाह (के अज़ाब) से कोई पनाह न देगा और उसके सिवा मैं हरगिज़ कोई जाए पनाह नहीं पाऊंगा।

(23) अल्लाह का हुक्म और उसके पैगाम पहुँचाने के सिवा (मैं कोई इख़्तियार नहीं रखता) और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करे तो बेशक उसके लिए आतिशे जहन्नम (की आग) है, वह उसमें हमेशा रहेंगे अब्द तक।

(24) यहाँ तक कि जब वह देखेंगे जिस (अज़ाब) का उनसे वादा किया जाता है तो उन्हें जल्द मालूम हो जाएगा कि किस के मददगार कमज़ोर और तदाद में कमतर हैं।

(25) कह दीजिएः मैं नहीं जानता कि जिस (अज़ाब) का तुमसे वादा किया जाता है वह क़रीब है या उसके लिए मेरे रब ने कोई लम्बी मुद्दत रखी है।

(26) (वही) आलिमुलगैब है, वह अपना ग़ैब किसी पर ज़ाहिर नहीं करता।

(27) सिवाए किसी रसूल के जिसे वह पंसद करे, फ़िर बेशक वह उस (रसूल) के आगे और पीछे निगेहबान लगा देता है।

(28) ताकि वह मालूम करे कि उन्होंने अपने रब के पैगाम पहुँचा दिये हैं, और उसने उनके गिर्दो पेश (चारो तरफ) को घेरे रखा हुआ है और उसने हर चीज़ को शुमार कर रखा है।

सूरह मुज़्ज़म्मिल-73

(यह मक्की सूरत है इसमें 20 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ऐ चादर में लिपटने वाले!

(2) रात में क़याम कीजिए मगर थोड़ा सा।

(3) (यानी) रात का निस्फ (आधा), या उससे थोड़ा सा कम कीजिए।

(4) या उस पर (कुछ) ज़्यादा कीजिए और कुरआन खूब ठहर ठहर कर पढ़े।

(5) यक़ीनन हम जल्द आप पर एक भारी बात डालेंगे।

(6) बिलाशुब्ह रात का उठना (नफ्स के) कुचलने में ज़्यादा सख़्त और दुआ ज़िक्र के लिए मुनासिब तर (उचित) है।

(7) यक़ीनन दिन में आपके लिए बहुत

मसरूफियत (काम) है।

(8) और अपने रब का नाम ज़िक्र कीजिए और सब से कट कर उसी की तरफ मुतवज्जा (ध्यानमग्न) हो जाए।

(9) (वह) मश्रिक (पूरब) व मग्रिब (पश्चिम) का रब है, उसके सिवा कोई मअ्बूद नहीं, लिहाज़ा उसी को कारसाज़ (कामों का बनाने वाला) बना लीजिए।

(10) और जो कुछ वह कहते हैं उस पर सब्र कीजिए और उन्हें अच्छे तरीक़े से छोड दीजिए।

(11) और मुझे और झुठलाने वाले आसूदा हाल (खुशहाल) लोगों का तन्हा छोड़ दीजिए और उन्हें थोड़ी सी मुहलत दीजिए।

(12) बेशक हमारे पास बेड़ियां और भड़कती आग है।

(13) और गले में अटकने वाला खाना और दर्दनाक अज़ाब है।

(14) जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कांपेंगे और पहाड़ रेत के भुर भुरे टीले होंगे।

(15) बेशक हमने तुम्हारी तरफ एक रसूल भेजा जो तुम पर शाहिद (गवाह) है जैसे हमने फ़िरऔन की तरफ रसूल भेजा।

(16) इसलिए फ़िरऔन ने रसूल की नाफरमानी की तो हमनें उसे निहायत सख़्ती से पकड़ लिया।

(17) फ़िर तुम (अज़ाब से) कैसे बचोगे अगर तुमने उस दिन का इन्कार किया जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा?

(18) जिस (की शिद्दत) से आसमान फ़ट जाएगा। उस (अल्लाह) का वादा हो कर रहना है।

(19) बेशक यह (कुरआन) तो नसीहत (उपदेश) है, फ़िर जो कोई चाहे अपने रब की राह पकड़े।

(20) यक़ीनन आपके रब को इल्म है कि आप क़रीबन दो तिहाई रात या निस्फ (आध ाी) रात या एक तिहाई रात क़याम करते (नमाज़ पढ़ते) हैं और आपके साथियों में से एक गिरोह भी। और अल्लाह ही रात और दिन का (पूरा) अन्दाज़ा करता है। उसे इल्म है कि तुम निभा नहीं सकोगे, इसलिए उसने तुम पर मेहरबानी की, फ़िर कुरआन में से जितना आसान हो तुम पढ़ो। उसे इल्म है कि तुम में कितने बीमार होंगे और कितने और ज़मीन में अल्लाह का फ़ज़ल ढुढंते फिरेंगे, और कितने और अल्लाह की राह में लड़ेंगे, इसलिए इस (कुरआन) में से जितना आसान हो तुम पढ़ो, और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और अल्लाह को क़र्ज़े हस्ना (अच्छा कर्ज़ा) दो। और तुम अपने आपके लिए जो नेकी भेजोगे तो उसे अल्लाह के यहाँ बेहतर और ज़्यादा अज्र वाली पाओगे। और अल्लाह से इस्तिग्फार (माफी मांगा) करो। बेशक

अल्लाह गफूरूर्रहीम (माफ करने वाला, रहम करने वाला) है।

सूरह मुद्दस्सिर-74

(यह मक्की सूरत है इसमें 56 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ऐ लिहाफ में लिपटने वाले!

(2) उठे और डराऐ।

(3) और अपने रब की बड़ाई बयान कीजिए।

(4) और अपने कपड़े पाक रखे।

(5) और नापाकी छोड़ दीजिए।

(6) और अहसान (परोपकार) करके ज़्यादा लेने की तमन्ना (इच्छा) न कर।

(7) और अपने रब के लिए सब्र कीजिए।

(8) पस जब सूर फूंका जाएगा।

(9) तो वह दिन सख्त मुश्किल दिन होगा।

(10) काफिरों के लिए आसान न होगा।

(11) मुझे और उसको तन्हा छोड़ दीजिए जिसे मैंने अकेला ही पैदा किया।

(12) और उसे ज़्यादा माल दिया।

(13) और हाज़िर रहने वाले बेटे (दिए)।

(14) और उसके लिए खूब फराखी का सामान किया।

(15) फ़िर वह लालच रखता है मैं (उसे) ज़्यादा दूं।

(16) हरगिज़ नहीं! बिलाशुब्ह वह हमारी आयतों से सख्त दुश्मनी रखता है।

(17) मैं उसे जल्द मुश्किल चढ़ाई चढ़ाऊंगा।

(18) बेशक उसने गौरो फ़िक्र किया और अन्दाज़ा लगाया।

(19) सो वह मारा जाए! कैसा अन्दाज़ा लगाया?

(20) फ़िर वह मारा जाए! कैसा अन्दाज़ा लगाया?

(21) फ़िर उसने देखा।

(22) फ़िर त्योरी चढ़ाई और मुँह बिसोरा।

(23) फ़िर पीठ फेरी और घमंड किया।

(24) फ़िर उसने कहाः यह (कुरआन) तो सिर्फ जादू है जो पहले से चला आ रहा है।

(25) यह तो सिर्फ एक बशर (इन्सान) की बात है।

(26) मैं जल्द उसे सक़र (जहन्नम) में डालूंगा।

(27) और आप क्या समझे कि सक़र क्या है?

(28) वह न बाक़ी रखेगी और न छोड़ेगी।

(29) चमड़ी झुलसा देने वाली है।

(30) उस पर उन्नीस (फरिश्ते मुक़र्रर) हैं।

(31) और हमने फरिश्ते ही दोज़ख के

निगराँ बनाए हैं, और हमने उनकी तदाद ही काफिरों के लिए आज़माईश बना दी है ताकि अहले किताब यक़ीन करें और ईमानदारों का ईमान ज़्यादा हो, और अहले किताब मोमिन शक में न पढ़े, और ताकि दिल के रोगी और काफिर कहें: इस मिसाल से अल्लाह की क्या मुराद है? उसी तरह अल्लाह जिसे चाहे गुमराह करता है और जिसे चाहे हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है। और आपके रब के लश्कारों को बस वही जानता है। और वह (जहन्नम) बशर (इन्सान) के लिए नसीहत (उपदेश) ही तो है।

(32) हरगिज़ नहीं! क़सम है चाँद की।

(33) और रात की जब वह ढल जाए।

(34) और सुबह की जब वह रोशन हो।

(35) बिलाशुब्ह वह (जहन्नम) बड़ी (हौलनाक) चीज़ों में से एक है।

(36) बशर (इन्सान) के लिए डरावा है।

(37) उसके लिए (डरावा) जो तुममें से आगे (नेकी की तरफ) बढ़ना या पीछे हटना चाहे।

(38) हर नफ्स ने जो किया उसके बदले वह गिरवी है।

(39) दायें (हाथ) वालों के सिवा।

(40) वह बागाते बहिश्त (जन्नत के बाग़) में होंगे, आपस में सवाल करेंगे।

(41) मुजरिमों के बारे में।

(42) (उनसे पूछेंगे:) तुम्हें किस चीज़ ने जहन्नम में डाला?

(43) वह कहेंगे: हम नमाज़ियों में से नहीं थे।

(44) और हम मिस्कीन (गरीबों) को खाना नहीं खिलाते थे।

(45) और हम (बातिल में) मशगूल (व्यस्त) होने वालों के साथ मशगूल होते थे।

(46) और हम रोज़े जज़ा (बदले के दिन) को झुठलाते थे।

(47) यहाँ तक कि हमें मौत ने आ लिया।

(48) फ़िर सिफारशियों (सिफारिश करने वालों) की सिफारिश उन्हें नफा न देगी।

(49) फ़िर उन्हें क्या हुआ है कि नसीहत (उपदेश) से मुँह मोड़ते हैं?

(50) जैसे वह बिदके हुए गधे हों।

(51) जो शेर से भागे हों।

(52) बल्कि उनमें से हर आदमी चाहता है कि उसे खुले सहीफे दिए जाऐं।

(53) हरगिज़ नहीं! बल्कि वह आख़िरत से नहीं डरते।

(54) हरगिज़ नहीं! यक़ीनन यह (कुरआन) एक नसीहत (उपदेश) है।

(55) तो जो कोई चाहे उसे याद करे।

(56) और वह (कुफ़्फ़ार) उसे याद नहीं करेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे। वह तक़्वा के लायक़ और मग्फिरत के लायक़ है।

सूरह क़ियामा-75

(यह मक्की सूरत है इसमें 40 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) मैं क़सम खाता हूँ क़यामत के दिन की।

(2) और क़सम खाता हूँ नफ्से मलामत गिर (मन को धिक्कार करने वाले) की।

(3) क्या इन्सान समझता है कि हम उसकी हड्डिया जमा नहीं कर पाएंगे?

(4) क्यों नहीं! बल्कि हम तो उसकी पोर पोर ठीक करने पर क़ादिर हैं।

(5) बल्कि इन्सान तो चाहता है कि आइन्दा भी फिस्क़ व फिजूर (बेकार) के काम करे।

(6) वह यू पूछता है क़यामत कब है?

(7) चुनान्चें जब आँखें पथरा जाएंगी।

(8) और चाँद को गहन हो जाएगा।

(9) और जमा कर दिए जाएंगे सूरज और चाँद।

(10) इन्सान उस दिन कहेगाः फरार होने (भागने) की जगह कहाँ है।

(11) हरगिज़ नहीं! (वहाँ) कोई पनाहगाह नहीं।

(12) उस दिन तेरे रब के सामने जा ठहरना होगा।

(13) उस दिन इन्सान को बता दिया जाएगा जो उसने आगे भेजा और पीछे छोड़ा।

(14) बल्कि इन्सान खुद अपने नफ्स पर खुब शाहिद (गवाह) है।

(15) अगरचे वह अपनी (कितनी ही) मअज़रते (मजबूरियां) पेश करे।

(16) (ऐ नबी!) आप इस (कुरआन) को जल्दी याद करने के लिए अपनी ज़बान को हरकत दें।

(17) यक़ीनन उसका (आपके सीने में) जमा करना और (आपसे) उसका पढ़वा देना हमारे ज़िम्मे है।

(18) फ़िर जब हम उसे पढ़वा चुके तो आप उसके पढ़ने की इत्तेबा करें।

(19) फ़िर यक़ीनन उसकी वज़ाहत हमारे ज़िम्मे है।

(20) हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम दुनिया को पसंद करते हो।

(21) और आख़िरत को छोड़ देते हो।

(22) उस दिन (कई) चेहरे तरो ताज़ा होंगे।

(23) अपने रब की तरफ देखते होंगे।

(24) और उस दिन (कई) चेहरे उदास होंगे।

(25) वह समझेंगे कि उनसे कमर तोड़ मामला किया जाएगा।

(26) हरगिज़ नहीं! जब (जान) हंसली तक आ पहुचेंगी।

(27) और कहा जाएगाः कौन है झाड़फूकं करने वाला?

(28) और वह समझेगा यह वक़्त जुदाई का है।

(29) और पिन्डली, पिन्डली से लिपट जाएगी।

(30) उस दिन आपके रब की तरफ चलना होगा।

(31) न तो उसने तस्दीक़ की और न नमाज़ पढ़ी।

(32) बल्कि उसने (हक़ को) झुठलाया और मुँह मोड़ा।

(33) फ़िर अपने अहलो अयाल (परिवार वालों) के पास अकड़ता हुआ गया।

(34) तेरे लिए हलाकत पर हलाकत है।

(35) फ़िर तेरे लिए हलाकत पर हलाकत है।

(36) क्या इन्सान समझता है कि उसे यूंही बेकार (बिला हिसाब किताब) छोड़ दिया जाएगा?

(37) क्या वह मनी का एक नुत्फा नहीं था जो (गर्भ में) टपकाया जाता है?

(38) फ़िर वह लोथड़ा बना, फ़िर अल्लाह ने पैदा किया और उसकी नोक पलक संवारी।

(39) फ़िर उसने मर्द और औरत का जोड़ा बनाया।

(40) क्या वह (अल्लाह) इस बात पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे?

सूरह दह्र-76

(यह मदनी सूरत है इसमें 31 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) यक़ीनन (हर) इन्सान पर ज़माने से एक ऐसा वक़्त गुज़र चुका है जब वह कोई क़ाबिले ज़िक्र शै (चीज़) न था।

(2) बेशक हमने इन्सान को मखलूत (मिल जुले) नुत्फे से पैदा किया, हम उसे आज़माना चाहते हैं, इसलिए हमने उसको सुनने, देखने वाला बना दिया।

(3) बेशक हमने उसे रास्ते की हिदायत दी, चाहे शुक्रगुज़ार बने या नाशुक्रा।

(4) बिलाशुब्ह हमने काफिरों के लिए जंजीरें और तौक़ और भड़कती आग तैयार कर रखी है।

(5) बेशक नेक लोग ऐसे जाम से पिएंगे जिसमें काफूर की मिलावट होगी।

(6) (वह) एक चश्मा (झरना) है जिससे अल्लाह के बन्दे पिएंगे और (जिधर चाहेंगे) उसकी शाखें निकाल ले जाएंगे।

(7) वह अपनी नज़्रें पूरी करते और उस

दिन से ख़ौफ खाते हैं जिसकी आफत (हर तरफ) फेली होगी।

(8) और वह खाना खिलाते हैं, उसकी मुहब्बत के बावजूद, मिस्कीनों और यतीमों और क़ैदियों को।

(9) (और कहते हैं:) बस हम तो तुम्हें अल्लाह की खातिर खाना खिलाते हैं, हम तुम से जज़ा (बदला) और शुक्रगुज़ारी नहीं चाहते।

(10) हम अपने रब से चेहरे बिगाड़ देने वाले निहायत सख्त दिन का ख़ौफ खाते हैं।

(11) फ़िर अल्लाह उन्हें उस दिन के शर (अज़ाब) से बचा लेगा और ताज़गी और सुरूर से नवाज़ेगा।

(12) और उनके सब्र के बदले उन्हे जन्नत और रेशमी लिबास देगा।

(13) वह जन्नत में मसनदों पर तकिये लगाए बैठे होंगे, वहाँ न धूप देखेंगे और न शदीद सर्दी।

(14) और उस (जन्नत) के साये उन पर झुके होंगे, और उसके (फलों के) गुच्छे उनके ताबे फरमान बन दिए जाएंगे।

(15) और उन पर चाँदी के बरतन और शीशे के सागर फिराए जाएंगे।

(16) शीशे भी चाँदी (की क़िस्म) के, (साक़ी) उन्हें ठीक ठीक अन्दाज़े से भरेंगे।

(17) और वहाँ उन्हें ऐसे जाम पिलाए जाएँगे जिनमें सौंठ की मिलावट होगी।

(18) (यह) जन्नत में एक चश्मा (नहर) है जिसे सलसबील का नाम दिया गया है।

(19) और उनकी खिदमत में सदा नौजवान रहने वाले लड़के फिरते होंगे। जब तू उन्हें देखेगा तो उन्हें बिखरे हुए मोती समझेगा।

(20) और जब तू वहाँ (किसी भी तरफ) देखेगा तो नेअमतें ही नेअमतें और बहुत बड़ी सल्तनत देखेगा।

(21) उन (के तन) पर बारीक, सब्ज़ और रेशम के कपड़े (लिबास) होंगे, और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उनका रब उन्हें पाक शराब पिलाएगा।

(22) (कहा जाएगा:) बिलाशुब्ह यह तुम्हारी जज़ा (बदला) है और तुम्हारी कोशिश क़ाबिले क़दर है।

(23) यक़ीनन हम ही ने आप पर यह कुरआन थोड़ा थोड़ा कर के नाज़िल किया है।

(24) इसलिए आप अपने रब के हुक्म के लिए सब्र कीजिए और उनमें से किसी गुनहगार या नाशुक्रे की इताअत न कीजिए।

(25) और सुबह व शाम अपने रब के नाम का ज़िक्र कीजिए।

(26) और कुछ (हिस्सा) रात में उसे सज्दे कीजिए और रात गए तक उसकी तस्बीह कीजिए।

(27) बेशक यह लोग दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और भारी दिन (क़यामत) को पशे पुश्त डालते हैं।

(28) हम ही ने उन्हे पैदा किया और उनके जोड़े मज़बूत किए। और जब हम चाहें बदल कर उन जैसे (और लोग) ले आएं।

(29) बेशक यह एक नसीहत (उपदेश) है, फ़िर जो चाहे अपने रब की तरफ (पहुँचने वाली) राह इख़्तियार कर ले।

(30) और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह चाहे। बेशक अल्लाह अलीम, हकीम है।

(31) वह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करता है और ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार किया है।

सूरह मुर्रसलात-77

(यह मक्की सूरत है इसमें 50 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) लगातार भेजी गई हवाओं की क़सम!

(2) फ़िर तन्द व तेज़ चलती तूफ़ानी हवाओं की।

(3) और (मेंह बरसाने, बादल) फेलाने वाली हवाओं की क़सम।

(4) फ़िर उन्हें फाड़ कर जुदा जुदा करने वाली हवाओं की।

(5) फ़िर ज़िक्र उतारने वाले फरिश्तों की (क़सम)।

(6) अज़्र (खत्म करने) या डर सुनाने को।

(7) यक़ीनन तुमसे जिस (क़यामत) का वादा किया जाता है वह ज़रूर वाक़े हो कर रहेगा।

(8) फ़िर जब सितारे बेनूर कर दिए जाएंगे।

(9) और जब आसमान फाड़ दिया जाएगा।

(10) और जब पहाड़ों की धज्जियां उड़ा दी जाएंगी।

(11) और जब रसूलों को मुक़र्रर वक़्त पर लाया जाएगा।

(12) (कहा जाएगाः) किस दिन के लिए उन्हें ठहराया गया था?

(13) फैसले के दिन के लिए।

(14) और आप क्या समझे फैसले का दिन क्या है?

(15) उस दिन झुठलाने वालों के लिए बरबादी है।

(16) क्या हम पहले लोगों को हलाक नहीं कर चुके?

(17) फ़िर हम पिछलों को उनके पीछे लगाएंगे।

(18) हम मुजरिमों से यही कुछ करते हैं।

(19) उस दिन झुठलाने वालों के लिए तबाही है।

(20) क्या हमने तुम्हें हक़ीर पानी (मनी) से पैदा नहीं किया?

(21) फ़िर हमने उसे एक महफ़ूज़ जगह रखा।

(22) एक मुक़र्ररा अन्दाज़े (मुद्दत) तक।

(23) फ़िर हमने अन्दाज़ा लगाया तो क्या खूब अन्दाज़ा लगाने वाले हैं।

(24) उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत (बरबादी) है।

(25) क्या हमने नहीं बनाई ज़मीन समेटने वाली।

(26) ज़िन्दों को और मुर्दों को?

(27) और हमने उसमें मज़बूत (जमे हुए) ऊँचे पहाड़ बनाए और तुम्हें मीठा पानी पिलाया।

(28) उस दिन झुठलाने वालों के लिए तबाही है।

(29) (कहा जाएगाः) चलो उस (अज़ाब) की तरफ जिसको तुम झुठलाते थे।

(30) चलो तीन शाखों वाले साये (धुंऐं) की तरफ।

(31) न ठन्डक पहुँचाने वाला और न शोलों से बचाव करे।

(32) बेशक जहन्नम (आग के इतने बड़े) शरारे (गोले) फेकेगा जैसे महल।

(33) जैसे वह ज़र्द ऊँट हों।

(34) उस दिन झुठलाने वालों के लिए बरबादी है।

(35) यह (वह) दिन है कि (लोग) बोल नहीं सकेंगे।

(36) और न उन्हें इजाज़त मिलेगी कि वह माज़रत (बहाना) करे सकें।

(37) उस दिन झुठलाने वालों के लिए तबाही है।

(38) यह फैसले का दिन है? हम तुम्हें और पहलों को जमा करेंगे।

(39) फ़िर अगर तुम्हारे पास कोई चाल है तो मेरे खिलाफ चलो।

(40) उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत है।

(41) बेशक मुत्तक़ी लोग छाँवों में और बहते झरनों में होंगे।

(42) और (लज़ीज़) मेवों में जिस क़िस्म के वह चाहेंगे।

(43) (कहा जाएगाः) मज़े से खाओ और पीओ, उसके बदले जो तुम अमल करते रहे।

(44) बेशक हम नेकों को इसी तरह बदला देते हैं।

(45) उस दिन झुठलाने वालों के लिए बरबादी है।

(46) (ऐ झुठलाने वालों!) तुम (दुनिया में) थोड़ा सा खाओ और फायदा उठाओ, बेशक तुम मुजरिम हो।

(47) उस झुठलाने वालों के लिए बरबादी

है।

(48) और जब उनसे कहा जाए (अल्लाह के आगे) रूकू करो तो वह रूकू नहीं करते।

(49) उस दिन झुठलाने वालों के लिए बरबादी है।

(50) फ़िर इस (कुरआन) के बाद वह किस बात पर ईमान लाएंगे?

सूरह नबा-78

(यह मक्की सूरत है इसमें 40 आयतें और 24 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) वह आपस में किस चीज़ के बारे में सवाल करते हैं?

(2) उस अज़ीम खबर के बारे में।

(3) जिसमें वह इख्तिलाफ (मतभेद) करते हैं।

(4) हरगिज़ नहीं! जल्द ही वह जान लेंगे।

(5) फ़िर हरगिज़ नहीं! जल्द ही वह जान लेंगे।

(6) क्या हमने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया?

(7) और पहाड़ों को मेंखें (कीले) (नहीं बनाया?)।

(8) और हमने तुम्हें जोड़ा जोड़ा पैदा किया।

(9) और हमने तुम्हारी नींद को आराम का ज़रिया बनाया।

(10) और हमने रात को तुम्हारे लिए लिबास बनाया।

(11) और हमने दिन को रोज़ी कमाने का वक़्त बनाया।

(12) और हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए।

(13) और हमने एक रोशन चिराग़ (सूरज) बनाया।

(14) और हमने भरे बादलों से खूब बरसने वाला पानी नाज़िल किया।

(15) ताकि हम उसके ज़रिये से अनाज और सब्ज़ीयां निकालें।

(16) और घने बागात (उगाऐं)।

(17) बेशक फैसले का दिन एक मुक़र्ररा वक़्त है।

(18) जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो तुम गिरोह दर गिरोह चले आओगे।

(19) और आसमान खोल दिया जाएगा तो (उसमें) दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे।

(20) और पहाड़ चलाए जाएँगे तो वह रेत की तरह हो जाएंगे।

(21) बेशक दोज़ख ताक में है।

(22) सरकशों का ठिकाना है।

(23) वह उसमें मुद्दतों पढ़े रहेंगे।

(24) वह उसमें किसी ठन्डक का मज़ा चखेंगे न किसी पानी का।

(25) (हाँ!) मगर खौलता पानी और बहती पीप।

(26) (यह है) बदला पूरा।

(27) उन्हें तो हिसाब की उम्मीद ही न थी।

(28) उन्होंने हमारी आयतों को बेबाकी से झुठलाया।

(29) और हमने हर चीज़ को एक किताब में गिन रखा है।

(30) लिहाज़ा अब तुम अपने किये का मज़ा चखो, हम तुम्हारा अज़ाब बढ़ाते ही रहेंगे।

(31) बेशक मुत्तक़ी लोगों के लिए कामयाबी है।

(32) बागात और अंगूर हैं।

(33) और नवजवान हम उम्र औरतें।

(34) और झलकते हुए जाम हैं।

(35) वह जन्नत में न तो बेहूदा बातें सुनेंगे और न झूठ।

(36) उन्हें आपके रब की तरफ से नेक आमाल का यह बदला मिलेगा जो उनके लिए काफी इनआम होगा।

(37) जो आसमानों और ज़मीन का और उनके दरम्यान तमाम चीज़ों का रब है, निहायत मेहरबान है, वह उससे बात करने का इख़्तियार नहीं रखेंगे।

(38) जिस दिन जिब्रईल और (सब) फरिश्ते उसके हुजूर सफ बस्ता (पक्तियों में) खड़े होंगे, उससे सिर्फ वही कालाम कर सकेगा जिसे रहमान इजाज़त देगा और वह दुरूस्त (ठीक) बात कहेगा।

(39) यह दिन बरहक़ है, इसलिए जो चाहे अपने रब क पास ठिकाना बना ले।

(40) बेशक हमने तुम्हें जल्द आने वाले अज़ाब से डरा दिया है, उस दिन इन्सान वह (सब कुछ) देखेगा जो उसके दोनों हाथों ने आगे भेजा होगा और काफिर कहेगाः काश! मैं मिट्टी हो जाता।

सूरह नाज़ियात-79

(यह मक्की सूरत है इसमें 46 आयतें और 2 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) क़सम है डूब कर रूह निकालने वाले (फरिश्तों) की।

(2) और आसनी से रूह निकालने वालों की।

(3) और तेज़ी से तेरने वालों की।

(4) फ़िर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की।

(5) फ़िर काम की तदबीर करने वालों की।

(6) जिस दिन कांपने वाली (ज़मीन) कांपेगी।

(7) उसके पीछे आएगी पीछे आने वाली (क़यामत)।

(8) उस दिन कई दिल धड़कते होंगे।

(9) उनकी आँखें झुकी होंगी।

(10) वह (काफिर) कहते हैंः क्या हम यक़ीनन पहली हालत में लौटाए जाएंगे?

(11) क्या जब हम गली सड़ी हड्डिया हो जाएँगे?

(12) कहते हैं कि उस वक़्त लौटना तो खसारे (नुक्सान) वाला है।

(13) इसलिए वह (क़यामत) तो सिर्फ एक (ख़ौफनाक) डांट होगी।

(14) तब लोग एक दम खुले मैदान में (जमा) होंगे।

(15) यक़ीनन आपके पास मूसा की बात आ चुकी है।

(16) जब उसके रब ने मुक़द्दस वादी तूवा में उसे पुकारा था।

(17) (कि) फ़िरऔन की तरफ जाओ, बेशक उसने सरकशी की है।

(18) फ़िर (उसे) कहोः क्या तू पाक होना चाहता है?

(19) और मैं तेरे रब की तरफ तेरी रहनुमाई करूं कि तू डर जाए।

(20) इसलिए उस (मूसा) ने उसे बड़ी निशानी दिखाई।

(21) तो उसने उसे झुठलाया और न फरमानी की।

(22) फ़िर वह पलटा (फसाद की) कोशिश करता हुआ।

(23) फ़िर सब को जमा कर के ऐलान किया।

(24) तो कहाः मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ।

(25) तब अल्लाह ने उसे पकड़ लिया आख़िरत और दुनिया के अज़ाब में।

(26) बेशक इसमें उसके लिए इबरत है जो डरता है।

(27) क्या तुम्हारी (दोबारा) पैदाईश ज़्यादा मुश्किल है या आसमान की? जिसे उसी ने बनाया है।

(28) उसने आसमान की छत बुलंद की, फ़िर उसे ठीक ठाक किया।

(29) और उसकी रात को तारीक (अध ां -कारमय) और उसके दिन को रोशन बनाया।

(30) और उसके बाद ज़मीन को बिछाया।

(31) उसमें उसका पानी और उसका चारा निकाला।

(32) और पहाड़ों को मज़बूत गाड़ दिया।

(33) (यह सब) तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के फायदे के लिए हैं।

(34) फ़िर जब बड़ी आफत (क़यामत) आ जाएगी।

(35) उस दिन इन्सान याद करेगा जो उसने कोशिश की होगी।

(36) और दोज़ख हर देखने वाले शख़्स के सामने (ज़ाहिर) कर दी जाएगी।

(37) लेकिन फ़िर जिसने सरकशी की।

(38) और दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह दी।

(39) तो बेशक दोज़ख ही उसका ठिकाना है।

(40) लेकिन जो शख़्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डर गया और अपने नफ्स को ख़्वाहिश से रोका।

(41) तो बेशक जन्नत ही (उसका) ठिकाना है।

(42) (ऐ नबी!) काफिर आपसे क़यामत के बारे में सवाल करते हैं कि वह कब आएगी?

(43) आपको उस (के बयान करने) से क्या गर्ज़?

(44) उस (के इल्म) की इन्तिहा तो आपके रब ही के पास है।

(45) आप तो सिर्फ हर उस शख़्स को डराते हैं जो उससे डरे।

(46) जिस रोज़ वह क़यामत को देखेंगे तो समझेंगे कि जैसे वह दुनिया में बस एक शाम या सुबह ही ठहरे हैं।

सूरह अबस-80

(यह मक्की सूरत है इसमें 42 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (उसने) माथे पर शिकन डाली और मुँह फेर लिया।

(2) (इसलिए) कि उसके पास एक नाबीना (अंधा) आया।

(3) और (ऐ नबी!) आपको क्या खबर कि वह पाकीज़गी हासिल करता।

(4) या नसीहत (उपदेश) सुनता तो उसे नसीहत नफा देती।

(5) लेकिन जो शख़्स परवाह नहीं करता है।

(6) तो आप उसकी फ़िक्र में हैं।

(7) हालांकि अगर वह नहीं सुनता तो आप पर कोई गुनाह नहीं।

(8) और जो शख़्स आपके पास दौड़ता हुआ आया।

(9) और वह डरता भी है।

(10) तो आप उससे बेरूखी बरतते हैं।

(11) हरगिज़ नहीं! बेशक यह (सहीफे) तो एक नसीहत (उपदेश) है।

(12) इसलिए जो चाहे इसे याद करे।

(13) (वह) क़ाबिले एहतराम सहीफों में

(महफ़ूज़) है।

(14) जो बुलंद व बाला और पाकीज़ा हैं।

(15) ऐसे लिखने वालो के हाथों में हैं।

(16) जो मुअज़्जज (इज्ज़तदार) और नेकूकार हैं।

(17) हलाक किया जाए इन्सान, किस क़दर नाशुक्रा है!

(18) (अल्लाह ने) उसे किस चीज़ से पैदा किया?

(19) एक (हक़ीर) नुत्फे से, उसे पैदा किया फ़िर उसका उसने अन्दाज़ा लगाया।

(20) फ़िर उसके लिए राह आसान कर दी।

(21) फ़िर उसे मौत दी और क़ब्र में पहुँचाया।

(22) फ़िर जब चाहेगा उसे (दोबारा) ज़िन्दा करेगा।

(23) हरगिज़ नहीं! उसने अब तक अल्लाह के हुक्म की बजाआवरी (आज्ञापालन) नहीं की।

(24) इसलिए इन्सान को चाहिए कि अपने खाने की तरफ देखे।

(25) बेशक हमने खूब मेहं बरसाया।

(26) फ़िर हमने ज़मीन को अच्छी तरह फाड़ा।

(27) फ़िर हमने उसमें से अनाज उगाया।

(28) और अंगूर और सब्ज़ियां।

(29) और ज़ैतून और खजूरें।

(30) और घने बागात।

(31) और मेवे और चारा।

(32) तुम्हारे और तुम्हारे जानवरो के लिए सामाने ज़िन्दगी।

(33) फ़िर जब कान बहरे कर देने वाली सख्त आवाज़ आएगी।

(34) उस दिन आदमी अपने भाई से भागेगा।

(35) और अपनी माँ और अपने बाप से।

(36) और अपनी बीवी और अपने बेटों से (भी)।

(37) उनमें से हर शख़्स का उस दिन ऐसा हाल होगा जो उसे दूसरों से बेपरवाह कर देगा।

(38) उस दिन कई चेहरे चमकते होंगे।

(39) हँसते मुस्कराते।

(40) और कई चेहरों पर उस दिन खाक उड़ रही होगी।

(41) उन पर स्याही छाई होगी।

(42) यही लोग हैं काफिर फाजिर।

सूरह तकवीर-81

(यह मक्की सूरत है इसमें 29 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) जब सूरज लपेट दिया जाएगा।

(2) और जब तारे बेनूर हो जाएंगे।

(3) और जब पहाड़ चलाए जाएंगे।

(4) और जब दस माह की हामला (गाभिन) ऊँटनियां बेकार छोड़ दी जाएंगी।

(5) और जब वहशी जानवर इकट्ठा किये जाएंगे।

(6) और जब समन्दर भड़का दिए जाएंगे।

(7) और जब रूहें (जिस्मों से) मिला दी जाएंगी।

(8) और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा।

(9) उसे किस गुनाह की वजह से क़त्ल किया गया?

(10) और जब आमाल नामे खोले जाएंगे।

(11) और जब आसमान की खाल उतार दी जाएगी।

(12) और जब दोज़ख भड़काई जाएगी।

(13) और जब जन्नत क़रीब लाई जाएगी।

(14) उस वक़्त हर शख़्स जान लेगा जो कुछ वह ले कर आया।

(15) इसलिए में क़सम खाता हूँ पीछे हटने वाले।

(16) चलने वाले, छुप जाने वाले तारों की।

(17) और रात की जब वह चली जाती है।

(18) और सुबह की जब वह रोशन होती है।

(19) यह (कुरआन) रसूले करीम (ज़िब्रईल) का क़ौल (बात) है।

(20) जो बड़ी कुव्वत वाला, अर्श वाले के नज़दीक बुलंद मर्तबा है।

(21) वहाँ (आसमानों में) उसकी इताअत की जाती है, अमीन है।

(22) और (ऐ अहले मक्का!) तुम्हारा साथी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दिवाना नहीं।

(23) यह (नबी) तो उस (जिब्रईल) को रोशन अफ़क़ (आसमान) पर देख चुका है।

(24) और वह ग़ैब (की बातों) पर बखील (कंजूस) नहीं है।

(25) और यह (कुरआन) किसी मरदूद शैतान का बात नहीं।

(26) फ़िर तुम किधर चले जा रहे हो?

(27) यह तो सब जहानों के लिए नसीहत (उपदेश) है।

(28) तुममें से जो भी सीधी राह पर

चले।

(29) और अल्लाह रब्बुलआलमीन के चाहे बग़ेर तुम (कुछ भी) नहीं चाह सकते।

सूरह इन्फितार-82

(यह मक्की सूरत है इसमें 19 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) जब आसमान फट जाएगा।

(2) और जब तारे झड़ जाएंगे।

(3) और जब समन्दर फाड़ दिए जाएंगे।

(4) और जब क़ब्रें उखाड़ दी जाएंगी।

(5) तो हर शख़्स को उसका अगला पिछला किया धरा सब मालूम हो जाएगा।

(6) ऐ इन्सान! तुझे किस चीज़ ने अपने रब्बे करीम की बाबत धोखे में डाल रखा है?

(7) जिसने तुझे पैदा किया फ़िर तुझे दुरूस्त किया और बराबर बनाया।

(8) उसने जिस सूरत में चाहा तुझे जोड़ दिया।

(9) हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम लोग जज़ा (बदला) व सज़ा को झुठलाते हो।

(10) हालांकि तुम पर निगराँ (फरिश्ते) मुक़र्रर हैं।

(11) मुअज़्ज़ज़ लिखने वाले।

(12) वह जानते हैं जो तुम करते हो।

(13) यक़ीनन नेक लोग ज़रूर नेअमतों होंगे।

(14) और यक़ीनन बदकार लोग ज़रूर दोज़ख में होंगे।

(15) और हिसाब के दिन को उसमें दाख़िल होंगे।

(16) और वह उससे गायब (दूर) न हो सकेंगे।

(17) और आपको क्या खबर कि हिसाब का दिन क्या है?

(18) फ़िर आपको क्या खबर कि हिसाब का दिन क्या है?

(19) उस दिन कोई शख़्स किसी के लिए कुछ भी इख़्तियार न रखेगा और उस दिन हुक्म सिर्फ अल्लाह का होगा।

सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन-83

(यह मक्की सूरत है इसमें 36 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) डन्डी मारने वालों को लिए तबाही है।

(2) वह कि जब वह लोगों से नाप कर लें तो पूरा लेता हैं।

(3) और जब वह उन्हें नाप कर या तोल कर दें तो कम देते हैं।

(4) क्या यह लोग यक़ीन नहीं रखते कि बेशक वह (क़ब्रों से) उठाए जाएंगे।

(5) एक अज़ीम दिन के लिए।

(6) जिस दिन लोग रब्बुलआलमीन के सामने खड़े होंगे।

(7) हरगिज़ नहीं! बेशक बदकारों का आमाल नामा सिज्जीन में है।

(8) और तुम्हें क्या मालूम कि वह सिज्जीन क्या है?

(9) एक किताब लिखी हुई।

(10) हलाकत है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।

(11) वह जो क़यामत को झुठलाते हैं।

(12) और उसे सिर्फ हर हद से बड़ा गुनाहगार झुठलाता है।

(13) जब उस पर हमारी आयतें तिलावत की जाती हैं तो कहता हैः यह तो पहले लोगों की कहानियां हैं।

(14) हरगिज़ नहीं! बल्कि उनके दिलों पर उनके (बुरे) आमाल ने ज़ंग लगा दिया।

(15) हरगिज़ नहीं! बेशक उस रोज़ वह (काफिर) अपने रब (के दीदार) से यक़ीनन महरूम रखे जाएंगे।

(16) फ़िर बेशक वह ज़रूर दोज़ख में दाख़िल होंगे।

(17) फ़िर उनसे कहा जाएगा कि यह वही चीज़ है जिसे तुम झुठलाया करते थे।

(18) हरगिज़ नहीं! बेशक नेक लोगों के आमाल नामा यक़ीनन इल्लीईन में होंगे।

(19) और तुम्हें क्या मालूम कि वह इल्लीईन क्या है?

(20) एक किताब है लिखी हुई।

(21) उसके पास हाज़िर रहते हैं मुक़र्रब फरिश्ते।

(22) बेशक नेक लोग ज़रूर नेअमतों में होंगे।

(23) मसहरियों पर (बैठे) देख रहे होंगे।

(24) उन चेहरे पर आप नेअमतों की ताज़गी महसूस करेंगे।

(25) उन्हें मोहर लगी खालिस शराब पिलाई जाएगी।

(26) उस पर कस्तूरी की मोहर लगी होगी, लिहाज़ा शायक़ीन को उसका शौक करना चाहिए।

(27) उसमें तस्नीम की आमिज़ीश (मिलावट) होगी।

(28) (वह) एक चश्मा (नहर) है जिससे (अल्लाह के) मुक़र्रब बन्दे पिएंगे।

(29) बिलाशुब्हः मुजरिम लोग (दुनिया में) मोमिनों पर हसंते थे।

(30) और जब वह (मुसलमानों) के पास से गुज़रते तो आपस में आँखों से इशारा करते थे।

(31) और जब वह अपने अहल व अयाल

(परिवार) की तरफ लौटते तो दिल लगी करते लोटते।

(32) और जब वह (काफिर) उन (मुसलमानों) को देखते तो कहते थेः बिलाशुब्ह यह यक़ीनन गुमराह लोग हैं।

(33) हालांकि वह (काफिर) उन पर निगराँ बना कर नहीं भेजे गए थे।

(34) इसलिए आज मोमिन लोग, काफिरों पर हंस रहे होंगे।

(35) मसहरियों पर बैठे उन्हें देख रहे होंगे।

(36) (और कहेंगे:) क्या काफिरों को उन हरकतों का बदला मिल गया जो वह करते थे?

सूरह इन्शिक़ाक़-84

(यह मक्की सूरत है इसमें 25 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) जब आसमान फट जाएगा।

(2) और वह अपने रब के हुक्म (की तामील) करेगा और उसके लायक़ यही है।

(3) और जब ज़मीन फेला दी जाएगी।

(4) और उसके अन्दर जो कुछ है वह उसे उगल देगी और खाली हो जाएगी।

(5) और वह अपने रब के हुक्म की तामील (आज्ञापालन) करेगी, और उसके लायक़ यही है।

(6) ऐ इन्सान! बेशक तू अपने रब की तरफ (जाने के लिए) सख्त मेहनत कर रहा है, बिलाआखिर तू उससे मिलने वाला है।

(7) फ़िर जिस शख्स को उसका आमाल नामा (कर्मपत्र) उसके दांये हाथ में दिया गया।

(8) तो जल्द ही उससे आसान हिसाब लिया जाएगा।

(9) और वह अपने अहल (परिवार) की तरफ हंसी खुशी लोटेगा।

(10) और जिस शख्स को उसका आमाल नामा उसकी पीठ पीछे दिया गया।

(11) तो वह ज़रूर तबाही को दअवत देगा।

(12) और वह भड़कती आग में जा पड़ेगा।

(13) बेशक वह (दुनिया में) अपने अहलो अयाल (खानदान) में बड़ा खुश था।

(14) बेशक उसने समझा था कि वह हरगिज़ (अल्लाह की तरफ) लौट कर नहीं जाएगा।

(15) क्यों नहीं! उसका रब! उसे देख रहा था।

(16) पस मैं क़सम खाता हूँ शफक़ (शाम की लाली) की।

(17) और रात की और उसकी जो कुछ वह समेटती है।

(18) और चाँद की जबकि वह पूरा हो

जाता है।

(19) तुम ज़रूर दरजा बदरजा एक हालत से दूसरी हालत को पहुँचोगे।

(20) फ़िर उन (काफिरों) को क्या हो गया है कि वह ईमान नहीं लाते?

(21) और जब उन पर कुरआन पढ़ा जाए तो सज्दा नहीं करते।

(22) बल्कि काफिर तो (उलटा) झुठलाते हैं।

(23) और जो कुछ वह (सीनों में) महफ़ूज़ रखते हैं अल्लाह उसे खूब जानता है।

(24) तो आप उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खबर दे दीजिए।

(25) मगर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये उनके लिए बेइन्तिहा अज्र है।

सूरह बुरूज-85

(यह मक्की सूरत है इसमें 22 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) बुरूजों वाले आसमान की क़सम!

(2) और उस दिन की जिस दिन का वादा किया गया।

(3) और हाज़िर होने वाले की और हाज़िर किये गए की।

(4) हलाक किये गए खन्दक़ों वाले।

(5) (उन खन्दक़ों में) आग थी ईंधन वाली।

(6) जबकि वह उन खन्दक़ों के किनारे बेठे थे।

(7) और जो कुछ वह मोमिनों के साथ कर रहे थे, उसे देख रहे थे।

(8) और उन्हें उन (मोमिनों) का यही काम बुरा मालूम हुआ कि वह अल्लाह ग़ालिब, क़ाबिले तारीफ पर ईमान लाए थे।

(9) वह ज़ात कि उसी के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है और अल्लाह हर चीज़ पर शाहिद (गवाह) है।

(10) बेशक जिन्होंने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को सताया फ़िर तौबा न की तो उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है और उनके लिए जलाने वाला अज़ाब है।

(11) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, उनके लिए बागात हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं, यही है बहुत बड़ी कामयाबी।

(12) बेशक आपके रब की पकड़ निहायत सख्त है।

(13) बेशक वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा पैदा करेगा।

(14) और वह बड़ा बख़्शने वाला, बहुत मुहब्बत करने वाला है।

(15) वह अर्श का मालिक, उँची शान वाला है।

(16) जो चाहे कर गुज़रता है।

(17) क्या आपके पास लश्करों की खबर पहुँची है?

(18) (यानी) फ़िरऔन और समूद की।

(19) बल्कि काफिर तो झुठलाने में लगे हुए हैं।

(20) और अल्लाह हर तरफ से उन्हें घेर हुए है।

(21) बल्कि यह कुरआन ऊँची शान वाला है।

(22) लोहे महफ़ूज़ में (लिखा हुआ) है।

सूरह तारिक़-86

(यह मक्की सूरत है इसमें 17 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) क़सम है आसमान की और रात को आने वाले की!

(2) और आपको क्या मालूम कि वह रात को आने वाला क्या है?

(3) वह चमकता हुआ सितारा है।

(4) कोई जान ऐसी नहीं जिस पर कोई निगेहबान न हो।

(5) इसलिए इन्सान को देखने चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है।

(6) वह उछलने वाले पानी से पैदा किया गया है।

(7) जो पीठ और सीने की हड्डियों के दरम्यान से निकलता है।

(8) बेशक वह (अल्लाह) उसे दोबारा पैदा करने पर यक़ीनन क़ादिर है।

(9) जिस दिन राज़ ज़ाहिर कर दिए जाएंगे।

(10) तो इन्सान के पास न कोई कुव्वत होगी और न कोई उसका मददगार होगा।

(11) क़सम है बार-बार बारिश बरसाने वाले आसमान की!

(12) और उठने वाली ज़मीन की!

(13) बेशक यह (कुरआन) यक़ीनन क़ौले फैसल (दो टूक फेसला करने वाला) है।

(14) और यह हंसी मज़ाक़ नहीं है।

(15) बेशक वह (काफिर) कुछ चालें चलते हैं।

(16) और मैं भी एक चाल चलता हूँ।

(17) तो (ऐ नबी!) आप उन काफिरों को ज़रा उनके हाल पर छोड़ दें।

सूरह आला-87

(यह मक्की सूरत है इसमें 19 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) आप अपने सब से बुलंद रब के नाम की तस्बीह करें।

(2) जिसने पैदा किया फ़िर ठीक ठीक बनाया।

(3) और जिसने अन्दज़ा किया फ़िर हिदायत दी।

(4) और जिसने (ज़मीन से) चारा निकाला।

(5) फ़िर उसे खुश्क स्याह कूड़ा करकट बना दिया।

(6) हम जल्द ही आपको पढ़ाएंगे फ़िर आप न भूलेंगे।

(7) मगर जो अल्लाह चाहे, बेशक वह ज़ाहिर को जानता है और मख्फ़ी (छुपे हुए) को भी।

(8) और हम आपको आसान (रास्ते) तौफीक़ देंगे।

(9) फ़िर आप नसीहत (उपदेश) कीजिए अगर नसीहत नफा दे।

(10) जो डरता है वह ज़रूर नसीहत क़बूल करेगा।

(11) और इन्तिहाई बदबख़्त ही उससे दूर रहेगा।

(12) जो बहुत बड़ी आग में जाएगा।

(13) फ़िर उसमें न वह मरेगा और न जिएगा।

(14) यक़ीनन फलाह पा गया जो पाक हुआ।

(15) और अपने रब का नाम याद किया फ़िर नमाज़ पढ़ी।

(16) बल्कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह देते हो।

(17) हालांकि आख़िरत बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है।

(18) बेशक यह (बात) पहले सहीफों में भी (कही गई) थी।

(19) (यानी) इब्राहीम और मूसा के सहीफों में।

सूरह गाशिया-88

(यह मक्की सूरत है इसमें 26 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) क्या आपको छा जाने वाली (क़यामत) की खबर पहुँची है?

(2) उस दिन कई चेहरे ज़लील होंगे।

(3) सख्त मेहनत करने वाले थके मान्दे

होंगे।

(4) दहकती आग में दाख़िल होंगे।

(5) उन्हें गर्म खोलते चश्मे का पानी पिलाया जाएगा।

(6) उनका खाना सिर्फ कांटेदार झाड़ियां होगी।

(7) जो न मोटा करेगा न भूख मिटाएगा।

(8) उस दिन कई चेहरे तरोताज़ा होंगे।

(9) अपनी कोशिश पर खुश होंगे।

(10) बहिश्ते बरीं (बुलंद जन्नत) में होंगे।

(11) वह उसमे कोई लग्व (अश्लील) बात न सुनेंगे।

(12) उसमे एक चश्मा (नहर) जारी होगा।

(13) उसमें ऊँचे तख्त होंगे।

(14) और जाम रखे होंगे।

(15) और क़तारों में तकिये लगे होंगे।

(16) और उम्दा गालीचे बिछे होंगे।

(17) क्या वह ऊँट की तरफ नहीं देखते कि वह कैसे पैदा किये गए हैं।

(18) और आसमान की तरफ कि कैसे बुलंद किया गया है।

(19) और पहाड़ों की तरफ कि कैसे गाड़े गए हैं।

(20) और ज़मीन की तरफ कि कैसे बिछाई गई है?

(21) इसलिए आप नसीहत कीजिए, आप तो सिर्फ नसीहत करने वाले हैं।

(22) आप उन पर कोई फौजदार नहीं।

(23) इसलिए जिसने मुँह मोड़ा और कुफ्र किया।

(24) तो उसे अल्लाह बहुत बड़ा अज़ाब देगा।

(25) बेशक हमारी ही तरफ उसकी वापसी है।

(26) फ़िर बेशक उनका हिसाब लेना हमारे ही ज़िम्मे है।

सूरह फजर-89

(यह मक्की सूरत है इसमें 30 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) क़सम है फज्र की!

(2) और दस रातों की।

(3) और जुफ़्त (जौड़, सम) और ताक (विषम) की।

(4) और रात की जबकि वह बीत रही हो।

(5) यक़ीनन उन (चीज़ों) में अक़्ल वालों के लिए मोतबर क़सम है।

(6) क्या आपने देखा नहीं कि आपके रब ने आद के साथ कैसा सुलूक किया था?

(7) (आद) इरम जो ऊँचे सतूनों वाले

थे।

(8) जिनके मानिन्द कोई क़ौम पैदा नहीं की गई।

(9) और समूद के साथ जो वादी में चट्टाने तराशते थे।

(10) और फ़िरऔन मेंखों वाले के साथ।

(11) वह जिन्होंने शहरों में सरकशी की।

(12) और उनमें बहुत ज़्यादा फसाद फेलाया।

(13) तब आपके रब ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया।

(14) बेशक आपका रब (मुजरिमों की) घात में है।

(15) लेकिन इन्सान जो है, जब उसका रब उसे आज़माए और उसे इज्ज़त और नेअमत दे तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज्ज़त बख़्शी।

(16) मगर जब वह उसे आज़माए और उसका रिज़्क़ उस पर तंग कर दे तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया।

(17) हरगिज़ नहीं! बल्कि तुम यतीम की इज्ज़त नहीं करते।

(18) और आपस में मिस्कीन को खाना खिलाने की तरगीब नहीं देते।

(19) और तुम मिरास का सारा माल समेट कर खा जाते हो।

(20) और तुम माल से जी भर कर प्यार करते हो।

(21) हरगिज़ नहीं! जब ज़मीन खूब कूट कर हमवार कर दी जाएगी।

(22) और आपका रब और फरिश्ते सफ दर सफ आएंगे।

(23) और उस दिन जहन्नम (सामने) लाई जाएगी, उस दिन इन्सान (अपने करतूत) याद करेगा और यह याद करना उसके लिए क्योंकर (फायदे मन्द) होगा।

(24) वह कहेगाः काश! मैंने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए कुछ आगे भेजा होता।

(25) इसलिए उस दिन उस जैसा अज़ाब देने वाला और कोई नहीं होगा।

(26) और उस जैसा जकड़ने वाला भी और कोई नहीं होगा।

(27) ऐ मुत्मईन रूह!

(28) तू अपने रब की तरफ चल इस हाल में कि तू उससे राज़ी, वह तुझसे राज़ी।

(29) फ़िर तू मेरे बन्दों में दाख़िल हो जा।

(30) और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।

सूरह बलद-90

(यह मक्की सूरत है इसमें 20 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) मैं क़सम खाता हूँ इस शहर की!

(2) और आपके लिए इस शहर में लड़ाई हलाल होने वाली है।

(3) और क़सम वालिद (आदम) की और उसकी औलाद की!

(4) बिलाशुब्ह हमने इन्सान को बड़ी मशक्क़त में पैदा किया है।

(5) क्या वह समझता है कि उस पर कोई भी क़ाबू न पा सकेगा?

(6) वह कहता है कि मैंने ढेरो माल लुटा दिया।

(7) क्या वह समझता है कि उसे किसी ने नहीं देखा?

(8) क्या हमने उसे दो आँखें नहीं दीं?

(9) और ज़बान और दो होंठ?

(10) और हमने उसे दोनों रास्ते समझा दिए।

(11) फ़िर वह घाटी पर हो कर नहीं गुज़रा।

(12) और आपको क्या मालूम कि वह दुश्वार (मुश्किल) घाटी क्या है?

(13) वह है किसी इन्सान को गुलामी से छुड़ाना।

(14) या भूख वाले दिन खाना खिलाना।

(15) किसी रिश्तेदार यतीम को।

(16) या किसी खाक नशीन को।

(17) फ़िर वह उन लोगों में शामिल हो जो ईमान लाए और उन्होंने आपस में सब्र की वसियत की और आपस में रहम करने की वसियत की।

(18) वही लोग दायें हाथ वाले हैं।

(19) और जो लोग हमारी आयतों के मुन्कर हुए वही बायें हाथ वाले हैं।

(20) उन पर (हर तरफ से) बन्द की हुई आग होगी।

सूरह शम्स-91

(यह मक्की सूरत है इसमें 15 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) सूरज और उसकी धूप चढ़ने की क़सम!

(2) और चाँद की जब वह उसके पीछे आता है।

(3) और दिन की जब वह सूरज का जलवा दिखाता है।

(4) और रात की जब वह ढंप लेती है।

(5) और आसमान की और जिसने उसे

बनाया।

(6) और ज़मीन की और जिसने उसे बिछाया।

(7) और (इन्सानी) नफ़्स (आत्मा) की और जिसने उसे ठीक बनाया।

(8) फ़िर उसकी बदी (पाप) और उसका तक़्वा उस पर इलहाम किया।

(9) यक़ीनन फलाह पा गया जिसने नफ़्स का तज़किया (पवित्र) किया।

(10) और यक़ीनन नामुराद हुआ जिसने उसे आलूदा किया।

(11) क़ौमे समूद ने अपनी सरकशी की वजह से (नबी को) झुठलाया।

(12) जब उठ खड़ा हुआ उस क़ौम का बड़ा बदबख़्त।

(13) तो उन्हें अल्लाह के रसूल ने कहाः अल्लाह की ऊँटनी और उसके पानी पिलाने की हिफाज़त करो।

(14) फ़िर उन्होंने उसको झुठलाया और ऊँटनी को मार डाला, तो उनके रब ने उनके गुनाह की वजह से उन पर तबाही डाल कर सबका सफाया कर दिया।

(15) और वह उस (तबाही) के अन्जाम से नहीं डरता।

सूरह लैल-92

(यह मक्की सूरत है इसमें 21 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) रात की क़सम जब वह छा जाए!

(2) और दिन की जब वह रोशन हो।

(3) और उस ज़ात की जिसने नर और मादा पैदा किए।

(4) बेशक तुम्हारी कोशिश (प्रयत्न) यक़ीनन मुख़्तलिफ (कई तरह की) है।

(5) फ़िर जिसने (अल्लाह की राह में) दिया और डरता रहा।

(6) और उसने नेक बात की तस्दीक़ (पुष्टि) की।

(7) तो यक़ीनन उसे हम आसान (राह) की तौफीक़ देंगे।

(8) लेकिन जिसने कन्जूसी की और परवाह न की।

(9) और उसने नेक बात को झुठलाया।

(10) तो उसे हम तंगी की (राह की) सहूलत देंगे।

(11) और जब वह (दोजख में) गिरेगा तो उसे उसका माल कोई फायदा न देगा।

(12) बेशक हिदायत (मार्ग-दर्शन) देना हमारे ही ज़िम्मे है।

(13) और बेशक आख़िरत और दुनिया हमारे ही इख़्तियार में है।

(14) बिलाआखिर (अनतः) मैंने तुम्हें भड़कती आग से डराया है।

(15) उसमें बड़ा बदबख़्त ही दाख़िल होगा।

(16) जिसने झुठलाया और मुँह फेरा।

(17) और बड़ा मुत्तक़ी उससे ज़रूर दूर रखा जाएगा।

(18) जो पाक होने के लिए अपना माल देता है।

(19) और उस पर किसी का कोई अहसान नहीं जिसका बदला उसे देना हो।

(20) मगर सिर्फ अपने रब बरतर का चेहरा चाहते हुए (माल खर्च करता है)।

(21) और यक़ीनन (अल्लाह) जल्द उससे राज़ी होगा।

सूरह ज़ुहा-93

(यह मक्की सूरत है इसमें 11 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) दिन चढ़े की क़सम!

(2) और रात की जब वह छा जाए।

(3) (ऐ नबी!) आपके रब ने आपको न छोड़ा और न नाराज़ हुआ।

(4) और यक़ीनन आपके लिए आख़िरत, दुनिया से बहुत बेहतर है।

(5) और जल्द आपका रब आपको इतना देगा कि आप राज़ी हो जाएंगे।

(6) क्या उसने आपको यतीम न पाया फ़िर ठिकाना दिया।

(7) और आप को नावाक़िफे राह पाया फ़िर हिदायत बख़्शी।

(8) और आपको तंगदस्त पाया फ़िर मालदार कर दिया।

(9) लिहाज़ा आप यतीम पर सख़्ती न करें।

(10) और सवाली को न छिड़कें।

(11) और अपने रब की नेअमत का ज़िक्र करते रहें।

सूरह अलम-नशरह-94

(यह मक्की सूरत है इसमें 8 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) क्या हमने आपके लिए आपका सीना नहीं खोल दिया?

(2) और हमने आपसे आपका बोझा उतार दिया।

(3) जिसने आपकी कमर तोड़ दी थी।

(4) और हमने आपके लिए आपका जिक्र ऊँचा कर दिया।

(5) फ़िर बेशक हर तंगी के साथ आसानी

है।

(6) बेशक हर तंगी के साथ आसानी है।

(7) इसलिए जब आप फारिग हो जाएं तो मेहनत कीजिए।

(8) और अपने रब ही की तरफ रगबत कीजिए।

सूरह तीन-95

(यह मक्की सूरत है इसमें 8 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) क़सम है इन्जिर और ज़ैतून की!

(2) और सीना पहाड़ की।

(3) और इस पूर अमन शहर (मक्का) की।

(4) यक़ीनन हमने इन्सान को बेहतरीन शक्ल व सूरत में पैदा किया है।

(5) फ़िर हमने उसे नीचों से नीचे फ़ेंक दिया।

(6) मगर जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, उनके लिए बेइन्तिहा अज्र है।

(7) फ़िर (ऐ इन्सान!) इसके बाद तुझे कौन सी चीज़ जज़ा (बदला) व सज़ा को झुठलाने पर आमादा करती है।

(8) क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है?

सूरह अलक़्-96

(यह मक्की सूरत है इसमें 19 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अपने रब के नाम से पढ़ जिसने पैदा किया।

(2) उसने इन्सान को जमे हुए खून से पैदा किया।

(3) पढ़ और आपका रब बड़ा करीम है।

(4) वह ज़ात जिसने क़लम के ज़रिये से इल्म सिखाया।

(5) उसने इन्सान को वह इल्म सिखाया जो वह नहीं जानता था।

(6) सचमुच! इन्सान तो यक़ीनन आपे से बाहर हो जाता है।

(7) इस बिना पर कि वह खुद को बे परवाह समझता है।

(8) बेशक आपके रब ही की तरफ वापसी है।

(9) क्या आपने उसे देखा जो मना करता है।

(10) एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़ता है?

(11) भला देख तो अगर वह (बन्दा) हिदायत (मार्ग-दर्शन) पर हो।

(12) या तक़्वा का हुक्म देता हो?

(13) भला देख तो अगर वह (हक़ को) झुठलाता और (उससे) मुँह मोड़ता हो?

(14) क्या वह नहीं जानता कि बेशक अल्लाह देख रहा है।

(15) हरगिज़ नहीं! अगर वह बाज़ न आया तो हम उसे पैशानी के बालों से पकड कर ज़रूर घसीटेंगे।

(16) पैशानी जो झूठी और खताकार है।

(17) इसलिए उसे चाहिए कि वह अपनी मज्लिस वालों को बुला ले।

(18) यक़ीनन हम भी अज़ाब के फरिश्तों को बुला लेंगे।

(19) हरगिज़ नहीं! आप उसकी इताअत न करें और सज्दा करें और अल्लाह का कुर्ब हासिल करें।

सूरह क़द्र-97

(यह मक्की सूरत है इसमें 5 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) बेशक हमने इस (कुरआन) को लैलतुल क़द्र में नाज़िल किया।

(2) और आपको क्या मालूम कि लैलतुल क़द्र क्या है?

(3) लैलतुल क़द्र हज़ार महीने से बेहतर है।

(4) इस रात में फरिश्ते और रूह (जिब्रईल) अपने रब के हुक्म से हर काम के लिए नाज़िल होते हैं।

(5) (वह रात) तुलूए फजर तक सलामती (ही सलामती) है।

सूरह बय्यिन-98

(यह मदनी सूरत है इसमें 8 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) अहले किताब के कुछ काफिर और मुश्रिकीन (कुफ्र से) रूकने वाले न थे यहाँ तक कि उनके पास वाज़ेह दलील आ जाए।

(2) अल्लाह की तरफ से एक रसूल जो पाकीज़ा सहीफे पढ़े।

(3) जिनमें दुरूस्त और सही अहकाम हैं।

(4) और जिन लोगों को किताब दी गई थी, उनमें तफरक़ा (गुटबाज़ी) उनके पास वाज़ेह दलील आ जाने के बाद पढ़ा।

(5) हालांकि उन्हें यही हुक्म दिया गया था कि वह बन्दगी को अल्लाह के लिए खालिस कर के, यक्सू हो कर, उसकी इबादत करें, और वह नमाज़ को क़ायम करें और ज़कात दें, और यही सीधी मिल्लत का दीन है।

(6) बेशक अहले किताब में से जिन लोगों ने कुफ्र किया और मुश्रिकीन आतिशे जहन्नम में जलेंगे, वह उसमें हमेशा रहेंगे, वही लोग मख़्लूक़ में बदतरीन हैं।

(7) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये, वही लोग मख़्लूक़ में बेहतरीन हैं।

(8) उनकी जज़ा (बदला) उनके रब के यहाँ हमेशा रहने वाले बाग हैं जिनके नीचे नहरे बहती हैं, वह उनमें हमेशा रहेंगे अब्द तक, अल्लाह उनसे राज़ी और वह अल्लाह से राज़ी, यह उसको मिलता है जो अपने रब से डर गया।

सूरह ज़िलज़ाल-99

(यह मदनी सूरत है इसमें 8 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) जब ज़मीन पूरे ज़ोर से हिलाई जाएगी।

(2) और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल देगी।

(3) और इन्सान कहेगाः इसे क्या हुआ?

(4) उस दिन वह (खुद पर गुज़रने वाले) हालात बयान करेगी।

(5) क्योंकि आपका रब उसे (यही) हुक्म देगा

(6) उस रोज़ लोग अलग अलग हो कर लौटेंगे ताकि उन्हें उनके आमाल दिखाए जाएं।

(7) लिहाज़ा जिसने ज़र्रा भर भलाई की वह उसे देख लेगा।

(8) और जिसने ज़र्रा भर बुराई की वह भी उसे देख लेगा।

सूरह आदियात-100

(यह मक्की सूरत है इसमें 11 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) सरपट दौड़ते, हांपते घोड़ों की क़सम!

(2) फ़िर टाप मार कर चिंगारियां निकालने वालों की।

(3) फ़िर सुबह के वक़्त हमला करने वालों की।

(4) फ़िर उस वक़्त वह गर्दो गुबार (धूल) उड़ाते हैं।

(5) फ़िर उस वक़्त वह (दुश्मन की) जमाअत के दरम्यान घुस जाते हैं।

(6) बेशक इन्सान अपने रब का बड़ा नशुक्रा है।

(7) और बेशक वह इस बात पर (खुद भी) गवाह है।

(8) और बेशक वह माल की मुहब्बत में बुरी तरह गिरफ्तार है।

(9) फ़िर क्या वह नहीं जानता जब निकाल बाहर किया जाएगा जो कुछ क़ब्रों में है।

(10) और ज़ाहिर कर दिया जाएगा जो कुछ सीनों में है।

(11) बेशक रब उस दिन उन (के हाल) से खूब आगह होगा।

सूरह क़ारिआ-101

(यह मक्की सूरत है इसमें 11 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) खड़खड़ा देने वाली।

(2) क्या है खड़खड़ा देने वाली?

(3) और आपको क्या मालूम वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?

(4) जिस दिन लोग (ऐसे) हो जाएँगे जैसे बिखरे हुए परवाने।

(5) और पहाड़ धुनकी हुई रंगीन ऊन जैसे हो जाएंगे।

(6) फ़िर जिस शख्स के पलड़े भारी हो गए।

(7) तो वह अपनी पसंद की ज़िन्दगी में होगा।

(8) और जिस शख्स के पलड़े हलके हो गए।

(9) तो उसका ठिकाना हाविया (गढ़ा) होगा।

(10) और आपको क्या मालूम कि हाविया क्या है?

(11) वह सख्त दहकती हुई आग है।

सूरह तक़ासुर-102

(यह मक्की सूरत है इसमें 8 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) आपस में बहुतात की हिरस (लालच) ने तुम्हें ग़ाफिल कर दिया।

(2) यहाँ तक कि तुम क़ब्रों में जा पहुँचे।

(3) हरगिज़ नहीं! जल्द ही तुम जान लोगो।

(4) फ़िर हरगिज़ नहीं! जल्द ही तुम जान लोगो।

(5) हरगिज नहीं! अगर तुम यक़ीनी इल्म के साथ जान लो।

(6) तो ज़रूर दोज़ख को देखोगे।

(7) फ़िर तुम उसे ज़रूर यक़ीन की आँखों से देखोगे।

(8) फ़िर उस दिन तुम से नेअमतों की बाबत ज़रूर सवाल किया जाएगा।

सूरह अस्र-103

(यह मक्की सूरत है इसमें 3 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) ज़माने की क़सम।

(2) बेशक इन्सान खसारे (नुक्सान) में है।

(3) सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये और एक दूसरे को हक़ की तलक़ीन की और एक दूसरे को सब्र की तलक़ीन की।

सूरह हुमज़ा-104

(यह मक्की सूरत है इसमें 9 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) हर तानाज़न (ताना देने वाले), ऐब जू (ऐब लगाने वाले) के लिए हलाकत है।

(2) जिसने माल जमा किया और उसे गिन गिन कर रखा।

(3) वह समझता है कि बेशक उसका माल उसे हमेशा ज़िन्दा रखेगा।

(4) हरगिज़ नहीं! उसे ज़रूर हुतमा में फैंका जाएगा।

(5) और आपको क्या मालूम कि हुतमा क्या है?

(6) वह अल्लाह की भड़कती हुई आग है।

(7) जो दिलों तक पहुँचेगी।

(8) बेशक वह (आग) उन पर (हर तरफ से) बन्द कर दी जाएगी।

(9) लम्बे लम्बे सतूनों में।

सूरह फील-105

(यह मक्की सूरत है इसमें 5 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) क्या आपने नहीं देखा कि आपके रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया?

(2) क्या उसने उनकी चाल को बेकार नहीं कर दिया?

(3) और उसने उन पर झुण्ड के झुण्ड परिन्दे भेजे।

(4) जो उन पर पत्थर की कंकरियां फ़ेंक रहे थे।

(5) फ़िर अल्लाह ने उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया।

सूरह कुरैश-106

(यह मक्की सूरत है इसमें 4 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) कुरैश के मानूस होने की वजह से।

(2) (यानी) उनके सर्दी और गर्मी के सफर से मानूस होने की वजह से।

(3) लिहाज़ा उन्हें चाहिए कि वह इस घर (काबा) के मालिक की इबादत करें।

(4) जिसने उन्हे भूख में खाना खिलाया और उन्हें ख़ौफ से अमन दिया।

सूरह माऊन-107

(यह मक्की सूरत है इसमें 7 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) क्या आपने उस शख़्स को देख जो जज़ा (बदला) व सज़ा को झुठलाता है?

(2) तो यह वह शख़्स है जो यतीम को धक्के देता है।

(3) और मिस्कीन को खाना खिलाने का शौक़ नहीं दिलाता।

(4) इसलिए तबाही है उन नमाज़ियों के लिए।

(5) जो अपनी नमाज़ से गफ़लत करते है।

(6) वह जो दिखावा करते हैं।

(7) और (लोगों को) इस्तेमाल की मामूली चीज़ें भी देने से इन्कार करते हैं।

सूरह कौसर-108

(यह मक्की सूरत है इसमें 3 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) यक़ीनन हमने आपको कौसर अता की।

(2) तो आप अपने रब ही के लिए नमाज़ पढ़ें और कुरबानी करें।

(3) बेशक आपका दुश्मन ही जड़ कटा है।

सूरह काफिरून-109

(यह मक्की सूरत है इसमें 6 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) आप कह दीजिए: ऐ काफिरों!

(2) मैं उन (बुतों) की इबादत नहीं करता जिनकी तुम इबादत करते हो।

(3) और न तुम उसकी इबादत करते हो जिसकी मैं इबादत करता हूँ।

(4) और न मैं उनकी इबादत करने वाला हूँ जिनकी तुम इबादत करते हो।

(5) और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी मैं इबादत करता हूँ।

(6) तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन।

सूरह नस्र-110

(यह मदनी सूरत है इसमें 3 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) जब अल्लाह की मदद और फतह आ जाएगी।

(2) और आप लोगों को देखें कि वह अल्लाह के दीन में गिरोह दर गिरोह दाख़िल हो रहे हैं।

(3) तो आप अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए और उससे बख्शिश मांगे, बिलाशुब्ह वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला है।

सूरह लहब-111

(यह मक्की सूरत है इसमें 5 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) टूट जाएं दोनों हाथ अबू लहब के और वह हलाक हो गया।

(2) न उसके माल ने उसे कोई फायदा दिया और न उसकी कमाई ने।

(3) वह ज़रूर भड़कती आग में दाख़िल होगा।

(4) और उसकी बीवी भी जो लकड़ियां ढोने वाली है।

(5) उसकी गर्दन में छाल की बटी हुई रस्सी होगी।

सूरह इख़्लास-112

(यह मक्की सूरत है इसमें 4 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) आप कह दीजिएः वह अल्लाह एक है।

(2) अल्लाह बेनियाज़ है।

(3) उसने (किसी को) नहीं जना और न वह (खुद) जना गया।

(4) और कोई उसका हमसर नहीं।

सूरह फलक़-113

(यह मक्की सूरत है इसमें 5 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) कह दीजिएः मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ।

(2) (हर) उस चीज़ के शर से जो उसने पैदा की ।

(3) और अन्धेरी रात के शर से जब वह छा जाए।

(4) और गिरहों में फूंकें मारने वालियों के शर से।

(5) और हसद करने वाले के शर से जब वह हसद करे।

सूरह नास-114

(यह मक्की सूरत है इसमें 6 आयतें और 1 रूकू हैं)

अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है।

(1) (ऐ नबी!) कह दीजिएः मैं इन्सानों के रब की पनाह में आता हूँ।

(2) इन्सानों के बादशाह की।

(3) इन्सानों के मअ़बूद की।

(4) वस्वसा डालने वाले (ज़िक्रुल्लाह सुन कर) पीछे हट जाने वाले के शर से।

(5) जो लोगों के दिलों में वस्वसा डालता है।

(6) ख्वाह वह जिन्नों में से हो या इन्सानों में से।

कुरआ़न मजीद की सूरतों के मज़ामीन की फेहरिस्त (सूची)

(1) - सूर-ए-फातिहा **आयत नं.**

- पूरी कायनात का मालिक, कयामत के दिन का मालिक और मुश्किलों को दूर करने वाला अल्लाह ही है, उसी की इबादत करनी चाहिए, उसी से मदद मांगनी चाहिए। 2-5
- सही रास्ते पर चलने वालों को ईनाम (जन्नत) मिलना तय है, इसकी समझ अल्लाह से मांगनी चाहिए। 6-7

(2) - सूर-ए-बक़रा **आयत नं.**

- हिदायत याफ्ता लोगों की कुछ खूबियां। 3-5
- काफिरों की बदनसीबी की हक़ीक़ी वजह। 7-6
- झूठे-कपटी लोगों की कुछ निशानियां। 8-20
- सहाबा-इकराम रजि. अल्लाहु अन्हु को बुरा कहने वाले खुद बुरे हैं। 13
- अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के हक़दार नहीं होने की कुछ स्पष्ट (वाजेह) दलीलें (तर्क)। 21-22
- मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं। 23
- अल्लाह तआला द्वारा उतारी गई किताब की दूसरी मिसाल पेश करना किसी के बस की बात नहीं है। 23
- जहन्नम की आग का ईंधन लोग और पत्थर है। 24
- फासिकों की कुछ अलामात। 27
- अल्लाह तआला ने ज़मीन की तमाम चीज़ें इंसान ही के लिए पैदा की हैं। 29
- मिट्टी का इंसान नूर से बने फरिश्तों से बेहतर है और ज़मीन पर अल्लाह का ख़लीफ़ा है। 30-34
- हज़रत आदम व हव्वा अलैहिस्सलाम को शैतान का बहकाना और तौबा कबूल होने का वाक़िया। 36-37
- आसमानी हिदायत की मुकम्मल पैरवी ही निजात की वजाह रहीं है और रहेगी। 38
- बा-जमात नमाज़ पढ़ने का हुक्म। 43
- लोगों को नेकी की बात बताना लेकिन खुद उस पर अमल ना करना बेसमझी

की निशानी है। 44
- इज्तिमाई मौत के बाद ज़िन्दा करने का एक वाक़िया। 55-56
- अल्लाह जल्लेजलालहू और नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के फरमाए हुए लफ्ज़ों में फेरबदल और बढ़ाना अज़ाबे इलाही की वजह है। 58-59
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का पत्थर से बारह पानी के सोते जारी करने का करिश्मा। 60
- यहूदी, ईसाई और बे-दीन लोग भी कयामत के दिन कामयाब हो सकते हैं। अगर........ 62
- बनी इसराईल के एक गिरोह का अल्लाह को ना मानने की वजह से बन्दर बनाये जाने का वाक़िया। 65-66
- बनी इसराईल के गाय ज़िबाह करने के हुक्म इलाही में बहस करने का अन्जाम और मुर्दे के ज़िन्दा होने का वाक़िया। 67-73
- गुनाहों के असर से दिल पत्थर से भी ज्यादा सख़्त हो जाता है। 74
- कलामे इलाही में हेर-फेर करने वाले ईमान से महरूम ही रहते हैं। 75
- इंसानों की लिखी बातों को अल्लाह की तरफ जोड़ना तबाही की वजह है। 79
- बनी इसराईल ने अल्लाह से किये हुए अपने वादों को पूरा नहीं किया। 83-86
- किताबे इलाही के कुछ हुक्मों को मानने और कुछ को न मानने का दुनिया व कयामत के दिन का अंजाम। 85
- यहूदी आमदे रसूल सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का ज़िक्र करने के बावजूद लअनती क्यूं बने? 89-90
- उम्र का ज़्यादा होना अज़ाब से न बचा सकेगी? 96
- अल्लाह तआला ने कुरआने करीम जिबरईल अमीन के ज़रिये मुस्तफा के दिल में उतारा। 97
- अल्लाह ताआला, किसी फरिश्ते या किसी रसूल का दुश्मन काफिर है। 98
- किताबे इलाही को पसे-पुश्त डाले रखना यहूदी की आदत रही है। 101
- जादू सीखना कुफ्र और जादू सीखाना शैतानों का काम है। 102
- जादू अपने आप खुद असर नहीं कर सकता जब तक अल्लाह का हुक्म न हो। 102
- हारूत और मारूत के जादू सिखाने का तरीका और जादूगर की सज़ा का बयान। 102
- किसी आयत को रद्द करना या भूला देना अल्लाह के इख्तियार में है। 106
- चेहरे को (खुद अपने आप) को फरमाबदार बनाना भी इस्लाम में दाखिल है। 112

- यहूदी व नसरानी किताबें पढ़ने के बावजूद बेइल्मी की बातें करते रहते हैं। 113
- मस्जिदों में अल्लाह को याद करने से रोकना और उन्हें वीरान बनाना बहुत बड़ा ज़ुल्म है। 114
- आसमान व ज़मीन का तख़्लीक़ (निर्माण) बिना किसी नमूने के हुआ है। 117
- अल्लाह तआला के इरादे के सामने कोई रुकावट नहीं बन सकता। 117
- यहूदी व नसरानी मुसलमानों से राज़ी नहीं हो सकते, जब तक उनकी पैरवी न की जाए। 120
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आज़माइशों में कामयाबी फिर ईनाम का बयान। 124-125
- हज़रत इब्राहीम व इस्माईल अलैहिस्सलाम की अपने औलाद में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की बेअ़सत की दुआ। 129
- इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क़ौम से बेरग़बती बेवकूफी का सबूत है। 130
- हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम की दीने तौहीद पर कायम रहने की वसीयत। 133
- तुम सिर्फ अपने कर्मों के जवाबदेह हो पिछली कौमों के तुम जवाबदेह नहीं हो। 134
- सहाबा-इकराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम का ईमान पूरी उम्मत के लिए मेयार है। 137
- अल्लाह का रंग सबसे बेहतर रंग है। 138
- हमेशा के लिए बैतुल मुकद्दस से बैतुल्लाह की तरफ किबला की तब्दीली का बयान। 142-152
- उम्मते मुहम्मदी का पिछली उम्मतों पर और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का अपनी उम्मत पर गवाह होने का बयान। 143
- किबला की तब्दीली का मकसद रसूल की पैरवी के जज़्बे को परखना है। 143
- अल्लाह तआ़ला से मदद लेने के लिए दो रास्तेः सब्र और नमाज़। 153
- शहीद मरता नहीं है बल्कि ज़िन्दा है लेकिन तुम्हें उसकी ज़िन्दगी का शऊर नहीं है। 154
- अहले ईमान की आज़माइशों के पांच मुख़्तलिफ अंदाज़ और सब्र करने वालों के ईनामों का बयान। 155-157
- हर छोटी या बड़ी मुसीबत में इन्न लिल्लाहि व इन्ना इलेहि राजिऊन पढ़ना चाहिए। 156
- हज और उमरा के दौरान में सफा व मरवाह की सई का बयान। 158
- अल्लाह तआला की नाज़िल की हुई बातों को छुपाना अपने आप को लअनती

बनाना है। 159
- तौबा कर लेने और अपनी हालत को संवारने पर माफ़ी भी मिल सकती है। 160
- जो काफ़िर मरे वो हमेशा के लिए लअनती है। 162
- अक़्ल वालों के लिए कुछ आफ़ाक़ी (कालजयी) दलीलें जैसे दिन-रात बारिश व हवा वगैरह। 164
- कुछ लोग ग़ैरूल्लाह से अल्लाह जैसी मोहब्बत करते हैं। अहले ईमान की अल्लाह से मोहब्बत ज़्यादा होती है। 165
- पीर हज़रात कयामत के रोज़ अपने मुरीदों से संबंधों से मना कर देंगे। 167
- बुराई, बेहयाई और अल्लाह के खिलाफ़ ख़ुदसाख़्ता बातें शैतान सिखाता है। 169
- अहकामे इलाही के मुकाबले में बाप-दादा की पैरवी करते रहना काफ़िरों का तरीक़ा है। 170
- खाने पीने के बाद अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना भी इबादत है। 172
- जिस चीज़ पर ग़ैरूल्लाह का नाम लिया जाए वो हराम है। अन्य हराम चीज़ों का बयान है। 173
- अल्लाह तआला की नाज़िल की गई अहकामात छुपाने या बदलने की सज़ाओं का बयान। 174
- तक़्वा सार बना देने वाले अच्छे कामों का बयान। 177
- कसास लेना फ़र्ज़ है अलबत्ता मकतूल के वारिस उसे माफ़ कर सकते हैं। 178
- कसास से ज़िन्दगी और तक़्वा दोनों फल मिलते हैं। 179
- वसीयत करना फ़र्ज़ है, अगर वसीयत सही है तो उस पर अमल करना और अगर ग़लत हो तो उसका सुधार ज़रूरी है। 180-182
- रोज़ों के फ़र्ज़ होने और उसके अहकामात का बयान। 183-187
- क़ुरआन रमज़ान के महीने में नाज़िल (अवतरीत) हुआ। 185
- अल्लाह बन्दे के करीब हैं और दुआ कबूल करता है। 186
- रमज़ान महीने की रातों में बीवियों से मिलना जायज़ है। 187
- मस्जिदें, ऐतक़ाफ़ की जगह और ऐतक़ाफ़ की हालत में मुबाशिरत हराम है 187
- रिश्वत देना हराम है। 188
- बदला लेने और काफ़िरों के फित्ने को कम करने के लिए अल्लाह की राह में क़त्ल करने का हुक्म। 190-194
- अल्लाह की राह में खर्च भी एतदाल (संतुलन) से हो। 195

- हज और उमरा के बयान और हज के कुछ हुक्मों का बयान। 196-203
- दुनियावी मतलब वाले फसादी और झगड़ालू आदमी से परेशान या दुखी न हो जाए। 204-206
- मोमिनो! इस्लाम के दायरे में पूरे-पूरे दाखिल हो जाओ। 208-209
- दुनिया की ज़िन्दगी काफ़िरों के लिए खूशनुमा (मनमोहक) है। 212
- जन्नत हासिल करने की राह की परे ाशानियां जिन पर अम्बिया अलैहिस्सलाम भी पुकार उठे (मता नसरुल्लाह)। 214
- सदका और ख़ैरात के हक़दार लोग। 215
- काफ़िरों से क़िताल फ़र्ज़ है, लेकिन शायद तुम कोई चीज़ नापंसद करो जबकि वो तुम्हारे लिए बेहतर हो। 216
- काफ़िरों का तुमसे लड़ाई का मकसद तुम्हें दीन से विचलित करना है। 217
- अल्लाह से मुहं फेरने वालों की तमाम नेकियां ख़त्म हो जाती हैं। 217
- शराब और जुए में फायदा कम नुकसान बहुत ज़्यादा है। 219
- ज़रूरत से ज़्यादा माल सदका करना बेहतर है। 219
- यतीम (अनाथ) तुम्हारे दीनी भाई है इसलिए उनके लिए इस्लाही पहलू इख़्यिार किये रखना। 220
- मुश्रिक मर्दों और औरतों से निकाह ना करो चाहे वो तुम्हें अच्छे लगते हों। 221
- हालाते हैज़ और तूहर में ज़ौजीन (शौहर-बीवी) से संबंधित कुछ हुक्म। 222-223
- अल्लाह के लगू क़समों से बचने और पुख़्ता क़समों पर गिरफ़्त करने का बयान। 225
- बीवी से ताल्लुक ना रखने की कसम खाना और उसके हुक्म। 226-227
- तलाक़शुदा की इद्दत और शौहर का रुजू करने का इख़्तियार। 228
- ज़ौजीन के हक़ूक व फ़राएज़ का बयान। 228
- तलाक़ और उस से मुतआलिक़ा (संबंधित) कुछ मसले और ख़ुलाअ़ यानी बीवी के तलाक़ मांगने का बयान। 229-231
- एक या दो तलाक़ों का समय बीतने के बाद पहले शौहर से नये निकाह का बयान। 232
- दूध पिलाने की मुद्दत, तलाक दी हुई बीवी या किसी दूसरी ख़ातून से दूध पिलवाने का बयान। 233
- बेवा की इद्दत और उसे निकाह करने की ख़बर देने का बयान। 234-235
- सोहबत से पहले और मेहर की रकम तय करने से पहले या बाद में

तलाक देने का हुक्म। 236-237
- अस्र के नमाज़ की खास हिफ़ाज़त और ख़ौफ़ की हालत में व अमन में नमाज़ अदा करने तरीक़ा। 238
- बेवा का रहन सहन और ख़र्च किसके ज़िम्मे है। 240
- हज़ारों लोग मरने के बाद जी उठे। 243
- अल्लाह की राह में क़त्ल और अल्लाह की राह में खर्च का बयान। 244-245
- तालूत के बादशाह बनने और उनके जिहादी संर्घष का बयान। 246-252
- सभी रसूलों का दर्जा एक समान नहीं है। 253
- सब काम अल्लाह तआला की मर्ज़ी और इरादे के अनुसार हो रहे हैं। 253
- कयामत के रोज़ कोई दोस्ती या सिफारिश नहीं बल्कि सदका और ख़ैरात काम आएंगे। 254
- आयतल-कुर्सी में अल्लाह मअबूद हक़ीक़ी की कुछ आला सिफ़ात का बयान। 255
- दीन में ज़बरदस्ती ही नहीं। 256
- अल्लाह तआला सभी ईमान वालों का वली है, जबकि काफ़िरों का वली शैतान है। 257
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और नमरूद के बीच मअबूद-ए-बरहक के मौजू (विषय) पर फ़ैसला कुन मुनाज़रा। 258
- अल्लाह तआला के लिए किसी चीज़ को दोबारा ज़िन्दा करना मुश्किल नहीं। उसकी मिसालें। 259-260
- एक दाने से सौ दाने इन्फ़ाक़ फ़ी सबीललिल्लाह की उम्दा मिसाल। 261
- सदका देने के बाद अज़ीयत पहुंचाना और एहसान जताना सबाब को बर्बाद कर देता है। 262-264
- दिखावे के लिए और अल्लाह की रज़ा (खुशी) के लिए माल ख़र्च करने की मिसाल। 264-265
- ज़मीनी पैदावार से भी ख़र्च करे लेकिन माल दिल लगता हो। 267
- शैतान फ़क़ीरी से डराता है जबकि बे-हयाई पर बदरंग, बे रोक टोक, बेहिसाब ख़र्च करवाता है। 268
- सदक़ात ज़ाहिर और पोशिदा दोनों तरीक़ों से दिया जा सकता है। 271
- हिदायत पर गामज़न करना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इख्तियार में नहीं बल्कि यह अल्लाह तआला का काम है। 272
- बाज़ फ़क़ीर लोगों से मांगते तो नहीं लेकिन वह सदक़ात के मुस्तहक़ हैं। 273

- सूद से मुतालिक़ चन्द अहकामात। 275-279
- क़र्ज़दार को आसानी तक मुहलत दो या फिर उसे बिल्कुल माफ ही कर दो। 280
- अशिया (वस्तुओं) को रहन (गिरवी) रखना भी जायज़ है। 283
- गवाही को छुपाना गुनाह है। 283
- आखरी दो आयात आपकी हिफ़ाज़त की ज़ामिन, रात को उन्हें पढ़ना मसनून है। 285-286

(3) - सूर-ए-आले-इमरान **आयत नं.**

- ज़मीन और आसमान में कोई चीज़ भी अल्लाह तआला से छुपी हुई नहीं हैं। 5-6
- कुरआन की आयत की दो प्रकार (अक़्साम) मुहकामात और मुतशाबिहात। 7
- अक़्लमंद लोगों की दुनिया और आख़िरत के बारे में दुआएं। 8-9
- काफ़िरों का माल और औलाद उन्हें अल्लाह के अज़ाब से छुड़ा न सकेंगे। 10-12
- कुफ्र और इस्लाम का मारका ''बद्र की जंग''। 13
- हयाते दुनिया की छः पसंदीदा चीज़ें जबकि आख़िरत उनसे बेहतर है। 14
- परहेज़गार लोगों के इनामात और उनके नुमाया औसाफ (गुण)। 15-17
- इस्लाम ही अल्लाह तआला का पसन्दीदा दीन है। 19
- नबी अकराम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम और आपके अनुयायियों का दीन सिर्फ़ इस्लाम है। 20
- किसी नबी का क़ातिल और किसी आदिल व इंसाफ़ के दाई का क़ातिल सज़ा में से यक्सां (एकमत)। 21-22
- बेबुनियाद दावों की आड़ में किताबे-इलाही का फ़ैसला मानने से इंकार करना? 23-25
- पूरी कायनात का मालिक संपूर्ण अधिकार वाला (मुख़्तार कुल) और सबको रिज़्क देने वाला अल्लाह है। 26-27
- काफ़िरों से दोस्ती करने वाला हिमायते इलाही से महरूम हो जाता है। 28
- हर शख़्स अच्छे और बुरे आमाल अल्लाह के सामने आ जाएंगे। 30
- मुहब्बते इलाही को हासिल करने का सिर्फ एक रास्ता नबी की सुन्नतों की पैरवी है। 31
- पैदाईश से पहले बच्चों को ''वक़्फुल्लाह'' (अल्लाह के लिए वक़्फ) करने की नज़्र (मन्नत) मानना जायज़ है। 35

- हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम की पैदाईश और बचपन की एक झलक। 35-37
- औलाद लेना या देना किसी नबी के इख्तियार में नहीं है, एक सच्चा वाकि़या। 38-41
- हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम की पाक दामनी और इबादत करने का बयान। 42-43
- हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के ''आलिमुलग़ैब'' (अंर्तयामी) होने का इंकार। 44
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाईश की कुछ शुरुआती सच्चाई। 45-48
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार का बयान और उनके आमद के चन्द मक़ासिद। 49-51
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हामियों और मुखालिफों पर एक नज़र। 52-54
- आसमान पर उठा लेने की पेशगी इत्तिला (पूर्व सूचना) और विरोधियों को कठोर सज़ा देने का वायदा। 55-58
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम दोनों एक लिहाज से हम रुतबा हैं। 59-60
- ईसाई मज़कूराह हक़ाएक को तस्लीम ना करे तो ''मुबाहिला'' कर ले। 61-63
- अहले-इस्लाम की अहले किताबों को दअ्वत और उनकी कुछ मुश्तरक बुनियादी बातें। 64
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मज़हब के अनुसार कौन थे? 65-68
- अहले-किताब की एक खुफ़िया साजिश। 72-74
- अहले-किताब के दुनियावी और दीनी इमानदारी की एक झलक। 75-76
- अम्बीया-ए-किराम लोगों को 'रब्बानी' बनाने के लिए लगे रहते थे। 79
- तमाम अम्बीया अलैहिस्सलाम से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के आने पर ईमान और नुसरत का वादा लिया गया। 81-82
- दीन-ए-इस्लाम तमाम नबियों पर उतरे हुए वादों को बरहक़ मानने का दाई है। 83-85
- जो दीन से फिर जाए, गुमराह और भटके हुए लोगों पर अल्लाह तआला, फ़रिश्तों और तमाम इंसानों की लअनत है। 84-90
- काफिर अगर ज़मीन भर का सोना भी अपने फिदये में दे तो उसके किसी काम का न आएगा। 91
- नेकी सिर्फ़ प्यारी और पसंदीदा चीज़ ख़र्च करने पर मिलती है। 92
- यहूदियों पर वह खाने हराम किये गए हैं जो हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम खुद पर हराम ठहराये। 93-95

- बैतुल्लाह के इम्तियाज़ी औसाफ और हज़-ए-बैतुल्लाह का फ़र्ज होना। 96-97
- अहले-किताब की बातें मानना कुफ्र है। 100-101
- मरते दम तक परहेज़गारी अपनाए रहो। 102
- इस्लाम ने दुश्मनियां दूर कर दी है इसलिए तुम अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो। 103
- दअ़्वत-ए-दीन के लिए एक मख़सूस जमाअ़त की ज़रूरत और उसके औसाफ़ (गुण) का बयान। 104
- गुटबाज़ी पर सख्त सज़ा। 105
- कयामत के दिन कुफ्र करने वालों के चेहरे काले होंगे। जबकि ईमान रखने वालों के चेहरे सफ़ेद होंगे। 106-107
- मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की उम्मत तमाम उम्मतों से बेहतर है। 110
- अहले-किताब मर्दे मैदान नहीं है। 111
- अहले-किताब अपने करतूतों की वजह से जिल्लत व पस्ती में रहेंगे। 112
- अहले-किताब में से परहेज़गार लोगों के कुछ ख़ूबियां। 113-115
- दुनिया की ज़रूरतों की ख़ातिर ख़र्च किये गए माल की मिसाल। 117
- ग़ैर मुस्लिम तुम्हारे बुरा चाहने वाले हैं इसलिए किसी को दिली दोस्त न बनाना। 118-120
- ''उहद'' की जंग के लिए मोर्चा बंदी। 121-122
- उहद की जंग में फरिश्तों का उतरना और अल्लाह की मदद का बयान। 123-127
- सूद अलल इतलाक़ हराम है। 130-133
- परहेज़गारों के कुछ अन्य ख़ूबियों का बयान। 134-136
- जीत यकीनन तुम्हारी ही है, ज़रा मोमिन तो बन कर दिखाओ। 139
- अल्लाह तआला दिनों को हार और जीत में बदलते रहते हैं। 140-143
- अगर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की मौत हो जाए या शहीद हो जाएं तो क्या तुम गुमराह हो जाओगे? 144
- हर किसी की मौत का वक़्त तय है। 145
- साबिका अम्बिया अलैहिस्सलाम भी उम्मतों को साथ लेकर जिहाद करते रहे हैं। 146-147
- काफ़िरों की बातें मानने की बजाए उनसे जिहाद करो नहीं तो तुम गुमराह हो जाओगे। 149
- उहद की जंग में जीत हार से क्यूं बदली? कमियों का सरसरी जायज़ा। 152
- उहद की जंग के दूसरे दौर में अल्लाह तआला की अहले-ईमान पर कुछ

नवाज़िशात। 153-155
- मुनाफ़िक लोगों की तक़्दीरी फ़ैसलों हरज़ाह-सराई और उनके मसक्त जवाबात। 154
- शहादत या स्वभाविक मौत अंततः अल्लाह तआला के पास जमा होना है। 157-158
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की नर्म मिज़ाजी और अल्लाह के यहां सहाबा का मुक़ाम। 159
- हर मामले में मश्विरा लेने का हुक्म। 159
- अल्लाह तआला की मदद के अलावा किसी की मदद कारगार नहीं हो सकती। 160
- ख़्यानत करने वाला ख़्यानत को उठाए हुए कयामत को आएगा। 161
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का आना अहले-ईमान पर खास (विशेष) ईनाम है। 164
- मुसिबतें तुम्हारी अपनी लपरवाही की वजह से तुम पर आती हैं 165-166
- गज़वा उहद में मुनाफिक़ीन का तर्ज़े अमल। 167-168
- अल्लाह तआला के यहाँ शहीदों का मक़ाम व मर्तबा। 169-171
- गज़वा हमरा-उल-असद में मुसलमानों की फतह अज़ीम। 172-177
- काफिरों को मुहलत देने का मक़सद यह है कि गुनाह ज़्यादा कर लें। 178
- कंजूसी से जमा किए हुआ माल रोज़े क़यामत गले का हार बन जाएगा। 180
- यहूद की अल्लाह तआला और अम्बिया की शान में चन्द गुस्ताखियों के नमूने। 181-184
- जो शख़्स जहन्नम से बच गया वह हक़ीक़ी कामयाब है। 185
- अल्लाह तआला जान व माल में तुम्हारी आज़माईश ज़रूर करता रहेगा। 186
- अक़्लमन्दों की चन्द खूबियां और कुछ इल्तिजाओं का तज़किरा (बयान)। 191-194
- जन्नत में ले जाने वाले चन्द महबूब तरीन आमाल। 195
- अहले किताब में से ईमानदारों के ओसाफ (गुणों) का बयान (बयान)। 199
- अहले ईमान को हर वक़्त जिहाद के लिए तैयार रहना चाहिए। 200

(4) - सूर-ए-निसा **आयत नं.**

- सब इंसान एक जोड़े की औलाद हैं। 1
- यतीमों के हक़ों (अधिकारों) का बयान। 2-6
- सभी के साथ एक जैसा इंसाफ़ करने की शर्त पर चार शादियां करने की इजाज़त। 3
- विरासत के बारे में शुरूआती अहक़ामत का बयान। 7-9

- यतीमों का माल खाना वास्तव में दोज़ख़ की आग खाना है। 10
- मिरास का कानून और उनके हदूद-उल्लाह होने का बयान। 11-14
- बेशर्म औरतों और बुरे काम करने वाले मर्दों की इस्लाम के शुरूआती दौर में सज़ा क्या होती थी? 15-16
- किन लोगों की तौबा क़बूल और किनकी रद्द है। 17-18
- तलाक के समय बीवी से माल वापस लेना मना है। 20-21
- किन औरतों से निकाह करना हराम और किन से हलाल है। 22-24
- निकाह के लिए ज़रूरी कामों का बयान। 24
- लड़कियों से निकाह करने और बुरे काम करने की स्थिति में उनकी सज़ा का बयान। 25
- अल्लाह तआला के इरादे और ख़्वाहिश परस्तों के इरादों में क्या फ़र्क़ है? 26-28
- किसका माल नाहक खाने और ख़ुदकुशी की सज़ा। 29-30
- बड़े गुनाहों से बचने पर जन्नत का वादा। 31
- अल्लाह तआला के दिये गए मक़ाम से आगे बढ़ने की इच्छा ना करो। 32
- मर्दों की औरतों पर बरतरी और बीवियों की नाफ़रमानी के इलाज का तरीक़ा। 34-35
- वालिदैन, रिश्तेदारों और पड़ोसियों से नेकी करने का हुक्म। 36
- अल्लाह तआला ज़ुल्म नहीं करता, अलबत्ता नेकी का बदला ज़रूर बढ़ा कर देता है। 40
- काफिर और रसूल की बात न मानने वालों के क़यामत के दिन तीव्र इच्छा का बयान। 42
- नमाज़ समझ कर पढ़ने व गुस्ल व तयम्मुम का ज़िक्र। 43
- यहूदियों के वह्यी-ए-इलाही और आम बातों में फेर बदल करने का बयान। 46
- अहले-किताब को ईमान ना लाने पर चेतावनी। 47
- अल्लाह तआला मुश्रिक को माफ़ नहीं करेगा। 48
- मुश्रिकीन को ख़ुश करने के लिए अहले-किताब की अहले-इस्लाम से खुली दुश्मनी। 51-57
- दीनी मसाइल में इख़्तिलाफ के वक़्त अल्लाह और रसूल से फ़ैसला लेने का हुक्म। 59
- कुछ लोग ईमान का दावा रखने के बावजूद शैतान से फ़ैसले करवाना चाहते हैं। 60-63
- हुक्मे इलाही के मुताबिक रसूल की इताअत गुजारी करना ही उसकी बेअ़सत की मंशा है। 64
- रसूलुल्लाह के फ़ैसलों को दिल से ना मानने वाला मोमिन नहीं हो सकता। 65

- सीधे रास्ते की तौफ़िक़ कैसे तर्ज़े अमल पर मिला करती हैं? 66-68
- अल्लाह और रसूल का हुक्म अम्बिया, सच्चे लोगों, शहीदों और सुलहा का साथ इख्तियार करने में होगा। 69-70
- जिहाद का हुक्म और मुनाफ़िक लोगों की बहाने बाज़ियों का ज़िक्र। 71-77
- किस्मत में जहां मौत आनी है वहीं आ कर रहेगी। 78
- फायदा और नुक्सान के बारे में कुफ्र और इस्लाम का नज़रिया। 78-79
- कुरआन करीम में इख्तिलाफ का ना होना इसके मिन जानिब अल्लाह होने की दलील है। 82
- नई बात खुद फैलाने के बजाए बाख़बर लोगों को उसकी खबर दी जाए। 83
- अच्छी या बुरी सिफ़ारिश से सिफ़रिशी को भी बराबर हिस्सा मिलता है। 85
- सलाम का जबाव देने का हुक्म है। 86
- मुनाफ़िक़ीन और कुफ्फार से जिहाद करने के कुछ हिस्सों का बयान। 88-91
- ग़लती से हत्या और उसके कफ्फारे का बयान। 92
- किसी मोमिन को जानबूझ कर क़त्ल करने की सज़ा। 93
- जिहादी सफ़र में सलाम अर्ज़ करने वालों को मारने में जल्दबाज़ी से काम न लें। 94
- मुजाहिदीन अन्य ग़ैर मजबूर मुसलमानों से दर्जे में अधिक ऊंचे हैं। 95-96
- हिज़रत किन लोगों पर फ़र्ज़ है और किन लोगों पर फ़र्ज़ नहीं है। 97-100
- नमाज़-ए-कस्र का बयान। 101
- मैदाने-जिहाद में नमाज़ किस तरह अदा की जाए? 102
- सब नमाज़ों के वक़्तों को अल्लाह ने मुक़र्रर फ़रमाया है। 103
- हदीस क़ुरआ़न-ए-करीम की तफ्सीर (विवेचना) है। 105
- ख़यानत करने वालों और ग़लत काम करने वालों का पक्ष लेना जाइज़ नहीं है। 107-109
- गुनाह की माफी मांगनी चाहिए और उसे किसी बेगुनाह के ज़िम्मे ना लगाया जाए। 110-113
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को अल्लाह तआला ही सब कुछ सिखाते हैं। 113
- सहाबा-इकराम रजि अल्लाहू अन्हुम का रास्ता मेअयार हक़ है, इससे हटने वाला जहन्नम में जाएगा। 115
- इब्लीस का धोखा। 117-121
- जिसने अपने चेहरे को अल्लाह का फ़रमाबरदार बना लिया उसका दीन सबसे बेहतर है। 125
- आपसी लड़ाई (मतभेदों, समस्याओं) में सुलह ही बेहतर है। 128
- एक से ज़्यादा बीवी रखने की सूरत में किसी एक की तरफ ज़्यादा झुकाव न रखें। 129

- गवाही में रिश्तेदारी का ख़्याल न करें। बल्कि सच्ची गवाही दें। 135
- काफ़िरों से दोस्ती और गलत मजलिसों में बैठने की सज़ा। 139-140
- मुनाफ़िक़ीन का तर्ज-ए-इबादत नमाज़ में सुस्ती। 142-143
- मुनाफ़िक़ीन का आख़िरी ठिकाना। 145
- ईमान और शुक्रगुज़ारी के साथ अज़ाबे इलाही टल जाता है। 147
- मज़लूम को ज़ालिम की शिकायत करने की इजाज़त है। 148
- नबियों के बीच फर्क़ करना कुफ्र करने वालों का अक़ीदा है। और फर्क़ ना करना अहले ईमान का अक़ीदा है। 150-152
- अहले किताब के बेजा और गैर मुनासब सवालात 153
- यहूद की कुछ हुक्म अदूली (अवाज्ञा) और कुफ्रिया आमाल का बयान। 154-162
- ईसा इब्ने मरयम यक़ीनन क़त्ल नहीं हुए बल्कि अल्लाह तआला के पास हैं। 157-159
- चन्द अम्बिया किराम अलैहिस्सलाम पर वह्यी का ज़िक्र। 163-165
- पूरी इन्सानियत को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने की दअ्वत। 170
- नसारा को गुलू और बातिल एतक़ाद छोड़ने की दअ्वत। 171
- इबादते इलाही करने में कोई आर और तकब्बुर नही आना चाहिए। 172-173
- पूरी इन्सानियत के लिए कुरआन हकीम ‘‘नूरेमुबीन’’ है। 174-175
- कलाला (जिसके माँ बाप और औलाद न हो) की मौत की सूरत मे बहन भाईयों का विरासत में हिस्सा। 176

(5) - सूर-ए-मायदा **आयत नं.**

- हालत एहराम में बर्री (खुश्की) शिकार की मनाही और दीगर हुक्म। 1-2
- मदद नेकी व परहेज़गारी में हो ना कि गुनाह और जुल्म में। 2
- हराम जानवरों की तफ्सील और मजबूरी के समय हरम चीज़ों को खाने की इजाज़त। 3
- दीन-ए-इस्लाम अल्लाह का पसंदीदा और मुकम्मल तरीन दीन है। 3
- हलाल खानों और शिकारी जानवरों की वज़ाहत। 4
- अहल किताब के खानों और उनकी औरतों से निकाह करने का बयान। 5
- वुज़ू, गुस्ल और तयम्मुम का तरीक़ा और अहकामात (अध्यादेश)। 6
- किसी कौम की दुश्मनी तुम्हें इंसाफ़ करने से ना रोके क्योंकि अद्ल तो परहेज़गारी है। 8

- अल्लाह चाहे तो दीन के दुश्मनों के हाथ लड़ाई के लिए ना उठ सके। 11
- बनी इसराईल और उन्हें दिये गए कुछ अहक़ामात (अध्यादेश)। 12
- यहूदियों और नसरानियों को इलाही कलाम को भुला देने पर क्या-क्या सज़ा मिली? 13-14
- किताब-ए-मुबीन की पैरवी करने से ही सिरात-ए-मुस्तकीम मिलेगी। 15-16
- यहूदी व नसारा के बेबुनियादी दावे कि हम अल्लाह के बेटे और महबूब हैं। 18
- बनी इसराईल का एतिहासिक कायरतापूर्ण वाक़िया। 21-26
- हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के दो बेटों हाबिल और काबिल का वाक़िया। 27-31
- अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम से लड़ाई और ज़मीन में फसाद मचाने वालों की सज़ा। 33-34
- क़ुर्बे-इलाही हासिल करने और अल्लाह के लिए जिहाद करने का हुक्म। 35
- चोर (मर्द और औरत) की सज़ा का बयान। 29-38
- यहूदी ग़लत बातों को सुनने और सही बातों को बदलने के आदी हैं। 41
- अहले-किताब में आदल व इंसाफ़ से फ़ैसला करने का हुक्म है। 42-43
- अल्लाह द्वारा दिये गए अहक़ामात के मुताबिक़ फैसला ना करने की सज़ा। 45-47
- जिस्मानी अंगों का भी क़िसास है। 45
- यहूदी व नसारा और गैर मुस्लिमों की रायों की बजाए सिर्फ कुरआन के अनुसार फैसला करें। 48-50
- यहूदी और नसारा से दोस्ती करने वाला उनके जैसा हो जाता है। 51
- अल्लाह तआला की मेहबूब जमाअत की खूबियां। 54-56
- दीन और दीनी तरीक़े का मज़ाक करने वालों को दोस्त ना बनाओ। 57-58
- यहूदी पर दुनिया के अज़ाबों की कुछ मिसाल। 60
- औलमा की ज़िम्मेदारी। 63
- यहूदी लड़ाई की आग भड़काते रहते हैं। 64
- अल्लाह तआला के अहक़ामात की पैरवी में दुनियावी खाने पीने की बहुतायत है। 66
- अल्लाह तआला को अपने रसूल को तब्लीग़ का हुक्म और उसे लोगों से बचाने का वादा। 67
- अहले किताब नबियों को झुठलाते और उनको क़त्ल क्यूं करते रहे? 70
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इबादते-इलाही और शिर्क के बारें खुत्बे (संबोधन) का खुलासा। 72

- 'तस्लीस' (तीन इलाह) के मानने वाले काफ़िर हैं। 73-74
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उनकी वालिदा और अहले-किताब के बारे में कुछ सच्चाई। 75-80
- मुसलमानों के सबसे बड़े दुश्मन यहूदी और मुश्रिक हैं। 82
- ईसाईयों में से ईमान लाने वाले लोगों का बयान। 83-85
- हलाल की गई चीज़ों को खाओ, उन्हें हराम न ठहराओ। 87-88
- पुख़्ता कसमें काबिले पकड़ हैं, उनके कफ्फ़ारे का बयान। 89
- शराब, जुए, अस्थानों का और पासो की मनाही और उनमें शैतान के मक़सद। 90-91
- एहराम की हालत में बर्री (ख़ुश्की) का शिकार करने का कफ़्फ़ारा। 94-95
- बहरी (समंदरी) शिकार हालत-ए-एहराम में भी हलाल हैं। 96
- पाक व नापाक एक जैसा नहीं है चाहे नापाक की अधिकता ही क्यों ना हो। 100
- अधिक सवालों की मनाही। 101-102
- अरबों के रस्म-ओ-रिवाज और पूर्वजों के रास्ते पर चलना का दीन-ए-इलाही से कोई ताल्लुक़ नहीं। 103-105
- वसीयत का हुक्म और सफर के दौरान, अत्यंत बीमारी में मुस्लिम या गैर मुस्लिम को गवाह बनाने का बयान। 106-108
- महशर के मैदान में रसूलों खास कर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से कुछ सवाल। 109-120
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर इनामात-ए-रब्बानी का बयान। 105-110

(6) सूर-ए-अनआम **आयत नं.**

- मक्का के काफिर लोगों के कुरआन करीम और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम पर मोहूमा एतराज़ात के जवाब। 7-11
- मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का सच्चे मअबूद का तअरूफ। 12-19
- तुम्हारे शुरका कहां हैं? कयामत के दिन मुश्रिकों से (मालिक-ए-यौमिद्दीन का) सवाल। 22-24
- काफ़िरों का अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर कुछ बे मौक़ा आरज़ूओं का इज़हार। 27-28
- बस सब्र करें पिछले नबियों की तरह हमारी मदद आपके साथ है। 34
- काफिरों को ईमान वाला बनाने के लिए चमत्कार लाना नबी के बस में नहीं। 35

- ज़मीन के तमाम जानदार और परिन्दों की तुम्हारी तरह जमाअते हैं। 38
- अल्लाह की गिरफ्त पर सभी को भूल कर सिर्फ़ अल्लाह को पुकारते हो। 40-41
- तंगदस्ती और बीमारी अल्लाह की पकड़ है ताकि लोग गिड़गिड़ाएं। 42-43
- दुनिया की नेअमतों की अधिकता अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से छूट और ढील भी हो सकती है। 44-45
- अल्लाह के सिवा कोई ऐसा है जो तुम्हें कान, आंखें और स्वस्थ दिल दे सके? 46
- नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम 'ख़ातिमुल अम्बिया' का ऐलान "मैं आलिमुल ग़ैब" हूँ ना फरिश्ता। 50
- सहाबा से बेरुखी पर आप सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को तम्बीह और सहाबा के मुकाम का बयान। 52-54
- हिदायत की राह और ज़लालत की राह में फर्क़ इम्तियाज़। 56-58
- ग़ैब की तमाम चाबियां अल्लाह तआ़ला के ही पास है। 59
- 'रात को सोना' मौत और 'दिन का उठना' ज़िन्दगी है। 60
- फ़रिश्तों के कुछ काम हिफ़ाज़त करना और मारना है। 61-62
- अल्लाह तुम्हें मुश्किलों से निकालता है फिर तुम शिर्क करते हो? 63-64
- अज़ाबे इलाही की कुछ सूरतें। 65
- क्या ग़ैर इस्लामी महफ़िलों में बैठे रहना जायज़ है? 68-70
- जो नफे और नुक्सान का मालिक नहीं उसे पुकारना हिदायत नहीं बल्कि......। 71
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अपने बाप और अपनी क़ौम को समझाने का एक अंदाज़। 74-82
- मुश्रिकीन के पास शिर्क करने की कोई दलील नहीं। 81
- जलीलुलकद्र अम्बिया अलैहिस्सलाम का बयान और उनकी पैरवी का हुक्म। 83-90
- बशर पर वह्यी-ए-इलाही का नुज़ूल हुआ की नहीं। 91-92
- मुश्रिकीन की मौत का मन्जर और कुछ अहम सवालों का बयान। 93-94
- ख़ालिक-ए-कायनात के कुछ तख़लीक़ी शाहकार फिर शक क्यों? 95-100
- अल्लाह तआला की आयत में ग़ौर व सोच विचार ना करने से अपना ही नुकसान कर रहे हो। 104
- वह्यी-ए-इलाही की पैरवी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का दस्तूर व अमल। 106
- उनके बातिल मअबूदों को गालियां ना दो वरना वो अल्लाह को गाली देंगे। 108

- ज़िद्दी, जाहिल को अनोखी-अनोखी निशानियां दिखाना भी कारगर नहीं होता। 111
- इन्स व जिन्न (इंसान और जिन्नात) में से हर एक नबी के दुश्मन हुए हैं। 112-113
- अल्लाह तआ़ला की सभी बातें सच्ची व इंसाफ़ पर आधारित है। 115
- ज़मीन में लोगों की अधिक आबादी क़यासी बातें करने वाली है। 116-117
- अल्लाह के नाम पर ज़िबह किए गए जानवर हलाल हैं, उन्हें तुम खा सकते हो। 118-119
- ज़ाहिरी और बातिनी सभी गुनाह छोड़ दो। 120
- जिस जानवर पर ज़िबह के समय अल्लाह का नाम ना लिया जाए उसे ना खाओ। 121
- शयातीन भी अपने औलियां को वह्यी करते हैं। 121
- हर बस्ती के रईस ही बड़े मुजरिम हुआ करते हैं। 123
- कोई अपनी ख़्वाहिश और आरज़ू से रसूल नहीं बन सकता। 124
- हिदायत और ज़लालत के आसार व निशानियों का बयान। 125-127
- महशर के मैदान में जिन्नों से पूछताछ और उनके लिए दोज़ख़ का फ़ैसला। 128-129
- तमाम जिन्नों और इंसानों से एक अहम तरीन रसूल। 130
- मुश्रिकीन की खुद से बनाए हुए शरीयत के चंद पहलू। 136-140
- मुश्रिकीन का खेतों और मवेसियों में ग़ैरूल्लाह के लिए अल्लाह के मिस्ल हिस्से मुक़र्रर करना। 136-137
- एक जैसे मिलते जुलते मुख़्तलिफ स्वादों वाले फल कुदरत इलाही का शाहकार। 141
- फसलों और फलों के आने पर उनका सदका अदा करना वाजिब है। 141
- अल्लाह का दिया हुआ रिज़्क खाएं और शैतान की बातें न मानें। 142
- आठ हलाल जानवरों का बयान। 143-144
- अल्लाह तआ़ला के हराम किए गए कुछ जानवर और अन्य कामों का बयान। 145-146
- अगले और पिछले मुश्रिकीन के ढकोसले। 148
- जो अल्लाह की आयत को झुठलाए उनकी बातें हरगिज़ ना माने। 150
- कुछ हराम उमूर (कामों) और मामलों का तफ्सीली ज़िक्र। 151-152
- सिर्फ "नबियों की राह" की पैरवी करें। 153
- कुरआ़न बरकत वाली किताब है, उसकी पैरवी इख़्तियार करें। 155-157
- एक वक़्त आने वाला है कि ईमान मोअतबर ना होगा। 158
- फ़िरकाबाज़ लोगों का रसूल सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का कोई ताल्लुक़ नहीं है। 159
- "मज़हब-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम" का परिचय। 161-165

(7) सूर-ए-आराफ़ **आयत नं.**

- अल्लाह के नाज़िल किए गए अहकमात की पैरवी करो वरना अज़ाब किसी भी वक़्त आ सकता है। 3-5
- कयामत के दिन आमालों को तौला जाएगा और वज़न के हिसाब से अंजाम होगा। 8-9
- शैतान का तकब्बुर व गुरूर, कयास और बद्नीयती पर मबनी प्रोग्राम। 11-18
- हज़रत आदम व हव्वा अलैहिस्सलाम को शैतान की फ़रेबदही और उनकी दुआ की क़बूलियत। 19-25
- वस्त्र पहनने में ये अमूर मल्हूज़ ख़ातिर रखे। 26
- ''शैतानी दिमाग़'' बेशर्मी और नग्नता को बढ़ावा देता है। 27-28
- खाओ पियो लेकिन फालतू खर्च मत करो। 31
- बेहयाई के सब काम हराम हैं। 33
- ग़ैररुल्लाह को पुकारने वालों की मरने के समय और क़यामत के दिन हालत-ए-ज़ार। 37-38
- दोज़ख़ में एक दूसरे पर इल्ज़ाम तराशी। 38-39
- तमाम अहले-जन्नत की आपसी दुनिया की नफ़रतें खत्म हो जाएंगी। 42-43
- अहले-जन्नत का दोज़ख़ियों से वादा इलाही के बारे में सवाल। 44-45
- ''असहाबुल आराफ'' का बयान। 46-49
- दोज़ख़ वालों की जन्नत वालों से दो इल्तिज़ा (निवेदन)। 50-51
- दो हसरतें जो कभी पूरी न होंगी। 53
- दुआ मांगने के आदाब। 55-56
- ''बरान-ए-रहमत'' एक नेमत-ए-इलाही है, इसके फल व फायदों का बयान। 57-58
- हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का पुर दर्द वाअज़। 59-64
- हज़रत हूद अलैहिस्सलाम और उनकी कौम का एक संवाद। 65-72
- हज़रत सालेहा अलैहिस्सलाम का समझाने बुझाने वाला अंदाज़ और कौम का ज़ालिमाना रवैय्या। 73-79
- हज़रत लूत और हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम का तब्लीग़ और उनकी क़ौम का अंजाम। 80-93
- हर कौम पर बीमारी और मोहताजी आती रही है ताकि वो गिड़गिड़ाए। 94-95
- ईमान और तक़्वा की बदौलत ज़मीन और आसमान से बरकतें मिलती हैं। 96

- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔन का अव्वल बातचीत। 104-108
- क़ौम-ए-फ़िरऔन के सरदारों की ग़लत रहनुमाई। 109-112
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और जादूगरों के बीच मुकाबला-ए-हक़ व बातिल। 112-113
- जादूगरों को फ़िरऔन की धमकियां और उनका अडिग रहना। 123-126
- बनी इस्राईल की नस्ल कशी का दूसरा दौर मूसा अलैहिस्सलाम को ख़ुशख़बरी। 126-127
- फिरऔनी ''अज़ाब-ए-इलाही'' के भंवर में। 130-136
- बनी इसराईल से किए वादे पूरे होने लगे। 137
- बनी इसराईल का मअबूद बना कर देने का जाहिलाना मांग। 138-140
- कोह-ए-तूर पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का अल्लाह से मुलाकात और तौरेत का उतरना। 142-147
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के कोह-ए-तूर पर चले जाने के बाद ''बछड़ा'' मअबूद बना लिया गया। 148-149
- वापसी पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की भाई पर नाराज़गी और नरमी। 150-154
- सत्तर (70) रुसवा-ए-बनी इसराईल मौत के आगोश में और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ। 155
- मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की कुछ इम्तियाज़ी ख़ूबियां का बयान। 157-158
- बनी इसराईल पर इनामत-ए-इलाही और उनकी नाफरमानियां। 160-162
- ''यौमुस्सबत'' को मछलियां पकड़ने पर बनी इसराईल की तीन गिराहों का बयान। 163-166
- बनी इसराईल के नेक व बद लोगों के अमाल का आलोचनात्मक जायज़ा। 167-171
- ज़ुरियते आदम अलैहिस्सलाम से लिए गए ''अहदे-अलसत'' का बयान। 172-174
- दीन का इल्म मिलने के बावजूद तालिब-ए-दुनिया बनने का एक मिसाल। 175-178
- चार पैरों वालों से बद्तर लोगों की हालत कैसे होते हैं? 179
- ''अस्मा-ए-इलाही'' के बारे मे ज़रूरी बातें। 180
- ''झूठलाने वाले को हम मोहलत देते हैं जबकि हमारी तदबीर बड़ी पुख़्ता है।'' 182-183
- क़यामत का इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के पास है और वह अचानक आ जाएगी। 187
- मैं अपने नफ़ा नुकसान का मालिक हूं न इल्म ग़ैब जानता हूं ऐलाने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम। 188
- बीवी के तख़्लीक़ का उद्देश्य। 189

- अल्लाह से औलाद लेकर शुक्राने शरीकों के। 190
- ज़रा शरीकों की ताक़त तो देंखे। 191-198
- जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वो भी तुम्हारी तरह के बन्दे हैं। 194
- आला किरदार की तीन खूबियां। 199
- शैतानी वस्वसा आने पर आप का किरदार क्या होना चाहिए? 200-202
- तिलावत कुरआ़न मजीद के मौक़े पर शांती बनाए रखने ओर उसे सुनने का हुक्म। 204
- अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र दबी आवाज़ में और अपने दिल में करें। 205
- फ़रिश्ते भी इबादत करते हैं। 207

(8) सूर-ए-अनफ़ाल **आयत नं.**

- मोमिनों के करने वाले आमाल। 1
- सच्चे और पक्के अहले ईमान की पांच सिफ़ात और उनकी कामयाबी का बयान। 2-4
- ''मअरक-ए-बदर'' से मकासिद-ए-इलाही क्या थे? 7-8
- सहाबा-इकराम रज़िअल्लाहु अन्हुम की फरियाद रसी और एक हज़ार फरिश्तों से उनकी मदद। 9-10
- इनामत-ए-इलाही का बयान। 11
- गज़्वा बदर में फ़रिश्तों को बाकायदा कोड़े लगाने और क़त्ल करने का हुक्म था। 12
- काफ़िरों से आमने सामने मुकाबले की सूरत में अहकाम-ए-परवरदिगार। 15-16
- फाइल-ए-हक़ीक़ी अल्लाह तआ़ला ही है। 17-18
- अल्लाह तआ़ला अहले ईमान के साथ हैं, लिहाजा कुफ़्र की कसरत उन्हें फ़ायदा न दे सकी। 19
- मुसलमानों की इस्लामी ज़हनसाज़ी। 20-23
- मुहाज़िरीन सहाबा रजिअल्लहु अन्हुम पर नवाज़िसात के बयान। 26
- तक़्वा के दीनी ओर दुनियावी फायदे का बयान। 29
- काफिरों की नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के बारे में खुफिया उपाय। 30
- काफ़िरों का अज़ाब मांगना और अल्लाह तआ़ला का उसे रोके रखना, आख़िर क्यूं? 32-33
- मुश्रिकीन की नमाज़ों का तरीका। 35
- काफ़िरों के लिए उनके जंगी ख़र्च हसरत की वजह बन जाऐंगे। 36-37

- दीनी ग़ल्बे तक जिहाद जारी रखने का हुक्म। 29-40
- माल-ए-गनीमत में से पांचवे हिस्से के हक़दार। 41
- गज़्वा बदर में अहले इस्लाम और काफ़िरों का पड़ाव और तदबीरे इलाही। 42
- गज़्वा बदर में नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम और सहाबा-इकराम की नुसरत व ताईदे इलाही। 43-44
- काफ़िरों से लड़ाई के लिए कुछ हिदायतें। 45-47
- काफ़िरों के लश्कर में शैतान की मौजूदगी के बावजूद हार। 48
- मौत के वक़्त काफ़िरों व मुश्रिकीन के साथ फ़रिश्तों का बर्ताव। 50-52
- काफ़िरों की बद-अहदी का डर हो तो मुआहिदा (संधि) तोड़ दें। 56-58
- मुसलमानों को इस्लाह की तैयारी का हुक्म और उसके बाद फायदे का बयान। 60
- काफ़िर सुलह चाहता हो तो उससे सुलह कर लो। 61-62
- सहाब-इकराम रजिअल्लाहु अन्हुम के दिलों में उल्फत पैदा करना नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का नहीं बल्कि अल्लाह का काम है। 63
- जिहाद की तरग़ीब देने का हुक्म, नीज़ काफ़िरों और मुसलमानों के बीच मवाज़ना-ए-ताक़त। 65-67
- बदर की जंग के कैदियों से सलूक ओर गज़ब-ए-इलाही का एक मन्ज़र। 69-67
- मुहाजिरीन व अन्सार का बयान और ग़ैर मुहाजिरीन से संबंध का अंदाज़। 72
- काफिर आपस में एक दूसरे के दोस्त और रफीक हैं। 73

(9) सूर-ए-तौबा आयत नं.

- काफ़िर मुआहिदीन(संधि कर्ताओं) को चार माह की मोहलत। 1-5
- कोई मुश्रिक पनाह का तालिब हो तो पनाह दे दो ताकि वो अल्लाह का कलाम सुन ले। 6
- काफ़िर जीत जाने की सूरत में तुम्हारे साथ क्या सलूक करेंगे। 8-10
- अगर वो ईमान क़बूल कर लें तो वो तुम्हारे दीनी भाई बन जाएंगे। 11
- अगर वो बदअहदी और दीन में तानाज़नी करे तो उनसे जिहाद करो। 12-13
- मक़सिद-ए-जिहाद व क़िताल। 14-16
- मस्जिदों को आबाद रखने वाले लोगों की खूबियां। 17-18
- कुछ नेक अमाल का बाहमी मवाज़ना और तक़ाबुली जायज़ा। 19-22

- कुफ्र के दिलदादा मां-बाप और भाई-बहन से दोस्ती न रखना वरना। 23
- अगर तुमने जिहाद पर वालदैन, औलाद, रिश्तेदारों वग़ैरह को तरजीह दी तो क्या अंजाम होगा? 24
- मुसलमानों की इब्तिदाई तौर पर पराजय के कारण और फतह। 25-27
- मुश्रिक नापाक व पलीद हैं लिहाजा मस्जिद-ए-हराम में दाख़िल नहीं हो सकता। 28
- अहले किताब से क़िताल करने और जज़िया लेने का बयान। 29
- यहूदी व नसारा के शिर्किया आमाल का बयान। 30-31
- दीन-ए-पैगम्बर सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम तमाम अदयान पर ग़ालिब आएगा। 33
- अक्सर उलेमा और सूफ़ीया लोगों के मालों को नाहक खाते और सीधे रास्ते से रोकते हैं। 34
- सोने चांदी के ढेर रखने और ज़कात न देने वालों का अंजाम। 34-35
- आगाज़े कयनात से महीनों की तादाद बारह है, जिन में चार मोहतरम हैं। 36
- जिहाद की मुनादी हो तो ज़रूर निकलो वरना। 38-39
- हिज़रत-ए-नबवी का क़िस्सा और नुसरत इलाही। 40
- जिहाद का हुक्म और मुनाफिक़ीन का बहाना बनाना। 41-42
- अहले ईमान जिहाद से बचते नहीं और वही परहेज़गार है। 44
- मुनाफिक़ीन का बुज़दिलाना किरदार और उनकी अन्य खूबियां। 45-59
- ज़कात के मसरफों का बयान। 60
- काफ़िरों और मुनाफिक़ीन के मुकाबले में नबी अहले ईमान के लिए रहमत हैं। 61
- मुनाफिक़ीन के शंकाए, मज़ाक और कुफ्र का बयान। 64-66
- मुनाफ़िक़ीन के किरदार और उनके सज़ा का बयान। 67-70
- मोमीनों के किरदार व खूबियां और उनकी जज़ाए-ख़ैर का बयान। 71-72
- मुनाफ़िक़ीन और मुश्रिकीन से जिहाद का हुक्म। 73
- मुनाफ़िक़ीन के बाद अज-इस्लाम कुफ्र करने का बयान और उनके मजीद औसाफ। 74-79
- मुनाफ़िक़ीन के लिए कोई माफी नहीं जबकि नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम भी उनके लिए इस्तग्फ़ार करें। 80
- गज़्वा तबूक की तैयारी और मुनाफ़िक़ीन का किरदार। 81-83
- मुनाफ़िक़ीन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने की मनाही। 84
- मुनाफ़िक़ीन व काफ़िरों को दुनिया में अज़ाब देने का एक रब्बानी अंदाज़। 85

- जिहाद के मामले में माजूर लोगों की तफ्सील। 90-93
- मुनाफ़िक़ीन की जिहाद में शरीक न होने पर मअज़रते (क्षमा याचना)। 94-96
- बद्दुओं (गाँव वालों) के दो गिराहों का बयान। 97-99
- अल्लाह के महबूब व पसंदीदा लोगों का ज़िक्रे ख़ैर। 100
- मुनाफ़िक़ीन को दोहरी सज़ा होगी। 101
- सदक़ात देने वालों के हक़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को दुआएं करने का हुक्म। 103
- "मस्जिद ज़रार" कें खुफ़िया मकसदों और इसमें नमाज़ पढ़ने का हुक्म। 107-108
- तक़्वा की बुनियाद पर तैयारशुदा मस्जिद और इसके नमाज़ियों का मुक़ाम व मरतबा। 108
- अल्लाह ने जन्नत के बदले मोमीन के जान व माल ख़रीद लिये हैं। 111
- अहले ईमान की चुनिंदा खूबियां । 112
- मुश्रिकीन के लिए इस्तिग्फार न करने का हुक्म और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मिसाल। 113-115
- तबूक की जंग की सख़्तियों का मन्ज़र और पीछे रहने वाले तीन सहाबा की तौबा का बयान। 117-118
- मुजाहिदीन के लिए भूख, प्यास और थकावट वगैरह पर भी नेक अमल लिखा जाता है। 120-121
- अमली जिहाद के साथ-साथ एक गिरोह को दीनी उलूम भी हासिल करने चाहिए। 122
- काफ़िरों के क़रीबियों से जिहाद का हुक्म। 123
- नई सूरते नाज़िल होने से दो गिरोहों पर मख़्तलिफ असर पड़ने का बयान। 124-125
- अहले ईमान के बारे में रसूल सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की शफ़क़्क़त व रहमतों का बयान। 128

(10) सूर-ए-यूनुस **आयत नं.**

- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्म्म की बशरियत और रिसालत का बयान। 2
- अल्लाह तआ़ला की कुछ इस्तहक़ाक़ी सिफ़ात का बयान। 3
- सूरज और चांद के कुछ मक़ासिद (उद्देश्य)। 5

- अहले ईमान के ''कुछ जन्नती अवक़ाल'' का बयान। 9-10
- एक दुनियादार इंसान तकलीफ के समय और तकलीफ के बाद मिजाज़ का बयान। 12
- कुरआन वह्यी-ए-इलाही है, उसे बदलना नबी के इख़्तियार में नहीं। 15
- ''यह अल्लाह के पास हमारे सिफारशी हैं'' मुश्रिकीन मक्का का विश्वास। 18
- मक्का के मुश्रिकीन बुरे समय में अल्लाह ही को पुकारते थे। 22-23
- दुनियावी जिंदगी के मिसाल। 24
- अहले जन्नत और अहले जहन्नम के अलग-अलग अंजाम का बयान। 26-27
- बातिल मअबूद मुश्रिकीन की इबादत का इंकार कर देंगे। 28-29
- ये सिफाते इलाही को मुश्रिकीन भी मानते थे, ज़रा देखो सोचो तो। 31-32
- क्या बातिल मअबूद राहे-हक़ दिखाते हैं या अल्लाह तआला? 35
- अज़मत-ए-कुरआन और काफ़िरों को कोई एक सूरत लाने का चैलेंज। 37-39
- हर इंसान सिर्फ़ अपने किए का जवाबदेह है। 41-43
- दुनियावी ज़िन्दगी की हक़ीक़त घड़ी भर से ज़्यादा नहीं। 45
- हर उम्मत की तरफ रसूल आया है, फिर उनका फैसला हुआ है। 47
- ''मैं अपने नफा व नुक्सान का मालिक नहीं'' पैगम्बर सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की वज़ाहत। 49
- कुरआन मजीद हिदायत, रहमत व नसीहत और शिफा है। 57-58
- ''अल्लाह तआला की हलाल करने वाली चीजों को हराम समझना'' आख़िर किस के हुक्म से? 59
- अल्लाह तआला की वुसअत-ए-इल्मी का बयान। 61
- औलिया अल्लाह का परिचय। 62-64
- गैरूल्लाह के पुजारी गैर मुसतनद बातें करते हैं। 66
- हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का अपनी कौम को बातिल मअबूदो समेत हर बार आज़माने का चैलेंज। 71-73
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दअ्वत और मुकाबले में जादूगरों की हार। 77-82
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की अपनी कौम को तवक्कुल की तलकीन और फिरौनियों के ख़िलाफ़ दुआ। 84-89
- फिरऔन के डूब जाने का मन्ज़र। 90-92
- क़ौमे यूनुस अलैहिस्सलाम पर आया अज़ाब टल गया। 98-100
- मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की ज़बान से अपने मज़हब का ऐलान। 104-109

(11) सूर-ए-हूद **आयत नं.**

• तौबा व इस्तिग़्फ़ार के दुनियावी फायदे।	1-3
• ज़मीन पर रहने वाले तमाम जानदारों का रिज़्क अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे है।	6
• आसमान और ज़मीन की बनने से पहले (तख़्लीक से कब्ल) अल्लाह तआ़ला का अर्श पानी पर था।	7
• काफ़िरों का अज़ाब इलाही के बारे में मज़ाक।	7-8
• नाशुक्रे इंसान की पहचान।	9-11
• काफ़िरों के ऐतराज़ात और मुतालिबात (मांग) पर अपना दिल तंग न करें।	12
• कुरआ़न जैसी, दस सूरतें लाने का चैलेंज।	13-14
• दुनिया को मांगने वालों को आखिरत में जहन्नम के अलावा कुछ नहीं मिलेगा।	15-16
• इन ज़ालिमों की कुछ सिफात जिन पर लअनत और दुगना अज़ाब होगा।	18-22
• मुसलमानों और काफ़िरों की दो मिसालें।	24
• हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को "बशर" कहकर ठुकरा दिया गया, तफ्सिली बयान।	25-28
• हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का ग़ैब जानने से मनाही।	31
• अगर अल्लाह गुमराह रखना चाहे तो कोई नबी भी हिदायत नहीं दे सकता।	32-34
• हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती बनाने और अज़ाबे इलाही आने की तफ़सील।	36-49
• अल्लाह के यहां रिश्ते काम आते नहीं इसलिए हज़रत नूह अलैहिस्सलाम बेटे को नहीं बचा सके।	42-47
• हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की अपनी क़ौम को दअ़्वत और उनका अंजाम।	52-60
• तौबा व इस्तग़्फार से विपदा (आफत, मुसिबत) ख़त्म होती है।	52
• हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की कौम और उंटनी का बयान।	61-68
• नूरी मख़्लूक ने खाने को हाथ नहीं लगाया, कुरआ़न की गवाही।	69-70
• हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, उनके घर वालों और फ़रिश्तों की बातचीत का एक मन्ज़र।	71-76
• हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के यहां फरिश्तों का आगमन और उनकी क़ौम का अंजाम।	77-83
• हमारी जैसी ख़ूबियों से लैस क़ौमे शुऐब अलैहिस्सलाम का अंजाम।	84-85
• अज़ाबे इलाही आने पर उनके मअबूद कुछ काम न आ सके।	101-102
• हश्र के मैदान में कोई शकी (बुरा) और कोई सईद (नेक) अल्लाह की	

इजाज़त के बगैर बात भी नहीं कर सकेगा। 103-109
- ज़ालिमों की तरफ़ झुकाव रखने का अंजाम। 113
- नमाज़ पंजगाना का इशारतन बयान और नेकियों के कफ़्फ़ारा बनने का बयान। 114
- हर बस्ती के अक्लमंद लोगों का क़िरदार कैसा होना चाहिए। 116-117
- पिछले नबियों और रसूल अलैहिस्सलाम के वाक़िया का मक़ासिद दिल की तस्कीन है। 120-123

(12) सूर-ए-यूसुफ **आयत नं.**

- नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का ज़रिया-ए-मालूमात वह्यी-ए-इलाही है। 3
- हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का ख़्वाब। 4-6
- बिरादराने यूसुफ अले. की साज़िश। 7-14
- क़ाफिले वाले हज़रत युसूफ़ अलैहिस्सलाम को मिस्र के बाज़ार ले गए। 19-20
- हज़रत युसूफ़ अलैहिस्सलाम और ज़ुलेखा का किस्सा। 21-35
- जेल की दीवार के पीछे गुज़रे दिन और सह-क़ैदियों को तौहीद की दअ्वत। 21-35
- बादशाह मिस्र का ख़्वाब और उसकी ताबीर। 43-49
- ''मुकदमा युसूफ़'' की फाइलें फिर से जांचकर्ता की मेंज़ों पर। 50-51
- शाहे मिस्र से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मुलाकात। 54-57
- युसूफ़ अलैस्सिलाम के भाईयों का मिस्र की तरफ पहला सफ़र। 58-62
- बिनयामीन को लाने के वादे की पासदारी, और हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की वालिदाना (पिता) नसीहतें। 63-68
- मिस्र में दुबारा आगमन और प्याला खो जाने का तफ्सिली बयान। 69-79
- उतरे चेहरों के साथ घर वापसी और अपनी सफाई की दलीलें। 80-83
- हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की सेहत पर ग़म का असर। 84-86
- तीसरी बार सफर की तैयारी और हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का हज़रत युसूफ़ अलैहिस्सलाम व बिनयामीन को तलाश करने का हुक्म। 87
- हज़रत युसूफ़ अलैहिस्सलाम का भाईयों को माफ करना। 88-93
- ''बीनाई की वापसी '' क़ुदरत इलाही का एक अज़ीम करिश्मा। 94-98
- ''ख़ानदाने याक़ूब'' मिस्र की ज़मीन में। 94-101
- ग़ैब की बातें अल्लाह तआ़ला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम

को बताते थे। 102
- ईमान रखने के बावजूद भी मुश्रिक! यक़ीन कीजिये! 106
- तमाम अम्बिया व रसूल मर्द ही थे। 109
- अज़ाब में देरी पर अम्बिया अलैहिस्सलाम की मायूसी, फ़िक्र अंगेज़ मक़ाम। 110

(13) सूर-ए-रअद **आयत नं.**

- कायनात की हर चीज़ अपनी मंज़िल और वक़्त मुकर्रर की तरफ महवे गर्दिश निर्धारित है। 2
- फलों में भी जोड़े की कल्पना मौजूद है। 3
- सेराबी (सिचांई) एक पानी से लेकिन स्वाद भिन्न, वाह रे अल्लाह तेरी क़ुदरत। 4
- मां के पेट में जनीन का दौरानिया कमोबेश होता रहता है। 8
- बादल की गरज भी तस्बीह पढ़ रहा है। 12-13
- गैरुल्लाह को पुकारना पानी को अपनी तरफ बुलाने की तरह है। 14
- ईमान व कुफ्र और हक़ व बातिक की कुछ मिसालें। 16-17
- अक्लमंदों की विशेषताएं। 19-24
- लअनती और बुरे घरवाले लोगों के क़िरदार पर एक नज़र। 25-26
- हिदायत कैसे मिल सकती है? एक कानूने-इलाही का बयान। 27
- दिलों का सुकून हासिल करने का तरीक़ा। 28-29
- अम्बिया व रसूलों का मज़ाक उड़ाने वालों को अल्लाह मोहलत देता है। 32
- नज़ूले-वह्यी के बाद ग़ैरों की ख़्वाहिशों की पैरवी नबी से भी गंवारा नहीं। 37
- अम्बिया अलैहिस्सलाम की बीवियां और बच्चे भी थे। 38
- तकदीर की क़िस्मों का बयान। 39
- अल्लाह तआ़ला ज़मीन को इसके किनारे से घटा रहा है। 39

(14) सूर-ए-इब्राहीम **आयत नं.**

- कुरआ़न के ज़रिए से लोगों को अंधेरो से रोशनी की तरफ लाएं। 1
- हर रसूल की तब्लीग़ अपनी कौमी ज़बान में होती रही है। 4
- शुक्र गुज़ारी से नेअमतों में इज़ाफ़ा होता है। 7

- तमाम कायनात की नाफरमानी से भी अल्लाह की वहदानियत को फ़र्क़ नहीं पड़ता। 8
- जो लोग गुज़र चुके हैं इन्हें सिवाए अल्लाह के कोई नहीं जानता। 9
- तमाम रसूलों की मुश्तरका दअ्वत और काफ़िरों के मिलत-जुलते जवाबात। 9-15
- दोज़ख़ी शख़्स के पानी पीने का एक दिल-दोज़ मन्ज़र, अल्लाह की पनाह! 16-17
- अल्लाह तआ़ला के लिए इस तरह की नई मख़्लूक तुरंत पैदा करना कुछ मुश्किल नहीं। 19-20
- कमज़ोरों और घमण्डियों की बेबसी में एक बातचीत। 21
- शैतान का मैदाने महशर में इज़हार बरात और अपनी सफाई की दलीलें। 22
- कलमा-ए-तय्यब और कलमा-ए-खबीस की अलग-अलग मिसालें। 24-27
- ईमान वालों के करने वाले काम। 31
- अल्लाह तआ़ला की ज़बरदस्त कुदरत के कुछ मज़ाहिर जबकि इसकी नेअमत अनगिनत हैं। 32-34
- हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की कुछ फ़िक्र अंगेज़ दुआएं। 35-41
- क़यामत के भयावह दिन की एक झलक। 42-43
- नाफ़रमानों का थोड़ी सी मोहलत का बे-फ़यदा मांग। 44-45
- क़यामत के रोज़ ज़मीन व आसमान तब्दील कर दिये जाएंगे। 48
- मुजरिमों की सज़ा की एक ज़ाहिरी झलक। 49-50

(15) सूर-ए-हिज्र आयत नं.

- एक वक़्त आएगा जब काफ़िर ईमान लाने की आरज़ू करेंगे। 2
- हर उम्मत और हर बस्ती का एक वक़्त मुक़र्रर है जिसका आगे-पीछे होना नामुमकिन है। 4-8
- कुरआ़न को उतारने वाला ही इस का हिफाजत करने वाला और निगाहबान है। 9
- पहले काफ़िरों और हाल (वर्तमान) के काफ़िरों की एक चाल है। 10-15
- शयातीन चोरी-छुपे आसमानों की बातें सुनने के लिए कोशिश करते रहते हैं। 16-18
- अल्लाह के पास हर चीज़ के अनगिनत ख़ज़ाने हैं। 21
- इंसान और जिन्न की पैदाइश का बयान। 26-27
- सजदा आदम पर मालिक-ए-क़ायनात और इब्लीस की तफ्सिली बातचीत। 28-48
- दोज़ख़ के सात दरवाज़ों के लिए अलग-अलग दोज़ख़ियों के हिस्से निर्धारित हैं। 44

- जन्नत वालों की ज़ाहिरी और बातिनी नेअमतों का बयान। 45-48
- मेहमाने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ईमान अफरोज़ बातें। 51-56
- हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम अज़ाबे इलाही की लपेट में। 57-77
- "असहाबूल हिज्र" और उनकी निशानियों का बयान। 80-84
- सूरतल फातिहा की शाने अज़्मत। 87
- कुफ्फार की दुनियावी विलासिता (शानो शौकत) की तरफ न देखें। 88
- बिला ख़ौफ़ व ख़तर अल्लाह का हुक्म सुनाओ, अल्लाह तुम्हारा मुहाफिज़ है। 94-96
- मौत आने तक इबादते इलाही में मशगूल रहने का हुक्म। 98-99

(16) सूर-ए-नहल **आयत नं.**

- अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में से जिसे चाहता है रसूल बनाता है। 2
- कुछ इनामात इलाही का बयान। 4-18
- मअबूदान बातिला तो अपने दुबारा उठाये जाने का भी इल्म नहीं रखते। 20-21
- घमण्ड करने वाले अल्लाह के यहां नापसंदिदा (अप्रिय) हैं। 22-23
- ग़लत मार्गदर्शन करने वाले दूसरों के बोझ भी उठाएंगे। 24-25
- अज़ाबे इलाही जब आता है तो मालूम नहीं हो सकता कि वह किधर से आया है। 26
- जानकारी के समय ज़ालिमों की मलाइका से अपने पिछले दिनों (भूतकाल) के बारे में ग़लतबयानी। 28-29
- वापसी के समय परहेज़गारों से मलायका की मोहब्बत भरी बातें। 32
- मुश्रिकों का कहना कि अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते। 35
- हर रसूल की दअ्वत के दो बुनियादी मौज़ू (विषय)। 36
- अल्लाह के "कुन" कहने ही से तमाम काम हो जाते हैं। 40
- सिर्फ़ मर्द ही रसूल हुए हैं और कोई मख़्लूक नहीं। 43-44
- अल्लाह तआ़ला की गिरफ्त से बे-ख़ौफ मत होना। 45-47
- कायनात की हर चीज़ अल्लाह ही को सजदा करती है। 48-50
- हर नेअमत अल्लाह ही की अता करदा है लिहाजा उसी से डरना चाहिए। 53-56
- फरिश्तों को अल्लाह की बेटियां कहना जबकि अपने लिए बेटियां ना पसंद हैं। 57-60
- किताबुल्लाह को बयान करना व तोज़ीह करना पैगम्बर का हक है और यही हदीस है। 64

- ख़ालिस दूध और चन्द फलों का बयान। 66-67
- शहद की मक्खियों और शहद का रूह परवर होने का बयान। 68-69
- हुसूले-ए-इल्म के बाद बुढ़ापे में बे-इल्म बना देना भी कुदरते इलाही से है। 70
- दुनियावी बरतरी देना भी अल्लाह ही के अधिकार में हैं। 71-72
- अल्लाह के लिए मिसालें बयान करना मना है। 74
- गुलाम और सखी आदमी, क्या दोनों बराबर हो सकते हैं? दो मिसालें। 75-76
- हर नवजात बेइल्म पैदा होता है फिर इल्म अल्लाह ही देता है। 78
- चन्द कुदरतों और नेअमतों का बयान। 79-83
- हर उम्मत से एक-एक गवाह बनेगा, मअबूदाने-ए-बातिला की हालत ज़ार का बयान। 84-89
- चन्द (निहायत अहम) प्रमुख अवामिर व नवाही का बयान। 90-91
- हर अमल का जवाब देना पड़ेगा इसलिए एहतियाती (सावधनी) की ज़रूरत है। 93
- तुम्हारे पास सब चीज़ें नश्वर और अल्लाह के पास दायमी है। 96
- तिलावते कुरआन से पहले ''ताऊज़'' का हुक्म और शैतान से पराजित होने वाले लोग। 98-100
- क़ुरआन को नाज़िल करने वाला कौन है? 101-105
- मजबूरन कलमा-ए-कुफ्र कहने पर कोई पकड़ नहीं, इरादा के साथ कहने वालों का अंजाम। 106-109
- ईमान की बरकात और कुफ्र की नहूसतों का बयान। 112-113
- शुक्रगुज़ारी भी अल्लाह की इबादत में शामिल है। 114
- हलाल खाने और हराम से बचने के अहक़ामात की तफ्सील। 114-118
- बेइल्मी (अज्ञानता) में होने वाले गुनाहों की तौबा मुमकिन है। 119
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की चन्द इम्तियाज़ी खसूसियात का बयान। 120-123
- दअ्वत इल्लाह पेश करने के बुनियादी औसाफ (गुणों) का बयान। 125-128

(17) सूर-ए-बनी इसराईल **आयत नं.**

- ''मस्जिद हराम से मस्जिद अक्सा तक'' मेअराज़ की रात का मुख्तसर विवरण। 1
- ''मेरे सिवा किसी को अपना कारसाज़ न बनाना'' फरमाने इलाही। 2
- बनी इसराईल की बरबादी के दो दौर (युग)। 4-8

- कुरआन करीम बिल्कुल सीधे रास्ते की रहनुमाई करता है। 9
- इंसान जल्दबाज़ है। 11
- रात की निशानी को बेनूर और दिन की निशानी को रौशन बनाने का मक़सद। 12
- कयामत के दिन हर इंसान का अमालनामा इसके गले में लटका हुआ होगा। 13-15
- किसी बस्ती के ख़ुशहाल अमीरों का फिस्क व फजूर करना बस्ती की तबाही परिणाम है। 16-17
- दुनिया चाहने वाला और आखिरत चाहने वाला का बयान और इनके अंजाम का बयान। 18-21
- माता-पिता से उफ्फ तक न कहो बल्कि इनके लिए दुआएं करो। 23-25
- हुकूक़ अदा करने में भी फिजूल ख़र्ची मत करें, फ़िजूल ख़र्च शैतान का भाई है। 26-28
- ख़र्च करने का राह संतुलन का रास्ता अपनाने का हुक्म। 29-30
- क़त्ले औलाद, ज़िना, क़त्ले-आवाम और अन्य बड़े गुनाहों का बयान। 31-40
- कोई दूसरा मअबूद नहीं है वरना अर्श वाले के खिलाफ बगावत हो जाती है। 42-43
- आसमान, ज़मीन और इनमें मौजूद सभी मख्लूकात अल्लाह की बड़ाई बयान करती है। 44
- कुफ्फ़ार को कुरआन की समझ इसलिए नहीं आती कि। 45-48
- जिसने पहली बार पैदा किया है दूसरी बार भी वही पैदा करेगा। 49-52
- तुम्हारे आपसी फसादात का कारण शैतान है। 53-54
- नबियों के दर्जों में फर्क़ का बयान। 55
- जिन लोगों को मुश्रिकीन पुकारतें हैं इनकी अपनी कैफ़ियत क्या है? 56-57
- क़यामत के पहले हर बस्ती तबाह या अज़ाब के गिरफ्त होगी। 58
- नबियों कें चमत्कार का उद्देश्य। 59
- इब्लीस के शिकारी, जाल और फन्दे। 62-65
- मुश्रिकीने-मक्का समुद्री सफर में अपने मअबूदों को भूल जाया करते थे। 63-69
- अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम भी कुफ्फार की तरफ माईल होते तो उन्हें दुगना अज़ाब होता। 73-75
- पांच नमाज़ों और नमाज़े-तहज्जुद का बयान। 78-79
- अंततः बातिन को नाबूद (ध्वस्त) होना है। 81
- कुरआन करीम मोमिनों के लिए शिफा और रहमत है। 82
- रूह की हक़ीक़त और कुरआन की अज़मत का बयान। 85-89

- कुफ्फार के नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम से कुछ बेजा तकाज़े और मुतालबात। 90-93
- कुफ्फार का ''नबी'' को इंसान कहकर ''नबी'' मानने से इंकार। 94-95
- अगर दुनिया में कोई नूरी मख़्लूक होती तो अल्लाह उनकी तरफ नबी भी नूरी भेजता है। इंसान की तंग-दिली का बयान। 100
- फिरऔन और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ''दलाइल की हकानियत'' पर एक संवाद। 101-103
- अहले-किताब में से ईमान वाले हज़रात की ख़शियते-इलाही का बयान। 105-109
- नमाज़ तहज्जुद में क़ुरआन पढ़ने का तरीका। 110
- अल्लाह तआला की हम्द और बड़ाई बयान करने का हुकूक़ आयतुल इज़्ज़त। 111

(18) सूर-ए-कहफ **आयत नं.**

- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को कुरआन अता करने का मक़सद। 1-4
- ज़मीन की तमाम ख़ूबसूरती बन्दों का हुस्न अमल जाचनें के लिऐ हैं 7-8
- ''अस्हाबे कहफ'' के वाक्यों का खुलासा (सारांश)। 9-12
- ग़ारवालों का तफ्सिली (विस्तृत) बयान। 13-26
- किसी काम के इरादे में इंशाअल्लाह कहना चाहिए। 23-24
- सुबह और शाम अल्लाह तआला को पुकारने वालों के पास बैठने का हुक्म। 28
- अहल दोज़ख़ के पीने की चीज़ों का बयान। 29
- जन्नत वालों के ज़ेवरात और लिबासों (परिधनों) का बयान। 31
- दो बाग़ वालों का वाकि़या और शिर्क का अन्ज़ाम (परिणाम)। 32-39
- अल्लाह तआला की नेमत पर माशा अल्लाहु ला कूव्वता इल्ला बिल्लह पढ़ना चालिए। 40
- दुनिया और दुनियाबी नेअमतों की हक़ीक़त (वास्तविकता)। 45-46
- क़यामत के रोज पहाड़ों और लोगों की कैफ़ियत का बयान। 47-48
- ''नामा-ए-आमाल'' में हर छोटा-बड़ा कर्म मौजूद होगा। 49
- इब्लीस और इब्लीस की औलद (संतान) सभी इंसानों के दुश्मन हैं। 50-51
- मुश्रिकीन और इनके शरीक लोगों की आपस में असंबंध और इनका अंजाम। 52-53
- क़ुरआन की नसीहतों से मुंह मोड़ने वाला भी बड़ा ज़ालिम है। 57

- अल्लाह गुनाहों पर तुरंत नहीं बल्कि एक ख़ास वक़्त पर गिरफ्त फरमाता है। 58-59
- हज़रत मूसा और हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम का संपूर्ण विवरण। 60-82
- पूरब व पश्चिम तक पहुंचने वाले ज़ुलक़रनैन का वाक़िया। 83-101
- याजूज और माजूज का परिचय। 92-99
- जो अल्लाह को छोड़ कर इसके बन्दों को अपना हिमायती बनाते हैं।
उनका अंजाम। 102
- कर्मों के अनुसार नुक्सान उठाने वाले लोग। 103-106
- कलमात रब्बानी के लिए समुन्दर भी की स्याही भी कम है। 109
- "मैं तुम्हारे जैसा आदमी हूं लेकिन मेरी जानिब वह्यी आती है"
ऐलान मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम। 110

(19) सूर-ए-मरयम **आयत नं.**

- हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम का बुढ़ापे में अल्लाह से बेटा मांगने का वाक़िया। 1-5
- हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के वाक़ियात
(प्रसंगों) की तफ्सील (विवरण)। 16-36
- सारी ज़मीन और ज़मीन वालों का वारिस फक़त अल्लाह तआ़ला ही है। 40
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने बाप को नसीहत करते हैं। 41-48
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को औलाद कब मिली? 49-50
- कुछ अम्बिया अलैहिस्सलाम और इनकी पसंदीदा ख़ूबियों का बयान। 51-58
- चार इनाम याफ्ता हस्तियों का ज़िक्र-ए-खैर। 58
- ख्वाहिश परस्त बेनमाज़ियो का अन्ज़ाम (परिणाम)। 59
- जन्नत वालों की कभी ख़त्म न होने वाली नेअमतों का बयान। 60-63
- अल्लाह तआ़ला कयामत के दिन सभी इंसानों और शैतानों को इकट्ठा करेगा। 66-70
- सभी को 'पुल-ए-सिरात' से गुज़रना होगा। 71-72
- एक काफ़िर के खोखले दावों का मूल्यांकन। 77-82
- अल्लाह रहमान की औलाद साबित करने के मुजरिमाना कोशिशों का बयान। 88-95
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का खुशखबरी देना और
डराना किन लोगों के लिए है? 97

(20) सूर ताहा **आयत नं.**

- कुरआन उस आदमी के लिए नसीहत है जो अल्लाह से डरता है। 2-3
- अल्लाह तआला की कुछ सिफतों (गुणों) का बयान। 4-8
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तूर पर्वत पर अल्लाह से पहली मुलाकात का पूरा बयान। 9-41
- फ़िरऔन से मुलाक़ात के लिए हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को कुछ अन्य हिदायतें। 42-48
- फ़िरऔन के सवाल और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के जवाब। 49-54
- फ़िरऔन का ख़ुदा के करिश्में को मानने से इंकार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का जादूगरों से मुक़ाबला। 56-73
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मिस्र से निकलना और फ़िरऔन का पीछा करना। 77-79
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ग़ैर मौजूदगी में सामरी का बछड़े की इबादत करना। 83-85
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की अपने भाई और क़ौम पर नारज़गी और सामरी का अंजाम। 86-98
- हश्र के मैदान में मुजरिमों की हालत। 102-104
- क़यामत के दिन के कुछ मन्ज़रो (दृश्यों) की झलकियां। 105-112
- कुरआ़न और साहबे-कुरआ़न के बारे में कुछ ज़रूरी बातें। 113-114
- हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और इबलीस का क़िस्सा। 115-123
- अल्लाह के ज़िक्र से पीछे हटने या उसे ना मानने वालों का दुनिया और आख़िरत में क्या अंजाम होगा? 124-128
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को अल्लाह की और से कुछ नसीहतें। 130-132
- रसूल के आने से पहले खुदा का अज़ाब आ जाता तो काफ़िर लोग क्या रास्ता अपनाते। 134-135

(21) सूर-ए-अंबिया **आयत नं.**

- क़यामत करीब आ गई लेकिन लोग बेपरवाह हैं। 1
- काफ़िर लोगों की कुरआ़न और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम

के रास्ते से मुहं मोड़ना। 2-6
- शुरु से अंत तक सभी अंबिया 'मर्द' थे, खाते-पीते थे और आख़िर में मर जाते थे। 7-10
- मरने से पहले सभी बस्ती वालों का अपना जुर्म कबूल करना। 11-15
- ज़मीन और आसमान की तख़्लीक़ (रचना) हंसी-खेल के नहीं बल्कि सत्य (इलाह) के सबूत के लिए है। 16-18
- फरिश्ते हर समय इबादत में मसरूफ़ (व्यस्त) रहते हैं। 19-20
- सभी रसूल और अंबिया अलै. के इस्लाम की दअ्वत का लब्बो लुआब (सारांश)। 25
- फरिश्ते अल्लाह की संतान नहीं बल्कि सबसे बेहतरीन इताअत गुजार (आज्ञाकारी) और अल्लाह की इबादत करने वाले हैं। 26-29
- ज़मीन और आसमान की पहली झलक व जानदारों की तख़्लीक (सृजन) का बयान। 30-33
- कोई भी इंसान अमर नहीं है बल्कि सभी को मरना है। 34-35
- काफ़िर लोगों द्वारा ज़ुल्म करने पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को अपने दीन पर कायम रहने की हिदायत। 36-41
- हश्र के मैदान में राई के बराबर कर्म भी तौले जाएंगे। 47
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बुत तोड़ने और आग में डाले जाने का क़िस्सा। 51-70
- कुछ नबियों के संक्षिप्त जीवन-परिचय, ख़ासतौर से उनकी दुआओं का बयान। 78-90
- सभी अंबिया अलैहिस्सलामु हुम खुदा की मोहब्बत और उसके ख़ौफ़ की केफियत (स्थिति) में अल्लाह को पुकारा करते थे। 90
- याजूज, माजूज क़यामत के समय निकलेंगे। 96
- मुश्रिक लोग और उनके पोशिदा मअबूद सभी दोज़ख़ का ईंधन बनेंगे। 98-100
- अंबिया और सालेहा जिनकी इबादत होती रही वो दोज़ख से दूर रहेंगे। 101-103
- क़यामत के दिन आसमान लपेट लिए जाएंगे। 104
- रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की कुछ मुख्य घोषणाएं। 107-112

(22) सूर-ए-हज **आयत नं.**

- क़यामत के दिन की होलनाकी (भयावहता) का मन्ज़र (दृश्य)। 2
- शैतान से दोस्ती का अन्जाम (परिणाम) आग का अज़ाब। 3-4
- इंसान की पैदाईश के कई मरहलों (स्तरों) का बयान। 5-7
- पसोपेश में रहने वाले आदमी की सोच और उसका अन्ज़ाम (परिणाम)। 11

- सभी मख़्लूक़ (प्राणी) अल्लाह तआ़ला को सजदा करते है। 18
- दोज़ख़ वालों के लिबास, पानी और सज़ा की कैफियत (स्थिति) का दृश्य। 19-22
- 'मस्जिद-ए-हराम' सभी मुसलमानों के लिए एक समान सम्मानजनक है। 25
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के तामीर-ए-काबा और ऐलान-ए-हज का बयान। 26-29
- झूठी बात कहना बहुत बड़ा गुनाह है। 30
- मुश्रिक के बदबख़्ती (दुर्भाग्य) का मिसाल (उदाहरण)। 31
- कुरबानी का गोश्त ख़ुद भी खाओ और ग़रीबों को भी खिलाओ। 36
- कुरबानियों का मक़सद तक़्वा का स्तर देखना है। 37
- मज़लूमों को अगर सुरक्षा की इजाज़त ना होती तो इबादतगाहें ढा दी जातीं। 39-40
- अल्लाह के पसंदीदा हुक्मरानों के हुकूमत (शासन) का उसूल (सिधांत)। 41
- कुफ्फार के दिल मुर्दा और आंखें हक़ीक़ी नज़र से महरूम (वंचित) होती हैं। 46
- अल्लाह तआ़ला का एक दिन, दुनिया के एक हज़ार दिनों के बराबर है। 47
- अल्लाह अपने अंबिया को शैतानी दखल (हस्तक्षेप) से महफ़ूज़ रखता है। 52-54
- क़यामत के दिन का मालिक और फैसला (निर्णय) करने वाला सिर्फ़ अल्लाह है। 56
- अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों का अज्र व सवाब। 57-59
- ज़ुल्म के बराबर बदला लिया जाए। 64
- आसमान ज़मीन पर गिर सकता है लेकिन अल्लाह उसे थामे हुए हैं। 65
- मुश्रिक लोगों का बिना दलील इबादत और उसका अन्जाम (परिणाम)। 71-72
- मुश्रिक लोगों के मअबूद एक मक्खी तक बनाने में सक्षम नहीं हैं, बल्कि...... 73
- फ़रिश्तों और इंसानों से अपने पैग़म्बरों का इन्तिख़ाब स्वयं अल्लाह ही करता है। 75
- ईमान वालों के लिए कुछ अन्य अहक़ामात (आदेशों) का बयान। 77-78

(23) सूर-ए-मोमिनून **आयत नं**

- जन्नतुल फ़िरदौस के वारिस ईमान वालों के इम्तियाज़ी सिफात (विशेष गुण)। 1-11
- इंसानी पैदाइश का बयान और मौत के बाद ज़िन्दा होने का बयान। 12-16
- इंसान के लिए पैदा की गई रोज़ाना काम आने वाली कुछ अच्छी नेमतें। 17-22
- हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का किस्सा और उनकी दो खास दुआओं का बयान। 23-30
- नबी के खाने-पीने का बहाना कर नबी की नबूव्वत से इंकार। 33-34
- मौत के बाद जीवन की अक़ीदा (आस्था) पर हैरानी और नबूव्वत से इंकार। 35-38

- फिरऔनियों का भी ''बशर'' को रसूल मानने से इंकार। 45-48
- हज़रत मरयम और इब्ने मरयम अलैहिस्सलाम का 'अल्लाह की निशानी' होने का बयान। 50
- सभी रसूलों को पाकिज़ा (पवित्र) भोजन करने और अच्छे काम करने का हुक्म। 51-52
- दुनियादारों को दुनिया की फरावानी से आज़माने और उनके बातिल गुमान का बयान। 55-56
- अच्छे काम और ख़ैरात करने वाले ख़ुशनसीबों का बयान। 57-61
- क़ौम के ग़लत रहनुमाई की पकड़ और उनके कुछ जुर्मों का बयान। 64-77
- कानों, आंखों और दिलों का शुक्रिया अदा करना ज़रूरी है। 78
- मुश्रिक लोग 'अल्लाह' को मानते हुए भी मुश्रिक कहलाए मौजूदा मुश्रिकीन एक अहम सवाल। 84-90
- एक से ज़्यादा 'इलाह' होने की सूरत में होने वाले नुकसानों का बयान। 91-92
- बुरे अंजाम से बचने की दुआ। 93-94
- शैतानी सोच से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहने की दुआ। 97-98
- बेअमलों और काफ़िरों की मरते वक़्त एक बेकार दिली ख़्वाहिश। 99-100
- 'सूर' फूंकने, कर्मों को तौलने और जहन्नम की आग की गर्मी का बयान। 101-104
- दोज़ख़ वालों के जुर्म को मानने और जहन्नम से बाहर निकलने की गुज़ारिश का बयान। 105-111
- ''हक़ वालों का मज़ाक उड़ाना'' दोज़ख़ी बना देता है। 109-111
- दोज़ख़ वालों से दुनिया के बनने के बारे में सवाल और जवाब। 114-116
- अल्लाह, सच्चे बादशाह का कोई काम भी फजूल (व्यर्थ) नहीं है। 115

(24) सूर-ए-नूर **आयत नं.**

- ज़िना करने वाले मर्द-औरत की सज़ा और उनके निकाह का बयान। 2-3
- झूठा इल्ज़ाम लगाने की सज़ा और बीवी पर झूठा इल्ज़ाम लगाने वाले के बारे में खुसूसियत अहक़ामात (विशेष निर्देश)। 4-10
- ''इफ़्क़ का क़िस्सा'', ईमान वालों का व्यवहार और आयशा रजि0 की इफ्फत का बयान। 11-26
- आबाद और गैर आबाद घरों में दाख़िले और सलाम कहने के आदाब। 27-29

- मोमिन मर्द-औरतों को निगाहें झुकाने और शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने का हुक्म। 32-33
- सगे रिश्तों का बयान जिनसे पर्दा नहीं है। 30
- बेनिकाह मर्द-औरत को शादी के रिश्ते में बांधने का हुक्म। 32-33
- अल्लाह तआला के नूर की रूह परवरर (अलौकिक) मिसाल का बयान। 35
- अल्लाह वालों को उनका व्यापार अल्लाह की याद से दूर नहीं करता। 36-38
- काफ़िरों के अमल (कर्म) के बर्बाद होने की दो मिसाल। 39-40
- सारे जानदार की नमाज़ और तसबीह का बयान और कुदरत-ए-इलाही के कुछ मिसाल। 41-45
- आसमानी बिजली की चमक आंखों की रोशनी खराब कर देती है। 43
- अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया। 45
- मुनाफ़िक लोगों की दो मुखी और मोमिन लोगों के खुलूस-ओ-वफ़ा का सिलसिलेवार बयान। 46-54
- हक़ पर रहने वाले 'खलीफ़ा' के शासन में तजल्लियों का बयान। 55
- किसी के कमरे में दाखिल (प्रवेश) की इजाज़त के तीन समय और बालिग होने के बाद सभी समय की रोक। 58-59
- बड़ी उम्र की औरतें और पर्दा। 60
- जिन घरों से खाना खा सकते हो, उसके अलावा अस्सलामु अलेयकुम कहने का हुक्म। 61
- ''आदाब-ए-रिसालत'' की तालीम व तलक़ीन। 62-63

(25) सूर-ए-फुरक़ान — आयत नं.

- बातिल के मअबूदों की गैर मिल्कियत का वाजेह (स्पष्ट) ऐलान। 3
- रसूल सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के कामों और काफ़िरों के एतराज़ात का बयान। 7-10
- दोज़ख़ वालों और जन्नत वालों का तुलनात्मक अध्ययन। 11-16
- क्या तुमने मेरे बन्दों को गुमराह किया था? बातिल के मअबूदों से एक सवाल। 17-19
- तमाम रसूल दीन के साथ-साथ दुनियावी उमूर (कार्य) भी चलाया करते थे। 20
- घमण्डी लोगों के कर्मों का बयान। 21-23
- क़यामत के दिन के होलनाक मन्ज़र(भयावह दृश्य)। 25-26

- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का रास्ता छोड़ कर दूसरों की पैरवी करने वाला अपना हाथ काट खाएगा। 27-29
- रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का अपनी उम्मत के ख़िलाफ़ मुक़दमा दायर करवाना। 30-31
- थोड़ा-थोड़ा क़ुरआन उतारने की हिक्मते (कारण)। 32-33
- जहन्नुमी मुहं के बल चलेंगे। 34
- काफ़िर लोगों की नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम से मज़ाक और तकलीफ़ पहुंचाने के रास्ते। 41-42
- नफ़्स की ख़्वाहिश की पैरवी उसे अपना अल्लाह बनाने के बराबर है। 43-44
- लोगों की नसीहत और याद-दहानी के लिए कुछ दलीलों का बयान। 45-55
- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के पद और कुछ हिदायतों का बयान। 56-57
- शुक्र का इरादा रखने वाले के लिए कुछ बातों का बयान। 61-62
- 'इबादुर्रहमान' की कुछ चुनी हुई अच्छाईयां और उसके अन्ज़ाम का बयान। 63-76
- अल्लाह तुम्हारी दुआओं की बुनियाद पर अज़ाब को टाले हुए है। 77

(26) सूर-ए-शोअ़रा **आयत नं.**

- अल्लाह की निशानियों से काफ़िरों का बर्ताव। 9-14
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का अपने भाई हारून को नबी बनवाने के लिए अर्ज़ (निवदेन) करना। 12-13
- क़त्ल का अंदेशा अपने दिल से निकाल दें। 14-15
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔ़न से सामने। 16-22
- रब्बुल आलमीन का तफ्सीली तारूफ (विस्तारपूवर्क वर्णन)। 23-28
- फ़िरऔ़न की धमकी और मोजज्ज़े (चमत्कार) की मांग। 29-35
- जादूगरों के साथ मुक़ाबले का बयान। 36-45
- जादूगरों का हक़ को कुबूल करना और फ़िरऔ़न का माद्दी ताक़त (भौतिक शक्तियों) पर नाज़। 46-51
- फ़िरऔ़न के लश्कर डूबने की पहल। 52-68
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अपने क़ौम की दअ़वत और सच्चे मअबूद के कुछ करिश्मों का बयान। 69-85

- क़यामत के दिन भटके हुए लोगों और इबलीस की फ़ौज का हाल। 91-104
- हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम के अमीर वर्ग के हालात और उनका अन्जाम(परिणाम)। 105-122
- हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम दुनिया में तरक़्क़ी, अज़ाब-ए-इलाही के सामने कुछ काम न आई। 123-140
- हज़रत सालेहा अलैहिस्सलाम की क़ौम का करिश्में की मांग, हक़ को तस्लीम (स्वीकार) करने से इंकार और उसकी सज़ा। 141-159
- हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम की ख़राब हालत और अज़ाब-ए-इलाही का मन्ज़र (दृश्य)। 160-175
- हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम के क़ौम की सामाजिक कमियां और उनका अंजाम। 176-191
- कुरआन करीम की कुछ इम्तियाज़ी ख़ूबियां । 192-209
- इलाही का अज़ाब अचानक आता है और अपने कर्म कुछ काम नहीं आता है। 205-209
- क्या शैतान भी अल्लाह का पैग़ाम (वह्यी) ला सकते हैं। 210-212
- रिश्तेदारों को तौहीद की दअ्वत और मानने वालों के साथ अच्छे सुलूक का हुक्म। 214-217
- शायरी शैतान की ओर से है और शायरों का अनुसरण भटके हुए लोग करते हैं। 212-227

(27) सूर-ए-नमल **आयत नं.**

- ईमान वालों और बेईमान लोगों के आमाल (कर्मों) की तुलना। 2-5
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तूर पर्वत पर अपने रब से मुलाकात। 7-12
- नौ (9) निशानियां जिनका फ़िरऔनियों ने इंकार किया हालांकि इनकी सदाकत का इन्हें यकीन था। 12-14
- हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम और चींटी का क़िस्सा। 17-19
- हुद हुद चिड़िया का पैगाम (संदेश) और मल्लिका सबा का बयान। 20-44
- हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के क़त्ल के इरादे लेकिन ''चाह कुन रा चाह दरपेश''। 45-53
- ''इन पाकबाज़ों को अपनी बस्ती से निकाल दो'' का बोल और लूत अलैहिस्सलाम की कौम का अंजाम। 54-58

- अल्लाह के अकेले माबूद (पूज्य) ही होने की दलीलें। 59-64
- अल्लाह के सिवा आसमानों और ज़मीनों में किसी को भी भविष्य का ज्ञान नहीं होता। 65
- क़यामत के आने के बारे में मुश्रिकीन के सदेंह और उसे मानने से इंकार करना। 67-72
- इल्मे-इलाही वुसअत (अनंत) का बयान (वर्णन)। 74-78
- मुर्दों और बहरों को सुनवाना और काफ़िरों को सही रास्ता दिखाना नबी के बस में नहीं है। 80-81
- ज़मीन से जब एक चार पैरों वाला जानवर निकलेगा तो क़यामत नज़दीक होने की निशानी होगी। 82
- क़यामत के दिन हर उम्मत से झुठलाने वाले झुण्ड के रूप में एकत्रित किये जाएंगे। 83-85
- क़यामत के दिन पहाड़ों, आसमानों और ज़मीनों पर रहने वालों का क्या हाल होगा। 87-90

(28) सूर-ए-क़सस **आयत नं.**

- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश से पहले फ़िरऔनी जुल्म व सितम का उरूज (उत्थान)। 1-6
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का बचपन मिस्र से निकलने तक। 7-21
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मदयन शहर में आना और शांति की संधि। 22-28
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दस बरस के बाद अपने मुल्क में वापसी और अपने रब से मुलाक़ात। 29-35
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔन आमने-सामने। 36-37
- फ़िरऔन, हामान और फ़िरऔनी लश्कर का घमण्ड और इनका अंजाम। 38-42
- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को दर्ज तफ़ासील का इल्म (ज्ञान) 'वह्यी' के द्वारा हुआ न कि मुशहिदा के द्वारा। 43-46
- काफ़िरों को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की किताब-ए-वह्यी बेजा एतराजात (अनुचित आपत्ति।) 47-50
- कुरआन पर ईमान लाने वाले अहले-किताब दोहरे अज़्र के हक़दार हैं। 51-55

- हिदायत अता फ़रमाना सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के अधिकार में है। 56
- मुश्रिकीन का अपने बातिल मअबूदों पर गुमराह करने का इल्ज़ाम। 62-64
- उम्मतों से नबियों के बारे में सवाल। 65-67
- परवरदिगार की विशेषताएं (पैदा करने वाला, अधिकार, ज्ञान और हुक्म) का बयान। 68-70
- सुबह व शाम से मअबूद बरहक की परम हक्क़ानियत और सदाक़त का सबूत। 71-72
- क़यामत के दिन तमाम उम्मतों के काफ़िरों के सामने हक़ और ज़लालत खुल कर आ जाएंगें। 75
- कारून, उसके ख़ज़ानों, कुछ लोगों की इच्छा और उसकी पकड़ का तफ्सिली (विस्तृत) बयान। 76-82
- आख़िरी दिन का अच्छा घर किन अच्छे अमल (कर्म) वाले लोगों के लिए होगा? 83-84
- नबी रहमत सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम पर रहमत इलाही के कुछ मिसाल। 85-87
- अल्लाह तआ़ला के अलावा सभी चीज़ ख़त्म हो जाएगी। 88

(29) सूर-ए-अनक़बूत — आयत नं.

- ''क्या सिर्फ़ हम ईमान लाए'' के बोल पर निजात (मुक्ति) मिल जाएगी? 1-3
- जिहाद, ईमान और नेक अमल कर्म की बरकत का बयान। 6-7
- माता-पिता के कहने पर शिर्क करने का बयान। 8-9
- क्या लोगों कि तकलीफ़े और अल्लाह का अज़ाब बराबर हो सकते हैं। 10
- काफ़िरों का यह कहना है कि हम तुम्हारे गुनाह अपने ज़िम्में लेते हैं, एक गुनाह की साज़िश है। 12-13
- हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की बढ़ती उम्र और कश्ती का बयान। 14-15
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अपनी क़ौम को तौहीद की दअ्वत और अल्लाह की ख़ूबियों का बयान। 16-22
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनकी काफ़िर क़ौम में एक फैसला -कुन-बहस। 23-27
- हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की अपनी गुमराह क़ौम के ख़िलाफ दुआ जो क़बूल (स्वीकृत) हुई। 28-35
- क़ौमों पर आने वाले अल्लाह का अज़ाब की मुख़्तलिफ (विभिन्न) सूरतें। 36-40

- मुश्किीन के मअबूदान-ए-बातिला की पनाह मकड़ी के घर की तरह अस्थाई है। 41744
- कुरआ़न की तिलावत और नमाज़ के लिए खड़े होने का हुक्म तथा नमाज़ के फ़ायदे का बयान। 45
- अहल किताब से मुनाज़रे का तरीक़ा। 46
- करआ़न का अल्लाह तआला की तरफ से नाज़िल होने का सबूत। 48-51
- वक़्त मुक़र्ररा (निर्धरित समय) अज़ाब में देरी का कारण है। 53-55
- ईमानदारों के लिए विशेष हुक्म ताकि जन्नत में हक़दार बन सके। 56-59
- इंसान और जानवरों को रोज़ी देने वाली ज़ात अल्लाह तआ़ला है। 60
- अल्लाह की रबूबियत (प्रभुत्व) के बारे में मक्का के काफ़िरों से कुछ सवाल और उनके मुसबत (सकारात्मक) जवाब। 61-63
- ''खेल तामाशे'' दुनिया की ज़िन्दगी के नाम हैं। 64
- जिन्हें अल्लाह के रास्तों का निर्देश मिलता है उन ख़ुशनसीबों का बयान। 69

(30) सूर-ए-रूम **आयत नं.**

- रूमियों की हार के कुछ साल बाद जीत का पैशनगाई (पुर्वानुमान)। 1-6
- आसमान व ज़मीन का बनना और पूर्व उम्मतों के अंजाम से सबक लिया करो। 8-10
- मुजरिमों की मायूसी, शरीक होने वालों से इंकार और ईमान वालों के लिए खुशियों के दिन। 12-16
- अल्लाह तआ़ला की कुछ निशानियों का तफ्सिली (विस्तृत) ज़िक्र (विवरण)। 20-27
- तुम अपने गुलामों को अपना शरीक नहीं बनाते तो अल्लाह कैसे मख़्लूक़ (सृष्टि) को शरीक बना सकता है। 28-29
- तमाम लोग फितरते (स्वभाविक) इस्लाम पर पैदा होते हैं, इसलिए फितरत (स्वभाविक) अमल (कर्मो) को अपना लो। 30-31
- मुश्रिक लोगों के कुछ शिर्क वाले अमलों (कर्मों) का मिसला (उदाहरण)। 32-36
- माल में कम या ज़्यादा होना अल्लाह की तरफ से है इसलिए अल्लाह तआ़ला के माल के बारे में अहकाम क़बूल (स्वीकार) करो। 37-40
- दुनिया में फसाद होना लोगों के बुरे आमालों (कर्मों) का फल है। 41-45
- बारिश से पहले ठण्डी हवाओं के कुछ मक़सद है। 46
- मोमिनों की मदद और मुजरिमों से बदला अल्लाह का उसूल है। 47

- बारिश से पहले और बाद में लोगों की हालत का बयान। 48-50
- ज़मीन को ज़िन्दा करने वाला ही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा। 50
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम मुर्दों और बहरों को सुना सकते हैं न अंधें की रहनुमाई (मार्गदृशन) कर सकते है। 52-53
- इंसानी ज़िन्दगी के तीन साथी बचपन, जवानी और बुढ़ापे का बयान। 54
- क़यामत के दिन मुजरिमों की मायूसी और मोमिनों का साबित क़दमी (सत्य पर अडिग रहने का) बयान। 55-57
- कुरआनी मिसालों के मकसदों और कुरआ़न की आयत से काफ़िरों का सुलूक। 58-60

(31) सूर-ए-लुक़मान **आयत नं.**

- अच्छे कर्म करने वालों के कुछ औसाफ (गुणों) का बयान। 1-5
- लहू व लअब (विलासिता) में मशग़ूल (व्यस्त) करने वाले लोगों का अंजाम। 6-7
- अल्लाह तआ़ला की पैदा की हुई तख़्लीक़ (सृष्टि) तो तुम्हें नज़र आ रही है, गैरूल्लाह की तख़्लीक़ (सृष्टि) किधर है? 10-11
- हज़रत लुक़मान की अपने बेटे को शिर्क, घमण्ड इत्यादि के बारे में कुछ बेशक़ीमत नसीहतें। 12-19
- यह सारी ज़ाहरी और बातनी नेअमतें तुम्हें अल्लाह ही ने अता फरमाई हैं। 20
- अल्लाह को मानने वालों और उन्हें इन्कार करने वालों का तुलनात्मक जायज़ा। 21-24
- तामाम पेड़ों की डालियां और समंदर का पानी भी अल्लाह के करिश्मों का अहाता नहीं कर सकती। 27
- दुनिया की हर चीज़ अपने समय के अनुसार ही चल रही है। 29
- मुश्रिकीन समन्दर के सफ़र में सिर्फ़ अल्लाह को पुकारते थे। 31-32
- क़यामत के दिन बाप-बेटा एक दूसरे के किसी काम नहीं आएंगे। 33
- पांच चीज़ें जिनका इल्म (ज्ञान) सिर्फ अल्लाह तआ़ला के पास है। 34

(32) सूर-ए-सजदा **आयत नं.**

- रब्बुलआलिमीन के उतारे हुए कुरआ़न का मुख्य उद्देश्य। 1-3
- अल्लाह तआ़ला की कुछ विशाल कुदरतों का बयान। 4-9

- इंसानों के पैदा होने का मुख़्तसर (संक्षिप्त) बयान। 7-9
- क़यामत के दिन मुजरिम अच्छे आमालों (कर्मों) का बहाना बना कर वापसी का दरख़्वास्त (निवेदन) करेंगे। 12
- अल्लाह तआला की आयत पर ईमान रखने वालों की निशानियों का बयान। 15-16
- मोमिन और झूठे लोगों के अंजाम में अंतर का बयान। 18-21
- बनी इसराईल में इमाम बनने का अल्लाह का मेयार (मापदंड) क्या था? 23-24
- पिछले उम्मतों की बर्बादी और फसलों के उगने की क़ुदरत से मौत और ज़िन्दगी पर दलीलें। 26-27
- क़यामत के दिन काफ़िरों को न समय मिलेगा ना ईमान स्वीकार्य होगा। 28-30

(33) सूर-ए-अहज़ाब **आयत नं.**

- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को परहेज़गारी, अल्लाह के कलाम की पैरवी (अनुसरण) और अल्लाह पर विश्वास करने का हुक्म। 1-3
- ना किसी के दो दिल है ना बीवी शौहर की मां है और न गोद लिया बेटा सगा बेटा होता है। 4-5
- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम और आपकी बीवियों का ईमान वालों से रिश्ता। 6
- पांच ऊलुल-अज़्म रसूलों से मीसाक का बयान। 7-8
- अहज़ाब की जंग पुर-फित्न हालात और मुनाफिक़ों के रद्दे अमल का बयान। 9-20
- कसरत से ज़िक्र करने वाले ईमान वालों के लिए रसूल सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम एक नमूना हैं। 21
- अहज़ाब की जंग में मुसलमानों के अज़्म व हौसला और ईमान की सलामती का बयान। 22-23
- अहज़ाब की जंग में बगैर लड़ाई के अल्लाह ने फतह अता फरमाई। 25
- ग़ज़्वा बनू करीज़ा का मुख़्तसर (संक्षिप्त) बयान। 26-27
- दुनिया या नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम, पाकिज़ा बीवियों की परीक्षा। 28-29
- बेशर्मी के इरतिकाब पर नबी की बीवी को दोहरी सज़ा होगी। 30
- पाकिज़ा बीवियों में से अल्लाह और रसूल के फरमाबरदार के लिए दोहरा अज्र। 31
- पाकिज़ा बीवियों के लिए कुछ अहकामात। 32-34

- उम्दा सिफ़ात में मर्द व औरत सब बराबर हैं। 35
- मोमिन मर्द व औरत के लिए अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म की अहमियत। 36
- नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के दत्तक पुत्र ज़ैद रज़िअल्लाहु अन्हु का बयान। 37
- हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम ख़ातिमुन्नबीयीन हैं और वह किसी मर्द (ज़ैद रज़िअल्लाहु अन्हु) के बाप नहीं हैं। 40
- ईमान वालों का अल्लाह को याद करना, और अल्लाह का ईमान वालों पर रहमतें भेजना। 41-44
- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की चुनिंदा सिफात का बयान। 45-46
- सोहबत (संभोग) से पहले तलाकशुदा औरत पर कोई इद्दत नहीं। 49
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के लिए जायज़ रिश्तों और बीवियों के बारे में चंद अहकामात (निर्देशों) का बयान। 50-52
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के घर में दाख़िल होने और हिजाब (पर्दा) के कुछ ज़ाब्ते। 50-55
- फ़रिश्तें नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम पर दरूद और सलाम भेजते हैं इसलिए तुम भी भेजो। 56
- अल्लाह, रसूल और ईमान वालों को अज़ीयत देने वालों का अंजाम। 57-58
- सभी मोमिन औरतों के लिए हिजाब का मसला और इसके फायदे का बयान। 51-62
- क़यामत, काफ़िरों और दोज़ख़ में काफ़िरों के बुरे हाल का बयान। 63-66
- जहन्नम में काफ़िरों की हसरतें और अपने रहनुमाओं पर धिक्कार। 66-68
- अल्लाह का डर रखने और सीधी बात करने के फायदे का बयान। 69-71
- ज़मीन व आसमान और पहाड़ों का अल्लाह की अमानत को उठाने से इंकार और इंसान का इसे उठा लेना। 72-73

(34) सूर-ए-सबा **आयत नं.**

- अल्लाह के इल्म (ज्ञान) का वुसअत का बयान। 1-3
- क़यामत का मुख्य मक़सद (उद्देश्य)। 3-5
- इल्म (ज्ञान) वालों की गवाही है कि वास्तव में कुरआन सच्ची किताब है। 6
- काफ़िरों का नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम और क़यामे क़यामत के बारे में ना रवा लहजा। 7-9

- हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के चमत्कारों का बयान। 10-11
- हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के अनोखे चमत्कारों का बयान। 12-14
- क़ौम-ए-सबा के बाग़ात और उन पर आने वाले अज़ाब का बयान। 15-21
- इज़्न-ए-इलाही के बिना कोई सिफारिश लाभदायक नहीं होगी। 23
- आलमे-बाला में फ़रिश्तों की घबराहट का मन्जर (दृश्य)। 23
- अपने अपने आमालों (कर्मों) का खुद हिसाब देना होगा। 25-26
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की नबूवत पूरी इंसानियत के लिए है। 28
- क़यामत के दिन पेशवाओं और पैरोकारों की आपसी आरोप-प्रत्यारोप। 31-33
- हर इलाक़े के बड़े लोग दीन में रुकावट बनते आए हैं। 34-36
- सिर्फ़ औलाद और माल तुम्हें अल्लाह के करीबी नहीं बना सकते। 37
- हर ख़र्चे के बाद अल्लाह और अधिक अता फ़रमा देता है। 37
- क़यामत के दिन फ़रिश्तों से उनके मअबूद होने के बारे में पूछा जाएगा। 39
- हश्र के मैदान में ज़ालिम एक दूसरे की मदद न कर सकेंगे। 42
- मक्का के काफ़िरों की जहालत (अज्ञानता) और ढिठाई का बयान। 43-45
- हिदायत का केन्द्र वह्यी-ए-इलाही है और इससे रु गरदानी ज़लालत है। 50
- सज़ा के मौक़े पर ईमान लाना बेकार है। 51-54

(35) सूर-ए-फातिर **आयत नं.**

- फ़रिश्तों के परों का बयान। 1
- रहमत को खोलना और बन्द करना सिर्फ़ अल्लाह के ही बस में है। 2
- क्या आसमानों और ज़मीनों में अल्लाह के सिवा कोई और रिज़्क दे सकता है? 3
- दुनिया की ज़िन्दगी और शैतान दोनों धोखा दे सकते हैं। 5-6
- अपने बुरे आमालों (कर्मों) के अच्छा देखने वाला गुमराह (भ्रमित) है। 8
- सारी की सारी इज्ज़त (प्रतिष्ठा) सिर्फ अल्लाह के लिए ही है। 10
- इंसानी तख़्लीक़ के मुख़्तलिफ (भिन्न-भिन्न) मराहिल। 11
- अल्लाह तआ़ला की समुद्री नेअमतों का बयान। 12
- झूठे मअबूद किसी चीज़ के मालिक हैं ना ही वह पुकारने वाले की पुकार सुनते हैं। 13-14
- लोगों की मोहताजी और अल्लाह तआ़ला की गिना व कुदरत का बयान। 15-17

- क़यामत के दिन कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा। 18
- तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते। 22
- हर उम्मत में नबी के आना और उसे झुठलाए जाने का बयान। 23-26
- इंसान, जानवर, फल और पहाड़ इत्यादि सब अलग-अलग रंगों के होते हैं। 27-28
- अच्छे कामों में नीयत कैसी हो? 29-30
- वारिसान-ए-किताबुल्लाह के तीन दरजात का बयान। 32
- जन्नती लोगों की खुशियों और जहन्नुमी लोगों की सज़ाओं का बयान। 33-37
- मुश्रिकीन से उनके शिर्क की दलील की मांग। 40
- ज़मीन व आसमान को गिरने से अल्लाह तआला ही रोके हुए हैं। 41
- काफ़िरों की पुख़्ता क़समें और उन्हें पूरा न करने का बयान। 42-44
- अगर गुनाहों पर तुरंत पकड़ होती तो कायनात में कोई बाकी न रहता। 45

(36) सूर-ए-यासीन **आयत नं.**

- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की नबूवत और काफ़िरों की बेकद्री का बयान। 1-10
- नबी की पैरवी करने वालों के अवसाफ (गुण) का बयान। 11
- एक बस्ती में दो रसूलों का आना और बस्ती वालों का अमल से मना करना। 13-19
- दीन-ए-हक की पासदारी और नबी की हिमायत का तरीक़ा। 20-27
- क़यामत के दिन अगले-पिछले सब उपस्थित होंगे। 32
- अल्लाह तआ़ला ही बंजर ज़मीन को ज़िन्दा करके इसमें मुख़्तलिफ (भिन्न-भिन्न) फल उगाता है। 33-35
- हर वस्तु का जोड़ा है यहां तक कि ज़मीन से पैदा होने वाली चीज़ों के भी जोड़े हैं। 36
- सूरज और चांद साकिन नहीं, बल्कि तमाम सितारे और सय्यारे (ग्रह) चक्कर कटते हैं। 38-40
- काफ़िरों का अल्लाह के रास्तें में ख़र्च न करने का अजीब बहाना। 47
- क़यामत के आने का बयान। 48-50
- क़ब्रों से उठने का एक मन्जर (दृश्य)। 51-53
- क़यामत के दिन मुसलमानों और काफ़िरों के बीच तफ़रीक़ डाल दी जाएगी। 54-59
- अल्लाह के सिवा किसी और की पूजा शैतान की पूजा है। 60-62

- क़यामत के दिन ज़बाने बंद हो जाएंगी और हाथ-पांव बंदे के ख़िलाफ़ गवाही देंगे। 65
- नबी ज़िन्दा लोगों को डराने आते हैं। 70
- जानवरों को अल्लाह ने बनाया है और फिर तुम्हारी सम्पत्ति में दिया। 71-73
- दोबारा ज़िन्दा करने वाला वही होगा जिस ने पहली बार बनाया था। 77-81
- जो (कुन) कह कर सब कुछ बना सकता है उसके लिए क्या मुश्किल है? 82-83

(37) सूर-ए-साफ्फ़ात **आयत नं.**

- आसमान और दुनिया की ज़ीनत (सुंदरता) सितारों का मक़सद (उद्देश्य)। शैतानों को आसमानी बातचीत सुनने से रोकना है। 6-10
- क़यामत के बारे में काफ़िरों के मज़ाक (व्यंग्य) के अन्दाज़। 11-21
- काफ़िरों और इन के मअबूदों का जहन्नम की तरफ जाते हुए एक बातचीज। 22-32
- जन्नत वालों के कुछ ईनामों का बयान। 40-49
- जन्नत वालों का अपने जहन्नम पाने वाले दोस्तों को जहन्नम में देखना। 50-60
- जहन्नम वालों के खाने-पीने का बयान। 62-67
- आबा व अजदाद (पूर्वजों) की अंधी तक़लीद गुमराही का सबब है। 69-70
- हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दुआ और उसके कुबूल होने का बयान। 75-82
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मुश्रिकों और उनके मअबूदों के साथ बर्ताव। 83-98
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को कुर्बान करने का वाक़िया। 83-98
- हज़रत इलियास अलैहिस्सलाम की हालत का बयान। 123-133
- हज़रत लूत अलैहिस्सलाम का विवरण। 133-138
- हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली के निगलने का क़िस्सा। 139-148
- अल्लाह तआ़ला के लिए औलाद साबित करने वाले मक्का के काफ़िरों से कुछ सवाल। 149-159
- अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) करने का एक अंदाज़। 180-182

(38) सूर-ए-साद **आयत नं.**

- मुश्रिकीन व काफ़िरों के इन्कार व मज़ाक़ के नए-नए अंदाज़। 4-8

- हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के मुक़ाम व मरतबे और उनके एक फ़ैसले का बयान। 17-26
- हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की नबुव्वत और बेमिसाल बादशाही का बयान। 30-40
- हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की बीमारी और शिफा (स्वास्थ) का क़िस्सा। 41-44
- जन्नत वालों के इनामात (पुरस्कारों) व अहसानात का हल्का सा परिचय। 49-54
- सरकशों के बुरे अंजाम और इनके आपसी मतभेद की एक झलक। 55-64
- इबलीस का सजदा करने से इंकार और अल्लाह से क़यामत तक समय मांगने का मुफ़स्सिल बयान। 71-85

(39) सूर-ए-ज़ुमर **आयत नं.**

- मुश्रिकीने-मक्का भी बुतों की इबादत अल्लाह का क़ुर्ब पाने के लिए करते थे। 3
- अल्लाह तआ़ला की तख़्लीक़ के कुछ नमूने, निज तख़्लीक़ इंसान अंधेरों में होती है। 5-6
- अल्लाह तआ़ला को कुफ्र नापसंद है और शुक्र पसंद है। 7-8
- अहले इल्म (ज्ञानी) और बेइल्मी (अज्ञानी) बराबर नहीं हो सकते। 9
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को मुख्लिस और फरमाबरदार रहने का हुक्म। 11-14
- अल्लाह की तरफ़ रुजू करने वालों के लिए एक खुशख़बरी का बयान। 17-18
- अल्लाह तआ़ला ही बारिश बरसाता और फसलें उगाता है। 21
- तिलावते-कुरआ़न के वक़्त ख़शियत-ए-इलाही रखने वालों की हालत। 23
- ग़ुलामों और उनके मालिकों की मिसाल से तौहीद-ए-इलाही की की अहमियत का बयान। 29
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की मौत और मौत के बाद जीवन का बयान। 30-31
- सच्ची बात की जांच करना तक़्वा की अलामत है। 32-35
- अल्लाह तआ़ला अपने बंदे को काफ़ी है और गैरुल्लाह से डराने वाले गुनाहगार हैं। 36-37
- तकलीफ़ हटाना और रहमत उतारते रहना सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला का काम है। 38
- नींद भी मौत है, जिसके जीवन का समय बचा होता है वही ज़िन्दा बचता है। 42

- शिफाअत के तमाम हक़ूक़ अल्लाह के लिए ही है। 43-44
- अल्लाह के ज़िक्र के वक़्त काफ़िरों के दिलों की हालत। 45
- अल्लाह तआ़ला के ''हाकिमे-आदिल'' होने का बयान। 46-48
- दुनिया की नेअमतों का हसूल इंसानी इल्म (ज्ञान) से नहीं बल्कि अल्लाह की इनायत से मुम्किन (संभव) है। 49-52
- अल्लाह तआ़ला बहुत बख्शने वाला है इसलिए उसकी रहमत से निराश न होना। 53-55
- क़यामत के दिन की हसरतों से बचने का अभी वक़्त है। 56-61
- अल्लाह तआ़ला ही आसमानों और ज़मीनों की कुंजियों का मालिक है। 62-63
- अगर नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम भी शिर्क करें तो उनके भी तमाम आमाल बर्बाद हो जाएंगे। 64-66
- क़यामत के दिन आसमान और ज़मीन कहां होंगे? नीज़ दोनों नफ़्ख़ों का बयान। 67-68
- फ़ैसले वाले दिन का एक मन्ज़र (दृश्य)। 69-70
- काफ़िरों के दोज़ख़ में धकेले जाने का मन्ज़र (दृश्य)। 71-72
- परहेज़गारों की जन्नत की तरफ सफर (यात्रा) का रूह-परवर दृश्य। 73-74
- फ़रिश्तों ने अर्श को घेरे में ले रखा होगा और हम्द (प्रशंसा) के गीत और तस्बीह गा रहे होंगे। 75

(40) सूर-ए-मोमिन **आयत नं.**

- अल्लाह तआ़ला की बाज़ सिफ़ात का बयान। 2-3
- हर उम्मत ने अपने रसूल को गिरफ्तार करना चाहा लेकिन 5
- ईमान वालों के लिए फ़रिश्ते बख़्शिश की दुआएं करते हैं। 7-9
- क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला काफ़िरों से शदीद बेज़ारी का इज़हार करेंगे। 10-12
- अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है, 'वह्यी' से लाभांवित करता है। 15
- क़यामत के दिन अल्लाह की बादशाहत व इंसाफ़ और काफ़िरों की हालत का बयान। 16-18
- गुज़िश्ता काफ़िरों के पास दुनिया की रेल-पेल का होना उन्हें अज़ाब से न बचा सका। 21-22
- फ़िरऔ़न, हामान और क़ारून की सरकशियां और अत्याचार। 23-27
- एवाने-फ़िरऔ़न में ''मर्द मोमिन'' का जुरअत मंदाना ख़ुत्बात (संबोधन)। 28-45

- ''कब्र का अज़ाब'' का असबात। 46
- दोज़ख़ वालों (कमज़ोरों और ताक़तवरों) का एक बातचीत (संवाद)। 48-57
- जहन्नम के दारोग़ों से दोज़ख़ वालों की एक सामूहिक निवेदन। 49-50
- अल्लाह तआ़ला ईमान वालों और रसूलों की दोनों जहानों में मदद करेंगे। 51-52
- देखने वाले और अंधे बराबर नहीं तो ईमान वाला और आमाले-सालेह करने वाला बदकार के बराबर नहीं। 58
- दुआ भी इबादत है और दुआ न करने वाला जहन्नुमी है। 60
- सुबह और शाम बनाने के मकसद और हर चीज़ के खालिक़ (सृष्टिकर्ता) व मअबूद (परम पूज्य) का बयान। 61-64
- बन्दों को समझाने के लिए इंसानी ज़िन्दगी के विभिन्न दौर का बयान। 67
- किताबों और रसूलों को झुठलाने वालों के दर्दनाक अज़ाब के कुछ मनाज़िर। 70-76
- अल्लाह का वादा बरहक़ है, तो ज़रूर पूरा होगा। 77
- पिछले रसूलों का मुख़्तसर बयान और उनके इख़्तियार का वज़ाहत। 78
- जानवरों के फ़ायदे का बयान। 79-88
- गुजिश्ता उम्मतों की तबाही के कारण का जायज़ा। 82-84

(41) सूर-ए-हा मीम सजदा — आयत नं.

- अल्लाह की किताब की सिफात (गुणों) और काफ़िरों के महरूम रहने का बयान। 1-5
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का अपनी बशरियत व रिसालत का ऐलान। 6
- ज़मीन व आसमान और अन्य जीवों की पैदाइश के छः दिनों का ज़िक्र (विवरण)। 9-12
- क़ौम आद और क़ौम समूद के घमण्ड और अंजाम का बयान। 15-18
- इंसानी कान, आंखें और खाल भी इंसान के ख़िलाफ़ गवाही देंगे। 19-24
- काफ़िरों का तिलावते कुरआ़न के वक़्त शोर मचाना और उनके अंजाम का बयान। 26-28
- क़यामत के दिन जिन्न व इंसान के काफ़िरों का अपने कायदीन को पैरों तले रौंदने का अज़्म (अटल इरादा)। 29
- ईमान वालों और साहबे इस्तिक़ामत खुशनसीबों की ख़ैर का बयान। 31-32
- अहसन कलाम (अति उत्तम) बातचीन करने वाले का बयान। 33
- अच्छे तरीक़े से जवाब देने से दुश्मन भी दोस्त बन जाते हैं। 34

- शैतानी वसवसा आने पर अल्लाह की पनाह मांगने का हुक्म। 36
- सूरज व चांद और दीगर मख़्लूक़ात के बजाए उन सबके ख़ालिक को सजदे करें। 37-38
- बंजर ज़मीन में तरो-ताज़गी लाने वाला ही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा। 39
- अल्लाह तुम्हारे सब आमाल देख रहा है, इसलिए जन्नत व जहन्नम में से जिसे चाहो चुन लो। 40
- कुरआ़न मजीद की हिफ़ाज़त व बड़ाई का बयान। 41-44
- नेकी का नफ़ा और बुराई का वबाल उसके करने वाले पर होगा। 46
- चार मुख्य कार्य जिनका ज्ञान सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के पास है। 47
- अल्लाह तआ़ला का मैदाने-महशर में मुश्रिकीन से सवालः मेरे शरीक कहां हो? 47-48
- इंसान भलाई मांगते नहीं थकता और जब मिल जाती है तो अपने आप ही को हक़दार समझता है। 49-51
- एक काफ़िर का क़यामत के बारे में भौतिकता का नज़रिया (दृष्टिकोण)। 50
- अल्लाह तआ़ला लोगों के नफ़्सों और अफ़ाक़ में निशानियां दिखाता रहेगा। 53-54

(42) सूर-ए-शूरा **आयत नं.**

- फ़रिश्तों का ज़मीन वालों के लिए बख़्शिश तलब करना। 5
- वही से मक़सूद लोगों को डरना है। 7
- अल्लाह तआ़ला चाहता तो सभी लोगों को एक तरीक़े पर मुतफिक़ कर देता। 8
- फिरक़ाबन्दी (सम्प्रदायवाद) का हल, अल्लाह के फ़ैसले की तरफ रुजू। 10
- अल्लाह तआ़ला की मिसाल कोई नहीं है। 11
- रिज़्क की कुशादगी और ग़रीबी अल्लाह के हाथ में है। 12
- हमारी शरीअ़त अल्लाह तआ़ला की मुक़र्रर करदा (द्वारा तय की गई) है खुदसाख़्ता (स्वयं द्वारा) नहीं। 13
- ज़िद से इख़्तिलाफ (मतभेद) जन्म लेते हैं। 15
- ईमान वाले क़यामत से डरते हैं जबकि काफ़िर इसे जल्दी से मांगते हैं। 18
- दुनिया को चाहने वाला, आख़िरी दिन तमाम अच्छाईयों से वंचित रहेगा। 20
- गैरूल्लाह की शरीअ़तसाज़ी पर अमल करना भी शिर्क है। 21
- नज़दीकी संबंध की मोहब्बत के अलावा मैं तुमसे कुछ नहीं मांगता। 23
- अल्लाह तआ़ला के कुछ अफआल (कार्यों) का बयान। 24-26

- रिज़्क की हर किसी पर फ़रावानी करने से फ़सदात की भरमार होती। 27
- मख़्लूक को कायनात में फ़ैलाना और फिर उसे जमा करना अल्लाह ही का काम है। 29
- हर मुसीबत की वजह तुम्हारे करतूत (कर्म) हैं। 30
- दाइमी नेअमतों के हक़दार लोगों के औसाफ (गुणों) का बयान। 36-41
- बेटियां, बेटे देना या बांझ रखना अल्लाह ही का काम है। 49-50
- वह्यी-ए-इलाही के मुख़्तलिफ (विभिन्न) अंदाज़। 41
- ऐ नबी! एक समय था कि तुझे किताब और ईमान का कुछ इल्म (ज्ञान) न था। 52-53

(43) सूर-ए-जुख़रूफ **आयत नं.**

- क्या हद से गुज़र जाने वाले को नसीहत देना बंद कर दिया जाए? 5
- जब गुज़िश्ता उम्मत वालों ने अपने रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया तो हमने उन्हें तबाह कर डाला। 7-8
- अल्लाह तआला द्वारा पैदा करने वाली चन्द मख़्लूकात का बयान। 9-12
- जानवरों और सवारियों पर सवार होने की दुआ। 13-14
- बेटी की पैदाइश पर काफ़िरों की हालत जबकि वो फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियां करार देते हैं। 16-19
- मुश्रिकीन के बे सिर पैर के जवाबों और उनके अजांम का बयान। 20-25
- नबूव्वत और मईशत दोनों पर अल्लाह का इख़्तियार है, जिसे चाहता अता करता है। 30-32
- काफ़िरों के दुनिया की विलासिता का बयान। 33-35
- शैतान अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल शख़्स पर हावी होता है। 36-38
- इसी वह्यी पर जम जाऐं, आप सिरात-ए-मुस्तकीम पर हैं। 43-45
- फ़िरऔनियों की मुख़्तलिफ (विभिन्न) अज़ाबों के ज़रिये से आज़माईश (परिक्षा) और उनके अंजाम का बयान। 46-56
- इब्ने-मरयम अलैहिस्सलाम का बयान। 57-65
- क़यामत के दिन परहेज़गारों के अलावा बाक़ी लोगों की गहरी दोस्ती दुश्मनी में बदल जाएगी। 67
- अल्लाह तआला के फ़रमाबरदार बन्दों को मिलने वाली कुछ नेअमतों का बयान। 68-73
- मुजरिमों (अपराधियों) के बेबसी की हालत। 74-78

- शफ़ाअत हक़दार लोगों की दो सिफ़ात का बयान। 86
- जाहिलों (अज्ञानियों) को ''सलाम मुतारका'' कहने का हुक्म। 89

(44) सूर-ए-दुख़ान — आयत नं.

- लैला-ए-मुबरका यानि लैलतुल-क़द्र का बयान। 1-6
- आसमान से धुंआ उठने का बयान जो लोगों को घेर लेगा। 10-16
- फ़िरऔनी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को पत्थरों से मार देना चाहते थे लेकिन.... 17-24
- फ़िरऔनी माल और दौलत पर बनी-इसराईल के कब्ज़े का बयान। 23-29
- आसमान और ज़मीन की तख़्लीक कुछ मक़ासिद (उद्देश्यों) की तकमील (पूर्ति) के लिए है, बेकार नहीं है। 38-42
- दुनिया की झूठी इज़्ज़त वालों का अंजाम। 43-50
- अल्लाह से डरने वालों के ईनाम व इकराम का बयान। 51-57
- ज़बान-ए-नबूव्वत से कुरआन की तफ़्सीर। 58

(45) सूर-ए-हा मीम जासिया — आयत नं.

- ईमान वालों अक़्ल वालों के लिए कुछ निशानियां। 3-6
- अल्लाह की आयत सुनकर तकब्बुर करने वालों का अंजाम। 7-10
- बनी इसराईल पर कुछ दुनियावी और दीनी ईनामात (पुरस्कारों) का बयान। 16-17
- ज़ालिम लोग एक दूसरे के दोस्त हैं। 19
- क्या बुरे और अच्छे लोग मरने जीने में एक जैसे हैं। 21
- मन की इच्छा को मअबूद बनाने वाले का हाल। 23
- दहरिये का नज़रिया हयात व ममात और उसकी तरदीद। 26-27
- क़यामत के दिन हर उम्मत अपने-अपने आमलनामे की तरफ बुलाई जाएगी। 27-31
- मुनकिरीने क़यामत से कहा जाएगा कि कल तुमने हमें भुला दिया था आज हम तुम्हें भुला देंगे। 32-35
- किबरियाई का हक़दार आसमान व ज़मीन का परवरदिगार ही है। 36-37

(46) सूर-ए-अहकाफ़ — आयत नं.

- मुश्रिकीन से उनके शिर्क की दलील का मुतालबा। — 4
- माबूदाने-मुश्रिकीन उनकी पुकार नहीं सुनते और क़यामत के दिन वो उनके दुश्मन होंगे। — 5-6
- कुरआ़न न जादू है ना ही नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का खुद बनाया हुआ, बल्कि 'वह्यी-ए-इलाही' है। — 7-8
- मैं कोई नया रसूल हूं न मूझे मालूम है कि मेरे और तुम्हारे साथ क्या होगा। — 9
- काफ़िरों का दावा कि अगर इस्लाम में भलाई होती तो उसकी तरफ आगे बढ़ा करते। — 11-12
- दीन पर क़ायम रहना जन्नती होने की निशानी है। — 13-14
- माता-पिता और अपनी औलाद के लिए दुआ। — 15
- बच्चे के दूध छुड़ाने की उम्र दो साल है। — 15
- नालायक औलाद की नेक मां-बाप के साथ बदतमिज़ी (दुर्व्यवहार)। — 17-19
- काफ़िरों के अज़ाब में शिद्दत का वजह बनने वाली चार बातें। — 20
- कौम-ए-आद का बयान और उन पर बादलों में अज़ाब आने का मंज़र। — 21-26
- तुम्हारे इर्द-गिर्द की बस्तियां तबाह की गईं तो उनके मअबूदों ने उनकी मदद न की। — 27-28
- जिन्नों का कुरआ़न सुनना और वापसी पर अपनी कौम को बताना। — 29-32
- अल्लाह आसमानों और ज़मीनों की पैदाइश से थका नहीं है। — 33

(47) सूर-ए-मुहम्मद — आयत नं.

- काफ़िरों का कर्म, बरबादी, ईमान वालों के कुबूल दोनों में फ़र्क के कारण का बयान। — 1-3
- काफ़िरों से मुकाबले और उन्हें क़त्ल व क़ैद करने का अहकामात का बयान। — 4
- अल्लाह के दीन की मदद करोगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा। — 7
- दुनिया में काफ़िर जानवरों की तरह खाते हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है। — 12-14
- जन्नत की चार क़िस्मों की नहरों का तज़किरा (विवरण)। — 15
- दोज़ख़ वालों के मशरुबात (पीने की चीज़े) का बयान। — 15
- क़यामत की अलामत पूरी हो चुकी, इसलिए ईमान में जल्दी कर लो। — 18
- ज़िक्र-ए-क़िताल व जिहाद पर ईमान वालों और मुनाफ़िक़ीन की दिली कैफ़ियत का बयान (विवरण)। — 20

- रिश्ते नाते तोड़ना लाअनती बनाता है। 22-23
- काफ़िरों व मुनाफ़िक़ीन का मौत के समय क्या हाल होता है। 25-28
- इताअ़ते-परवरदिगार और इताअत नबी का हुक्म और काफ़िरों की मग़्फ़िरत का बयान। 33-34
- अल्लाह की राह में ख़र्च करने की तरग़ीब और कंजूसी से नफ़रत का बयान। 36-38

(48) सूर-ए-फतह **आयत नं.**

- सुलह-हुदैबिया फ़तहे-मुबीन है। 1
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम और सहाब-इकराम पर इनामाते-इलाही का बयान। 2-5
- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का अदब व एहतराम और अल्लाह की तस्बीह बयान करने का हुक्म। 9
- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की बैत करने वाले दर हक़ीक़त अल्लाह तआ़ला की बैत करने हैं। 10
- जिहाद से बचने के लिए मुनाफ़िक़ीन की बहानेबाज़ियां। 11-15
- मुनाफ़िक़ीन को एक मौक़ा मज़ीद देकर परीक्षा ली जाएगी। 16-17
- बैते-रिज़्वान का बयान और अनगिनत ग़नीमतों के वादे। 18-21
- बतने-मक्का में अल्लाह तआ़ला ने लड़ाई न होने दी। 24
- हुदैबिया की सुलह (संधि) का एक मक़सद (उद्देश्य) मक्का में मौजूद ईमान वालों को बचाना था। 25
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के एक सपने का बयान। 27
- तमाम बातिल अदयान पर दीने-इस्लाम के ग़लबे का वादा। 28
- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम और आपके सहाबा के औसाफ (गुण) जो पिछली किताबों में भी मज़कूर (वर्णित) है। 29

(49) सूर-ए-हुजरात **आयत नं.**

- ईमान वालों को कुछ आदबे-नबूवत की शिक्षा। 1-3
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को हुजरों के बाहर से

आवाज़े देना जहालत (अज्ञानता) है। 4-5
- फ़ासिक़ की बात पर यक़ीन करने से पहले उसकी तहक़ीक़ कर लिया करो। 6
- हिदायत याफ़्ता लोगों की कुछ सिफ़ात का बयान। 7-8
- ईमान वाले आपस में भाई-भाई है, इसलिए उन्हें आपसी दुश्मनी ख़त्म कर देनी चाहिए। 9-10
- एक दूसरे का मज़ाक उड़ाने और बुरे नामों से पुकारने की मनाही। 11
- बदगुमानी, भेद टटोलने और ग़ीबत करने की कराहियत और मुमानिअत का बयान। 12
- खानदान व क़बाईल का उद्देश्य और तक़्वा के आला समरात का बयान। 13
- इस्लाम और ईमान में तफ़ावुत (फर्क़) है इसलिए हर मुसलमान मोमिन नहीं। 14
- ईमान वाला कहलाने के हक़दारों की ख़ूबियां । 15
- इस्लाम लाना अल्लाह और रसूल पर कोई एहसान नहीं बल्कि ये तो तुम पर एहसान-ए-इलाही है। 17-18

(50) सूर-ए-क़ाफ़ आयत नं.

- काफ़िरों का मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होने का इंकार और मुख़्तलिफ (विभिन्न) दलीलों से उनकी काट। 3-15
- अल्लाह तआला शाह रग से भी ज़्यादा इंसान के क़रीब है। 16
- किरामन कातिबीन का बयान। 17-18
- सूर फूंकने के बाद बारगाहे-इलाही मे हर शख़्स एक गवाह और एक लाने वाले के साथ आएगा। 19-21
- क़यामत के दिन शैतान और आदमी का आपसी झगड़ा और अल्लाह का फ़ैसला। 27-29
- जहन्नम की वुसअत का बयान (विवरण)। 30
- जहन्नम में दाख़िल होने वालों की दो सिफ़ात का बयान। 33-35
- नसीहत हासिल करने के लिए दो ज़रूरी लवाज़मात। 39-40
- तस्बीह-ए-इलाही बयान करने के ख़ास ओवक़ात। 39-40
- क़ुरआन की आयत से लोगों को समझाएं। 45

(51) सूर-ए-ज़ारियात	**आयत नं.**
• आसमान में रास्ते हैं।	7
• क़यामत की जल्दी मचाने वाले का परिणाम।	12-14
• मुत्तक़ीन की कुछ सिफ़ात का बयान।	15-19
• आसमानों, ज़मीनों और तुम्हारे नफ़्स में अल्लाह तआ़ला की निशानियां हैं।	20-23
• हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के यहां ख़ुशख़बरी देने के लिए फ़रिश्तों का आना और क़ौम लूत पर अज़ाबे-इलाही का बयान।	24-37
• फ़िरऔनियों, आदियो, समूदियों और क़ौमे नूह की हलाकतों का बयान।	38-46
• अल्लाह के अपने हाथों से आसमान व ज़मीन और हर चीज़ के जोड़े बनाने का बयान।	47-51
• सभी रसूलों को एक जैसे जवाब मिलते रहे हैं।	52-54
• नसीहत सिर्फ़ ईमान वालो को फायदा (लाभ) देती है।	55
• जिन्न व इंसान की तख़्लीक़ का उद्देश्य इबादत का सबूत और अन्य मक़ासिदों (उद्देश्यों) से इंकार।	56-58

(52) सूर-ए-तूर	**आयत नं.**
• अज़ाब के बरहक़ होने पर अल्लाह तआ़ला के पांच कसमों का बयान।	1-8
• क़यामत के दिन आसमानों और पहाड़ों पर हश्र।	9-10
• मुनकरीन को जहन्नम के सामने लाकर उसका यक़ीन करवाने के बाद उसमें दाख़िल किया जाएगा।	11-16
• मुत्तकीन आतिश जहन्नतुम से बचकर नेअमतों और बाग़ों में होंगे।	17-28
• मोमिन औलाद भी मोमिन माता-पिता के साथ उन्हीं जन्नतों में होगी।	21
• काफ़िरों के नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को मजनून का काहिन और शायर कहने की मुनाज़राना अंदाज़ में तरदीद और तौहीद व रिसालत का सबूत।	29-47
• नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को बेदार होने और सितारों के ग़ुरूब होने पर तस्बीह करने और सब्र करने का हुक्म।	48-49

(53) सूर-ए-नजम **आयत नं.**

- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की सदाक़त और क़ुरबते-इलाही का बयान। 1-4
- जिब्रील अलैहिस्सलाम की अज़्मत और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का उन्हें असली हालत में देखना। 5-18
- मुश्रिकीन के मअबूदों का नाम उनके और इनके बाप दादों के तजवीज़ करदा थे। 19-23
- फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियां कहना मुश्रिकीन का महज़ गुमान था। 23-26
- नेकोकार बड़े गुनाहों से बचते हैं। 31-32
- अपनी पाकिज़गी (पवित्रता) का दावा ना करो अल्लाह तुम्हें बेहतर जानता है। 32
- इंसानों को वही कुछ मिलेगा जिसमें उसकी मेहनत होगी। 39-41
- हंसाना, रुलाना, मारना, जिलाना वग़ैरह सब अल्लाह का कम है। 43-55
- क़यामत के क़रीब होने का बयान और इन्सान की हालत। 57-62

(54) सूर-ए-क़मर **आयत नं.**

- शक्कुल क़मर, क़ुर्ब क़यामत की निशानी, जिसे काफ़िर जादू कह कर उस का इंकार करते हैं। 1-3
- क़ब्रों से निकलने का एक दृश्य। 7-8
- क़ौमे-नूह की तकज़ीब, नूह अलैहिस्सलाम की बद्दुआ और तूफ़ाने-नूह के अहवाल। 9-14
- कुरआन फ़हमी के आसान होने का (बार-बार) बयान। 17-40
- क़ौम आद की झूठ और उन पर आने वाले अज़ाब का बयान। 18-22
- क़ौमे-समूद, अल्लाह की ऊंटनी, पानी की तक्सीम और अज़ाबे-इलाही का संक्षिप्त बयान। 23-32
- क़ौमे-लूत की तकज़ीब और उन पर पत्थरों की बारिश बरसाने वाली हवा का बयान। 33-40
- मुजरिम लोग चेहरों के बल आग में घसीटे जाएंगे। 48-57
- क़यामत की घड़ी आंख झपकने में आ जाएगी। 50
- नामा-ए-आमाल मे हर छोटा बड़ा अमल (कर्म) लिखा जाता है। 53

(55) सूर-ए-रहमान **आयत नं.**

- कुरआन सिखाना और इंसान को बोलना सिखाना सिर्फ़ अल्लाह रहमान का काम है। 1-4
- सितारे और दरख़्त भी अल्लाह तआला को सजदा करने हैं। 6
- आसमान, तराज़ू और ज़मीन की तख़्लीक़ और उनके उद्देश्य का बयान। 7-13
- इंसानों और जिन्नात की तख़्लीक़ का बयान। 14-15
- दो पूरबों, दो पश्चिमों और दो दरियाओं और उनके फ़ायदे का बयान। 17-25
- अल्लाह तआला के सिवा हर चीज़ के ख़त्म होने का बयान। 26-27
- क़यामत के दिन और महशर के दिन का बयान। 31-42
- जहन्नुम और इसके गरम पानी का बयान। 43-44
- ख़शियते-इलाही को रखने वाले को दो जन्नतें मिलेंगी, इन दोनों की कुछ नेअमतों का बयान। 46-61
- दो मजीद जन्नतों और उनकी नेअमतों का बयान। 62-78
- जन्नती हूरों के हुस्न व जमाल का बयान। 60-75

(56) सूर-ए-वाक़िया **आयत नं.**

- क़यामत के बाद वाक़यात का बयान। 1-6
- मैदाने-महशर के तीन गिरोहों का बयान। 7-10
- सबक़त ले जाने वालों को मिलने वाले इनामात का बयान। 10-26
- दाहिने हाथ वालों के इनामात का अलग जायज़ा। 27-40
- बाएं हाथ वालों की कुछ सज़ाओं और बाज़ कोताहियों का बयान। 41-52
- बाएं हाथ वालों के खाने पीने का बयान। 41-56
- क़ुदरत-ए-इलाही के इसबात के लिए कुछ सवालात। 57-74
- अज़्मते-कुरआन का इसबात और इस के लिए अल्लाह तआला का क़सम उठाना। 75-81
- किसी इंसान के मरने के आख़िरी वक़्त और तुम्हारी बेबसी। 83-87
- तीनों गिरोहों और उनके नताइज व अवाक़िब का मुख़्तसर में बयान। 88-96

(57) सूर-ए-हदीद **आयत नं.**

- अव्वल, आख़िर, ज़ाहिर, बातिन और कुछ दूसरी सिफाते-इलाहिया का बयान। 1-6
- ईमान कुबूल करने और अल्लाह के लिए उसकी राह में ख़र्च करने का महत्व। 7-8
- इस्लाम में 'अस्साबिकून अलअव्वलून' के फज़ाइल। 10
- क़यामत के दिन ईमान वालो के नूर और मुनाफ़िक़ीन के अहवाल का बयान। 12-15
- नसीहत को ज़्यादा समय गुज़र जाए तो दिलों में सख़्ती आ जाती है। 16
- सादिक़ीन और शहीदों के दर्जे के लिए ईमान वाला होना ज़रूरी है। 19
- दुनियावी ज़िन्दगी एक धोखा है। 20
- जन्नत की चौड़ाई का बयान। 30
- इंसान को पहुंचने वाली हर मुसीबत लौह-ए-महफ़ूज़ में लिखी हुई है। 22-23
- आसमानी किताबों और मीज़न-ए-अदल और लौहे के उद्देश्य। 25
- हज़रत नूह और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अज़मत का बयान। 26
- इसाईयों की शफ़क़त व रहमत और उनकी रहबानियत का बयान। 27
- अहले-किताब जान लें कि वो अल्लाह तआला की रहमत और फ़ज़्ल के मालिक नहीं हैं। 28-29

(58) सूर-ए-मुजादिला **आयत नं.**

- मसला जिहार (बीवी को मां कहना) और उसके कफ्फारें का बयान। 1-4
- अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करने वाले ज़लील किये जाएंगे। 5
- अल्लाह तआला के साथ (इल्म व रूइयत) होने का बयान। 7
- मुनाफ़िक़ीन और यहूद की सरगोशियां और रसूल की बदख़्वाही का बयान। 8
- सिर्फ़ नेक कामों की सरगोशी की इजाज़त है। 9-10
- आदाबे-मजलिस और अज़मते-अहले-इल्म (विद्वानों की बड़ाई) का बयान। 11
- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम से सरगोशी करने से पहले सदका करने और उसके मनसूख़ करने का बयान। 12-13
- यहूद और मुनाफ़िक़ीन का गठजोड़ और हिज़्बुश्शैतान का बयान। 14-20
- अल्लाह और रसूल से मुहब्बत रखने वाले इस्लाम के विरोधियों से मुहब्बत नहीं रखते। 21-22

(59) सूर-ए-हश्र **आयत नं.**

- यहूदियों का क़बीला बनु नज़ीर की जिलावतनी का बयान। 2-4
- जिहाद का मैदान व क़िताल में दुश्मनों का नुक़सान करना कैसा है? 5
- माल फे और उसकी तक़सीम का बयान। 6-7
- मुहाजिरीन व अंसार और नफ्स के ललाच से बचने वालों की क़ामयाबी का ऐलान। 8-9
- सल्फ़ व सालिहीन को दुआओं में याद रखने की तरग़ीब। 10
- मुनाफ़िक़ीन के यहूद से कुछ झूठे वादों और उनकी आपसी नफ़रतों का बयान। 11-14
- यहूद और मुनाफ़िक़ीन की शैतान से क़दरे मुशतरका का बयान। 15-17
- कल आने वाली क़यामत और अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात के लिए तैयारी की तलक़ीन। 18-19
- पहाड़ की मिसाल देकर क़ुरआ़न करीम के ज़रिये से ख़शीयते इलाही तारी करने की तरग़ीब। 21
- अल्लाह तबारक व तआ़ला के कुछ सिफ़ाती सुन्दर नामों का बयान। 22-24

(60) सूर-ए-मुम्मतहना **आयत नं.**

- अल्लाह और मोमिनों के दुश्मनों से दोस्ती का इज़हार करने से मुमानिअत के असबाब (कारण)। 1-3
- काफ़िरों से दोस्ती के ज़िम्न में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का उस्वाह-ए-हुस्ना इख़्तियार करना चाहिए। 5-9
- नेकी के हक़दार और वाज़िब-उल-क़ातल काफ़िरों के बीच फ़र्क़ के कुछ पहलू। 8-9
- मुसलमान मुहाजिर ख़्वातीन से निकाह के मुताबिक अहकामात। 10-11
- मोमिनात से कुछ मुख्य कार्य पर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के बैत लेने का बयान। 12

(61) सूर-ए-सफ़ **आयत नं.**

- कथनी और करनी के फ़र्क़ पर अल्लाह तआ़ला के गुस्से का इज़हार। 2-3
- सफ़-बस्ता जिहाद करने वाले लोग अल्लाह को मेहबूब (प्रिय) हैं। 4

- बनी-इसराईल का हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से व्यवहार। 5-6
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की अपने बाद आने वाले नबी अहमद सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की ख़ुशख़बरी का बयान। 6
- यहूदियों और नसरानियों की इस्लाम से दुश्मनी। 7-9
- अज़ाबे-अलीम से निजात दिलाने वाली तिजारत की कुछ जुज़ियात (हिस्से) का बयान। 10-13
- अहले-ईमान, अहले-कुफ्र पर ग़ालिब आते रहे हैं, इसलिए तुम भी अल्लाह के मददगार बन जाओ। 14

(62) सूर-ए-जुमा **आयत नं.**

- गुमराहों में मबऊस होने वाले नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की चार सिफाते कलाम का बयान। 2-4
- अहले तौरेत की बे-अमली और ऊंचे-ऊंचे दावों का बयान। 5-8
- लाख राहे-फरार इख़्तियार करें, अन्ततः मौत को आ दबोचना है। 8
- जुमा की नमाज़ के हवाले से कुछ ज़रूरी अककामात। 9-11

(63) सूर-ए-मुनाफ़िकून **आयत नं.**

- मुनाफ़िक़ीन की किज़्ब-बयानी, झूठी क़समों और उनकी पस्त हिम्मती का बयान। 1-4
- मुनाफ़िक़ीन के लिए माफी मांगने की मनाही और उसकी कुछ वजूहात की वज़ाहत (स्पष्टीकरण)। 5-8
- माल और औलाद ज़िक्रे-इलाही से ग़ाफ़िल कर दें तो घाटा यकीनी है। 9
- हालते-सेहत में सदक़ात और ख़ैरात करने की तरग़ीब। 10-11

(64) सूर-ए-तग़ाबुन **आयत नं.**

- अल्लाह की तख़्लीक़ पर क़ुदरत और इल्मे-इलाही का बयान। 1-4
- ''क्या बशर हमें हिदायत देगा'' काफ़िरों का नबियों को जवाब। 6
- जन्नत वालों और दोज़ख़ वालों की अलग-अलग रास्तों की वज़ाहत। 8-10

- बाज़ बीवियां और बाज़ बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं, इसलिए उनसे होशियार रहना। 14-15
- इन्फाक़ फ़ी सबीलिल्लाह की तरग़ीब और उसके बाज़ समरात का बयान। 16-18

(65) सूर-ए-तलाक़ **आयत नं.**

- इद्दत में तलाक़ देने और हदूदुल्लाह की पासदारी का बयान। 1
- दो तलाक़ों के बाद रुजू या अलग होने पर गवाही कायम करने का हुक्म। 2
- तीन अक़्साम की औरतें की इद्दतों की तफ्सील (विवरण)। 4-5
- तलाक़शुदा हामला (गर्भवती) से मुतालिक़ (संबंधित) कुछ अहकामात। 6-7
- तमाम बस्ती वालों को अल्लाह और रसूल की नाफ़रमानी की सज़ा मिल सकती है। 8-10
- रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम वाज़ेह आयतों के ज़रिये रोशनी की ओर मार्गदर्शन करने हैं। 11
- सात आसमानों और ज़मीनों की तख़्लीक़ का बयान। 12

(66) सूर-ए-तहरीम **आयत नं.**

- हलाल चीज़ को हराम क़रार देना अल्लाह के सिवा किसी के इख़्तियार में नहीं है। 1
- नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की बीवियों को नबी का राज़ खोलने पर आसमानी मनाही। 3-4
- नेक बीवियों की कुछ आला सिफ़ात का बयान। 5
- सभी ईमान वालों को अपने आप और अपने बीवी-बच्चों को जहन्नम से बचाना चाहिए। 6
- ''ख़ालिस तौबा'' के फ़ायदे और समरात। 8
- किसी नबी से रिश्तेदारी और ताल्लुक़ कुफ़्रिया कामों के साथ काम नहीं आ सकता। 10
- ईमानदार ख़्वातीन के लिए दो बेहतरीन मिसालों का बयान। 11-12

(67) सूर-ए-मुल्क **आयत नं.**

- ज़िन्दगी और मौत की तख़्लीक़ का मक़सद इंसान की आज़माईश है। 2
- बार-बार निहायत बारीक बीनी के साथ देखने से भी सातो आसमानों में

कोई कमी नज़र नहीं आ सकता। 3-4
- आसमाने-दुनिया को सितारों से ख़ूबसूरती भी अल्लाह ने दी है। 8
- अहले-दोज़ख़ का ऐतराफ़े तकज़ीब और पछतावा जबकि दोनों अब व्यर्थ है। 8-11
- इल्मे-इलाही की वुसअत का बयान। 12-14
- अल्लाह का रिज़्क खाओ लेकिन उसके मुख़्तलिफ (विभिन्न) प्रकार के अज़ाबों से बेख़ौफ़ ना होना। 15-18
- अल्लाह ही परिंदों को पर समेटे भी फ़िज़ा में ठहराता है। 19
- अल्लाह तआ़ला की असीमित क़ुदरतों का बयान। 20-21
- कानों, आखों और दिल की अमूल्य नेअमतों पर इंसान बहुत कम शुक्र करता है। 23
- क़यामत आने का इल्म सिर्फ़ अल्लाह के पास है। 25-26
- काफ़िरों को बुरे अंजाम से कौन बचाएगा। 27-28
- ज़ेरे-ज़मीन पानी का गहराई में जाना भी गिरफ्ते-इलाही का एक अंदाज़ है। 30

(68) सूर-ए-क़लम **आयत नं.**

- नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के मक़ाम व मर्तबा और ख़ुलके अज़ीम का बयान। 1-6
- काफ़िरों की मुदाहिनत (नर्मी) की ख़्वाहिश। 8-9
- एक काफ़िर की कुछ मज़मूम (बुरी) आदत व सिफात का इकठ्ठा बयान। 10-16
- सदक़ा न देने वालों के लिए बाग़वालों का सच्चा और इबरत-आमोज़ प्रसंग। 17-33
- क्या मुसलमानों और मुजरिमों का अंजाम एक जैसा होगा? कुछ सवालात। 34-41
- हश्र के मैदान में सजदा-रेज़ी का हुक्म और बेनमाज़ियों की ज़िल्लत व ख़्वारी। 42-43
- क़ुरआन करीम की तकज़ीब करने वालों के लिए मोहलत व गिरफ्त का इलाही-अंदाज़। 44-47
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मिसाल देकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को सब्र कने की तल्क़ीन। 48-52

(69) सूर-ए-हाक़्क़ा **आयत नं.**

- क़ौमे-आद की हलाकत के लिए सात रात और सात दिन चलने वाली

तेज़ (भीषण) हवा का बयान। 6-8
- क़ौम के लिए अपने-अपने रसूलों की नाफ़रमानी तबाही का सबब बनती रही है। 9-10
- क़यामत के दिन का एक तफ्सीली जायज़ा। 13-18
- दायें और बायें हाथ आमाल नामा दिये जाने वाले मुख़्तलिफ़ लोगों के हालात। 19-37
- कुरआन शायर या काहिन का कलाम नहीं बल्कि मंज़िलमिन अल्लाह की तरफ से नाज़िल किया है। 38-47
- कुरआन मजीद परहेज़गारों के लिए नसीहत और काफ़िरों के लिए बाअस हसरत है। 48-50

(70) सूर-ए-माअरिज **आयत नं.**

- पचास हज़ार साल के दिन का बयान। 1-10
- गुनाहगार आदमी बीवी, बच्चों, भाई और ख़ानदान तक को फियदे में देकर खुद छूटना चाहेगा। 11-14
- जहन्नम की आग की सख़्ती और हिद्दत (गर्मी) का बयान। 15-18
- हरीस व बेसब्र शख़्स और आली सिफात आदमी की तुलना। 19-35
- क़ब्रों से उठने का एक दृश्य। 42-44

(71) सूर-ए-नूह **आयत नं.**

- हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के अपनी क़ौम को वाज़ व नसीहत करने का बयान। 1-28
- अस्तग़फ़ार करने के दुनियावी फायदे। 10-12
- अल्लाह तआला के कुछ कामों का बयान जो उसने सिर्फ़ इंसानों के लिए किये हैं। 13-20

(72) सूर-ए-जिन्न **आयत नं.**

- जिन्नात का कुरआन को सुनना और उनके बाज़ ग़लत अक़ाइद व नज़रियात का बयान। 1-13
- जिन्नात के मुसलमानों और काफ़िरों को भी बाक़ायदा जज़ा व सज़ा मिलेगी। 14-17

- रसूल सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का कुछ अकाइद का ऐलान। 20-23
- आलिमुल गैब (अंर्तयामी) सिर्फ़ अल्लाह है मगर वह 'वह्यी' के ज़रिये नबियों को कुछ बातें बता देता है। 26-28

(73) सूर-ए-मुज़म्मिल **आयत नं.**

- नमाज़े तहज्जुद और उसके फ़ायदों व समरात का बयान। 1-8
- क़यामत के दिन की भयावहता से बच्चे बूढ़े हो जाएंगे। 17-19
- अपनी ताक़त के अनुसार नमाज़ में कुरआन पढ़ने और तीन अक्साम के लोगों का बयान। 20

(74) सूर-ए-मुदस्सिर **आयत नं.**

- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को कुछ कार्यों का मार्गदर्शन। 1-7
- एक काफ़िर की दुनियावी सहूलतों को, उसके कुफ़्र और उसके अज़ाबे -जहन्नम का ज़िक्र। 11-26
- "दोज़ख़ पर उन्नीस फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं" इसके अनुसार तीन गिरोहों का नज़रियात (दृष्टिकोंण)। 26-31
- दोज़ख़ में ले जाने वाले चार आमाल का बयान। 38-48

(75) सूर-ए-क़ियामा **आयत नं.**

- ग़ाफ़िल और नाफ़रमान इंसान को बेदार करने के लिए कुछ अंतिम समय का हक़ाइक। 1-15
- क़ुरआन से नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का लगाव और उसकी समस्त ज़िम्मेदारियां उठाने का बयान। 16-19
- मरते हुए इंसान की मदद कौन कर सकता है? 26-30
- इंसानी पैदाइश की तरतीब, क्या इंसान बेकार छोड़ा हुआ है? 36-40

(76) सूर-ए-दहर **आयत नं.**

- अल्लाह ने राहे हक़ बता दी, अब इंसान की मर्ज़ी है वह शुक्रगुज़ार बने या काफ़िर। 1-3
- नेक लोगों के कुछ नेक काम और उनके बाज़ जन्नती अहवाल व मन्ज़र। 5-22
- रब का हुक्म मानने और गुनाहगार और काफ़िर की बात न मानने का इलाही हुक्म। 24-31

(77) सूर-ए-मुर्सलात **आयत नं.**

- क़यामत के दिन की बाज़ कैफ़ियत और बाज़ मनाज़िर का बयान। 7-19
- ज़लील पानी से इंसान बनाने और फिर दुनिया में लाने का बयान। 20-24
- दोज़ख़ के धुंए की तीन शाख़ों और उसकी कैफ़ियत का बयान। 29-34
- मुजरिमों और परहेज़गारों के अलग-अलग तज़किरे। 35-45
- नमाज़ और क़ुरआन से दूर रहने वालों के लिए वईद (घोषणा)। 48-50

(78) सूर-ए-नबा **आयत नं.**

- कुछ दुनियावी इनामात के बाद तज़किरह-ए-क़यामत। 6-20
- सरकशों के लिए जहन्नम की सज़ा जो लगातार (निरंतर) बढ़ती रहेगी। 21-30
- परहेज़गारों के लिए कुछ अंतिम इनामों का बयान। 31-36
- क़यामत के दिन अल्लाह तआला की इजाज़त के बग़ैर कोई भी उससे कलाम न कर सकेगा। 37-38
- अपना अंजाम देखकर काफ़िर की ख्वाहिश, काश मैं भी मिट्टी बन जाता। 40

(79) सूर-ए-नाज़िआत **आयत नं.**

- क़यामत की सदाक़त पर अल्लाह की पांच क़समों का बयान। 1-9
- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन को बड़ी निशानी भी दिखाई लेकिन वो नाफ़रमानी से बाज़ नहीं आया। 15-26

- आसमान व ज़मीन की तख़्लीक़ मुम्किन है तो तुम्हें दोबारा पैदा करना भी मुम्किन है। 27-33
- सरकश और नफ़्स को ख्वाहिशात से रोकने वाले दो अलग-अलग आदमियों का अलग-अलग अंजाम। 37-41
- क़यामत के दिन काफ़िर कहेंगे कि दुनिया में एक दिन का पहला या आख़िरी हिस्सा रहे हैं। 42-46

(80) सूर-ए-अबस **आयत नं.**

- नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को लापरवाह आदमी के बजाए, ख़ौफे -इलाही रखने वाले का ख़्याल रखने की तल्क़ीन। 1-10
- कुरआन मजीद के बुलंद स्थान का बयान। 11-16
- आदमी अपनी और नबातात की तख़्लीक़ पर ग़ौर करे तो उसे हयाते-सानी का यक़ीन आ जाए। 17-32
- मैदाने-महशर मे इंसान अपने माता पिता और बीवी बच्चों से भागता फिरेगा। 33-37
- रौशन चेहरे वालों और स्याल चेहरे वालों का बयान। 38-42

(81) सूर-ए-तक्वीर **आयत नं.**

- क़यामत की आमद का ख़ौफनाक दृश्य। 1-14
- हज़रत जिब्रईल अमीन अलैहिस्सलाम का मक़ाम व मरतबा। 19-21
- नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की सदाक़त के दलील। 22-29

(82) सूर-ए-इन्फितार **आयत नं.**

- क़यामत के दिन ज़मीन और आसमानी तब्दीलियों का बयान। 1-4
- ऐ इंसान! तुझे किसने अल्लाह के मामले में धोखे़ में मुब्तिला रखा है। 6-12
- तुम्हारे सभी अमल (कार्य) लिखने वाले फ़रिश्ते लिखते जा रहे हैं। 10-12
- क़यामत के दिन कोई शख़्स दूसरे शख़्स का मालिक व मुख़्तार न होगा। 13-19

(83) सूर-ए-मुतफ़फ्फ़ीन **आयत नं.**

- नाप तौल में ज़्यादा लेने और कम देने वालों की हलाकत का बयान। 1-6
- बदकारों का नामा-ए-आमाल (सिज्जीन) में है। 7-13
- बुरे आमाल से दिलों पर ज़ंग आ जाता है, बुरे लोगों के अंजाम का बयान। 14-17
- नेक लोगों का नाम-ए-आमाल (इल्लीन) में है, ऐसे लोगों के इनामात का बयान। 18-28
- क़यामत के दिन ईमान वाले अपना मज़ाक उड़ाने वालों का मज़ाक उड़ाएंगे। 29-36

(84) सूर-ए-इन्शिक़ाक़ **आयत नं.**

- क़ुर्बे-क़यामत में आसमान व ज़मीन के अहवाल का बयान। 1-5
- दाएं या बाएं हाथों में आमाल नामा थमाये जाने वालों के अलग-अलग मुख्तलिफ (परिणामों) का बयान। 6-15
- क़ुरआन की तस्दीक़ व तकज़ीब करने वालों के मुख़्तिलफ़ अंजाम का बयान। 20-25

(85) सूर-ए-बुरूज **आयत नं.**

- मुसलमानों के बदख़्वाह ख़ंदक वालों की दास्ताने-इबरत। 4-10
- अल्लाह तआला की पकड़ बड़ी सख़्त है, नीज़ कुछ दूसरी सिफाते -इलाही का बयान। 12-16
- क़ुरआन मजीद, लौह-ए-महपफ़ूज़ में इसी तरह लिखा हुआ मौजूद है। 21-22

(86) सूर-ए-तारिक़ **आयत नं.**

- इंसान की पैदाइश और मैदान-ए-महशर मे उसके अहवाल का बयान। 1-10
- काफ़िरों को वक़्त (समय) दिये जाने का बयान। 15-17

(87) सूर-ए-आला **आयत नं.**

- ख़ल्क़, तक़दीर और हिदायत, तीनों अल्लाह के पास है। 1-5

- अल्लाह का नबी करीम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम को पढ़ाया हुआ अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर भूल नहीं सकता। 6-7
- ख़शियत रखने वाले लोग नसीहत हासिल करते हैं जबकि अहले-शकावत (बदबख़्त) इज्तिनाब का रवैया इख़्तियार करते हैं। 9-13
- दुनियावी ज़िन्दगी को तरजीह (प्राथमिकता) देने के बजाए अपना तज़्किया करें, ज़िक्र करें, नमाज़ पढ़ें। 14-19

(88) सूर-ए-ग़ाशिया **आयत नं.**

- क़यामत के दिन ज़लील चेहरे वालों के खाने-पीने का बयान। 2-7
- आसूदह चेहरे वालों का उख़रवी रहन-सहन। 8-16
- क़ाबिले इबरत चार अहम तरीन (प्रमुख) चीज़ें। 17-20
- नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम का काम नसीहत करना, अल्लाह का काम हिसाब लेना है। 21-26

(89) सूर-ए-फज्र **आयत नं.**

- आद, समूद और फ़िरऔन जैसे फसादियों का हश्र सामने रखो और सुधर जाओ। 1
- दुनियादार इंसान की तलून-मिज़ाजी और अमली कोताहियां। 15-20
- क़यामत के दिन अल्लाह की आमद और जहन्नम को सामने लाये जाने का बयान। 21-26
- मुतमईन शख़्स पर अल्लाह के इनामों का बयान। 27-30

(90) सूर-ए-बलद **आयत नं.**

- इंसानी ज़िंदगी मश्क़्क़तों से भरपूर है। 1-4
- काफ़िर की क़ुदरत-ए-इलाही के संबंधित बदगुमानी और अल्लाह का अलग अंदाज़ से अपनी क़ुदरत का सबूत। 5-10
- दाएं हाथ वालों में शामिल होने के लिए अच्छे कर्मों का बयान। 11-18

(91) सूर-ए-शम्स **आयत नं.**

- तज़्किया-ए-नफ़्स करने वाले की कामयाबी पर अल्लाह की क़समों का बयान 1-9
- मन (नफ़्स) को कुफ़्र व मअ़सियत से आलूदा (प्रदूषित) करने वाले नाकाम ही रहेंगे मिसाल (उदाहरण) के लिए क़ोम-ए-समूद का बयान। 10-15

(92) सूर-ए-लैल **आयत नं.**

- तुम्हारी कोशिशें मुख़्तलिफ (भिन्न-भिन्न) हैं इसलिए इसके नताईज़ (परिणाम) भी अलग-अलग निकालेगें। 1-11
- बदबख़्त और नेकबख़्त आदमियों की अलग-अलग ख़ामियां और ख़ूबियां। 12-21

(93) सूर-ए-ज़ुहा **आयत नं.**

- अल्लाह तआ़ला के अपने नबी से दाईमी-ताल्लुक़ का बयान। 1-8
- तीन कामों की खुसूसी (विशेष) तालीम। 9-11

(94) सूर-ए-नशरह **आयत नं.**

- नबी अकरम सल्ललाहु अलेहि वसल्ल्म पर अल्लाह तआ़ला के अहसानात (असीमित कृपा) की एक झलक। 1-4
- तंगी के साथ आसानी मिलती है। 5-8

(95) सूर-ए-तीन **आयत नं.**

- इंसानी सूरत की बेहतरीन तख़्लीक़ पर चार क़स्मों का बयान। 1-4
- ईमान वाले और आमाल-ए-सालेहा के आदी लोगों के सिवा बाक़ी लोग रुसवाकुन अज़ाब में होंगे। 5-6

(96) सूर-ए-अलक़ **आयत नं.**

- अपने पैदा करने वाले के नाम से पढ़ो, जिसके बहुत से एहसान हैं। 1-5
- इंसान के पास फराख़ी की आमद इसे सरकश बना देती है। 5-8
- नेकियां करने वाले को रोकने और परेशान करने वाले का अंजाम। 6-19

(97) सूर-ए-क़द्र **आयत नं.**

- लैलतुलक़द्र की अज़मत और सरासर सलामती वाली रात का बयान। 1-5

(98) सूर-ए-बय्यिना **आयत नं.**

- अहले-किताब के कुफ्फार और अन्य मुश्रिकीन का नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम और क़ुरआन के साथ रवैया। 1-4
- मज़बूत और सीधे दीन के मुतालबा उमूर को मानने और न वालों का अंजाम। 5-8

(99) सूर-ए-ज़िलज़ाल **आयत नं.**

- अल्लाह तआला के हुक्म से ज़मीन अपनी ख़बरें बयान करेंगी। 1-5
- अच्छाई और बुराई के हर मुरतकिब के सामने उसका ख़ैर (अच्छाई) व शर (बुराई) आ जाएगा। 6-8

(100) सूर-ए-आदयात **आयत नं.**

- जेहादी घोड़े का मुक़ाम व मरतबा। 1-5
- इंसान अल्लाह तआला का बड़ा ही नाशुक्रा है और माल की मुहब्बत में बड़ा सख़्त है। 6-8

(101) सूर-ए-क़ारिअ़ा **आयत नं.**

- क़यामत आने से पहले दुनियावी निज़ाम अस्त-व्यस्त हो जाएगा। 1-5
- दो अलग-अलग गिरोहों और उनके आमाल (कर्मों) के परिणाम का बयान। 6-11

(102) सूर-ए-तकासुर **आयत नं.**

- माल की हवस मरते दम तक इंसान को ग़ाफ़िल रखती है। 1-2
- जहन्नम सामने आने वाली है और हर नेमत की पूछताछ भी होने वाली है। 3-8

(103) सूर-ए-असर **आयत नं.**

- ख़सारे से बचने वाले लोगों की चार खूबियां । 1-3

(104) सूर-ए-हम्ज़ा **आयत नं.**

- कमियां निकालने वाले, चुग़ली करने वाले और दुनियावी माल को जमा और गिनने वालों का परिणाम। 1-4
- दिलों पर चढ़ जाने वाली आग (हुतमा) की शिद्दत का बयान। 5-9

(105) सूर-ए-फ़ील **आयत नं.**

- अस्हाबुल फ़ील की तबाही का इबरतनाक वाक़िया (प्रसंग)। 1-5

(106) सूर-ए-कुरैश **आयत नं.**

- अल्लाह तआ़ला की नेअमतों पर इज़्हारे तशक्कुर के लिए इबादत बुनियादी चीज़। 1-4

(107) सूर-ए-माऊन **आयत नं.**
- बाइस-ए-हलाकत कुछ अख़्लाक़ी और मज़हबी कमज़ोरी का बयान। 1-7

(108) सूर-ए-कौसर **आयत नं.**

- हौज़-ए-कौसर के अता होने पर नमाज़ और क़ुर्बानी का एहतमाम करते रहें। 1-3

(109) सूर-ए-काफ़िरुन **आयत नं.**

- काफ़िरों के मअबूदों से इज़्हारे ला ताल्लुक़ी और मअबूद-ए-वाहिद की परस्तिश पर जमे रहने का पुख़्ता इरादा। 1-6

(110) सूर-ए-नस्र **आयत नं.**

- फ़तह-ए-मक्का, तक्मीले दीन और आख़िरत की तैयारी का बयान। 1-3

(111) सूर-ए-लहब **आयत नं.**

- गुस्ताख़ाने रसूल अबूलहब और उसकी बीवी का इबरतनाक अंजाम-ए-आखिरत। 1-5

(112) सूर-ए-इख़्लास **आयत नं.**

- हर तरह से शिर्क की तरदीद और तौहीद की तीनों क़िस्मों का सबूत। 1-4

(113) सूर-ए-फ़लक **आयत नं.**

- जुल्मते शब, जादू और हसद जैसी बुराईयों से पनाह मांगने का बयान। 1-5

(114) सूर-ए-नास **आयत नं.**

- सीनों में वस्वसे डालने वाले जिन्न व इंसान के शयातीन से पनाहे इलाही में आने का हुक्म। 1-6

फेहरिस्त मज़ामीन
अल्फाज़े कुरआन

फेहरिस्त मज़ामीन अल्फाज़े कुरआन

अ

अल्लाह तआला

अल्लाह तआला एक है - निसा 4:171, आराफ 7:70, यूसुफ 12:39, रअद 13:16, इब्राहीम 14:48, नहल 16:51, बनीइस्राईल 17:46, जुमर 39:4, 45, गाफिर 40:12, 16, 84, मुमतहना 60:4, इख़्लास 112:1,

अल्लाह तीन में से एक नहीं - मायदा 5:73,

अल्लाह दो में से एक नहीं - नहल 16:51,

अल्लाह की बीवी है न औलाद - अनआम 6:101, जिन्न 72

अल्लाह की न कोई औलाद - बकरा 2:116, तौबा 9:30, यूनुस 10:68, नहल 16:57, बनीइस्राईल 17:111, कहफ 18:4, 5, मरयम 19:35, 88, 89, 91, 92, अम्बिया 21:26, मोमिनून 23:91, फुरक़ान 25:2, इख़्लास 112:3,

अल्लाह किसी का बेटा नहीं - इख़्लास 112:3

अल्लाह का कोई शरीक नहीं - अनआम 6:163, बनीइस्राईल 17:111, कहफ 18:26, फुरक़ान 25:2,

अल्लाह अव्वल भी है आखीर भी - हदीद 57:3,

अल्लाह का ही सब कुछ है आखीर व अव्वल भी - नज्म 53:25, लैल 92:13

अल्लाह ज़िन्दा है - बकरा 2:255, आलेइमरान 3:2 ताहा 20:111, फुरक़ान 25:58, मोमिन 40:65,

अल्लाह की ज़ात हमेशा रहेगी - क़सस 28:88, रहमान 55:27,

अल्लाह को कभी मौत नहीं आऐगी - फुरक़ान 25:58,

अल्लाह अर्शे अज़ीम का मालिक है -तौबा 9:129, मोमिनून 23:86, नमल 27:26,

अल्लाह अर्शे करीम का मालिक है - मोमिनून 23:116

अल्लाह अर्शे मजीद का मालिक है - बुरूज 85:14, 15,

अल्लाह अर्श पर है - आराफ 7:45, यूनुस 10:3, रअद 13:2, ताहा 20:5, फुरक़ान 25:59, सज्दा 36:4, हदीद 57:4,

अल्लाह दुआ सुनने के एतबार से बन्दों के नज़दीक है - बकरा 2:186, हूद 11:61, सबा 34:50, वाक़िया 56:85,

अल्लाह की तअरीफ - फातिहा 1:1, बकरा 2:30, अनआम 6:1, 49, आराफ 7:43, यूनुस

10:10, रअद 13:13, इब्राहीम 14:39, हिज्र 15:98, नहल 16:75, बनीइस्राईल 17:44, 52, 171, कहफ 18:1, नमल 27:15, 59, 93, क़सस 28:70, अनकबूत 29:63, रूम 30:18, लुक्मान 31:25, सज्दा 32:15, सबा 34:1, फातिर 35:1, 34, साफ्फात 37:182, जुमर 39:29, 74, 75, मोमिन 40:7, 55, 65, शुरा 42:5, जाशिया 45:36, काफ 50:39, तूर 52:48, तगाबुन 64:1, नस्र 110:3,

अल्लाह की तस्बीह करते हैं जो आसमानों और ज़मीन में हैं - रअद 13:13, आराफ 7:206, बनीइस्राईल 17:44, अम्बिया 21:20, नूर 24:36, सज्दा 32:5, साफ्फात 37:166, जुमर 39:75, मोमिन 40:7 हा मीम सज्दा 41:38, शुरा 42:5, हदीद 57:1, सफ्फ 61:1, जुमा 62:1, तगाबुन 64:1,

अल्लाह ही को सब सज्दा करते हैं - आराफ 7:206, रअद 13:15, नहल 16:49, हज्ज 22:18, रहमान 55:6,

अल्लाह का नूर - नूर 24:35, जुमर 39:69, तौबा 9:32, सफ्फ 61:8,

अल्लाह सब जानता है - बकरा 2:255, आलेइमरान 3:3, 6, 29, 119, मायदा 5:99, अनआम 6:3, 59, 74, तौबा 9:78, यूनुस 10:61, हूद 11:123, नहल 16:91, कहफ 18:26, ताहा 20:7, अम्बिया 21:110, नमल 27:65, 74, लुक्मान 31:16, 34, सबा 34:2, 3, फातिर 35:38, मोमिन 40:19, हा मीम सज्दा 41:47, मुहम्मद 47:30,

अल्लाह ही मुख्तार कुल है - बकरा 2:272, आले इमरान 3:20 123 से 126 तक, आराफ 7:54, 188, 179, अनफाल 8:67, 68, तूर 52:7, 8, नज़्म 53:58, मुमतहना 60:4,

अल्लाह ही को है हर तरह का इख्तियार - आले इमरान 3:128, 144, मायदा 5:17, 18, 40, 41, 76, अनआम 6:57, 58, 107, तौबा 9:80, यूनुस 10:15, 49, 99, रअद 13:38, बनीइस्राईल 17:54, 56, 73 से 75 तक, क़सस 28:68, 71,72, आला 87:7,

अल्लाह के साथ शिर्क - तौबा 9:31, नहल 16:86, कहफ 18:26, हज्ज 22:73, फुरक़ान 25:2, 3, रूम 30:35, 40, लुक्मान 31:11, 13, सबा 34:22, जुमर 39:45, मोमिन 40:12, 14, 20, 73 से 78 तक,

अल्लाह के सिवा कोई कारसाज़, मुश्किल कुशा, हाजतरवा नहीं - आले इमरान 3:64, अनआम 6:51, रअद 13:11, 16, शुरा 42:9, 31, मुजम्मिल 73:9,

अल्लाह से मदद, मुश्किल कुशा सिर्फ और सिर्फ अल्लाह ही है - फातिहा 1:5, बकरा 1: 107, अनआम 6:17, 18 यूनुस 10:107, रअद 13:37, अहकाफ 46:5,

अल्लाह बेनियाज है - अनकबूत 29:6, फातिर 35:15 से 18 तक, जुमर 39:65, 67 सूरह इख्लास

अल्लाह के सामने तमाम मख्लूक़ मजबूर है - हूद 11: 35, 63, बनीइस्राईल 17:73 से 75

तक, मरयम 19:93 से 95 तक, क़सस 28:86, फातिर 35:8, 11 से 13 तक, 36 से 38 तक, मोमिन 40:18, मुनाफिक़ून 63:6, हाक़्क़ा 69:44 से 47 तक, जिन्न 72:21, 22, नबा 78:37, 38, इन्फितार 82:17 से 19 तक,

अल्लाह ही की मोहताज है सारी की सारी मख़्लूक़, इज़्ज़त, ज़िल्लत, औलाद, रिज़्क़, मौत और ज़िन्दगी का मालिक सिर्फ अल्लाह ही है - आले इमरान 3:26, 27, यूनुस 10:31, रअद 13:26, बनीइस्राईल 17:31, अम्बिया 21:89, 90, हूद 11:71, 72, रूम 30:40, फातिर 35:2, 3, 15 शुरा 42:49, 50,

अल्लाह दाने को फाड़ने वाला है - अनआम 6:95,96,

अल्लाह जो चाहे उसे कर डालने वाला है - हूद 11:1 बुरूज 85:14,15,16,

अल्लाह सबके लिए काफी है - बकरा 2:137, आलेइमरान 3:173, निसा 4:6,45,70, 79,81,132,166,171, यूनुस 10:29, रअद 13:43, बनीइस्राईल 17:65,96, फुरक़ान 25: 31,58, अनकबूत 29:52, अहज़ाब 33:3,25, 39,48, अहक़ाफ 46:8 फतह 48:28,

अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है - अनआम 6:2,102, आराफ 7:54, यूनुस 10:3,4, रअद 13:3, हिज्र 15:27, नहल 16:8,72, ताहा 20:53, अम्बिया 21:30, नूर 24:45, फुरक़ान 25:2, 61,62, क़सस 28:68, सज्दा 32:7,9, फातिर 35:1, यासीन 36:36, मोमिन 40:61, जुखरूफ 43:12, अहक़ाफ 46:33, क़ाफ 50:38,ज़ारियात 51:49, नज्म 53:45, क़मर 54:49, मुल्क 67:2, नूह 71:16, क़ियामा 75:39, नबा 78:8, लैल 92:3,

अल्लाह करीब है - बकरा 2:186, हुद 11:61, सबा 34:50, वाक़िया 56:85,

अल्लाह गर्दन की रग से भी करीब है - क़ाफ 50:16,

अल्लाह के सिवा सबको फना (मौत) है - आलेइमरान 3:144, हिज्र 15:99, अम्बिया 21:34, क़सस 28:87, 88, जुमर 39:30,

अल्लाह का डर - मायदा 5:94, आराफ 7: 35 अम्बिया 21:48,49, सज्दा 32:15,16, अहज़ाब 33:37, फातिर 35:28, यासीन 36:11, अहक़ाफ 46:13,14, रहमान 55:46,47, हशर 59:21, मुल्क 67:12, नाज़ियात 18:40,41,

अल्लाह का हुक्म - बकरा 2:117, आलेइमरान 3:47, अनआम 6:57, 62, नहल 16:1, मोमिन 40:12, क़मर 54:50,

अल्लाह की बातें बदला नहीं करती - अनआम 6:34, 115, यूनुस 10:64, कहफ 18:27, काफ 50:29,

अल्लाह की बातें कभी न खात्म होने वाली - कहफ 18:109, लुक्मान 31:27,

अल्लाह की सुन्नत नहीं बदलती - इसरा 17:77, अहज़ाब 33:38, 62, फातिर 35:43, फतह

48:23,

अल्लाह के नाम सब अच्छे है - आराफ 7:180, इस्रा 17:110, ताहा 20:8, हशर 59:24,

अल्लाह के नाम -

अहद (एक) - इख़्लास 112:1 **अहसनुलखालिक़ीन** (सबसे अच्छा पैदा करने वाला) - मोमिनून 23:14, **अहकमुलहाकिमीन** (सबसे बेहतर फैसला करने वाला) - हूद 11:45, **अव्वल** (पहला) - हदीद 57:3, **आखिर** - हदीद 57:3, **अरहमुरराहिमीन** (सबसे बड़कर रहम करने वाला) - आराफ 7:151 **असरउलहासिबीन** (बहुत जल्द हिसाब लेने वाला) - अनआम 6:62, असरउमकरा (सबसे तेज़ चाल चलने वाला) - यूनुस 10:21, **आला** (जलीलुश्शान, आला अरफा) - आला 87:1 **अकरम** (बड़ा करीम) - अलक़ 96:3, **अज़ीम** (बुर्जुग, बड़ा) - वाक़िया 56:74, **आलिम** (जानने वाला) - जिन्न 72:26, **अल्लाम** (खूब जानने वाला) - मायदा 5:109, **अलीम** (जानने वाला) - बकरा 2:273, **अली** (बुलंद शान वाला) - सबा 34:23, **अज़ीज़** (ग़ालिब) आलेइमरान 3:18, **बाक़ी** (बाक़ी रहने वाला) - ताहा 20:73, **बारी** (पैदा करने वाला) - बकरा 2:54, हशर 59:24, **बातिन** (पौशिदा) - हदीद 57:3, **बदीअ** (मौजूद, नया पैदा करने वाला) - अनआम 6:101, **बसीर** (देखने वाला) - बकरा 2:96, **ज़ाहिर** - हदीद 57:3, **तआला** (बुलंद, बरतर) - अनआम 6:100, **तव्वाब** (बहुत तौबा क़बूल करने वाला) - नूर 24:10, **तबारक** (बहुत बाबरकत है) - आराफ 7:54, **जब्बार** (ज़बरदस्त) - हशर 59:23, **हफीज़** (निगेहबान) - हूद 11:57, **हकीम** (खूब हिकमत वाला) - बकरा 2:129, **हलीम** (खूब हौसले वाला, बुरदबार) - बकरा 2:225, **हमीद** (क़ाबिले तारीफ) - बकरा 2:267, **हई** (ज़िन्दा)- बकरा 2:255, **खालिक़** (हर चीज़ का पैदा करने वाला) - 6:102, **खबीर** (खूब बाखबर) - फातिर 35:14, **खैर** (बहुत बेहतर) - ताहा 20:73, **ज़ुफ़ज़्ल** (फज़ल वाला) - आलेइमरान 3:174, **ज़ुर्रहमा** (रहमत वाला) -अनआम 6:133, **ज़ुलजलालिवलइकराम** (जलाल व अज़मत वाला) -रहमान 55:78, **ज़ीन्तिकाम** (इन्तिकाम लेने वाला) - ज़ुमर 39:37, **रब** (पालनहार) - फातिहा 1:2, **रहमान** (निहायत महरबान) - फातिहा 1:3, **रहीम** (बहुत रहम करने वाला) - फातिहा 1:3, **सुब्हान** (पाक) - इसरा 17:93, **सरीउलहिसाब** (जल्द हिसाब लेने वाला) - आलेइमरान 3:19, **सलाम** (सलामती वाला) - हशर 59:23, **समी** (खूब सुनने वाला) बकरा 2:137, **शाकिर** (क़द्र करने वाला) - बकरा 2:158, **शकूर** (बड़ा क़द्रां) - तगाबुन 64:17, **सदीद** (सख़्त) - बकरा 2:165, **शाहिदीन** (हाज़िर, देखने वाला) - अम्बिया 21:78, **शहीद** (गवाह) -आलेइमरान 3:98, **समद** (बेनियाज) - इख़्लास 112:2, **गाफिर** (गुनाह बख़्शने वाला) - मोमिन 40:3, **गफूर** (मग्फिरत वाला) - कहफ 18:58, **ग़नी** (बेपरवा) यूनुस 10:68, **फातिर** (पैदा करने वाला) - यूसुफ 12:101, **फालिक़** (फाड़ने वाला, निकालने वाला) अनआम 6:95,96, **फातिहीन** (फैसला करने वाला) - आराफ 7:89, **फासिलीन** (फैसला करने

वाला) अनआम 6:57, **क़ाबिल** (क़बूल करने वाला) मोमिन 40:3, **क़ादिर** (कुदरत वाला) - **कियामा** 75:40, **क़दीर** (कुदरत वाला) - हज्ज 22:6, **कुद्दूस** (पाक ज़ात) - हशर 59:23, **क़रीब** - बकरा 2:186, **काहिर** (इख़्तियार वाला) - अनआम 6:18, **कह्हार** (जबरदस्त) यूसुफ 12:39, **क़वी** (ताक़तवर, मज़बूत) - अनफाल 7:52, **कबीर** (बहुत बड़ा) - हज्ज 22:62, **लतीफ** (बारीकबीन) - अनआम 6:103, **मुजीब** (क़बूल करने वाला) - हूद 11:61, **मजीद** (बुर्जुगी वाला) - हूद 11:73, **मालिक** (बादशाह) - फातिहा 1:4, **मलीक** (बादशाह) - क़मर 54:55, **माहिदून** (बिछाने वाला) - ज़ारियात 51:48, **मुअमिन** (अमन देने वाला) - हशर 59:23, **मुहयमिन** (निगेहबान) - हशर 59:23, **मुतकब्बिर** (बड़ाई वाला) 59:23, **मुसव्विर** (सूरतगीर) - हशर 59:24, **मुतआलि** (निहायत बुलंद) - रअद 13:9, **मूसिऊन** (बहुत वुसअत वाला) - 51:47, **मौला** (मददगार) - आलेइमरान 3:150, **मौलाना** (कारसाज़) - 2:286, **नासीर** (मददगार) बकरा 2:107, **हादी** (हिदायत (मार्ग-दर्शन) देने वाला) - **फुरक़ान** 25:31, **वहदहु** (एक) - आराफ 7:70, **वाहिद** (एक) - बकरा 2:163, **वारिसून** (वारिस) -हिज्र 15:23, **वली** (दोस्त) - बकरा 2:257, **वह्हाब** (अता करने वाला) आलेइमरान 3:8,

अल्लाह किसे हिदायत (मार्ग-दर्शन) देता है - बकरा 2:142, 213, 272, यूनुस 10:25, 35, रअद 13:27, हज्ज 22:16, नूर 24:35, 46, अनकबूत 29:69, अहज़ाब 33:4, सबा 34:6, जुमर 39:23, शुरा 42:13,

अल्लाह किसे हिदायत (मार्ग-दर्शन) नहीं देता - बकरा 2:258, 264, मायदा 5:108, यूसुफ 12:52, जुमर 39:3, मोमिन 40:28,

अल्लाह किसे पसंद करता - बकरा 2:190, 222, आलेइमरान 3:76, 146, 159, मायदा 5:42, तौबा 9:108, हुजरात 49:9, सफ्फ 61:4,

अल्लाह किसे नापसंद करता - बकरा 2:190, 205, 276, आलेइमरान 3:32, निसा 4:36, 107, 148, मायदा 5:64, आराफ 7:31, अनफाल 8:58, नहल 16:23, हज्ज 22:38, क़सस 28:76, लुक्मान 31:18, शुरा 42:40

अल्लाह के लिए खास है इल्मे ग़ैब - बकरः 2:32, मयादा 5:116, अनआम 6:50, 59, आराफ 7:187, 188, तौबा 9:43, 80, 101, यूनुस 10:20, हूद 11:31, 46, 47, 49, 69, 70, 77, 78 से 81 तक 123, यूसुफ 12:3, इब्राहीम 14:9, हिज्र 15:53 से 55, नहल 16:21, कहफ 18:19, 25, 26, 68, अम्बिया 21:109, 211, नमल 27:65, क़सस 28:86, लुक्मान 31:34, मोमिन 40:78, शुरा 42:52, अहकाफ 46:9, तहरीम 66:3, जिन्न 72:25, 26, 27, मुदस्सिर 74:31 अबस 80:1 से 10 तक,

अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की इताअत - आलेइमरान 3:32, निसा

4:13, 14,59,64,69,70, मायदा 5:92, अनफाल 8:1, 20,46, तौबा 9:21, नूर 24:47,48,54, हुजरात 49:1,

अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम की नाफरमानी - निसा 4:14,115, अनफाल 8:12,13,21, तौबा 9:63, अहज़ाब 33:36, मुजादला 58:8,9, जिन्न 72:23,

अल्लाह से मुहब्बत - देखे हुब्बे इलाही,

अल्लाह की हाकमियत - फातिहा 1:3, बकरा 2:113,210, आलेइमरान 3:109,128, 129,154,189, मायदा 5:1, अनआम 6:51,62, 73, अनफाल 8:47, हूद 11:123, रअद 13:14, 15, नहल 16:90,124, मरयम 19:64, हज 22:17,56,69,76, नमल 27:78,79, क़सस 28: 68,70,88, रूम 30:14, सज्दा 32:25, जुमर 39:46, शूरा 42:10, इन्फितार 82:19,

अल्लाह की मुहलत - बकरा 2:210, अनआम 6:135,158, आराफ 7:52, तौबा 9:52, यूनुस 10:11,19,20,102, नहल 16:33, मरयम 19: 75, ताहा 20:134,135, मोमिनून 23:55,56, सज्दा 32:28से30, फातिर 35:43, यासीन 36: 49,50, साद 38:15, जुखरूफ 43:66, दुखान 44:59, मुहम्मद 47:18, तूर 52:30,31

अल्लाह की निशानियां - आराफ 7:26 बनीइस्राईल 17:12,101, शोअरा 26:7,8,65, 66,67,119,120,121,139158,173,174,189, 190, नमल 27:12, रूम 30:20,25,46, सज्दा 32:26, यासीन 36:33,37,41, हा मीम सज्दा 41:37,39, शूरा 42:29,32,

अल्लाह की निशानियां अक्ल वालों कि लिए -बकरा 2:164, आलेइमरान 3:190, नहल 16:12, रअद 13:4, ताहा 20:53,54, अनकबूत 29:35, रूम 30:24, जासिया 45:5,

अल्लाह की निशानियां गौर फिक्र करने वालों के लिए - रअद 13:3, नहल 16:11,69, रूम 30:21, जुमर 39:42, जासिया 45:13,

अल्लाह की निशानियां ईमानवालों के लिए - अनआम 6:99, नहल 16:79, नमल 27:86, अनकबूत 29:24,44, रूम 30:37, जासिया 45:3,

अल्लाह की निशानियां यक़ीन करने वालों के लिए - जासिया 45:4, ज़ारियात 51:20,21,

अल्लाह की निशानियां डर रखनेवालों के लिए - यूनुस 10:6,

अल्लाह की निशानियां सुनने वालों के लिए - यूनुस 10:67, नहल 16:65, रूम 30:23

अल्लाह की निशानियां नसीहत लेने वालों के लिए - नहल 16:13,

अल्लाह की निशानियां उनके लिए जो जानना चाहे - नमल 27:52, रूम 30:22,

अल्लाह की निशानियां शुक्र करने वालों के लिए - इब्राहीम 14:5, लुक्मान 31:31, सबा 34:19, शूरा 42:33,

अल्लाह की निशानियां रूजू करने वाले बन्दों के लिए - सबा 34:9

अल्लाह की निशानियां रसूलों के लिए - आलेइमरान 3:41, हूद11:96, बनीइस्राईल 17:1,101, मरयम 19:10, ताहा 20:23, नज्म 53:18,

अल्लाह की निशानियां लोगों/संसार के लिए - अम्बिया 21:91, मोमिनून 23:50, फुरक़ान 25:37, अनकबूत 29:15,

अल्लाह की नेअमतें - अनफाल 8:53, नहल 16:5से18, 66से69, 72, 78से83, फातिर 35:3, 27,28, हदीद 57:25, नबा 78:6,16, अबस 80:24से33,

अल्लाह किसी पर जुल्म नही करता - आले इमरान 3:108,117, 182, निसा 4:40, अनआम 6:131, यूनुस 10:44, मोमिनून 23:62,

अल्लाह मोमिनों का वली (दोस्त) - बकरा 2:107,120,257, आलेइमरान 3:67,122, निसा 4:45,123,173, मायदा 5:55,56, अनआम 6: 14,51,70,127, आराफ 7:155,196, तौबा 9: 74,116, यूनुस 10:62से64, यूसुफ 12:101, रअद 13:37, कहफ 18:26, अनकबूत 29:22, सज्दा 32:4, अहज़ाब 33:17, सबा 34:41, शूरा 42:9,28,31 जासिया 45:19,

अल्लाह मोमिनो का औलिया (दोस्त) है - यूनुस 10:62, हूद 11:20,113, रअद 13:16, कहफ 18:102, फुरक़ान 25:18, अनकबूत 29: 41, अहक़ाफ 46:32,

अल्लाह ने जिन चीजों की क़सम खाई है - हिज्र 15:72, यासीन 36:1से4, साफ्फात 37:1से 4, साद 38:1,2, जुखरूफ 43:1,2,3, क़ाफ 50:2, ज़ारियात 51:1से8,22,23, तूर 52:1से8, नज्म 53:1से4, वाक़िआ 56:75से77, क़लम 68:1से4, हाक्क़ा 69:38से40, मआरिज 70:40, 41, मुदस्सिर 74:32,36, क़ियामा 75:1से4, तकवीर 81:15से18, इन्शिक़ाक़ 84:16से19, बुरूज 86:1से4,11,14, फजर 89:1से5, बलद 95:2,3,4, शम्स 91:1से4, आदियात 100:1से6, अस्र 103:1से3,

अल्लाह वालों की पहचान - बकरा 2:1से5, 165, आलेइमरान 3:16,17,133,134, अनफाल 8:2,4, तौबा 9:111,112, रअद 13:20से22, हज 22:41, मोमिनून 23:1से11, फुरक़ान 25:63 से76, अहज़ाब 33:35, शूरा 42:36,39, फतह 48:29, ज़ारियात 51:15से19,

''अलम तर कयफ'' से मुराद हाज़िर नाज़िर नहीं - निसा 4:77, अनआम 6:6, रअद 13:41, यासिन 36:31, 71, 77, सज्दा 41:15

अम्बिया बशर थे (अफज़लुलबशर) - बकरा 2:23, 151, आलेइमरान 3:79, आराफ 7:63, 65, 69, 73, 85, हूद 11:50, युसूफ 12:109, रअद 13:38, इब्राहीम 14:10, 11, नहल 16:43, बनीइस्राईल 17:1, 3, 93, 94, कहफ 18:1, 10, मरयम 19:2 से 9 तक, अम्बिया 21:7, 8, फुरक़ान 25:7, 20, शोअरा 26:124, 142, 154,161, अनकबूत 29:36, सज्दा 41:6,

शुरा 42:51, आला 96:10,

अक्सरियत का हाल - अनआम 6:115, 116, आराफ 1:17, यूसुफ 12:40, 106, बनीइस्राईल 17:17, 89, अम्बिया 21:24, फुरक़ान 25:44, शोअरा 26:8, जुमर 30:6, सबा 34:36, हदीद 57:26,

अज्र - बकरा 2:62,174, आलेइमरान 3: 171,172,179,185, यूसुफ 12:56,57,90, नहल 16:41,42, कहफ 18:30, अनकबूत 29: 58, अहज़ाब 33:44, फातिर 35:7, हा मीम सज्दा 41:8, शूरा 42:40, तलाक़ 65:5, मुल्क 67:12, तीन 95:6,

अबुलहब - तब्बत 111:1से5,

अज्ल (मौत) - आलेइमरान 3:145, निसा 4:78, अनआम 6:61,93,94, आराफ 7:34, अम्बिया 21:34 सज्दा 32:11, अहज़ाब 33:16से19, जुमर 39:42, क़ाफ 50:19, वाक़िया 56:60,61, जुमा 62:8, मुनाफिक़ून 63:11,

अवहाले क़यामत (क़यामत के हालात) - बकरा 2:48, 113,165,166,167,254,281, आलेइमरान 3:9,25,30,55से77,106, 107,180 से185, निसा 4:87, मायदा 5:109,119, अनआम 6:12, 22,31,51,128, आराफ 7:8,9, 187, तौबा 9:106, यूनुस 10:23, 28,45,70, हूद 11:102,103,105, रअद 13:5, इब्राहीम 14:21, 23, हिज्र 15:25,32,85, नहल 16:21से 25,27,77,111, बनीइस्राईल 17:49 से52,71, 97, कहफ 18:21,47,52,99से101, मरयम 19:75, ताहा 20:105से112, अम्बिया 21:1,2, 47,97,104, हज 22:1,2,7, मोमिनून 23:101, नूर 24:24,25, फुरक़ान 25:17,18, नमल 27: 82,83, क़सस 28:62से67,75, अनकबूत 29:13, लुक्मान 31:33,34, सज्दा 32:25, अहज़ाब 33:44,63,66, सबा 34:3,29,33,40,42, यासीन 36:65, साफ्फात 37:29, साद 38:26,53,78से81, जुमर 39:60,67से75, मोमिन 40:10,11,52,59,71से76, हा मीम सज्दा 41:19,40,47,50, शूरा 42:7,17,18,45, जुखरूफ 43:61,66, दुखान 44:10से12, जासिया 45:17,26,27,32, अहक़ाफ 46:20, मुहम्मद 47:18, क़ाफ 50:20 से31,41,43, तूर 52:9से28, क़मर 54:6,से8, वाक़िया 56:1से11, मुजादला 58:6,7, मुम्तहना 60:3, तगाबुन 64:9, क़लम 68:39, हाक्क़ा 69:1से4,31से37, मआरिज 70:8से15,43,44, मुज़म्मिल 73:14से 17, मुदस्सिर 74:8से10, क़ियामा 75:1से13, दहर 76:10,11, मुरसलात 77:13,14,37, नबा 78:1से5, नाज़िआत 79:6से9,41से43, अबस 80:33 से42, तकवीर 81:1से14, इन्फितार 82:1 से19, इन्शिक़ाक़ 84:1से6, फजर 89:21से23, ज़िलज़ाल 99:1से8, क़ारिआ 101:1से11,

अख्लाक़ - निसा 4:7,16,43,44, आराफ 7:56, हिज्र 15:88, नहल 16:125,126, बनी इस्राईल 17:26से29,35से38,53, हज 22:30, मोमिनून 23:96, नूर 24:22,58, फुरक़ान 25:63, नमल 27:89,92, क़सस 28:55, अनकबूत 29:46, रूम 30:43,44, लुक्मान 31: 18,19,

अहज़ाब 33:21,49, हा मीम सज्दा 41:33से36, जुखरूफ 43:89, हुजरात 49:11, 12, नहल 16:32से50,

अख़्लाक़े नब्वी - आलेइमरान 3:159, तौबा 9:28,29, बनीइस्राईल 17:31से33, कहफ 18: 23,24, ताहा 20:131, शोअरा 26:215, अहक़ाफ 46:15, मुजादला 58:11, तगाबुन 64:16, क़लम 68:1से4, मआरिज 70:32से35, मुदस्सिर 74:3से 7, नाज़िआत 70:40,41, बलद 90:12से17, शम्स 91:9, ज़िलज़ाल 99:7,8,

असहाबे उखदूद - बुरूज 85:4से9,

असहाबे कहफ - 18:9से26,

असहाबे यमीन व शिमाल - वाक़िया 56:27 से46, हाक्क़ा 69:25से37, मुदस्सिर 74:38से48, बलद 90:17से20,

अफवाह - निसा 4:83, हुजरात 49:6,

अमानत - बकरा 2:283, आलेइमरान 3:75, निसा 4:58,

अम्रबिल मारूफ व नही अनल मुन्कर - आलेइमरान 3:104,110, आराफ 7:199, तौबा 9:67,71, हज 22:41, लुक्मान 31:17,

अमन व सलामती - निसा 4:83, मायदा 5:15,16, अनआम 6:81,82,127, अनफाल 8:61, नूर 24:55, फुरक़ान 25:63,

अन्सारे मदीना - अनफाल 8:72,74, तौबा 9:100,117, हशर 59:9,

अँधेरा - बकरा 2:17,19,257, मायदा 5:16, अनआम 6:1,63,97,122, रअद 13:16, इब्राहीम 14:1,5, अम्बिया 21:87, नमल 27:63, अहज़ाब 33:43, फातिर 35:19,20, जुमर 39:6, हदीद 57:9, तलाक़ 65:11,

अहले बैत - अहज़ाब 33:31,32,33,34,

अहले किताब - बकरा 2:109, आलेइमरान 3:64,65,113,114, निसा 4:47, मायदा 5:68,

अय्युब अलै. - निसा 4:163, अनआम 6: 84, अम्बिया 21:83,84, साद 38:41,42,43, 44,

अदावत (दुश्मनी) - मायदा 5:8,14,64, 82,91, हा मीम सज्दा 41:34,35, मुम्तहना 60:4,

अद्ल व इन्साफ - निसा 4:58,59,65,105, 106,107, मायदा 5:8,42, अनआम 6:152, हुजरात 49:9,

अज़ाबे इलाही - अनआम 6:46,47, यूनुस 10:50से54, हूद 11:8,102, इब्राहीम 14:44, नहल 16:45,46,47, बनीइस्राईल 17:16, 58, अनकबूत 29:53,54,55, सज्दा 32:20,21,

अज़ाबे क़ब्र - मोमिन 40:45,46,

अर्श - यूनुस 10:3, हूद 11:7, मोमिनून 23:86,87,116, जुमर 39:75, मोमिन 40:7,

हाक्का 69:17, बुरूज 85:15,

अरफात - बकरा 2:198,

अफू इलाही - बकरा 2:225, अनआम 6:54, नहल 16:110,119,

अफू दरगुज़र - आलेइमरान 3:134,159, निसा 4:149, नहल 16:126, नूर 24:22, शूरा 42:36,37,40,

अक्ल - बकरा 2:197 आलेइमरान 3:190, रअद 13:4, जुमर 39::9,

अमल - आलेइमरान 3:188, निसा 4:122से 124,173, नहल 16:97, कहफ 18:30,103, 105, क़सस 28:84, अनकबूत 29:7,

अहद की पाबंदी - बकरा 2:40, मायदा 5:1, नहल 16:90,19, बनीइस्राईल 17:34,

अहसान - बकरा 2:83,195, आलेइमरान 3:172, अराफ 7:156, तौबा 9:100,120, यूनुस 10:26, नहल 16:90, इसरा 17::7,

अहसान जतलाना - बकरा 2:262,264, हुजरात 49:17, मुद्दस्सिर 74:6,

अय्यामुल्लाह (अल्लाह के दिन) - इब्राहीम 14:5, हज 22:47, मआरिज 70:4,

आ

आदमी नबी नहीं हो सकता, काफिर और मुश्रिक का अक़ीदा है - अनआम 6:111, बनीइस्राईल 17:94, 95, मोमिनून 23:23, 24, 33, 34, 47, फुरक़ान 25:7, शोअरा 26:154, 186,

आज़माईश - बकरा 2:152-155,214, आलेइमरान 3:186, मायदा 5:96, अनआम 6:165, अनफाल 8:28, कहफ 18:7, अम्बिया 21:35, अनकबूत 29:2,3 मुल्क 67:1,3, फजर 89:15,16,

आसारे क़दीमा (पुरानी निशानियां) - आले इमरान 3:137, अनआम 6:11, रूम 30:40,

आखिरत - आलेइमरान 3:14,15, निसा 4:134, आराफ 7:169, हूद 11:15,16, यूसुफ 12:109, रअद 13:22से26, इब्राहीम 14:27, नहल 16:29,107,109, बनीइस्राईल 17:10,18से 21, हज 22:15, नूर 24:19, फुरक़ान 25:17, नमल 27:2से5, अनकबूत 29:24, रूम 30:7,16, 43,44, अहज़ाब 33:21,29,57, मोमिन 40:39, शूरा 42:20 से 36, जुखरूफ 43:32,35, मुहम्मद 47:36, हदीद 57:20, क़ियामा 75:20,21, दहर 76:26, आला 87:16,17, जुहा93:4,

आदाब - बकरा 2:83,128, निसा 4:56, नहल 16:125, बनीइस्राईल 17:53, नूर 24:27से 31,62, लुक्मान 31:17,19,

आदाबे कुरआन - बकरा 2:2,23,24,185, निसा 4:82, आराफ 7:204, यूनुस10:37,38, नहल 16:98, बनीइस्राईल 17:88,89, अहज़ाब 33:72 यासीन 36:1से6, जुमर 39:23,27,28, हा मीम सज्दा 41:1 से4,44, शूरा 42:7, जुखरूफ 43:1से4, तूर 52:33,34, हशर 59:11, दहर

76:23, बुरूज 85:22,26,

आदाबे गुफ्तगू - बकरा 2:83, लुक्मान 31:19, मुजादला 58:9,

आदाबे मजलिस - नूर 24:27, मुजादला 58:11,

आदम अलै. - बकरा 30से38, आलेइमरान 3:33से59, मायदा 5:27,आराफ 7:10 से24, 176, हिज्र 15: 26,28,29,30,31, बनीइस्राईल 17:61,70, ताहा 20:115से117,120से123, साद 38:71,73,74,76,

आज़ान - जुमा 62:9,

आज़र - अनआम 6:47,

आसमान - बकरा 2:29, आलेइमरान 3:5, मायदा 5:98, अनआम 6:79,101, आराफ 7: 29,158, तौबा 9:116, हूद 11:52, रअद 13:2, इब्राहीम 14:2,10,49, बनीइस्राईल 17:44, हज 22:65, रूम 30:25,26, जुमर 39:67, हुजरात 49:16,18, रहमान 55:37, मुल्क 67:3से5,

आसमानी किताबें - मायदा 5:41,47,49, तौबा 9:111, अम्बिया 21:105, आला 87:18,19,

आराफ - आराफ 7:44,45,46,47,48,49,

आमाल का वज़न - आराफ 7:8,9, मोमिनून 23:102,से104, क़ारिआ 101:6से11,

आग - बकरा 2:17,39,80,126,167,174,201,217,257,266, 275, आलेइमरान 3:24, 103,116,183,185,192, निसा 4:10,14,30, 56, मायदा 5:29,37,64,72, अनआम 6:27,129, आराफ 7:12,44,50, तौबा 9:17,63,68,81,109, यूनुस 10:8,27, हूद 11:16,17,113, रअद 13:5,17,35, इब्राहीम 14:30, हिज्र 15:27, नहल 16:7,8, कहफ 18:29,53,96, अम्बिया 21:39,69, हज 22: 19,72, मोमिनून 23:104, नूर 24:35,57, नमल 27:7,90, क़सस 28:39, अनकबूत 29: 24, सज्दा 32:20, सबा 34:42, फातिर 35:36, साफ्फात 37:80, साद 38:27, 59,61,64,76, जुमर 39:8,16,19, मोमिन 40:6,41,43,46,47, 72, हा मीम सज्दा 41:16,24, 28,40, जासिया 45:34, अहक़ाफ 46:20,30, मुहम्मद 47:12, ज़ारियात 51:13, तूर 52:13, क़मर 54:48, रहमान 55:15,35, वाक़िया 56:71से73, हदीद 57:15, मुजादला 58:17, हशर 59:3,7,20, तगाबुन 64:10, तहरीम 66:6,10, नूह 71:25, जिन्न 72:23, मुदस्सिर 74:31, बुरूज 85:5, आला 87:12, गाशिया 88:4, बलद 90:20, लैल 92:14, बय्यना 98:6, क़ारिआ 101:11, हुमज़ा 104:6, तब्बत 111:3,

आईमा ए कुफ्र - बकरा 2:250,251, अनआम 6:74, यूनुस 10: 83,88से92, क़सस 28:38से41,76से82, अनकबूत 29:39, तब्बत 111:1से5,

आयाते इलाही - बकरा 2:164, आलेइमरान 3:190, यूनुस 10:101, यूसुफ 12:105, बनी इस्राईल 17:12,59, ताहा 20:128, नूर 24:42, 43,45,46, शोअरा 26:7,8, अनकबूत 29:19,

20,23,44, रूम 30:8,19,20,25,37, सबा 34: 9, यासीन 36:37,41,46,77,81, लुक्मान 31: 20,29,30, मोमिन 40:79,81, हा मीम सज्दा 41:37, 38,39,53, शूरा 42:29, जासिया 45:3,5, क़ाफ 50:6,11,37, ज़ारियात 51:20से 22, मुल्क 67:19, नूह 71:15, क़ियामा 75:7से 10, मुरसलात 77:20,23,25,26, नबा 78:6से 16, नाज़िआत 79:27,

आजिज़ी व इन्किसारी - बनीइस्राईल 17: 37,38, फुरक़ान 25:63, लुक्मान 31:18,19,

आद - आराफ 7:24,65 हूद 11:59,60, इब्राहीम 14:6, हज 22:42, शोअरा 26:123, अनबूत 29:38, साद 38:12, मोमिन 40:31, हा मीम सज्दा 41:13,15, अहक़ाफ 46:21, क़ाफ 50:13, ज़ारियात 51:41, नज्म 53:50, क़मर 54:18, हाक्क़ा 69:4,6, फजर 89:6,

इ

इब्राहीम अलै. - बकरा 2:124से133,135,136, 140,258,260, आलेइमरान 3:65,68,84,95, 97, निसा 4:53,163, अनआम 6:74- 84,161, तौबा 9:114, हूद 11:69,71,74से76, इब्राहीम 14:35,37, हिज्र 15:51,53, नहल 16:120, 121,123, मरयम 19:41,42 से44, 46से48, अम्बिया 21:52,60,62,66,69,71,72, हज्ज 22:26,27, 43, शोअरा 26:70 से74, अनकबूत 29:16,17, 31, साफ्फात 37:84से86,97, 99,100से109,104,109,112, शूरा 42:13, जुखरूफ 43:26,27, ज़ारियात 51:24, मुम्तहना 60:4,6,

इब्लिस - बकरा 2:34,208,268, निसा 4: 38,76, मायदा 5:09,91, अनआम 6:43,121, आराफ 8:11,20से22,27,30, नहल 16:98से100, बनीइस्राईल 17:27,61से65, फातिर 35:6, साद 38:74से85, जुखरूफ 43:36, मुजादला 58:19,

इत्तेफाक़ - बकरा 2:213, आलेइमरान 3:19,103, अनआम 6:153,159, तौबा 9:107, यूनुस 10:19, शुरा 42:13, हुजरात 49:9,10, बय्यन 98:4,

इसाले सवाब के अक़ीदा का रद्द - बकरा 2:38,39,110,134, 141,254,272,281,286, आलेइमरान 3:25, 30, 185, अनआम 6:164, आराफ 7:147, यूनुस 10:30, 41, 52, इब्राहीम 14:31, बनीइस्राईल 17:15, नमल 27:90, अनकबूत 29:2 रूम 30:44, 45, लुक्मान 31:12 फातिर 35:18, यासिन 36:54, 69, 70, सफ्फात 37:39, जुमर 39:70, सज्दा 41:46, जाशिया 45:15, अहकाफ 46:19, तूर 52:16, ज़िलज़ाल 99:6 से 8 तक,

इत्तेबा सुन्नत - आलेइमरान 3:31,32, निसा 4:64,65, आराफ 7:158, अनफाल 8:24, नूर 24:51,52,54, अहज़ाब 33:21,36, हशर 59:7,

इत्तेहाद - बकरा 2:213, आलेइमरान 3:19,103, अनआम 6:153,159, तौबा 9:107, यूनुस 10:19, शुरा 42:13, हुजरात 49:9,10, बय्यन 98,

इदरीस अलै. - मरयम 19:56,57, अम्बिया 21:85,86,

इस्तआनत (मदद, दुआ) - फातिहा 1:1से4, बकरा 2:45,46,153,

इस्तक़ामत - आलेइमरान 3:101,103,173, 200, निसा 4:175, तौबा 9:8, यूनुस 10:89, हूद 11:112, हा मीम सज्दा 41:6,30से32, शूरा 42:15, जुखरूफ 43:43, दुखान 44:59, अहक़ाफ 46:13,14,35, तूर 52:48,49, क़लम 68:48, मआरिज 70:5, जिन्न 72:16, मुजम्मिल 73:10,11, तकवीर 81:27,28,

इस्हाक़ अलै. - बकरा 2:133,136से140, आलेइमरान 3:84, निसा 4:162, अनआम 6:74, हूद 11:69,73, यूसुफ 12:6,35, इब्राहीम 14:39, मरयम 19:49, अम्बिया 21:72, अनकबूत 29:27, साफ्फात 37:112,113, साद 38:45,

इस्लाम - आलेइमरान 3:19, मायदा 5:3, अनआम 6:126, जुमर 39:22, हुजरात 49:17,

इस्माईल अलै. - बकरा 2:125से127,133से 136,140, आलेइमरान 3:84, निसा 4:163, अनआम 6:84,86, हूद 11:71, यूसुफ 12:6,38, इब्राहीम 14:39, मरयम 19:49,54, अम्बिया 21:72,85, अनकबूत 29:27, साफ्फात 37:101, 112,113, साद 38:48,

इताअते अमीर - निसा 4:59,

इफ्तिरा - अनआम 6:21,93,145, आराफ 7:37, यूनुस 10:69, हूद 11:18, नहल 16:105, 116,117, ताहा 20:61, शूरा 42:24,

इफक - नूर 24:11से18,

इक्तिदार : बकरा 2:247, आलेइमरान 3:26, हज 22:41, नूर 24:55,

इलहाद - जाशिया 45:23,24,

इलाह (पूज्य) - बकरा 2:133,163,255, आलेइमरान 3:2,6,18,62, निसा 4:87,171, मायदा 5:73, अनआम 6:19,102,106, आराफ 7: 65,73,85,158, तौबा 9:31,129, हूद 11:14, रअद 13:30, इब्राहीम 14:52, नहल 16:2,22,51, बनीइस्राईल 17:22,39, कहफ 18:110, ताहा 20:8,14, 98, अम्बिया 21:25,87,108, हज 22:34, मोमिनून 23:23, 32,91,116, शोअरा 26:213, नमल 27:26,60 से64, क़सस 28:70से72,88, अनकबूत 29:46, फातिर 35:3, साफ्फात 37:4, साद 38:65, जुमर 39:6, मोमिन 40:62,65, हा मीम सज्दा 41:6, जुखरूफ 43:84, दुखान 44:8, मुहम्मद 47:19, क़ाफ 50:26, ज़ारियात 51:51, तूर 52:43, हशर 59:22,23, तगाबुन 64:13, मुजम्मिल 73:9, नास 114:1से3,

इल्ज़ाम तराशी - मुहम्मद 47:33, फतह 48:17, मुजादला 58:13, तगाबुन 64:12,

इलहामी किताबें - मायदा 5:44,47,49, तौबा 9:111, आला 87:18,19,

इलियास अलै. - अनआम 6:85, साफ्फात 37:123से132,

इमाम - बकरा 2:283, बनीइस्राईल 17:71, 72, फुरक़ान 25:74,76,

इमसाले कुरआनी (कुरआनी मिसालें) - बकरा 2:17से20, 26,264से266, आलेइमरान 3: 117, आराफ 7:175,176, यूनुस 10:24, रअद 13:17, इब्राहीम 14:18,45, नहल 16:75,76, 112, कहफ 16:45, हज 22:73, नूर 24:35,39, 40, अनकबूत 29:41, फतह 48:29, हदीद 57:20, हशर 59:1516,21, जुमा 62:5,

इन्तिक़ाम - बकरा 2:194, हज 22:60,

इन्जील - आलेइमरान 3:3,4,65, मायदा 5:46,47,65,66,68,

इन्सान - निसा4:28, यूनुस 10:12, हूद 11:9,10, इब्राहीम 14:34, बनीइस्राईल 17:83, 100,111, कहु 18:84, जुमर 39:49, नज्म 53:24,25,39, मआरिज 70:19, क़ियामा 75:3 से5, दहर 76:1,2,3, इन्फितार 82:6,7,8, बलद 90:5, तीन 95:6, अलक़ 96:5से8, अस्र 103:1,23,

इन्सान खलीफतुल्लाह है - बकरा 2:30, अनआम 6:165, नूर 24:55, नहल 16,62, फातिर 35:39

इन्साफे इलाही का ऊसूल - बकरा 2:284, 286, निसा 4:110, 111,131,133, नहल 16: 33,34, अम्बिया 21:35, फातिर 35:18, अहक़ाफ 46:19, नज्म 53:31,38,39,

इन्क़िलाब - आलेइमरान 3:133,140,141, रअद 13:11,

इफाए अहद - बकरा 2:40,80,82, मायदा 5:1, बनीइस्राईल 17:34,

इबादत - बकरा 2:21, आराफ 7:206, हिज्र 15:99, मरयम 19:65, यासीन 36:60,61, जुमर 39:11,14, मोमिन 40:60, ज़ारियात 51:56,

इबरत - नहल 16:66, मोमिन 40:21, नूर 24:44,

इज्ज़ व इन्किसार - बनीइस्राईल 17:37, फुरक़ान 25:63, लुक्मान 31:18,19,

इद्दत - बकरा 2:228,231,234,235, अहज़ाब 33:49, तलाक़ 65:2,4,6,

इज्ज़त व दोलत - आलेइमरान 3:26,27, कहफ 18:46, क़सस 28:76से82, सबा 34:34से 37, मुनाफिक़ून 63:7से9, तकासूर 102:1 से8, हुमज़ा 104:1से9,

इज्ज़त व ज़िल्लत - आलेइमरान 3:26,27, निसा 4:137,139, यूनुस 10:26,27, फातिर 35:10,

इफ्फत व असमत - मोमिनून 23:5,6, नूर 24:30,31,33,

इल्म - बनीइस्राईल 17:85, सबा 34:6, फातिर 35:28, जुमर 39:9, मुजादला 58:11, अलक़ 96:1से5,

इल्मे गैब - आलेइमरान 3:179, अनआम 6:59, यूनुस 10:20, नहल 16:77, नमल 27:65, लुक्मान 31:34, फातिर 35:38, जिन्न 72:26,27,

ई

ईमान - बकरा 2:25,99,108,177, आले इमरान 3:86, 106,167,173,193, निसा 4:25, मायदा 5:5,72, अनआम 6:158, तौबा 9:23,43,44, रअद 13:16, नहल 16:106, मोमिन 40:84,85, शूरा 42:2, हुजरात 49:7,8,11,14,17,18, हदीद 57:9से28, मुजादला 58:22,57, हशर 59:9,10, सफ्फ 61:8, तगाबुन 64:8, तहरीम 66:8,

ईमान वालों कि सिफत (गुण) -

1) अल्लाह और रसूल की इताअत करने वाले - आलेइमरान 3:172, निसा 4:69,80, अनफाल 8:1, तौबा 9:71, नूर 24:51,52, अहज़ाब 33:71, फतह 48:17,

2) अल्लाह का हुक्म क़बूल करने वाले - रअद 13:18, शूरा 42:38, आलेइमरान 3:17,

3) अल्लाह की बन्दगी / रूजू करने वाले / वालियां - अहज़ाब 33:35, जुमर 39:9, तहरीम 66:5,

4) अल्लाह से डरने वाले - रअद 13:21, ताहा 20:3, मोमिनून 23:57, नूर 24:52, बय्यना 98:8,

5) अल्लाह के सिवा किसी नहीं डरने वाले - तौबा 9:18, अहज़ाब 33:39,

6) अल्लाह से बिन देखे डरने वाले - मायदा 5:94, अम्बिया 21:49, फातिर 35:18 यासीन 36:11, क़ाफ 50:33, मुल्क 67:12,

7) अल्लाह के सामने खड़े होने से डरने वाले - इब्राहीम 14:14, रहमान 55:46,

8) अपने नफ्स की ख्वाहिश को रोकने वाले - नाज़िआत 79:40,

9) अल्लाह के अज़ाब से डरने वाला - मआरिज 70:27,

10) उनके दिल अल्लाह के पास लोट कर जाने से डरने वाले है - मोमिनून 23:60

11) अल्लाह का ज़िक्र आने से उनके दिल डर जाते है - अनफाल 8:2, हज 22:35, जुमर 39:23,

12) आखिरत से डरने वाले - अम्बिया 21:49, जुमर 39:9,

13) आखिरत के अज़ाब से डरने वाला - हूद 11:103,

14) आखिरत के दिन से डरने वाला - नूर 24:37, दहर 76:7,10,

15) अल्लाह को कसरत से याद करने वाले - अनआम 6:52, शोअरा 26:277, अहज़ाब 33:21,35,

16) अल्लाह का फज्ल व खुशनूदी ढुढने वाले - फतह 48:29,

17) रात सज्दे व क़याम में गुजारने वाले - फुरक़ान 25:64,

18) अल्लाह के ज़िक्र के लिए बिस्तर से अलग रहने वाले और कम सोने वाले - सज्दा

32:16, जुमर 39:9, ज़ारियात 51:17,

19) अल्लाह की किताब की आयतों की तिलावत करने वाले - फातिर 35:29,

20) अल्लाह की किताब की आयतों की तिलावत सुन कर उनका ईमान बढ़ता है - अनफाल 8:2, तौबा 9:124,

21) अल्लाह की आयतें सुन कर रोते हुए सज्दे में गिर जाते है - बनीइस्राईल 17:107,109, मरयम 19:58, सज्दा 32:15,

22) नमाज क़ायम करने वाले, ज़कात देने वाले - बकरा 23,177, निसा 4:164, मायदा 5:55, अनफाल 8:3, तौबा 9:18,71, रअद 13:22, इब्राहीम 14:31, हज 22:35,41, नूर 24:37, नमल 27:3, लुक्मान 31:4, फातिर 35:29, शूरा 42:38, मआरिज 70:23, मुजम्मिल 17:20, नबा 98:5,

23) नमाज़ वक्त पर पढ़ने वाले - नि‍ा 4:103,

24) नमाज़ खुशू से पढ़ने वाले - बकरा 2:177, आलेइमरान 3:17,134, क़सस 28:54, मोमिनून 23:2, अहज़ाब 33:35, हदीद 57:18, मआरिज 70:34,

25) ज़कात देने वाले - आराफ 7:156, तौबा 23:4,

26) तौबा करने वाले - तौबा 9:112, हूद 11:3, मरयम 19:60, नूर 24:31, फुरक़ान 25:71, अहक़ाफ 46:15, हुजरात 49:11, तहरीम 66:4,5,8,

27) अल्लाह पर भरोसा करने वाले - आलेइमरान 3:122,159, अनफाल 8:2, तौबा 9:129, इब्राहीम 14:11 नहल 16:42,99, फुरक़ान 25:58, अनकबूत 29:59, शूरा 42:36, तलाक़ 65:3,

28) सब्र करने वाले - बकरा 2:153,155, 177, आलेइमरान 3:17,200, हूद 11:11, रअद 13:22, नहल 16:42,126,127, मोमिनून 23: 111, फुरक़ान 25:75, क़सस 28:54, अनकबूत 29:59, अहज़ाब 33:35, जुमर 39:10, शूरा 42:43, मुहम्मद 47:31,

29) इस्तिग्फार करने वाले (माफी मांगने वाले) - बकरा 2:286, आलेइमरान 3:16,17, 135,147,193, आराफ 7:23, हूद 11:52, मोमिनून 23:109,118, ज़ारियात 51:17,18, हशर 59:10, मुम्तहना 60:5, नस्र 110:3,

30) खड़े बेठे और लेटे हर हाल में अल्लाह का ज़िक्र करने वाले - आलेइमरान 3:191, निसा 4:103,

31) अल्लाह का ज़िक्र करने वाले - बकरा 2:152, आलेइमरान 3:135, मायदा 5:7,11, आराफ 7:205, अनफाल 8:45, रअद 13:28, ताहा 20:34, हज 22:35, नूर 24:36, शोअरा 26:227, अहज़ाब 33:20,38,41, फातिर 35:3, जुमा 62:10, मुज़म्मिल 73:8, आला 87:15,

32) हिजरत करने वाले - बकरा 2:218, अनफाल 8:72,74,75, तौबा 9:20,

33) जिहाद करने वाले - निसा 4:95, मायदा 5:54, तौबा 9:41,88, हुजरात 49:15, सफ्फ 61:11,

34) मारूफ का हुक्म देने वाले और मुन्कर से रोकने वाले - आलेइमरान 3:104,110,114, आराफ 7:157, तौबा 9:71,112, हज 22:2,41,

35) माफ करने वाले - आलेइमरान 3:134, आराफ 7:199, नूर 24:22, तगाबुन 64:14,

36) अल्लाह के अहद की हिफाजत करने वाले - मोमिनून 23:8, मआरिज 70:32,

37) अल्लाह के अहद को पूरा करने वाले - मोमिनून 23:8,

38) तकलीफ पहुचने पर जायज बदला लेने वाले - शोअरा 26:227, शूरा 42:39,

39) बुराई को नेकी से दूर करने वाले / बुराई के बदले नेकी करने वाले - रअद 13:22, हा मीम सज्दा 41:34,

40) मशवरे से काम करने वाले - शूरा 42:38,

41) रिश्तो को जोड़ने वाले - रअद 13:21,

42) जमीन पर नरम चाल चलने वाले - फुरक़ान 25:63,

43) जाहिल गंवार किस्म के लोगों से दूर रहने वाले - आराफ 7:199, फुरक़ान 25:63, क़सस 28:55,

44) बेकार बातों से परेहज़ करने वाले - मोमिनून 23:3, फुरक़ान 25:72, क़सस 28:55,

45) नज्रों को पूरा करने वाले - दहर 76:7,

46) हक़, सब्र और नेकी की दअवत देने वाले - बलद 90:17, नस्र 103:3,

47) नेकीयों की तरफ लपकने वाले - आलेइमरान 3:114, मोमिनून 23:61, मआरिज 70:29,

48) शर्मगाहों की हिफाज़त करने वाले - मोमिनून 23:5, मआरिज 70:29,

49) शिर्क से बचने वाले - फुरक़ान 25:68, मोमिनून 23:59,

50) मोमिनो पर नर्म और काफिरों पर सख्त - मायदा 5:54, फतह 48:29,

51) भाईचारे से रहने वाले है - तौबा 9:11, अहज़ाब 33:5, हुजरात 49:10,

52) चेहरे पर सज्दों के निशान वाले - फतह 48:29,

53) अल्लाह से राजी रहने वाले - बय्यना 98:8,

ईसा अलै. - बकरा 2:87,136,253, आले इमरान 3:42से55, 59,84,58से63, निसा 4:155से159,163,171से173, मायदा 5:46, 72से75,78,110,112से118, अनआम 6:85, तौबा 9:30, मरयम 19:16से36,88से95, अम्बिया 21:89से91, अहज़ाब 33:7, शूरा 42:13, जुखरूफ 43:63, हदीद 57:27 सफ 61:6,14,

उ

उख्वत - बकरा 2:220, आलेइमरान 3:103, तौबा 9:11, अहज़ाब 33:55, हुजरात 49:10,

उम्मत - बकरा 2:143,213, आलेइमरान 3:104,110, मायदा 5:48,66, अनआम 6:108, आराफ 7:34, यूनुस 10:47, नहल 16:120, 121, अम्बिया 21:92,93, हज 22:34, नमल 27:83,84, फातिर 35:24,

उम्मते मुस्लिमा - बकरा 2:28, यूनुस 10: 72, हज 22:78,

उम्महातुल मोमिनीन रज़ि. - अहज़ाब 33:6, 28से34,37,53,59, तहरीम 66:1,3से5,

उज़ैर अलै. - तौबा 9:30,

उशर - बकरा 2:267, अनआम 6:141,

उमरा - बकरा 2:158,196, आलेइमरान 3:96,97 हज 22:26से29,

ऊ

ऊसूले हुकरानी - निसा 4:58,59, हज 22:41,

ए

एहसान - बकरा 2:195, आराफ 7:56, तौबा 9:120, यूनुस 10:26, नहल 16:90, इसरा 17:7, नज्म 53:31, रहमान 55:60,61,

एहसान जताना - बकरा 2:262-264, हुजरात 49:17, मुदस्सिर 74:6,

एहराम - बकरा 2:196197, मायदा 5:1,2,

एतकाफ - बकरा 2:125,187,

ऐ

ऐब जोई - बनीइस्राईल 17:36से38, नूर 24:11, जासिया 45:33, हुजरात 49:11,12, हुमज़ा 104:1से9,

ऐ ईमान लाने वालों - बकरा 2:104,135, 172,178,183,208, 227,254,264,278,282, आलेइमरान 3:103,100,118,130,149, 156, 200, निसा 4:19,29,43,59,71, 94,135,136, 144, मायदा 5:1,2,6,8,11,35,51,54,57,87, 90,94,95,101,105,106, अनफाल 8:12,15,20,27,29, 45,24, तौबा 9:23,28,34,38,119, हज 22:77, नूर 24:21, 27,58, अहज़ाब 33:9,41,49,53,69,70, मुहम्मद 47:7, 33, हुजरात 49:1,2,6,11,12, हदीद 57:27, मुजादला 58:9, 11, मुम्तहना 60:1,13,10, हशर 59:17, सफ 61:2,10,14, जुमा 62:9, मुनाफिकून 63:9, तगाबुन 64:14, तहरीम 66:6,8,

ऐ इन्सानों (ऐ लोगों) - बकरा 2:21,168, निसा 4:1,169,174, यूनुस 10:57, हज 22:1, 5, लुक्मान 31:33, फातिर 35:3,15, हुजरात 49:13,

औ

औलाद - बकरा 2:233, आलेइमरान 3:10, निसा 4:11, अनआम 6:140,151, तौबा 9:55, बनीइसराईल 17:31, सबा 34:37, मुजादला 58:17, मुनाफिकून 63:9, तगाबुन 64:14,15,

औलिया अल्लाह - यूनुस 10:62से64, जुमा 62:6,7,

औहामे जाहलियत - बकरा 2:189, निसा 4:117से120, मायदा 5:103,104, अनआम 6:136से140,

औरत - बकरा 2:223,282, आलेइमरान 3:195, निसा 4:1,34, 128,129, तौबा 9:72, नहल 16:97, रूम 30:21, फतह 48:6,

औरत का हक़े तलाक़ - बकरा 2:229, निसा 4:19,20,21, 128,

औरत से हुस्ने सुलूक - निसा 4:19,

क

कलचर - शोअरा 26:128से135,146से150, क़सस 28:58,59,

क़ब्र - हज 22:7, अबस 80:17से22, इन्फितार 82:1से5, तकासुर 102:1,2,

क़यामत के अहवाल - बकरा 2:48,113, 166,167,254,281, आलेइमरान 3:9,25,30, 106,107, निसा 4:87, मायदा 5:109,119, अनआम 6:12,22,31,51,128, आराफ 7:8,9,187, तौबा 9:106, यूनुस 10:23,28,45, 70, हूद 11:102,103, रअद 13:5, इब्राहीम 14:21,23, हिज्र 15:85, नहल 16:20,27,77, 111, इसरा 17:49-52, कहफ 18:47,53, 99-101, मरयम 19:75, ताहा 20:105-112, अम्बिया 21:1,2,47,97,104, हज्ज 22:1,2, 7, मोमिनून 23:101, नूर 24:24,25, फुरक़ान 25:17,18, नमल 27:82,83, क़सस 28:62-67, 75, अनकबूत 29:13, लुक्मान 31:33,34, सज्दा 32:25, अहज़ाब 33:63,68, सबा 34:3,29,33, 42, यासिन 36:65,

क़त्ल - बकरा 2:178,217, निसा 4:92,93, मायदा 5:32,33, बनीइस्राईल 17:33, फुरक़ान 25:68,

क़त्ले औलाद - अनआम 6:151, बनी इस्राईल 17:31, तकवीर 81:8,9,

क़र्ज़ - बकरा 2:245,282,283, निसा 4: 11, तौबा 9:60, तगाबुन 64:17,

क़सम उठाना - बकरा 2:224,225, आले इमरान 3:77, मायदा 5:89, अनआम 6:16, तौबा 9:12,13, नहल 16:38, नूर 24:53, नमल 16:38, तहरीम 2:66, क़लम 68:10,

क़िसास (खून का बदला) - बकरा 2:178,179,194, निसा 4:92,93, मायदा 5:45, नहल 16:126, हज 22:10,

क़ज़ा व क़द्र - निसा 4:78,79, अनआम 6:96, फुरक़ान 25:2, सज्दा 32:13, क़मर 54: 49,50, तलाक़ 65:2,3, आला 87:11,

क़ल्ब (दिल) - बकरा 2:6,7, अनफाल 8:2, 24, रअद 13:28, नहल 16:78, बनीइस्राईल 17:36, हज 22:46, अहज़ाब 33:4,5, तगाबुन 64:11,

क़लम - क़लम 68:1, अलक़ 96:1से5,

क़नाअत - आलेइमरान 3:122,159,173, निसा 4:81, मायदा 5:12, अनफाल 8:2,49,61, तौबा 9:51,129, यूनुस 10:71, हूद 11:123 रअद 13:30, इब्राहीम 14:11,12, नहल 16:42, फुरक़ान 25:58, शोअरा 26:217, नमल 27:79, अहज़ाब 33:3,48, जुमर 39:38, शूरा 42:10, 36, मुजादला 58:10, तगाबुन 64:13, तलाक़ 65:3, मुल्क 67:29, मुजम्मिल 73:9,

कव्वा - मायदा 5:31,

कसब व इख्तियार - निसा 4:111,112, मायदा 5:105, यूनुस 10:4,108, हूद 11:101, रअद 13:11, बनीइस्राईल 17:15,84, कहफ 18:57, मोमिनून 23:61, अनकबूत 29:6, फातिर 35:18, हा मीम सज्दा 41:46, जासिया 45:15, अहक़ाफ 46:19, नज्म 53:31, मुल्क 67:1,2, मुदस्सिर 74:38, बलद 90:10, लैल 92:12,13,

काबा - बकरा 2:125,127, आलेइमरान 3:96,97, मायदा 5:97, हज 22:26,

कामयाब लोग - हज 22:77, मोमिनून 23:1से11, अहज़ाब 33:70,71, जुमा 62:10,

कायनात - बकरा 2:19,22,29,30,164, आलेइमरान 3:190, निसा 4:126, अनआम 6:38, यूनुस 10:3,5,6, नबीइस्राईल 17:4, मोमिनून 23:17,18,84,87, हा मीम सज्दा 41:9 से12, तलाक़ 65:12, मुल्क 67:1से5, नूह 71:14,

क़ारून - क़सस 28:76से82,

क़ानूने शहादत - बकरा 2:140,143,283, निसा 4:15, मायदा 5:8,106से108, बनीइस्राईल 17:96, नूर 24:4,6से9, तलाक़ 65:2,

क़ानूने मीरास - निसा 4:11,12,19,33, 176, अनफाल 8:75,

क़ानून निकाह व तलाक़ - बकरा 2:221,226,232,236,237, निसा 4:22से24, मायदा 5:5 नूर 24:3,32,33, अहज़ाब 33:37,49, मुजादला 58:3,4, तलाक़ 65:1से7,

कामयाब होने वालों की निशानियां - अनआम 6:82, अनफाल 8:2 से 4 तक, तौबा 9:18

क़ायनात को पैदा करने का मक़सद और तमाम अम्बिया की दअवत - अनआम 6:74, आराफ 7:65, 73, 85, हूद 11:50, इब्राहीम 14:4, हिज्र 15:26, 27, अम्बिया 21:16, मोमिनून 23:23, अनकबूत 29:16, जुमर 39:65, ज़ारियात 51:56, दहर 76:2,

काफिरों की पैरवी - हूद 11:113, फुरक़ान 25:52, क़सस 28:86,87, अहज़ाब 33:48, जासिया 45:18,19, दहर 76:24,

काफिरों की सरकशी - निसा 4:151, अनफाल 8:31,35, रअद 13:7, बनीइस्राईल 17:90से96,

अम्बिया 21:37से40, फुरक़ान 25:20से23, नमल 27:71,72, अनकबूत 29:12,13,53से55, जुखरूफ 43:30से32,

क़िब्ला - बकरा 2:142से145, यूनुस10:87,

कितमाने हक़ - बकरा 2:42,140,159,174,

किरामन कातिबीन - अनआम 6:16, जुखरूफ 43:80, क़ाफ 50:16,17,18, इन्फितार 82:10,11,12, तारिक़ 86:12,3,4,

किन औरतों से निकाह जाइज़ नहीं - बकरा 2:221, निसा 4:22,24, नूर 24:3,

किन औरतों से निकाह जाईज़ है - मायदा 5:5,

कुरआन - बकरा 2:1,2,23,159, निसा 4:82, आराफ 7:204, यूनुस 10,15,37,38, नहल 16:98, बनीइस्राईल 17:88,89, अहज़ाब 33:72, साद 38:8, जुमर 39:23,27,28, हा मीम सज्दा 41:1से4,44, शूरा 42:7, जुखरूफ 43:2से4, दुखान 44:2,3, तूर 53:33,34, नज्म 53:4, वाक़िया 56:77,81, मुहम्मद 57:24, हशर 59:21, हाक्क़ा 60:40,48, जिन्न 72:1,2, दहर 76:23, अबस 80:12से14, बुरूज 85:21,22, क़द्र 97:1,

कुरआनी आयात मालूम हो जाने के बाद भी न मानने वालो कों हिदायत (मार्ग-दर्शन) कभी नहीं मिल सकती अल्लाह मालिक इस जुर्मे अज़ीम की सज़ा देने के लिए उनसे हिदायत (मार्ग-दर्शन) को तौफिक़ खत्म कर देता है - बकरा 2:79, 174, अनआम 6:21, 22, तौबा 9:34, यूनुस 10:95, कहफ 18:57, 105, जाशिया 45:8, 23,

कुरआन मजीद शक से बिल्कुल पाक है, और क़ाबिले ग़ौर, आसान, मुकम्मिल और वाज़ेह है - बकरा 2:2, 159, अनआम 6:125, 126, आराफ 7:2, 3, 52, अनफाल 8:2, यूनुस 10:37, 38, हूद 11:1, फुरक़ान 25:50, साद 38:1, 29, क़मर 54: 17, 22, 32, 40, जाशिया 69:40 से 47 तक,

कुरआन और जदीद ज़हन के शुब्हात - बकरा 2:189, 190,256,275, आलेइमरान 3:7, निसा 4:1,38,24,32,65,75,94 से97, मायदा 5:3,44, तौबा 0:60, नहल 16570,71, अम्बिया 21: 63, नूर 24:33, यासीन 36:38,

कुरआन और साईंस - बकरा 2:124,164, अनआम 6:95से101, आराफ 7:54, यूनुस 10: 31, रअद 13:2,3,4,12,13, नहल 16:65, 66,67,68,69, अम्बिया 21:30से33, 104, मोमिनून 23:12से21, नूर 24:40,43,44,45, शोअरा 26: 7,8, नमल 27:88, अनकबूत 29:19,20, लुक्मान 31:10, यासीन 36:36से40, हा मीम सज्दा 415 9से12,53, ज़ारियात 51:21,38, हाक्क़ा 69,13से20, क़ियामा 75:7से13, इन्फितार 82:1से6, तारिक़ 86:5,8,

कुरआन का एजाज़ - बकरा 2:23,24, यूनुस 10:37,38, बनीइस्राईल 17:88, तूर 52:33,34,

कुरआन में शक करने वालों को चेलेन्ज - बकरा 2:23,24, यूनुस 10:37,38, हूद 11:13, बनीइस्राईल 17:88, तूर 52:33,34,

कुरआन की पेशनगाईयां - तौबा 9:31, नहल 16:41, नूर 24:55, क़सस 28:85, रूम 30:1से6, फतह 48:27, क़मर 54:43, 44,45,

कुरआनी दुआएं - फातिहा 1:4से7, बकरा 2:128,129, 250,285,286, आलेइमरान 3:8, 9,16,26,27,38,53,173, 191से194, निसा 4: 75, आराफ 7:23,47,89,126,151,155,156, यूनुस 10:85,86,88, हूद 11:47, यूसुफ 12:101, इब्राहीम 14:38,40,41, बनीइस्राईल 17:24,80, कहफ 18:10, मरयम 19:4,6, ताहा 20:25से29, 114, अम्बिया 21:83,87,89, मोमिनून 23:29,93, 94,97,98,116,118, फुरक़ान 25:74, शोअरा 26:83,89, नमल 27:27, क़सस 28:16,21,24, मोमिन 40:7से9, 27, अहक़ाफ 46:15, हश्र 59:10, मुम्तहना 60:4,5, तहरीम 66:8,11, नूह 71:28, फलक़ 113:1से5, नास 114:1से6,

कुरआन ख्वानी का सवाब मुरदों को नहीं पहुँचता अपने ही आमाल का सवाब मिलता है हर इन्सान को - बकरा 2:62, 82,110,112, 134,139,141,185,202,277, आलेइमरान 3:16, 17,30, 57,136,161,195, निसा 4:57, 111,122,124, 173, मायदा 5:9,69, अनआम 6:127,132, 158,160,164, आराफ 7:42,43, यूनुस 10:4, 9,41, हूद 11:7,11,23,111, रअद 13:29, इब्राहीम 14:23,51,52, नहल 16:32,96,97, 111, बनीइस्राईल 17:7,9, कहफ 18:2,7,30, 88,107, मरयम 19:60,96, ताहा 20:15,75, 82,112,113, अम्बिया 21:47,94, हज 22:14, 23,50,56, फुरक़ान 25:70, नमल 27:19,89, क़सस 28:67,80,84, अनकबूत 29:7,9,58, रूम 30:15,44, लुक्मान 31:16, सज्दा 32:17, 19, अहज़ाब 33:31, सबा 34:4,33,37, फातिर 35:10,18,29,30, यासिन 36:12,54, जुमर 39:10,70, मोमिन 40:40, फुस्सिलत 41:46, शूरा 42:7,26,72, जासिया 45:15,28,30, अहक़ाफ 46:19, तूर 52:19,21, नज्म 53:31, मुजादला 58:6, तगाबुन 64:9, तलाक़ 65:11, मुल्क 67:2, मुदस्सिर 74:38, क़ियामा 75:13, इन्सान 76:22, मुरसलात 77:43,44, इन्फितार 82:5, मुतफफिफन 83:36, इनिशक़ाक़ 84:25, बुरूज 85:11, फजर 89:24, तीन 95:6, ज़िलज़ाल 99:7, क़ारिया 101:6,

कुरबानी - बकरा 2:196, आलेइमरान 3: 183, मायदा 5:2,27, 97, हज 22:36,37, अहक़ाफ 46:28, फतह 48:25, कोसर 108:2,

कुरैश - क़मर 54:43से46, कुरैश 106:1से4,

कुफ्फार से जंग - बकरा 2:190से193,244, निसा 4:76,84, 95,96, अनफाल 8:15,16,38से 40,57,60,61,62,65,66, तौबा 9: 123, मुहम्मद 47:4, सफ्फ 61:4,

कुफ्फार व मुश्रिकीन - बकरा 2:6,7,105, 161,162,166, 167,212,257, आलेइमरान 3:

10,176से178, मायदा 5:36,37, आराफ 7:40, अनफाल 8:55, तौबा 9:123, रअद 13:1से5, हिज्र 15:2,3, नहल 16:84से86, बनीइस्राईल 17:49से51, मरयम 19:83,84, नूर 24:39, अरकबूत 29:12,13, फातिर 35:37, हा मीम सज्दा 41:26से28,

कुफ्र - बकरा 2:108,109, आलेइमरान 3: 176,177 निसा 4: 136,137, तौबा 9:23, नहल 16:106,107, जुमर 39:7,8,

कुफ्र और अहले कुफ्र से दोस्ती हराम है - आलेइमरान 3:68, निसा 4:144, मायदा 5:51,81, तौबा 9:23, हूद 11:113, मुम्तहिना 60:1,9,13,

कुफ्र और अहले कुफ्र से दोस्ती की चन्द अलामतें - आले इमरान 3:118से120, तौबा 9:113, ताहा 20:131 फुरक़ान 25:72,

कुफ्फार से दोस्ती का अन्जाम - आलेइमरान 3:28,100, निसा 4:138,139, मायदा 5:80, मुजादला 58:14,15,

केलेन्डर - बकरा 2:189, अनआम 6:96,97, तौबा 9:36,37, यूनुस 10:5,

कोड़ों की सज़ा - नूर 24:2,3,4,

कौमों का ज़िक्र - बकरा 2:74, हूद 11:59, 60, बनीइस्राईल 17:59, अम्बिया 21:96,97, दुखान 44:37, क़ाफ 50:14, कुरैश 106:1से4,

क़ौमों का उरूज व ज़वाल - आलेइमरान 3:14,141, अनआम 6:133, अनफाल 8:53, रअद 13:11, क़सस 28:58, रूम 30:9,10, मोमिन 24:82,

ख

खरीद फरोख्त - बकरा 275से282, इब्राहीम 14:31, नूर 24:37, जुमा 62:9,

खबीस व तय्यब - बकरा 2:267, आले इमरान 3:179, निसा 4:2, मायदा 5:100, नूर 24:26,

खमस - अनफाल 8:41,

ख्वाब देखना - बनीइस्राईल 17:60, यूसुफ 12:4से6,43से 49,100, साफ्फात 37:102से105, फतह 48:27,

ख्वातीन - आलेइमरान 3:35,37,42,43,45, निसा 4:156,171, मायदा 5:11,112,114,116, मरयम 19:16,29, तहरीम 66:12,

ख्वाहिश परस्ती - आलेइमरान 3:14, निसा 4:27,135, मायदा 5:49,77, अनआम 6:56,119,120,150,151, मरयम 19:59, मोमिनून 23:71, फुरक़ान 25:43,44, रूम 30:29, शूरा 42:15, मुहम्मद 47:16, क़मर 54:3,

ख्यानत - निसा 4:105,107, मायदा 5:13, अनफाल 8:27,58, 71, यूसुफ 12:52,

खादिम (नौकर) - निसा 4:36, नूर 24:31,

खाविन्द और उसके हुकूक़ - बकरा 2:215, निसा 4:36, अनआम 6:151, अनफाल 8:41से 75 रअद 13:23,38,39 नहल 16:90, बनीइस्राईल 17:23,25,26, फुरक़ान 25:54, अनकबूत 29:8, लुक्मान 31:14, अहज़ाब 33:4से6, मोमिन 40:8, शूरा 42:23, अहक़ाफ 46:15,18, तूर 52:21, मुजादला 58:2, तगाबुन 64:14,15,

खानदानी मनसूबा बन्दी - अनआम 6:151, बनीइस्राईल 17:31,

खात्मे नबुव्वत - आलेइमरान 3:85, मायदा 3:5, अहज़ाब 33:40, सबा 34:28,

खिज्र - कहफ 18:60से83,

खिलाफत - बकरा 2:30, अनआम 6:165, नूर 24:55, नमल 27:62, फातिर 35:39,

खुलअ - बकरा 2:229,

खुदकशी - निसा 4:29,

खूशबू - रहमान 55:12,

खैरात - बकरा 2:195,219,215,254,261,262,265,267,272,274, आलेइमरान 3:92,134, अनफाल 8:60, रअद 13:22, नहल 16:75, सबा 34:39, फातिर 35:29,30, हदीद 57:7,

खैर व शर - बकरा 2:44,148,177,189, आलेइमरान 3:92,134, निसा 4:36, मायदा 5:2, नहल 16:90, हा मिम सज्दा 41:46,

ग

गफलत - आराफ 7:179, यूनुस 10:78,92, अम्बिया 21:1से3,

गज़वात - आलेइमरान 3:121से127,155से 157,165से167, 173,174, अनफाल 8:5से19, 41से48, तौबा 9:25,26,38से46, 81,117से121 अहज़ाब 33:9से13,25से27,

गदागिरी - बकरा 2:177,262,273, ज़ारियात 51:9 जुहा 93:10,

गाली गलोच - अनआम 6:108, तौबा 9:79, हुजरात 49:11, हुमजा 104:5,

गीबत - हुजरात 49:12,

गिरवी - बकरा 2:283,

गुमराह बद्दीन लोग का जवाब कि हम बाप दादा की पैरवी करेंगे हर दौर में रहा है - बकरा 2:170, मायदा 5:104, आराफ 7:70, हूद 11:87, यूसुफ 12:40, इब्राहीम 14:10, शोअरा 26:71 से 81 तक,

गुरूर - निसा 4:36,172,173, नहल 16:22, 23,29, क़सस 28:83, लुक्मान 31:18,19, मोमिन 40:27,60,

गुस्ल - निसा 4:43

गुस्सा - आलेइमरान 3:133,134, शूरा 42:37,

गुलामी - निसा 4:92, तौबा 9:60, नूर 24:33, मुजादला 3:58,

गौरो फिक्र - आले इमरान 3:190,191, रअद 13:3, नहल 16:11,44, रूम 30:8, हशर 59:21,

गैब - आलेइमरान 3:179, अनआम 6:59, यूनुस 10:20, नहल 16:77, नमल 27:65, लुक्मान 31:34, फातिर 35:38, जिन्न 72:26,27,

गैरूल्लाह की नज़र व नियाज़ हराम है - बकरा 2:173, मायदा 5:3, नहल 16:115,

गैरूल्लाह से दुआ मांगना शिर्क - निसा 4: 117, अनआम 6:71, आराफ 7:37,134, रअद 13:14, नहल 16:21,22, हज 22:12,13, क़सस 28:87,88, अनकबूत 29:42, अहक़ाफ 46:5, जिन्न 72:18,

गैरूल्लाह से रोज़ी मांगना मना है - यूनुस 10:30, अनकबूत 29:17, सबा 34:24, फातिर 35:1, जुमर 39:52, शूरा 42:12, ज़ारियात 51:4, मुल्क 68:21,

गैरूल्लाह से डरना मना है - बकरा 2:40, 41,50, मायदा 5:3,44, नहल 16:51,52,

गुनाह - निसा 4:31, अनआम 6:120, हज 22:31,32,

गुनाह कबीरा - निसा 4:31, हज 22:31, 32, शूरा 42:36,37,

घ

घर - आलेइमरान 3:93, नहल 16:80, नूर 24:27से29 अनकबूत 29:41,

घाटे / खसारे / नुक्सान में रहने वालें - बकरा 2:27,64, आलेइमरान 3:85,149, निसा 4:19 मायदा 5:5, अनमाम 6:31,140, आराफ 7:23,99,178, अनफाल 8:37, तौबा 9:69, यूनुस 10:45,95, हूद 11:47, नहल 16:108,109, हज 22:11, अनकबूत 29:52, जुमर 39:15,63,65, मोमिन 40:78,85, हा मीम सज्दा 41:23,25, शूरा 42:45 अहक़ाफ 46:18, मुजादला 58:19, मुनाफिकून 63:9,

च

चाँद - अनआम 6:96, आराफ 7:54, यूनुस 10:5, रअद 13:2 हज 22:18, यासीन 36: 39,40,

चोरी - मायदा 5:38,39, मुमत्हना 60:12,

चींटी - नमल 27:17से19

ज

जन्नत - बकरा 2:25, आलेइमरान 3:133, 142, आराफ 7:40 हिज्र 15:45से48, कहफ 18:30,31,107, रहमान 55:46से48,54,62, वाकि़या 56:12से40,89,

जंगबन्दी - बकरा 2:190से193, निसा 4:90, अनफाल 8:61, हुजरात 49:9,10,

जब्र व इख्तियार - अनफाल 8:17, इब्राहीम 14:4, नहल 16:37, हज 22:5,6,

जद्दो जेहद - बनीइस्राईल 17:19, कहफ 18:103,104, अम्बिया 21:94, नज्म 53:39 से41,

जंगी कै़दी - बकरा 2:84,85, अनफाल 8:67, मुहम्मद 47:4,

जज़ा - बकरा 2:25, अनआम 6:106, अनकबूत 29:58,59, सबा 34:37,38,

जज़िया - तौबा 9:29,

जवानी - हज 22:5, अहक़ाफ 46:15,

जहालत - आराफ 7:199, हूद 11:46, नहल 16:119, फुरक़ान 25:63, हुजरात 49:6,

जहन्नम - बकरा 2:24, आलेइमरान 3:12,106,131, निसा 4:56, अनआम 6:27, आराफ 7:38,41,50,179, अनफाल 8:14,36, 37, तौबा9:34,35,81, यूनुस 10:27, इब्राहीम 14:16,17, हिज्र 15:43,44, मरयम 19:68से72, ताहा 20:74, अम्बिया 21:98से100, हज 22:19 से22, मोमिनून 23:103,104, फूरक़ान 25:11से 13,65,66, सज्दा 32:13,20, फातिर 35:36, 37, यासीन 36:63, जुमर 39:16,24,25,47,48, 60,71,72, शूरा 42:44,45, मुहम्मद 47:15, क़ाफ 50:30, तूर 52:13,16, रहमान 55:43, 44, तहरीम 66:6, मुल्क 67:6से11, मआरिज 70:11, मुज़म्मिल 73:12,13, दहर 76:4, नबा 78:21से26, नाज़ियात 79:36, आला 87:12, 13, लैल 92:14,17, क़ारिआ 101:9,11, तकासुर 102:4,7, तब्बत 11:3,

ज़बूर - निसा 4:163, बनीइस्राईल 17:55, अम्बिया 21:105,

ज़राअत (खेतीबाड़ी) - अनआम 6:141, रअद 13:4, नहल 16:10,11, शोअरा 26:146, 148, सज्दा 32:27, जुमर 39:21, वाकि़आ 56:63,65,

ज़रपरस्ती - तौबा 9:34,35, हुमज़ा 104:1 से9,

ज़करिया अलै. - आलेइमरान 3:37से41, अनआम 6:37 से 41,85,86,89, मरयम 19:1से 11, अम्बिया 21:89,90,

ज़कात - बकरा 2:43,83,110,177,277, निसा 4:77,162, आराफ 7:156, तौबा 9:18,60, हज 22:41, मोमिनून 23:1से4, नूर 24:56, रूम 30:39, अहज़ाब 33:33, हा मीम सज्दा 41:7, मुजादला 56:13, मुज़म्मिल 73:20, बय्यिना 98:5,

ज़मीन - बकरा 2:22, यूनुस 10:3, आराफ 7:59, रअद 13:3,4, हिज्र 15:19, नहल 16:36, मरयम 19:40, ताआ 20:53से55, अम्बिया 21:16से20,30,31, नूर 24:55, शोअरा 26:7, नमल 27:60, क़सस 28:39 रूम 30:25, सज्दा 32:27, फातिर 35:41, यासीन 36:36 मोमिन 40:82, हा मीम सज्दा 41:39, जुखरूफ 43:10, फतह 48:14, क़ाफ 50:7, ज़ारियात

51:48, रहमान 55:10से13, मुज़म्मिल 73:20,

ज़ब्तेविलादत - अनआम 16:15, बनी इस्राईल 17:31, तकवीर 91:9,10,

ज़मीर - यूसुफ 12:53, क़ियामा 75:1,2, फजर 89:27से30, शम्स 91:7से10,

ज़न - अनआम 6:116,148, यूनुस 10:36 हुजरात 49:12,

जादू - बकरा 2:102, यूनुस 10:76से 81, ताहा 20:57, फील 113:1से5,

जालूत - बकरा 2:250,251,

जानवर - आलेइमरान 3:14, मायदा 5:1, 103, अनआम 6:139,140,146, नहल 16:5,7, 66, हज 22:34,36, नूर 24:45, फातिर 35:28, यासीन 36:71से73,

जुर्म व सज़ा - अनआम 6:124,147, यूनुस 10:17, इब्राहीम 14:49,50, मरयम 19:85,86, ताहा 20:74, सज्दा 32:12, रहमान 55:41, मुतफ़िफ़फ़ीन 83:1से9,

जुमा - जुमा 62:9,10,

जुलक़रनैन - कहफ 18:83से98,

जुलकिफ्ल अलै. - अम्बिया 21:85, साद 38:48,

जुआ - बकरा 2:219, मायदा 5:90,91,

जुल्म - निसा 4:148, शूरा 42:41, ज़ारियात 51:59,

जुल्मात - बकरा 2:257, अनआम 6:1,63, 97,122, नूर 24:40,

जुहद - बकरा 2:207, निसा 4:66,68, सफ्फ 61:10से13,

जूदी - हूद 11:44,

जिन्न - अनआम 6:112,128, हिज्र 15:26, 27, बनीइस्राईल 17:88, नमल 27:39, सबा 34:12,14, ज़ारियात 51:56, रहमान 55:33,

जिलावतनी - बकरा 2:85,191, इब्राहीम 14:13,14, हज 22:39,40, हशर 59:2,3,8

जिहाद - हज 22:78, अनकबूत 29:6,69, मुहम्मद 31:47, तहरीम 66:9,

ज़िब्ह - अनआम 6:118,119,121,

ज़िक्रे इलाही - बकरा 2:152,203, आले इमरान 3:191, निसा 4:102, आराफ 7:205, रअद 13:28, कहफ 18:24, शोअरा 26:227, अनकबूत 29:45, अहज़ाब 33:21,35,41,42, हदीद 57,16, जुमा 62:9,10, मुनाफिकून 63:9, दहर 76:25,26, मुज़म्मिल 73:8, आला 87:14, 15,

ज़िना - बनीइस्राईल 17:32, नूर 24:2,3, फुरक़ान 25:68, मुम्तहना 60:12,

ज़िन्दगी क्या है? - अनआम 6:32, यूनुस 10:24, हूद 11: 15,16, कहफ 18:45, अनकबूत 29:64, हदीद 57:20, यूनुस 71: 17,18,

ज़िहार - मुजादला 58:2 से4,

जैबोज़ीनत (बनावसिंगार) - आराफ 7:31, 32, कहफ 18:28, 46, नूर 24:60,

ज़ेवर - रअद 13:17, नहल 16:14, कहफ 18:31,31, हज 22: 23, फातिर 35:12,33 जुखरूफ 43:16से18, दहर 76:21,

झ

झाड़ फूंक - क़ियामा 75:26,27,30,

झूठ - हज 22:30, जुमर 39:3, मोमिन 40:28,

ट

टेक्स -जज़िया :-तौबा 9:29, ज़कातः-बकरा 2:43,83,110,177,277, निसा 4:77,162, आराफ 7:156, तौबा 9:18,60, हज 22:41, मोमिनून 23:1से4, नूर 24:56, रूम 30:39, अहज़ाब 33:33, हा मीम सज्दा 41:7, मुजादला 56:13, मुज़म्मिल 73:20, बय्यिना 98:5, खमसः-अनफाल 8:41,

ड

डकेती - मायदा 5:33,38,

त

तब्लीग - आलेइमरान 3:104,110,113, 114, मायदा 5:79,97,99, इब्राहीम 14:4, नहल 16:125, ताहा 20:132 हज 22:67, शोअरा 26:214, अनकबूत 29:46, हा मीम सज्दा 41:33,

तहरीफ (दीन में हेरफेर) - निसा 4:46, मायदा 5:41,

तहवीले क़िब्ला - बकरा 2:144,145, यूनुस 10:87,

तख़्लीक़े इन्सान - निसा 4:1, अनआम 2: 6, हिज्र 15:26, मोमिनून 23:12,14, फुरक़ान 25:54, रूम 30:20, साफ्फात 37:11, जुमर 39:6, मोमिन 40:24,67, हुजरात 49:13, रहमान 55:14, नूह 71:14,17, क़ियामा 75:36 से40, दहर 76:2,3, मुरसलात 77:20से23, तारिक़ 86:5से7,

तख़्लीक़े कायनात - बकरा 2:117, मायदा 5:117, अनआम 6:73,97,98,102,134,142, 143, आराफ 7:54,57, यूनुस 10:3,5,6, हूद 11:7 रअद 13:2,316, इब्राहीम 14:19,20,32, 33, हिज्र 15:16,23,85,86, नहल 16:3,10,17, 80, ताहा 20:53,55, अम्बिया 21:16,30,33, मोमिनून 23:78,80, नूर 24:45, फुरक़ान 25:47, 49,59,62, क़सस 28:60,73, अनकबूत 29:44,60,61,63, रूम 30:11,19,27,48,50, लुक्मान 31:10, सज्दा 32:4, यासीन 36:11,73, 79, साद 38:27, जुमर 39:4,5,62, मोमिन 40:61,62,64, हा मीम सज्दा 41:9से12, शूरा 42:11, दुखान 44:38,39, अहक़ाफ 46:3,4,32, क़ाफ 50:6,8,38, ज़ारियात 51:47से49,56,

हदीद 57:52,4, तलाक़ 65:12, मुल्क 67:1से4, 14,15, नूह 71:14,16, नाज़िआत 79:27से33, आला 87:2,5,

तदब्बुर - आलेइमरान 3:190,191, रहद 13:3, नहल 16:11,44, रूम 30:8, हश्र 59:21,

तरका (विरासत) - निसा 4:11,12,19,33, 176, अनफाल 8:75,

तज़किया नफ्स - निसा 4:49, फातिर 35:18, जुमा 62:2, शम्स 91:7से10,

तस्बीह - आलेइमरान 3:191, मायदा 5: 116, हिज्र 15:98, बनीइस्राईल 17:43,44, ताहा 20:130, अम्बिया 21:87, अहज़ाब 33: 41,42, यासीन 36:36,37, साफ्फात 37:180, मोमिन 40:7, ज़ुखरूफ 43:12,13, क़ाफ 50: 39,40, हदीद 57:1, जुमा 62:1,

तस्खीरे कायनात - इब्राहीम 14:32से34, नहल 16:10से18, हज 22:65, लुक्मान 31:20, जासिया 45:12,13,

तगय्युर व तबद्दुल - बकरा 2:164, आले इमरान 3:190, यूनुस 10:6, रूम 30:22,

तफरक़ा - आलेइमरान 3:105, अनआम 6:159, रूम 30:30-32, शूरा 42:13,

तक़दीर - निसा 4:78,79, अनआम 6:96, आराफ 7:178, यूनुस 10:5, हिज्र 15:60, फुरक़ान 25:2, सज्दा 32:13 यासीन 36:28,29, 38, हा मीम सज्दा 41:10से12, क़मर 54:49,50, वाक़िआ 58:60, तलाक़ 65:2,3, दहर 76:16, मुरसलात 77:21से23, अबस 80:19, आला 87: 1से3,

तक़्वा - बकरा 2:2,5,177,179,180,189, 179, मायदा 5:3, 7,88, आराफ 7:26, अनफाल 8:69, तौबा 9:18,108,109, ताहा 20:132, हज 22:32,37, फुरक़ान 25:74, क़सस 28:83, रूम 30:31, अहज़ाब 33:35, जुमर 39:33, मुहम्मद 47:17, फतह 48:26, हुजरात 49:1,3, मुजादला 58:9, मुदस्सिर 74:56, शम्स 91:8, अलक़ 96:11,12,

तवकुल - आलेइमरान 3:122,159,173, निसा 4:81, मायदा 5:12, अनफाल 8:2,49,61, तौबा 9:51,129, यूनुस 10:71, हूद 11:123 रअद 13:30, इब्राहीम 14:11,12, नहल 16:42, फुरक़ान 25:58, शोअरा 26:217, नमल 27:79, अहज़ाब 33:3,48, जुमर 39:38, शूरा 42:10, 36, मुजादला 58:10, तगाबुन 64:13, तलाक़ 65:3, मुल्क 67:29, मुजम्मिल 73:9,

तहज्जुद - बनीइस्राईल 17:78,79, मुजम्मिल 73:1से8,20,

तक़वीम - बकरा 2:189, अनआम 6:96, तौबा 9:36,37, यूनुस 10:5,

तकब्बुर - निसा 4:36,173, अनआम 6:94, 96, आराफ 7:88,146, अनफाल 8:47, नहल 16:22,23,29, बनीइस्राईल 17:37, अम्बिया 21:19, मोमिनून 23:45,46, क़सस 28:39,38, 83, लुक्मान 31:18,19, सज्दा 32:15,16, फातिर 35:42,43, जुमर 39:59,60, मोमिन 40:27,35,60,75, हा मीम सज्दा 41:37,38, जासिया 45:31,32, अहक़ाफ 46:20, हदीद

57:23,24, मुनाफिकून 63:5, मुरसलात 77:48, इन्शिक़ाक़ 84:21,22,

तमसखुर (मज़ाक) - अनआम 6:10, तौबा 9:79, हूद 11:38, मोमिनून 23:110, साफ्फात 37:12,14, साद 38:63, जुखरूफ 43:32 हुजरात 49:11,

तम्बीह - बकरा 2:6,119,213, मायदा 5:21, अनआम 6:18,92, आराफ 7:1, तौबा 9:122, यूनुस 10:2, इब्राहीम 14:44, नहल 16:2, बनीइस्राईल 17:105, कहफ 18:2,4, मरयम 19:39,98, हज 22:1,2,49, फुरक़ान 25:1, शोअरा 26:214, क़सस 28:41, लुक्मान 31:33, सबा 34:34, यासीन 36:10,11, मुदस्सिर 74:1,2, तकासूर 102:1,6,

तयम्मुम - निसा 4:43, मायदा 5:6,

तागूत -

1) तागूत के साथ कुफ्र का हुक्म दिया गया है - निसा 4:60,

2) तागूत के साथ कुफ्र पहले है और अल्लाह पर ईमान बाद में - बकरा 2:257,

3) तमाम अम्बिया तागूत के साथ कुफ्र की दअवत ले कर मबऊस हुए - नहल 16:36

4) काफिरों के दोस्त तागूत हैं - बकरा 2: 257,

5) काफिर तागूत की राह में लड़ते हैं - निसा 4:76,

6) साबिक़ा क़ौमों की हलाकत का सबब भी तागूत की इबादत था - मायदा 5:60,

7) तागूत से बचने वालों के लिए खूशखबरी - जुमर 39:17,

तारीकी (अन्धेरा) - बकरा 2:257, अनआम 6:1,63,97,122, नूर 24:40

तालीम - तौबा 9:122, अलक़ 96:1से5,

तादादे अज़्वाज (बीवियों की तादाद) - निसा 4:3,129,

तिलावत - बकरा 2:121, आलेइमरान 3:164, आराफ 7:204, अनफाल 8:2, नहल 16:98, फातिर 35:29,30,

तिजारत - बकरा 2:16,198, निसा 4:29, तौबा 9:24,111,112, इब्राहीम 14:31, नूर 24:37, फातिर 35:29,30 जुमा 63:9से11,

तुब्बा - दुखान 4:37, क़ाफ 50:14,

तौबा - बकरा 2:36,37,54,128,159, 160,222,229, आलेइमरान 3:89,99,133, 136,138, निसा 4:26,27,31,106,145, 146, मायदा 5:34,39,71, अनआम 6:54, आराफ 7:143,153, अनफाल 8:33,38, तौबा 9:3,5, 11,15,27,47,102,104,106,126, हूद 11:3, 52,61,90,112, रअद 13:30, नहल 16:119, बनीइस्राईल 17:25, मरयम 19:59,60, ताहा 20:82,122, नूर 24:4,5,10,31, फुरक़ान 25: 68से71, क़सस 28:27, रूम 30:31, अहज़ाब 33:24, 73, जुमर 39:54, मोमिन 40:3,7,55, शूरा 42:25,26, अहक़ाफ 46:15, मुहम्मद 47:19, हुजरात 49:11,12,

ज़ारियात 51:18, मुजादला 58:13, मुनाफिकून 63:5,6, तहरीम 66:4,8, नूह 71:10, बुरूज 85:10, नस्र 110:3,

तौहीद - बकरा 2:22,116,163, आले इमरान 3:6,18, निसा 4:48,87,116,117,171, मायदा 5:17,72,73,76, अनआम 6:19, 22,23, 56,88,89,100,102,103,107,108, आराफ 7:138,140,158, तौबा 9:30,31,129, यूसुफ 12:39,40, रअद 13:16,30, नहल 16: 22,57,72,73, बनीइस्राईल 17:17:22,23,39,42,43, 111, कहफ 18:14,15, मरयम 19:35,36,88 से93, ताहा 20:14,98, अम्बिया 21:24,26,29,108, हज 22:31,34, फुरक़ान 25:2,68, शोअरा 26:213, नमल 27:26,61से64, क़सस 28:68,70,72, रूम 30:40, फातिर 35:3, यासीन 36:23,47,74, साफ्फात 37:4,151, 152, 158,160, साद 36:66, जुमर 39:4,6,38, मोमिन 40:3,12,16,62,65, हा मीम सज्दा 41:6,9, दुखान 44:8, क़ाफ 50:26, ज़ारियात 51:51, हशर 59:22से24, तगाबुन 64:13, जिन्न 72:2,3,18,20, मुजम्मिल 73:9,

तौरात - बकरा 2:53,87, आलेइमरान 3:3, 50, मायदा 5:46, 98,110, अनआम 6:91,155, हूद 11:110, बनी इस्राईल 17:2, अम्बिया 21:48, सज्दा 32:23, मोमिन 40:53, हा मीम सज्दा 41:45, अहक़ाफ 46:12, फतह 48:29, नज्म 53:36,

तोहमत - निसा 4:111,112, नूर 24:46, 11,12,16,23, फुरक़ान 25:4, अनकबूत 29:12 से16, अहज़ाब 33:58, सबा 34:43, साफ्फात 37:151, अहक़ाफ 46:22,46, हुजरात 49:6, मुमतहना 60:12, क़लम 68:10से16,

द

दरख्त - नहल 16:10,11,60, वाक़िया 56: 71-74,

दरूद व सलाम - अहज़ाब 33:56,

दरिया और नहरों का ज़िक्र - बकरा 2:74, आराफ 7:136,137, रअद 13:3, नहल 16:14,63, ताहा 20:39,77, नूर 24:40, फुरक़ान 25:53, क़सस 28:40, फातिर 35:12, शुरा 40:32, दुखान 44:24, रहमान 55:19-25,50,

दयानत - बकरा 2:283, आलेइमरान 3:75, निसा 4:58,

दानाई - बकरा 2:231,269, आलेइमरान 3:164, निसा 4:113, नहल 16:125, लुक्मान 31:12, अहज़ाब 33:34, साद 38:20, क़मर 54:5,

दाऊद अलै. - बकरा 2:251, निसा 4: 123,162, मायदा 5:78, अनआम 6:83से90, बनीइस्राईल 17:55, अम्बिया 21:78से80, नमल 27:15,16, सबा 34:10से14, साद 38:17से26, 30,

दियत - बकरा 2:178, निसा 4:92,

दीन - बकरा 2:120,130,135,136,217, आलेइमरान 3:19,83,95, निसा 4:125,146से

171, मायदा 5:3,54,57,77, अनआम 6:7, 137,159,161, आराफ 7:29,51,88,89, अनफाल 8:39,49,72, तौबा 9:11,12,33,36, 122, यूनुस 10:22,104,105, यूसुफ 12:37,38, 40, इब्राहीम 14:13, नहल 16:123, कहफ 18:20, हज 22:78, नूर 24:2,25,55, अनकबूत 29:65, रूम 30:30से32, लुक्मान 31:32, अहज़ाब 33:5, साद 38:7, जुमर 39:2,3,11, 14, मोमिन 40:14,26,65, शूरा 42:8,9,13,21, मुमतहना 60:8,9, नबा 98:5,

दीन फरोशी - बकरा 2:16,41,79,86,174, 175,256, आलेइमरान 3:77,187,193, निसा 4:44, मायदा 5:44, तौबा 9:9नहल 16:95,

दीन में जबरदस्ती नही - यूनुस 10:99,100,

दीन में फिरक़ा बन्दी - आलेइमरान 3:105, अनआम 6:159, रूम 30:30से32, शूरा 42:13,

दीन में आसानी है - बकरा 2:185, निसा 4:28, मायदा 5:6, तौबा 9:91, हज 22:78, नूर 24:58,61,

दुर्रे मारना - नूर 24:2,4,

दुआ -

रसूलों की दुआएं

आदम अलै. की दुआ - आराफ 7:23,

अय्युब अलै. की दुआ - अम्बिया 21:83, साद38:41,

इब्राहीम अलै. की दुआएं - बकरा 2:126, 127,128,129, इब्राहीम 14:35,37,38, शोअरा 26:83,84,85,86,87,88,89, मुम्तहना 60:4,5,

ईसा अलै. की दुआ - मायदा 5:114,

ज़करिया अलै. की दुआएं - आलेइमरान 3:38, मरयम 19:5,6, अम्बिया 21:89,

नूह अलै. की दुआएं - हूद 11:45,47, मोमिनून 23:26,29, शोअरा 26:117,118, क़मर 45:10, नूह 71:26,27,28,

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआएं - ताहा 20:114, अम्बिया21:112, मोमिनून 23:118,

मूसा अलै. की दुआएं - आराफ 7:151,155, 156, यूनुस 10:88,

यूसुफ अलै. की दुआ - यूसुफ 12:101,

यूनुस अलै. की दुआ - अम्बिया 21:87,

लूत अलै. की दुआएं - शोअरा 26:169, अनकबूत 29:30,

सुलेमान अलै. की दुआएं - नमल 27:19, साद 38:35,

शुऐब अलै. की दुआ - आराफ 7:89,

हूद अलै. की दुआ - 23:39,

अल्लाह की बताई हुई दुआएं मोमिनों के लिए - बकरा 2:201,285,286, आलेइमरान 3:26,27, मोमिनून 23:94,98, जुमर 39:46, अहक़ाफ 46:15

मोमिनों की दुआएं - आलेइमरान 3:16, 147, बनीइस्राईल 17:24, ताहा 20:114, मोमिनून 23:109, फुरक़ान 25:65,66,74, हशर 59:10, तहरीम 66:10,

फरिश्तों की दुआ - मोमिन 40:7,8,9,

इल्मवालों की दुआएं - आलेइमरान 3:8,9,

असहाबे आराफ की दुआ - आराफ 7:47,

शैतान की दुआ - हिज्र 15:36,

असहाबे कहफ की दुआ - कहफ 18:10,

फिरऔन की बीवी की दुआ - तहरीम 66:11,

जालूत की दुआ - बकरा 2:250,

फिरऔन के जादूगरों की दुआ ईमान लाने के बाद - आराफ 7:126,

मूसा अलै. की क़ौम के लोगों की दुआएं - 7:149, यूनुस 10:85,86,

दुनिया व आखिरत - आलेइमरान 3:4,15, निसा 4:134, आराफ 7:169, तौबा 9:38, हूद 11:15,16, यूसुफ 12:109, रअद 13:26, बनीइस्राईल 17:18से21, कहफ 18:46, क़सस 28:60, अनकबूत 29:64, मोमिन 40:39, शूरा 42:20,36, जुखरूफ 43:32,35, मुहम्मद 47:36, क़ियामा 75:20,21, दहर 76:27, आला 87:16,17, जुहा 93:4,

दूध - नहल 16:66,

देहाती - तौबा 9:34, सबा 34:10,12,

देहरियत - जासिया 45:23,24,

दोस्ती और दुश्मनी -

दोस्त - आलेइमरान 3:28,118, निसा 4: 144, मायदा 5:51,55,58, तौबा 9:71, अहज़ाब 33:6, मुमतहना 69:1,7,9,

1) दोस्त की अहमियत - जुखरूफ 43:67,

2) दोस्त का मुस्तहक़ कौन है? - मायदा 5:55से65,

3) अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दोस्ती वाजिब - बकरा 2:165, मायदा 5:93, तौबा 9:24, यूसुफ 12:101, इब्राहीम 14:41, नमल 27:19, सफ्फ 61:4,

4) अल्लाह, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमानों से दोस्ती की चन्द अलामतें

- निसा 4:97से99,141, तौबा 71,72, कहफ 18:28, मुहम्मद 47:19, हुजरात 49:11,12,

5) अल्लाह, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमानों से दोस्ती का इनआम - यूनुस 62,

दुश्मनी - बकरा 2:36,85,193, आलेइमरान 3:103, निसा 4:29,30,91,92, मायदा 5:8,14, 64,82,91, अनआम 6:112, अनफाल 8:60, 61, तौबा 9:83,84,121, कहफ 18:50, ताहा 20:39,80, क़सस 28:28, हा मीम सज्दा 41:34, 35, मुनाफिकून 63:4, तगाबुन 64:14, मुम्तहन 66:4,

दुश्मनी का मुस्तहक़ कौन है? - तौबा 9:114, मुम्तहिना 60:4,9,

ध

धोका - मुतफफ्फीन 83:1से3,

न

नबी का अदब व एहतराम - अनफाल 8: 24, तौबा 9:61, नूर 24:62,63, अहज़ाब 33: 53,56,57, हुजरात 49:1से4, मुजादला 58:12,

नज्र - हज 22:27से29, दहर 76:5से7,

नसर - नूह 71:21से24,

नशा - निसा 4:43, हज 22:1,2,

नसारा - बकरा 2:61,109,111,113,120, आलेइमरान 3:10,64,65,112,113,114, निसा 4:44, मायदा 5:14,18,51,64से68,82,

नज़र बद - यूसुफ 12:67,68, क़लम 68: 51,52,

नफ्स - युसूफ 12:53, क़ियामा 75:1,2, शम्स 91:7से10,

नफ्सानी ख्वाहिशात - आलेइमरान 3:14, निसा 4:27,135, मायदा 5:49,77, अनआम 6:56,119,120,150,151, मरयम 19:59, मोमिनून 23:71, फ़ुरक़ान 25:43,44, रूम 30:29, शूरा 42:15, मुहम्मद 47:16, क़मर 54:3,

नमाज़ - बकरा 2:43,153,238, 239,277, निसा 4:43,101से103, मायदा 5:6, अनआम 6:162, तौबा 9:71, हूद 11:14, इब्राहीम 14:31, बनीइस्राईल 17:78,79,110, ताहा 20:132, नूर 24:56, अनकबूत 29:45, लुक्मान 31:4,5, फातिर 35:29,30, जुमा 62:9,10, मुज़म्मिल 73:20, दहर 76:25,26, आला 87:14,15, माऊन 107:4,5,6,7,

नमूद व नुमाईश - बकरा 2:264, अनफाल 8:47, माऊन 107:4से7,

नाउम्मिदी - यूसुफ 12:87, अनकबूत 29:23, जुमर 39:53,

नापतोल - हूद 11:84से86, बनीइस्राईल 17: 35, अम्बिया 21:47, रहमान 55:7से9,

मुतफफ्फीन 83:1से7,

नासिख मन्सूख - हज 22:52से54,

नाशुक्री - यूनुस 10:12,22,23, हूद 11:8से 10, नहल 16:53 से55, बनीइस्राईल 17:67,83, रूम 30:5,33,34, जुमर 39:7,8,49,53, हा मीम सज्दा 41:49,51,

नाफरमानों की मिसाल - बकरा 2:6,7,18, अनआम 6:26, 39,104,122, अनफाल 8:23, 55, यूनुस 10:42,43, हूद 11:24, रअद 13:19, बनीइस्राईल 17:72, कहफ 18:57, अम्बिया 21:45, फुरक़ान 25:43,44,77, रूम 30:52,53, नमल 27:80,81, लुक्मान 31:7, फातिर 35:19 से22, यासीन 36:59से62, हा मीम सज्दा 41: 44, जुख़रूफ 43:40, मुहम्मद 47:23,24,

नाफरमानी - अनआम 6:146, आराफ 7:33, नहल 16:90, शूरा 42:27, हुजरात 49:9,

नामाए आमाल - बनीइस्राईल 17:13,14, हाक़्क़ा 69:19से29, क़ियामा 75:13, इन्फितार 82:10से12, मुतफफ्फीन 83:7,9,18, इन्शिक़ाक़ 84:7से12, जुलज़िलाल 99:6,7,

निजात - बकरा 2:175,221,268, आले इमरान 3:133,136, 157, मायदा 5:9, निसा 4:96, अनफाल 8:4,74, हूद 11:11, रअद 13:6, हज 22:1,5, नूर 24:26, अहज़ाब 33:35, सबा 34:4, फातिर 35:7, यासीन 36:11, हा मीम सज्दा 41:43, मुहम्मद 47:15, फतह 48:29 हुजरात 49:3, नज्म 53:32, हदीद 57:20,21, मुदस्सिर 74:56,

निकाह - बकरा 2:221, निसा 4:3,19,22 से25, 129,130, मायदा 5:5, नूर 24:3,26,32, 33, मुमतहना 60:10,12, अहज़ाब 33:37,

नींद - फुरक़ान 25:47, रूम 30:23, नबा 78:9से11,

नेक आमाल का बदला - नहल 16:97, ताहा 20:75,76,112, मोमिन 40:40, हदीद 57:28, बय्यना 98:7,8,

नेकी - बकरा 2:44,148,177,189, 261,263, आलेइमरान 3:92,115,134, निसा 4:36,114, मायदा 5:2, आराफ 7:58, यूनुस 10:26, नहल 16:30,90, ताहा 20:12, मोमिनून 23:96, क़सस 28:54, हा मीम सज्दा 41:46, मुजादला 58:79, बय्यना 98:7,8,

नूह अलैहि. - आलेइमरान 3:22, निसा 4: 163, अनआम 6:84, आराफ 7:59,69, तौबा 9:70, यूनुस 10:71, हूद 11:25,26,32, 36,42, 45,46,48,89, इब्राहीम 14:9, बनीइस्राईल 17: 3,17, मरयम 19:58, अम्बिया 21:86, हज 22:42, मोमिनून 23:23, फुरक़ान 25:37, शोअरा 26:105,106,116, अनकबूत 29:14, अहज़ाब 33:7, साफ्फात 37:75,79, साद 38: 12, मोमिन 40:5,31, शूरा 42:13, क़ाफ 50:12, ज़ारियात 51:46, नज्म 53:52, क़मर 54:9, हदीद 57:26, तहरीम 66:10, नूह 71:1,21,26,

नूर - बकरा 2:17,257, निसा 4:174, मायदा 5:15,16,44,46, अनआम 6:1,91, आराफ

7:157, तौबा 9:32, यूनुस 10:5, रअद 13:16, इब्राहीम 14:1,5, नूर 24:35,40, अहज़ाब 33:40, फातिर 35:20 जुमर 39:23,69, शूरा 42:52, हदीद 57:9,12,13,19,28, सफ्फ 61:8, तगाबून 64:8, तलाक़ 65:11, तहरीम 66:8, नूह 71:16,

''नूरममुबीन'' से मुराद किताबे रोशन है। अम्बिया को पूरे कुरआन में कहीं भी नूर नहीं फरमाया अल्लाह ने आसमानी किताबों को नूर फरमाया और अम्बिया को बशर (इन्सान) फरमाया - निसा 4:174, मायदा 5:15, 16, 44, अनआम 6:91, आराफ 7:157, इब्राहीम 14:1 शुरा 42:52, तगाबुन 64:8,

प

परदा - नूर 24:31 अहज़ाब 33: 32,33,59,

परन्दि - बकरा 2:260, आलेइमरान 3:49, मायदा 55:31,110, यूसुफ 12:36,41, नहल 16:79, अम्बिया 21:79, हज 22:31, नूर 24: 41, नमल 27:16,17, फील 105:1से5,

पहाड़ों के नाम - बकरा 2:63,93,158, निसा 4:154, मरयम 19:52, ताहा 20:80, मोमिनून 23:20, नमल 27:88, क़सस 28:29, 46, तूर 52:1, नबा 78:6,7, तीन 95:2, 101:4,5,

प्रतिमा/मुर्ती/पूज्य जानवर

01) अनसाब - मायदा 5:90,

02) बअ्ल - साफ्फात 37:125,

03) बहीरा - मायदा 5:103,

04) हाम - मायदा 5:103,

05) अल्लात - नज्म 53:19,20,

06) मनात - नज्म 53:19,20,

07) नस्र - नूर 71:23,

08) साइबा - मायदा 5:103,

09) सुवाअ - नूह 71:23,

10) वद्द - नूह 71:23,

11) अलउज्ज़ा - नज्म 53:19,20,

12) यगूस - नूह 71:23,

13) यऊक - नूह 71:23,

पाक दामनी - निसा 4:24,25, मायदा 5:5, मोमिनून 23:5से7, नूर 24:20,30,31,33, 60, अहज़ाब 33:53, मआरिज 70:29,31,35,

पानी - बकरा 2:22, मायदा 5:6, अनआम 6:99, आराफ 7:56, यूनुस 10:24, रअद 13:

17, इब्राहीम 14:32, हिज्र 15:22, नहल 16:10,11,65, कहफ 18:29,45, ताहा 20:53, अम्बिया 21:30, नूर 24:45, अनकबूत 29:63, रूम 30:24, लुक्मान 31:10, सज्दा 32:8,27, फातिर 35:27, जुमर 39:21, हा मीम सज्दा 41:9 मुहम्मद 47:15, क़ाफ 50:9, क़मर 54:11, 12,28, वाक़्या 56:68से70, मुल्क 67:30, जिन्न 72:16, मुरसलात 77:27, नबा 78:14, नाज़िआत 79:31 अबस 80:25, तारिक़ 86:6,

पुकार - आलेइमरान 3:193, आराफ 7:44,46,47,50, हूद 11:42,45, मरयम 19:2,3,52, अम्बिया 21: 76,78,89,83, शोअरा 26:10 क़सस 28:46,62,65,74, साफ्फात 37:75,104,105, साद 38:41, हा मीम सज्दा 41:47, जुखरूफ 43:51, हुजरात 49:4, क़लम क़ाफ 50:41, 68:48, नाज़ियात 79:15,16,23,24,

फ

फलों के नाम - बकरा 2:266, अनआम 6: 95,99,141,299, रअद 13:4,14, नहल 16:11, 67,69, बनीइस्राईल 17:91, कहफ 18:32, मरयम 19:25, मोमिनून 23:19,20, नूर 24:35, शोअरा 26:148, यासीन 36:34, क़ाफ 50:10, 11, रहमान 55:11,68, अबस 80:28,19, तीन 95:1से3,

फतह मक्का - फतह 48:1से3, नस्र 110: 1,2,

फख्र व तकब्बुर - निसा 4:36,172,173, अनफाल 8:47, नहल 16:22,23,29, क़सस 28:83, लुक्मान 31:18,19, मोमिन 40:27,60,

फराखी व तंगी - बकरा 2:185, तलाक़ 65:7, शरह 94:5,6,

फरिश्ते - बकरा 2:34,97,98, निसा 4: 136, अनफाल 8:50, हज 22:75, सज्दा 32:11, फातिर 35:1, शूरा 42:5, क़ाफ 50:17,18, तहरीम 66:6, हाक़्क़ा 69:17, क़द्र 97:1से5,

फलाह - बकरा 2:5,186, आलेइमरान 3: 185, निसा 4:13, अनआम 6:10,135, तौबा 9:21,72,100,112, हज 22:77, मोमिनून 23: 1से11, अहज़ाब 33:70,71, फतह 48:5, सफ 61:12, जुमा 62:10, तगाबुन 64:9, लैल 92:5से7,

फलकियात - यूनुस 10:5, हिज्र 15:16,17, नहल 16:12, अम्बिया 21:33, मोमिनून 23:17, यासीन 36:38से40, साफ्फात 37:4से10, मुल्क 67:3से5,

फरेब - मुतफफ्फीन 83:1से3,

फसाद - आराफ 7:56, यूनुस 10:81, क़सस 28:77, रूम 30:41,

फक्र (गरीबी) - तलाक़ 65:7, जुहा 93:8, शरह 94:5,6,

फाजिर - साद 38:28, इन्फितार 82:14से 19, मुतफफ्फीन 83:7से11,

फासिक़ - बकरा 2:26,27,99,197,282, आलेइमरान 3:110, मायदा 5:3,26108, अनआम

6:120,121, तौबा 9:67, कहफ 18: 15, नूर 24:4,

फाहशी - आराफ 7:27,28, नहल 16:90, नूर 24:19, तलाक़ 65:1,

फित्ना - आराफ 7:56, यूनुस 10:81, रअद 13:25, क़सस 28:77, रूम 30:41,

फिरऔन - यूनुस 10:83,88, हूद 11:97, क़सस 28:3,4,40, मोमिन 40:3637, नाज़िआत 79:15से26,

फितरत - रूम 30:30

फिक्ह - तौबा 9:122,

फे - हशर 59:6से8,

ब

बग़ेर ईमान व अमल के फक़त अम्बिया की कुरबतदारिया और सिफरिश किसी के काम नहीं आ सकती - तौबा 9:80,113,114, हूद 11:42,45,46,47,81, तहरीम 66:10,

बचपन - हज 22:5, नूर 24:31,59, मोमिन 40:67,

बदजनी - अनआम 8:116,147, यूनुस 9: 36,66, हुजरात 49:12, ज़ारिआत 51:11, नज्म 53:23,28,

बदकारी - निसा 4:164, आराफ 7:80,81, हूद 10:77,79, हिज्र 15:67,79, अम्बिया 21:74, शोअरा 26:165,166, नमल 27:54,55, अनकबूत 29:28,29,

बदकलामी - बकरा 2:83, लुक्मान 31:19, मुजादला 58:9,

बदला - बकरा 2:194, हज 22:60, बकरा 2:25, अनआम 6:106, अनकबूत 29:58,59, सबा 34:37,38,

बद्दू - तौबा 9:90,97,98,99,101,120, 121, अहज़ाब 33:20, फतह 48:11से16, हुजरात 49:14,15,18,

बदी - मुजादला 58:15,

बर्थकंट्रोल -अनआम 6:151, बनी इस्राईल 17:31, तकवीर 81:8,9,

बरज़ख - मोमिनून 23:99,100, मोमिन 40:45,46,

बरकत - आलेइमरान 3:96, अनआम 6:92, 155, आराफ 7:96, बनीइस्राईल 17:1, अम्बिया 21:50,81, मोमिनून 23:29, नूर 24:61 क़सस 28:30, सबा 34:18, हा मीम सज्दा 41:10, दुखान 44:1,2,3, क़ाफ 50:9,

बशारत - बकरा 2:155से157, आलेइमरान 3:45, तौबा 0:3,34, यूनुस 10:62,63,64, हूद 11:19,71,74, हिज्र 15:53से55, मरयम 19:7, हज 22:34,35,37, फुरक़ान 25:47, लुक्मान 31:7, अहज़ाब 33:47, साफ्फात 37: 100,101,112, जुमर 39:17,18, ज़ारिआत 51:28, सफ

61:6,13,

बशर - आलेइमरान 3:47, माईदा 5:18, अनआम 6:4 हूद 11:27, युसूफ 12: 31, इब्राहिम 14:10,11, नहल 16:103, बनी इस्राईल 17:93,94, क़हफ 18:110, मरयम 19:20, अम्बिया 21:3, मोमिनून 23:47,48, फ़ुरक़ान 25:54, शोअरा 26:154,186, रूम 30:20, यासीन 36:15, हा मीम सज़्दा 41:6, शूरा 42:51, मुहम्मद 47:25,29,31,36, तगाबुन 64:6

बग़ावत व सरकशी - अनआम 6:146, आराफ 7:33, नहल 16:90, शूरा 42:27, हुजरात 49:9,

बनीइस्राईल - बकरा 2:40,47,83,211, 246, आलेइमरान 3:49,93, मायदा 5:12,32, 72,77,78,110,113, आराफ 7:105,134,137, 138, बनीइस्राईल 17:2,4,101,104, मरयम 19:58, ताहा 20:47,80,94, शोअरा 26:17से 22, सज्दा 32:23, मोमिन 40:53, जुखरूफ 43:59, दुखान 44:31, जासिया 45:16, अहक़ाफ 46:10, सफ 61:6,14,

बादल - बकरा 2:57,164,210, आराफ 7:57, रअद 13:12, नूर 24:43, फ़ुरक़ान 25: 25, रूम 30:24,48,49, फातिर 35:9,

बारिश - बकरा 2:22,164, निसा 4:102, आराफ 7:84, अनफाल 8:32, हूद 11:82,83, रअद 13:17, नमल 27:10,65, शूरा 42:28,

बातिल - बकरा 2:42, आलेइमरान 3:71, निसा 4:29,170, आराफ 7:181, तौबा 9:33, युनूस 10:32,35,36, रअद 13:17, बनी इस्राईल 17:81, कहफ 18:56, अम्बिया 21:17,18, हज 22:6, अनकबूत 29:52, लुक्मान 31:30,34, शूरा 42:24, मुहम्मद 47:2,3,

बाग़ - नमल 27:60, अबस 80:24,32,

बांझपन - मरयम 19:1से9, शूरा 42:49,50,

बिजली - बकरा 2:19,20,55, निसा 4:153, रअद 13:12,13, नूर 24:43, रूम 30: 24, हा मीम सज्दा 41:13, ज़ारिआत 51:44, क़ियामा 75:7,

बिदअत - हदीद 57:27,

बिर्र (नेकी) - बकरा 2:44,148,177,189, 261,263, आलेइमरान 3:92,115,134, निसा 4:36,114, मायदा 5:2, आराफ 7:58, यूनुस 10:26, नहल 16:30,90, ताहा 20:12, मोमिनून 23:96, क़सस 28:54, हा मीम सज्दा 41:46, मुजादला 58:79, बय्यना 98:7,8,

बुतपरस्ती - अनआम 6:74, इब्राहीम 14: 35,36, अम्बिया 21:51से67, हज 22:30,31, शोअरा 26:69,71से74,

बुतो के नाम - अनकबूत 29:17से25, नज्म 53:19से22, नूह 72:12से24,

बुख्ल (कंजूसी) - आलेइमरान 3:180, निसा 4:37,128, तौबा 9:34,35, बनीइस्राईल 17:29,

100, फुरक़ान 25:67, मुहम्मद 47:38, हदीद 57:24, हशर 59:9, तगाबुन 64:16, मआरिज 70:15,18, लैल 92:8से11, हुमज़ा 104:1से9,

बुढ़ापा - बकरा 2:266, तौबा 9:9, हूद 11:71, यूसुफ 12:78, नहल 16:70, बनीइस्राईल 17:75, मरयम 19:3, क़सस 28:23, रूम 30:54, फातिर 35:1, यासीन 36:68, मोमिन 40:67, मुजम्मिल 73:17,

बुरूज - हिज्र 15:16, फुरक़ान 25:61, बुरूज 85:1,

बुरी आदत - बनीइस्राईल 17:36,37,38, नूर 24:11 हुजरात 49:11,12, जाशिया 45:33, हुमज़ा 104:1से9,

बुज़दिल - आलेइमरान 3:139,152,155, निसा 4:12, अनफाल 8:15,16, तौबा 9:49, नूर 24:57,

बोहतान - निसा 4:111,112, नूर 24:46, 11,12,16,23, फुरक़ान 25:4, अनकबूत 29:12 से16, अहज़ाब 33:58, सबा 34:43, साफ्फात 37:151, अहक़ाफ 46:22,46, हुजरात 49:6, मुमतहना 60:12, क़लम 68:10से16,

बेतुल्लाह - बकरा 2:125,127, आलेइमरान 3:96,97, मायदा 5:97, हज 22:26,

बेतुलमक़दिस - नबीइस्राईल 17:1,7,

बेहयाई - आराफ 7:27,28, नहल 16:90, नूर 24:19, तलाक़ 65:1,

बेय - बकरा 2:254,275,282, इब्राहीम 14:31, नूर 24:37, जुमा 62:9,

बेअत - फतह 48:10,18,19, मुमतहना 60:12,

बैनुलअक़वामी तअल्लकुक़ात - निसा 4:90, अनफाल 8:61, तौबा 9:4,6,7, हुजरात 49:6,

बेवाओं का निकाह - नूर 24:32,33,

बेहूदा लिटरेचर - मोमिनून 23:1से3, लुक्मान 31:6,

भ

भूकम्प - आराफ 7:78,91,92,155, हज 22:1, नाज़िआत 79:6,7,

भरोसा - आलेइमरान 3:122,159,160, निसा 4:81, मायदा 5:11,23, आराफ 7:89, अनफाल 8:2,49,61, तौबा 9:51,129, यूनुस 10:71,74,75, हूद 11:56,88,123, यूसुफ 12:67, रअद 13:30, इब्राहीम 14:11,12, नहल 16:42,99, फुरक़ान 25:58, शोअरा 26:217, नमल 27:79, अनकबूत 29:59, अहज़ाब 33:3, 48, जुमर 39:38, शूरा 42:10,36, मुजादला 58:10, मुम्तहना 60:4, तगाबुन 64:13, तलाक़ 65:3, मुल्क 67:29,

म

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ कि - बकरा 2:129,

ईसा अलैहिस्सलाम ने बशारत दी - सफ्फ 61:6,

तौरात और इन्जील में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान - आराफ 7:157,

औलमा बनीइस्राईल को मालूम था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बार में - शुआरा 26:197, अहकाफ 46:10,

अहले किताब पहचानते थे - बकरा 2:146, अनआम 6:20,

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद अल्लाह का अहसान है - आलेइमरान 3:164,

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारी दुनिया के लिए रहमत - अम्बिया 21:107,

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबके लिए आए - निसा 4:79, आराफ 7:158, फुरक़ान 25:1, सबा 34:28,

अहले किताब की तरफ आए - मायदा 5:15, कहफ 18:4,

अपने लोगो के लिए आए - बकरा 2:151, आलेइमरान 3:164, तौबा 9:128, यूनुस 10:2, नहल 16:113, साद 38:4, जुमा 62:2,

जिन के पास नबी न आया था उनके पास आए- क़सस 28:46, सज्दा 32:3, यासिन 36:6, जुमा 66:3,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनपढ़ थे - आराफ 7:157, 158,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रहम दिल - आलेइमरान 3:159, तौबा 9:128,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमआला अख़्लाक़ - क़लम - 68:4,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ईमान न लाने वालों के लिए ग़म करना - नहल 16:127, कहफ 18:6, शुअरा 26:3, नमल 27:70, फातिर 35:8,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न मजनून न काहिन - आराफ 7:184, सबा 34:46, तूर 52:29, क़लम 68:2, तकवीर 81:22,

न शायर न काहिन न भटके न गुमराह - हाक़्क़ा 69:41, 42, नज्म 53:2,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न शायरी सीखे- यासिन 36:69,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सिर्फ एक रसूल - आलेइमरान 3:144,

कोई नये रसूल नहीं - आलेइमरान 3:144, रूम 30:9,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खातिमुननबी - अहज़ाब 33:40,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अल्लाह और मलाइक़ा का दरूद और सलाम -

अहज़ाब 33:56,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बेइन्तिहा अज्र - क़लम 68:3,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उस्वा ऐ हुस्ना - अहज़ाब 33:21,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सीधी राह पर बुलाने वाले - 23:73,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सीधे रास्ते पर - हज्ज 22:67, यासिन 36:4, शुरा 42:52, जुखरूफ 43:43,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्यी आती थी - आलेइमरान 3:44, निसा 4:163, अनआम 6:19, यूनुस 11:12,49, यूसुफ 12:3,102, रअद 13:30, नहल 16:123, सबा 34:50, जुमर 39:65,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर्फ वह्यी की पैरवी की - अनआम 6:50, 106, आराफ 7:203, यूनुस 10:15, 109, अम्बिया 21:45, अहज़ाब 33:2, जुखरूफ 43:43, अहक़ाफ 46:9,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह की तरफ से तसल्ली - आलेइमरान 3:41, मायदा 5:41, अनआम 6:33, यूनुस 10:65, नहल 27:70, क़सस 28:56, फातिर 35:4, यासिन 36:76, मुज़म्मिल 73:10, जुहा 93:5, अलमनशरा 94:1, 2, 3,

अल्लाह की और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत का हुक्म - आलेइमरान 3:32, 123, निसा 4:59, मायदा 5:92, अनफाल 8:1, 20, 46, नूर 24:54, अहज़ाब 33:33, मुहम्मद 47:33, मुजादला 58:13, तगाबुन 64:12,

मुहम्मद सल्लल्लाहु की इताअत का हुक्म - 24:56,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत का अज्र - निसा 4:13, 69, तौबा 9:81, नूर 24:56, अहज़ाब 33:81,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बेअत अल्लाह से बेअत - फतह 48:10,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सब अगले पिछले गुनाह माफ - फतह 48:2,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख्वाब - अनफाल 8:43, फतह 48:28,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अदब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत एक मोमिन के लिए ज़रूरी वरना उसके आमाल बरबाद होंगे - अहज़ाब 33:6, हुजरात 49:2, 3, 4, बकरा 2:104,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वाकिया मेअराज कुरआन की रोशन में - बनीइस्राईल 17:1, 60, नज्म 53:1 से 18 तक,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिजरत का हुक्म और हिजरत के लिए बताई हुई दुआ - इसरा 17:80,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हिजरत के दौरान अल्लाह की तरफ से मदद - तौबा 9:40,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह की तम्बीह - अनफाल 8:67, तौबा 9:43, अहज़ाब 33:37, तहरीफ 66:1, अबस 80:1से 10 तक,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियां उम्मते मुस्लिाम की माँऐं - अहज़ाब 33:6

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों के लिए अहकाम - अहज़ाब 33:30 से 34, 59,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों - अहज़ाब 33:29, तहरीम 66:4, 5,

वाक़िया अफक - नूर 24:11, 12,

अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान की क़सम खाई - हिज्र 15: 72,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम व औसाफ - **अहमद** 61:6, **बलाग** (पैगाम पहुँचाना) - मायदा 5:99, **बशीर** (खुशखबरी सुनने वाला) - 2:19, **खातिमुन्नबी** - 33:40, **दाईइल्लाह** (अल्लाह की तरफ दअवत देने वाला) - 33:46, **रहमतुललिलआलमीन** - (तमाम जहान वालों के लिए रहमत) 21:107, **रसूल** 9:61, **रऊफुर्रहीम** (निहायत शफीक़, बहुत रहम करने वाला) - तौबा 9:128, **सिराजामूमुनीर** (रोशन चिराग) - 33:46, **शाहिद** (गवाही देने वाला) - 33:45, **मुबश्शिर** (बशारत देने वाला) - 33:45, **मुहम्मद** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आले इमरान 3:144, अहज़ाब 33:40, मुहम्मद 47:2, फतह 48:29, **मुदस्सिर** (लिहाफ में लिपटने वाला) - **मुदस्सिर** 74:1, **मुज़क्किर** (नसीहत (उपदेश) करने वाला) - गाशिया 88:21, **मुज़म्मिल** (चादर में लिपटने वाला) - मुज़म्मिल 73:1, **मुनज़िर** (डराने वाले) - रअद 13:7, **ताहा** - ताहा 20:1, **अब्द** (बन्दा) - जिन्न 72:19, **नबी** - अहज़ाब 33:53, **नज़ीर** (डराने वाले) - नज्म 53:56, **यासिन** - यासिन 36:1,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मोअजज़ात - आराफ 7:15, अनफाल 8:17, तौबा 9:25,26, बनीइस्राईल 17:1, अनकबूत 29:50,51, क़मर 54:1,2,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेराज - बनीइस्राईल 17:1, नज्म 53:1से18,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत - बकरा 2:119,252, आलेइमरान 3:79से81, 144, निसा 4:5,50,106, मायदा 5:67, अनआम 6:14,19,50, आराफ 7:158, हूद 11: 2, रअद 13:7, नहल 16:64, बनीइस्राईल 17:54, कहफ 18:110, अम्बिया 21:10,11, हज 22:49, फुरक़ान 25:56, नमल 27:90से93, अनकबूत 29:45, अहज़ाब 33:38से40,45,46, फातिर 35:24, यासीन 36:1से7,69,70, साद 38:65, शूरा 42:6, अहक़ाफ 46:9, फतह 48: 8,9, जुहा 93:1से11,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुशखबरी देने वाले - बकरा 2:119, मायदा 5:19,

आराफ 7:188, हूद 11:2, बनीइस्राईल 17:105, फुरक़ान 25:56, अहज़ाब 33:45, सबा 34:28, फातिर 35:24, फतह 48:8,

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम डराने वाले - बकरा 2:119, मायदा 5:19, आराफ 7:184,188, हूद 11:2, 12, हिज्र 15:89, बनइस्राईल 17:105 हज7 22:49, फुरक़ान 25:1, 56 अनकबूत 29:50, अहज़ाब 33:45, सबा 34:28,46 फातिर 35:22से24,42, साद 38:70, हा मीम सज्दा 41:4, अहक़ाफ 46:9, फतह 48:8, ज़ारियात 51:50,51, मुल्क 67:26,

मसअला हाज़िर नाज़िर - आले इमरान 3:44, यूसुफ 12:102, क़सस 28:44, 45, 46,

मजूसी - हज 22:17,

मछली - मायदा 5:96, नहल 16:14, फातिर 35:12,

मदीना मुनव्वरा - तौबा 9:10, अहज़ाब 33:13,

मज़ाक़ - अनआम 6:10, तौबा 9:79, हूद 11:38, मोमिनून 23:110, साफ्फात 37:12,14, साद 38:63, जुखरूफ 43:32 हुजरात 49:11,

मज़हब - बकरा 2:120,130,135,136,217, आलेइमरान 3:19,83,95, निसा 4:125,146से 171, मायदा 5:3,54,57,77, अनआम 6:7, 137,159,161, आराफ 7:29,51,88,89, अनफाल 8:39,49,72, तौबा 9:11,12,33,36, 122, यूनुस 10:22,104,105, यूसुफ 12:37,38, 40, इब्राहीम 14:13, नहल 16:123, कहफ 18:20, हज 22:78, नूर 24:2,25,55, अनकबूत 29:65, रूम 30:30से32, लुक्मान 31:32, अहज़ाब 33:5, साद 38:7, जुमर 39:2,3,11, 14, मोमिन 40:14,26,65, शूरा 42:8,9,13,21, मुमतहना 60:8,9, नबा 98:5,

मज़हबी पेशवा - मायदा 5:44,62,63, तौबा 9:31,34,

मज़हबी तअस्सुब - बकरा 2:87,88,105, 109,111,113, आलेइमरान 3:72से74,

मजलिस के आदाब - नूर 24:27, मुजादला 58:11,

मर्द और औरत की बराबरी - आलेइमरान 3:195, निसा 4:32,124, नहल 16:97, अहज़ाब 33:35,

मरयम - आलेइमरान 3:42,43,

मसाजिद - बकरा 2:114,150,177,187, 217, मायदा 5:2, अहज़ाब 7:29,31, तौबा 9:17से19, 107,108, हज 22:25,39,40,नूर 24:36,37, जिन्न 72:18,

मसावात का तसव्वुर - मायदा 5:100, अनआम 6:50, रअद 13:19, सज्दा 32:18, फातिर 35:19,22, जुमर 39:9, मोमिन 40:58, जासिया 45:21, हशर 59:20,

मस्जिदुल हराम - बकरा 2:144,150,191, 196,217, मायदा 5:2, अनफाल 8:34,35, तौबा 9:7,19,28, बनीइस्राईल 17:7, हज 22: 25से29, फतह 48:27,

मस्जिदुल अक़्सा - नबीइस्राईल 17:1,7,

मस्जिद कुबा - तौबा 9:108,109,

मसह - आलेइमरान 3:45,46, निसा 4:157, 158, मायदा 5:17,75,

मशवरा - आलेइमरान 3:59, शूरा 42: 36से48,

मशियते इलाही - बकरा 2:90,105,117, 142,212,213,220,247,251,253,255,261, 269, 272, आलेइमरान 3:6,13,26,37, 40,47,73, 74,129,179, निसा 4:47,48,133, मायदा 5: 6,18,54, अनआम 6:39,41,73,111,126,134, 137,149, आराफ 7:89,176, 188, अनफाल 8:6,7,8, तौबा 9:55,85, यूनुस 10:25,49,99, 107, हूद 11:34,107,108,118, रअद 13:31, 39, नहल 16:40,93, बनीइस्राईल 17:16,54, 86,87, क़सस 28:56,68, अनकबूत 29:21, रूम 30:54, सज्दा 32:13, अहज़ाब 33:17,33, सबा 34:19, फातिर 35:1,8,16, यासीन 36: 82, शूरा 42:8,13,27,29,49,50, जुखरूफ 43: 60, मुहम्मद 47:4,30, फतह 48:11,14, हदीद 57:21,29, जुमा 62:4, मुदस्सिर 74:3156, दहर 76:28,30,31, तकवीर 81:29, आला 87:7,

मआशरती दरजा बन्दी - बकरा 2:228, निसा 4:32,34,95, अनआम 6:132,165, यूसुफ 12:76, नहल 16:71, बनीइस्राईल 17:30,55, जुखरूफ 43:32, अहक़ाफ 46:19, हदीद 57:10, मुजादला 11:58,

मआसियत - निसा 4:14,115, अनफाल 8:13,20, तौबा 9:63, अहज़ाब 33:36, मुजादला 58:8,9, जिन्न 72:23,

मग्फिरत - बकरा 2:175,221,268, आले इमरान 3:133,136, 157, मायदा 5:9, निसा 4:96, अनफाल 8:4,74, हूद 11:11, रअद 13:6, हज 22:1,5, नूर 24:26, अहज़ाब 33:35, सबा 34:4, फातिर 35:7, यासीन 36:11, हा मीम सज्दा 41:43, मुहम्मद 47:15, फतह 48:29 हुजरात 49:3, नज्म 53:32, हदीद 57:20,21, मुदस्सिर 74:56,

मक़ामे इन्सानियत - हिज्र 15:28से32, नहल 16:78, बनीइस्राईल 17:70, लुक्मान 31:20, यासीन 36:77,78, मोमिन 40:64, हुजरात 49:13, तीन 95:1से4,

मक्रो फरेब - अनआम 6:123,124, अनफाल 8:30, यूनुस 10:21, नहल 16:45 फातिर 45:7,10,32,35,

मक्का मुकर्रमा - आलेइमरान 3:96,97, शूरा 42:7, फतह 48:24, जुखरूफ 43:31, मुहम्मद 4713,

मलाईका - बकरा 2:34,97,98, निसा 4: 136, अनफाल 8:50, हज 22:75, सज्दा 32:11, फातिर 35:1, शूरा 42:5, क़ाफ 50:17,18, तहरीम 66:6, हाक़्क़ा 69:17, क़द्र 97:1से5,

मलका सबा - नमल 27:16से44,

मन्सबे नबुव्वत - बकरा 2:151, मायदा 5:67,99, आराफ 7:157,

मन्न व सलवा - ताहा 20:80,81,

महर - निसा 4:19,21,24,25,34, मायदा 5:5,33, अहज़ाब 33:50, मुम्तहना 60:10,11,

माले गनीमत - निसा 4:94, अनफाल 8:1,41, फतह 48:15,

मिट्टी, गारा - आलेइमरान 3:9, रअद 13:5, हिज्र 15:26,28,33, नबा 78:4,40, कहफ 18:37, मोमिनून 2:35,37, सज्दा 32:7, फातिर 35:11, साफ्फात 37:15,17, क़ाफ 50:3,

मिस्कीन - बनीइस्राईल 17:26, बलद 90:11 से16, माऊन 107:1से3,

मियाँ के बीवी के झगड़े - बकरा 2:228, निसा 4:32,34,35, 128,130,

मियाँ बीवी के हुकूक़ व फराईज़ - बकरा 2:226, निसा 4:32,34,

मियानारवी - बनीइस्राईल 17:29,110, फुरक़ान 25:67, लुक्मान 31:19

मिसाक़ - बकरा 2:63,84, आलेइमरान 3:81, निसा 4:90,154, मायदा 5:12,14,70, आराफ 7:169, अनफाल 8:72, रअद 13:20 से25, क़सस 28:28,

मीज़ान - हूद 11:84से86, बनीइस्राईल 17: 35, अम्बिया 21:47, रहमान 55:7से9, मुतफफ्फीन 83:1से7,

मुलाज़मिन - निसा 4:36, नूर 24:31,

मुश्रिको पर शैतान का जौर चलता है - नहल 16:63, 100,

मुश्रिक की बख्शिश कभी नहीं होगी - निसा 4:48, 116, मायदा 5:72, तौबा 9:113, 114

मुरदे नहीं सुनते - नमल 27:80, जुमर 30:52, फातिर 35:22, अहक़ाफ 46:5, 6,

मुबाहिला - आलेइमरान 3:60से62,

मुहँबोला बेटा - अहज़ाब 33:4,5, मुजादला 58:2,

मुहसिन - बकरा 2:83,195, आलेइमरान 3:172, आराफ 7:156, तौबा 9:100,120 यूनुस 10:26, नहल 16:90, इसरा 17:7,

मुहसन - निसा 4:25, मायदा 5:5, नूर 24:4,23,

मुरतद - बकरा 2:217, आलेइमरान 3:106, निसा 4:137, मायदा 5:54, मुहम्मद 47:25से28,

मुसाफिर - बकरा 2:215, बनीइस्राईल 17:26, हशर 59:7,

मुसलमानों के बाहमी तअल्लुक़ात - निसा 4:59, अनफाल 8:1,45,46, फतह 48:29,

मुसलमानों के गैरमुस्लिमों से तअल्लुक़ात - आलेइमरान 3:118,119, अनआम 6:108, आराफ 7:199, अनफाल 8:61, तौबा 9:6,7, नज्म 53:29,

मुश्रिकीन - बकरा 2:6,7,105, 161,162,166, 167,212,257, आलेइमरान 3: 10,176से178, मायदा 5:36,37, आराफ 7:40, अनफाल 8:55, तौबा 9:123, रअद 13:1से5, हिज्र 15:2,3,

नहल 16:84से86, बनीइस्राईल 17:49से51, मरयम 19:83,84, नूर 24:39, अरकबूत 29:12,13, फातिर 35:37, हा मीम सज्दा 41:26से28,

मुअजज़ाते अम्बिया अलै. - बकरा 2:55से 57,60,63,72,73, 248,259,260, आलेइमरान 3:37,49, आराफ 7:104से108,115से 122, हूद 11:36से4,64से68, यूसुफ 12:93से96, कहफ 18:60,61, मरयम 19:24से26,30से34, ताहा 20:91से95, अम्बिया 21: 68से 70,79,81,82, नमल 27:16से19,38से40, क़सस 28:7से13, सबा 34:12,13, साफ्फात 37:139से147, साद 38:17से19,41से43,

मुनाफिक़ - बकरा 2:8से16, निसा 4:60से 63,88,138,140, 143,145, अहज़ाब 33:60, 61, हदीद 57:1से5,

मोमिनों पर भी अल्लाह और फरिश्ते दरूद भेजता हैं - अहज़ाब 33:43, 44,

मोमिन के लिए आख़िरत, काफिर के लिए दुनिया - बकरा 2:155, आलेइमरान 3:14, 145, हूद 1:15, 16, जुखरूफ 43:33 से 38 तक, अहकाफ 46:20, हदीद 57:20,

मौत के बाद ज़िन्दगी - बकरा 2:258, बनीइस्राईल 17:49से52, हज 22:5,6, फातिर 35:9, यासीन 36:51,52, तगाबुन 64:7, क़ियामा 75:4,

मौत से किसी को फरार नहीं - आलेइमरान 3:143,145,185, निसा 4:78, अनआम 6:61, 93,94, आराफ 7:34, यूनुस 10:49, अम्बिया 21:34,35, मोमिनून 23:15,99,100, अनकबूत 29:54, सज्दा 32:11, अहज़ाब 33:16, जुमर 39:30,42, मुहम्मद 47:27, क़ाफ 50:19, वाक़िया 56:60,61, जुमा 62:8, मुनाफिकून 63:11, मुल्क 67:27, नूह 71:41,

मूसा अले. - बकरा 2:51,53,54,55,60,61, 67,87,92,108,136, 246, आलेइमरान 3:84, निसा 4:153, मायदा 5:22,24,27, अनआम 6:84,91,154, आराफ 7:104,115,122,127, 131,138,142,144,148,154,159, यूनुस 10: 43,75,77,80,81,84,87, 88, हूद 11:17,97, 111, इब्राहीम 14:50,86, बनीइस्राईल 17:2, 101, कहफ 18:61,67, मरयम 19,51, ताहा 20:11,17,19,36,40,49, 57,61,65,66,67, 77,83,86,91, अम्बिया 21:48, हज 22:44, फुरक़ान 25:35, शोअरा 26:10,43,45,48,76, अनकबूत 29:39, सज्दा 32:23, अहज़ाब 33:7,69, साफ्फात 37:114,120, मोमिन 40: 23,26,27,37,53, हा मीम सज्दा 41:45, शूरा 42:13, जुखरूफ 43:46, अहक़ाफ 46:12, नज्म 53:36, आला 87:19,

मुहाजरीन - बकरा 2:218, आलेइमरान 3:195, निसा 4:97 से 100 तक, अनफाल 8:74, तौबा 9:20,21,22, हज्ज 22:58,59, मुमतहना 60:10,11,

मोमिन और काफिर का मवाज़ना (तुलना) - आलेइमरान 3:162,163, क़सस 28:61, रूम 30:15,16, सज्दा 32:18से20, जुमर 39:9,22, मोमिन 40:58, जासिया 45:21, हशर

59:20 मुल्क 67:22,

मोमिन और मुत्तकी की सिफात - बकरा 2:1से5,165,256,277,285, आलेइमरान 3:16, 17,110,133,134, मायदा 5:54,56, आराफ 7:181, अनफाल 8:2,4, रअद 13:22, हज 22:41, मोमिनून 23:1से11, नूर 24:11,12, फुरक़ान 25:63से76, शूरा 42:36से39, फतह 48:29, हुजरात 49:15, ज़ारियात 51:15से19,

मेहमान नवाज़ी - अहज़ाब 33:53, ज़ारियात 51:24से28,

य

यतीम - बकरा 2:43,177,215,220, निसा 4:2-10,36,127, अनआम 6:152, इसरा 17:34, फजर 89:17-20, जुहा 93:6,9, माऊन 107:1,2,

यऊक़ - नूह 71:24-29

यगूस - नूह 71:21-24

यहूद व नसारा - बकरा 2:61,109,111, 113,120, आलेइमरान 3:10,64,65,112,113, 114, निसा 4:44, मायदा 5:14,18,51,64 से68,82,

याजूज माजूज - कहफ 18:83,98

याकूब अलैहिस्सलाम - बकरा 2:132,133, 133,136,140, आलेइमरान 3:84,85, निसा 4:162,163, अनआम 6:84, हूद 11:7,71, यूसुफ 12:4,6,18,38,68,83,84,86,87,93,94, 96,99,100, मरयम 19:5,6,49, अम्बिया 21: 72, अनकबूत 29:27, साद 38:45,

याह्या अलैहिस्सलाम - आलेइमरान 3:38, 39, मरयम 19:2,3,5से7,12से15, अम्बिया 21: 89,90,

यूसुफ अलैहिस्सलाम - अनआम 6:84, यूसुफ 12:4,7से11,17,21,29,46,51,56,58,69,76,77, 80,84,85,87, 89,90,94,99से101, मोमिन 40:34, 36,

यूनुस अलैहिस्सलाम - निसा 4:163, अनआम 6:86, यूनुस 10:98, अम्बिया 21:87, 88, साफ्फात 37:139,140से147, क़लम 68:48,50,

अल-यसअ अलै. - अनआम 6:86, साद 38:48,

र

रहमत - बकरा 2:64,105,155,157, आले इमरान 3:8,159, निसा 4:82, अनआम 6:12, 54,147, आराफ 7:56,57, यूनुस 10:21, नहल 16:64, बनीइस्राईल 17:100, कहफ 18:10, अम्बिया 21:107, नूर 24:10,14,20,21, अनकबूत 29:23, क़सस28:73, रूम 30:21,33, जुमर 39:53, मोमिन 40:7, जुखरूफ 43:32, हदीद 57:27,

रद्दे इसाईयत - निसा 4:171से173, मायदा 5:72,73,75,

रज़ाअ व नफ्क़ा - बकरा 2:233, तलाक़65:6,7,

रज़ा ए इलाही - मायदा 5:120, तौबा 9:72,100, बय्यना 98:7,8,

रमज़ान - बकरा 2:185,

रहन - बकरा 2:283,

रात और दिन - आलेइमरान 3:190, अनआम 6:60, आराफ 7:54, यूनुस 10:67, बनीइस्राईल 17:12, अम्बिया 21:20, नूर 24:44, फुरक़ान 25:47,62, क़सस 28:71से73, जुमर 39:5,

रिबा (सूद) - बकरा 2:275,276,278,279, आलेइमरान 3:130, रूम 30:39,

रिज़्क़ - बकरा 2:212, मायदा 5:88, हूद 11:6, नहल 16:11,14,15,

रिसालत व नबूव्वत - बकरा 2:285, आले इमरान 3:79,80, निसा 4:64, मायदा 5:2067, अनआम 6:93, आराफ 7:94, रअद 13:32,36, 38, इब्राहीम 14:4, अम्बिया 21:25, हज 22:52, फुरक़ान 25:20, रूम 30:47, सबा 34:44, साफ्फात 37:72, मोमिन 40:70, हा मीम सज्दा 41:14, जुखरूफ 43:6,7,23,45, हदीद 57:25,

रिश्तेदार - बकरा 2:177,180,215, निसा 4:8 तौबा 9:113, नहल 16:90, नूर 24:22, अहज़ाब 33:6,

रिश्वत - बकरा 2:188,

रिया - बकरा 2:264, अनफाल 8:47, माऊन 107:4से7,

रूह - निसा 4:171, हिज्र 15:28,29, बनी इस्राईल 17:85, मरयम 19:16,17, सज्दा 32:9, साद 38:72, तहरीम 66:12, नबा 77:38,39,

रूहुलकुद्दुस - बकरा 2:87,153, नहल 16: 101,102, अम्बिया 21:19, शोअरा 26:193, सज्दा 32:9, साद 38:72,

रोज़ा - बकरा 2:183,185,187,196, निसा 4:92, मायदा 58:4 मुजादला 5:89,

रोशनी - बकरा 2:17,257, निसा 4:174, मायदा 5:15,16,44,46, अनआम 6:1,91, आराफ 7:157, तौबा 9:32, यूनुस 10:5, रअद 13:16, इब्राहीम 14:1,5, नूर 24:35,40, अहज़ाब 33:40, फातिर 35:20 जुमर 39:23,69, शूरा 42:52, हदीद 57:9,12,13,19,28, सफ्फ 61:8, तगाबून 64:8, तलाक़ 65:11, तहरीम 66:8, नूह 71:16,

रूयते इलाही - कहफ 18:110,

रूहबानियत (दुनिया को छोड़ना, किनारा कशी) खुदसाख्ता और गैरशरई अमल है - मायदा 5:82, तौबा 9:31,34, हदीद 57:26,27,

ल

लहू व लअब - अनआम 6:70, अनकबूत 29:64, जुमा 62:11,

लअन - नूर 24:6से10,

लअनत - बकरा 2:161, आलेइमरान 3:86, निसा 4:46,52,93, 117,118, मायदा 5:60,78, आराफ 7:44, तौबा 9:68, हूद 11:18,99, रअद 13:25, नूर 24:7,23, क़सस 28:42, अनकबूत 29:25, अहज़ाब 33:57,64, मोमिन 40:52, फतह 48:6,

लीडर - बकरा 2:124, बनीइस्राईल 17:71,72, फुरक़ान 25:74,76,

लीडर व अवाम - बकरा 2:166,167, इब्राहीम 14:29, अहज़ाब 33:66,68,

लिबास - बकरा 2:187, आराफ 7:26,27, कहफ 18:31, अम्बिया 21:10,80, नहल 16:112, हज 22:23, फुरक़ान 25:47, फातिर 35:12,33, दुखान 44:53,

लुक्मान - लुक्मान 31:12,13,

लूत अले. - अनआम 6:86, आराफ 7:80, से82, हूद 11:70,74, 77,81,89, हिज्र 15:59, 61, अम्बिया 21:71,74, हज 22:43, शोअरा 26:160से167,169, नमल 27:54से56, अनकबूत 29:26,28 से30, साफ्फात 37:133, साद 38:12,13, क़ाफ 50:13, क़मर 54:33,34, तहरीम 66:10,

लेलतुल क़द्र - दुखान 44:1से6, क़द्र 97:1से5,

लोहे महफूज़ - रअद 13:39, क़मर 54:52, 53, हदीद 57:22, नबा 78:29, बुरूज 85:21, 22,

व

वलीउल्लाह या अल्लाह के दोस्त कौन?

वलीउश्शैतना या शैतान के दोस्त कौन है?

बकरा 2:107, 112, 165, 190, 195, 257, आलेइमरान 3:31, निसा 4:119, अनआम 6:121, तौबा 9:16 से 18 तक, यूनुस 10:62,63, नहल 16:100, कहफ 18:50, हज्ज 22:78, फुरक़ान 25:18, क़सस 28:56, सबा 34:41, जुमर 39:3, जुमा 62:6,7,

वहदते नस्ले इन्सानी - निसा 4:1, अनआम 6:98, हुजरात 49:13,

वह्यी - निसा 4:163, नहल 16:43, शूरा 42:51से53, अहक़ाफ 46:9, नज्म 53:1से5, क़ियामा 75:16से19,

वद्द - नूह 71:21से24,

वस्वसा - क़ाफ 50:16, नास 114:1से6,

वसीयत - बकरा 2:180,181,240, मायदा 5:106से108,

वाल्दैन के हुकूक़ - बनीइस्राईल 17:23,24, लुक्मान 31:14,15, अहक़ाफ 46:15,18, अनकबूत 29:8,

वादे की पाबन्दी - बकरा 2:40,80,82, मायदा 5:1, बनीइस्राईल 17::34,

विरासत - निसा 4:11,12,19,33, 176, अनफाल 8:75,

वुजू - मायदा 5:6,

श

शजर जक्कुम - साफ्फात 37:62से66, दुखान 44:43से46, वाक़िया 56:33,51,

शराब - बकरा 2:219, मायदा 5:90,91,

शरपसंदी - अनआम 6:146, आराफ 7:33, नहल 16:90, शूरा 42:27, हुजरात 49:9,

शरीअत - मायदा 5:48, शूरा 42:13,21, जासिया 45:18,

शआर अल्लाह - बकरा 2:158,198, मायदा 5:2, हज 22:32,36,

शक्क़े क़मर (चाँद के दो टुकड़े) - क़मर 54:1,2,3,

शहाब साक़िब - हिज्र 15:16से18, साफ्फात 37:6से10, जिन्न 72:8,9,

शहादत -बकरा 2:154, आलेइमरान 3: 157,158,169171195, निसा 4:69,74, तौबा 9:111, मुहम्मद 47:4से6, हदीद 57:19,

शहद - नहल 16:68,69, मुहम्मद 47:15,

शबेबरात की दलील में पेश की जाने वाली आयतें अस्ल में शबे क़द्र के लिए हैं - बकरा 2:185, दुखान 44:3, 4, क़द्र 97:1 से 5 तक,

शिर्क - अनआम 6:148, यूनुस 10:18,28 ,29, नहल 16:35, मरयम 19:81,82,88से93, हज 22: 73, ज़ारियात 51:51, नज्म 53:19, 23, मुल्क 67:30, काफिरून 109:1से6,

शिर्क करने के लिए अगर वल्दैन कहे तो उनका कहना न मानों - अनकबूत 29:8, लुक्मान 31:15,

शिर्क इन्तिहाई नाक़िस अक़ीदा है - तौबा 9:17, यूनुस 10:34,35, हज्ज 22:73, 74, अनकबूत 29:41, 42, जुमर 39:65, अहक़ाफ 46:4, 5, 6,

शिफा - यूनुस 10:57, नहल 16:69, बनी इस्राईल 17:82,

शिफाअत - निसा 4:85, जुमर 39:43,44, नज्म 53:26,

शिकार - मायदा 5:2,4,96,

शुऐब अले. - आराफ 7:85, हूद 11:84,87, 91,94, शोअरा 26:177, अनकबूत 17:82,

शुक्र - बकरा 2:152, आलेइमरान 3:145, निसा 4:147, इब्राहीम 14:7, नहल 16:114, नमल 27:40, जुमर 39:7, लुक्मान 31:12,

शूरा - आलेइमरान 3:159, शूरा 42:38,

शैतान - बकरा 2:14,36,102,168,169, 208,268,275, आलेइमरान 3:55, निसा 4:38,

76,117,119,120, मायदा 5:90,91, अनआम 6:43,68,112,121, आराफ 7:11,27,30,175, 200,201, अनफाल 8:11,48, इब्राहीम 14:22, हिज्र 15:30,32, नहल 16:98,100, बनीइस्राईल 17:27,53,61,65, कहफ 18:50, मरयम 19:83, ताहा 20:16,124, अम्बिया 21:82, हज 22:3,52,53, मोमिनून 23:97,98, नूर 24:21, फुरक़ान 25:29, शोअरा 26:94,98,210,221,223, लुक्मान 31:21, सबा 34:20, फातिर 35:6, यासीन 36:60, साफ्फात 37:7, साद 38:37,41,71,85, हा मीम सज्दा 41:36, जुखरूफ 43:36,62, मुहम्मद 47:25, हशर 59:16, मुल्क 67:52, तकवीर 81:25,

शैतान अपने दोस्तो की तरफ वह्यी करता है - अनआम 6:121,

शोअरा - शोअरा 26:224से227, यासीन 36:69, हाक्क़ा 69: 40,41,

स

समूद - आराफ 7:73, तौबा 9:79, हूद 11:68,95,96, इब्राहीम 14:18,19, हज 22:42, फुरक़ान 25:38, शोअरा 26:141, नमल 27:45, अनकबूत 29:38, साद 38:13, मोमिन 40:31, हा मीम सज्दा 41:13,17, क़ाफ 50:12, ज़ारियात 51:43, नज्म 53:51, क़मर 54:23, हाक्क़ा 69:4,5, फजर 89:9,

सना - आलेइमरान 3:191, मायदा 5: 116, हिज्र 15:98, बनीइस्राईल 17:43,44, ताहा 20:130, अम्बिया 21:87, अहज़ाब 33: 41,42, यासीन 36:36,37, साफ्फात 37:180, मोमिन 40:7, जुखरूफ 43:12,13, क़ाफ 50: 39,40, हदीद 57:1, जुमा 62:1,

सवाब - आलेइमरान 3:145,148,191, निसा 4:134, कहफ 18:44, क़सस 28:79,80,

सब्त - बकरा 2:65,66, आराफ 7:163, 166,

सट्टा - बकरा 2:219, मायदा 5:90,91,

सच - मायदा 5:119, तौबा 9:119, अहज़ाब 33:23,24,35, जुमर 39:33से35,

सहर (जादू) - बकरा 2:102, यूनुस 10:79से 81, ताहा 20:69, फलक़ 113,1से5,

सखावत व फयाज़ी - बकरा 2:177,215, तौबा 9:60,

सरगोशी - निसा 4:114, मुजादला 58:9, 10,12,13,

सई (कोशिश) - बनीइस्राईल 17:19, कहफ 18:104, अम्बिया 21:94, नज्म 53:39से40,

सफर - बकरा 2:184,283, निसा 4:43,

समाजी बुराईयां - बनीइस्राईल 17:36,37,38, नूर 24:11 हुजरात 49:11,12, जाशिया 45:33, हुमज़ा 104:1से9,

सब्र - बकरा 2:153,155,200, नहल 16: 126,127, हज 22:34,35, लुक्मान 31:17, हा मीम सज्दा 41:34,35,

सहाबा किराम रज़ि. का ज़िक्र - बकरा 2: 143, आलेइमरान 3:110, तौबा 9:79,91,99, 100,117,118, अहज़ाब 33:22,23, फतह 48: 10,18,19,29, हशर 59:8,9,10,

सहीफा - मायदा 5:41,47,49, तौबा 9:111, अम्बिया 21:105, आला 87:18,19,

सदक़ा - मायदा 5:119, तौबा 9:119, अहज़ाब 33:23,24,35, जुमर 39:33,35,

सदक़ात - बकरा 2:261से265,271,276, तौबा 9:60,103,104, हशर 59:15से20, बलद 90:11से16, माऊन 107:1से3,

सफा मरवा - बकरा 2:158,

सफाई - निसा 4:43, मायदा 5:6, तौबा 9:108, मुद्दस्सिर 74:4,

सलात (नमाज़) - बकरा 2:43,153,238, 239,277, निसा 4:43,101से103, मायदा 5:6, अनआम 6:162, तौबा 9:71, हूद 11:14, इब्राहीम 14:31, बनीइस्राईल 17:78,79,110, ताहा 20:132, नूर 24:56, अनकबूत 29:45, लुक्मान 31:4,5, फातिर 35:29,30, जुमा 62:9,10, मुज़म्मिल 73:20, दहर 76:25,26, आला 87:14,15, माऊन 107:4,5,6,7,

साज़िश - अनआम 6:123,124, अनफाल 8:30, यूनुस 10:21, नहल 16:45 फातिर 45:7,10,32,35,

साया - रअद 13:15, नहल 16:48, फुरक़ान 25:45,46,

साबित क़दमी - आलेइमरान 3:101,103,173, 200, निसा 4:175, तौबा 9:8, यूनुस 10:89, हूद 11:112, हा मीम सज्दा 41:6,30से32, शूरा 42:15, जुखरूफ 43:43, दुखान 44:59, अहक़ाफ 46:13,14,35, तूर 52:48,49, क़लम 68:48, मआरिज 70:5, जिन्न 72:16, मुजम्मिल 73:10,11, तकवीर 81:27,28,

साबी - बकरा 2:62,

सालेह अले. - आराफ 7:72,74,76, हूद 11:60,62,63,66,89, नमल 27:45, शोअरा 26: 141,145,

सीरते नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम - बकरा 2:146, आलेइमरान 3:159, मायदा 5: 15,16, अनआम 6:33, तौबा 9:40,61,128, यूसुफ 12:103,104, कहफ 18:6, अहज़ाब 33:53, फतह 48:29, क़लम 68:2से4, मुजम्मिल 73:1से8, जुहा 93:1से11, शरह 94:1 से8, कोसर 108:1 से 3,

सिफरिश या वसीला - बकरा 2:48, 123, 254, 255, मायदा 5:35, अनआम 6:51, 94, आराफ 7:53, यूनुस 10:3, 18, बनीइस्राईल 17:57, मरयम 19:87, ताहा 20:109, अम्बिया 21:28, 100, जुमर 30:13, सज्दा 32:4, यासिन 36:23, जुखरूफ 43:86, काफ 50:15 से 18 तक, नज्म 53:26,

सितारे - अनआम 6:97, नहल 16:15,16, हज 22:18, वाकि़या 56:75,76, तारिक़ 86:1स4,

सिरातेमुस्तक़ीम - फातिहा 1:4से7, बकरा 2:213, आलेइमरान 3:51,101, हूद 11:56, हज 22:54, यासीन 36:1से4, शूरा 42:52,

सिलारहमी - बकरा 2:27, रअद 13:21,25,

सुलेमान अलै. - बकरा 2:102, अनआम 6:85, अम्बिया 21:72,78,79,81, नमल 27:15से20,24,37,38,40 सबा 34:12से14, साद 38:30से38,40,

सुन्नत अल्लाह की - बनीइस्राईल 17:76, 77, अहज़ाब 33:38,39,62, फातिर 35:43, मोमिन 40:84,85, फतह 48:23,

सुन्नते नबवी - आलेइमरान 3:164, अनफाल 8:20 अलहज़ाब 33:21, हशर 59:7,

सूआ - नूह 71:23,

सूद - बकरा 2:275,276,278,279, आले इमरान 3:130, रूम 30:39,

सूरज - आराफ 7:54, यूनुस 10:5, रअद 13:2, हज 22:18, यासीन 36:40, नूह 71:16,

सुबह व शाम - अनआम 6:97, रूम 30: 7,18, अहज़ाब 33:41,42, मुदस्सिर 74:32, 33,34,

सुलह - निसा 4:114, हुजरात 49:9,10, देखे अमन व सलामती,

सूरा इस्राफील - अनआम 6:73,74, कहफ 18:99, ताहा 20:102, मोमिनून 23:101, नमल 27:87, यासीन 36:51से53, साफ्फात 37:19, जुमर 39:68, क़ाफ 50:20, हाक्क़ा 69:13से18, नबा 78:18, नाज़िआत 79:6से8, अबस 80:33,42,

सेर व सियाहत - आलेइमरान 3:137, रूम 30:9,

सोम - बकरा 2:183,185,187,196, निसा 4:92, मायदा 58:4 मुजादला 5:89,

सेहत की हिफाज़त - बकरा 2:222, मायदा 5:6, मुदस्सिर 74:1से5,

ह

हर दौर में अम्बिया और सालिहीन के बुत बना कर उनको पुकारा गया पत्थर के मुजसमे ख्याली न थे - मायदा 5:116, आराफ 7:191, 192, 194, यूनुस 10: 28, 29, नहल 16:86, बनीइस्राईल 17:57, कहफ 18:102, मरयम 19:82, फुरक़ान 25:3, 17, 18, फातिर 35:14, सफ्फात 37:95, 96,

हमशाया - 4:36,

हज व उमरा - बकरा 2: 158,189,196, 203, आलेइमरान 3:96,97 हज 22:26 से 29, फतह 48:27,

हदीस - आलेइमरान 3:164, अनफाल 8:20 अलहज़ाब 33:21, हशर 59:7,

हराम - 2:173 मायदा 5:3,87, अनआम 6:121,145,

हसब व नसब - मोमिनून 23:101, अल फुरक़ान 25:54, लुक्मान 31:33, हुजरात 49: 13, मुम्तहना 60:3,

हसद (जलन) - बकरा 2:109, निसा 4:53,54, अलफलक़ 113:1से5,

हदूद (हद) - बकरा 2:178,179, निसा 4: 14,92,93, मायदा 5:33 से 35,39,45 नूर 24:2,4,5,

हशर व नस्र - बकरा 2:48,166,167,254, आराफ 7:8,9,187, इब्राहीम 14:42,44, नहल 16:88,89, बनीइस्राईल 17:13,14,97,98, मरयम 19:85से87, ताहा 20:15,102,103, अम्बिया 21:57,104, हज 22:2, क़मर 54:86, मुम्तहना 60:3, क़ियामा 75:1से13, नाज़ियात 79:6से9, अबस 80:33से42,

हक़ को छुपाना - बकरा 2:42,140,159,

हक़ व बातिल - बकरा 2:42, आलेइमरान 3:71, निसा 4:29,170, आराफ 7:181, तौबा 9:33, युनूस 10:32,35,36, रअद 13:17, बनी इस्राईल 17:81, कहफ 18:56, अम्बिया 21:17,18, हज 22:6, अनकबूत 29:52, लुक्मान 31:30,34, शूरा 42:24, मुहम्मद 47:2,3,

हलाल - बकरा 2:168,169, मायदा 5:1,2, 4,5,96, आराफ 7:32, अनफाल 8: नहल 16: 114,116, हज 22:30,36, नूर 24:61,

हम्द - फातिहा 1:1, अनआम 6:1,45, आराफ 7:206, यूनुस 10:10, रअद 13:13 हिज्र 15:98,99, बनीइस्राईल 17:1,44,111, कहफ 18:1, नूर 24:41, फुरक़ान 25:1,10,61, नमल 27:59,93, क़सस 28:10, अनकबूत 29: 63, रूम 30:18, लुक्मान 31:25, अहज़ाब 33: 41,42, सबा 34:1, फातिर 35:1,34, यासीन 36:36, 83, साफ्फात 37:159,180से182, जुमर 39:74,75, मोमिन 40:7, 55,65, हा मीम सज्दा 41:38, शूरा 42:5, जुखरूफ 43:82,85, जासिया 45:36,37, सफ 61:1, जुमा 62:1, तगाबुन 64:1, मुल्क 67:1, कलम 68:28,29, हाक्क़ा 69:52,

हाबिल व क़ाबिल - मायदा 5:27,31,

हारून अलैहिस्सलाम - यूनुस 10:75,

हिदायत (मार्ग-दर्शन) किसी भी नबी के इख्तियार में नहीं - यूनुस 10:100,101,108, हूद 11:12, यूसुफ 12:103, बनीइस्राईल 17:54, क़सस 28:56, जुमर 39:19,

हिदायत (मार्ग-दर्शन) व गुमराही - बकरा 2:10,120, आलेइमरान 3:73, अनआम 6:125, आराफ 7:178,186, यूनुस 10:25, 108, इसरा 17:15,95, कहफ 18:13,17, मरयम 19:75,

76, नूर 24:40, नमल 27:92, अनकबूत 29:25, रूम 30:29, सबा 34:56, जुमर 39:23,36,37, मोमिन 40:33,37, शुरा 42:44,46, शम्स 91:7,8,9,

हिजरत - बकरा 2:218, आलेइमरान 3:195, निसा 4:97 से 100 तक, अनफाल 8:74, तौबा 9:20,21,22, हज्ज 22:58,59, मुमतहना 60:10,11,

हिजाब (परदा) - नूर 24:31 अहज़ाब 33:32,33,59,

हिरस (लालच) - बकरा 2:96, निसा 4:128, हशर 59:9, अतगाबुन 64:16,

हिक्मत - बकरा 2:24, आलेइमरान 3:26, हज 22:41, नूर 24:55,

हुदहुद - नमल 27:22,

हूद अलैहिस्सलाम - आराफ 7:65से67,72, तौबा 9:70 हूद 11:50,52से54,58,60,89, इब्राहीम 14:9, मोमिनून 23:31,41, फुरक़ान 25:37से38, शौअरा 26:123से131,140, अनकबूत 29:38, 40, साद 38:12से14, हा मीम सज्दा 41:15,16, अहक़ाफ 46:21 से24, क़ाफ 50:13, नज्म 53:50, 55, क़मर 54:18,22, हाक्क़ा 69:4,6,8, फजर 89:6,

हुब्बे इलाही - बकरा 2:165, आले इमरान 3:31, तौबा 9:24, दहर 76:7 से 10,

हुब्बे रसूल और इताअते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम - आले इमरान 3:31,32, निसा 4:64,65,80, आराफ 7:157, अनफाल 8:20, 24,46, तौबा 9:71, नूर 24: 51,52,54,56,63, अहज़ाब 33:21,36, मुहम्मद 47:33, फतह 48:17 मुजादला 58:13, हशर 59:7, तग़ाबुन 64:12

हुस्ने सुलूक - बकरा 2:83, 178, नहल 16:125, बनीइस्राईल 17:53, नूर 24:27से 31, लुक्मान 31:17,19

हुस्न व जमाल - मोमिन 40:64, तगाबुन 64:3,

हुकूक़ ज़वजैन (मियां बीवी के हक़) - बकरा 2:228, निसा 4:32,34,

हुकूक़ल इबाद (बन्दे के हक़) - निसा 4:2, 29,30,58, रूम 30:18, ज़ारियात 51:15,19,

हूरें - बकरा 2:25, रहमान 55:22से24,35 से37,56से58, वाक़िआ 56:10से40,

हैज़ - बकरा 2:222

कुरआन में गौरो फिक्र करना क्यों ज़रूरी है

बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक अन्सारी के जनाज़े में गये। हम क़ब्र के पास पहुँचे तो अभी लहद तैयार नही हुई थी, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठ गये और हम भी आपके इर्द गिर्द बैठ गये। गोया कि हमारे सरो पर परिन्दे हो। आपके हाथ में छड़ी थी, आप उससे ज़मीन कुरेद रहे थे। आपने अपना सर उठाया और फरमायाः "अल्लाह से कब्र के अज़ाब की अमान मागों।" आपने ये दो या तीन बार फरमाया। जरीर की रिवायत में यहाँ यह इज़ाफा है "जब लोग वापस जाते है तो मय्यत उनके कदमों की अहट सुनती है, जबकि उससे ये पूछा जा रह होता हैः ऐ फलॉ! तेरा रब कौन है? तेरा दीन क्या है? और तेरा नबी कौन है?" हन्नाद ने कहाः फरमायाः "उसके पास दो फरिश्ते आते है और उसे उठाते है और उसे कहते हैः तेरा रब कौन है? तो वह कहता मेरा रब अल्लाह है। फिर वह पूछते हैः तेरा दीन क्या है? तो वह कहता हे मेरा दीन इस्लाम है। फिर वह पूछते हैः यह आदमी कौन है जो तुममें मबऊस किया गया था? तो वह कहता हैः वह अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) है। फिर वह कहते हैः तुझे कैसे इल्म हुआ? वह कहता हैः मैने अल्लाह की किताब पढ़ी, मै उस पर ईमान लाया और उसकी तस्दीक़ की।" जरीर की रिवायत में मज़ीद हैः यही (सवाल जवाब ही) मिसदाक़ है अल्लाह अज़्ज़वजल के इस फरमान का "जो लोग ईमान लाये उन्हें अल्लाह क़ौले साबित (कलमा तय्यबा) से दुनया की जिन्दगी में भी साबित कदम रखता है और आखिरत में भी रखेगा।"(इब्राहीम 14/27) फिर वो दोनो रिवायत करने में मुत्तफिक़ है। फरमाया फिर आसमान से मुनादी करने वाला ऐलान करता हैः तहक़ीक़ मेरे बन्दे ने सच कहा है, उसे जन्नत का बिस्तर भेज दो, और उसको जन्नत का लिबास पहना दो, और उसके लिये जन्नत की तरफ से दरवाजा खोल दो।" फरमायाः "जन्नत की तरफ से वहाँ की हवाऐं, राहतें और खूशबू आने लगती है और उसकी क़ब्र को इन्तिहाऐ नज़र तक वसी कर दिया जाता है।" (अबू दाऊद जि. 4 स. 605 हदीस न. 4753 किताबुस्सुन्नत बाबुलमसआलति फील क़ब्रि व अज़ाबिल क़ब्रि, दारूस्सलाम, रियाद, सऊदी अरब)

ऐ लोगो! यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से (कुरआन की)
नसीहत आ गई है और (यह) शिफा है उन (बीमारियों) के लिए जो सीनों में हैं,
और मोमिनों के लिए हिदायत (मार्ग-दर्शन) और रहमत है।
कुरआन १० : ५७

ALBIRR
A Socio-Religious Trust

www.albirr.in

ORDER FOR FREE COPY IN YOUR LANGUAGE
+91-8767333555 / 9920370659

Branches:
Mumbai, Mumbra, Mira Road, Pune, Mangaon (Kokan)

Printed by : **SMILE PRINT**, Chembur, Mumbai. +91 9819889864 ❋ smileprint89@gmail.com